शमशीर बेनियाम जिल्द -2

जेसा की आप जानते हैं कि यह किताब
अभी तक हिंदी पी डी एफ फाइल में
अवेलेबल नहीं थी।
हमने एक छोटी सी कोशिश कर के इसकी
पी डी एफ बना ली है ताकी ज़्यादा से ज़्यादा
लोग हमारे अस्लाफ़ो के बारे में जान सके कि
हमारे अस्लाफ़ किस कदर परहेज़गार और
बहादुर थे।

दुआ में याद रखना

[वसीम खान मंदसौर म. प्र.]

2

शमशीर बे नियाम

इनायतुल्लाह अलतमश

अदबी दुनिया

नाम किताब: शमशीर-ए-बेनियाम
मुसन्निफ़: इनायत-उल्ला अल्तमश
:
बार-ए-अव्वल:
तादाद: 1100
मतबआ: **New Allied Printers, Delhi.**
लाल कुआं
अनुवादक: सय्यद खुर्रम रज़ा
कम्पोज़िंग: एलप्सं ग्राफिक्स

नाशिर

अदबी दुनिया, 510 मटिया महल, दिल्ली.6

पेश लफ़्ज़

"शमशीर-ए-बेनियाम" का दूसरा और आख़री हिस्सा पेश-ए-ख़िदमत है। इस हिस्से में ख़ालिद(र०) बिन वलीद की दास्तान-ए-शुजाअत ख़त्म हो जाती हैं हमें इस्लाम और जंगों की तारीख़ के इस अज़ीम जरनेल की दास्तान-ए-हेयात के तआर्रुफ़ के तौर पर जो कुछ कहना था वो "शमशीर-ए-बेनियाम" के पहले हिस्से में कह दिया है। सिर्फ़ ये बात दौहराने की ज़रूरत है के जिस अन्दाज़ से हम ने ये वलवला अंगेज़ दास्तान लिखी है इसे तारीख़ी नाविल कहा जाता है लेकिन ये उन तारीख़ी नाविलों में से नहीं जिन में अफ़सानवी बल्कि फिल्मी रंग भर दिया जाता है। ये तारीख़ ज़्यादा और नाविल न होने के बराबर है।

हम ये भी एक बार फिर कहना चाहेंगे के ये दास्तान हमारी रिवायात का मजमुआ है। आज जब के तफ़रीही और अख़्लाक़ सोज़ कहानियों ने मुसलमानों की औलाद को पटरी से उतार दिया है, ये किताब अपने बच्चों को पढ़ाऐं। इस में कहानी की तमाम तर दिलचस्पियां मौजूद हैं और ये हमारी तारीख़ है और ये इस्लाम की असकरी रूह की सही तसवीर है।

इनायत-उल्लाह
मुदीर माहाना 'हिकायत' लाहौर

अज़ादबा पर मायूसी, ग़म और रंज व मलाल के साथ दहशत भी तारी हो गई थी जैसे आसमान फट गया हो और उस के पांव के नीचे से ज़मीन निकल गई हो। वो झुका झुका सा दीवार पर चल पड़ा। उस के क़दम डगमगा रहे थे। उस के दो मुहाफिज़ उस के साथ हो गए। उस ने यास और ना उम्मीदी के आलम में दायें बायें देखा और रूक गया। दो मुहाफिज़ों को अपने पहलुओं में देख कर उस का चेहरा खश्मगी हो गया।

"मै तुम्हारे सहारे के बग़ैर चल सकता हूं"–उस ने मुहाफिज़ से कहा–"मेरे बराबर आने की जुर्रत न करो।"

मुहाफिज़ कई क़दम पीछे हट गए। अज़ादबा ने अपने झुके हुए सर को ऊपर उठाया और सीधा हो कर चलने लगा लेकिन उस के कंधे अपने आप ही सुकड़ गए और आगे को झुक गए जैसे उस पर ऐसा बोझ आ पड़ा हो जो उस की बर्दाश्त से बाहर हो। बोझ तो उस पर आ ही पड़ा था। ये ज़िम्मेदारियों का बोझ था। हीरा उस की ज़िम्मेदारी में था जहां उस का बेटा उस का दस्ते रास्त था। वो भी न रहा।

वो खुद उर्दशेर का दस्ते रास्त बना हुआ था लेकिन उर्दशेर के बग़ैर वो कुछ भी नही था। उर्दशेर ने उसे बहुत बड़ी हैसियत दे रखी थी। वो हीरा जैसे शहर और इसके मुज़ाफाती इलाक़े का हाक़िम था और बहुत हद तक खुद मुख़्तार हाक़िम था मगर वो किसरा उर्दशेर मर गया था जिस ने उसे इतनी ज़्यादा खुद मुख़्तारी दे रखी थी। फारस की शहंशाही के तख़्त पर बैठने वाले नए शहंशाह से अज़ादबा इतनी मुरव्वत और रूत्बे की तवक़्क़ो नहीं रख सकता था। मदीना के मुजाहेदीन ने सही मानों में उस के पांव तले से ज़मीन खींच ली थी।

"मगर क्यों?"–उस के एक सालार ने उसे उस वक़्त कहा जब वो अपने शीश महल के ख़ास कमरे में पहुंच चुका था। सालार ने उसे कहा– मालूम होता है आप ने लड़ने से पहले ही शिकस्त कुबूल कर ली है।"

"क्या आप बेटे का खून मदीने के बद्दुओं को बख़्श देंगे?"–उस के मरने वाले बेटे की मां ने ग़ज़ब नाक लहजे में कहा।

"मुझे सोचने दो"–"अज़ादबा गरजा मगर उस की गरज कांप रही थी। उस ने कहा–"क्या तुम लोग ये समझ रहे हो के मैं मुसलामनों के आगे हथियार डाल रहा हूं? क्या तुम ने सुना नही?"– उस की आवाज़ दब गई। बोझल आवाज़ में

बोला-"शहंशाहे उर्दशेर मर गया है।"

कमरे में सन्नाटा तारी हो गया।

"शहंशाह मर गया है?"-अज़ादबा की बीवी ने यूं कहा जैसे वो सिसकियां ले रही हो-"उर्दशेर मर गया है......मेरा बेटा मर गया है"-उस ने अज़ादबा की तरफ देखा और बुलंद आवाज़ से बोली-"ज़रतुश्त हमें अपनी तौहीन की सज़ा दे रहा है। हमें अब इस आग में जलना है जिस की हम पूजा करते है। आप ज़रतुश्त की कुर्बान गाह पर अपने लहू का, अपनी जान का नज़राना पेश कर सकते है। किसी मुसलमान को यहां से ज़िन्दा न जाने दें।"

एक मुहाफिज़ अंदर आया। एक घुटना फर्श पर टेक कर उस ने अज़ादबा को सलाम किया और बताया के क़ासिद आया है।

"भेज दो"-अज़ादबा को ख़ामोश देख कर उस की बीवी ने मुहाफिज़ से कहा।

मुहाफिज़ के जाते ही एक सिपाही अंदर आया और उस ने भी एक घुटना फर्श पर टेक कर सलाम किया। अज़ादबा ने उदास निगाहों से उसकी तरफ देखा।

"मदीना वालों की कश्तियां बंद से बहुत आगे निकल आई हैं"-क़ासिद ने कहा-"उन की रफ्तार तेज़ है।"

"लश्कर की तादाद कितनी होगी?"-अज़ादबा ने पूछा।

"हम से आधी भी नहीं सालारे आली मुक़ाम!-क़ासिद ने जवाब दिया-"मेरे अंदाज़े के मुताबिक़ बीस हज़ार पूरी नही।"

"हम इन्हें अपने घोड़ों के सुमों तले कुचल डालेंगे"-सालार ने कहा-"सालारे आली! हुक्म दें। हम फरात में उन पर तीरों का मीना बरसा देंगे। उन की कश्तियां उन की लाशों को वापस ले जाएंगी।"

"तीरों का मीना बरसाने से पहले दरिया के किनारे तक पहुंचने के लिए एक लड़ाई लड़नी पड़ेगी"-उनके बहुत से घुड़सवार दरिया के दोनों किनारों पर कश्तियों के साथ साथ आ रहे हैं। मैं ने ये भी मालूम कर लिया है के उन सवारों का कमांडर मिस्ना बिन हारिसा है और ज़्यादा तर सवार फारस की शहंशाही के मुसलमान बाशिंदे है, और जिन कश्तियों में वो आ रहे हैं वो हमारी फौज की कश्तियां हैं।"

"ये उन बुज़दिलों की कश्तियां है जो मुसलमानों से शिकस्त खा कर भागे थे"-अज़ादबा ने कहा-"उन्होंने ऐसे दुश्मन के लिए रास्ता साफ कर दिया जो बहुत कमज़ोर था। मदीना के इन अरबों को हम ने कभी पल्ले नही बांधा था।"

"हम आज भी इन्हें कमज़ोर समझते हैं"-सालार ने कहा-"सालारे आली! मैं

हुक्म का मुंतज़िर हूं। मुझे बताएं मुसलमानों को कहां रोकना है, या आप क़िले में बंद हो कर लड़ना चाहते है?"

"अगर मै कहूं के मै लड़ना ही नही चाहता"-अज़ादबा ने कहा-"तो तुम लोग..."

"हम लोग तस्लीम ही नही करेंगे के आप ने ऐसी बात कही है"-सालार ने कहा-"इस वक्त आप शंशाह उर्दशेर और अपने बेटे की मौत पर इतने ज़्यादा मग़मूम है। के आप अच्छी तरह सोच भी नही सकते।"

"इस ग़म के बावजूद हमें सोचना पड़ेगा"-अज़ादबा की बीवी ने कहा-"और बड़ी तेज़ी से सोचना पड़ेगा। हमारे पास फौज की कमी नही। किसी चीज़ की कमी नहीं। इसाई अरब हमारे साथ है। हम ने खुद इन्हें यहां इक्ळा किया है के मुसलमानों को हीरा से आगे न बढ़ने दिया जाए और इन्हें यही ख़त्म कर दिया जाए।"

"हां, हमारे पास फौज की कमी नहीं"-अज़ादबा ने कहा-"लेकिन कोई कमी ज़रूर है। जिस से हम हर मैदान में शिकस्त खा रहे हैं। मै अपने पीछे अपने नाम के साथ शिकस्त की तोहमत छोड़ कर नही जाऊंगा। मैं फतह हासिल करने का कोई और तरीक़ा सोचूंगा। मैं मदाइन जाऊंगा और देखूंगा के वहां के हालात क्या हैं। ये भी देखना है के शहंशाह उर्दशेर के मरने के बाद हमें कोई मदद देने वाला भी है या नहीं।"

"नहीं सालार-ए-आला!"-उस के सालार ने कहा-"अभी मदाइन न जाएं। दुश्मन सर पर आ गया है।"

"क्या तुम मुझ से ज़्यादा बेहतर जानते हो?"-अज़ादबा ने गुसैली आवाज़ में कहा-"क्या तुम ये समझ रहे हो के मैं भाग रहा हूं? जो मैं सोच रहा हूं वो तुम नहीं सोच सकते। मुझे ये देखना है के हमारी फौज में वो कौन सी कमज़ोरी है जो हर मैदान में हमारी शिकस्त का बाइस बनती है। क्या तुम इस पर ग़ौर नहीं कर रहे के हरमज़ जैसा जंगजू मुसलमानों के हाथों मारा गया है.....अनू शुजान और क़बाज़ मामूली क़िस्म के सालार नही थे। अंदरज़ग़र को क्या हो गया था? जाबान किधर गया?.... मुझ से फैसला कुन जंग और फतह की क्यों तवक्क़ो रखी जा रही है?....मै लड़ूंगा लेकिन सोच समझ कर....तमाम सालारों और नायब सालारों को बुलाओ।"

❁

ख़ालिद(र०) का लश्कर दरिया-ए-फरात के सीने पर सवार आगे ही आगे बढ़ता जा रहा था। घुड़सवार दरिया के दोनों जानिब फैले हुए साथ साथ जा रहे थे। हर लम्हा तवक्क़ो थी के हीरा ही फौज किसी मुक़ाम पर हमला करेगी, लेकिन इस फौज का दूर दूर तक कोई निशान नज़र नहीं आता था। मिस्ना बिन हारिसा के

घुड़सवार किनारों से हट कर दूर तक चले जाते और दुश्मन का खुरा खोज ढूंढने की कोशिश करते थे।

ख़ालिद(र०) को मालूम था के हीरा की जंग बड़ी ख़ूंरेज़ होगी। मिस्ना बिन हारिसा ने मालूम कर लिया था के अज़ादबा ने हीरा में बहुत बड़ा लश्कर जमा कर रखा है। ख़ालिद(र०) का जज़्बा और अज़्म था के वो दुश्मन के एक बड़े ही मज़बूत फौजी अड्डे की तरफ बढ़े जा रहे थे, वरना मुसलमानों और आतिश परस्तों की जंगी ताक़त का तनासुब ऐसा था के ख़ालिद(र०) को एक क़दम और आगे बढ़ाने की बजाए वापस आजाना चाहिए था मगर ख़ालिद(र०) मुल्क गीरी की हवस से ये ख़तरा मोल नहीं ले रहे थे बल्कि वो अल्लाह के हुक्म की तामील कर रहे थे। इस्लाम के पड़ोस में इतने बड़े और ताक़तवर बातिल की मौजूदगी इस्लाम के लिए ऐसा ख़तरा थी के इस्लाम आगे बढ़ने की बजाए पीछे हटता जाता और फिर ग़ायब हो जाता।

"इब्ने वलीद!"-ख़ालिद(र०) को दरिया के किनारे से मिस्ना बिन हारिसा की पुकार सुनाई दी-"मंज़िल क़रीब आ गई है।"

ख़ालिद(र०) ने अपने कश्ती रानों से कहा के कश्ती किनारे के साथ ले जाएं और इन्हें उतार कर कश्ती आगे ले जाएं। मिस्ना इस इलाक़े से वाक़िफ था फिर भी उस ने इस इलाक़े के दो आदमियों को पकड़ कर कुछ ईनाम दिया और राहनुमाई के लिए इन्हें अपने साथ रख लिया था।

ख़ालिद(र०) जब किनारे पर उतरे तो मिस्ना ने अपने एक सवार से कहा के वो घोड़ा ख़ालिद(र०) को दे दे। ख़ालिद(र०) इस घोड़े पर सवार हो गए। मिस्ना और ख़ालिद(र०) के घोड़े पहलू बा पहलू जा रहे थे और मिस्ना की नज़रें ख़ालिद(र०) के चेहरे पर जमी हुईं थीं। ख़ालिद(र०) इधर उधर देख रहे थे। उन की नज़रें जब मिस्ना बिन हारिसा पर आईं तो भी मिस्ना की नज़रें उन के चेहरे पर जमी हुईं थीं।

"क्यों, इब्ने हारिसा!"-ख़ालिद(र०) ने मुस्कुराते हुए पुछा-"क्या तू मुझे पहचानने की कोशिश कर रहा है?"

"हां, वलीद के बेटे!"-मिस्ना ने संजीदा और ठहरे ठहरे लहजे में कहा-"मैं तुझे पहचानने की कोशिश कर रहा हूं। तू मुझे इन्सान नहीं लगता। तेरे चेहरे पर कुछ घबराहट और कुछ परेशानी होनी चाहिए थी।"

"मैं अन्दर ही अन्दर परेशान हूं"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"और मेरे दिल पर घबराहट भी है। ये इस लिए के मैं इन्सान हूं लेकिन मैं परेशानी और घबराहट को चेहरे पर नहीं आने दूंगा।"

"ये चेहरा एक लश्कर का चेहरा है"-मिस्ना ने कहा-"ये इस्लाम का चेहरा

है...मै समझता हूं इब्ने वलीद! सालारे आला का चेहरा बिगड़ जाए तो पूरे लश्कर का और सारी क़ौम का चेहरा बिगड़ जाता है।"

"मुझे ये बता इब्ने हारिसा!"-ख़ालिद(र०) ने पूछा-"तूने ये बातें क्यों की हैं? क्या तू मुझे परेशानी और घबराहट में देखना चाहता है?"

"हां इब्ने वलीद!"-मिस्ना ने कहा-"तुझे शायद अहसास नही के तू कितने बड़े और कितने ताक़तवर दुश्मन के सामने जा रहा है।"

"मै अपने लिए जा रहा होता तो मुझे अपना ग़म होता के बादशाह बनने से पहले ही न मारा जाऊं"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"मै अल्लाह के हुक्म पर जा रहा हूं। अल्लाह हमारे साथ है। मुझे और तुझे घबराने की और परेशान होने की ज़रूरत नही... मुझे ये बताओ के आगे क्या है।"

मिस्ना ने उन दो आदमियों को बुलाया जो इस इलाक़े के रहने वाले थे और उन्हें कहा के वो बताऐं के आगे क्या है। इन दोनों ने बताया के आगे हीरा है और वहां तक ज़मीन कैसी है। ख़ालिद(र०) ने इन आदमियों को वहां से हटा दिया और मिस्ना के साथ हीरा पर हमले की इस्कीम बनाने लगे।

❋

हीरा फरात के किनारे पर वाक़े था। ख़ालिद(र०) ने अपने सालारों आसिम बिन उमरो और ऐदी बिन हातिम को कश्तियों से किनारे पर बुलाया।

"मै मान नहीं सकता के आतिश परस्त हमें हीरा के रास्ते में नहीं रोकेंगे"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"उन के पास इतनी ज़्यादा फौज है जिसे वो इस सारे इलाक़े में फैला सकते हैं। तमाम इसाई भी उन के साथ हैं। अगर हम हीरा के सामने जा कर कश्तियों से उतरे तो दुश्मन वहीं पर हमला कर देगा। हम हीरा से दूर कश्तियां छोड़ देंगे।"

ख़ालिद(र०) बैठ गए और अपनी तलवार निकाल कर इस की नोक से हीरा का महले वक़ूअ और अपनी पेशक़दमी का नक़्शा बनाने लगे। उन्होंने उस मुक़ाम से जहां वो खड़े थे, हीरा तक पहुंचने के रास्ते की लकीर बनाई जो सीधी नहीं थी बल्कि ये नीम दायरा था। उन्होंने ये लकीर एक मुक़ाम पर ख़त्म की जो एक क़स्बा था। ये हीरा से तक़रीबन तीन मील दूर था।

"इस क़स्बे का नाम ख़वरनक़ है"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"हम इस के क़रीब से गुज़रेंगे और हीरा की तरफ तेज़ी से बढ़ेंगे। तवक़्क़ो यही है के आतिश परस्त शहर से कुछ दूर ही हमारे रास्ते में आजाऐंगे। मेरे भाईयो! ये लड़ाई ख़ौफनाक़ होगी। ज़रतुश्त के पुजारी अब शिकस्त का ख़तरा मोल नहीं ले सकते। आगे मदाइन है। मै तुम्हें बड़े

ही सख़्त इम्तेहान में डाल रहा हूं लेकिन इस इम्तेहान में पूरा उतरना है। दुश्मन की तादाद हम से कई गुनाह ज़्यादा है..... अगर हमें हीरा को मुहासरे में लेने का मौक़ा मिल गया तो मुहासरा बहुत लम्बा होगा। हम इतना इन्तेज़ार नही कर सकते। अपने दिलों में अल्लाह से एहद करो के हीरा को फतह करना है.....अब कश्तियां छोड़ दो और तमाम लश्कर को किनारे पर ले आओ।"

मुसलमानों की तादाद अठारह हज़ार थी। ये लश्कर कश्तियों से उतर कर किनारे पर आ गया और बड़ी तेज़ी से पेशक़दमी के लिए मुनज़्ज़म हो गया। ख़ालिद(र०) ने सालार आसिम बिन उमरो को आगे और ऐदी बिन हातिम को पीछे रखा और खुद दरमियान में रहे। मिस्ना बिन हारिसा का सवार दस्ता हराविल के तौर पर लश्कर से कम व बेश एक मील आगे निकल गया था।

ख़ालिद(र०) के हुक्म से मुजाहेदीन का लश्कर ख़ामोशी से जा रहा था। नारों और जंगी तरानों की मुमानेअत कर दी गई थी ताके पता न चले के कोई लश्कर आ रहा है। ख़ालिद(र०) ने रास्ता ऐसा इख़्तियार किया था जो जंगल और वीरान इलाक़े से गुज़रता था और उधर मुसाफिरों की गुज़र गाह नही थी।

मिस्ना बिन हारिसा के सवार फैल कर जा रहे थे ताके घात का कहीं भी शक हो तो लश्कर को पैग़ाम भेज कर पीछे ही रोक लिया जाए।

❁

ख़ालिद(र०) का लश्कर ख़वरनक़ तक पहुंच गया। दुश्मन की फौज का कहीं भी नाम व निशान तक न मिला। ख़ालिद(र०) ने लश्कर को रोक लिया और अपने एक जासूस से कहा के वो क़स्बे के अन्दर जाए और देखे के दुश्मन की फौज वहां तो नहीं!

ख़ालिद(र०) का जासूसी का निज़ाम ज़हीन और जुर्रतमंद आदमियों पर मुश्तमिल था। इस में उन मुसलमानों की तादाद ज़्यादा थी जो फारस वालों के गुलाम थे। वो दजला और फरात के संगम के इलाक़े में रहते थे। इन में से एक आदमी भेस बदल कर ख़वरनक़ चला गया और ख़बर लाया के इस क़स्बे में कोई फौज नही और क़स्बे में अमन व अमान है। तारीख़ बताती है के इस क़स्बे में मतामव्वल लोग रहते थे। आज वहां ख़वरनक का निशान भी नही मिलता।

इन्सान मिट्टी में मिल कर मिट्टी हो जाते है, मुक़ाम मिट जाते है, बुलंद व बाला मकान और आलीशान महल मिट जाते हैं। ज़िन्दा सिर्फ तारीख़ रहती है-अच्छी या बुरी-इन्सानों के नाम ज़िन्दा रहते हैं। उन की क़ायम की हुई रिवायात ज़िन्दा रहती हैं। आज वो क़स्बा मौजूद नही जहां ताजिर और दीगर दौलतमंद लोग रहते थे।

ख़ालिद(र०) ने आतिशे नमरूद में कूदने से पहले इस क़स्बे के क़रीब क़याम किया था। क़स्बा नही रहा, ख़ालिद(र०) ज़िन्दा है। उन की रिवायात ज़िन्दा है। मिस्ना बिन हारिसा को आसिम और ऐदी को और उन अठारह हज़ार मुजाहेदीन को तारीख़ ने ज़िन्दा रखा है। उन के घोड़ों के सुमों की गरज को सूरज की किरनों ने चूमा है।

क्या मक़सद था उन अव्वलीन मुजाहेदीन का जो उस दुश्मन से टक्कर लेने जा रहे थे जो अठारह हज़ार नफ़ूस को निगल लेने की ताक़त रखता था? ख़ालिद(र०) और उन के सालारों के दिलों में तख़्त व ताज की हवस नही थी। ज़र व जवाहरात का लालच नहीं था। एक अज़्म था जो उन के लिए जुनून बन गया था। वो उस कुफ़्र को अपने पड़ोस में ज़िन्दा नहीं देखना चाहते थे जो इस्लाम की बक़ा और फरोग़ के लिए ख़तरा था। उन के ज़हनों में कोई शक न था, कोई वहम और कोई वसवसा न था। वो हमेशा ज़िन्दा रहने वाली रिवायत अपने खून से लिखने जा रहे थे।

मोअर्रिख़ ने उस वक्त के वक़ाए निगारों के हवालों से लिखा है के ख़ालिद(र०) पर ख़ामोशी तारी थी। कोई सिपाही उन की तरफ देखता था तो वो मुस्कुराते थे। ख़ालिद(र०) जब ख़वरनक़ से आगे निकले तो उन के मुंह से कोई हुक्म निकलता था या कोई हिदायत। इस के सिवा वो कोई बात नहीं करते थे। मिस्ना बिन हारिसा शब खून और दिन की छापा मार जंग का और भाग दौड़ कर लड़ने वाली लड़ाई का माहिर था। वो जब ख़ालिद(र०) को बताता था के वो यूं करेगा और यूं करेगा तो ख़ालिद(र०) के मुंह से हर बार यही अल्फाज़ निकलते थे–"अल्लाह तुझे अज्र देगा इब्ने हारिसा!"

❁

ख़ालिद(र०) अपने लश्कर को ख़वरनक़ से परे परे आगे ले गए। इन्हें ऐसी तवक्क़ो नहीं थी के वो दुश्मन को बे ख़बरी में जा लेंगे। इन्हें मालूम था के दुश्मन ज़रूरत से ज़्यादा बेदार होगा। ख़ालिद(र०) ने हुक्म दिया के इस कस्बे पर नज़र रखने के लिए चन्द एक मुजाहेदीन को पीछे रहने दिया जाए ताके इस में से निकल कर कोई आदमी हीरा ये इत्तेला न देने चला जाए के मुसलमानों का लश्कर आ रहा है।

ये फंदा था जिस में मदीना का लश्कर जा रहा था। वो इलाक़ा घात के लिए मोज़ू था लेकिन घात के भी आसार नज़र नही आते थे। यही हो सकता था के दुश्मन का लश्कर अचानक हर तरफ से आएगा और अठारह हज़ार के इस लश्कर को घेरे में ले कर सालारों से सिपाहियों तक काट देगा।

कुछ और आगे गए तो एक टेकरी आ गई। ख़ालिद(र०) ने घोड़े को ऐड़ लगाई और टेकरी पर चढ़ गए। उन के हुक्म से लश्कर रूक गया।

"अल्लाह के सिपाहियों!"–"तुम पर अल्लाह की रहमत हो। आज खुदाए वाहिद ने तुम्हें बड़े सख़्त इम्तेहान में डाल दिया है। आज अल्लाह के रसूल(स०) की रूह-ए-मुक़द्दस तुम्हें देख रही है। आज तुम एक पहाड़ से टकराने और इसे रेज़ा रेज़ा करने जा रहे हो। अब जिस लश्कर के साथ तुम्हारा मुक़ाबला होगा वो पहाड़ से कम नही। मुजाहेदीने इस्लाम! अगर आज तुम ने पीठ दिखाई तो तुम्हें न खुदा बख्शेगा न दुश्मन। आज इस ऐहद से आगे बढ़ो, फतह या मौत। हमारी जानें अल्लाह की अमानत है। ये अमानत अल्लाह को लौटानी है लेकिन बावक़ार तरीक़े से। अल्लाह तुम्हारे साथ है। तादाद और हथियारों की कमी और इफरात शिकस्त और फतह का बाइस नही बन सकती। फतह जज़्बे और अज़्म से हासिल होती है। इस यक़ीन के साथ आगे बढ़ो के रसूल अल्लाह(स०) की रूह-ए-मुक़द्दस तुम्हारे साथ है।"

ख़ालिद(र०) ने अपने लश्कर के जज़्बे को और ज़्यादा गर्मा दिया।

❋

वो हीरा के अक़ब को जा रहे थे। इस तरह इन्हें ख़ासा बड़ा चक्कर काटना पड़ा। जब शहर के क़रीब गए तो भी दुश्मन का कोई सिपाही नज़र न आया। दीवार के ऊपर और बुर्जों में भी कोई नज़र नहीं आता था। अमनीशिया में भी ऐसे ही हुआ था और ख़ालिद(र०) ने उसे धोका समझा था लेकिन ये धोका नहीं था। दुश्मन शहर ख़ाली कर के चला गया था। हीरा में भी आतिश परस्तों की फौज कही नज़र नही आती थी। शहर पनाह के दरवाज़े खुले थे।

मिस्ना बन हारिसा अपने चन्द एक सवारों के साथ शहर के इर्द गिर्द चक्कर लगा आया।

"इब्ने वलीद!"–मिस्ना ने ख़ालिद(र०) से कहा–"सामने वाला दरवाज़ा भी खुला है और लोग घूमते फिरते दिखाई दे रहे हैं।"

"ऐसा नहीं हो सकता"–ख़ालिद(र०) ने कहा–"अमनीशिया ख़ाली था। तू कहता है शहर में लोग मौजूद हैं। ये फंदा है इब्ने हारिसा! ये जाल है......आसिम और ऐदी को बुलाओ।"

दोनो सालार आए तो ख़ालिद(र०) ने इन्हें बताया के शहर की कैफियत क्या है। कुछ देर तबादला-ए-ख्यालात और बहस व मुबाहेसा हुआ और तय पाया के तमाम दरवाज़ों से लश्कर के दस्ते तूफान की तरह अन्दर जाऐं और शहर में फैल जाऐंगे।

अगर खतरा था तो ये कोई मामूली ख़तरा नहीं था। ख़ालिद(र०) ने अपने लश्कर को जिस तरह शहर में दाख़िल होने को कहा था इस तरह अकेले अकेले

मुजाहिद के कट जाने या मकानों में छुपे हुए तीरअंदाज़ों के तीरों का निशाना बनने का ख़तरा था लेकिन ख़ालिद(र०) ने ये ख़तरा मोल ले लिया और लश्कर को शहर में दाख़िल होने को कहा था इस तरह अकेले अकेले मुजाहिद के कट जाने या मकानों में छुपे हुए तीरअंदाज़ों के तीरों का निशाना बनने का ख़तरा था लेकिन ख़ालिद(र०) ने ये ख़तरा मोल ले लिया और लश्कर को शहर में दाख़िल कर दिया। मुजाहेदीन दौड़ते हुए और घोड़े दौड़ाते हुए अन्दर गए।

शहर के लोग छुपने या भागने की बजाए बाहर आ गए। औरतें छतों पर चढ़ गईं। बाज़ लोग घरों में छुप गए थे और उन्होंने दरवाज़े बन्द कर लिए थे लेकिन क़त्ल व ग़ारत और लूट मार न हुई तो छुपे हुए लोग भी बाहर आ गए।

ख़ालिद(र०) ने सारे शहर में ऐलान कराया के जिस घर में आतिश परस्तों के लश्कर का कोई आदमी हो, उसे घर से निकाल दो, किसी मकान से एक भी तीर आया उस मकान को आग लगा दी जाएगी।

शहर के मोअज़्ज़िन और सरकर्दा अफ़राद का एक वफ़्द ख़ालिद(र०) के पास आया और बताया के शहर के किसी भी घर में फौज का कोई आदमी नही।

"फौज कहां गई?"-ख़ालिद(र०) ने पूछा।

"मदाइन चली गई है"-वफ़्द के सरकर्दा शख़्स ने कहा।

"हाकिम अज़ादबा कहां है?"

"वो भी चला गया है"-ख़ालिद(र०) को जवाब मिला।

"मुझे कौन यक़ीन दिला सकता है के हमारे साथ धोका नही होगा?"-ख़ालिद(र०) ने पूछा-"कौन मान सकता है के हाकिम भी चला जाए, फौज भी चली जाए और रिआया अपने दुश्मन की फौज को अपने शहर में देख कर भी अमन व अमान से रहे और उसे अपने दुश्मन का कोई ख़ौफ न हो।"

"हम सालारे मदीना को यही यक़ीन दिलाने आए हैं के हीरा की रिआया अमन व अमान से रहेगी और अमन व अमान की दरख्वास्त करती है"-वफ़्द के सरकर्दा शख़्स ने कहा-"धोका आप के साथ नहीं होगा, धोका हमारे साथ हुआ है। जिस रिआया को उस का हाकिम और फौज दुश्मन के रहम व करम पर छोड़ जाए वो रिआया दुश्मन को दोस्त बनाने की कोशिश करेगी, दुश्मन को धोका देने का ख़तरा मोल नही लेगी। हम इस फौज का साथ नहीं दे सकते जिस ने काज़्मा में शिकस्त खाई, उल्लीस से भागी, अमनीशिया जैसा शहर ख़ाली कर के भाग आई और ये इतना बड़ा शहर और अपनी रिआया को छोड़ कर भाग गई है।"

"तुम क्या चाहते हो?"-ख़ालिद(र०) ने पूछा।

"अमन!"-वफ़द के सरदार ने जवाब दिया-"शहर के बाशिंदे अमन की और अपने जान व माल और इज़्ज़त के तहफ्फ़ुज़ की क़ीमत देंगे।"

"हम क़ीमत नही लिया करते"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"ख़ुदा की क़सम, अमन के जवाब मे अमन देंगे.....क्या मेरे लश्कर के किसी एक भी आदमी ने किसी के घर से काई चीज़ उठाई है? किसी की इज़्ज़त पर हाथ डाला है?"

"नही"-वफ़द के सरदार ने कहा।

"हम सिर्फ उस शहर के अमवाल को माले ग़नीमत समझते है। जिस के बाशिंदे भाग गए हों"- ख़ालिद(र०) ने कहा-"तुम अपने घरों में मौजूद थे और तुम हमारे मुक़ाबले में भी नही आए इस लिए ये मेरा फर्ज़ है के मैं इस शहर के बाशिंदे को अपनी पनाह में ले लूंगा.....और में इस की कोई क़ीमत नहीं लूंगा..... जाओ, अमन से आए हो तो अमन से जाओ।"

"बे शक़ ये है वो ताक़त जो आप को हर मैदान में फ़तह देती है"-वफ़द के सरदार ने कहा।

❁

तारीख़ में ऐसा कोई इशारा नही मिलता के ख़ालिद(०) ने हीरा के बाशिंदों को कुबूले इस्लाम की दावत दी थी या नही, अल्बत्ता ये शहादत बड़ी साफ मिलती है के हीरा के बाशिंदों को ये तवक्क़ो थी के मुसलमानों की फौज उन के घर लूट लेगी और उन की खूबसूरत औरतों को अपने क़ब्ज़े में ले लेगी, लेकिन मसुलमान उन के घरों में गए भी तो सिर्फ ये देखने के वहां फारस के सिपाही न छुपे हुए हों। हीरा वालों ने जब मुसलमानों का ये किरदार देखा और ख़ालिद(र०) ने इन्हें यक़ीन दिला दिया के इस शहर के बाशिंदे मुसलमानों की पनाह में हैं तो वो इतने मुतास्सिर हुए के बाज़ ने इस्लाम कुबूल कर लिया।

ख़ालिद(र०) को हीरा के लोगों से एक फायदा ये भी मिला के नौ मुस्लिमों ने और एक दो सरकर्दा अफराद ने भी ख़ालिद(र०) को बड़ी क़ीमती मालूमात दी।

"हीरा आप का है"-हीरा के एक सरकर्दा फर्द ने ख़ालिद(र०) से कहा-"लेकिन आप इस शहर पर क़ब्ज़ा कर के अमन से नही रह सकेंगे। आप को शायद मालूम होगा के हीरा के इर्द गिर्द चार क़िले है जिन के क़िला दार मुख़्तलिफ क़बीलों के सरदार है और हर एक क़िले में इसाई अरबों की फौज मौजूद है।"

"अगर हम ने फारस के नामूर सालारों को शिकस्त दे दी है तो इन क़िला दारों को शिकस्त देना शायद मुश्किल न होगा"-ख़ालिद(र०) ने कहा और पूछा-"क़िलों की फौजें लड़ने में कैसी हैं?"

"हर एक सिपाही जान लड़ा देगा"-मजूसी सरदार ने कहा-"हम इन फौजों को फारस की फौजों की निस्बत ज़्यादा ताक़तवर और जरी समझते है।"

ख़ालिद(र०) को इन चार क़िलों की जो तफ़सीलात बताई गई, वो यूं थी:

हर क़िले का अपना एक नाम था। एक क़िले का नाम क़िस्रा-ए-अबेज़ था। इस का क़िला दार अयास बिन क़बसिया था। दूसरे क़िले का नाम क़िसरूलउदसेन था। ऐदी बिन ऐदी इस का क़िलादार था। तीसरे क़िले का नाम क़िस्र-ए-बनू माज़न और क़िलादार का नाम इब्ने अकाल था। चौथे क़िले का नाम क़िलादार के नाम पर था। क़िले का नाम क़िस्र-ए-बिन बक़ीला था जब के इस का क़िलादार अब्दुल मसीह बिन उमरो बिन बक़ीला था।

ख़ालिद(र०) ने अपने सालारों को बुलाया और उन्हें बताया के इन क़िलों को फतह करना लाज़मी है वरना हीरा पर हमारा क़ब्ज़ा नही रह सकेगा। इस्लाम की असकरी रूह यही है के जहां से ख़तरे की बू आए वहां हमला कर दो। दुश्मन के चैलेंज को कुबूल करना और तैयारी की हालत में उस पर जा पड़ना इस्लामी फ़ने हर्ब व ज़र्ब की बुनियाद है। इसी उसूल के तहत ख़ालिद(र०) ने अपने सालारों को बताया के कौन किस क़िले पर हमला करेगा।

क़िस्र-ए-अबेज़ पर हमला करने के लिए ज़रार इब्ने लाज़ोर को हुक्म दिया गया। इन के हम नाम ज़रार इब्ने ख़त्ताब को किस्ररूलउदसेन पर हमला करने का हुक्म मिला। क़िस्रे बिन बक़ीला मिस्ना के हिस्से में आया। ख़ालिद(र०) ने हुक्म दिया के इन क़िलों को फौरन मुहासरे में ले लिया जाए। ख़ालिद(र०) ने सब से पहले चारों क़िलेदारों को पैग़ाम भेजे के वो इस्लाम कुबूल करें या जज़िया दें। अगर दोनों सूरतें उन्हें मंजूर नहीं तो मुसलमानों की तलवारों से कटने के लिए तैयार हो जाऐं।

चारों क़िलों से कोरा जवाब आया। तमाम क़िलेदारों ने बड़ी दिलेरी से जवाब दिया के वो न अपने क़िलों से दस्तबर्दार होंगे न अपने मज़हब से।

चारों क़िलों पर मुसलमानों ने बैक वक़्त हमला किया और क़िलों को मुहासरे में ले लिया। फौरन ही मुजाहेदीन ने क़िलों में दाख़िल होने की बड़ी ही दिलेराना कोशिशें शुरू कर दी। लेकिन हर क़िले की फौज मुजाहेदीन की हर कोशिश को ना काम कर रही थी। क़िस्रेअबेज़ के दिफ़ाअ ने सालार ज़रार को बहुत परेशान किया। क़िले की दीवारों से इसाईयों ने तीरों का मीना बरसा दिया। मुसलमान दीवार के क़रीब जाने से बे बस हो गए। क़िले की दीवार पर एक मुंजनीक़ थी जिस से मिट्टी के बड़े बड़े गोले मुसलमानों पर फैंके जा रहे थे।

सालार ज़रार ने क़िले के चारों तरफ घोड़ा दौड़ा कर देखा। किसी भी तरफ से

क़िले को सर करने का इम्कान नज़र नही आता था। मुंजनीक़ मिट्टी के खुश्क़ गोले बड़ी तेज़ी से फैंक़ रही थी। सालार ज़रार ने ऐसे तीरअंदाज़ों को अलग किया जो जिस्मानी लिहाज़ से तवाना थे। इन सब को ज़रार ने हुक्म दिया के मुंजनीक़ के जिस क़दर करीब जा सकते है चले जाऐं और बैक़ वक़्त मुंजनीक़ चलाने वालों पर तीरों की बाड़ें मारें।

तीरअंदाज़ जोश व ख़रोश से आगे बढ़े। ऊपर से उन पर तीरों की बोछाड़ें आईं और इस के साथ ही मुंजनीक़ के फैंके हुए मिट्टी के गोले भी आने लगे। कई मुजाहेदीन तीरों से शदीद ज़ख्मी हो गए लेकिन इतने ज़्यादा तीर भी उन का हौसला न तोड़ सके। ज़रार के बाज़ तीरअंदाज़ इस हालत में आगे बढ़ते गए के उन के जिस्मों में दो दो तीन तीन तीर उतरे हुए थे। इन सब ने मुंजनीक़ चलाने वालों पर तीर चलाए। मुंजनीक़ बिलकुल सामने थी। इस से मिट्टी के गोले फैंकने वाले तक़रीबन तमाम के तमाम तीर खा कर गिरे और मुंजनीक़ के गोले बन्द हो गए।

मुसलमान तीरअंदाज़ों ने उस हुक्म की तामील कर दी थी जो इन्हें मिला था। उन्होंने मुंजनीक़ को बेकार कर दिया था, फिर भी वो वापस न आए। उन्होंने क़िले के तीरअंदाज़ों पर तीर बरसाने शुरू कर दिए। फिज़ा में उड़ते तीरों के सिवा कुछ और नज़र न आता था। इन मुजाहेदीन की सरफरोशी को देखते हुए कई और तीरअंदाज़ आगे चले गए। ये तीरों की जंग थी जिस में दोनों तरफ के आदमी तीरों का शिकार हो रहे थे।

सालार ज़रार ने जब अपने इन तीरअंदाज़ों की बेख़ौफी देखी तो वो क़िले के इर्द गिर्द घूम गया और उन ने तीरअंदाज़ों से कहा के वो और क़रीब से तीर चलाऐं।

बाक़ी तीन क़िलों की कैफियत बिलकुल इसी जैसी थी। इसाई बे जिग्री से मुक़ाबला कर रहे थे। मुसलमान घुड़सवार घोड़े दौड़ाते हुए दीवार के क़रीब जाते और दौड़ाते घोड़ों से तीर चला कर आगे निकल जाते। इस तरह मुसलमान सवारों को ये फायदा हासिल होता था के वो तीरों का निशाना बनने से बच जाते थे। इस के बावजूद सवार तीरों से ज़ख्मी हुए। बाज़ मुजाहेदीन ने यहां तक बे जिग्री का मुज़ाहेरा किया के दरवाज़ों तक चले गए और उन्होंने दरवाज़े तोड़ने की कोशिश की लेकिन क़िलों के दिफाअ में लड़ने वालों ने इस से ज़्यादा बेजिग्री के मुज़ाहेरे किए। दीवारों से तीर बरसाने वाले जितने तीरअंदाज़ मुसलमानों के तीरों से गिरते थे, इतने ही ताज़ा दम तीरअंदाज़ इन की जगह ले लेते थे।

❁

ख़ालिद(र०) हर क़िले के इर्द गिर्द घोड़ा दौड़ाते, सूरते हाल का जायज़ा लेते

और मुजाहेदीन को यही एक बात कहते के चारों किले शाम से पहले पहले सर करने है, हम इन्तेज़ार नही कर सकते। ख़ालिद(र०) ने पीछे रह कर हुक्म नही दिए बल्कि आगे दीवारों के क़रीब तक जाते रहे जहां ऊपर से तीरों की बौछाड़ें आ रही थी। वो दो क़िलों के दरवाज़ों तक भी पहुंचे और तीर उन के इर्द गिर्द उड़ते रहे।

ख़ालिद(र०) इस लिए इन्तेज़ार नहीं कर सकते थे के इन्हें ख़तरा नज़र आ रहा था के अज़ादबा अचानक किसी तरफ से फौज के साथ नमूदार होगा और अक़ब से हमला कर देगा। वो मुल्क आतिश परस्तों का था, ज़मीन उनकी, फौज उनकी और वहां के बाशिंदे उन के थे मुसलमानों की तादाद बहुत कम थी और वहां उन के लिए कोई पनाह नही थी। ये ख़ालिद(र०) की ग़ैर मामूली जंगी फहम व फिरासत और उन की और उन के सालारों की बे मिसाल जुर्रत थी के वो ख़तरों में घिरते चले जा रहे थे और पीछे हटने का नाम नहीं लेते थे। फारस की फौज के लिए वो दहशत बन गए थे।

ख़ालिद(र०) इस खुश फहमी में मुब्तेला होने वाले सालार नहीं थे के दुश्मन जो शिकस्त खाता और पस्पा होता चला जा रहा है वो जवाबी वार नही करेगा। वो इन चार क़िलों को ही फंदा या जाल में दाना समझ रहे थे। उन्होंने देखभाल के लिए दूर दूर आदमी भेज रखे थे जो बुलंद जगहों या दरख़्तों पर चढ़ कर हर तरफ देख रहे थे। उन के लिए हुक्म था के दूर से इन्हें फौज आती नज़र आए तो ख़ालिद(र०) को फौरन इत्तेला दें।

"वो आऐंगे.....वो ज़रूर आऐंगे"-ख़ालिद(र०) का ये पैग़ाम हर एक सालार और हर एक सिपाही तक पहुंच गया था, और ये भी-"अल्लाह के शैरो! हिम्मत करो। क़िले ले लो। दुश्मन आए तो उस पर तुम्हारे तीर क़िलों की दीवारों से बरसें।"

मुसलसल लड़ाईयों, कूच और पेशक़दमी के थके हुए मुजाहेदीन अपने जिस्मों को जैसे भूल ही गए थे। वो अब रूहानी कुव्वतों से लड़ रहे थे। एक दूसरे को पुकारते, एक दूसरे का हौसला बढ़ाते और दुश्मन को लल्कारते थे। उन के तीर नीचे से ऊपर जा रहे थे।

❁

क़िलों के अन्दर ये आलम था के दीवारों से ज़ख्मी तीरअंदाज़ों को उतार रहे थे। ज़्यादा को तीर चेहरों, आंखों और गर्दनों में लगे थे। उन की चीख़ व पुकार से उन के साथियों के हौसले टूटने शुरू हो गए। मुसलमानों की लल्कार और उन के नारे क़िलों के अन्दर भी सुनाई दे रहे थे। इन से क़िला बन्द लोगों पर ख़ौफ तारी हो रहा था। वो समझ रहे थे के क़िलों को बहुत बड़े लश्कर ने मुहासरे में ले रखा है।

मोअर्रिख़ों के हवालों से मोहम्मद हुसैन हेकल ने लिखा है के चारों क़िलों में

पादरी और दीगर मज़हबी पैशवा थे। उन्होंने देखा के दीवारों से इतने ज़्यादा ज़ख्मी उतारे जा रहे है तो वो किलादारों के पास गए। तारीख़ में सिर्फ एक किले की अंदरूनी कैफियत ज़रा तफसील से मिलती है। ये किला इब्ने बक़ीला था जिस का किलादार अब्दुलमसीह बिन बक़ीला था।

अब्दुलमसीह के मुताल्लिक़ ये बताना ज़रूरी है के वो कोई मामूली सा क़िलादार न था। उसे ईराक़ का शहज़ादा भी कहा गया है। ईराक़ पर आतिश परस्त क़ाबिज़ हो गए मगर अब्दुल मसीह के बाप दादा ने ये किला अपने पास रखा था। शहंशाहे फारस की तरफ से उसे कोई इख़्तियार हासिल न था लेकिन वो खुद मुख़्तार बना हुआ था। उस ने बाक़ी क़िलादारों को भी अपने ज़ेरे असर रखा हुआ था। वो गै़र मामूली तौर पर दानिशमंद था और जुर्रत में भी बे मिसाल था। उस की सब से बड़ी खूबी हाज़िर दिमाग़ी और हाज़िर जवाबी थी। वो ज़ईफुलउम्र हो चुका था लेकिन जज़्बे और हौसले के लिहाज़ से वो जवान था।

उस ने नोशेरवां आदिल का ज़माना भी देखा था। इस से अंदाज़ा होता है के इस की उम्र ख़ासी ज़्यादा थी। खुश गुफ्तारी और ज़राफत की वजह से नोशेरवां (किसरा उर्दशेर का दादा) अब्दुलमसीह को बहुत पसंद करता था।

"नोशेरवां!"–उस ने नोशेरवां आदिल से कहा–"मैं और मेरे कुछ सरदार तुम्हारी इताअत कुबूल नहीं करेंगे। हम अपने क़िलों में रहेंगे। इस से शायद तुम्हें भी कुछ फायदा हो।"

"मैं तुम्हें और तुम्हारी पसंद के सरदारों को चार क़िले दे देता हूं"–नोशेरवां आदिल ने कहा था– लेकिन मेरे मरने के बाद तुम्हारे साथ फारस में क्या सुलूक़ होगा, मैं बता नही सकता।"

"तुम्हारे मरने के बाद फारस की शहंशाही का ज़वाल शुरू होगा"–अब्दुलमसीह ने कहा था।

"इतनी अच्छी बाते करने वाली जुबान से मै ऐसी बात सुन नही सकता इब्ने बक़ीला!"–नोशेरवां ने कहा था"–क्या तू मुझे बद दुआ दे रहा है या फारस के ज़वाल का आइस तू खुद बनेगा?"

"दोनों बातें नहीं"–अब्दुल मसीह ने कहा था–"तू आदिल है। तेरे बाद अदल भी मर जाएगा और पीछे शहंशाही रह जाएगी। तीसरी या चौथी नस्ल तेरा नाम डुबो देगी, फिर फारस की सरहदें सुकड़ने लगेंगी और यहां कोई और क़ौम आ कर हुक्मरां बनेगी।"

"मानने को जी नही चाहता"–नोशेरवां आदिल ने कहा था–"फारस एक

ताक़त का नाम है। "

"ग़ौर से सुन आदिल बादशाह !" अब्दुल मसीह ने कहा था-"जिस दिमाग़ में शहंशाही घर कर लेती है उस दिमाग़ से अदल व इन्साफ निकल जाता है। तख़्त पर बैठ कर रिआया की मोहब्बत दिल से निकल जाती है। तेरे बाद आने वाले अगर फौज पर भरोसा कर के रिआया का ख़्याल नही करेंगे तो वो अपने ज़वाल को तेज़ करेंगे। उन से तंग आई हुई रिआया उन का साथ देगी जो बाहर के हमले आवर होंगे। मेरी उम्र अभी इतनी नही के तजुर्बे की बिना पर बात करूं लेकिन मैं महसूस कर रहा हूं के आने वाला वक़्त फारस के लिए अपने साथ क्या ला रहा हैं"

अब अब्दुल मसीह की उम्र इतनी ज़्यादा हो गई थी के कमर झुक गई थी। कंधे सुकड़ गए थे। रेशा ऐसा के उस का सर हिल्ता और हाथ कांपते थे। नोशेरवां आदिल की दूसरी नस्ल का शहंशाह शिकस्त के सदमे से मर चुका था और फारस का ज़वाल शुरू हो चुका था।

❁

ख़ालिद के लश्कर ने आज अब्दुल मसीह और उस के सरदारों के क़िलों को मुहासरे में ले रखा था और उस की क़िला बंद फौज का हौसला कमज़ोर होता जा रहा था। उस में इतनी ताक़त नहीं रही थी के दीवर पर जा कर देखता के मुहासरे की और मुसलमानों की कैफियत क्या है और मुसलमानों की नफरी कितनी है। उसे शायद मुसलमानों की नफरी का अंदाज़ा नही था। मुसलमान सिर्फ अठारह हज़ार थे और उन्होंने चार क़िलों को मुहासरे में ले रखा था बल्कि बढ़ बढ़ कर हमले कर रहे थे। अबदुल मसीह अपने महल में गया तो दो पादरी उस के इन्तेज़ार में खड़े थे।

"क्या गिरजे में अपनी फतह और दुश्मन की तबाही की दुआऐं हो रही हैं?"-अब्दुल मसीह ने पादरियों से पूछा।

"हो रही हैं"-बड़े पादरी ने जवाब दिया।

"और तुम यहां क्यों आ गए हो?"-अब्दुल मसीह ने कहा-"जाओ और गिरजे के घंटों को खामोश न होने दो। "

"हम अपनी फौज और लोगों को क़त्ले आम से और इन के घरों को लुट जाने से बचाने आए हैं"-बड़े पादरी ने कहा-"क्या आप देख नही रहे के हमारे कितने सिपाही ज़ख़्मी और हलाक हो चुके हैं? क्या आप दुश्मन की लल्कार और उस के नारे नही सुन रहे हैं?"

"क्या तुम मुझे ये कहने आए हो के मैं हथियार डाल दूं?"

"आप की जगह कोई और क़िला दार होता तो हम ऐसा मशवरा कभी न

देते"-दूसरे पादरी ने कहा-"लेकिन आप दानिशमंद और तजुर्बेकार है। जो आप समझ सकते है वो कोई और नही समझ सकता। हक़ीक़त को देखें। इस से पहले के मुसलमान क़िला सर कर लें और क़िले में दाख़िल हो कर क़त्ले आम और लूट मार शुरू करें और हमारी औरतों को अपने साथ ले जाएं, आप क़िला कुछ शरायत पर पेश कर उन के हवाले कर दें। ये बहुत बड़ी नेकी होगी।"

"मुझे सोचने दें।"-अब्दुल मसीह ने कहा।

"सोचने का वक़्त कहां है!"-पादरी ने कहा-"ऊपर देखें। मुसलामनों के तीर दीवार के ऊपर से अन्दर आ रहे है......और वो देखें। ज़ख्मियों को कंधों पर उठा कर ऊपर से नीचे ला रहे हैं। क्या आप देख नही रहे के दीवार पर और बुर्जों में हमारे तीरअंदाज़ों की तादाद किस तेज़ी से कम होती जा रही है? ना हक़ खून न होने दें।"

क़िले के बाहर मुसलमानों के हल्ले और तीरों की बौछाड़ें तेज़ हो गई थीं, हालांके उन के ज़ख्मियों और शहीदों की तादाद और बढ़ती जा रही थी। अब्दुल मसीह ने पादरियों की मौजूदगी में क़ासिद को भेजा के वो क़िले के दिफाअ की सूरत-ए-हाल मालूम कर के फौरन आंए।

क़ासिद ने वापस आ कर जो सूरत-ए-हाल बताई वो उम्मीद अफ्ज़ा नही थी। दूसरे क़िलों की कैफियत भी ऐसी ही थी जो इसाईयों के हक़ में नहीं जाती थी।

☸

क़िले का दरवाज़ा खुल गया। एक ज़ईफुल उम्र आदमी घोड़े पर सवार बाहर निकला। उस के साथ दो तीन सरदार थे। इन में से एक सरदार ने बुलंद आवाज़ से कहा के वो दोस्ती का पैग़ाम ले कर बाहर निकले हैं। इन के पीछे क़िले का दरवाज़ा बंद हो गया।

"हम तुम्हारे सालार से मिलना चाहते हैं"-अब्दुल मसीह के इस सरदार ने बुलंद आवाज़ से कहा।

दीवार से तीर आने बंद हो गए थे। मुसलमानों ने भी तीर अंदाज़ी रोक ली। ख़ालिद(र०) को किसी ने बताया के दुश्मन बाहर आ गया है।

"कौन है वो?"-ख़ालिद(र०) ने पूछा।

"क़िलादार अब्दुल मसीह खुद आया है"-ख़ालिद(र०) को जवाब मिला।

"उसे कहो मुझे इस से मिलने की कोई ख्वाहिश नहीं"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"मैं जानता हूं वो इन सब का सरदार है। उसे कहो के शाम तक बाक़ी तीनों क़िलेदारों ने भी हथियार न डाले तो हम उन्हें उस हाल तक पहुंचा देंगे जिस में वो हमारी हर शर्त क़ुबूल करने पर मजबूर हो जाएंगे। किसी एक को भी ज़िन्दा नहीं

छोड़ा जाएगा।"

जब अब्दुल मसीह को ख़ालिद(र०) का ये पैग़ाम मिला तो वो जान गया के फतह आख़िर मुसलमानों की ही होगी। उस ने उसी वक़्त अपने सरदारों को दूसरे क़िलों की तरफ दौड़ाया। दूसरे क़िलों के अन्दर भी यही कैफियत थी जो अब्दुल मसीह के क़िले के अन्दर थी। फौजों का हौसला कमज़ोर पड़ गया था और लोगों पर ख़ौफ व हिरास तारी था। उन क़िलों के सरदार हथियार डालने के लिए तैयार थे लेकिन कोई क़िलेदार ये नही चाहता था के हथियार डालने में वो पहल करे और ये तोहमत उस पर लगे के हथियार सब से पहले उस ने डाले थे वरना कोई भी हथियार न डालता। अब्दुल मसीह का पैग़ाम मिलते ही उन्होंने तीरअंदाज़ी बंद कर दी और तीनों क़िलेदार बाहर आ गए। उन्हें ख़ालिद(र०) के सामने ले गए। उस वक़्त ख़ालिद(र०) एक घने दरख्त के नीचे खड़े थे।

"क्या तुम ने हमें कमज़ोर समझ कर हमारा मुक़ाबला किया था?"–ख़ालिद(र०) ने इन क़िलेदारों से कहा–"क्या तुम भूल गए थे के तुम अरबी हो? क्या तुम्हें ये भी याद नहीं रहा के हम भी अरबी है? अगर तुम अजमी होते तो भी तुम्हें ये उम्मीद नही रखनी चाहिए थी के तुम उस क़ौम को शिकस्त दे सकोगे जो अदल व इन्साफ में यक्ता और जिस की तलवार की धाक बैठी हुई है।"

"तू जो कुछ भी कहना चाहता है कह सकता है"–ज़ईफुल उम्र अब्दुल मसीह ने कहा–"तू फातेह है। हमें कुछ कहने का हक़ नहीं क्योंके हम ने तेरे आगे हथियार डाल दिये हैं।"

मशहूर मोअर्रिख़ अबु यूसुफ ने ख़ालिद(र०) और अब्दुल मसीह के मकालमे लिखते हुए ये भी लिखा है के अब्दुल मसीह इस क़दर बूढ़ा हो चुका था के उस की भवें दूध की मानिंद सफ़ेद हो चुकी थीं और इतनी नीचे आ गई थीं के उन से उस की आंखें ढक गई थीं। इसी मोअर्रिख़ के मुताबिक़ ख़ालिद(र०) अब्दुल मसीह से मुतास्सिर हुए।

"तुम्हारी उम्र कितनी है?"–ख़ालिद(र०) ने अब्दुल मसीह से पूछा।

"दो सौ साल"–अब्दुल मसीह ने जवाब दिया।

ख़ालिद(र०) ये जवाब सुन कर बहुत हैरान हुए। उन्होंने इस बूढ़े क़िलेदार को और ज़्यादा ग़ौर से देखा जैसे उन्हें यक़ीन न आ रहा हो के ये शख़्स दो सौ साल से ज़िन्दा है। किसी भी मोअर्रिख़ ने अब्दुल मसीह की सही उम्र नहीं लिखी। वाक़ेयात से पता चलता है के उस की उम्र एक सौ साल से कुछ ऊपर थी।

"तू ने बड़ी लम्बी उम्र पाई है"–ख़ालिद(र०) ने कहा–"ये बता के इतनी लम्बी

ज़िन्दगी में तुम ने सब से ज़्यादा अजीब चीज़ क्या देखी है।"

"नोशेरवां आदिल का अदल व इन्साफ"-अब्दुल मसीह ने जवाब दिया-"इस दौर में हकूमत उस की होती है जिस के बाज़ू में ताक़त और हाथ में तलवार होती है, लेकिन नोशेरवां ने अदल व इन्साफ के ज़रिये लोगों के दिलों पर फतह पाई। तुम कहते हो के मुसलमान अदल व इन्साफ में यक्ता है.....नहीं। मैं नोशेरवां को आदिल मानता हूं।"

"तुम कहां से आए हो?"-ख़ालिद(र०) ने अब्दुल मसीह से पूछा-"कहां के रहने वाले हो?"

"एक गांव है"-अब्दुल मसीह ने ज़वाब दिया-"जहां तक कोई औरत भी सफर करे तो उस के लिए रोटी का एक टुकड़ा भी काफी होता है।"

"क्या तुम अहमक़ नहीं हो?"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"मैं पूछ क्या रहा हूं और तुम जवाब क्या दे रहे हो?....मैं ने पूछा था कहां से आए हो।"

"अपने बाप की रीढ़ की हड्डी से"-अब्दुल मसीह ने जवाब दिया।

"तुम क़िलेदार बनने के क़ाबिल कब हुए थे?"-ख़ालिद(र०) ने झुंझला कर कहा-"मैं ने पूछा है तुम कहां से आए हो?"

"अपनी मां के रहम से"-अब्दुल मसीह ने जवाब दिया।

ख़ालिद(र०) ने जब देखा के इस बूढ़े का बोलने का, सोचने का और जवाब देने का अंदाज़ मज़हका खेज़ सा है तो उन्होंने तफरीह के लिए उस से वैसे ही सवाल करने शुरू कर दिये। ये सवाल व जवाब तक़रीबन तमाम मोअर्रिख़ों ने लिखे हैं।

"तुम कहां जाओगे?"-ख़ालिद(र०) ने पूछा।

"आगे को"-अब्दुल मसीह ने जवाब दिया।

"तुम्हारे आगे क्या है?"

"आख़रत"-अब्दुल मसीह ने जवाब दिया।

"तुम जानते हो कहां खड़े हो?"-ख़ालिद(र०) ने पूछा।

"ज़मीन पर"-अब्दुल मसीह ने जवाब दिया।

ख़ालिद(र०) उस की बे रूख़ी और ला परवाही देख कर उसे ये अहसास दिलाना चाहते थे के वो फातेह सालारे आला के सामने खड़ा है। ख़ालिद(र०) ने मालूम नहीं क्या सोच कर उस से पूछा-"तुम किस चीज़ के अन्दर खड़े हो?"

"अपने कपड़ों के अन्दर"-अब्दुल मसीह ने जवाब दिया।

अब ख़ालिद(र०) को गुस्सा आने लगा। उन्होंने तंज़िया लहजे में कहा-"दुनिया कम अक़्लों को तबाह करती है लेकिन दाना लोग दुनिया को तबाह

करते है। मुझे मालूम नही तुम कम अक्ल हो या दाना। मुझे सही जवाब तुम्हारे लोग ही दे सकते है।"

"ऐ फातेहे सालार!"-अब्दुल मसीह ने कहा-"च्योंटी बेहतर जानती है के उस के बिल के अन्दर क्या कुछ रखा है। ऊंट नही बता सकता।"

ख़ालिद(र०) ने चौक कर अब्दुल मसीह की तरफ देखा। उन का गुस्सा ख़त्म हो गया। उन्होंने महसूस कर लिया के ये शख़्स अहमक़ या कम अक्ल नही। ख़ालिद(र०) ने उसे अपनी बराबरी में बैठा लिया। अब ख़ालिद(र०) के अन्दाज़ में एहतराम था।

"ऐ बुजुर्ग!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"कोई ऐसी बात बता जो तू हमेशा याद रखना चाहता है।"

मोअर्रिख़ लिखते है के अब्दुल मसीह गहरी सोच में खो गया। उस के चेहरे पर उदासी आ गई। उस ने क़िले की तरफ देखा।

"मै उस वक़्त को याद किया करता हूं"-अब्दुल मसीह ने कहा-"जब इन क़िलों के अक़ब में बहते हुए फरात में चीन के बहरी जहाज़ बादबान फैलाए आया करते थे, फिर मुझे जो वक़्त याद है वो नोशेरवां का अहद-ए-हकूमत है। रिआया खुशहाल और मुतमईन थी। कोई झोंपड़ी में रहता था या महल में, नोशेरवां का इन्साफ सब के लिए एक था।"

"मोहतरम बुजुर्ग!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"खुदा की क़सम, तू मुसलमानों के अदल व इन्साफ को भी याद रखेगा....अगर तू अपने लोगों के साथ इस्लाम कुबूल कर ले तो तेरी और तेरे लोगों की हिफाज़त हमारे ज़िम्मे होगी। तुम सब को वही हुकूक़ मिलेंगे जो दूसरे मुसलमानों को मिलते हैं। अगर इस्लाम को कुबूल करने लिए तू अपने आप को अमादा नहीं कर सकता तो तुझे और इन तमाम क़िलेदारों को वो जज़िया अदा करना होगा जो मैं मुक़र्रर करूंगा। अगर तुझे ये भी कुबूल नही तो फिर तुम ने देख ही लिया है के मुसलमान क़िलों को किस तरह सर करते है और उन की तलवार की काट कैसी है।"

"हम से कुछ और मांग हम देंगे"-अब्दुल मसीह ने कहा-"अपना मज़हब नहीं छोड़ेंगे। बता जज़िया कितना होगा।"

"तुझ जैसे दाना से मुझे इस जवाब की तवक्क़ो नहीं थी"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"कुफ्र ने तुझे शिकस्त तक पहुंचाया है। उस अरबी को मै कम अक्ल समझता हूं जो अरबी रास्ते से हट कर अजमी रास्ता इख्तियार कर ले।"

ख़ालिद(र०) के इन अल्फाज़ ने न अब्दुल मसीह को मुतास्सिर किया न दूसरे

किसी क़िलेदार या सरदार को। वो अपने इन्कार पर क़ायम रहे। जब ख़ालिद(र०) ने उन्हें जज़िया की रक़म बताई तो उन्होंने उसे फौरन कुबूल कर लिया। ये रक़म एक लाख नव्वे हज़ार दरहम थी। जो अहद नामा तहरीर किया गया इस के अल्फाज़ ये थे:

बिस्मिल्लाही रह्मानिर्रहीम

ये अहद नामा ख़ालिद(र०) बिन वलीद ने हीरा के सरदारों ऐदी बिन ऐदी, उमरो बिन ऐदी, उमरो बिन अब्दुल मसीह, अयास बिन क़ब्सिया अल्तानी और हैरी बिन अकाल से किया है। इस अहद नामे को हीरा के लोगों ने कुबूल कर लिया है और अपने सरदारों को इस की तकमील का ज़िम्मेदार ठहराया है। इस अहद नामे के मुताबिक़ अहले हीरा ख़िलाफते मदीना को एक लाख नव्वे हज़ार दरहम सालाना अदा किया करेंगे। ये जज़िया हीरा के पादरियों और दीगर राहिबों से भी वसूल किया जाएगा। सिर्फ अपाहिजों, नादार अफराद और तारिकुद दुनिया राहिबों को ये जज़िया माफ होगा.....

"अगर ये जज़िया बाक़ायदगी से अदा किया जाता रहा तो अहले हीरा के तहफ्फुज़ के ज़िम्मेदार मुसलमान होंगे। अगर मुसलामनों ने इस ज़िम्मेदारी में कोताही की तो जज़िया नहीं लिया जाएगा और अगर अहले हीरा ने इस अहद नामे की ख़िलाफ वर्ज़ी की तो मुसलमान अपनी ज़िम्मेदारी से बरी समझे जाऐंगे। ये मुहाएदा रबी-उल-अव्वल 12 हिज्री में तहरीर हुआ।"

❁

हीरा पर मुसलमानों के कब्ज़े की तक़मील हो गई। मुहाएदे के बाद तमाम क़िलेदारों, सरदारों और उमरा ने ख़ालिद(र०) की इताअत कुबूल कर ली। ये दरअसल अमीरूल मोमेनीन अबुबकर(र०) की इताअत थी। ख़ालिद(र०) नुमाईंदगी कर रहे थे। इस के बाद ख़ालिद(र०) ने अपनी तमाम तर फौज के साथ आठ रकअत नफिल शुक्राने के पढ़े। फारिग़ होने के बाद ख़ालिद(र०) ने अपनी फौज से मुख़्तसिर सा ख़िताब किया।

"मूता की लड़ाई में मेरे हाथ में नो तलवारें टूटी थीं लेकिन आतिश परस्तों ने जिस जवां मर्दी से मुक़ाबला किया है इसे मैं हमेशा याद रखूंगा। उन्होंने उल्लीस में हम से जो लड़ाई लड़ी है ऐसी लड़ाई मैं ने पहले नही देखी.......इस्लाम के पास्बानो! फतह व शिकस्त अल्लाह के इख़्तियार में है। उस के नाम को, उस की नेमतों को और उस के रसूल(स०) को हर वक़्त दिल में रखो। हीरा बहुत बड़ी नेमत है जो अल्लाह तबारक व तआला ने हमें अता की है। ये भी दिल में रखो के हमारा जिहाद अभी ख़त्म नही हुआ। जब तक कुफ्र का फित्ना बाक़ी है जिहाद ख़त्म नही होगा।"

ख़ालिद(र०) ने शहीदों के लिए दुआ-ए-मग़फेरत की, फिर ज़ख़्मियों की इयादत को गए। शहीदों की नमाज़-ए-जनाज़ा बड़ा ही रक़्त आमेज़ मंज़र था। वतन से इतनी दूर जा कर शहीद होने वालों के लिए हर आंख में आंसू थे। शहीदों को क़ब्रों में उतारा गया तो ये क़ब्रें तारीख़ के संग हाय मील बन गईं।

ख़ालिद(र०) जब हीरा का नज़्म व नस्क़ संभालने के लिए उस महल नुमा मकान में गए जो अज़ादबा का रिहायशी मकान था तो बे शुमार रूसआ और उमरा तोहफे लिए खड़े थे जो उन्होंने ख़ालिद(र०) को पेश किए। इन में बेश क़ीमत अश्या थीं, हीरे और जवाहरात भी थे। मदीने के मुजाहेदीन हैरान हो रहे थे के कोई क़ौम इतनी दौलत मंद भी हो सकती है।

ख़ालिद ने ये तोहफे कुबूल तो कर लिए लेकिन बोरिया नशीनियों की क़ौम के इस सालारे आला ने अपने लिए एक भी तोहफा न रखा। तमाम तोहफे माले ग़नीमत के साथ अमीरूल मोमेनीन की ख़िदमत में पेश करने के लिए मदीना भेज दिए। माले ग़नीमत ज़्यादा नहीं था क्योंके हीरा वालों ने जज़िया तस्लीम कर लिया और इताअत भी कुबूल कर ली थी।

एक दिलचस्प और अजीब वाक़ेया हो गया।

. कुछ बरस पहले की बात है, रसूले करीम(स०) सहाबा इकराम में बैठे थे और और इधर उधर की बातें हो रहीं थी। बातों का रूख़ कुफ्फार के इलाक़ों की तरफ मुड़ गया और ज़िक्र फारस की शहंशाही का चल निकला। हीरा इस शहंशाही का बड़ा अहम मुक़ाम था। किसी सहाबी ने कहा के हीरा हाथ आ जाए तो उसे फौजी अड्डा बना कर किसरा पर कारी ज़र्बें लगाई जा सकती हैं।

दो मोअर्रिख़ों, बलाज़ी और तिबरी ने लिखा है के रसूल करीम(स०) ने फरमाया के थोड़े ही अर्से बाद हीरा हमारे कब्ज़े में होगा। ये दोनो मोअर्रिख़ लिखते हैं के इस महफल में हीरा की अहमीयत और इस इलाक़े की खूबसूरती की बातें होने लगीं। अब्दुल मसीह मशहूर आदमी था। उस की एक बेटी थी जिस का नाम करामा था। उस के हुस्न के चर्चे ताजिरों वग़ैरा की जुबानी दूर दूर तक पहुंचे हुए थे। उस के अपने मुल्क में उस का हुस्न व जमाल ज़र्बुल मिस्ल बन गया था।

बलाज़ी और तिबरी ने लिखा है के रसूले करीम(स०) की इस महफिल में सीधा सादा और आम सा एक आदमी शवैल भी मौजूद था।

"या रसूल अल्लाह!"-शवैल ने अर्ज़ की-"अगर हीरा फतह हो गया तो अब्दुल मसीह की बेटी करामा मुझे दे दी जाए।"

रसूले करीम(स०) मुस्कुराए और अज़ाराहे मज़ाक़ कहा-"हीरा फतह हो गया

तो करामा बिन्ते अब्दुल मसीह तेरी होगी।"

इन मोअर्रिखों ने ये नही लिखा के हीरा की फतह से कितना अर्सा पहले ये बात हुई थी। अब हीरा फतह हो गया। ख़ालिद(र०) की फौज का एक अधेड़ उम्र सिपाही उस वक़्त उन के सामने जा खड़ा हुआ जब कुछ शरायत अब्दुल मसीह और ख़ालिद(र०) के दरमियान तय हो रही थी।

"क्या नाम है तेरा?"-ख़ालिद(र०) ने अपने इस सिपाही से पूछा-"और मेरे पास क्यों आए हो?"

"सालारे आला!"-सिपाही ने कहा-"मेरा नाम शवैल है। खुदा की क़सम रसूल अल्लाह(स०) ने मुझ से वादा फरमाया था के अब्दुल मसीह की बेटी करामा तुझे दे दी जाएगी। आज हीरा फतह हो गया है। शहज़ादी करामा मुझे दी जाए।"

"क्या तू कोई गवाह पेश कर सकता है?"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"ख़ुदा की की क़सम, मैं रसूल अल्लाह(स०) के वादे की ख़िलाफ वर्ज़ी की जुर्रत नहीं कर सकता लेकिन गवाह न हुए तो मैं तेरी बात को सच नहीं मान सकता।"

शवैल को दो गवाह मिल गए। वो हीरा की फातेह फौज में मौजूद थे। उन्होंने तस्दीक़ की के रसूल अल्लाह(स०) ने उन की मौजूदगी में शवैल से ये वादा फरमाया था।

"रसूल अल्लाह(स०) का वादा मेरे लिए हुक्म का दर्जा रखता है"-ख़ालिद(र०) ने अब्दुल मसीह से कहा-"तुझे अपनी बेटी इस शख़्स के हवाले करनी होगी।"

"ये भी शरायत में लिख लो"-अब्दुल मसीह ने कहा-"के मेरी बेटी करामा इस सिपाही को दे दी जाए।"

ये हुक्म अब्दुल मसीह के घर पहुंचा के करामा मुसलमानों के सालरे आला के पास आ जाए। करामा ने पूछा के उसे क्यों बुलाया जा रहा है। उसे बताया गया के एक मुसलमान सिपाही ने उस की ख्वाहिश की है और उसे इस सिपाही के हवाले किया जाएगा।

"ऐसा न होने दो"-घर में जो एक महल की मानिंद था, दूसरी औरतों का शौर उठा-"ऐसा न होने दो। शाही खानदान की एक औरत को एक सिपाही के हवाले न होने दो जो अरब का वहशी बद्दु है।"

"मुझे उस के पास ले चलो"-करामा ने कहा-"इस मुसलमान सिपाही ने मेरी जवानी के हुस्न की बातें सुनी होंगी। वो कोई जाहिल और अहमक़ लगता है। उस ने किसी से ये नही पूछा होगा के ये कब की बात है के जब मैं जवान हुआ करती थी।"

बलाज़ी की तहरीरों के मुताबिक़ करामा को ख़ालिद(र०) के सामने ले जाया गया, शवैल मौजूद था। उस ने एक ऐसी बुढ़िया देखी जिस के चेहरे पर झुर्रियां थी और बाल सफेद हो चुके थे। मोअर्‌रिख तिबरी ने करामा की उम्र अस्सी साल लिखी है। उस के बाप अब्दुल मसीह ने ख़ालिद(र०) को अपनी उम्र दो सौ साल बताई थी। बाज़ मोअर्‌रिख़ इन उम्रों को तस्लीम नही करते। अब्दुल मसीह की उम्र एक सौ साल से ज़रा ही ज़्यादा थी और करामा की उम्र साठ सत्तर साल के दरमियान थी। बहर हाल करामा ज़ईफुलउम्र थी।

शवैल ने उसे देखा तो उस के चेहरे पर खुशी के जो आसार थे वो उड़ गए और वो मायूस हो गया। अचानक़ उसे एक ख्याल आ गया।

"अमीर लश्कर!"-श्सवैल ने कहा-"ये शर्त लिख ली गई है के करामा बिन्त अब्दुल मसीह मेरी लौंडी है। अगर ये मुझ से आज़ादी चाहती है तो मुझे रक़म अदा करे।"

"कितनी रक़म?"-करामा ने पूछा।

"एक हज़ार दरहम!"-शवैल ने कहा-"मैं अपनी मां का बेटा नहीं होंगा के एक दरहम भी बख़्श दूं।"

करामा के बूढ़े होंटों पर मुस्कुराहट आ गई। उस ने उस ख़ादिमा को जो उस के साथ आई थी, इशारा किया। ख़ादिमा दौड़ी गई और एक हज़ार दरहम ले आई। करामा ने ये दरहम शवैल के हवाले कर दिए और आज़ाद हो गई।

शवैल का ये आलम था के एक हज़ार दरहम देख कर हैरान हो रहा था जैसे उस के होश गुम हो गए हों। उस ने अपने साथियों को जा कर फातेहाना लहजे में बताया के उस के साथ धोका हुआ था के उस ने एक ज़ईफुल उम्र औरत को जवान समझ लिया था लेकिन उस ने उस से एक हज़ार दरहम कमा लिए।

"सिर्फ एक हज़ार दरहम?"-उस के साथी ने उसे कहा-"तू सारी उम्र अहमक़ ही रहा। करामा शाही ख़ानदान की औरत है। उस से तू कई हज़ार दरहम ले सकता था।"

"अच्छा?"-शवैल ने मायूस हो कर कहा-"मैं तो समझता था के एक हज़ार दरहम से ज़्यादा रक़म होती ही नहीं।" उस के साथियों के एक ज़ोरदार क़हक़हे ने उसे और ज़्यादा मायूस कर दिया।

ख़ालिद(र०) ने माले ग़नीमत के साथ तमाम तोहफे मदीने भेज दिए थे। मदीने से ख़ालिद(र०) के लिए अमीरूल मोमेनीन ने पैग़ाम भेजा के ये तोहफे अगर माले ग़नीमत में शामिल है या जज़िये में तो क़ाबिले कुबूल हो सकते हैं। अगर नही तो

जिन्होंने ये तोहफे दिए है उन से इन की क़ीमत मालूम कर के जज़िये में शामिल कर लो। अगर तुम जज़िया वसूल कर चुके हो तो तोहफे की रक़म उन लोगों को वापस कर दो।

ख़ालिद(र०) ने उन सब को बुला कर इन्हें तोहफों की क़ीमत अदा कर दी।

हीरा की फतह के बाद चन्द दिनों में ख़ालिद(र०) ने वहां का नज़्म व नस्क़ रवां कर दिया और हीरा के उमरा को ही इन्तेज़ामिया का ज़िम्मेदार बना दिया।

"मेरे भाईयो!"–ख़ालिद(र०) ने अपने सालारों से कहा–"मेरे पास वक़्त नहीं के मैं यहां बैठा रहुं लेकिन नज़्म व नस्क़ की बहाली बहुत ज़रूरी है। इस से ज़्यादा ज़रूरी ये है के नज़्म व नस्क़ को इस बुनियाद पर रवां किया जाए के इस से लोगों को फायदा पहुंचे। वो सुकून और इतमेनान महसूस करें के उन के जान व माल और उन की इज़्ज़त व आबरू का तहफ़्फ़ुज़ हासिल है। खुदा की क़सम, मैं इन लोगों पर, इन इसाईयों और इन आतिश परस्तों पर साबित कर दूंगा के इस्लाम वो मज़हब है जो जुल्म को बहुत बड़ा गुनाह समझता है। रिआया को अपनी औलाद समझो। क्या तुम ने देखा नहीं के मैं ने नज़्म व नस्क़ इन्ही लोगों के सुपुर्द कर दिया है, रब्बे काबा की क़सम, मैं इन पर अपना हुक्म नहीं ठूसूंगा।"

अपना हुक्म न ठूंसने के नताइज चन्द दिनों में सामने आ गए। इस्लाम का बुनियादी उसूल यही था के लोगों के दिल जीतो मगर दिल जीत कर इन्हें धोका न दो। इन्हें इन के हक़ूक़ दो। ख़ालिद(र०) इस्लाम के पहले सालार थे जिन्होंने मदीने से निकल कर किसी दूसरी क़ौम के इलाक़े फतह किए और इन्हें इस्लाम के इस बुनियादी उसूल पर टमल करने का मौक़ा मिला। मिस्र के मोहम्मद हुसैन हैकल ने बहुत से मोअर्रिख़ों का हवाला दे कर लिखा है के ख़ालिद(र०) ने दुश्मनों के सर उड़ाने शुरू किए तो फरात को लाल कर दिया और ऐसे किसी आदमी को ज़िन्दा न छोड़ा जिस की तरफ से दीने इस्लाम को ज़रा सा भी ख़तरा था। ख़ालिद(र०) ज़ाती दुश्मनी के क़ायल नहीं थे। मुतास्सिब तारीख़ दानों ने ख़ालिद(र०) को ज़ालिम सालार कहा है लेकिन ख़ालिद(र०) ने जो भी इलाक़ा फतह किया वहां का इन्तेज़ाम मफतूहा उमरा व रोऊसा के सुपुर्द कर दिया। अल्बत्ता इन के निगरां यानी बालाई हुक्काम

मुसलमान मुकर्रर किए जाते थे।

हीरा को फतह कर के ख़ालिद(र०) ने सारे फारस को फतह नही कर लिया था बल्कि ख़ालिद(र०) ख़तरों में घिर गए थे। आतिश परस्त उन पर चारों तरफ से हमला कर सकते थे। अगर बड़े पैमाने पर हमला न करते तो शब खून मार मार कर मुसलमानों की फौज को नुक़सान पहुंचा सकते थे लेकिन आतिश परस्तों ने ऐसी कोई कारर्वाई न की। इसकी कई और वजूहात थीं जिन में एक ये थी के मफतूहा इलाक़ो के लोग मुसलमानों के सुलूक से मुतास्सिर हो कर उन के हामी और मआविन बन जाते थे।

हीरा के नवाही इलाके में वीरनातफ नाम की एक बस्ती थी जो इसाईयों की बस्ती कहलाती थी। वहां बहुत बड़ा गिरजा था जिस के पादरी का नाम सलूबा बिन नस्तूना था। वो इसाईयों का मज़हबी पेशवा ही नहीं उन का असकरी क़ायद भी था। वो मैदाने जंग में कभी नहीं गया था लेकिन जंग व जदाल के फन में महारत रखता था।

फारस के इसाई लल्कार कर मुसलमानों के मुक़ाबले में आए थे और मुसलमानों की तलवारों और बरछियों से बुरी तरह कटे थे। ऐसे इसाईयों की तादाद ख़ासी कम हो गई थी जो लड़ने के क़ाबिल थे। या औरतें ज़िन्दा थीं। सलूबा बिन नस्तुना अकसर कहा करता था के मज़हब सिर्फ एक ज़िन्दा रहेगा और ये इसाईयत होगी।"

"न ज़र्तुशत रहेगा न मदीने का इस्लाम!"-उस ने अपने वाज़ में कई बार कहा था-"सब मिट जाऐंगे और ज़मीन पर यसूअ मसीह की हुकूमत होगी।"

हीरा फतह होने तक लड़ने वाले हज़ार हा इसाई मिट गए थे। बाक़ी मुसलमानों के डर से भाग कर इधर उधर ज़ा छुपे थे। इन के सरकर्दा अफराद ने पादरी सलूबा बिन नस्तूना के साथ राब्ता रखा हुआ था। सलूबा ने कोशिश की थी के इसाईयों को यक्जा और मुत्तेहिद करके मुसलमानों पर शब खून मारने के लिए तैयार करे लेकिन इसाईयों पर मुसलामनों की ऐसी दहशत बैठ गई थी के वो शब खून और छापा मार जंग के लिए तैयार न हुए।

❈

"मुक़द्दस बाप!"-एक रात एक नामूर जंगजू इसाई शमील बोरज़ाना ने पादरी सलूबा बिन नस्तूना ने कहा-"क्या तुम इस पर यक़ीन रखते हो के गिरजे की घंटियां और तुम्हारे वाज़ इस तबाही को रोक लेंगे जो हमारी तरफ तेज़ी से बढ़ी आ रही है?"

"नहीं"-पादरी सलूबा ने कहा-"मेरे वाज़ और गिरजे के घंटे की आवाज़ें अब

इस तबाही को नही रोक सकती।"

"फिर तुम हमें इजाज़त क्यों नही देते के हम मुसलमानों की फौज पर हर रात शब खून मारें?" -शमील बोरज़ाना ने कहा "मदीने के मुसलमान जिन्न नही, भूत नही, इन्सान है। हमारी तरह के इन्सान हैं।"

"शमील!" -पादरी सलूबा ने कहा "बेशक वो इन्सान हैं लेकिन तुम्हारी तरह नही। मै ने इन में कुछ और ही बात देखी है.....वो फतह का अज़्म ले कर आए हैं। अगर उन्होंने अपने जिस्मों के मुताल्लिक़ यही रवैया रखा तो आख़री फतह भी उन्ही की होगी।"

"मुक़द्दस बाप!" -शमील ने कहा- "मैं जिस्मों वाली बात नही समझा।"

"समझने की कोशिश करो" -पादरी सलूबा ने कहा- "ये लोग जिन्हें किसरा उर्दशेर अरब के बद्दु कहता रहा है, जिस्मानी आसाईशों और लज़्ज़तों को कुबूल नहीं करते।"

"मुक़द्दस बाप की ज़बान से दुश्मन की तारीफ अच्छी नहीं लगती" -शमील ने कहा।

"अगर तुम अपने आप में दुश्मन के अच्छे औसाफ पैदा कर लो तो तुम शिकस्त से बच सकते हो" -पादरी सलूबा ने कहा- "क्या तुम्हारे दोस्तों ने मुसलमानों को जाल में फांसने के लिए पन्द्रह हसीन लड़कियां नहीं भेजी थीं? क्या तुम ये समझते हो के तुम लोग जो कुछ करते हो इस का मुझे इल्म नही होता? तुम्हारी तलवारों की धार कुंद हो चुकी है इस लिए तुम लोगों ने औरतों को इस्तेमाल किया है। क्या तुम इन्कार करोगे?"

"नहीं मुक़द्दस बाप!" -शमील ने शर्मसार सा हो के कहा- "हमारे एक बुजुर्ग ने कहा था के एक तलवार एक वार में एक आदमी को काट सकती है लेकिन एक हसीन औरत का एक वार एक सौ आदमियों को घयल कर देता है। मुसलमान सवार घोड़ों को झील से पानी पिलाने लाया करते हैं। वो चार चार छः छः की टोलियों में आते हैं झील के इर्द गिर्द ऊंची चट्टाने और घना जंगल है। हमारी लड़कियों ने मुसलमान सवारों को अपनी तरफ खींचने की बहुत कोशिश की लेकिन उन पर कुछ असर न हुआ। हमारी बाज़ लड़कियां नीम बरहना हो कर इन्हें चट्टानों के पीछे चलने के इशारे करती रहीं लेकिन हुआ ये के बाज़ सवार मुंह फेर लेते और बाज़ हंस पड़ते थे।"

"और मुझे ये भी मालूम है शमील!" -पादरी सलूबा ने कहा- "के तुम लोगों ने मुसलमानों के गश्ती संतरियों को भी फांसने की कोशिश की थी और तुम लोगों ने ये

भी सोचा था के मुसलामनों के सालारों को और ख़ालिद(र०) बिन वलीद को क़त्ल करने के लिए लड़कियों को इस्तेमाल किया जाए।"

"हां मुक़द्दस बाप!"–शमील ने कहा–"हम ने ऐसा सोचा था।"

"फिर इस सोच पर टमल क्यों न किया?"

"इस लिए न किया के जिस फौज के सिपाहियों का किरदार इतना मज़बूत है, उस के सालार तो फरिश्तों जैसे होंगे"–शमील ने जवाब दिया–"अब हमारे सामने यही एक सूरत रह गई है के मुसलमान फौज पर शब खून मारने शुरू कर दें और इन्हें इतना नुक़सान पहुंचाऐं के ये पस्पाई पर मजबूर हो जाऐं।"

"क्या तुम किसरा की फौज से ज़्यादा ताक़तवर हो?"–पादरी सलूबा ने कहा–"वो जो कहते थे के ज़मीन पर कोई ताक़त इन के मुक़ाबले में उठने की जुर्रत नहीं कर सकती, अब कहां है। आग को पूजने वालों के तमाम नामूर सालार मुसलमानों के हाथों कट गए हैं हम ने इन की ख़ातिर मुसलामनों से लड़ कर ग़ल्ती की है।"

"तो क्या मक़द्दस बाप, तुम ये कहना चाहते हो के हम मुसलामनों के साथ दुश्मनी न रखें?"–शमील ने हैरान सा हो के पूछा।

"हां!"–पादरी सलूबा ने जवाब दिया–"मैं यही कहना चाहता हूं, बल्कि मैं मुसलमानों के साथ दोस्ती करना चाहता हूं।"

"मुक़द्दस बाप!"–शमील ने कहा–"फिर तुम कहोगे के तुम मुसलामनों के मज़हब को भी कुबूल करना चाहते हो।"

"नहीं, ऐसा नहीं होगा"–पादरी सलूबा ने कहा–"जब से हीरा पर मुसलमानों का क़ब्ज़ा हुआ है, मैं यही देख रहा हूं के इन से हमारे मज़हब को कितना कुछ ख़तरा है। मैं ने देख लिया है के इसाईयत को क़ोई ख़तरा नहीं। मुसलमान अपने मज़हब को कुबूल करने की दावत देते हैं, वो ज़बरदस्ती अपना मज़हब मफ्तूहा लोगों पर नहीं ठूंसते.....क्या इन्हें मालूम नहीं के यहां एक गिरजा है जिस में मुझ जैसा जहांदीदा और मज़हब पर मर मिटने वाला पादरी मौजूद है....इन्हें मालूम है शमील! मैं दो ईतवार गिरजे में आने वाले इसाईयों के हुजूम में दो अजनबी आदमियों को देखता रहा हूं। मैं ने उन के गलों में सलीबें लटकती देखी थीं। वो हर लिहाज़ से इसाई लगते थे लेकिन मेरी दूर बीन आंखों ने भांप लिया था के दानों मसुलमान हैं और वो मदीने के नहीं फारस के रहने वचाले है। वो वलीद के बेटे ख़ालिद के जासूस थे। मैं अपने वाज़ में मोहतात रहा।"

"मुक़द्दस बाप!"–शमील ने कहा–"अगर तुम मुझे इशारा कर देते तो वो दोनों

ज़िन्दा वापस न जाते।"

"फिर इस गिजे की ईंट से ईंट बज जाती"–पादरी सलूबा ने कहा–"अक्ल और जोश में यही फर्क़ है शमील! तुम में जोश है और मै अक्ल से काम ले रहा हूं.... .मै तुम लोगों को मसलमानों पर शब खून मारे और लड़ने की इजाज़त नही दूंगा।"

☸

दो तीन रोज़ बाद पादरी सलूबा बिन नस्तूना गिजे में तमाम इसाई सरदारों से कह रहा था–"....हक़ीक़त को देखो। किसरा की इतनी ज़बर्दस्त फौज मदीने की क़लील सी फौज के मुक़ाबले में नही ठहर सकी। तुम ने भी मुसलमानों का मुक़ाबला कर के देख लिया है। अब मुसलमानों से टकरा कर तुम तबाह हो जाने के सिवा कुछ नहीं कर सकते। वक्त का साथ दो। मुसलमानों ने तुम्हारे मज़हब के लिए कोई ख़तरा पैदा नही किया। उन्होंने हमें और आतिश परस्तों को भी अपनी अपनी इबादत गाहों में इबादत की इजाज़त दे रखी है। मुसलमानों ने अदल व इन्साफ में जो मसावत क़ायम की है वो तुम खुद देख रहे हो.....

"और तुम ये भी देख रहे हो के तुम इन के ख़िलाफ आतिश परस्तो के दोश बदोश लड़े थे लेकिन मुसलुमानों ने तुम्हारे ख़िलाफ किसी क़िस्म की इन्तेक़ामी कारर्वाई नही की। उन्होंने काशतकारों की ज़मीनों पर कब्ज़ा नही किया। इन की फसलों में अपने घोड़े और ऊंट नहीं छोड़े बल्कि आतिश परस्त हाकिम इन ग़रीब किसानों पर जो ज़ुलम व तशद्दुद करते और उन की खेतियों की पैदावार उठा ले जाते थे, ये लूट खसूट ख़त्म हो ग़ई है। इस हक़ीक़त से इन्कार न करो के मुसलमान रिआया को पूरे हक़ूक़ दे रहे हैं".

"तुम पर खुदाए यसू मसीह की रहमत हो!"–एक सरदार ने पादरी सलूबा को टोकते हुए कहा–"क्या तुम हमें ये तरग़ीब दे रहे हो के हम मुसलमानों की इताअत क़ुबूल कर लें?"

"क्या ये हमारी बेइज़्ज़ती नहीं?"एक और सरदार ने कहा।

"मुसलमानों ने तुम्हारी इज़्ज़त की तरफ आंख उठा कर भी नही देखा"–पादरी सलूबा ने कहा–"क्या तुम ने इन्हें फांसने और गुमराह करने के लिए अपनी लड़कियों को नही भेजा था? क्या वो तुम्हारी लड़कियों को उठा कर नहीं ले जा सकते थे?..... और मत भूलो के किसरा के हाकिमों ने तुम्हारी कितनी लड़कियों के साथ ज़बरदस्ती शादी की थी। जिसे जो लड़की अच्छी लगी वो उसे हुकमन ले गया ...और ये भी सोचो के फसारस के वो सालार और कमांडर कहां है जिन के साथ मिल कर तुम मुसलामनों के ख़िलाफ लड़े थे? क्या उन्होंने तुम से पूछा है के तुम किस हाल में हो,

क्या उन्होंने आकर देखा है के तुम में से जो मारे गए है, उन की बीवियां किस हाल में हैं? उन के बच्चे किस हाल में हैं? और मुसलमान तुम्हें सज़ा तो नही दे रहे?

"बे शक वो हमें भूल गए है।" -एक बूढ़े सरदार ने कहा।

"तू बजा कहता है मुक़द्दस बाप!"-एक और सरदार बोला-"अब बता हमें क्या करना चाहिए। तू हमें किस रास्ते पर ले जाना चाहता है।"

"ये तुम्हारी सलामती का रास्ता होगा"-पादरी सलूबा ने कहा-"इस में तुम्हारे जान व माल की और तुम्हारे मज़हब की सलामती है....मै मुसलमानों की इताअत कुबूल कर रहा हूं और मैं बांक़िया और बस्मा के इलाक़े की तमाम क़ाबिल-ए-काश्त अराज़ी का लगान वसूल कर के मुसलमानों को अदा किया करूंगा।"

❋

तक़रीबन तामम मोअररिख़ों ने लिखा है के मुसलमानों के हुस्ने सलूक, अदल व इन्साफ और असलूबे हकूमत से मुतास्सिर हो कर देर नातिफ के पादरी सलूबा बिन नस्तूना ने सब से पहले ख़ालिद(र०) के सामने जा कर इताअत कुबूल की और दस हज़ार दीनार ख़ालिद(र०) को पेश किए। इस रक्म के साथ वो हीरे और बेश क़ीमत मोती भी थे जो किसरा उर्दशेर ने पादरी सलूबा को तोहफे के तौर पर दिए थे। ये मोती दरअसल रिश्वत थी जो उर्दशेर ने इसाईयों को मुसलमानों के ख़िलाफ लड़ाने के लिए पादरी सलूबा को दी थी। ख़ालिद(र०) के हुक्म से एक मुहाएदा लिखा गया:

"ये मुहाएदा मदीने के सालार ख़ालिद(र०) बिन वलीद और सलूबा बिन नस्तूना की कौम के साथ तय हुआ और तहरीर किया जाता है। इस के मुताबिक़ सलूबा बिन नस्तूना इसाई क़ारैम की तरफ से दस हज़ार दीनार सालाना बतौर जज़िया अदा करेगा और किसरा के हीरे और मोती इस रक्म के अलावा वसूल किए जाऐंगे। जज़िया की रक्म सिर्फ इन इसाईयों से हर साल वसूल की जाया करेगी जो इस की इस्तताअत और तोफीक़ रखते हैं और जो कमाने के क़ाबिल होगे। हर किसी को जज़िया का इतना ही हिस्सा देना पड़ेगा जितना वो आसानी से अदा कर सकेगा। इस मुहाएदे की रू से मुसलामनों पर ये फर्ज़ आयद होता है के वो इसाईयों की बस्तियों बांक़िया और बस्मा को हर तरह का तहफ्फुज़ मोहइया करें। पादरी सलूबा बिन नस्तूना को इस की क़ौम का नुमाईंदा तस्लीम किया है। इस मुहाएदे पर जो ख़ालिद(र०) बिन वलीद ने किया है, तमाम मुसलमान रज़ामंद है और इस पर टमल करेंगे।"

पादरी सूलबा उस इलाक़े की नामूर शख़्सियत थी। इर्द गिर्द के बड़े बड़े सरदारों और सरकर्दा अफराद ने जब देखा के सलूबा ने ख़ालिद(र०) की इताअत कुबूल कर

ली है तो वो सब हीरा पहुंचे और ख़ालिद(र०) की इताअत कुबूल करने लगे। उन्होंने जो नक़द जज़िया अदा किया वो बीस लाख दरहम था। मुसलमानों की शुजाअत की धाक दूर दूर तक बैठ गई। बड़ा ही वसी इलाक़ा मुसलमानों के ज़ेर नगीं आ गया। ख़ालिद(र०) ने वक़्त ज़ाए किए बग़ैर इस इलाक़े में इस्लामी हुकूमत क़ायम कर दी और इन्ही सरदारों में उमरा मुतख़िब कर के मुख़तलिफ इलाक़ों में मुक़र्रर कर दिए। इस के साथ ही अपनी फौज के कुछ दस्ते इस मक़सद के लिए सारे इलाक़े में फैला दिए के कही से इस्लामी हुकूमत के ख़िलाफ बग़ावत न उठ सके।

ये दस्ते घुड़सवार थे और बर्क रफ्तार। ख़ालिद(र०) ने अपने तीन बड़े ही तेज़ और फुर्तीले सालारों-ज़रार बिन लाज़ौर, क़ाक़आ और मिस्ना बिन हारिसा-को इन दस्तों के साथ भेजा था। इन तीनों का अंदाज़ ऐसा जारहाना था के जिधर जाते थे उधर लोग दुबक जाते और इन के सरदार आगे आ कर इताअत कुबूल कर लेते थे। इस तरह जून 633 ई० (रबी उल आख़िर 12 हिज्री) मै दजला और फरात के दरमियानी इलाक़े इस्लामी सल्तनत में आ गए।

☸

तख़्त व ताज के हवस कारों ने अपनी क़ौमों को तारीख़ की तारीकियों में गुम किया और अपने मुल्क दुश्मन के हवाले किए हैं। फारस की शहंशाही जो ना क़ाबिले तस्ख़ीर समझी जाती थी और जिस की फौज ज़िरा पोश थी, अब ज़वाल पज़ीर थी। मुसलामनों की फौज की नफरी फारस की फौज के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं थी। ये नफरी ज़िरा पोश भी नहीं थी। और आतिश परस्तों की फौज की तरह अपनी ज़्यादा मुसल्लेह भी नहीं थी मगर आतिश परस्त शिकस्त पे शिकस्त खाते चले गए और फारस के दारूल हुकूमत मदाइन को ख़तरा पैदा हो गया। वहां अब किसरा उर्दशेर नही था। वो सदमे से मर गया था।

तारीख़ गवाह है और ये कुर्आन का फरमान है के अल्लाह जिस क़ौम को उस के आमाल बद की सज़ा देने पर आता है उस पर ना अहल और खुद ग़र्ज हुक्मरान मुसल्लत कर देता है जो इसी क़ौम के अफराद होते हैं। अल्लाह का ये क़हर आतिश परस्तों पर गिरना शुरू हो गया था। मदाइन में उर्दशेर की मौत के बाद उस के ख़ानदान में तख़्त व ताज की जंग शुरू हो चुकी थी।

ख़ालिद(र०) के जासूस मदाइन में ही नहीं, किसरा के महल में भी पहुंच थे। वो जो ख़बरें भेज रहे थे वो ख़ालिद(र०) के लिए उम्मीद अफज़ा थी।

"मदाइन का तख़्त अब वो तख़्ता बन चुका है हिस पर मईयत को गुसल दिया जाता है"-एक जासूस ने मदाइन से आ कर ख़ालिद(र०) को बताया-"ये तख़्त

किसरा के तीन शहज़ादों की जानें ले चुका है। उर्दशेर की मुताद्दिद बीवियां है और हर बीवी के जवान बेटे है। हर बीवी अपने बेटे के सर पर किसरा का ताज रखना चाहती है। उर्दशेर के मरने के बाद एक शहज़ादे को तख़्त पर बैठाया गया। दो रोज़ बाद वो अपने कमरे में इस हालत में मुर्दा पाया गया के उस का सर उस के धड़ से अलग था। दो निहायत खूबसूरत और नौजवान लडकियों को, दरबान को और दो पहरेदारों को जल्लाद के हवाले कर दिया गया। इस शहज़ादे के क़त्ल के शुबहे में इन सब के सर क़लम कर दिए गए......

"इस की जगह उर्दशेर की एक और बेवा के बेटे के सर पर किसरा का ताज रखा गया। तीसरे दिन उस ने शराब पी और बे होश हो गया और ज़रा देर बाद मर गया। अब सात आठ आदमियों और तीन जवान औरतों को शहज़ादे को शराब में ज़हर पिलाने के शुबह में क़त्ल किया गया......सालारे आला! तीसरा शहज़ादा तख़्त पर बैठा दूसरे रोज़ महल के बाग़ में एक बड़ी दिलकश रक़्कासा के साथ टहल रहा था। कहीं से बैक वक्त दो तीर आए। एक उस की आंख में और दूसरा उस की शहरग में उतर गया। किसरा का तख़्त फिर खाली हो गया....

"तख़्त अभी तक खाली है। किसरा के वज़ीर और दो सालारों ने ताजपोशी का सिलसिला रोक दिया है। उन्होंने फैसला किया है के जो इलाक़े फारस की शहंशही में रह गए है, इन्हें मुसलमानों से बचाया जाए। उन्होंने दजला के पार अपनी फौज को इस तरह फैला दिया है के हम जिस तरफ से भी पेश क़दमी करें, हमें रोक लिया जाए।"

"उन की इस फौज की नफरी कितनी होगी?" -ख़ालिद(र०) ने पूछा।

"हम से दुगनी होगी?"-जासूस ने जवाब दिया-"इस से ज़्यादा होगी कम नही हो सकती। मदाइन दजला के पार हैं। आतिश परस्त हमें दरिया पार नही करने देंगे।"

"अल्लाह के दरिया अल्लाह की राह में लड़ने वालों को नही रोक सकते"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"आतिश परस्त हमें रोकने के क़ाबिल नही रहे। जिस क़ौम के सरदारों में फूट पड़ जाती है उस क़ौम की क़िस्मत में तबाही के सिवा कुछ नही रहता।"

❁

"हम मदाइन की तरफ कूच कर रहे हैं"-ख़ालिद(र०) ने अपने सालारों से कहा-"हम दुश्मन को संभलने की मोहलत नहीं देंगे।"

ख़ालिद(र०) अपने सालारों को कूच के अहकाम दे ही रहे थे के इन्हें इत्तेला दी गई के मदीने से ख़लीफातुल मुस्लिमीन का क़ासिद आया है। ख़ालिद(र०) ने क़ासिद को फौरन अन्दर बुलाया।

"क्या मदीने के लोग हमें अच्छे नाम से याद करते है?" -ख़ालिद(र०) ने क़ासिद से पूछा।

"खुदा की क़सम, मदीने की हवाऐं भी आप को याद करती हैं" -क़ासिद ने कहा- "अमीरूलमोमेनीन मस्जिद में आप का ज़िक्र करते हैं। वो कई बार कह चुके है। - क्या माऐं ख़ालिद(र०) जैसा एक और बेटा जन सकेंगी? -लोग हर रोज़ आप की ख़बर का इन्तेज़ार करते है।"

"पैग़ाम क्या है?"

क़ासिद ने पैग़ाम ख़ालिद(र०) को दे दिया। ख़ालिद(र०) पढ़ते जा रहे थे और उन के चेहरे का तास्सुर बदलता जा रहा था। वहां जो सालार मौजूद थे, वो पैग़ाम सुनने को बेताब हो गए।

"अमीरूलमोमेनीन के सिवा मुझे कौन रोक सकता था" -ख़ालिद(र०) ने कहा और सालारों से मुख़ातिब हो कर बोले- "अमीरूलमोमेनीन ने हुक्म भेजा है के अयाज़ बिन ग़नम दोमतुल जंदल में लड़ रहा है। अल्लाह उसे फतह अता फरमाए। उधर से फारिग़ हो कर वो हमारे पास आ जाएगा। अमीरूलमोमेनीन ने कहा है के जब अयाज़ अपनी फौज ले कर हमारे पास आजाए तो हम आगे बढ़ें। उस के आने तक हम जहां हैं वहीं रूके रहें।"

❁

ख़ालिद(र०) के चेहरे पर जो रौनक़ और आंखों में फतह व नुसरत की जो चमक हर वक़्त रहती थी वो बुझ गई और वो गहरी सोच में खो गए। सालारों के इस इजलास पर सन्नाटा तारी हो गया जिस की वजह ये नहीं थी के ख़लीफातुल मुस्लिमीन ने पेशक़दमी रोक दी थी बल्कि वजह ये थी के ख़ालिद(र०) के चेहरे पर ऐसा तास्सुर कभी क़भी आया करता था और ये तास्सुर एक तूफान का पेश ख़ेमा हुआ करता था। किसी भी सालार को ख़लीफा के इस हुक्म के मुताल्लिक़ कोई बात कहने की जुर्रत न हुई।

चन्द मिन्ट बाद ख़ालिद(र०) गहरी सोच से बेदार हुए और क़ासिद की तरफ देखा।

"अल्लाह तुझे सफर में सलामती और रहमत अता करे!" -ख़ालिद(र०) ने कहा- "आराम करना चाहता है तो कर ले और वापसी का सफर इख़्तियार कर..... अमीरूलमोमेनीन से मेरा और मेरे साथियों का सलाम कहना, फिर कहना के जंग के हालात को वही बेहतर समझते है जो मैदाने जंग में होते है। मुहाज़ से इतनी दूर बैठ कर कोई फैसला करना लड़ने वालों के लिए नुक़सान दह भी हो सकता है.....फिर कहना

के वलीद का बेटा ख़िलाफत की हुक्म अ़दूली की जुर्रत नहीं करेगा लेकिन हालात ने मजबूर किया और इस्लाम को ख़तरा लाहक़ हुआ तो मैं हुक्म अदूली की परवाह नही करूंगा। मैं ख़िलाफत-ए-मदीने का अमीन और इस्लाम का पास्बान हूं। मैं दुश्मन को अपने ऊपर आता देख कर एक खश्स के हुक्म को एक तरफ रख दूंगा। मुझे खुश्नूदी अल्लाह की दरकार है अल्लाह के किसी बंदे की नहीं। मैं मालूम करूंगा के सालार अयाज़ के मुहाज़ की सूरते हाल क्या है। हो सकता है उसे मदद की ज़रूरत हो, और ये भी हो सकता के वो अपने मुहाज़ से जल्दी फारिग़ न हो सके और आतिश परस्त इस अर्से में संभल जाएं.....

"और ख़लीफातुल मुस्लिमीन से कहना के हम ने ज़र्तुश्त की आग को सर्द कर दिया है। अल्लाह ने हमें ऐसी फतह अता की है जिस ने किसरा के महल को शैतान का बसेरा बना दिया है। उर्दशेर के तख़्त पर जो कोई बैठता है वो दो रोज़ बाद अपने भाइयों के हाथों क़त्ल हो जाता है। फारस की शहंशाही और इस की शान व शौक़त को हम ने दजला और फरात में डुबो दिया है। हीरा जिसे फारस का हीरा कहते हैं, हमारा फौजी अड्डा है। हमारे लिए दुआ करते रहें।"

क़ासिद की रवांगी के बाद ख़ालिद(र०) ने एक कमांडर को बुला कर कहा के अपने साथ दो बड़े तेज़ और तवाना सिपाही ले कर बहुत तेज़ रफ्तार से दोमतुल जंदल जाए और ग़ौर से देखे के वहां की सूरते हाल क्या है और सालार अयाज़ बिन ग़नम कब तक फारिग़ हो सकेंगे और क्या इस के जल्दी फारिग़ होने का इम्कान है भी या नहीं।

कमांडर उसी वक़्त रवाना हो गया।

"ख़लीफातुल मुस्लिमीन के इस हुक्म को जो तुम ने सुना है, ज़हन से उतार दो-ख़ालिद(र०) ने अपने सालारों से कहा-"दिल में ख़िलाफत-ए-मदीने का पूरा अहतराम रखते हुए इन हालात को देखो जो हम ने आतिश परस्तों के लिए पैदा कर दिए हैं। अगर हम अयाज़ के इन्तेज़ार में यहीं बैठे रहे तो किसरा की फौज को संभलने का वक़्त मिल जाएगा। खुदा की क़सम, तुम सब यक़ीन के साथ कह सकते हो के किसरा की फौज पर तुम ने जो ख़ौफ तारी कर दिया है वो इन्हे क़िसी मैदान में तुम्हारे मुक़ाबले में नही ठहरने देगा....

"और मदाइन के महलात में तख़्त नशीनी पर जो क़त्ल व ग़ारत हो रही है वो हमारे हक़ में जाती है। क़ौम के सरदारों में जब तख़्त नशीनी वजहे पैकार बन जाती है तो फौज ऐसी तलवार की मानिंद हो जाती है जो बड़े ही ढीले और कमज़ोर हाथों में हो।"

"हां, इब्ने वलीद!"–सालार आसिम बिन उमरों ने कहा–"किसरा के जिन सालारों ने फारस के बचे हुए इलाक़ों में अपनी फौज फैला दी है वो सालार भी तख़्त के ख्वाहिश मंद होंगे। वो हम पर फतह हासिल कर के फारस के तख़्त पर क़ाबिज़ होना चाहते है।"

"अगर ऐसा हुआ तो फारस जल्दी तबाह होगा"–सालार ऐदी बिन हातिम ने कहा–"सालारों के दिमाग़ों पर जब तख़्त ताज सवार हो जाता है तो वो अपने मुल्क और क़ौम को बड़ी जल्दी तबाह कर देते है।

"जब तवज्जह तख़्त के तहफ्फ़ुज़ और अपनी ज़ात पर मरकूज़ हो जाती है तो निगाहें दुश्मन से हट जाती हैं"–ख़ालिद(र०) ने कहा–"मैं इन हालात से फायदा उठाऊंगा। अपनी फौज को तैयारी की हालत में रखो। हम आख़री फैसला दोमतुलजंदल की सूरते हाल मालूम हो जाने पर करेंगे।"

❁

दोमतुलजंदल की सूरते हाल सालार अयाज़ बिन ग़नम के लिए मख़दूश थी। दोमतुलजंदल उस दौर का मशहूर तिजारती मरकज़ था। आज के ईराक़ और शाम के शाहराहें यही आ कर मिलती थी। रसूले अकरम(स०) ने तबूक पर चढ़ाई की थी तो इस दौरान ख़ालिद(र०) दोमतुल जंदल तक पहुंचे और यहां के क़िले से क़िलेदार उकेदर बिन मालिक़ को गिरफ्तार कर के रसूले अकरम(स०) के हुज़ूर पेश किया था।

उकेदर बिन मालिक ने इस्लाम तो क़ुबूल न किया, रसूले अल्लाह(स०) की इताअत क़ुबूल कर ली थी लेकिन हुज़ूर की वफात के बाद अर्तदाद का फितना उठा तो इस शख़्स ने मदीने की वफादारी तर्क कर दी और इसाईयों और बुत परस्तों को साथ मिला कर इन का सरदार बन गया था। अबु बकर(र०) ने उकेदर बिन मालिक की सरदारी को ख़तम और इस के ज़ेरे असर ग़ैर मुस्लिम क़बायल को अपने ज़ेरे नगी करने के लिए सालार अयाज़ बिन ग़नम को भेजा था।

अयाज़ तजुर्बाकार सालार थे लेकिन दोमतुलजंदल पहुंचे तो देखा के इसाईयों का एक बहुत बड़ा क़बीला जो कल्ब कहलाता था अपने इलाक़े के दिफाअ के लिए तैयार था। ये क़बीला जंग व जदाल में शोहरत रखता था। अयाज़ ने क़िले को मुहासरे में ले लिया लेकिन इसाईयों ने बाहर से मुसलमानों को मुहासरे में ले लिया। अयाज़ की फौज को आगे भी और अक़ब में भी लड़ना पड़ा। इस सूरते हाल ने जंग को ऐसा तूल दिया। जो ख़त्म होता नज़र नहीं आता था और ये सूरते हाल अयाज़ के लिए रोज़ बरोज़ मख़दूश होती जा रही थी।

❁

ख़ालिद(र०) का भेजा हुआ कमांडर वापस आया तो उस ने ख़ालिद(र०) को बताया के अयाज़ बिन ग़नम कैसे आएगा, उसे तो खुद मदद की ज़रूरत है। कमांडर ने दोमतुलजंदल में अयाज़ और दुश्मन की फौजों की पोज़िशनें तफसील से बयान की।

"खुदा की क़सम, मैं यहां इन्तेज़ार में फारिग़ नही बैठ सकता" -ख़ालिद(र०) ने पुरजोश आवाज़ में कहा-"पेशतर इस के के दुश्मन आगे आजाए, मैं आगे बढूंगा। मदाइन की शहर पनाह मुझे पुकार रही है....कूच की तैयारी करो।"

मशहूर मोअरिख़ों तिबरी और बलाज़ी ने लिखा है के ख़ालिद(र०) की खुद सरी और सरकशी मशहूर थी। वो चैन से बैठने वाले सालार नहीं थे। इस सूरत में के दुश्मन चार शिकस्तें खा चुका था और उस का निज़ाम दरहम बरहम हो गया था और मदाइन के शाही ऐवान में अब्तरी फैली हुई थी, ख़ालिद(र०) फारिग़ बैठ ही नहीं सकते थे।

ख़ालिद(र०) का जासूसी का निज़ाम बड़ा तेज़ और ज़हीन था। इस में ज़्यादा तर वो मुसलमान थे जो फारस में गुलामों जैसी ज़िन्दगी बसर करते रहे थे। वो इन इलाक़ों से वाक़िफ थे और मुख़तलिफ क़बीलों की ज़बानें समझ और बोल सकते और इन का बहरूप धार सकते थे। वो मदाइन के महलात के अन्दर की ख़बरें ले आए थे। अब उन्होंने ख़ालिद(र०) को ख़बरें देनी शुरू कर दीं के फारस की फौज कहां कहां मौजूद है और किस जगह क्या कैफियत है।

इन की इत्तेलाओं के मुताबिक़ ईरानियों की फौज की ज़्यादा तर नफरी दो शहरों में थी। एक था ऐनुल्तमर और और दूसरा अम्बार। ऐनुल्तमर हीरा के क़रीब था और अम्बार इस के दुगने फासले पर आगे था। ऐनुल्तमर दरियाए फरात से दूर हट कर वाक़े था और अम्बार फरात के किनारे पर था। ख़ालिद(र०) ने फैसला किया के पहले अम्बार पर हमला किया जाए। ये भी तिजारती शहर था जिस में ग़ल्ले के बहुत बड़े बड़े ज़ख़ीरे थे।

जून 633 ई० के आख़िर (रबीअव्वल 12 हिज्री के वस्त) में ख़ालिद(र०) ने हीरा से कूच किया। उन के साथ उन की आधी फौज यानी नौ हज़ार नफरी थी जो हमले के लिए बहुत ही थोड़ी थी लेकिन ख़ालिद(र०) को अल्लाह पर और अपनी जंगी फहम व फरासत पर भरोसा था। वो मफ्तूहा इलाक़ों को फौज के बग़ैर नहीं छोड़ सकते थे। इसाई और दीगर क़बीलों ने इताअत तो क़ुबूल कर ली थी लेकिन मुसलामनों को बड़े तल्ख़ तजुर्बे हुए थे। इताअत क़ुबूल करने वाले मौक़ा मिलते ही इताअत से मुनकिर और बाग़ी हो जाते थे। हीरा में ख़ालिद(र०) ने क़क़आ बिन उमरो और इक़रा बिन हाबिस को छोड़ा था।

यहां एक गल्ती की वज़ाहत ज़रूरी है। दो चार तारीख़ दानों ने लिखा है के ख़ालिद(र०) हीरा में सालार अयाज़ बिन ग़नम के इन्तेज़ार में एक साल रूके रहे। ये ग़लत है। उस दौर की तहरीरों से साफ पता चलता है के ख़ालिद(र०) ने हीरा में पूरा एक महीना भी इन्तेज़ार नही किया न उन्होंने अमीरूलमोमेनीन को ये पेग़ाम भेजा के वो उन के हुक्म के ख़िलाफ सालार अयाज़ का इन्तेज़ार किए बग़ैर मदाइन की तरफ पेशक़दमी कर रहे है।

❁

ख़ालिद(र०) अपनी नौ हज़ार सिपह के साथ फरात के किनारे किनारे बड़ी तेज़ी से बढ़ते गए। इन के जासूस मुख़्तलिफ बहरूपों में दरिया के दूसरें किनारे पर आगे आगे जा रहे थे। अम्बार से थोड़ी दूर रह गए तो ख़ालिद(र०) ने फरात उबूर किया और उस किनारे पर चले गए जिस पर अम्बार वाक़े था। वहां उन्होंने मुख़्तसिर सा क़याम किया और दो ख़त तहरीर कराए। एक किसरा के नाम और दूसरा मदाइन के हक्काम और उमरा वग़ैरा के नाम। किसरा के नाम ख़ालिद(र०) ने लिखवाया:

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। ख़ालिद(र०) बिन वलीद की जानिब से शाहे फारस के नाम। मैं शुक्र अदा करता हूं अल्लाह का जिस ने तुम्हारी बादशाही को तह व बाला कर डाला है और तुम्हारी अय्यारियों को कामयाबी से महरूम रखा है और तुम आपस में ही दस्त व गरेबां हो रहे हो। अल्लाह अगर तुम्हें मज़ीद मोहलत देता तो भी घाटे में तुम ही रहते। अब तुम्हारी निजात का ही रास्ता है। मदीने की इताअत कुबूल कर लो। अगर ये मंजूर है तो मैं शरायत तय करने के लिए दोस्तों की तरह आऊंगा, फिर हम तुम्हारे इलाक़े से आगे निकल जाएेंगे। अगर पस व पेश करोगे तो तुम्हें ऐसी क़ौम के आगे हथियार डालने पड़ेंगे जिसे मौत इतनी ही अज़ीज़ है जितना तुम ज़िन्दगी को अज़ीज़ रखते हो।"

ख़ालिद(र०) ने मदाइन के हक्काम और उमरा के नाम लिखवाया:

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। ख़ालिद(र०) बिन वलीद की जानिब से फारस के उमरा के नाम। तुम्हारे लिए बेहतर सूरत यही है के इस्लाम कुबूल कर लो। हम तुम्हारी सलामती और तहफ्फुज़ के ज़िम्मेदार होंगे। इस्लाम कुबूल न करो तो जज़िया अदा करो, वरना सोच लो के तुम्हारा सामना एक ऐसी क़ौम से है जो मौत की इतनी ही शैदाई है जितने फरीख़्ता तुम शराब पर हो।"

ख़ालिद(र०) ने शाहे फारस के नाम ख़त हीरा के रहने वाले एक आदमी के हाथ भेजा और उमरा वग़ैरा के नाम ख़त ले जाने वाला अम्बार का रहने वाला एक आदमी था। किसी भी मोअररि़ख़ ने इन दोनों आदमियों के नाम नहीं लिखे।

अम्बार जिस इलाके में था वो साबात कहलाता था। साबात आज कल के ज़िलों की तरह था और अम्बार इस ज़िले का सब से बड़ा शहर था। साबात का हाकिम या अमीर शेरज़ाद था जो उस वक़्त अम्बार में मुक़ीम था। वो दानिशमंद और आलिम था। उस में असकरी सलाहियत ज़रा कम थी, लेकिन अम्बार में फौज इतनी ज़्यादा थी के उसे असकरी सूझ बूझ की ज़रूरत ही नही थी। अपनी फौज के अलावा उस के साथ इसाईयों की बे शुमार नफरी थी।

इतनी ज़्यादा फौज के अलावा अम्बार की शहर पनाह बड़ी मज़बूत थी और दिफाअ का ये इन्तेज़ाम भी था के शहर के इर्द गिर्द गहरी ख़ंदक़ थी जिस में पानी था। इस तरह अम्बार को ना क़ाबिले तस्ख़ीर शहर बना दिया गया था। ख़ालिद(र०) के लिए तो ये इस लिए भी ना क़ाबिले तस्ख़ीर था के उन की फौज की कुल नफरी नौ हज़ार थी।

अम्बार के जासूसों ने मुसलमानों की फौज को शहर की तरफ आते देखा तो उन्होंने शेरज़ाद को जा बताया, फिर सारे शहर में ख़बर फैल गई के मदीने की फौज आ रही हे। शेरज़ाद दौड़ा गयां और दीवार पर जा चढ़ा। उसे जासूसों ने मदीने की फौज की नफरी दस हज़ार बताई थी।

"नही, ये धोका है" - दीवार पर खड़े शेरज़ाद ने मुसलामनों की फौज को देख कर कहा-"जिन्होंने हमारी इतनी ज़बर्दस्त फौज को यके बाद दीगरे चार लड़ाईयों में शिकसत दी है वो इतने अहमक़ नहीं हो सकते के इतने बड़े क़िले बन्द शहर पर हमला करने के लिए इतनी क़लील फौज लाऐं। ये इन की फौज का हराविल होगा। अगर हराविल नही तो इतनी ही फौज पीछे आ रही होगी या किसी और सिम्त से आ रही होगी।"

शहर के लोगों में अफरा तफरी मच गई थी। उन्होंने मुसलमानों के बड़े दहशत नाक क़िस्से सुने थे। उन्होंने अपनी शिकस्त खूर्दा फौज के ज़ख्मियों को और मैदाने जंग से भाग कर आने वालों े देखा था। उन का ख़ौफ व हिरास भी देखा था। पस्पाई में अपने आप को हक़ बजानिब ज़ाहिर करने के लिए उन्होंने लोगों को जंग के ऐसे वाक़ेआत सुनाए थे जैसे मुसलमान जिन्न भूत हों। अब वो मुसलमान उन के इतने बड़े शहर को मुहासरे में लेने के लिए आ गए थे। उन्होंने अपने ज़ेवरात और रक़में और अपनी जवान लड़कियां छुपानी शुरू कर दी।

शहर में ये ख़ौफ व हिरास और भगदड़ ज़्यादा देर न रही क्यों दीवार के ऊपर से बुलंद आवाज़ें सुनाई देने लगी थीं के मुसलामनों की तादाद इतनी थोड़ी है के वो

सारी उम्र शहर की दीवार तक नही पहुंच सकेंगे। फिर दीवार के ऊपर क़हक़हे बुलंद होने लगे।

"मुसलमानो!"- आतिश परस्त मुसलामनों पर आवाज़ें कस रहे थे-"तुम्हें मौत यहां तक ले आई है।"

"ज़िन्दा रहना है तो मदीने को लौट जाओ।"

शहर पनाह पर तीरअंदाज़ों का हुजूम खड़ा था। मुसलमानों ने शहर को मुहासरे में ले लिया था और ख़ंदक़ ने इन्हें रोक लिया। तिबरी और याकुत लिखते हैं के ख़ंदक़ दीवार के इतना क़रीब थी के इस के क़रीब आने वाले ऊपर से छोड़े हुए तीरों की ज़द आजाते थे। ऐसा न होता तो भी ख़ंदक़ को फलांगना मुमकिन नहीं था। ये बहुत चौड़ी थी। तीरअंदाज़ मुसलामनों पर हंस रहे थे और वो हज़ारों की तादाद में दीवार पर यूं खड़े थे जैसे मुसलमानों का तमाशा देख रहे हों।

"खुदा की क़सम!"-ख़ालिद(र०) ने बड़ी बुलंद आवाज़ से कहा-"ये लोग नही जानते जंग क्या है और किस तरह लड़ी जाती है।"

मोअररिख़ लिखते हैं के अम्बार हर लिहाज़ से ना क़ाबिले तस्ख़ीर था लेकिन ख़ालिद(र०) के चेहरे पर परेशानी का हल्का सा भी तास्सुर नहीं था। वो पुर सुकून थे। रात को उन्होने अपने ख़ेमे में अपने सालारो को यक़ीन दिलाया के फतह इन्ही की होगी लेकिन कुर्बानी देनी पड़ेगी। इन्हें सिर्फ ये बात फतह की उम्मीद दिला रही थी के शहर की दीवार इतनी ऊंची नहीं थी जितनी क़िलों की हुआ करती थी।

☸

सुबह तुलू होते ही ख़ालिद(र०) घोड़े पर सवार हुए औ. शहर के इर्द गिर्द घोड़ा दौड़ाने लगे। वो दीवार और ख़ंदक़ का जायज़ा ले रहे थे। उन्होंने अपने सालारों से कहा के इन्हें एक हज़ार तीर अंदाज़ों की ज़रूरत है जिन्हें अपने निशाने पर पूरा पूरा ऐतमाद हो और जिन के बाज़ूओं में इतनी ताक़त हो के कमानों को खींचें तो कमानें दूहरी हो जाएं और आम तीरअंदाज़ों की निस्बत इन के तीर बहुत दूर जाएं।

"जल्दी"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"बहुत जल्दी। हमें शाम तक इस शहर में दाख़िल होना है।"

थोड़ी सी देर में एक हज़ार तीरअंदाज़ आ गए। ये चुने हुए थे और सब के सब जवान और बड़ मज़बूत जिस्मों वाले थे।

"तुम सब ख़ंदक़ तक इस तरह टहलते हुए जाओ के कमानें तुम्हारे हाथों में लटक रही हों"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"ऐसा लगे जैसे तुम टहलते टहलते ख़ंदक़ के क़रीब चले गए हो। जूं ही ख़ंदक़ के क़रीब जाओ निहायत तेज़ी से तरक़शों से तीर

निकालो, कमानों में डालो और दीवार पर खड़े दुश्मन के तीरअंदाज़ों की आंखें का निशाना ले कर तीर चलाओ। पेशतर इस के के वो जान सकें के ये क्या हो गया है, एक एक, इस के बाद फिर एक एक तीर चलाओ।"

मोअररि‌ख़ तिबरी के मुताबिक़ ख़ालिद(र०) ने हुक्म दिया था-"सिर्फ आंखें... ..सिर्फ आखें।"

एक हज़ार तीरअंदाज़ ख़ालिद(र०) के हुक्म के ऐन मुताबिक़ आहिस्ता आहिस्ता ख़ंदक़ तक गए। दीवार पर दुश्मन के सिपाही हंस रहे थे और बे परवाई से खड़े थे। इन्हें मसलुमानों का कोई इरादा नज़र नही आ रहा था के वो ख़ंदक़ को फलांगने की कोशिश करेंगे। ख़ंदक़ के क़रीब पहुंच कर इन एक हज़ार तीरअंदाज़ों ने ऊपर देखा, इधर उधर देखा, ख़ंदक़ में देखा और अहमक़ों की सी हरकतें की। आतिश परस्तों के तीरअंदाज़ों ने इन पर तीर चलाने की ज़रूरत महसूस न की हालांके मसुलमान तीरअंदाज़ उन की ज़द में थे।

अचानक मुसलमान तीरअंदाज़ों ने तरकशों में से एक एक तीर निकाला, पलक झपकते तीर कमानों में डाले, कमानें आगे कर के दुश्मन की आंखों के निशने लिए आर तीर छोड़ दिए। एक हज़ार तीरों में से बेशतर आतिश परस्तों के तीरअंदाज़ों की एक एक आंख में उतर गए। माअन बाद मसुलमान तीरअंदाज़ों ने एक हज़ार तीर छोड़े, फिर एक हज़ार और।

ये कहना सही नही हो सकता के मुसलामनों का कोई भी तीर ख़ता नहीं गया। तारीख़ों में लिखा है के ज़्यादा तीर दुश्मन की आंखों में लगे और शहर में ये ख़बर तेज़ हवा की तरह फैल गई-"हमारे सैंकड़ों सिपाहियों की आखें ज़ाय हो गई हैं"-जब इन सैंकड़ों सिपाहियों को शहर पनाह से उतारा गया तो शहर के लोगों ने हर एक की एक एक आंख मे तीर उतर हुआ और इन ज़ख्मियों को कर्बनाक आहवज़ारी करते देखा।

एक अंग्रेज़ मुबस्सिर सर वाल्टर ने मुताद्दिद के हवाले से लिखा है के मुसलमानों की तरफ से तीन हज़ार तीर इतनी तेज़ी से चले के आतिश परस्त अपने आप को बचा ही न सके और तीर जिन की आंखों में न लगे उन के चेहरों में उतर गए। चूंके फारस के ये सिपाही और उन की मदद को आए हुए इसाई शहर पनाह पर घने हुजूम की तरह खड़े थे इस लिए कोई तीर ज़ाय न गया। हर तीर ने एक एक आदमी को ज़ख़्मी किया।

तिबरी की तहरीरों के मुताबिक़ अम्बार के मुहासरे को"ज़ातुलअयून" यानी आंखों की तकलीफ भी कहा जाता रहा है।

मुसलमानों के इस वार ने शहर के लोगों पर ही नही, फारस की फौज पर भी

ख़ौफ तारी कर दिया। मुसलामनों ने तो जादू का कर्तब दिखा दिया था। साबात का आतिश परस्त हाकिम शेरज़ाद दानिशमंद और दूरअंदेश आदमी था। उस ने भांप लिया के उस की फौज में लड़ने का जो जज़्बा था वो मांद पड़ गया है। उसे ये अहसास भी था के इस की फौज पहली शिकस्तों की भी डरी हुई है। चुनांचे मज़ीद क़त्ल व ग़ारत को रोकने के लिए उस ने ख़ालिद(र०) से सुलह करने का फैसला कर लिया। उस ने दो उमरा को क़िले के बाहर भेजा।

खंदक़ के क़रीब आकर इन दो अमीरों ने मुसलमानों से पूछा के उन का सालारे आला कहां है। ख़ालिद(र०) को इत्तेला मिली तो वो आ गए।।

"हमारे अमीर शेरज़ाद ने हमें भेजा है"-शेरज़ाद के भेजे हुए दो आदमियों मे से एक ने ख़ालिद(र०) से कहा-"हम आप से सुलह करना चाहते हैं लेकिन ऐसी शरायत पर जो हमारे लिए क़ाबिले कुबूल हों। अगर सुलह हो जाए तो शेरज़ाद अपनी फौज को साथ ले कर अम्बार से चला जाएगा।"

"शेरज़ाद से कहो के शर्तें मनवाने का वक़्त गुज़र गया है"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"अब शर्तें हमारी होंगी और तुम लोग हथियार डालोगे।"

दोनों आदमी वापस चले गए और शेरज़ाद को ख़ालिद(र०) का पैग़ाम दिया। शेरज़ाद ने अपने सालारो की तरफ देखा।

"हम इतनी जल्दी हथियार नही डालेंगे"-एक सालार ने कहा।

"हमारे पास फौज की कमी नहीं"-दूसरे सालार ने कहा-"मुसलमान खंदक़ से आगे नहीं आ सकते।"

शेरज़ाद ने सर हिलाया। ये ऐसा इशारा था जिस से पता नही चलता था के वो शहर का दिफाअ जारी रखना या ख़ालिद(र०) के पैग़ाम पर ग़ौर कर के कोई और फैसला करना चाहता है। उस के सालारों ने उस के इशारे को जंग जारी रखने का हुक्म समझा और वो शहर पनाह पर आ गए। एक हज़ार मुसलमान तीर अंदाज़ जिन्होंने अम्बार के दो हज़ार से ज़ाइद सिपाहियों की आंखें निकाल दी थीं, पीछे हट गए।

❁

ख़ालिद(र०) ने शहर के इर्द गिर्द एक और चक्कर लगाया। अब वो सिर्फ खंदक़ को देख रहे थे। उन्होंने खंदक़ पार करने का तहैय्या कर लिया था। एक जगह खंदक़ की चौड़ाई कम थी लेकिन इतनी कम नहीं थी के दूर से घोड़ा दौड़ाते लाते और वो खंदक़ फांद जाता। ख़ालिद(र०) के दिमाग़ में एक तरीक़ा आ गया। उन्होने हुक्म दिया के अपनी फौज के साथ जितने ऊंट कमज़ोर या बीमार हो गए हैं इन्हें आगे ले

आओ।

ऐसे बहुत से ऊंट थे जो पूरा सामान उठाने के क़ाबिल नही रहे थे। ख़ालिद(र०) के हुक्म से इन ऊंटों को ज़िबह कर के खंदक़ में उस जगह फैंकते गए जहां खंदक़ कम चौड़ी थी। इतने ऊंट ज़िबह कर के खंदक़ में तरतीब से फैंक दिए गए के एक पुल बन गया।

“अल्लाह ने तुम्हारे लिए गोश्त और हड्डियों का पुल बना दिया है”-ख़ालिद(र०) ने बुलंद आवाज़ से कहा-अब हम खंदक़ के पार जा सकते हैं।”

ऊंटों का ये पुल हमवार नहीं था। इन के ढेर पर चलना ख़तरनाक था। पांव फिसलते थे लेकिन गुज़रना बड़ी तेज़ी से था। इशारा मिलते ही पियादा मुजाहेदीन कूदते फलांगेते इस अजीब पुल से गुज़रने लगे। चन्द एक मुजाहेदीन फिसले और गिरे और वो पानी में से निकल कर ऊंटों की टांगें गदर्नें वग़ैरा पकड़ते ऊपर आ गए।

शहर पनाह से दुश्मन के तीरअंदाज़ों ने तीरों का मीना बरसा दिया। इधर “आंखें फोड़ने वाले” मुसलमन तीरअंदाज़ों ने बड़ी तेज़ी और महारत से तीरआंदज़ी जारी रखी। अब इन की तादाद एक हज़ार नहीं, ख़ासी ज़्यादा थी। ऊंटों के पुल से गुज़रने वालों में से कई मुजाहेदीन तीरों से ज़ख़्मी हो रहे थे लेकिन वो रूके हुए सैलाब की तरह खंदक़ से पार जाते और फैलते रहे।

मोअररिख़ों ने लिखा है के मुसलामनों का ये इक़दाम ग़ैर मामूली तौर पर दिलेराना था। वो ज़ख़्मी तो हुए, शहीद भी हुए लेकिन अम्बार की फौज पर इस इक़दाम का जो असर हुआ वो उस के सिपाहियों के लड़ने के जज़्बे के लिए मोहलक साबित हो रहा था। उन पर मुसलमानों की दहशत पहले ही ग़ालिब थी, अब उन्होंने मुसलमानों का अजीब तरीक़ा देखा के अपने ऊंट ज़िबह कर के पुल बना दिया और तीरों की बोछाड़ों में उस पुल से गुज़रने लगे तो दीवार से बरसने वाले तीरो में कमी आ गई। दुश्मन के तीरअंदाज़ ज़ख़्मी हो कर कम हो रहे थे और उन में भगदड़ की कैफियत भी पैदा हो गई थी।

खंदक़ फलांगने वाला सिर्फ एक दस्ता था। इस दस्ते का जोश व ख़रोश इस वजह से भी ज़्यादा था के खुद ख़ालिद(र०) इन के साथ थे और सब से पहले मरे हुए ऊंटों पर से गुज़रने वाले ख़ालिद(र०) थे। तीर उन के दायें बायें से गुज़र रहे थे और उन के क़दमों में ज़ीमन में लग रहे थे मगर ख़ालिद(र०) यूं बे परवाह थे जैसे उन पर बारिश के क़तरे गिर रहों। अल्लाह अकबर के नारों की गरज अलग थी और इस गरज में अल्लाह की रहमत और बरकत थी।

शहर के लोगों का ये आलम था के भागते दौड़ते फिर रहे थे। शहर पनाह से

उन के ज़ख़्मी सिपाहियों को उतारते थे तो लोग उन की गर्दनों में, चेहरों में और सीनों में एक एक दो दो और तीन तीन तीर उतरे हुए देखते थे। ज़ख़्मियों की तादाद बढ़ती जा रही थी और शहर में ख़ौफ व हिरास ज़्यादा होता जारहा था। लोगों ने चिल्लाना शुरू कर दिया-"समझौता कर लो। सुलह कर लो। दरवाज़े खोल दो।"

शेरज़ाद के लिए ये सूरते हाल बड़ी ही तकलीफ दह थी। वो दानिशमंद आदमी था। उस ने जब लोगों की आहवज़ारी सुनी और जब बच्चों और औरतों को ख़ौफ की हालत में पनाहों की तलाश में भागते दौड़ते देखा तो उसे अहसास हुआ के ये मासूम बेगुनाह मारे जाएंगे। इन्हें बचाने का उस के पास एक ही ज़रिया था के हथियार डाल दे। उस ने अपने सालारे आला को बुला कर कहा के वो मज़ीद खून ख़राबा रोकना चाहता है।

"नही"-सालारे आला ने कहा-"अभी कोई फैसला न करें। मुझे एक कोशिश कर लेने दें।"

शेरज़ाद ख़ामोश रहा।

❁

सालारे आला शहर पनाह के ऊपर अपनी सिपह की कैफियत देख रहा था जो बड़ी तेज़ी से मख़दूश होती चली जा रही थी। उस ने ये भी देख लिया था के मुसलमान खंदक़ उबूर कर आए हैं। उस ने एक जुर्रतमंदाना फैसला किया। इस ने एक दस्ता चुने हुए सिपाहियों का तैयार किया और क़िले का दरवाज़ा खोल कर इस दस्ते को बाहर ले आया। इस दस्ते ने उन मुसलमानों पर हल्ला बोल दिया जो खंदक़ उबूर कर आए थे। खंदक़ के दूसरे किनारे खड़े मुसलमानों ने दुश्मन के इस दस्ते पर तीर चलाने शुरू कर दिए।

इस दस्ते का मुक़ाबला मुसलमानों के ऐसे दस्ते के साथ था जिस के क़ायद ख़ालिद(र०) थे। मुसलमानों के तीरों की बोछाड़ से आतिश परस्तों के दस्ते की तरतीब और यकसूई ख़त्म हो गई। ख़ालिद(र०) ने इस दस्ते को इस तरह लिया के अपने दस्ते को दीवार की तरफ रखा ताके खंदक़ की तरफ से मुसलमान तीरअंदाज़ दुश्मन पर तीर बरसाते रहें। ख़ालिद(र०) इस दस्ते को खंदक़ की तरफ धकेलना चाहते थे।

घमासान का मआरका हुआ। आतिश परस्तों के कई सिपाही खंदक़ में गिरे और बाक़ियों के क़दम उखड़ गए। इस दस्ते के सालार ने इस डर से दरवाज़ा बन्द कर दिया के मुसलमान अन्दर आ जाएंगे। दरवाज़ा बन्द होते होते दुश्मन के इस दस्ते के बचे कुछे सिपाही भाग कर अन्दर चले गए।

ख़ालिद(र०) शहर पनाह का जायज़ा लेने लगे। वो मुजाहेदीन को इस दीवार पर चढ़ाना चाहते थे जो आसान नज़र नही आता था। इन्हें मालूम न था के दीवार की दूसरी तरफ ईरानी फौज और शहर के लोगों की हालत क्या हो चुकी है।

क़िले का दरवाज़ा एक बार फिर खुला। अब दरवाज़े में सिर्फ एक आदमी नमूदार हुआ। उस के पीछे दरवाज़ा बन्द हो गया। इस ने हाथ ऊपर कर के बुलंद आवाज़ से कहा के वो शहर का ऐलची है और सुलह की बात करने निकला है। इस के साथ ही शहर पनाह से तीर बरसने बन्द हो गए।

"ऐ आग के पूजने वाले!"-जब उसे ख़ालिद(र०) के सामने ले गए तो ख़ालिद(र०) ने उस से पूछा-"अब तू क्या ख़बर लाया है? क्या ज़र्तुश्त ने तुम लोगों से नज़रें फैर नही लीं? क्या अब भी तुम लोग अल्लाह को नहीं मानोगे?"

"ऐ अहले मदीना! मैं किसी और सवाल का जवाब नहीं दे सकता"-ऐलची ने कहा-"मैं हाकिम साबात शेरज़ाद का ऐलची हूं। शेरज़ाद ने कहा है के तुम लोग उसे और अहले फारस को शहर से चले जाने की इजाज़त दे दो तो शहर तुम्हारे हवाले कर दिया जाएगा।"

तिबरी और वाक़दी लिखते हैं के ख़ालिद(र०) ये शर्त भी मानने के लिए तैयार नही थे। उन्होंने एक बार फिर शहर की दीवार की बुलंदी देखी और सोचा के इस पर किस तरह चढ़ा जा सकता है लेकिन बहुत मुश्किल था।

"हाकिम साबात शेरज़ाद से कहो के ख़ालिद(र०) बिन वलीद उस पर रहम क़रता है"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"उसे कहो के वो फारस के फौजियों को साथ ले कर शहर से निकल जाए लेकिन वो उन घोड़ों के सिवा जिन पर वो सवार होंगे, अपने साथ कुछ नही ले जा सकेंगे। वो अपना सब माल अमवाल पीछे छोड़ जाएंगे और वो हमारी फौज के सामने से गुज़रेंगे....अगर उसे ये शर्त मंजूर न हो तो उसे कहना के तैयार हो जाए इस तबाही के लिए जो उस ने पहले कभी नहीं देखी होगी।

ऐलची वापस चला गया। ख़ालिद(र०) ने शहर के इर्द गिर्द अपना हुक्म पहुंचा दिया के तीरअंदाज़ी रोक ली जाए।

❁

कुछ देर बाद शहर का दरवाज़ा एक बार फिर खुला। बहुत से सिपाही बड़ी मोटी लकड़ी का एक पांच छः गज़ चौड़ा और बहुत लम्बा तख़्ता उठाए बाहर निकले। तख़्ते के साथ रस्से बंधे हुए थे। उन्होंने तख़्ता ख़ंदक़ के किनारे पर खड़ा किया और रस्से पकड़ लिए। फिर ये तख़्ता आहिस्ता आहिस्ता ख़ंदक़ पर गिरने लगा और इस का ऊपर वाला सिरा ख़ंदक़ पर डाला गया था।

सब से पहले जो घोड़ा बाहर आया इस की सज धज बताती थी के शाही असतबल का घोड़ा है। उस का सवार बिला शक व शुबह हाकिम साबात शेर ज़ाद था। उस के पीछे उस की बची कुची फौज बाहर निकली। पियादे भी थे सवार भी। इन में ज़ख्मी भी थे जो अपने साथियों के सहारे चल रहे थे। वो अपने मरे हुए साथियों की लाशें जहां थी वहीं छोड़ गए थे। ये शिकस्त खूर्दा फौज मातमी जलूस की तरह जा रही थी और मुसलमान ख़ामोशी से इस जलूस को देख रहे थे। किसी ने इन का मज़ाक न उड़ाया, फब्ती न कसी, फतह का नारा न लगाया।

ख़ालिद(र०) घोड़े पर सवार एक तरफ खड़े देख रहे थे। वो थके हुए नज़र आते थे लेकिन चेहरे पर फतह की रौनक और ज़बान पर अल्लाह के शुक्राने के कलमात थे-ये जूलाई 633ई० का एक दिन था।

जब आख़री सिपाही भी निकल गया तो ख़ालिद(र०) मुजाहेदीन के आगे आगे शहर के दरवाज़े में दाख़िल हुए। आगे शहर के उमरा और रोऊसा दस्त बस्ता खड़े थे। शहर के लोगों का शौर व गुल सुनाई दे रहा था। इस तरह की आवाज़ें सुनाई दे रही थी-"वो आ गए है.....मुसलमान आ गए है.....भागो....छुप जाओ।"

ख़ालिद(र०) घोड़े से उतरे। अंबार के उमरा वग़ैरा ने इन्हें तोहफे पेश किए।

"शहर के लोग हम से डर क्यों रहे है?"-ख़ालिद(र०) ने उमरा से कहा-"इन्हें कहो के इन पर कोई इल्ज़ाम नहीं। हम ने इस शहर को फतह किया है, शहर के लोगों को नहीं। इन्हें कहो के हम अमन और दोस्ती ले कर आए हैं। हम जज़िया ज़रूर लेंगे लेकिन बिला वजह किसी की जान नहीं लेंगे। हम किसी की बेटी पर अपना हक नहीं जताऐंगे। किसी के माल व दौलत को हाथ नहीं लगाऐं। हम सिर्फ उन के माल अमवाल को अपने कब्ज़े में लेंगे जो हम से शिकस्त खा कर चले गए है.....जाओ। अपने लोगों को हमारी तरफ से अमन और सुकून का पैग़ाम दो।"

ख़ालिद(र०) ने अपनी फौज को एक हुक्म तो ये दिया के जो लोग उन के ख़िलाफ लड़ कर चले गए है उन के घरों से कीमती सामान उठा कर एक जगह इक्ळा कर लिया जाए और दूसरा हुक्म ये के शहर में घूम फिर कर यहां के लोगों को दोस्ती और अमन का तास्सुर दिया जाए और ये भी के लूट मार नहीं होगी।

शहर पनाह पर गिद्ध उतर रहे थे। वहां आतिश परस्त सिपाहियों की लाशें पड़ी थी। शदीद ज़ख्मी बेहोशी की हालत में इधर उधर पड़े हुए थे। शहर की फज़ा मे मौत की बू थी।

ख़ालिद(स०) उस मकान में गए जिस में शेरज़ाद रहता था। वो तो महल था। दुनिया की कौन सी आसाईश और ज़ेबाईश थी जो इस महल में नहीं थी। ख़ालिद(र०)

जो ज़मीन पर सोने के आदी थे, हैरान हो रहे थे के एक इन्सान ने अपने आप को दूसरे से बरतर समझने के लिए कितनी दौलत ख़र्च की है।

ख़ालिद(र०) ने हुक्म दिया के बेश क़ीमत अशिया को माले ग़नीमत में शामिल कर लिया जाए और ख़ज़ाना ढूंडा जाए। ख़ज़ाना मिलते देर न लगी। इस में सोने और हीरे जवाहरात के अम्बार लगे हुए थे।

इर्द गिर्द के क़बीलों के सरदार इताअत कुबूल करने के लिए ख़ालिद(र०) के पास आने लगे। ख़ालिद(र०) ने जज़िया की रक़म मुक़र्रर कर के इस की वसूली का हुक्म दिया। इस दौरान जासूसों ने आकर बताया के फारस की फौज ऐनुल्तमर में इक्ळी हो गई है और अब मुक़ाबला बड़ा सख़्त होगा।

मदाइन में आतिश परस्त शहंशाहीयत का महल उसी तरह खड़ा था जिस तरह अपने शहंशाहों की ज़िन्दगी में खड़ा रहता था। ये किसरा का वो महल था जिसे जंगी ताक़त की अलामत समझा जाता था। इस के बाहर वाले दरवाज़े के दायें और बायें दो बबर शेर बैठे रहते थे। ये किसरा की हैबत और दहशत की अलामत थे लेकिन ये गोश्त पोश्त के नही, पत्थरों के तराशे हुए मुजस्समे थे। इन मुजस्समों और महल के दरमियान एक मीनार खड़ा था जो ऊपर से गोल और मीनार की गोलाई से ज़्यादा बड़ा था। उस जगह अलाव हर वक़्त दहक्ता रहता था। जब ये मीनार तामीर हुआ था उस के ऊपर परोहितों ने ये आग जलाई थी। कई नस्लें पैदा हुईं और अगली नस्लों को जनम दे कर दुनिया से रूख़सत हो गईं, ये अलाव दहक्ता रहा। इस से उठता हुआ धुआं महल की फज़ा में यूं मंडलाता रहता था जैसे जर्तुश्त ने इस महल को अपनी पनाह में ले रखा हो।

अलाव अब भी दहक रहा था। उस का धुआं अब भी किसरा के महल की फज़ा में मंडला रहा था लेकिन ऐसे लगता था जैसे ये धुआं महल को पनाह में लेने की बजाए खुद पनाह ढूंड रहा हो। महल जो कभी दूसरों के लिए हैबत का निशान था। अब खुद उस पर हैबत तारी थी। इस की शान व शौकत पहले जैसी ही लगती थी, जाह व जलाल भी पहले जैसा था मगर इस के मकीन अब साफ तौर पर महसूस करने लगे थे के इस महल पर आसेब का असर हो गया है। मौत की दबी दबी हंसी की सिस सिस दिन रात सुनाई देती थी।

एक ग़ैबी हाथ किसरा के ज़वाल की दास्तान उस के ख़ानदान के खून से लिख रहा था। कहां वो वक़्त के इस तख़्त से दूसरों की मौत के परवाने जारी होते थे, कहां ये वक़्त के उर्दशेर के मरने के बाद इस तख़्त पर जो बैठता था वो पुरइस्रार तौर पर क़त्ल हो जाता था। दो चार सालार थे जो फारस की लरज़ती डोलती हुई इमारत को कुछ

देर और थामे रखने की कोशिश कर रहे थे।

ईरान की नौ खेज़ हसीनाऐं अब भी इस महल में मौजूद थी मगर रक्स की अदाऐं नही थी। साज़ ख़ामोश थे। नग़मे चुप थे। शराब की बू पहले की तरह मौजूद थी मगर इस में खून की बू शामिल हो गई थी। पहले यहां ऐश व इश्रत के लिए शराब पी जाती थी अब अपने आप को फरेब देने और तल्ख़ हक़ाइक़ से फरार की ख़ातिर जाम पर जाम चढ़ाए जा रहे थे।

अब मदाइन का महल तख़्त व ताज के हुसूल का मैदाने जंग बन गया था। दरपर्दा जोड़ तोड़ हो रहे थे। इसी महल से ख़ालिद और उन की सिपाह पर तंज़ के ये तीर चले थे के अरब के बद्दु और लूटेरों को फारस की शहंशाही में क़दम रखने की जुर्रत कैसे हुई? वो कभी वापस न जाने के लिए आए है। इन्हें मौत यहां ले आई है मगर अब फारसियों को खुद अपनी शहंशाही में क़दम जमाए रखने की जुर्रत नही हो रही थी। दूसरों पर दहशत तारी करने वाले तख़्त व ताज पर ख़ालिद(र०) की और मदीने के मुजाहेदीन की दहशत तारी हो गई थी।

मदाइन में अब शिकस्त और पस्पाई के सिवा कोई ख़बर नही आती थी।

जूलाई 633 ई० के एक रोज़ मदाइन में आतिश परस्तों को अपनी एक और शिकस्त की ख़बर मिली। ख़बर लाने वाला कोई क़ासिद नही बल्कि हाकिम साबात शेरज़ाद था और उस के साथ उस की शिकस्त खूर्दा फौज के बे शुमार सिपाही थे। इन का इस्तक़बाल किसरा के नामूर सालार बहमन जाज़विया ने किया। इन की हालत देख कर ही वो जान गया के बहुत बुरी शिकस्त खा कर आए है।

"शेरज़ाद!"–बहमन जाज़विया ने कहा–"तुम्हारे पास हथियार भी नही। मै तुम से क्या पूछूं?"

"तुम्हें पूछना भी नही चाहिए"–शेरज़ाद ने थकी हारी आवाज़ में कहा–"तुम भी तो उनसे लड़े थे? क्या तुम पस्पा नही हुए थे?"

"क्या तुम क़िला बंद नही थे?"–बहमन जाज़विया ने कहा–"क़िले के इर्द गिर्द खंदक़ थी। मुसलमान उड़ तो नही सकते। इतनी चौड़ी खंदक़ उन्होंने कैसे उबूर कर ली थी?"

शेरज़ाद ने उसे तफसील से बताया के मुसलमानों ने उसे किस तरह शिकस्त दी है।

"मेरे सालार ना अहल और बुज़दिल निकले"–शेरज़ाद ने कहा–"और मुझ से ग़लती ये हुई के मै ने इसाईयों पर भरोसा किया। मुझे बताया गया था के ये ज़बरदस्त लड़ाके है लेकिन उन्हें मालूम ही नही के लड़ाई होती क्या है।"

"तुम शायद ये नही देख रहे के तुम पस्पा हो कर मुसलमानों को अपने पीछे ला रहे हो"-बहमन जाज़विया ने कहा-"और तुम्हें ये मालूम नही के मदाइन में क्या हो रहा है.....शाही ख़ानदान तख़्त की विरासत पर आपस में लहू लहान हो रहा है। फारस की आबरू के मुहाफिज़ हम दो चार सालार रह गए हैं।"

"और जब तख़्त सालारों की तहवील में आ जाएगा तो वो शाही ख़ानदान की तरह एक दूसरे के दुश्मन हो जाऐंगे"-शेरज़ाद ने कहा और राज़दारी के लहजे में कहने लगा-"क्या तुम अभी तक महसूस नही कर सके के फारस की शहंशाही का ज़वाल शुरू हो चुका है? क्या हमारा सूरज डूब नही रहा?"

"शेरज़ाद!"-बहमन जाज़विया ने कहा-"उस हलफ को न भूलो जो हम ने ज़र्तुश्त के नाम पर उठाया था के हम फारस को दुश्मन से बचाने के लिए अपनी जानें कुर्बान कर देंगे....तुम ने ग़लती की है जो यहां चले आए हो।"

"कहां जाता?"

"ऐनुल्तमर!"-बहमन जाज़विया ने कहा-"ऐनुल्तमर अभी महफूज़ अड्डा है। कि़लेदार महरां बिन बहराम लड़ना लड़ाना जानता है। इत्तेला मिली है के उस ने चन्द एक बदवी क़बीलों को भी ऐनुल्तमर में इक्ळा कर लिया है। अगर मुसलमानों ने उधर का रूख़ किया तो ऐसे ही होगा जैसे वो पहाड़ से टकराए हों। उन में पस्पा होने की भी हिम्मत नही होगी। वो मुसलसल लड़ते आ रहे हैं। वो जिन्नात तो नहीं। आखि़र इन्सान हैं। उन में पहले वाला दम ख़म नहीं रहा।"

"लेकिन मैं ने उन्हें ताज़ा दम पाया है"-शेरज़ाद ने कहा-"मैं ने इन में थकन और कम हिम्मती के कोई आसार नही देखे.....और बहमन! मुझे शक होता है जैसे वो नशे में बदमस्त थे। ऐसी बेजिग्री से वही लड़ सकता है जिस ने कोई नशा पी रखा हो।"

"मैं ये नही कहूंगा के उन का अक़ीदा सही है"-बहमन जाज़विया ने कहा-"लेकिन मैं ये ज़रूर कहूंगा के इन पर अपने अक़ीदे का नशा तारी है। हम अपनी सिपह में ये ज़हनी कैफियत पैदा नही कर सके।"

"तुम कह रहे थे के मुझे ऐनुल्तमर चले जाना चाहिए था"-शेरज़ाद ने कहा-"क्या ये बेहतर नही होगा के मैं तुम्हारे साथ रहूं और अपनी सिपह को मुनज़्ज़म कर लें फिर मुसलमानों पर जवाबी हमले की तैयारी करें?"

"अब तुम्हारा ऐनुल्तमर जाना ठीक भी नही"-बहमन जाज़विया ने कहा-"हमें सोच समझ कर क़दम उठाना पड़ेगा।"

❁

ऐनुल्तमर अम्बार के जुनूब में फरात के मशरिक़ी किनारे से कई मील दूर हट कर अम्बार की तरह एक बड़ा तिजारती मरकज़ हुआ करता था। आज सिर्फ एक चश्मा उस की निशानी रह गई है। उस ज़माने में इस शहर का तिजारती राब्ता दुनिया के चन्द एक दूसरे मुल्कों के साथ भी था। क़िला मज़बूत और शानदार था। वहां का हाकिम और क़िलेदार एक फारस सालार महरां बिन बहराम चौबेन था।

महरां देख रहा था के मुसलमान फारस की फौज को हर मैदान में शिकस्त देते आ रहे है और जो क़िला ठन के रास्ते में आता है वो रेत का घरौंदा साबित होता है। उस ने तहिय्या कर लिया था के मुसलमानों को शिकस्त दे कर फारस की तारीख़ में नाम पैदा करेगा। उस ने ये भी देख लिया था के फारस की फौज मुसलमानों को रोकने में न सिर्फ नाकाम रही है बल्कि सिपाहियों ने अपने ऊपर मुसलमानों की दहशत तारी कर ली है। इस ख़तरे को ख़त्म करने और अपनी नफरी बढ़ाने के लिए उस ने इसाई और दीगर अक़ीदों के क़बीलों को ऐनुल्तमर में इक्ळा कर लिया था।

इन में बनी तग़लब, नम्र और अयाद के क़बीले खास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र थे। ये सब अरब के बद्दु थे। इन के सरदार अक़ा बिन अबी अक़ा और हज़ील थे। ये दोनों उस वक्त के माने हुए जंगजू थे। ये क़बीले किसरा की रिआया थे। एक तो वो खुद अपने आक़ाओं को खुश करना चाहता थे, दूसरे ये के महरां बिन बहराम ने उन्हें बहुत ज़्यादा इनाम और मुराआत देने का वादा किया था और फारस से वफादारी की तीसरी वजह ये थी के इन क़बीलों के सरदारों और दीगर बड़ों को अहसास था के मुसलमान सिर्फ मुल्क फतह करने नहीं आए बल्कि वो उन के अक़ीदों पर हमला करने आए हैं और उन पर अपना अक़ीदा मुसल्लत करेंगे।

उस रात ऐनुल्तमर में बहुत बड़ी ज़ियाफत दी गई। ये जश्न का समां था। ईरान की बड़ी हसीन नाचने और गाने वालियां अपने फन का मुज़ाहेरा कर रही थीं। ये ज़ियाफत इन बदवी क़बीलों के सरदारों और सरकर्दा अफराद के ऐज़ाज़ में दी गई थी। शराब पानी की तरह बह रही थी। इन बद्दुओं ने ऐसी ज़ियाफत और ऐसी अय्याशी कभी ख्वाब में भी नहीं देखी थी। बड़ी खूबसूरत और जवान औरतें इन्हें शराब पिला रही थीं और उन के साथ फहश हरकतें भी कर रही थीं।

मोअर्रिख़ों ने लिखा है के इस कैफियत में जब उन पर शराब और औरत का नशा तारी था, बदवी क़बीलों के एक सरदार अक़ा बिन अबी अक़ा ने महरां बिन बहराम से कहा के वो अपनी फौज को पीछे रखे और बदवी क़बीले आगे जा कर मुसलमानों को ऐनुल्तमर से दूर जा कर रोकेंगे।"

"अगर तुम ऐसा ही बेहतर समझते हो तो मै एतराज़ नहीं करूंगा"-महरां बिन

बहराम ने कहा–"लेकिन मुझे डर है के तुम्हारे क़बीले हमारी फौज के बग़ैर नही लड़ सकेंगे।"

"हम अरबी है"–अक़ा ने कहा–"अरबों से लड़ना सिर्फ हम जानते हैं। अरब के इन मुसलमानों से हमें लड़ने दो। फारसियों ने इन के मुक़ाबले में आकर देख लिया है।"

मशहूर मोअरिख़ तिबरी ने महरां और अक़ा का ये गुफ्तगू उन ही के अल्फाज़ में अपनी तारीख़ में शामिल की है।

"मै तस्लीम करता हूं"–महरां बिन बहराम ने कहा–"तुम्हारी बहादुरी को मै तस्लीम करता हूं अक़ा! जिस तरह हम अजमियों के ख़िलाफ लड़ने के माहिर हैं इसी इसी तरह तुम अरबों के ख़िलाफ लड़ने की महारत रखते हों तुम इन अरबी मुसलमानों को काट फैंकने के लिए आगे चले जाओ। मेरी फौज तुम्हारे क़रीब ही कही मौजूद होगी। जू ही ज़रूरत पड़ी हम तुम्हारी मदद को पहुंच जाऐंगे।"

रात गुज़र गई। सुबह फारस की फौज के दो सालार महरां बिन बहराम के पास गए।

"रात को हम ने आप की और अक़ा की बात चीत में दख़ल देना मुनासिब न समझा"–एक सालार ने कहा–"हम ने बोलने की ज़रूरत इस लिए भी न समझी के रात को ये बात चीत नशे की हालत में हो रही थी।"

"मै पूरी तरह होश में था"–महरां ने कहा–"कहो क्या कहना चाहते हो!"

"आप ने इन बदवी क़बीलों को जो अहमीयत दी है ये हमारे लिए अच्छी नहीं"–सालार ने कहा।

"क्यों अच्छी नहीं?"

"इस से इन क़बीलों को ये तास्सुर मिला है के हम मुसलमानों से डरते हैं"–सालार ने जवाब दिया–"या ये के़ हम कमज़ोर है। ये लोग इतनी अहमीयत के क़ाबिल नहीं।"

"अगर बदवी क़बीलों ने मुसलमानों को शिकस्त दे दी"–दूसरे सालार ने कहा–"तो कहा जाएगा के ये फतह इन क़बीलों की है और अगर ये न होते तो हम एक और शिकस्त से दो चार होते।"

"मै ने इन्हें जो अहमीयत दी है ये आख़िर तुम्हें मिलेगी"–महरां ने कहा–"क्या तुम तस्लीम नही करते के हम पर हमला करने वो शख़्स आ रहा है जिस ने हमारे नामूर सालारों को मौत के घाट उतार दिया है और उस 'ख़ालिद'(र०) ने फारस की शहंशाही की बुनियादें हिला डाली है? मै इस ऐतराफ से नहीं शर्माऊंगा के तुम

ख़ालिद(र०) का मुक़ाबला नही कर सकते। मै ने कुछ सोच कर इन बदवी क़बीलों को आगे जाने की इजाज़त दी है। अगर उन्होंने मुसलमानों को शिकस्त दे दी तो ये तुम्हारी फतह होगी। ये बदवी क़बीले हमारी रिआया है। अगर ये मुसलमानों को शिकस्त न दे सके और पस्पा हो गए तो हम मुसलमानों पर इस हालत में हमला करेंगे के वो थक कर चूर हो चुके होंगे और हमारी फौज ताज़ा दम होगी।"

दोनों सालारों ने एक दूसरे की तरफ देखा। उन के चेहरों पर रौनक़ आ गई थी। अपने हाकिम की ये चाल इन्हें बहुत पसंद आई थी।

✵

ख़ालिद(र०) मुजाहेदीन क लश्कर को ले कर ऐनुल्तमर की तरफ जा रहे थे। उन्होंने दरियाए फरात उबूर किया और बड़ी तेज़ रफ्तार से दरिया के किनारे पेशक़दमी जारी रखी। उन्होंने देख भाल के लिए जो आदमी आगे भेज रखे थ, वो अपनी इत्तेलाऐं क़ासिदों के ज़रियं भेज रहे थे।

अम्बार में ख़ालिद(र०) अपने एक नायब सालार ज़बरकान बिन बद्र को छोड़ आए थे।

ऐनुल्तमर दस मील दूर रह गया था जब जासूस और देखभाल करने वाले दूसरे आदमी पीछे आ गए। उन्होंने ख़ालिद(र०) को इत्तेला दी के ज़रा आगे एक बहुत बड़ा लश्कर पड़ाव डाले हुए है और ये लश्कर फारस का नहीं बलिक बदवी क़बीलों का है। इस लश्कर का सालारे आला अक़ा बिन अबी अक़ा और उस का नायब हज़ील है।

ख़ालिद(र०) ने अपने लश्कर को रोक लिया और खुद आगे देखने गए। उन्होंने छुप कर देखा। इन्हें किसरा की फौज कहीं भी नज़र न आई। ये लश्कर बदवी क़बीलों का था। ख़ालिद(र०) का लश्कर अभी कूच की तरतीब में था जो दरअसल तरतीब नहीं थी। मंज़िल अभी दस मील दूर थी। अभी लश्कर क़ाफले की सूरत चला आ रहा था। ऐनुल्तमर पहुंच कर शहर को मुहासरे में लेना था लेकिन रास्ते में एक इन्सानी दीवार आ गई जो मुसलमानों के लिए ग़ैर मुतावक़्क़े थी। मोअररिख़ों ने इन क़बीलों की तादाद नहीं लिखी सिवाए इस के के वो तादाद में मदीने के मुजाहेदीन से ख़ासे ज़्यादा थे। ऐनुल्तमर की अपनी फौज इस तादाद के अलावा थी। इस तरह मुसलमानों का मुक़ाबला कम अज़ कम तीन गुनाह ताक़तवर दुश्मन से था।

ख़ालिद(र०) ने फौरन अपने लश्कर को तीन हिस्सों में तक़सीम किया। पहले की तरह खुद क़ल्ब में रहे और अपने दोनों तजुर्बाकार सालारों आसिम बिन उमरो(र०) और ऐदी बिन हातिम को दायें और बायें पहलू में रखा। ख़ालिद(र०) ने तमाम सालारों

को अपने पास बुलाया।

"हमारी तरतीब वही है जो आमने सामने के हर मआरके में हुआ करती है"-ख़ालिद(र०) ने सालारों से कहा-"लेकिन लड़ने का तरीक़ा मुख़तलिफ होगा। अब क़ल्ब से हमला नही होगा। मेरा इशारा मिलते ही दोनों पहलू दुश्मन के पहलू पर हल्ला बोल दें और वहां दुश्मन को पूरी तरह उल्झा लें। थोड़ी देर बाद इस तरह पीछे हटें के दुश्मन को ये तास्सुर मिले के तुम पस्पा हो रहे हो। थोड़ा सा पीछे आ कर फिर आगे बढ़ो और फिर पीछे हटो। इस तरह दुश्मन के पहलूओं को आपस में उलझाए रखना के अपने क़ल्ब की इन्हें होश न रहे। मै सीधा दुश्मन के क़ल्ब पर हमला करूंगा लेकिन कुछ देर बाद। तुम दोनों इस कोशिश में रहना के दुश्मन के पहलूओं से उस के क़ल्ब को मदद न मिल सके।"

"वलीद के बेटे!"-दुश्मन की तरफ से लल्कार सुनाई दी-"आंखें खोल..... देख तेरी मौत तुझे किस के सामने ले आई है.....मैं अक़ा हूं.....अक़ा बिन अबी अक़ा!"

"वलीद का बेटा देख चुका है"-ख़ालिद(र०) ने घोड़े पर सवार हो कर और रकाबों में खड़े हो कर लल्कार का जवाब दिया-"तेरी मक़रूह आवाज़ सुने बग़ैर देख लिया है....क्या किसरा के सालारों ने महल में नाचना और गाना शुरू कर दिया है के उन की लड़ाई तुम लड़ने आ गए हो?"

"इब्ने वलीद!"-अक़ा की लल्कार बुलंद हुई-"क्या तू ज़िन्दा वापस जाने का ख्वाहिशमंद नही?"

"मैं ज़िन्दा वापस जाऊंगा"-ख़ालिद(र०) ने गला फाड़ कर कहा-"खुदा की क़सम, तेरे सर को तेरे जिस्म से अलग कर के जाऊंगा।"

ख़ालिद(र०) अपने सालारों की तरफ मुतवज्जह हुए।

"रब्बे काबा की क़सम!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"मै अक़ा को ज़िन्दा पकडूंगा फिर इसे ज़िन्दा नही रहने दूंगा.....तुम सब अपने अपने दस्तों तक पहुंचो और सब को बताओ के आज तुम्हारा मुक़ाबला दो फौजों के साथ है। एक ये फौज है जो तुम्हारे सामने सियाह पहाड़ की मानिंद खड़ी है और एक वो फौज है जो शहर के अन्दर है या कहीं रूपोश है और न जाने किस तरफ से तुम पर हमला कर देगी। सब को बता दो के आज जिस ने पीठ दिखाई वो अल्लाह को मुंह दिखाने के क़ाबिल नही रहेगा।"

मोअररिख़ लिखते है के मदीने के मुजाहेदीन मुसलसल लड़ रहे थे और कूच कर रहे थे और उन की तादाद भी कम थी। ऐनुल्तमर में दुश्मन को लल्कार कर

ख़ालिद(र०) बज़ाहिर ग़लती कर रहे थे लेकिन ख़ालिद(र०) के चेहरे पर संजीदगी ज़रूर थी, परेशानी की हल्की सी भी झलक नही थी। इन्हें दुश्मन लल्कार रहा था।

❁

ख़ालिद(र०) ने इशारा दे दिया। एक पहलू से सालार आसिम बिन उमरो और दूसरे पहले से सालार ऐदी बिन हातिम नें बदवी क़बीलों के लश्कर के पहलूओं पर हमला कर दिया। अक़ा बिन अबी अक़ा अपने लश्कर के क़ल्ब में था और उस की नज़र मुसलमानों के क़ल्ब पर थी जहां ख़ालिद(र०) थे। उसे तवक़्क़ो थी के दस्तूर के मुताबिक़ सामने से क़ल्ब के दस्ते हमला करेंगे मगर ख़ालिद(र०) दस्तूर से हट गए थे।

दोनों फौजों के पहलू जब गुथ्थम गुथ्था हुए तो थोड़ी सी देर में अपनी उड़ाई हुई गर्द में छुप गए। इस गर्द से घोड़ों के हिनहिनाने, तलवार और ढालों के टकराने की मुहीब आवाज़ें और ज़ख्मियों की कर्बनाक सदायें उठ रही थीं। एक क़यामत थी जो गर्द के अन्दर बपा थी।

पहलूओं के दोनों सालारों ने ख़ालिद(र०) की हिदायत के मुताबिक़ अपने दस्ते पीछे हटाए बदवी क़बीले इस खुश फहमी में मुसलमानों के पीछे आ गए के मुसलमान पस्पा हो हे हैं। वो जोश व खरोश से नारे लगा रहे थे लेकिन मुसलमान रूक गए और उन्होंने दुश्मन पर ऐसा अबाव डाला क़े वो पीछे हटने लगा।

मुसलमान एक बार फिर पीछे हटने लगे। बदवी फिर उन के पीछे आ गए। इस तरह मुसलमानों ने दुश्मन के पहलूओं को ऐसा उलझाया के इन्हें अपने क़ल्ब की होश न रही। गर्द इतनी ज़्यादा हो गई थी के पता ही नहीं चलता था के इस के अन्दर क्या हो रहा है। ख़ालिद(र०) बड़ी ग़ौर से देख रहे थे। उन की नज़र अक़ा पर थी जो (मोअरिख़ बलाज़ी और तिबरी के मुताबिक़) ये देख देख कर परेशान हो रहा था के मुसलमानों का क़ल्ब क्यों आगे नहीं बढ़ता। मुसलमानों के क़ल्ब के दस्तों का अंदाज़ कुछ ऐसा ढीला ढाला सा था जैसे वो हमला नहीं करना चाहते।

अक़ा बिन अबी अक़ा ने जब मुसलमानों के क़ल्ब के दस्तों को इस ला ताल्लुक़ी की सी हालत में देखा तो उस ने मुसलमानों के पहलूओं के दस्ते को कुचलने के लिए क़ल्ब से ख़ासी नफरी अपने पहलूओं की मदद के लिए भेज दी। ख़ालिद(र०) इसे इसी धोके में लाना चाहते थे जिस में वो आ गया। ख़ालिद(र०) ने अपने मुहाफिज़ों को साथ रखा। इन्हें वो बता चुके थे के अक़ा को ज़िन्दा पकड़ना है। ख़ालिद(र०) ने क़लब के दस्तो को दुश्मन के क़ल्ब पर हमले का इशारा दे दिया।

अक़ा के लिए ये हमला अचानक और ग़ैर मुतावक़्क़े था। ख़ालिद(र०) ने अपने

मुहाफिज़ों से अक़ा और उस के मुहाफिज़ों को घेरे में ले लिया। अक़ा के मुहाफिज़ बे जिग्री से लड़ रहे थे। मुसलमानों को वो क़रीब नहीं आने दे रहे थे। अक़ा इन के दरमियान में था। मुसलमानों के दस्ते ने बदवी क़बायलियों के पांव उखाड़ दिये। अक़ा भाग निकलने की कोशिश कर रहा था।

"सामने आ अक़ा!"-ख़ालिद(र०) ने उसे लल्कारा-"तू मुझे क़त्ल करना चाहता था।"

बाज़ मोअररिख़ों ने लिखा है के ख़ालिद(र०) ने कमंद फैंक कर अक़ा को पकड़ लिया लेकिन मोअररिख़ों की अकसरीयत की तहरीरों से पता चलता है के अक़ा ख़ालिद(र०) की लल्कार पर मुक़ाबले में आ गया। दोनों घोड़ों पर सवार थे। अक़ा को तारीख़ ने माहिर जंगजू और तेग़ ज़न क़रार दिया है। मुसतनद यही है के ख़ालिद(र०) और अक़ा के दरमियान बड़ा सख़्त मुक़ाबला हुआ। ख़ालिद(र०) को अल्लाह के रसूल(स०) ने "अल्लाह की तलवार" का ख़िताब अता किया था। उन्होंने अक़ा का हर वार बचाया और मौक़े की तलाश में रहे। इन्हें जूं ही मौक़ा मिला, अक़ा को घोड़े से गिरा दिया। ख़ालिद(र०) अपने घोड़े से कूद कर उतरे। अक़ा अभी संभल ही रहा था के ख़ालिद(र०) की तलवार की नोक अक़ा के पहलू के साथ लग चुकी थी। उस के साथ ही ख़ालिद(र०) के तीन चार मुहाफिज़ ने बरछियों की अन्नियां अक़ा के जिस्म के साथ लगा दीं।

अक़ा ने हथियार डाल दिए।

उस के कई मुहाफिज़ हलाक और ज़ख्मी हो चुके थे। जो बच गए वो भाग उठे। फौरन ये ख़बर तमाम बदवी क़बायलियों तक पहुंच गई के उन का सरदार आला अक़ा हथियार डाल चुका है। ये अफवाह भी फैल गई के अक़ा मारा गया है। इधर मुसलमानों के सालार आसिम और ऐदी दुश्मन के पहलूओं के दस्तों का बहुत नुक़सान कर चुके थे। इस ख़बर के साथ ही के अक़ा पकड़ा गया या मारा गया है। पहलूओं के सिपाही पस्पा होने लगे।

थोड़ी देर बाद सूरते हाल ये हो गई के बदवी एक एक दो दो ऐनुल्तमर की तरफ भागे जा रहे थे।

❋

अक़ा ख़ालिद(र०) का क़ैदी था लेकिन वो परेशान नहीं था। उसे तवक़्क़ो थी के ऐनुल्तमर की फ़ारसी फौज उस की मदद के लिए पाबा रकाब होगी और आ ही रही होगी। वो मुसलमानों की हालत देख देख कर खुश हो रहा था। मुसलमान थक कर निढाल हो चुके थे। ख़ालिद(र०) ने अपने क़ासिदों को बुलाया।

"तमाम सालारों और कमांडरों को पैग़ाम दो के बदवी लश्कर की पस्पाई को अभी अपनी फतह न समझें"-ख़ालिद(र०) से क़ासिदों से कहा-"अभी माले ग़नीमत की तरफ भी न देखें। एक और फौज आ रही है। वो ताज़ा दम होगी। इस के मुक़ाबले के लिए तैयार रहो।"

ये तो मालूम ही नही था के महरां बिन बहराम की फौज किस तरफ से आएगी या वो ऐनुल्तमर में क़िला बंद हो कर लड़ेगी। इस फौज पर नज़र रखने के लिए मिस्ना बिन हारिसा अपने छापा मार दस्ते के साथ ऐनुल्तमर तक के इलाक़े में मौजूद और मफतहरिक था। उस ने ख़ालिद(र०) को बार बार यही एक पैग़ाम भेजा था के आतिश परस्तों की फौज कहीं भी नज़र नही आ रही। फिर उस का ये पैग़ाम ख़ालिद(र०) तक पहुंचा के अक़ा के क़बायली ख़ौफ व हिरास की हालत में भाग भाग कर ऐनुल्तमर में पनाह ले रहे हैं।

मिस्ना बिन हारिसा के छापा मार भागने वाले बदवी क़बायलियों का तआक़ुब कर के इन्हें मार रहे थे। जब अक़ा के पहले चन्द एक आदमी ऐनुल्तमर में दाख़िल हुए तो इन्हें महरां के पास ले गए।

"तुम मौत से भाग कर आए हो"-महरां ने इन्हें कहा-"क्या तुम नही जानते थे के यहां भी तुम्हारे लिए मौत है?"-उस ने हुक्म दिया-"ले जाओ और बुज़दिलों को और इन्हें क़त्ल कर दो।"

"किस किस को क़त्ल करोगे?"-एक बदवी ने पूछा।

"पहले अक़ा को क़त्ल करो जिस ने हथियार डाल कर सारे लश्कर में बुज़दिली फैलाई"-दूसरे ने कहा।

"मुसलमानों ने जिस तरह हमले किए इन्हें हमारे सरदार समझ ही न सके"-एक और ने कहा।

उन्होंने मैदाने जंग की सूरते हाल ऐसे रंग में पेश की के महरां घबरा गया। मुसलमानों के लड़ने के जज़्बे और जोश व खरोश को उन्होंने मुबालग़े से बयान किया और बताया के अपना लश्कर जो मुसलमानों के हाथों कटने से बच गया है, शहर की तरफ भागा आ रहा है।

"तो क्या हमारे लिए ये बेहतर नहीं होगा के हम मुसलमानों को वहां ले जा कर काटें जहां इन का दम ख़म ख़त्म हो चुका हो?"-महरां बिन बहराम ने अपने सालारों से कहा-"फिर वो पस्पा होने के भी क़ाबिल नहीं रहेंगे?"

"क्या सोच कर आप ने ये बात कही है?"-एक सालार ने कहा-"इतना बड़ा शहर छोड़ कर हम चले जाएंगे तो ये पस्पाई होगी। ये कहें के आप पर मुसलमानों का

ख़ौफ तारी हो गया है और आप यहां से भागना चाहते है।"

"जो मै सोच सकता हूं वो तुम नही सोच सकते"-महरां ने शाहाना रौब से कहा-"मै यहां का हाकिम हूं। जाओ और मेरे अगले हुक्म का इन्तेज़ार करो।"

सालार ख़ामोशी से चले गए। वो सालार थे। शहर का दिफाअ इन की ज़िम्मेदारी थी। वो मुसलमानों को शहर पेश करने की बजाए लड़ कर मरना बेहतर समझते थे। उन्होंने आपस में तय कर लिया के वो महरां का ये हुक्म नहीं मानेंगे लेकिन मैंदाने जंग से भाग कर आने वाले बनी तग़लब, नम्र और अयाद के आदमी टोलियों में शहर के दरवाज़े में दाख़िल हो रहे थे। वो दस मील की मुसाफत तय कर के आए थे जो उन्होंने ख़ौफ और भगदड़ की कैफियत में तय की थी। इन में बाज़ ज़ख्मी थे।

"काट दिया.....सब को काट दिया"-वो घबराहट के आलम में कह रहे थे-"उन का मुक़ाबला कोई नही कर सकता। बड़े ज़बरदस्त हैं।"

"अक़ा बिन अबी अक़ा मारा गया है"-वो शहार पर ख़ौफ तारी कर रहे थे-"हज़ील ला पता है।"

"दरवाज़े बन्द कर दो"-बाज़ चिल्ला रहे थे-"वो आ रहे हैं।"

मोअररिख़ों ने लिखा है के ज़र्तुश्त के पूजारियों पर पहले ही मुसलामनों की दहशत तारी थी। मुसलमानों ने इन के बड़े नामूर सालार मार डाले थे। अब ऐनुल्तमर वाले अपनी आंखों देख रहे थे के ये ज़ंगजू क़बीले किस हालत में वापस आ रहे हैं। देखते ही देखते इस शहर में जो फौज थी उस की ज़हनी हालत उस कमज़ोर और बुज़दिल कुत्ते जैसी हो गई थी जो दुम पिछली टांगों में दबा लिया करता है।

इन के सालारों ने जब अपनी फौज को इस ज़हनी कैफियत में देखा तो इन्हें शहर के हाकिम और सालारे आला महरां के अगले हुक्म की ज़रूरत न पड़ी। इन्हें ये इत्तेला भी मिली के महरां ख़ज़ाना मदाइन भिजवा रहा है और शहर के लोग भी अपने अमवाल छुपा रहे थे या साथ ले कर शहर से निकल रहे थे।

ख़ालिद(र०) के फने हर्ब व ज़र्ब का कमाल ये था के उन्होंने मैदाने जंग मै तो दुश्मन को शिकस्त दी ही थी, दुश्मन को उन्होंने नफसियाती लिहाज़ से इतना कमज़ोर कर दिया था के उस का लड़ने का जज़्बा मजरूह हो गया था। आतिश परस्तों की नफसियाती कैफियत तो ये हो गई थी के ख़ालिद(र०) का या मुसलमानों का या मदीना का नाम सुन कर ही वो पीछे देखने लगते थे के कुमक आ रही है या नहीं या पस्पाई का रास्ता साफ है या नहीं।

❁

फिर वो वक्त जल्दी आ गया जब मैदाने जंग मै लाशें और बे होश ज़ख़्मी रह गए और इन्हें कुचलने के लिए वो घोड़े रह गए जो सवारों के बग़ैर बे लगाम दौड़ते फिर रहे थे। बदवी क़बीले अपने सरदारों के बग़ैर ऐनुल्तमर जा पहुंचे और शहर के दरवाज़े बंद कर लिए। उन्होंने शहर में वावेला बपा किया के महरां की फौज वादे के मुताबिक़ इन की मदद को नही आई लेकिन वहां उन का वावेला सुनने वाला कोई न था। ख़ौफ व हिरास के मारे हुए शहरी थे जो भाग नहीं सके थे। महरां बिन बहराम अपनी फौज समेत शहर से जा चुका था। वो फौज को मदाइन ले जा रहा था। वो अक़ा और हज़ील और दूसरे क़बायली सरदारों को कोस रहा था।

"दुश्मन का तआक्कुब करो"-ख़ालिद(र०) ने अपनी सिपह को हुक्म दिया-"ज़ख्मियों को संभालने के लिए कुछ आदमी यहीं रहने दो और बहुत तेज़ी से ऐनुल्तमर का मुहासरा कर लो।"

ऐन उस वक्त मिस्ना बिन हारिसा घोड़ा सरपट दौड़ाता आया और ख़ालिद(र०) के पास घोड़ा रोक कर उतरा। वो ख़ालिद(र०) से बग़ल गीर हो गया।

"वलीद के बेटे!"-मिस्ना ने कहा-"क़सम रब्बुल आलेमीन की! दुश्मन ऐनुल्तमर से भाग गया है।"

"क्या तेरा दिमाग़ अपनी जगह से हिल तो नहीं गया?"-ख़ालिद(र०) ने पूछा-"यूं कह के दुश्मन मैदान छोड़ कर भाग गया है।"

मिस्ना बिन हारिसा ने ख़ालिद(र०) को बताया के उस ने जो जासूस ऐनुल्तमर के इर्द गिर्द भेज रखे थे, उन्होंने इत्तेला दी है के फारस की फौज जो शहर में थी, शहर से निकल गई है।

"क्या तू नहीं समझ सकता के ये फौज हमारे अक़ब पर उस वक्त हमला करेगी जब हम ऐनुल्तमन को मुहासरे में लिए हुए होंगे?"-ख़ालिद(र०) ने कहा।

"इब्ने वलीद!"-मिस्ना ने कहा-"महरां अपनी फौज के साथ जा चुका है। अगर वो फौज यहां कहीं छुपी हुई होती तो मेरे छापा मार उसे चैन से न बैठने देते..... आगे बढ़ और अपनी आंखों से देख। ऐनुल्तमर तेरे क़दमों में पड़ा है।"

ये ख़बर जब मुजाहेदीन के लश्कर को मिली तो इन के जिस्म जो थकन से टूट रहे थे तरो ताज़ा हो गए। उन्होंने फतह व नुसरत के नारों की गरज में ऐनुल्तमर तक के दस मील तय कर लिए। मिस्ना के जो आदमी पहले ही वहां मौजूद थे, उन्होंने बताया के शहर के तमाम दरवाज़े बन्द है।

ख़ालिद(र०) के हुक्म से शहर का मुहासरा कर लिया गया। बदवी इसाई और इन के दीगर साथी जो शहर में पनाह लेने आए थे, मुक़ाबले पर उतरे आए। उन्होंने

शहर पनाह के ऊपर जा कर मुसलमानों पर तीर बरसाने शुरू कर दिए।

"अक़ा बिन अबी अक़ा को और तामम जंगी क़ैदियों को आगे लाओ"-ख़ालिद(र०) ने हुक्म दिया।

ज़रा सी देर में तामम बदवी क़ैदियों को सामने ले आए। ख़ालिद(र०) ने अक़ा को बाज़ू से पकड़ा और उसे इतनी आगे ले गए जहां वो शहर पनाह से आने वाले तीरों की ज़द में थे

"ये है तुम्हारा सरदार!"-ख़ालिद(र०) ने बड़ी बुलंद आवाज़ से कहा-"तुम इसे बहादुरों का बहादुर समझते थे। इसी ने तुम्हारी दोस्ती फारस वालों से कराई थी। कहां है। तुम्हारे दोस्त?"-ख़ालिद(र०) ने अक़ा को आगे कर के कहा-"इस से पूछो महरां अपनी फौज को बचा कर कहां ले गया है।"

"फिर बेशुमार क़ैदियों को आगे कर दिया गया।

"ये है तुम्हारे भाई!"-चलाओ तीर! सब इन के सीनों में उतरेंगे।"

ये ख़बर किसी तरह शहर में फैल गई के क़िले के बाहर मुसलमानों बनी तग़लब और दीगर क़बीलों के क़ैदियों को लाए है! इन क़ैदियों से कई एक के बीवी बच्चे और लवाहेक़ीन शहर में थे। इन की बस्तियां तो कहीं और थी लेकिन इन की सलामती के लिए इन्हे ऐनुल्तमर में ले आए थे। जंग की सूरत में वो इन्हें अपनी बस्तियों में महफ़ूज़ नही समझते थे। इन औरतों और बच्चों को जब पता चला के उन के क़बीलों के क़ैदी बाहर आए है तो मांऐं अपने बच्चों को उठाए शहर की दीवार पर आ गईं। मैदाने जंग में जाने वालों में से जो वापस नही आए थे, उन की बीवियां, बहनें, मांऐं और बेटियां इस उम्मीद पर दीवार पर आई थीं के उन के आदमी क़ैदियों में होंगे।

इन औरतों ने दीवार के ऊपर हंगामा बपा कर दिया। वो अपने आदमियों को पुकार रही थी। जिन्हें अपने आदमी क़ैदियों में नज़र नहीं आ रहे थे, वो आह वज़ारी कर रही थीं। तीरअंदाज़ इन्हें पीछे हटा रहे थे मगर औरतें पीछे नही हट रही थी।

"हम तुम्हें ज़्यादा मोहलत नही देंगे"-ख़ालिद(र०) के हुक्म से उन के एक मुहाफिज़ ने बुलंद आवाज़ से कहा-"हथियार डाल दो और दरवाज़े खोल दो। अगर हमारे मुक़ाबले में तुम हार गए और दरवाज़ों में हम खुद दाख़िल हुए तो तुम सब का अंजाम बहुत बुरा होगा।"

"हम अपनी दो तीन शर्तों पर दरवाज़ा खोलने पर आमादा हैं"-दीवार के ऊपर से आवाज़ आई।

"तुम्हारी कोई शर्त नही मानी जाएगी"-ख़ालिद(र०) की तरफ से जवाब गया-"हथियार डाल दो, दरवाज़े खोल दो। तुम्हारी सलामती इसी में है।"

बनी तग़लब और इन के इत्तेहादी क़बीले जानते थे के उन की सलामती इसी में है के हथियार डाल दें और मुसलमानों से रहम की दरख्वास्त करें। चुनांचे उन्होंने दरवाज़े खोल दिए और मुसलमान शहर में दाख़िल हुए। उस वक़्त की तहरीरों से पता चलता है के मुसलमानों ने किसी शहरी को परेशान नही किया, अल्बत्ता मुसलमानों के ख़िलाफ जो बदवी लड़े थे, उन सब को क़ैदी बना लिया गया। ये इन क़ैदियों के लवाहेक़ीन पर मुनहसिर था के वो ख़ालिद(र०) का मुक़र्रर किया हुआ फिदया अदा कर के अपने क़ैदियों को रिहा करा लें।

तमाम शहर की तलाशी ली गई। शहर में एक इबादत गाह या दर्स गाह थी जिस में पादरी बनने की तालीम दी जाती थी। उस वक़्त चालिस नौ उम्र लड़के ज़ेरे तालीम थे। इन सब को पकड़ लिया गया। इन में से अकसर ने बाद में इस्लाम क़ुबूल कर लिया था और इन में से एक को तारीख़े इस्लाम की एक नामूर शख़्सियत का बाप होने का शरफ हासिल हुआ था। इस लड़के का नाम नसीर था। उस ने इस्लाम क़ुबूल किया और एक मुसलमान औरत के साथ शादी की जिस ने मूसा बिन नसीर को जन्म दिया। ये मूसा बिन नसीर शुमाली अफरीक़ा के अमीर मुक़र्रर हुए। उन्होंने ही तारिक़ बिन ज़ियाद को अंदलस फतह करने को भेजा था।

दो तीन मुतास्सिब मोअरिख़ों ने लिखा है के ख़ालिद(र०) ने बनी तग़लब, नम्र और अयाद के उन तमाम आदमियों को क़त्ल कर दिया जो उन के ख़िलाफ लड़े थे। ये एक मफरूज़ा है जो ख़ालिद(र०) को बदनाम करने के लिए घड़ा गया था। मोअरिख़ों की अकसरीयत ने ऐसे क़त्ले आम को हल्का सा इशारा भी नहीं दिया। मोहम्मद हुसैन हैकल ने मुताद्दिद तारीख़ों के हवाले से लिखा है के अक़ा बिन अबी अक़ा को खुले मैदान में ला कर ख़ालिद(र०) ने अपना अहद पूरा करते हुए उस का सर तन से काट डाला।

ख़ालिद(र०) ने ऐलान किया था के बदवी ग़ैर मशरूत तौर पर हथियार डाल दें तो वो बड़े बुरे अंजाम से महफूज़ रहेंगे। दुश्मन ने मुसलमानों की शरायत पर हथियार डाले थे। उन के क़त्ले आम का सवाल ही पैदा नही होता था।

❁

ऐनुल्तमर की फतह के बाद ख़ालिद(र०) ने पहला काम ये किया के अम्बार और ऐनुल्तमर का माले ग़नीमत इक्ठा कर के मुजाहेदीन में तक़सीम किया और ख़िलाफत का हिस्सा अलग कर के वलीद बिन अक़बा के सुपुर्द किया के वो मदीना जाकर अमीरूल मोमेनीन को पेश करें। उन्होंने अमीरूल मोमेनीन के लिए एक पैग़ाम भी भेजा।

वलीद बिन अक़्बा ने मदीना पहुंच कर अमीरूल मोमेनीन अबुबकर(र०) को अम्बार और ऐनुल्तमर की लड़ाई और फतह की तफसील सुनाई माले ग़नीमत पेश किया फिर ख़ालिद(र०) का पैग़ाम दिया। पहले सुनाया जा चुका है के ख़लीफातुल मुसलेमीन अबुबकर(र०) ने ख़ालिद(र०) के लिए हुक्म भेजा था के वो अयाज़ बिन ग़नम के इन्तेज़ार में हीरा में रूके रहें। उस वक्त अयाज़(र०) दोमतुलजंदल में लड़ रहे थे लेकिन लड़ाई की सूरते हाल अयाज़(र०) के लिए अच्छी न थी। ख़ालिद(र०) ने ख़िलाफत के हुक्म को नज़र अंदाज़ कर दिया और हीरा से कूच कर के अम्बार को मुहासरे में लिया, फतह पाई फिर ऐनुल्तमर का मआरका लड़ा और कामयाबी हासिल की।

ख़ालिद(र०) ने अपने पैग़ाम में कहा था के वो हीरा में बैठे रहते तो फारस वालों को अपनी शिकस्तों से संभलने का और जवाबी हमले की तैयारी का मौका मिल जाता। ख़ालिद(र०) की कोशिश ये थी के दुश्मन को कहीं भी क़दम जमाने का और जवाबी वार करने का वक्त न मिल सके। उन्होंने आतिश परस्तों की फौज को नफ्सियाती लिहाज़ से कमज़ोर कर कर दिया। ख़ालिद(र०) ने अमीरूल मोमेनीन की हुक्म अदवली तो की थी लेकिन अमलन साबित कर दिया के ये हुक्म अदूली कितनी ज़रूरी थी। अयाज़ बिन ग़नम अभी तक दोमतुल जंदल में फंसे हुए थे और उन की कामयाबी की तवक्क़ो बहुत कम थी।

"ख़ालिद(र०) ने जो मुनासिब समझा वो किया" -ख़लीफा अबुबकर(र०) ने वलीद बिन अक़्बा से कहा- "उस ने जो सोचा था वही हुआ। अयाज़(र०) की तरफ से जो इत्तेलाऐं आ रही हैं वो उम्मीद अफज़ा नहीं। दोमतुलजंदल पर हमारा क़ब्ज़ा बहुत ज़रूरी था लेकिन अब मुझे अयाज़ के मुताल्लिक़ तशवीश होने लगी है.. इब्ने अक़्बा ! तुम ऐनुल्तमर वापस न जाओ । दोमतुलजंदल चले जाओ और वहां की सूरते हाल देख कर ख़ालिद(र०) के पास जाओ और उसे कहो के अयाज़(र०) की मदद को पहुंचें।"

वलीद बिन अक़्बा रवाना हो गए। अयाज़ बिन ग़नम खुद भी परेशान थे। उन के साथ जो सालार थे, वो इन्हें कह रहे थे के इस सूरते हाल से निकलने के लिए मदद की ज़रूरत है वरना शिकस्त का ख़तरा साथ नज़र आ रहा था। आखिर (मोअररिख़ तिबरी और अबु यूसुफ की तहरीरों के मुताबिक़) अयाज़(र०) बिन ग़नम ने ख़ालिद(र०) को एक तहरीरी पैग़ाम भेजा जिस में उन्होंने अपनी मख़दूश सूरते हाल और अपनी ज़रूरत लिखी।

वलीद बिन अक़्बा भी अयाज़(र०) के पास पहुंच गए। इन का जल्दी पहुंचना

आसान न था। मदीने से दोमतुलजंदल का फासला तीन सौ मील से कुछ कम था और ज़्यादा तर इलाक़ा सहराई था। पहुंचना जल्दी था। वलीद जब अयाज़ के पास पहुंचे तो वो जैसे होश व हवास में नहीं थे। उन्होंने आराम की न सोची, अयाज़(र०) की सूरते हाल देखी।

"मै ने ख़ालिद(र०) को मदद के लिए कल ही पैग़ाम भेजा है"-अयाज़ बिन ग़नम ने वलीद इबने अक़बा से कहा-"मालूम नहीं वो खुद किस हाल में है लेकिन मेरे लिए और कोई चारा क़ार नही। तुम देख रहे हो।"

"अल्हमदोलिल्लाह!"-वलीद ने कहा-"ख़ालिद(र०) ने आतिश परस्तों की शहंशाही और उन की जंगी ताक़त को जड़ों से उखाड़ फैका है। अमीरूलमोमेनीन ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है के तुम्हारी ज़रूरत का जायज़ा ले कर इन्हें बताऊं लेकिन तुम्हें फौरी मदद की ज़रूरत है। मै मदीने जाने की बजाए ऐनुल्तमर चला जाता हूं। ख़ालिद(र०) तुम्हारी मदद को आएगा।

ये उस दौर की फर्ज़ शनासी और जज़्बा था जिस में खुशामद, दिखावे और कामचोरी का ज़रा सा भी टमल दख़ल न था। वलीद बिन अक़बा ने ये न सोचा के वो वापस मदीने जाऐं और ख़लीफा के हुक्म के मुताबिक़ इन्हें अपनी कारगुज़ारी बढ़ा चढ़ा कर सुनाऐं और साथ ये कहें के हुज़ूर अयाज़ तो बड़ा नालायक़ सालार है। अगर उस की जगह मै होता तो यूं करता मगर वलीद ने देखा के सूरते हाल मख़दूश है तो वो अपने हाकिम खुद बन गए और मदीने की बजाए ऐनुल्तमर को घोड़ा दौड़ा दिया। उन के सामने पूरे तीन सौ मील की सहराई मुसाफत थी। ईराक़ और शाम के सहरा इसी इलाक़े में मिलते और मुसाफिरों के लिए जान का ख़तरा बन जाते थे। वलीद ने अपने घोड़े पर, अपने आप पर, अपने चार मुहाफिज़ों और उन के घोड़ों पर ये ज़ुल्म किया के कम से कम आराम के लिए कहीं रूके। वो मौसम गर्मी के उरूज़ का था। महीना अगस्त 633ई० था।

❁

दोमतुलजंदल बहुत बड़ा तिजारती शहर था। दूर दराज़ मुमालिक के ताजिर यहां आया करते थे। तिजारत के अलावा या तिजारत की बदौलत इस शहर को दौलत और ज़र व जवाहरात का मरकज़ समझा जाता था। रसूले अकरम(स०) ने इस शहर और इस से मिलने वाली शाहराओं की जुग़राफियाई पोज़ीशन देख कर इस पर फौज कशी की थी। ये मुहिम गज़वा-ए-तबूक़ के नाम से मशहूर हुई। उस वक़्त दोमतुलजंदल का हाकिम और क़िलेदार उकेदर अब्दुल मालिक था। उस ने मुसलमानों का मुक़ाबला बे जिग्री से किया था। ख़ालिद(र०) भी इस मआरके में

शरीक़ थे। उन्होंने उकेदर को ग़ैर मामूली शुजाअत का मुज़ाहेरा करते हुए ज़िन्दा पकड़ लिया था और उस की सिपह ने हथियार डाल दिए थे। उकेदर बिन अब्दुल मालिक ने रसूले अकरम(स०) की इताअत कुबूल कर ली और वफादारी का हलफ उठाया। उस ने इस्लाम भी कुबूल कर लिया था। इस तरह ये इतना बड़ा शहर मुसलमानों के ज़ेरे नगी आ गया था।

रसूल अल्लाह क़ी वफात के साथ ही अरतदाद का फितना तूफान की तरह उठा तो उकेदर भी मदीने से मुनहरिफ हो गया और उस ने इताअत और वफादारी के मुहाएदे को अलग फैंक दिया। उस ने दोमतुलजंदल को एक रियासत बना लिया जिस के बाशिंदे इसाई भी थे और बुत परस्त भी। इसाईयों का सब से बड़ा और ताक़तवार क़बीला कल्ब था।

अमीरूल मोमेनीन अबुबकर(र०) ने उकेदर बिन अब्दुल मालिक की सरकोबी के लिए और उसे अपनी इताअत में लाने के लिए अयाज़ बिन ग़नम को एक लश्कर दे कर भेजा था। वहां जा कर अयाज़ ने देखा के इन का लश्कर तो बहुत थोड़ा है और दुश्मन कई गुना ताक़तवर है लेकिन मदीना से तक़रीबन तीन सौ मील दूर आ कर वापस चल पड़ना तो मुनासिब न था। दोमतुलजंदल की दीवार ऊंची और मज़बूत थी। पूरा शहर बड़ा मज़बूत क़िला था।

अयाज़ ने शहर का मुहासरा किया जो मुकम्मल न था। एक तरफ रास्ता खुला था। उकेदर की सिपह की कुछ नफरी खाली तरफ से बाहर आती और मुसलमानों पर हमला करती। कुछ देर लड़ाई होती और ये नफरी भाग कर क़िले में चली जाती। इन हमलों के अलावा क़िले की दीवारों से मुंसमलानों पर तीरों का मीना बरसता रहता और इस के जवाब में मुसलमान तीर अंदाज़ दीवारों पर तीर फेंकते रहते। उन्होंने क़िले के दरवाज़ों पर हल्ले भी बोले लेकिन क़िले का दिफाअ तवक्क़ो से ज़्यादा मज़बूत था।

मुसलमानों के ख़िलाफ जंग का पांसा इस तरह पलट गया के क़बीला कल्ब के इसाईयों ने अक़ब से आकर मुसलमानों को घेरे में ले लिया। वो मुसलमानों पर बढ़ बढ़ कर हमले करते थे और मुसलमान जान की बाज़ी लगा कर हमलों को रोकते और उन्हें पस्पा करते थे। मुसलमानों की इस बेख़ौफी को देख कर इसाईयों ने हमले कम कर दिए मगर मुसलमानों को घेरे मे रखा ताके वो पस्पा न हो सकें और रसद वग़ैरा की कमी से परेशान हो कर हथियार डाल दें। अयाज़ ने ये इन्तेज़ाम कर रखा था के एक जगह रास्ता खुला रखा और इस की हिफाज़त के लिए आदमी मुक़र्रर कर दिए थे।

ये सूरते हाल मुसलमानों के लिए बड़ी ही ख़तरनाक़ थी। मुसलमान ज़िन्दा

रहने के लिए लड़ रहे थे। साफ नज़र आ रहा था के शिकस्त इन्ही की होगी। दिन पे दिन गुज़रते जा रहे थे।

❁

खा़लिद(र०) ऐनुल्तमर को अपने इन्तेज़ाम में लाने के काम से फारिग़ हो चुके थे। उन्होंने अमाल मुक़र्रर कर दिए थे। दो चार दिनों में ही वहां के शहरियों को यक़ीन हो गया था के मुसलमान न इन्हें ज़बरदस्ती मुसलमान बना रहे है। न उन के हक़ूक़ पामाल कर रहे हैं न उन की औरतों पर बुरी नज़र रखते हैं और उन के घर और अमवाल भी महफूज़ है, इस लिए वो इस्लामी हुकूमत के वफादार बन गए थे।

खा़लिद(र०) के पास अयाज़(र०) बिन ग़नम का क़ासिद पहुंचा और उन का तहरीरी पैग़ाम दिया। अयाज़ जिस मुसीबत में फंस गए थे वो लिखी थी। तफसील क़ासिदों ने बयान की। दूसरे ही दिन वलीद बिन अक़बा पहुंच गए। उन्होंने खा़लिद(र०) से कहा के एक घड़ी जो गुज़रती है वो अयाज़ और उस के मुजाहेदीन को शिकस्त और मौत के क़रीब धकेल जाती है।

"शिकस्त?"–खा़लिद(र०) ने पुरजोश लहजे में कहा–"खुदा की क़सम, इस्लाम की तारीख़ में शिकस्त का लफज़ नही आना चाहिए.....क्या उकेदर बिन अब्दुल मालिक मुझे भूल गया है? क्या वो हमारे रसूल(रस०) को भूल गया है जिन्होंने उसे इताअत पर मज़बूर कर दिया था? क्या वो हमारे अल्लाह को भूल गया है जिस ने हमें उस पर फतह अता की थी?"

तारीख़ शाहिद है के बदले हैं तो इन्सान बदले हैं, अल्लाह नहीं बदला। अल्लाह ने फतूहात को शिकस्तों में उस वक़्त बदला था जब मुसलमान बदल गए थे और खुदा के बंदों के "खुदा" बन गए थे।

खा़लिद(र०) ने अयाज़(र०) बिन ग़नम को पैग़ाम का तहरीरी जवाब दिया। उस दौर में अरबों की तहरीर का अंदाज़ शायराना हुआ करता था। मोअरिख़ों ने लिखा है के खा़लिद(र०) का जवाब मंजूम अंदाज़ का था। उन्होंने लिखा:

> "मुनजानिब खा़लिद(र०) बिन वलीद बनाम अयाज़ बिन ग़नम। मैं तेरे पास बहुत तेज़ पहुंच रहा हूं। तेरे पास ऊंटनियां आ रही है जिन पर काले और ज़हरीले नाग सवार हैं। फौज के दस्ते है जिन के पीछे भी दस्ते आगे भी दस्ते है। ज़रा सब्र करो। घोड़े हवा की रफ्तार से आ रहे है। इन पर तलवारें लहराते शेर सवार है। दस्तों के पीछे दस्ते आ रहे है"

पैग़ाम का जवाब क़ासिद को दे कर खा़लिद(र०) ने उसे कहा के वो जितनी

तेज़ आया था इस से ज़्यादा तेज़ दोमतुलजंदल पहुंचे और अयाज़ को तसल्ली दे। इस के साथ ही उन्होंने अपने एक नायब सालार अवेम बिन काहल असलमी को बुलाया।

"इब्ने काहल असलमी!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"क्या तू जानता है मैं तुझे कितनी बड़ी ज़िम्मेदारी सौंप रहा हूं।"

"अल्लाह मुझे हर उस ज़िम्मेदारी को निभाने की हिम्मत व अक्ल अता फरमाए जो मुझे सौंपी जाए"-अवीम ने कहा-"मेरी ज़िम्मेदारी क्या होगी इब्ने वलीद?"

"ऐनुल्तमर!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"उसका इन्तेज़ाम और इस की हिफाज़त। अन्दर से बग़ावत उठ सकती है, बाहर से हमला हो सकता है। मैं तुझे अपना नायब बना कर दोमतुलजंदल जा रहा हूं। अयाज़ बिन ग़नम मुश्किल में है।"

"अल्लाह तुझे सलामती अता करे"-अवीम ने कहा-"ऐनुल्तमर को अल्लाह की अमान में समझ।"

ख़ालिद के साथ इब्तेदा में जो सिपह थी वो जानी नुक़सान के अलावा इस वजह से भी कम हो गई के हर मफतूहा जगह एक दो दस्ते छोड़ दिए गए थे। ऐनुल्तमर तक पहुंचते नफरी और कम हो गई थी। उस इलाक़े के मुसलमान बाशिंदों से नफरी बढ़ाने की कोशिश की गई थी लेकिन इन की तादाद ज़्यादा नहीं थी। कुछ नौ मुस्लिम भी सिपह में शामिल हो गए थे लेकिन अभी उन पर पूरी तरह ऐतमाद नहीं किया जा सकता था।

ख़ालिद(र०) ने कुछ दस्ते ऐनुल्तमर में छोड़े, छः हज़ार सवार अपने साथ लिए और दोमतुल जंदल को रवाना हो गए। फासला तीन सौ मील था।

❁

ख़ालिद(र०) ने तीन सौ मील की ये सहराई मुसाफत सिर्फ दस दिनों में तय दिनों में तय कर ली। वो अभी रास्ते में थे जब उकेदर के आदमियों ने इस लश्कर को देख लिया। वो मुसाफिर होंगे। उन्होंने ख़ालिद(र०) के पहुंचने से पहले दोमतुलजंदल में इत्तेला दे दी के मुसलमानों का एक लश्कर आ रहा है। बाज़ मोअररिख़ों ने ये भी लिखा है के दोमतुलजंदल वालों को ये भी पता चल गया था के इस इस्लामी लश्कर के सालारे आला ख़ालिद(र०) हैं।

उस वक्त तक इसाईयों के तीन बड़े क़बीले-बनु कल्ब, बनु बहरआ और बनु गुस्सान- जंग में शरीक़ थे। उकेदर बिन अब्दुल मालिक को इत्तेला मिली तो उस ने बड़ी उजलत से इसाईयों और बुत परस्तों के छोटे छोटे क़बीलों को भी जंग में शरीक होने के लिए बुलावा भेज दिया। ख़ालिद(र०) के पहुंचने तक इन छोटे क़बीलों ने

अपने आदमी भेजने शुरू कर दिए थे।

खालिद(र०) तूफान की मानिंद पहुंचे। मुजाहेदीन ने खालिद(र०) के कहने पर जोश व खरोश से नारे लगाने शुरू कर दिए। अयाज़ बिन ग़नम के लश्कर ने ये नारे सुने तो सारे लश्कर ने नारे लगाए। उन के हारे हुए हौसले तरो ताज़ा हो गए। खालिद(र०) ने मैदाने जंग का जायज़ा लिया फिर क़िले के इर्द गिर्द घोड़ा दौड़ा कर क़िले की दीवारों का जायज़ा लिया और क़िले की दीवारों पर खड़े दुश्मन को देखा।

दुश्मन की फौज के दो हिस्से थे। एक का सालारे आला उकेदर और दूसरे का जोदी बिन रबीया था जो क़िले के बाहर था। क़िले के बाहर उन छोटे छोटे क़बीलों के आदमी भी जमा हो गए थे जो उकेदर के बुलावे पर अभी अभी आए थे। इन के लिए क़िले का कोई दरवाज़ा न खुला क्योंके खालिद(र०) की आमद क़िले के लिए बड़ी खतरनाक थी।

❋

खालिद(र०) एक दहशत का दूसरा नाम था। खालिद(र०) दुश्मन पर जो नफसियाती वार करते थे उस का असर मुस्तक़िल होता था। ऐसा ही एक ज़ख्म उकेदर बिन अब्दुल मलिक पहले ही खालिद(र०) के हाथों खा चुका था। खालिद(र०) तो सोच रहे थे के वो क़िले में किस तरह दाखिल हो सकते हैं लेकिन उन की दहशत क़िले के अन्दर पहुंच चुकी थी। उकेदर ने इसाई सरदारों को बुला रखा था और इन्हें कह रहा था के वो खालिद(र०) से टक्कर न लें और सुलह कर लें। इसाई सरदार उस का मशवरा नहीं मान रहे थे।

"मेरे दोस्तों!"–तक़रीबन तमाम मोअररिखों ने उस के ये अल्फाज़ लिखे हैं–"खालिद(र०) से जितना मैं वाक़िफ हूं इतना तुम नही हो। मैं नहीं बता सकता उस में कैसी ताक़त है। मैं इतना जानता हूं के क़िस्मत हर मैदान में उसके साथ होती है। मैदाने जंग का और क़िलों की तस्खीर का जो कमाल उस में है वो किसी और में नही। तुम सोच रहे हो और वो तुम्हारे सर पर खड़ा होगा। खालिद(र०) के मुक़ाबले में जो क़ौम आती है, ख्वाह ताक़तवर ख्वाह कमज़ोर, वो खालिद(र०) के हाथों पिट जाती है। मेरा मशवरा तस्लीम करो और खालिद(र०) से सुलह कर लो।"

इसाईयों ने खालिद(र०) से शिकस्तें खाई थी। वो इन्तेक़ाम लेना चाहते थे।

"तुम उस से लड़ोगे तो हार जाओगे"–उकेदर ने कहा–"फिर वो तुम पर रहम नही करेगा। अगर लड़े बग़ैर सुलह कर लोगे तो वो तुम्हारी जान, तुम्हारी औरतों और तुम्हारे अमवाल की हिफाज़त करेगा मगर तुम उस का मुक़ाबला कर ही नही सकते क्योंके तुम उस की चालें नही समझते।"

"हम लड़े बग़ैर शिकस्त तस्लीम नही करेंगे"-इसाई सरदारों ने फैसला दे दिया।

"फिर तुम मेरे बग़ैर लड़ोगे"-उक़ेदर ने कहा-"मै इतना बड़ा शहर तबाह नही कराऊंगा।"

इसाई सरदार लड़ने के इरादे से चले गए। इन्हें उकेदर के इरादों का इस के सिवा कुछ इल्म न था के वो नही लड़ना चाहता।

रात का पहला पहर था। ख़ालिद(र०) का सालार आसिम बिन उमरो क़िले के उस तरफ गश्त पर फिर रहा था जिधर इलाक़ा खाली था। उसे चार पांच आदमी क़िले से निकल कर उस खुले इलाक़े में आते दिखाई दिए। वो साए से लगते थे। आसिम बिन उमरो के साथ चन्द एक मुहाफिज़ थे। इन्हें आसिम ने कहा के इन आदमियों को घेरे में ले कर रोक लें।

मुहाफिज़ों को मालूम था के किस तरह बिखर कर घेरा डाला जाता है। वो आदमी खुद ही रूक गए। सालार आसिम उन तक पहुंचे।

"मै दोमतुलजंदल का हाकिम उकेदर बिन अब्दुल मलिक़ हूं"-इन में से एक ने कहा।

"अपने और अपने आदमियों के हथियार मेरे आदमियों के हवाले कर दो"-आसिम ने कहा।

"मुझे ख़ालिद(र०) के पास ले चलो"-उकेदर ने अपनी तलवार एक मुहाफिज़ के हवाले करते हुए कहा-"मै नहीं लडूंगा। ख़ालिद(र०) के साथ सुलह की बात करूंगा।"

❁

"मै तुम्हें माफ नही कर सकता इब्ने अब्दुल मलिक!"-ख़ालिद(र०) ने अपने ख़ेमे में उस की बात सुन कर कहा-"तू मेरा मुजरिम नही मेरे रसूल(स०) का मुजरिम है। तू ने अल्लाह के रसूल(स०) से बद अहदी की थी। तू ने इस्लाम कुबूल किया फिर अरतदाद के सरदारों से जा मिला।"

"उकेदर ने अपनी सफाई में बहुत कुछ कहा। बहुत कुछ उज़्र पेश किया। इसाई क़बीलों से ला तआल्लुक़ हो जाने का अहद किया।

"अगर ये लड़ाई मेरी और तेरी होती, ये दुश्मनी मेरी और तेरी होती तो तुझे बख़्श देने से कोई न रोक सकता"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"मगर तू मेरे रसूल(स०) का, मेरे मज़हब का दुश्मन था। खुदा की क़सम, मै तुझे बख़्श नहीं सकता, तुझे ज़िन्दा रहने का हक़ नहीं दे सकता"-ख़ालिद(र०) ने हुक्म दिया-"ले जाओ इसे। कल का

सूरज इसे ज़िन्दा न देखे।"

रात को ही उकेदर बिन अब्दुल मलिक का सर क़लम कर दिया गया।

सुबह तुलू होते ही ख़ालिद(र०) ने अयाज़ बिन ग़नम को बुलाया और उसे बताया के अब वो अपनी सिपह का ख़ुद मुख़्तार सालार नही। इस हुक्म के साथ ख़ालिद(र०) ने अयाज़ की सिपह अपनी कमान में ले ली।

"अब लड़ाई क़िले के बाहर होगी"-ख़ालिद(र०) ने अपने सालारों से कहा-"इतने मज़बूत क़िले पर वक़्त और ताक़त ख़र्च करना महज़ बेकार होगा। पहले इस दुश्मन को ख़त्म करना है जो क़िले के बाहर है।"

ख़ालिद(र०) ने तमाम सिपह को तरतीब में किया। अयाज़ की सिपह में जो मुजाहेदीन नौजवान और जवान थे, इन्हें अलग कर के उस तरफ भेज दिया जिधर एक रास्ता अरब की सिम्त जाता था। ख़ालिद(र०) ने इन जवानों से कहा के दुश्मन इधर से भागने की कोशिश करेगा, उसे ज़िन्दा न निकलने दिया जाए।

ख़ालिद(र०) ने कुछ दस्ते अपनी कमान में ले कर एक इसाई सरदार जोदी बिन रबीआ के मुक़ाबिल रखे और अयाज़ को कुछ दस्ते दे कर दुश्मन के दो सरदारों-इब्ने हद्रजान और लाहीम -के दस्तों के सामने खड़ा कर दिया। अपने दोनों सालारों आसिम बिन उमरों और ऐदी बिन हातिम को हस्बे मामूल पहलूओं पर रखा।

इसाई और बुत परस्त सालार क़िले के अन्दर से भी फौज की ख़ासी नफरी बाहर ले आए। इस तरह उन की तादाद मुसलामनों की निस्बत कई गुना ज़्यादा हो गई।

ख़ालिद(र०) ने ऐसी चाल चली जिस से दुश्मन परेशान हो गया। चाल ये चली के ज़रा सी भी हरकत न की। दुश्मन इस इन्तेज़ार में था के मुसलमान हमले में पहल करेंगे लेकिन मुसलमान तो जैसे बुत बन गए थे। इसाई सरदार लड़ाई के लिए बेताब हो रहे थे। जब बहुत सा वक़्त गुज़र गया और मुसलमानों ने दुश्मन की लल्कार का भी कोई जवाब न दिया तो दुश्मन ने अयाज़ के दस्तों पर हल्ला बोल दिया। इस के साथ ही जोदी ने ख़ालिद(र०) के दस्तों पर हमला कर दिया।

ख़ालिद(र०) ने अपने सालारों को जो हिदायत दे रखी थी उन के मुताबिक़ मुजाहेदीन के दस्तों में दुश्मन को अपनी तरफ आता देख कर भी कोई हरकत न हुई। दुश्मन और ज़्यादा जोश में आ गया। जब दुश्मन के सिपाही मुसलमानों की सफों में आए तो मुसमानों ने इन्हें रास्ता दे दिया। ये ऐसे ही था जैसे घूंसा किसी को मारा और वो आगे से हट जाए।

फौरन ही इसाईयों और बुत परस्तों को अहसास हो गया के वो तो मुसलमानों के

फंदे में आ गए है। ख़ालिद(र०) ने अपने मुहाफिज़ों के साथ इसाईयों और बुत परस्तों के सब से बड़े सालार जोदी बिन रबीआ को घेरे में ले लिया। उस के ख़ानदान के चन्द एक जवान उस के साथ थे। वो तो कट गए और जोदी को ज़िन्दा पकड़ लिया गया।

ख़ालिद(र०) ने अपने लश्कर को ऐसी तरतीब में रखा था जो दुश्मन के लिए फंदा था। दुश्मन के सिपाही जिधर को भागते थे उधर मुसलमानों की तलवारें और बरछियां इन का रास्ता रोकती थीं। आख़िर क़िले की तरफ भागते मगर दरवाज़ा बन्द था। मुसलमान ऊपर आ गए और देखते ही देखते दरवाज़े के सामने इसाईयों और बुत परस्तों की लाशों का अम्बार लग गया।

एक दरवाज़ा और भी था। अपने आदमियों को पनाह में लेने के लिए क़िले वालों ने दरवाज़ा खोल दिया। इसाई और बुत परस्त भाग कर दरवाज़े में दाख़िल होने लगे लेकिन मुसलमान तो जैसे इन के साथ चिपके हुए थे। इस तरह सूरत ये पैदा हो गई के दुश्मन का एक आदमी अन्दर जाता तो दो मुसलमान उस के साथ अन्दर चले जाते थे।

इसाईयों और बुत परस्तों का शीराज़ा बिखर चुका था। मुसलमान क़िले में दाख़िल हो गए थे। अब जो कुछ हो रहा था वो लड़ाई नहीं थी, वो इसाईयों और बुत परस्तों का क़त्ले आम था।। ख़ालिद(र०) चाहते थे के क़त्ले आम का ये सिलसिला जारी रहे।

ये अगस्त 633 ई० के आख़री (जमादी-उल-आख़िर 12 हिज्री के वस्त के)दिन थे। ख़ालिद(र०) ने जोदी बिन रबीआ और उस के तमाम साथी सालारों और सरदारों को सज़ा-ए-मौत दे दी-दोमतुलजंदल मुसलमानों के ज़ेर-ए-नगीं आ गया।

इस्लाम दुश्मन ताक़तें ख़त्म होने में नहीं आती थीं। ईरान के आतिश परस्तों को जिस तरह इस्लाम के अलमबरदारों ने शिकस्त पे शिकस्त दी और जितना जानी नुक़सान इन्हें पहुंचाया था, इतना कोई क़ौम बर्दाश्त नहीं कर सकती लेकिन वहां सिर्फ आतिश परस्त नहीं थे। तमाम ग़ैर मुस्लिम जिन में अकसरीयत अरबी इसाईयों की थी उन के साथ थे। आतिश परस्तों ने अब इन क़बीलों को आगे करना शुरू कर दिया था जैसा महरां बिन बहराम ने ऐनुल्तमर में किया था। आतिश परस्तों के सालार मैदाने जंग से भाग भाग कर मदाइन में इक्ळे होते जा रहे थे।

इन के नामूर सालार बहमन जाज़विया ने जब महरां बिन बहराम को अपनी फौज के साथ वापस आते देखा था तो उसे इतना सदमा हुआ था के उस पर ख़ामोशी तारी हो गई थी।

"मत घबरा बहमन!"-महरां ने उसे कहा था-"दिल छोटा न कर। आख़िर फतह हमारी होगी। में शिकस्त खा कर नहीं आया। शिकस्त बदवी क़बीलों को हुई है।"

"और तू लड़े बग़ैर वापस आ गया है"-सालर बहमन जाज़विया ने कहा था-"तू इतना बड़ा शहर अपने दुश्मन की झोली में डाल आया है। तू खुश क़िस्मत है के यहां तुझे सज़ा देने वाला कोई नहीं। सज़ा देने वाले आपस में लड़ रहे है।। वो जानशीनी पर एक दूसरे का खून बहा रहे है।"

"बहमन!"-महरां ने तंज़िया लहजे में कहा-"क्या तू मुझे सरज़निश कर रहा है? क्या तू मुसलमानों से शिकस्त खाने वालों में से नहीं? अगर तू मैदान में जम जाता तो आज मदीने वाले यूं हमारे सर पर न आ बैठते। शिकस्तों की इब्तेदा तुझ से हुई है। मेरी तारीफ कर के मैं अपने लश्कर को बचा कर ले आया हूं। मै इसी लश्कर से

मुसलमानों को शिकस्त दूंगा। मदाइन में इस वक्त जो लश्कर जमा हो चुका है इसे हम एक फैसला कुन जंग के लिए तैयार करेंगे।"

उस वक्त मदाइन में फारस के जितने भी नामूर सालार थे वो सब ख़ालिद से शिकस्त खा कर आए थे। उन्होंने इसे ज़ाती मसला बना लिया था, वरना वहां इन्हें हुक्म देने वाला कोई न था। हुक्म देने वाले शाही ख़ानदान के अफराद थे जो तख़्त की विरासत के लिए जोड़ तोड़ में लगे हुए थे। वो सालारों को भी अपनी साज़िशों में इस्तेमाल करना चाहते थे लेकिन सालार फारस की शहंशाही के तहफ्फुज़ को अपना फर्ज़ समझते थे। ये चन्द एक सालार ही थे जिन्होंने मदाइन का भरम रखा हुआ था वर्ना किसरा की बुनियादें हिल चुकी थीं और ये इमारत ज़मीं बोस हुआ ही चाहती थी।

उस वक्त ख़ालिद(र०) मदाइन से कम व बेश चार सौ मील दूर दोमतुलजंदल में थे। आतिश परस्तों और इसाईयों को अभी मालूम न था। वो समझते थे के ख़ालिद(र०) ऐनुल्तमर में हैं। ख़ालिद(र०) को दरअसल हीरा वापस आना था। एक तो वो मफ्तूहा इलाक़ों के इन्तेज़ामात वग़ैरा को बेहतर बनाना चाहते थे, दूसरे ये के फौज को कुछ आराम देना था और तीसरा काम ये था के फौज को अज़सरे नौ मुनज़्ज़म करना था।

❁

एक तो ये मुजाहेदीन थे जो मैदाने जंग में दुश्मन के आमने सामने आ कर लड़ते थे, दूसरे मुजाहेदीन वो थे जो दुश्मन के मुख़तलिफ शहरों में बहरूप धार कर खुफिया सरगर्मियों में मसरूफ थे। वो जासूस थे। वो हर लम्हा जान के ख़तरे में रहते थे। वो दुश्मन की नक्ल व हरकत और अज़ाइम मालूम करते और पीछे इत्तेला भिजवाते या खुद इत्तेला ले कर आते थे। तारीख़ में इन में से किसी का भी नाम नही आया। इन में बाज़ पकड़े गए और दुश्मन के जल्लादों के हवाले हुए। इन जासूसों की बरवक्त इत्तेलाओं पर ख़ालिद(र०) कई बार दुश्मन के अचानक हमले और शिकस्त से बचे।

ख़ालिद(र०) जब दोमतुलजंदल में थे तो मफ्तूहा इलाक़ों के लिए एक ख़तरनाक़ सूरते हाल पैदा हो गई। मदाइन पर किसरा की शिकस्त और ज़वाल की सियाह काली घटायें छाई हुई थी। लोगों पर ख़ौफ व हिरास तारी था। किसरा की उस तलवार पर ज़ंग लग चुका था जिस का ख़ौफ दूर तक पहुंचा हुआ था मगर दो चार सालार थे जो इस डूबती कश्ती को तूफान से निकाल ले जाने की कोशिश में मसरूफ थे।

इन हालात में एक घुड़सवार मदाइन में दाख़िल हुआ और बहमन जाज़विया तक पहुंचा।

"अब और क्या बुरी ख़बर रह गई थी जो तू लाया है?"-बहमन ने पूछा-"कहां से आया है तू? क्या मुसमलानों का लश्कर मदाइन की तरफ आ रहा है?"

"नही"-इस आदमी ने कहा-"मुसलमानों का लश्कर चला गया है।"

"चला गया है?"-बहमन जाज़विया ने तंज़िया से लहजे में पूछा-"तू उन लश्करियों में से मालूम होता है जिन्हें मुसलमानों की दहशत ने पागल पन तक पहुंचा दिया है। क्या तू नही जानता तेरे जुर्म की सज़ा मौत है?"

ये आदमी घोड़े से उतर चुका था। उस की इत्तेला पर बहमन जाज़विया बाहर आ गया था। उस ने इस आदमी को अन्दर ले जा कर इज़्ज़त से बैठाने के क़ाबिल नहीं समझा था। सज़ा-ए-मौत का नाम सुनते ही इस आदमी ने घोड़े की बाग छोड़ दी और तेज़ी से आगे हो कर सालार बहमन जाज़विया के क़दमों में बैठ गया।

"मै एनुल्तमर से आया हूं"-उस ने घबराई हुई और मुल्तजी आवाज़ में कहा-"बेशक मै शिकस्त खाने वालों में से हूं लेकिन मैं उन में से भी हूं जो शिकस्त को फतह में बदलना चाहते है।। पहले वो बात सुन लें जो मैं बताने आया हूं फिर मेरा सर काट देना लेकिन मेरी बात को टालोगे तो ये न भूलना के तुम में से किसी का भी सर मुसलमानों के हाथों सलामत नही रहेगा।"

"बोल, जल्दी बोल!"- क्या बात है वो जो तू मुझे इतनी दूर से सुनाने आया है?"

बहमन जाज़विया की एक बेटी जो जवान थी, एक आदमी को अपने बाप के क़दमों में बैठा देख कर क़रीब आ गई वो देख रही थी के जब से उस का बाप शिकस्त खा कर आया है, वो गुस्से से भरा रहता है और सज़ा-ए-मौत के सिवा कोई बात नही करता। लड़की तमाशा देखने आई थी के उस का बाप आज एक और सिपाही को जल्लाद के हवाले करेगा।

"ख़ालिद(र०) ईराक़ से चला गया है"-ऐनुल्तमर से आए हुए आदमी ने कहा-"मै खुद नही आया, मुझे शमशीर बिन कैस ने भेजा है। आप उसे जानते होंगे। मुसलमानों के सालार ख़ालिद(र०) ने ऐनुल्तमर पर क़ब्ज़ा कर के वही के सरकर्दा अफराद को अमाल मुक़र्रर कर दिया है। उस का और बाक़ी सब हमला आवर मुसलमानों का सुलूक मुक़ामी लोगों के साथ इतना अच्छा है के सब उन के वफादार हो गए हैं लेकिन कुछ लोग ऐसे हैं जो इस मौक़े की तलाश में है के मुसलमानों को नुक़सान पहुंचाऐं। मैं खुद देख रहा था के मुसलमानों की फौज अचानक ऐनुल्तमर से निकल गई।"

"ज़र्तुश्त की क़सम!"–बहमन जाज़विया ने कहा–"ख़ालिद(र०) उन शिकारियों में से नही जो पंजों में आए हुए शिकार को छोड़ कर भाग जाते हैं।...... क्या उस की सारी फौज हमारे इलाक़े से निकल गई है।"

"मै पूरी ख़बर लाया हूं सालार!"–इस आदमी ने कहा–"ऐनुल्तमर, हीरा और दूसरे शहरों में जिन पर मुसलामनों का क़ब्ज़ा है, मुसलामनों की बहुत थाड़ी फौज रह गई है और एक एक सालार है। मालूम हुआ है के मुसलमानों का बड़ा लश्कर दोमतुलजंदल चला गया है जहां उन की किसी के साथ लड़ाई हो रही है शमशीर बिन क़ैस ने मुझे आप के पास इस पैग़ाम के साथ भेजा है के ये वक़्त फिर नही आएगा। इस वक़्त मफ्तूहा इलाक़े मुसलमानों से छुड़ाए जा सकते है।।"

कुछ और सवाल व जवाब के बाद बहमन जाज़विया को यक़ीन हो गया के ये आदमी ग़लत ख़बर नही लाया। बहमन को मालूम था के दोमतुलजंदल कितनी दूर है और वहां तक पहुंचने और वापस आने में कितना वक़्त लगता है।

"तुम वापस चले जाओ"–बहमन जाज़विया ने इस आदमी से कहा–"और शमशीर बिन क़ैस से कहना के इतना बड़ा लश्कर तुम्हारे नाम लिख दिया गया है जिसे तुम तसव्वुर में भी नहीं ला सकते। एक आदमी तुम्हारे पास ताजिर के रूप में आएगा। उस के साथ तुम्हारी बात होगी। वो तुम्हारा साइल होगा। हम बहुत जल्दी हमले के लिए आ रहे हैं। अन्दर से दरवाज़े खोलना तुम्हारा काम होगा।"

"क्या हो गया है मोहतरम बाप?"–बहमन की बेटी ने ऐनुल्तमर के सवार के जाने के बाद बहमन से पूछा–"मुसलमान कहां चले गए हैं?"

"ओह मेरी प्यारी बेटी!"–बहमन ने बेटी को फर्ते मुसर्रत से गले लगा लिया और पुरजोश और पुरअज़्म आवाज़ में बोला–"मुसलमान वही चले गए हैं, जहां से आए थे। मैं ने कहा था के वो मदाइन तक पहुंचने की जुर्रत नहीं करेंगे। उन्होंने जो फतह हासिल करनी थी कर चुके है, अब हमारी बारी है। अब मैं अपनी बेटी को मुसलमानों की लाशें दिखाऊंगा।"

"कब?"–बेटी ने बच्चें के से इश्तियाक़ से पूछा–"मुझे ख़ालिद(र०) की लाश दिखाना मोहतरम पिद्र! यहां सब कहते है। के वो इन्सानों के रूप में आया हुआ जिन्न है।"

बहमन जाज़विया ने बड़ी ज़ोर से क़हक़हा लगाया।

☸

बहमन जाज़विया का ये फातेहाना और तंज़िया क़हक़हा पहले किसरा के मेहल्लात में पहुंचा, वहां से सालारों तक गया फिर मदाइन की हज़ीमत खुर्दा फौज ने

सुना और फिर ये अहकाम और हिदायत की सूरत इख़्तियार कर गया। बहमन जाज़विया की बेटी ने अपनी तमाम सहेलियों को और शाही महल की औरतों को और जिस के साथ भी उस ने बात की, ये अल्फाज़ कहे-"मै तुम्हें ख़ालिद(र०) की लाश दिखाऊंगी।"

"ख़ालिद(र०) की लाश?"-तक़रीबन हर लड़की और हर औरत का रद्दे टमल यही था-"कहते है ख़ालिद(र०) को कोई नही मार सकता। वो इन्सान नही। उसे देख कर फौजें भाग जाती है।।"

शाही अस्तबल में जहां शाही ख़ानदान और सालारों के घोड़े होते थे, गमा गहमी बढ़ गई थी। साईसों को हुक्म मिला था के घोड़े में ज़रा सा भी कोई नुक्स या कमज़ोरी देखें तो उसे ठीक करें या उसे अलग कर दें।

बहमन जाज़विया की बेटी इस तरह हर तरफ फुदक्ती फिर रही थी जिस तरह ईद का चांद देख कर नए कपड़ों की खुशी में नाचते कूदते हैं। वो अस्तबल में गई। वहां उस के बाप के घोड़े के साथ उस का अपना घोड़ा भी था। जो बाप ने उसे तोहफे के तौर पर दिया था।

"मेरे घोड़े का बहुत सारा ख्याल रखना"-उसने अपने ख़ानदान के साईस से कहा।

एक अधेड़ उम्र साई जो तीन चार महीने पहले इस अस्तबल में आया था, और लड़की से पूछा के अपनी फौज कहीं जा रही है या मदीने के लश्कर के हमले का ख़तरा है?

"अब तुम मदीने वालों की लाशें देखोगे"-लड़की ने कहा।

बाकी घोड़ों के साईस भी इस के इर्द गिर्द इक्ले हो गए थे। वो भी ताज़ा ख़बर सुनना चाहते थे। लड़की ने इन्हें बताया के ख़ालिद(र०) थोड़ी सी फौज पीछे छोड़ कर ज्यादा तर फौज अपने साथ ले गया है और वो ईराक़ से दूर निकल गया है। (ये तमाम इलाक़ा जो ख़ालिद(र०) ने फारस वालों से छीना था, ईराक़ था)। लड़की ने साईसों को बताया के अब अपनी फौज पहले ऐनुल्तमर पर फिर दूसरे शहरों पर हमले कर के इन्हें दौबारा अपने क़ब्ज़े में ले लेगी। अगर ख़ालिद(र०) वापस आया भी तो उसे अपनी शिकस्त और मौत के सिवा कुछ नहीं मिलेगा।

"क्या उसे ज़िन्दा पकड़ा जाएगा?"-अधेड़ उम्र साईस ने मसरूर से लहजे में पूछा।

"ज़िन्दा या मुर्दा!"-बहमन की बेटी ने जवाब दिया-"उसे मदाइन में लाया जाएगा। अगर ज़िन्दा हुआ तो तुम उस का सर क़लम होता देखोगे।"

तीन चार रोज़ गुज़रे तो ये अधेड़ उम्र साईस ला पता हो गया। उसे सब इसाई अरब समझते थे। हंस मुख और मिलंसार आदमी था। सिर्फ एक साईस ने उस के मुताल्लिक़ बताया के वो कहता था के वो अपने क़बीले में वापस जाना चाहता है जहां वो क़बीले की फौज में शामिल हो कर मुसलमानों के ख़िलाफ लड़ेगा। वो अपने ख़ानदान के उन मक़तूलीन का इन्तेक़ाम लेना चाहता था जो दो जंगों में मुसलमानों के हाथों मारे गए थे।

❁

जिस वक़्त शाही अस्तबल में इस साईस की ग़ैर हाज़री के मुताल्लिक़ बातें हो रही थीं, उस वक़्त वो मदाइन से दूर निकल गया था। मदाइन से वो शाम को निकला था जब शहर के दरवाज़े अभी खुले थे। उस के पास अपना घोड़ा था। किसी को भी मालूम नही था के वो इसाई नहीं मुसलमान था और वो इसी इलाक़े का रहने वाला था जिस पर ईरान के आतिश परस्तों का क़ब्ज़ा रहा था। वो मिस्ना बिन हारिसा का छापा मार जासूस था। उस ने मदाइन में जा कर शाही अस्तबल की नौकरी हासिल कर ली थी।

बहमन जाज़विया की बेटी से उस ने ईराक़ से ख़ालिद(र०) और उन के लश्कर की रवांगी और मदाइन के सालारों के अज़ाइम की तफसील सुनी तो वो उसी शाम मदाइन से निकल आया। ये इत्तेला बहुत क़ीमती थी। सूरज ने गुरूब हो कर जब उस के और मदाइन की शहर पनाह के दरमियान सियाह पर्दा डाल दिया तो इस मुसलमान जासूस ने घोड़े को ऐड़ लगा दी। उस की मंज़िल अम्बार थी जहां तक वो उड़ कर पहुंचने की कोशिश में था। जहां घोड़ा थकता महसूस होता, वो उस की रफ्तार कम कर देता। सिर्फ एक जगह उस ने घोड़े को पानी पिलाया।

अगले रोज़ का सूरज उफ़क़ से उठ आया था जब वो अम्बार में दाख़िल हुआ और कुछ देर बाद वो सालार ज़ब्रकान बिन बद्र के पास बैठा हुआ था। वो हांप रहा था। उस ने हांपते हुए सुनाया के मदाइन में क्या हो रहा है।

"मैं उसी रोज़ आ जाता जिस रोज़ मुझे बहमन जाज़विया क़ी बेटी से ये ख़बर मिली थी"–उस ने सालार ज़ब्रकान से कहा–"लेकिन मैं वहां तीन दिन ये देखने के लिए रूका रहा के दुश्मन क्या तैयारियां कर रहा है और वो सब से पहले कहां हमला करेगा।"

इस जासूस ने जिसे तारीख़ ने "एक जासूस" लिखा है मदीने की फौज के सालार ज़ब्रकान बिन बद्र को जो तफसीली रिर्पोट दी, वो तारीख़ का हिस्सा है और तक़रीबन हर मोअररिख़ ने बयान क़िया है। ख़ालिद जब ऐनुल्तमर से सालार अयाज़

बिन ग़नम की मदद के लिए दोमतुलजंदल को रवाना हुए तो ऐनुल्तमर से एक इसाई अरब ने मदाइन इत्तेला भेज दी के ख़ालिद ईराक़ से चले गए हैं। उन की मंज़िल दोमतुलजंदल बताई गई इस से मदाइन के तजुर्बेकार सालार बहमन जाज़विया ने ये राय क़ायम की के मसुलमान तख़्त व ताज और लूट मार करने आए थे और अपने कुछ दस्ते बराए नाम क़ब्ज़ा बरक़रार रखने के लिए पीछे छोड़ कर चले गए और ये दस्ते ज़रा से दबाव से भाग उठेंगे।

उस ज़माने में अकसर यूं होता था के कोई बादशाह बहुत बड़ी फौज तैयार कर के तूफान की मानिंद यके बाद दीगरे कई मुल्कों पर चढ़ाई करता और क़त्ले आम और लूट मार करता अपने पीछे खंडर और लाशों के अम्बार छोड़ जाता था। वो किसी भी मुल्क़ पर मुस्तकि़ल तौर पर क़ब्ज़ा नही करता था। मदाइन के महल में ख़ालिद(र०) के कूच के मुताल्लिक़ यही राय क़ायम की गई लेकिन ख़ालिद(र०) ने ईराक़ में फारस के जो मक़बूज़ा शहर और बड़े कि़ले फतह किए थे, वहां वो एक एक सालार और कुछ दस्ते छोड़ गए थे। ये सूरते हाल किसरा के सालारों को कुछ परेशान कर रही थी।

"फौज को मदाइन से निकालों और हमले पे हमला करो"–किसरा के दरबार से हुक्म जारी हुआ।

"हम तैयार हैं"–शेरज़ाद ने कहा जो हाकि़म साबात था और अम्बार से मुसलमानों से शिकस्त खा कर भागा था।

"हम बिल्कुल तैयार हैं"–महरां बिन बहराम ने कहा जो ऐनुल्तमर का भगोड़ा था।

"मगर लश्कर तैयार नहीं"–बहमन जाज़विया ने कहा जो तजुर्बाकार सालार था। शिकस्त तो उस ने भी खाई थी लेकिन उस ने कुछ तजुर्बा हासिल किया था।

"क्या कह रहे हो बहमन?"–किसरा के उस वक़्त के जानशीन ने कहा–"क्या हम ने इस लश्कर को इस लिए पाला था के शिकस्त खा कर हमारे पास भाग आए और हम इन सिपाहियों और कमांडरों को सांडों की तरह पालते रहें?"

"अगर इन सिपाहियों और कमांडरों को सज़ा देनी है तो आज ही कूच का हुक्म दे दें"–बहमन जाज़विया ने कहा–"अपने लश्कर की हालत मुझ से सुनें।"

उस ने अपने लश्कर की जो कैफियत बयान की वो, मोअररिख़ों और बाद के जंगी मुबस्सिरों के अल्फाज़ में यूं थी के फारस की इस जंगी ताक़त के पुराने और तजुर्बाकार सिपाहियों की बेशतर नफरी मुसलमानों के हाथों चार पांच जंगों में मारी जा चुकी थी या जिस्मानी लिहाज़ से माजूर बल्कि अपाहिज हो गई थी। ख़ासी तादाद

जंगी क़ैदी थी और लश्कर के जो सिपाही और इन के कमांडर बच गए थे वो ज़हनी तौर पर माज़ूर नज़र आते थे। तीन अल्फाज़ मदीना, खा़लिद(र०) बिन वलीद और मुसलमान, उन के लिए खौ़फ़ का आइस बन गए। वो फौरी तौर पर मैदाने जंग में जाने और लड़ने के का़बिल नही रहे थे। उन का जोश और जज़्बा बुरी तरह मजरूह हुआ था। घोड़ों की भी कमी वाके़ हो गई थी।

बहमन जाज़विया ने दरबारे खा़स में बताया के जो इसाई क़बीले इन के इत्तेहादी बन कर लड़े थे, उन की भी यही कैफियत है। महरां बिन बहराम ने इन्हें ऐनुल्तमर में जो धोका दिया था, इसकी वजह से वो फारस वालों के साथ मिलने से इन्कार कर सकते थे।

"फिर भी इन्हें साथ मिला लिया जाएगा"-बहमन जाज़विया ने कहा-"लेकिन अपने लश्कर के लिए हज़ारहा जवान आदमियों की भर्ती की ज़रूरत है। हमें अपने लश्कर में नया खून शामिल करना पड़ेगा। इन जवानों को हम बताऐंगे के मुसलमानों ने उन की शहंशाही का, उन की गै़रत और उन के मज़हब को लल्कारा है। अगर उन्होंने मुसलमानों को सफहाए हस्ती से मिटा न दिया तो उन पर ज़र्तुश्त का क़हर नाज़िल होगा। इन की जवान और कुंवारी बहनों को मुसलमान अपनी लोंडियां बना लेंगे।"

इतने ज़्यादा लश्कर की क्या ज़रूरत है?"-महरां बिन बहराम ने पूछा-"इत्तेला तो ये मिली है के हर जगह मुसलमानों की नफरी बराए नाम है।"

"हर शहर और हर कि़ले में हमारे अपने आदमी मौजूद है।"-शेरज़ाद ने कहा-"इस वक्त वो मुसलमानों की मुलाज़मत में हैं लेकिन इन्हें जब पता चलेगा के फारस की फौज ने शहर का मुहासरा किया है तो...."

"तो वो अन्दर से कि़ले के दरवाज़े खोल देंगे"-बहमन जाज़विया ने शेरज़ाद की बात पूरी करते हुए कहा-तुम झूटी उम्मीदों के सहारे लड़ाई लड़ना चाहते हो? मुझे इत्तेलाऐं मिलती रहती हैं। मुसलमान अपने मफ्तूहा और महकूम लोगों के साथ इतना अच्छा सुलूक़ करते हैं के उन के साथ कोई आदमी बेवफाई नही करता। अगर फातेह अपने मफ्तूहा की जवान और हसीन बेटियों की तरफ आंख उठा कर भी न देखे और उस की इज़्ज़त और अमवाल को तहाफ्फ़ुज़ दे तो मफ्तूहा ऐसे फातेह के साथ कभी बेवफाई नहीं करेगा।"

"न सही!"-शाही खा़नदान के किसी फर्द ने कहा-"इतने ज़्यादा लश्कर की फिर भी ज़रूरत नही।"

"ये इन सालारों से पूछें जो मुसलमानों से शिकस्त खा कर आए हैं"-बहमन

जाज़विया ने कहा-"मै तो कहता हूं के मुसलमान जितने थोड़े होते हैं इतने ही ज़्यादा ताक़तवर होते हैं मै कोई ख़तरा नही लेना चाहता। ये भी ख्याल रखें के मसुलमान क़िले बन्द होंगे। इन्हें ज़ेर करने के लिए हमारे पास दस गुना नफरी होनी चाहिए। मैं अपनी जवाबी कारर्वाई को फैसलाकुन बनाना चाहता हूं। ये ख्याल भी रखो के हम एक दिन में मक़बूज़ा शहर मुसलामनों से वापस नही ले सकते। मसुलमान जहां मुक़ाबले में डट गए वहां हमें महीनों तक बांध लेंगे। इस अर्से में ख़ालिद(र०) अपने लश्कर के साथ वापस आ सकता है। उस के वापस आजाने से सूरते हाल बिल्कुल ही बदल जाएगी। अगर हमारे लश्कर की नफरी कम हुई तो इस जंग का पांसा पलट सकता है। हम लश्कर तैयार कर के इसे कई हिस्सों में तक़सीम करेंगे और एक ही वक़्त हर जगह हमला करेंगे।"

"क्या ख़ालिद(र०) के ख़ात्मे का कोई इन्तेज़ाम नही हो सकता?"-किसरा के जानशीन ने पूछा।

"ये इन्तेज़ाम भी मेरे पेशे नज़र है"-बहमन जाज़विया ने कहा-"देखभाल के लिए मै तेज़ रफ्तार घुड़सवार हर तरफ फैला दूंगा। ख़ालिद(र०) जिधर से भी आएगा। मुझे इत्तेला मिल जाएगी। मैं उसे ईराक़ से दूर रोक लूंगा।"

❁

बहमन जाज़विया को वसी इख़्तियारात मिल गए। उस ने अपने लश्कर में उन सिपाहियों को ज़्यादा तरजीह दी जो मुसलमानों से लड़ चुके थे। इस के साथ ही नई भर्ती शुरू कर दी। नौजवानों को ऐसा भड़काया गया के वो हथियारों और घोड़ों समेत लश्कर में आने लगे। इसाईयों को ज़्यादा मुरजेआत दे कर फौज में शामिल किया गया।

इसाई क़बीलों के सरदारों को मदाइन बुलाया गया और इन्हें बताया गया के ख़ालिद(र०) अपने लश्कर को ईराक़ से निकाल ले गया है और जो मुसलमान फौज पीछे रह गई है इसे यहीं ख़त्म करना है और ज़िन्दा बच रहने वाले मुसलमानों को सहरा में भटक भटक कर मरने के लिए छोड़ देना है।

"बनी तग़लब से अब ये तवक़्क़ो न रखो के वो तुम्हारी लड़ाई लड़ेंगे"-इसाई क़बीले बनी तग़लब के एक सालार ने फारस के सालारों से कहा-"हम एक बार फिर वो धोका नहीं खाना चाहते जो एक बार खा चुके हैं। ऐनुल्तमर से महरां बिन बहराम अपनी सारी फौज ले कर भाग न आता तो मुसलमान वहीं ख़त्म हो जाते। हम अपनी लड़ाई लड़ेंगे। हमें मुसलमानों से अपने सरदार अक़ा बिन अबी अक़ा के खून का इन्तेक़ाम लेना है। हम तुम्हारी मदद और तुम्हारे साथ के बग़ैर मुसलमानों को शिकस्त

दे सकते है।"

"क्या तुम अपनी लड़ाई अलग लड़ोगे?"-बहमन जाज़विया ने पूछा-"क्या ऐसा नही होगा के मसुलमान हम दोनों को अलग अलग शिकस्त दे दें?"

"लड़ेंगे तुम्हारे दोश बदोश ही!"-बनी तग़लब के सरदार ने कहा-"मेरी अक्ल मेरे क़ाबू में है। हमारा दुश्मन मुश्तरक है। हम तुम्हारे साथ होंगे लेकिन तुम पर भरोसा नही करेंगे। हमें ख़ालिद(र०) का सर चाहिए।"

"ख़ालिद यहां नहीं"-महरां बिन बहराम ने कहा-"वो जा चुका है।"

"जहां कही भी है"-इसाई सरदार ने कहा-"ज़िन्दा तो है। हम पहले उस के इन दोस्तों को ख़त्म करेंगे जो यहां है, फिर हम ख़ालिद(र०) बिन वलीद के पीछे जाऐंगे....वो खुद आ जाएगा। वो दस्तें की मदद को ज़रूर आएगा लेकिन यहां मौत उस की मुंतज़िर होगी।"

ये मुसलमान जासूस मदाइन में इसाई बन कर शाही अस्तबल में नौकरी करता रहा था इस लिए वो इसाईयों में घुल मिल गया था। उस ने सालार ज़ब्रकान बिन बद्र को बताया के आतिश परस्तों की निस्बत इसाई क़बीले ख़ालिद(र०) के ज़्यादा दुश्मन बने हुए है, यहां तक के उन्होंने फारस के सालारों से कहा के वो पीछे रहें, मुसलमानों पर पहला वार इसाई क़बीले, बनी तग़लब, नम्र और अयाद करेंगे।

❁

सालार ज़ब्रक़ान बिन बद्र ने मदाइन की ये रिर्पोट सुनी और उसी वक़्त दो क़ासिद बुलाए। इन्हें कहा के दो बहतरीन घोड़े लें और उड़ते हुए दोमतुलजंदल पहुंचे। ज़ब्रक़ान ने इन्हें ख़ालिद(र०) के नाम जुबानी पैग़ाम दिया।

".....और सालार-ए-आला इब्ने वलीद से ये भी कहना के जब तक अम्बार में आख़री मुसलमान की सांसें चल रहीं होंगी, दुश्मन शहर के अन्दर नही आ सकेगा"-ज़ब्रक़ान बिन बद्र ने क़ासिदों से कहा-"तू आजाएगा तो हमें सहूलत हो जाएगी। नही आ सकोगे तो वो अल्लाह हमारे साथ है जिस के रसूल(स०) का पैग़ाम हम अपने सीनों में लिए यहां तक आए हैं.....और इब्ने वलीद से कहना के दोमतुलजंदल की सूरते हाल तुझे आने देती है तो आ और तू अगर वहां मुश्किल में फंसा हुआ है तो हमें अल्लाह के सुपुर्द कर, हम उसी तरह लड़ेंगे जिस तरह तेरी शमशीर के साय तले लड़ते रहे हैं।"

इन क़ासिदों को रवाना कर के सालार ज़ब्रक़ान ने चन्द एक और क़ासिदों को बुलाया और हर एक को उस की मंज़िल बताई। इन क़ासिदों को उन शहरों में जाना और वहां के सालारों को बताना था के ख़ालिद(र०) की ग़ैर हाज़री से आतिश परस्तों

ने क्या तास्सुर लिया है और वो हमले की तैयारी कर रहे हैं। पैग़ाम में ज़ब्रक़ान ने ये भी कहा के उस ने दोमतुलजंदल को क़ासिद भेज दिया है, अगर वहां से मदद न आई तो हम एक दूसरे की मदद को पहुंचने की कोशिश करेंगे।

मुसलमानों के लिए बड़ी ख़तरनाक सूरते हाल पैदा हो गई थी। दुश्मन के मुक़ाबले में नफरी पहले ही थोड़ी थी। वो भी बिखरी हुई थी। इस सूरत में के दुश्मन बैक़ वक़्त तमाम उन शहरों को जिन पर मुसलामनों का क़ब्ज़ा था, मुहासरे में ले लेता तो मुसलमान एक दूसरे की मदद को नही पहुंच सकते थे।

दोनों तरफ बे पनाह सरगर्मी शुरू हो गई। इसाई क़बीलों के सरदारों ने बस्ती बस्ती जा कर लोगों को इक्ठा करना शरू कर दिया। वो उन छाटे छोटे क़बीलों को भी अपने साथ मिला रहे थे जो इसाई नहीं थे। वो बुत परस्त थे। इसाईयों की जवान लड़कियां भी ग़ैर मुस्लिम बस्तियें में चली गईं। वो औरतों को मुसलमानों के ख़िलाफ भड़काती थीं के वो अपने मर्दों को, जवान भाईयों और बेटों को बाहर निकालें वरना तमाम जवान लड़कियों को मुसलमान अपने साथ ले जा कर लौंडियां बना लेंगे। ऐसे नारे भी इन लड़कियों ने लगाए-"हम मुसलमानों की लौंडियां बनने जा रही हैं"-और दूसरा नारा जो बस्ती बस्ती लग रहा था वो ये था-अपने मक़्तूलों के इन्तेक़ाम का वक़्त आ गया है....बाहर आओ, इन्तेक़ाम लो।"

उधर मदाइन में फारस के लश्कर की तादाद बड़ी तेज़ी से बढ़ती जा रही थी। अब लश्कर में शामिल होने वालों में ज़्यादा तादाद नौजवानों की थी जो जोश से फटे जा रहे थे। इन्हें मैदाने जंग में लड़ने की तरबीयत दी जा रही थी। घुड़सवारी, तीरअंदाज़ी, तेग़ ज़नी और नेज़ाबाज़ी तो वो जानते थे, इन में इन्हें मज़ीद ताक़ किया जा रहा था। बहमन जाज़विया तो जैसे पागल हुआ जा रहा था। वो खुद लश्कर की तरबीयत और मुशक़्क़तों की निगरानी करता था। उस के साथी सालार उसे कहते थे के हमला जल्दी होना चाहिए लेकिन वो नहीं मानता था। कहता था के ख़ालिद(र०) वापस नहीं आएगा। अगर उसे वापस आना ही हुआ तो लश्कर के साथ उस वक़्त यहां पहुंचेगा जब ईराक़ की ज़मीन पर खड़ा होने के लिए उसे एक बालिश्त भी ज़मीन नहीं मिलेगी।

मुसलमान जिन शहरों पर क़ाबिज़ थे, वहां की सरगर्मी अपनी नोईयत की थी। हर शहर में मुसलमानों की तादाद बहुत थोड़ी थी। उन्होंने कम तादाद से क़िलों के दिफाअ की मुशक़ें शुरू कर दी थी। लाखों के हिसाब से तीर और फैंकने वाले बरदे तैयार हो रहे थे। सालारों ने मुजाहेदीन का एक एक छापा मार हबिश तैयार कर लिया था। इन्हें ज़्यादा वक़्त क़िलों के बाहर गुज़ारना और आम रास्तों से दूर रहना था। इन

का काम ये था के दुश्मन शहर का मुहासरा कर ले तो अक़ब से उस पर ज़र्ब लगाओ और भागो के उसूल पर छापे और शबखून मारते रहें।

ख़ालिद(र०) की ग़ैर हाज़री में सालार आसिम बिन उमरों के भाई क़ाक़आ बिन उमरों मफ्तूहा इलाक़ों में मुख़तलिफ शहरों में मुक़ीम दस्तों के सालार थे। उस का हेड क्वाटर हीरा में था। उस की ज़िम्मेदारी सिर्फ हीरा के दिफाअ तक महदूद नही थी। ईराक़ के तामम तर मफ्तूहा इलाक़े का दिफाअ उस की ज़िम्मेदारी में था। उस ने इस इलाक़े में बिखरे हुए तमाम सालारों को हिदायत भेज दी थी। उस ने सब को ज़ोर दे रखा था के दोमतुलजंदल से ख़ालिद(र०) और अपने लश्कर के इन्तेज़ार में न बैठे रहें। अपने अल्लाह पर भरोसा रखें और ये समझ कर लड़ने की तैयारी कर लें के उन की मदद को कोई नही आएगा।

क़ाक़आ ने एक कारर्वाई ये की ख़ालिद(र०) ने जो दस्ते दरियाए फरात के पार खेमा ज़न किए थे, इन में से ज़्यादा तर नफरी को हीरा में बुला लिया ताके इस शहर के दिफाअ को मज़बूत किया जा सके। क़ाक़आ का अपना जासूसी निज़ाम था। इस के ज़रिये क़ाक़आ को इत्तेला मिली के फारस का लश्कर कहां कहां जमा होग़ा। ये दो जगहें थी। एक हुसैद और दुसरी खनाफस। ये दोनों मुक़ाम अम्बार और ऐनुल्तमर के दरमियान थे। क़ाक़आ ने अपने एक दस्ते को हुसैद और दूसरे को खनाफस इस हिदायत के साथ भेज दिया के फारस की फौज वहां आए तो इस पर नज़र रखें और फौज किसी तरफ पेशक़दमी करे तो उस पर छापे मारें और इस पेशक़दमी में रूकावट डालते रहें। शबखून भी मारें।

ये दोनों दस्ते जब इन मुक़ामात पर पहुंचे तो दोनों जगहों पर फारस के हराविल के दस्ते आए हुए थे। वो जो ख़ेमे गाड़ रहे थे, इन से पता चलता था के ये ख़ेमे किसी बहुत बड़े लश्कर के लिए गाड़े जा रहे हैं। मुसलमान दस्ते ने इन के सामने उस अंदाज़ से ख़ेमे गाड़ने शुरू कर देते जैसे वो भी बहुत बड़े लश्कर का हराविल हों।

❁

इधर ये तैयारियां हो रही थीं। मुजाहेदीने इस्लाम को ख़स व ख़ाशाक़ की मानिंद उड़ा ले जाने के लिए बड़ा ही तुंद तूफान उठ खड़ा हुआ था, उधर सालार ज़ब्रक़ान बद्र के रवाना किए हुए दोनों क़ासिद दोमतुलजंदल ख़ालिद(र०) के पास पहुंच गए। उन्होंने साढ़े तीन सौ मील फासला सिर्फ पांच दिनों में तय किया था। ख़ालिद(र०) जब दोमतुलजंदल गए थे तो उन्होंने तीन सौ मील फासला दस दिनों में तय किया था। अब दो क़ासिद ने साढ़े तीन सौ मील से ज़्यादा सहराई और दुश्वार मुसाफत पांच दिनों में तय की। भूक और प्यास से उन की ज़बानें बाहर निकली हुई थी। उन के चेहरों पर

बारीक़ रेत की तह जम गई थी। उन की ज़बानें अकड़ गई थी। उन्होंने फिर भी बोलने की कोशिश की।

"तुम पर अल्लाह की रहमत हो"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"खुश्क़ जिस्मों से तुम कैसे बोल सकोगे?"

इन्हे खिलाया पिलाया गया तो वो बोलने के क़ाबिल हुए।

"सालारे आला को अम्बार के सालार ज़ब्रक़ान बिन बद्र का सलाम पहुंचे"-एक क़ासिद ने कहा।

"वा अलेकुम अस्सलाम!"-ख़ालिद ने पूछा-"और वो पैग़ाम क्या है जो लाए हो?"

"मदाइन में बहुत बड़ा लश्कर तैयार हो रहा है"-क़ासिद ने कहा-"और एक लश्कर इसाई क़बीलों का तैयार हो रहा है। वो कहते हैं इब्ने वलीद उन के इलाक़ों से चला गया है और वो थोड़े से जो दस्ते छोड़ गया है इन्हें एक ही हमले में ख़त्म कर के अपने इलाक़े वापस लेंगे।"

दोनों क़ासिदों ने ख़ालिद(र०) को तमाम तर तफसील बताई और कहा के ख़ालिद को दोमतुल जंदल के हालात इजाज़त न दें तो न आएं, दस्ते जो फारस की शहंशाही के इलाक़े में हैं वो उसी तरह लड़ेंगे जिस तरह ख़ालिद(र०) की क़यादत में लड़े थे।

ख़ालिद दोमतुलजंदल पर क़ब्ज़ा मुकम्मल कर चुके थे। उन्होंने वहां का इन्तेज़ाम एक नायब सालार के हवाले किया और फौरी तौर पर कूच का हुक्म दे दिया।

"खुदा की क़सम!"-मोअररिख़ों के मुताबिक़ ख़ालिद(र०) ने इन अल्फाज़ में क़सम खाई- बनी तग़लब पर इस तरह छपटूंगा के फिर कभी वो इस्लाम के ख़िलाफ उठने के क़ाबिल नही रहेंगे।"

मोअररिख़ों ने लिखा है के ख़ालिद(र०) ने मुजाहेदीन से कहा के इतनी तेज़ चलो के सहरा की हवाऐं पीछे रह जाऐं, पियादे घेड़ों से आगे निकल जाऐं। ये एक इम्तेहान है जो बड़ा ही सख़्त है। ये एक दौड़ थी आतिश परस्तों और हक़ परस्तों की। आतिश परस्तों को अपने ही इलाक़े में पहुंचना था और ये मुसाफत कुछ भी नही थी। हक़ परस्त बड़ी दूर से चले थे। उन के सामने सैकड़ों मीलों की मुसाफत ही नही थी, बड़ा ज़ालिम सहरा था। मील हा मील की वुसअत में सहराई टीले थे और बाक़ी सब रेत का समुंद्र था। सब से बड़ा मसला पानी का और इस से बड़ा मसला रफ्तार का था जो कम नही की जा सकती थी। ना मुमकिन को मुमकिन कर दिखाना था।

चांद और सितारों ने इन्हे चलते देखा। सूरज ने इन्हें चलते देखा। सहरा की आंधी भी इन्हें न रोक सकी। आंधी, सूरज, प्यास और भूक जिस्मों को माज़ूर किया करती है। वो जो तप्ते सहराओं में प्यास से मर जाते है वो जिस्म होते है, और वो जो ख़ालिद(र०) की क़यादत में दोमतुलजंदल से चले थे वो अपने जिस्मों से दस्तबरदार हो गए। उन की कुव्वते इरादी का और कुव्वते ईमानी का करिश्मा ये था के उन्होंने जिस्मानी ज़रूरत से निगाहें फैर लीं और रूहानी कुव्वतों को बेदार कर लिया था। उन की जुबान पर अल्लाह का नाम था, दिलों में ईमान और यक़ीन मोहकम था। अपनी ही आवाज़ उन पर वज्द तारी कर रही थी।

जंगी तराने गाने वाले लश्कर के वस्त में ऊंटों पर सवार थे। उन की आवाज़ आगे भी और पीछे भी जाती थी। लश्कर के क़दम दफों और नफीरियों की ताल पर उठते थे और ये ताल बड़ी तेज़ थी। कुछ फासला तय कर के तराने और दफ ख़ामोश हो जाते और तमाम लश्कर कल्मा-ए-तय्यबा का विर्द शुरू कर देता। हज़ारहा हक़ परस्तों की आवाज़ एक हो जाती फिर ये आवाज़ एक गुंज बन जाती और यूं लगता जैसे सहरा और सहराई टीलों पर वज्द तारी हो गया हो।

इस्लाम के शैदाईयों का लश्कर अपनी ही आवाज़ से मसहूर होता चला जा रहा था।

❁

बहमन जाज़विया ने अपने तैयार किए हुए लश्कर को आख़री बार देखा और इसे दो हिस्से में तक़सीम कर के एक हिस्से को हुसैद की तरफ और दूसरे को ख़नाफस की तरफ रवाना कर दिया। अब उस ने कमान नए सालारों को दी थी। हुसैद वाले हिस्से का सालार रोज़बा था और ख़नाफस वाले हिस्से का ज़रमोहर। इन के लिए हुक्म था के अपने अपने मुक़ाम पर जा कर खेमा ज़न हो जाएं और बनी तग़लब और दूसरे इसाई क़बीलों के लश्कर का इन्तेज़ार करें। क़ाक़आ के जासूस ने सही इत्तेला दी थी के मदाइन के लश्कर हुसैद और ख़नाफस को इजतेमा गाह बनाएंगे और अगली काररवाई यहीं से क़रेंगे।

इसाईयों का लश्कर अभी पूरी तरह तैयार नही हुआ था। मोअरर्ख़ों ने लिखा है के ईरानियों की तरह इसाई दो हिस्से में तैयार हो रहे थे। एक का सरदार हज़ील बिन इमरान था और दूसरे का रबीया बिन बुजैर। ये लश्कर हुसैद और ख़नाफस से कुछ दूर दो मुक़ामात सना और जुमैल पर जमा हो रहे थे।

मदाइन के लश्कर के दो हिस्सों को यकजा होना था। ये बहुत बड़ी जंगी ताक़त थी। मुसलमानों की तादाद हर जंग में दुश्मन के मुक़ाबले में बहुत थोड़ी रही है

लेकिन अब मुसमलान आटे में नमक के बराबर लगते थे। इस्लाम के फिदाइयों का सामना इतने बड़े लश्कर से कभी नही हुआ था।

इन चारों खे़मा गाहों में रात को सिपाही इस तरह नाचते और गाते थे जैसे उन्होंने मुसलमानों को बड़ी बुरी शिकस्त दे दी हो। इन्हें अपनी फतह साफ नज़र आ रही थी। हालात उन के हक़ में थे, नफरी उन की बेपनाह थी, हथियार उन के बेहतर थे। घोड़ों की तादाद भी ज़्यादा थी। इनाम व इक़राम जो इन्हें पेश किए गए थे पहले कभी नही किए गए थे। माले ग़नीमत के मुताल्लिक़ इन्हें बताया गया था के सब उन का होगा। उन से कुछ नही लिया जाएगा।

इन में सिर्फ उन पुराने सिपाहियों पर संजीदगी सी छाई हुई थी जो मुसलमानों के हाथ देख चुके थे। वो जब कोई संजीदा बात करते थे तो नौजवान सिपाही उन का मज़ाक़ उड़ाते थे।

❁

ऐसी एक और रात फारस के लश्कर ने गाते बजाते और पीते पिलाते गुज़ार दी। सुबह अभी सूरज नहीं निकला था और हुसैद की खे़मा गाह में मदाइन के लश्कर का एक हिस्सा सोया हुआ था। इन्हें जागने की कोई जल्दी नहीं थी। इन्हें मालूम था के मुसलमान कि़ले में हैं और तादाद में इतने थोड़े के वो बाहर आने की जुर्रत नहीं करेंगे। उन्होंने देखा था के उन से कुछ दूर मुसलमानों ने आकर जो डेरे डाले थे वो वापस चले गए हैं। मुसलमान एक शाम पहले वहां से आ गए थे।

आतिश परस्तों की खे़मा गाह के संतरी जाग रहे थे या चन्द एक वो लोग बेदार थे जो घोड़ों के आगे चारा डाल रहे थे। पहले संतरियों ने वावेला बपा किया फिर घोड़ों को चारा वग़ैरा डालने वाले चिल्लाने लगे–"होशियार.....ख़बरदार....मदीने की फौज आ गई है"–खे़मा गाह में हड़बोंग मच गई। सिपाही हथियारों की तरफ लपके। सवार अपने घोड़ों की तरफ दौड़े लेकिन मुसलमान सहराई आंधी की तरह आ रहे थे। इन की तादाद आतिश परस्तों के मुक़ाबले में बहुत ही थोड़ी थी लेकिन ये ग़ैर मुतावक़्क़े था के वो हमला करेंगे।

मुसलमानों की तादाद सिर्फ पांच हज़ार थी। उन का सालार क़ाक़आ बिन उमरो था। गुज़िश्ता शाम ख़ालिद(र०) अपने लश्कर समेत पहुंच गए थे। उन्होंने आराम करने की बजाए सूरते हाल मालूम की। उन्होंने शाम को उन मुख़तसिर से दस्तों को हुसैद और ख़नाफस से वापस बुला लिया था। इस से आतिश परस्तें के हौसले और बढ़ गए। वो ये समझते के मुसलमान उन के इतने बड़े लश्कर से मरऊब हो कर भाग गए है।

खा़लिद(र०) ने दूसरा इक़दाम ये किया के पांच हज़ार नफरी एक और सालार अबु लैला को दी और उसे मदाइन के उस लश्कर पर हमला करने को रवाना किया जो ख़नाफस के मुक़ाम पर ख़ेमा ज़न था।

"तुम पर अल्लाह की रहमत हो मेरे दोस्तो!"-ख़ालिद(र०) ने इन दोनों सालारों से कहा-"तुम दोनों सुबह तुलू होते ही बैक वक़्त अपने अपने हदफ पर हमला करोगे। ख़नाफस हुसैद की निस्बत दूर है। अबु लैला! तुझे तेज़ चलना पड़ेगा। क्या तुम दोनों समझते हो के दोनों लश्करों पर एक ही वक़्त क्यों हमला करना है?"

"इस लिए के वो एक दूसरे की मदद को न जा सकें"-क़ाक़आ बिन उमरों ने जवाब दिया-"इब्ने वलीद! तेरी इस चाल को हम नाकाम नहीं होने देंगे।"

"फतह और शिकस्त अल्लाह के इख़्तियार में है"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"तुम्हारे साथ सिर्फ पांच पांच हज़ार सवार और पियादे हैं। मैं दुश्मन की तादाद को देखता हूं तो कहता हूं के ये लड़ाई नहीं होगी, ये छापा होगा। इतने बड़े लश्कर पर इतने कम आदमियों का हमला छापा ही होता है.... वक़्त बहुत कम है मेरे रफीक़ों जाओ। मैं तुम्हें अल्लाह के सुपुर्द करता हूं।"

ख़ालिद(र०) खुद ऐनुल्तमर में इस ख्याल से तैयारी की हालत में रहे क़बीले जो सिन्नी और ज़मील में इक्ळे हो रहे थे वो फारस के लश्कर के साथ जा मिलने को चलें तो इन्हें वहीं उल्झा लिया जाए। मोअरिख़ों ने लिखा है के ये ख़ालिद(र०) की जंगी ज़हानत का कमाल था के उन्होंने दुश्मन की इस सूरते हाल फायदा उठाने की कोशिश की के उस का लश्कर अभी चार हिस्सों में बटा हुआ चार मुख़तलिफ मुक़ामात पर था। इन चार हिस्सों को यकजा होना था। ख़ालिद(र०) ने ऐसी चाल चली के चारों हिस्सों अलग अलग रहें और एक दूसरे की मदद को न पहुंच सकें और हर एक को अलग अलग शिकस्त दी जाए।

यूरपी मोअरिख़ों ने लिशा है के ख़ालिद(र०) का ये हुक्म था-"दुश्मन को तबाह कर दो"-इन मोअरिख़ों ने इस हुक्म का मतलब ये लिया है के जंगी क़ैदी इक्ळे न किए जाएं, दुश्मन का सफाया कर दो। ख़ालिद(र०) इतने ताक़तवर दुश्मन की ताक़त को ख़त्म करना चाहते थे, लेकिन देखना ये था के ख़ालिद(र०) इतनी थोड़ी और थकी हुई नफरी से इतने ताक़त वर दुश्मन को ख़त्म कर सकते थे?

❁

सालार क़ाक़आ बिन उमरों तो वक़्त पर अपने हदफ पर पहुंच गए। दुश्मन के लिए उनका हमला ग़ैर मुतावक़्क़े था। हुसैद की ख़ेमा गाह में हड़बोंग मच गई। मुसलमान बन्द तोड़ कर आने वाले सैलाब की मानिंद आ रहे थे। पांच हज़ार नफरी

को सैलाब नही कहा जा सकता था लेकिन इन पांच हज़ार की तुंदी और तेज़ी सैलाब से कम न थी।

आतिश परस्तों का सालार रोज़बा इस इस सूरते हाल से घबरा गया। उस ने एक क़ासिद को अपने उस लश्कर के सालार ज़रमोहर की तरफ जो ख़नाफस में ख़ेमा ज़न था, इस पैग़ाम के साथ दौड़ा दिया के मुसमलानों ने अचानक हमला कर दिया है और सूरते हाल मख़्दूश है।

क़ासिद बहुत तेज़ वहां पहुंचा। फासला ज़्यादा नही था। सालार ज़रमोहर अपने साथी सालार रोज़बा के इस पैग़ाम पर हंस पड़ा। उस ने कहा के रोज़बा का दिमाग़ चल गया है, मुसमलानों में इतनी जुर्रत कहां के बाहर आकर हमला करें। क़ासिद ने उसे बताया के वो क्या देख आया है। ज़रमोहर अपने लश्कर को वहां से कहीं भी नही ले जा सकता था क्योंके उस के सालारे आला बहमन जाज़विया का हुक्म था के किसी और जगह कुछ ही होता रहे, कोई लश्कर बग़ैर इजाज़त इधर उधर नही होगा, लेकिन क़ासिद ने ज़रमोहर को परेशान कर दिया था। उस ने बेहतर समझा के लश्कर को ख़नाफस में रहने दे और खुद हुसैद जा कर देखे के ये क्या मामला है।

वो जब हुसैद पहुंचा तो अपने साथी सालार रोज़बा को मुश्किल में फंसा हुआ पाया। क़ाक़आ का हमला बड़ा ज़ारदार हल्ला था। उस ने दुश्मन को बेख़बरी में जा लिया था। दुश्मन को ये सहूलत हासिल थी के उस की तादाद बहुत ज़्यादा थी। इस इफरात के बल बूते पर आधा लश्कर बड़ी उजलत में लड़ने के लिए तैयार हो गया था।

ज़रमोहर भी आ गया था। उस ने रोज़बा का साथ दिया। तवक़्क़ो यही थीं के आतिश परस्त मुसलमानों पर छा जाऐंगे। क़ाक़आ ख़ालिद(र०) वाली शुजाअत का मुज़ाहेरा करना चाहता था। वो रोबा को लल्कार रहा था। रोज़बा क़ल्ब में था। क़ाक़आ की बार बार लल्कार पर वो सामने आ गया। क़ाक़आ अपने मुहाफिज़ों के नरग़े में उस की तरफ बढ़ने जा रहे थे। वो अपने मुहाफिज़ों के हिसार से निकल आया। इधर क़ाक़आ अपने मुहाफिज़ों को छोड़ कर आगे हुआ।

दोनों ने एक दूसरे पर वार किए, वार रोके, पैंतरे बदले और ज़्यादा वक़्त नहीं गुज़रा था के क़ाक़आ की तलवार रोज़बा के पहलू में बग़ल से ज़रा नीचे उतर गई। क़ाक़आ ने तलवार खींच ली और घोड़ों को रोक कर पीछे को मोड़ा। रोज़बा घोड़े पर संभलने की कोशिश कर रहा था। क़ाक़आ ने पीछे से आकर तलवार उस की पीठ में खंजर की तरह मारी जो रोज़बा के जिस्म में कई इंच उतर गई। रोज़बा घोड़े से इस

तरह गिरा के उस का एक पांव रकाब में फंस गया।

ज़रमोहर क़रीब ही था। किसी भी मोअररिख़ ने उस मुसलमान कमांडर का नाम नही लिखा जिस ने ज़रमोहर को देख लिया और उसे लल्कारा। ज़रमोहर मुक़ाबले के लिए सामने आया और उस का भी वही अन्जाम हुआ जो उस के साथी रोज़बा का हो चुका था। फर्क़ सिर्फ ये था के उसे उस के घोड़े ने घसीटा नही था। वो खून में लत पत अपने घोड़े से गिरा और मर गया।

मदाइन के इस लश्कर में एक तो वो कमांडर और सिपाही थे जो पहले भी मुसलमानों के हाथों पिट चुके और इन्हें बेजिग्री से लड़ते देख चुके थे। इन्हें अपनी शिकस्त का यक़ीन था। उन के हौसले और जज़्बे में ज़रा सी भी जान नहीं थी। वो कट रहे थे या लड़ाई से निकलने की कोशिश कर रहे थे। जाज़विया ने जिन नौजवानों को भर्ती किया था वो तेग़ ज़नी, तीरअंदाज़ी वग़ैरा में तो ताक़ थे और उन में जोश व ख़रोश भी था लेकिन उन्होंने मैदाने जंग पहली बार देखा था और मुसलमानों को लड़ता भी उन्होंने पहली बार देखा था। उन्होंने तड़पते हुए और प्यास से मरते हुए ज़ख्मी कभी नही देखे थे। ज़ख्म खूरदा घोड़ों को बेलगाम दौड़ते और इन्सानों को कुचलते भी उन्होंने कभी नहीं देखा था।

अब उन्होंने इतनी ग़ारत गरी और इतना ज़्यादा खून देखा के ज़मीन लाल हो गई तो इन्हें उन पुराने सिपाहियों की बातें याद आने लगी जो मुसलमानों से लड़े और भागे थे। अब वो सिपाही ज़ख्मी हो हो कर गिर रहे थे या भाग रहे थे। नौजवानों के हौसले जवाब दे गए। तलवारों और बरछियों पर उन की गिरफ्त ढीली पड़ गई।

आतिश परस्तों के लश्कर का हौसला तो पहले ही टूट रहा था, उन्होंने जब दो नारे सुने तो वो फरार का रास्ता देखने लगे।

"खुदा की क़सम!"–ये किसी मुसलमान का नारा था–"ज़र्तुश्त के पुजारियों के दोनों सालार मारे गए हैं"–ये लल्कार बुलंद होती चली गई।

फिर दुश्मन के अपने सिपाहियों ने चिल्लाना शुरू कर दिया–"रोज़बा और ज़रमोहर हलाक हो गए हैं।"

उस के साथ ये लल्कार भी सुनाई दी–"ख़ालिद(र०) बिन वलीद आ गया है... ..ख़ालिद(र०) बिन वलीद का लश्कर आ गया है।"

इस नारे ने मदाइन के लश्कर का रहा सहा दम ख़म ख़त्म कर दिया और लश्कर बिखर कर फरदन फरदन भाग उठा। भागने वालों का रूख़ ख़नाफस की तरफ था जहां मदाइन के लश्कर का दूसरा हिस्सा ख़ेमा ज़न था।

❁

खनाफिस के लश्कर पर हमला करने के लिए ख़ालिद(र०) ने सालार अबु लैला को इस हिदायत के साथ भेजा था के ख़नाफस और हुसैद पर बैक़ वक़्त हमले होगें लेकिन ऐसा न हो सका। वजह ये थी के ख़नाफस हुसैद की निस्बत दूर था। अबु लैला अपनी पांच हज़ार फौज को ले कर चले तो बहुत तेज़ लेकिन बरवक़्त न पहुंच सके। हुसैद पर क़ाक़आ ने पहले हमला कर दिया। ताख़ीर का नुक़सान ये होना था के दुश्मन बेदार होता लेकिन ताख़ीर भी सूद मंद साबित हुई। वो इस तरह के अबु लैला के पहुंचने से ज़रा ही पहले ख़नाफस के लश्कर को इत्तेला मिल गई के मुसमलानों ने रोज़बा और ज़रमोहर को मार डाला है और लश्कर बुरी तरह कट रहा है।

अबु लैला जब दुश्मन के सामने गए तो दुश्मन को लड़ाई के लिए तैयार पाया। दुश्मन की तादाद कई गुना ज़्यादा थी। अबु लैला को सोच समझ कर आगे बढ़ना था। वो हल्ला नहीं बोल सकते थे। इन्हें चालों की जंग लड़नी थी।

इस इन्तेज़ार में के दुश्मन हमले में पहल करे, हुसैद से भागे हुए सिपाही ख़नाफस की ख़ेमागाह में पहुंचने लगे। सब से पहले घुड़सवार आए। इन में बहुत से ज़ख़्मी थे। ये साबित करने के लिए के वो बिला वजह नहीं भागे, उन्होंने मुसमलानों के लश्कर की तादाद और इन के लड़ने के क़हर व ग़ज़ब को मुबालग़े से बयान किया और ऐसी दहशत फैलाई के ख़नाफस के लश्कर का हौसला लड़े बग़ैर ही टूट गया। भगोड़ों ने ये ख़बर भी सुनाई के ख़ालिद(र०) अपने लश्कर के साथ आ गया है।

ख़नाफस वाले लश्कर की कमान अब एक और आतिश परस्त सालार महबूज़ान के पास थी। ज़्यादा मोअररिख़ों ने लिखा है के महबूज़ान और दीगर तमाम सालारों को ये बताया गया था के मुसलमान क़िलों में बन्द हैं और उन की नफरी बहुत थोड़ी है और ये भी के ख़ालिद(र०) जा चुका है, लिहाज़ा क़िलों पर हमले कर के मुसलमानों को ख़त्म कर देना है। अब सूरते हाल बिल्कुल ही बदल गई थी। मदाइन के सालार महबूज़ान ने रोज़बा के लश्कर की हालत सुनी और अपने लश्कर की ज़हनी हालत देखी और ये सुना के ख़ालिद(र०) अपने लश्कर को ले कर आ गए हैं तो उस ने लड़ाई का इरादा तर्क दिया और अपने लश्कर को कूच का हुक्म दे दिया।

अबु लैला ने बग़ैर लड़े फतह हासिल कर ली। उस ने अपने एक दो आदमी महबूज़ान के लश्कर के पीछे भेजे के वो छुपते छुपाते जाएं और देखें के ये लश्कर कहां जाता है।

❋

ख़ालिद(र०) ऐनुल्तमर थे। इन्हें पहली इत्तेला ये मिली के हुसैद का लश्कर भाग गया है। बहुत देर बाद अबु लैला का भेजा हुआ क़ासिद ख़ालिद(र०) के पास

पहुंचा और ये ख़बर सुनाई के ख़नाफस वाला लश्कर बग़ैर लड़े पस्पा हो गया है और मज़ीह पहुंच कर इसाईयों के साथ जा मिला है। वहां जो इसाई क़बीलों का लश्कर जमा था, उस की कमान हज़ील बिन इमरान के पास थी।

इस तरह मज़ीह में दुश्मन का बहुत बड़ा लश्कर जमा हो गया था। ख़ालिद(र०) सोच में पड़ गए। वो आतिश परस्तों के मरकज़ी मुक़ाम मदाइन पर हमला कर सकते थे। मदाइन फारस की जंगी ताक़त का दिल था। ख़ालिद(र०) ने सोचा के वो इस दिल में खंजर उतार सकते हैं या नहीं। मशहूर मोअररिख़ तिबरी लिखता है के ख़ालिद(र०) मदाइन पर हमला करते तो फतह का इम्कान था लेकिन अक़ब से ये लश्कर हमला कर सकता था जो मज़ीह में जमा हो गया था। ख़ालिद(र०) ने अपने सालारों से मशवरा किया तो इस नतीजे पर पहुंच के पहले मज़ीह की इजतेमा गाह को ख़त्म किया जाए।

ये फैसला और इरादा कर लेना के इस लश्कर को ख़त्म किया जाए, आसान था, अमलन इतने बड़े लश्कर को इतनी थाड़ी नफरी से ख़त्म करना कहां तक मुमकिन था, ये यक़ीनी नहीं था मगर ख़ालिद(र०) इसे यक़ीनी बनाने पर तुले हुए थे। वो ना मुमकिन को मुमकिन कर दिखाने वाले जरनैल थे। उन्होंने ऐसी इस्कीम बनाई जिसे आज के जंगी मुबस्सिर बे मिसाल कहते हैं।

"मेरे रफीक़ो!"-ख़ालिद(र०) ने अपने सालारों, नायब सालारों और कमांडरों को बुला कर कहा-"ख़ुदा की क़सम, तुम ने जितनी कामयाबियां हासिल की हैं ये इन्सानी सतह से बाला थीं। तुम ने पांच गुना क़वी दुश्मन को, इस से भी ज़्यादा नफरी को जिस तरह काटा और भगाया है, ये तुम्हारी माफ़ूक़ुल फितरत ताक़त थी। ये ईमान की कुव्वत है। तुम्हें इस का अज्र ख़ुदा देगा....अब मैं तुम्हें ऐं बड़े ही कठिन इम्तेहान में डाल रहा हूं।"

"इब्ने वलीद!"-सालार क़ाक़आ बिन उमरों ने ख़ालिद(र०) को टोक दिया-"क्या इतनी बातों को ज़रूरी समझता है? रब्बे काबा की क़सम, हम उस अल्लाह के हुक्म से लड़ रहे हैं जिसे ने तुझे हमारा अमीर बनाया है। हुक्म दे के हम आग में कूद जाऐं फिर हमारे जिस्मों को जलता हुआ देख।"

"तुझ पर ख़ुदा की रहमत इब्ने उमरो!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"मैं ने ये बातें इस लिए ज़रूरी समझी थीं के मैं तुम्हें आग में कूदने का हुक्म देने वाला हूं। मैं डरता हूं के कोई मुजाहिद ये न कहे के वलीद के बेटे ने बड़ा ज़ालिम हुक्म दे दिया था.....मेरे रफीक़ो! हमें जान की बाज़ी लगानी है। तमाम मुजाहेदीन से कहो के तुम्हारे सब्र और इस्तक़लाल का एक और इम्तेहान बाक़ी है और इसे अल्लाह का हुक्म समझना।"

ख़ालिद(र०) ने अपनी जो इस्कीम सब को बताई वो ये थी के दुश्मन पर रात के वक़्त तीन इतराफ से हमला करना है और हमले के मुक़ाम तक इतनी ख़ामोशी से पहुंचना है के दुश्मन को ख़बर न होने पाए। ख़ालिद(र०) ने अपनी तमाम फौज को तीन हिस्सों में तक़सीम किया। हर हिस्से पांच हज़ार सवार और पियादे थे। ये तीनों हिस्से एक जगह नही बल्कि एक दूसरे से दूर मुख़तलिफ जगहों पर थे-हुसैद, ख़नाफस और ऐनुल्तमर- इन सब को अपने अपने मुक़ाम से मुक़र्ररा रास्तों से मज़ीह तक पहुंचना था। ख़ालिद(र०) ने हमले की रात भी मुक़र्रर कर दी थी और मुक़ाम भी जो मज़ीह में दुश्मन की इजतेमागाह से कुछ दूर था। तीनों हिस्सों को रात के वक़्त इस मुक़ाम पर पहुंचना था। मज़ीह में दुश्मन का जो लश्कर ख़ेमा ज़न था, उस की तादाद के मुताल्लिक़ मोअररिख़ों में इख़तेलाफ पाया जाता है। ये कहा जा सकता है के दुश्मन की तादाद साठ और सत्तर हज़ार के दरमियान थी। इस पर हमला करने वाले मुजाहेदीन की तादाद पंद्रह हज़ार थी।

❁

इस क़िस्म की इस्कीम को पाया-ए-तक़मील तक पहुंचाना ना मुमकिन की हद तक मुश्किल था। पांच पांच हज़ार के लश्कर के लिए सफर के दौरान ख़ामोशी बरक़रार रखना आसान काम नही था लेकिन बड़ी सख़्ती से खामोशी बरक़रार रखनी थी। दूसरी मुश्किल ख़ालिद(र०) के लिए थी। वो खुद ऐनुल्तमर में थे जहां इन की फौज का सिर्फ एक हिस्सा था। दूसरे दो हिस्सों को हुसैद और ख़नाफस से चलना था। इन्हें क़ासिदों के ज़रिये अपने राब्ते में रखना था ताके हमले वाले मुक़ाम पर बरवक़्त पहुंच सकें।

जो रात मुक़र्रर की गई थी वो नवम्बर 633ई० के पहले (शाबान 12 हिज्री के चौथे) हफ्ते की एक रात थी।

ख़ालिद(र०) के मुजाहिद के तीनों हिस्से अपने अपने मुक़ाम से चल पड़े। घोड़ों के मुंह बांध दिए गए थे। तीनों हिस्सों ने ये इन्तेज़ाम किया था के चन्द एक आदमी लश्कर के आगे और दायें बायें जा रहे थे। इन का काम ये था के कोई भी आदमी रास्ते में मिल जाए उसे पकड़ लें ताके वो दुश्मन तक ख़बर पहुंचा सके। दुश्मन के बेदार हो जाने की सूरत में मुजाहेदीन की कमयाबी मख़्दूश हो जाती और दुश्मन घात भी लगा सकता था।

रात के चले हुए उसी रात नही पहुंच सक़ते थे। दिन को लश्कर को छुपा कर रखा गया। देखभाल वाले आदमी दूर दूर फैले रहे। ख़ालिद ने अपने जासूस दुश्मन की इजतेमागाह मज़ीह तक भेज रखे थे। वो दुश्मन के मुताल्लिक़ इत्तेलाऐं दे रहे थे।

इन की आख़री इत्तेला ये थी के दुश्मन ने अभी तक कोई ऐसी हरकत नहीं की जिस से पता चले के वो किस तरफ हमले के लिए कूच करने वाला है। मोअररेख़ लिखते है के दुश्मन के सालार अपने सालारे आला बहमन जाज़विया के अगले हुक्म का इन्तेज़ार कर रहे थे। ख़ालिद(र०) के आ जाने से उन के लिए सूरते हाल बदल गई थी। इस के मुताबिक़ उन्होंने अपनी सारी इस्कीम बदलनी थी।

❁

उस रात भी मज़ीह की ख़ेमागाह में दुश्मन का लश्कर गहरी नींद सो रहा था जिस रात ख़ालिद(र०) की फौज के तीनों हिस्से बख़ेर व खुबी इस्कीम के ऐन मुताबिक़ मज़ीह के क़रीब मुकम्मल खामोशी से पहुंच गए थे। बाज़ मोअररिख़ों ने उसे महज़ मोअजज़ा कहा है और कुछ इसे ख़ालिद(र०) की दी हुई ट्रेनिंग और उन के पैदा किए हुए डिसीपिलीन का करिश्मा कहते हैं

आधी रात से ज़रा बाद दुश्मन पर क़हर टूट पड़ा। लश्कर सोया हुआ था। मुजाहेदीन ने जगह जगह आग लगा दी थी जिस की रौशनी में अपने पराए की पहचान आसान हो गई थी। मदाइन के और इसाई क़बीलों के इस लश्कर को संभलने और तैयार होने की मोहलत ही न मिली। मुसलमान नारे लगा रहे थे। ज़ख्मियों की चीख़ व पुकार इस दहशत में इज़ाफा कर रही थी जो दुश्मन के लश्कर पर तारी हो गई थी।

"मदीना के मुजाहिदों!"–ख़ालिद(र०) के हुक्म से ये लल्कार बड़ी बुलंद थी–"किसी को ज़िन्दा न रहने दो। वल्जा की तरह दुश्मन का सफाया कर दो।"

दुश्मन के घोड़े जहां बंधे थे वहीं बंधे रहे। इन के सवार इन तक पहुंचने से पहले ही कट रहे थे। मुसलमानों ने रात के अंधेरे से फायदा उठाया था। इसी अंधेरे से दुश्मन ने भी फायदा उठाया। कंई आतिश परस्त और इसाई ज़िन्दा निकल गए। इन की इजतेमा गाह डेढ़ दो मील के रक़्बे में फैली हुई थी। हमला तीन इतराफ से किया गया था।

सुबह का उजाला साफ हुआ तो दुश्मन की इतनी वसी व अरीज़ ख़ेमागाह में क़ोई भी लश्करी ज़िन्दा नहीं था। ज़िन्दा वही रहे थे जो मुसलमानों के इस फंदे से निकल गए थे। मंज़र बड़ा ही हैबत नाक था। जिधर नज़र जाती थी सिवाए लाशों के कुछ नज़र न आता था। लाशों के ऊपर लाशें पड़ी थीं ज़ख्मी तड़प तड़प कर बेहोश हो रहे थे। फिज़ा खून और मौत की बू से बोझल थी।

सालारों के ख़ेमे देखे गए। इन में सामान वग़ैरा पड़ा था। शराब की सुराहियां रखी थीं। हर चीज़ ऐसे पड़ी थी जैसे इन शाहाना ख़ेमों के मकीन अभी अभी निकल के गए है और अभी वापस आ जाऐंगे। कोई सालार नज़र न आया। वो ज़िन्दा निकल

गए थे। सालार महबूज़ान भी निकल गया था और इसाईयों का सरदार और सलार हज़ील बिन इमरान भी ज़िन्दा निकल गया था।

जासूसों की इत्तेलाओं के मुताबिक़, आतिश परसतों और इसाईयों के सरदार ज़ामील चले गए थे जहां इसाई क़बायल का दूसरा हिस्सा ख़ेमा ज़न था। वो मुसलमानों पर हमला करने की अभी तैयारी ही कर रहा था। वो जिस लश्कर का हिस्सा था, उस के तीन हिस्से तबाह हो चुके थे। ज़ौमील वाले इस लश्कर का सरदार रबीया बिन बुजैर था।

माले ग़नीमत में मुसलमानों को जो सब से ज़्यादा क़ीमती और कारआमद चीज़ मिली वो हज़ारों घोड़े थे जो इन्हें ज़ीनों समेत मिल गए थे।

इस से आगे सिना और ज़ौमील दो मुक़ामात थे जहां बनी तग़लब, नम्र और अयाद के इसाई मुसलमानों के खिलाफ ख़ेमा ज़न थे। वो भी मुसलमानों को हमेशा के लिए ख़त्म करने के इरादे से घरों से निकले थे। इसाईयों के सरदार अक़ा बिन अबी अक़ा का बेटा बिलाल बिन अक़ा भी कहीं आगे था। वो अपने बाप के क़त्ल का इन्तेक़ाम लेने के लिए इसाई लश्कर के साथ आया था।

"खुदा की क़सम!"-ख़ालिद(र०) ने मज़ीह की मोअजज़ा नुमा फतह के बाद अपने सालारों से कहा-"मैं दोमतुलजंदल से क़सम खा कर चला था के बनी तग़लब पर इस तरह झपटूंगा के फिर कभी वो इस्लाम के ख़िलाफ उठने के क़ाबिल नहीं रहेंगे....बनी तग़लब अभी आगे हैं। उन पर झपटने की तैयारी करो।"

मज़ीह की बस्ती पर भी मुसलमानों ने छापा मारा था। ये इसाईयों की बस्ती थी। वहां दो ऐसे आदमियों को मुसलमानों ने क़त्ल कर दिया जो मुसलमान थे। उन्होंने किसी वक़्त मदीने में आकर इस्लाम कुबूल किया और वापस अपनी बस्ती में चले गए थे। इन्हें मुजाहेदीन ने अंजाने में इसाई समझ कर मार डाला।

ख़ालिद(र०) ने इतनी बड़ी फतह की ख़बर ख़लीफातुलमुस्लेमीन अबुबकर(र०) को मदीने भेजी और पैग़ाम में ये इत्तेला भी दे दी के मुजाहेदीन के हाथों इसाईयों की एक बस्ती में दो मुसलमान भी ग़लती से मारे गए हैं। ख़लीफातुल मुस्लेमीन ने फतह की ख़बर के साथ इन दो मुसलमानों के क़त्ल की ख़बर भी सब को सुना दी।

"ख़ालिद(र०) को इस की सज़ा मिलनी चाहिए "-उमर(र०) ने कहा-"मुसलमान का खून माफ नही किया जा सकता।"

"जो लोग कुफ्फार के साथ रहते है वो इस सूरते हाल में जो वहां पैदा हो गई थी, मारे जा सकते है।"-ख़लीफातुल मुस्लेमीन ने कहा।

"इस क़त्ल का ज़िम्मेदार ख़ालिद(र०) है"-उमर(र०) ने इसरार किया-"उसे सज़ा मिलनी चाहिए।"

"ख़िलाफ़ते मदीना की तरफ से दोनों मक़तूलीन के पसमांदगान को खून बहा अदा किया जाएगा"-अबुबकर(र०) ने फैसला सुनाया-"और ये खून बहा इसी क़ासिद के हाथ भेज दिया जाए जो फतह की ख़बर लाया है।"

उमर(र०) ने फिर सज़ा की बात की।

"उमर(र०)!"-ख़लीफ़ातुल मुस्लेमीन ने गरज कर कहा-"ख़ालिद वापस नही आएगा। मैं उस शमशीर को नियाम में नही डाल सकता जिसे अल्लाह ने कुफ्फार के ख़िलाफ बे नियाम किया है।" (ब हवाला तिबरी, इब्ने हशाम, अबु सईद, हुसैन हैकल)

मज़ीह के मैदाने जंग में हड्डियां और खोपड़ियां रह गई थी जो दूर दूर तक बिखरी हुई थीं। गिद्ध, गीदड़, भेड़िये, सहराई लोमड़ियों, गिरगट, सांप और हशरातुलअर्ज़ इन हड्डियों से गोश्त खा गए थे। ये आतिश परस्तों की उस जंगी कुव्वत की हड्डियां थीं जिस ने अरब, ईराक़ और शाम पर दहशत तारी कर रखी थी।

इन में उन इसाईयों की हड्डियां भी शामिल थी जो फारस की जंगी कुव्वत में इज़ाफा करने आए थे। ये ईसाई अपने सरदारों के खून का बदला लेने आए थे। इसे उन्होंने मज़हबी जंग भी समझा था। वो इस्लाम के रास्ते में हायल होने आए थे।

इन हड्डियों में उन हाथों की हड्डियां भी थीं जिन्होंने हक़ परस्तों को काटने के लिए नियामों में से तलवारें निकली थीं । इन हाथों में बरछियां भी थीं। इन हाथों में घोड़ों की बागें भी थीं। वो इस खुश फहमी में मुब्तला हो कर आए थे के अर्ज़ व समा की ताक़त इन्ही के हाथों में है और वो समझते थे के वो जब घोड़ों पर सवार होते हैं तो उन के नीचे ज़मीन कांपती है मगर अब वो ज़मीन जो कभी किसी इन्सान और उस के घोड़े के बोझ और खौ़फ से नहीं कांपती, उन के नीचे से निकल गई थी और ज़मीन ने उन के मुर्दा जिस्मों को कुबूल करने से इन्कार कर दिया था।

ज़मीन तो हक़ परस्तों के बोझ और रौब से भी नही कांपती थी। अल्लाह का फरमान कुर्आन की सूरत में मुकम्मल हो चुका था और अल्लाह को वादहू लाशरीक़ मानने वाले अल्लाह के इस फरमान से आगाह थे के गर्दन को कितना ही अक़ड़ा ले, सर को जितना भी ऊंचा कर ले, तू पहाड़ों से ऊंचा नही हो सकेगा और तू कितने ही रौब और दबदबे से क्यों न चले, ज़मीन को तू नहीं फाड़ सकेगा।

हक़ परस्तों को अल्लाह का ये वादा भी याद था के तुम में दस ईमान वाले हुए तो एक सौ कुफ्फार पर ग़ालिब आएंगे। ये ईमान की ही कुव्वत थी के दस ईमान वाले

एक सौ पर और बीस दो सौ पर ग़ालिब आ गए थे।

"सालारे आला इब्ने वलीद कहे न कहे, क्या तुम खुद नही जानते?"—मुसलमानों के सालार अबु लैला अपने कमांडरों और चन्द एक सिपाहियों को जो उन के इर्द गिर्द इक्ठे हो गए थे, कह रहे थे—"अगर तुम से ईमान ले लिया जाए तो तुम्हारे पास गोश्त और हड्डियों के जिस्म रह जाऐंगे.....क्या अन्जाम होगा इन जिस्मों का?.....वो देखो। वो खोपड़ियां देखो। इन के ऊपर का गोश्त खाया जा चुका है। इन के अन्दर मग़ज़ मौजूद है मगर ये मग़ज़ अब सोचने के लिए नहीं रहे। इन में कीड़े दाख़िल हो चुके हैं और इन के मग़ज़ कीड़ों की खुराक़ बन रहे हैं।"

वो ज़रा ऊंची जगह खड़े थे। सब ने इस वसी मैदान की तरफ देखा जहां किसरा की फौज का और इसाईयों के लश्कर का कैम्प था। तीन रातें पहले यहां गहमागहसी थी। सिपाही नाच रहे थे। इन के सालार और सदार ख़ेमों में शराब पी रहे थे। मुसलमानों का शब खून इन पर क़यामत बन कर टूटा था।

".....और अब देखो!"—सालार क़ाक़आ बिन उमरों अपने मातहतों और सिपाहियों से कह रहे थे—"ये उन का अंजाम है जिन्होंने अल्लाह को न माना, मोहम्मद(स०) को अल्लाह का रसूल न माना। उन्होंनं अपने खुदा बनाए हुए थे। इन के सरदार खुदाओं के ऐलची बने हुए थे। फारस के बादशाह अल्लाह के बंदों को अपने बंदे समझते थे। सालारे आला इब्ने वलीद ने कहा हैं के मुजाहेदीन को बताओ के तुम्हें अल्लाह देख रहा है और वही है अज्र देने वाला और उसी ने तुम्हारे जिस्मों में इतनी ताक़त भर दी है के आराम का एक पल नहीं मिलता तुम्हारे जिस्म लड़ रहे होते है या कूच कर रहे होते हैं और अगले रोज़ अगली लड़ाई के लिए तैयार होते हैं। ये ताक़त जिस्मानी नहीं, ये रूह की ताक़त है और रूह को ईमान तक़वीयत देता है।"

"सालारे आला ने कहा है सब से कह दो के तुम ज़मीन की मिल्कियत पर लड़ने नहीं आए, तुम कुफ्र पर ग़ालिब आने के लिए लड़ रहे हो"—सालार ज़ब्रक़ान अपने दस्तों के क़मांडरों से कह रहे थे—"इब्ने वलीद ने कहा है के इन जिस्मों को ईमान से और पाक अज़्म से ख़ाली कर दो तो अभी गिर पड़ोगे और जिस्म रूहों से खाली हो जाऐंगे। जिस्म तो दो लड़ाईयां लड़ कर ही खत्म हो गए थे, अब तुम्हारी रूहें लड़ रही हैं।"

❁

सालार ऐदी(र०) बिन हातिम भी अपने दस्तों को सालारे आला ख़ालिद(र०) का यही पैग़ाम दे रहे थे। सालार आसिम बिन उमरों भी जो सालार क़ाक़आ बिन उमरों के बड़े भाई थे, अपने मुजाहेदीन के साथ यही बातें कर रहे थे। ख़ालिद(र०) ने अपने

तमाम सालारों से कहा था के मुजाहेदीन के जिस्म लड़ने के क़ाबिल नही रहे और ये अज़्म की पुख़्तगी का करिश्मा है के शल और चूर जिस्मों से भी हर मैदान में ये ताज़ा दम हो जाते है। ख़ालिद(र०) ने सालारों से कहा था के इन के हौसले और जज़्बे को क़ायम रखना बहुत ज़रूरी है।

"दुश्मन के पांव उखड़े हुए है।"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"इसे संभलने की मोहलत मिल गई तो ये हमारे लिए ख़तरनाक साबित हो सकती है.....और मेरे रफीक़ो! जिस तरह अल्लाह हमें फतह पे फतह अता करता चला जा रहा है, ये फतूहात भी ख़तरनाक़ साबित हो सकती हैं। हमारा लश्कर ये न समझ ले के हमें शिकस्त हो ही नही सकती। इन्हें बताओ के इन्हें दुश्मन पर हर मैदान में ग़ालिब करने वाला सिर्फ अल्लाह है। उस की ज़ाते बारी को दिल से न निकालें और तकब्बुर से बचें।"

मदीने के मुजाहेदीन का हौसला तो भागते दुश्मन को मैदाने जंग में उस के ज़ख़्मियों को तड़पता और लाशों को सर्द होता देख कर तरोताज़ा हो जाता था लेकिन वो आख़िर इन्सान थे और इन्सान कोताही का मुरतेकब भी हो सकता है, अपना सर तकब्बुर और गुरूर से ऊंचा भी कर सकता है। ख़ालिद(र०) इस ख़तरे को महसूस कर रहे थे। उन्होंने कुफ्फार पर अपनी दहशत तारी कर के इन्हें नफसियाती लिहाज़ से बहुत कमज़ोर कर दिया था लेकिन इन मोअररि्ख़ेन के मुताबिक़ जो जंगी उमूर को समझते थे, ख़ालिद(र०) को ये ख़तरा नज़र आ रहा था के उन की सिपह इस मुक़ाम तक न पहुंच जाए जहां यके बाद दीगरे कई फतूहात के बाद दुश्मन के दबाव से थोड़ा सा भी पीछे हटना पड़े तो सिपह बिल्कुल ही पस्पा हो जाए।

इस ख़तरे ने इन्हें परेशान सा कर दिया था। उन्होंने ये सोचा ही नही के अपने लश्क़र को आराम के लिए कुछ दिन दे दें। वो ऐसी जंगी चालें सोच रहे थे जिन से दुश्मन को बेख़बरी में दबोचा जा सके। एक चाल ख़ालिद(र०) मज़ीह में आज़मा चुके थे। ये कामयाब रही थी। ये था शब खून। पूरे लश्कर ने दुश्मन की खेमा गाह तक पहुंचाना आसान काम नहीं था।

उस वक़्त दुश्मन का लश्कर दो मुक़ामात पर जमा था। एक ज़ौमील था और दूसरा था सिना। इन्ही दो मुक़ामात के मुताल्लिक़ इत्तेला मिली थी के आतिश परस्तों और इसाईयों के लश्कर जमा हैं। अब हुसैद का भागा हुआ लश्कर भी वही जा पहुंचा था और मज़ीह से दुश्मन की जो नफरी बच निकली थी, वो भी इन्ही दो मुक़ामात पर चली गई थी।

इस शिकस्त खूर्दा नफरी ने सिना और ज़ौमील में जा कर दहशत फैला दी।

वहां सरदार और सालार भी थे। इन्हें बहुत मुश्किल पेश आई। जज़्बे के लिहाज़ से लश्कर लड़ने के काबिल नही था। जिस्मानी लिहाज़ से लश्कर ताज़ा दम था। सिना में इन की औरतें भी थीं और बच्चे भी थे। औरतों ने मर्दों को बुज़दिली और बेग़ैरती के ताने दिए और इन्हें लड़ने के लिए तैयार किया।

❁

इन दो मुकामात पर जंग की तैयारियों का मंज़र जंग जैसा ही था। सवार और पियादे तेग़ ज़नी की मश्क़ सुबह से शाम तक करने लगे। सवार दस्तों को हमला करने और हमला रोकने की मश्कें कराई जाने लगी। उस वक्त तक किसरा के सालारों और इन के इत्तेहादी इसाईयों के सरदार ख़ालिद(र०) की जंगी चालें समझ चुके थे।

"लेकिन चालें समझने से क्या होता है।"-इसाईयों के एक क़बीले के सरदार रबीया बिन बुजैर कह रहा था-"दिल को ज़रा मज़बूत रखें तो इन थोड़े से मुसलमानों को कुचलना कोई मुश्किल नहीं।"

उसके पास इसाईयों के बड़े सरदार अक़ा बिन अबी अक़ा का बेटा बिलाल बिन अक़ा बैठा हुआ था। अक़ा बिन अबी अक़ा सरदारों में सरकर्दा सरदार था। उस ने लल्कार कर कहा था के वो ख़ालिद(र०) का सर काट कर लाएगा। मगर ऐनुल्तमर के मआरके में वो पकड़ा गया। इससे पहले ख़ालिद(र०) ने क़सम खाई थी के वो अक़ा को ज़िन्दा पकड़ेंगे। ख़ालिद(र०) की क़सम पूरी हो गई और उन्होंने अक़ा का सर अपनी तलवार से काटा था। बिलाल अक़ा का जवान बेटा था जो अपने बाप के खून का बदला लेने आया था।

"इब्ने बुजैर"-उसने अपने सरदार रबीया की बात सुनकर कहा-"मैं अपने बाप के सर के बदले ख़ालिद(र०) का सर लेने आया हूं।"

"एक नहीं हम पर हज़ारों सरों का कर्ज़ चढ़ गया है"-रबीया बिन बुजैर ने कहा।

वो कुछ देर बातें करते रहे फिर बिलाल बिन अक़ा चला गया। रात का वक्त था। रात सर्द और तारीक थी। महीना नवम्बर का था और उसी शाम रमज़ान का चांद नज़र आया था। बिलाल बाहर जाकर रूक गया वो अपने लश्कर के खेमों से कुछ दूर था। उसे एक तरफ से अपनी तरफ कोई आता नज़र आया। नया चांद कभी का डूब चुका था। तारीक़ रात में चलते फिरते इन्सान मुताहरिक साए लगते थे। साया जो बिलाल की तरफ आ रहा था, क़रीब आया तो बिलाल ने देखा के वो कोई आदमी नही औरत है।

"अबी अक़ा"–औरत ने कहा–"मै साबिहा हूं.....साबिहा बिन्ते रबीया बिन बुजैर....ज़रा रूक सकते हो मेरी ख़ातिर?"

"ओह ! रबीया बिन बुजैर की बेटी !"–बिलाल बिन अक़ा ने मसरूर से लहजे में कहा–"क्या मै अभी अभी तेरे घर से उठ के नही आया?"

"लेकिन बात जो कहनी है वो मै बाप के सामने नही कह सकती थी"–साबिहा ने कहा।

क्या तू ने मुझे अपने क़ाबिल समझा है?"–बिलाल ने कहा–"बात जो तू कहना चाहती है वो पहले ही मेरे दिल में है।"

"ग़लत न समझ इब्ने अक़ा !"–साबिहा ने कहा–"पहले मेरी बात सुन ले !.... मुझे बता के मुझ से ज़्यादा खूबसूरत लड़की तूने कभी देखी है?"

"नहीं बिन्ते रबीया !"

"कभी मदाइन गया है तू?"–साबिहा ने कहा।

"गया हूं?"

"सुना है फारस की लड़कियां बहुत खूबसूरत होती हैं"–साबिहा ने कहा–"क्या वो मुझ से ज़्यादा खूबसूरत हैं?"

"क्या ये अच्छा नही होगा के तू वो बात कह दे जो तेरे दिल में है?"–बिलाल ने पूछा और कहा–"मैं ने तुझ से ज़्यादा किसी लड़की को कभी हसीन नहीं समझा। मैं तुझे तेरे बाप से मांगना चाहता था। मैं नहीं जानता था तेरे दिल में पहले ही मेरी मोहब्ब्त पैदा हो चुकी है।"

"मोहब्बत तो अब भी पैदा नहीं हुई"–साबिहा ने कहा–"मैं किसी और को चाहती हूं। आज से नही, उस दिन से चाहती हूं उसे जिस दिन मैं ने महसूस किया था के मैं जवान होने लगी हूं और जवानी एक साथी का मुताल्बा करती है।"

"फिर मुझे क्या कहने आई है तू?"

"ये के मैं ने उसे अपने क़ाबिल समझना छोड़ दिया है"–साबिहा ने कहा–"मर्द की ताक़त औरत के जिस्म के लिए ही तो नही होती। वो ताक़तवर और खूबसूरत आदमी है। वो जब घोड़े पर बैठता है तो मुझे और ज़्यादा खूबसूरत लगता है।"

"फिर क्या हुआ उसे?"

"वो बुज़दिल निकला"–साबिहा ने कहा–"वो लड़ाईयों में से भाग कर आया है। दोनों बार उसे ख़राश तक नही आई थी। मुझे शक है के वो लड़े बग़ैर भाग आता रहा है। वो मेरे पास आया था। मैं ने उसे कह दिया है के वो मुझे भूल जाए। मैं किसी बुज़दिल की बीवी नही बन सकती। उस ने मेरे बाप को बताया तो बाप ने मुझे कहा के

मै तो उस की बीवी बनने वाली हूं। मै ने बाप से भी कह दिया है के मै मैदान से भागे हुए किसी आदमी की बीवी नही बनूंगी। मै ने बाप से ये भी कहा है के मुझे इस शख़्स की बीवी बनाना है तो मेरी लाश उस के हवाले कर दो।"

"क्या तुम अब मेरी बहादुरी आज़माना चाहती हो?-बिलाल ने पूछा।

"हां!"-साबिहा ने जवाब दिया-"और इस का इनाम देख। इतना हसीन जिस्म तुझे कहां मिलेगा!"

"कही नही"-बिलाल ने कहा-"लेकिन मै एक काम का वादा नही करूंगा। हमारे सरदार और हमारे क़बीलों के जोशीले जवान ये ऐलान कर के मुसलमानों के खिलाफ लड़ने जाते हैं के मुसलमानों के सालार ख़ालिद(र०) बिन वलीद का सर काट कर लाऐंगे मगर खुद कट जाते हैं या भाग आते हैं। मैं ऐसा वादा नही करूंगा। ख़ालिद(र०) का सर कौन काटेगा, उस तक कोई पहुंच ही नही सकता।"

"मैं ऐसा वादा नहीं लूंगी"-साबिहा ने कहा-"मैं तेरे मुंह से नहीं, दूसरों से सुनना चाहती हूं के तूने सब से ज़्यादा मुसमलानों को क़त्ल किया है और मुसलमानों को शिकस्त देने में तेरा हाथ सब से ज़्यादा है। मैं ये भी वादा करती हूं के तू मारा गया तो मै किसी और की बीवी नहीं बनूंगी, अपने आप को ख़त्म करूंगी।"

"मैं तुझे एक बात बता देता हूं साबिहा!"-बिलाल ने कहा-"मैं तेरी ख़ातिर मैदान में नहीं उतर रहा। मेरे ऊपर अपने बाप के खून का कर्ज़ है। मैं ने ये कर्ज़ चुकाना है। मेरी रूह को तस्कीन तब ही होगी के मैं इब्ने वलीद का सर अपनी बरछी की अन्नी पर लाऊं और बनी तग़लब के बच्चे बच्चे को दिखाऊं लेकिन वो बात क्यों जुबान पर लाऊं जो हाथ से कर न सकूं। उस तक पहुंचूंगा ज़रूर। रास्ते में जो आएगा उसे काटता जाऊंगा। मैं ने अपना घोड़ा तब्दील कर लिया है। हवा से तेज़ है और बड़ा ही ताक़तवर।"

"मैं तेरी ताक़त और तेरी तेज़ी और फुर्ती देखना चाहती हूं"-साबिहा ने कहा-"अगर ऐसा हो सके तो मुझे साथ ले चल। मर्दों की तरह लड़ूंगी, लेकिन तू ने पीठ दिखाई तो मेरी तलवार तेरी पीठ में उतर जाएगी।"

"मैं तुझे माले ग़नीमत में मुसलमानों के हवाले नही करना चाहता"-बिलाल ने कहा-"और ये भी सुन ले साबिहा! मेरा बाप अक़ा बिन अबी अक़ा यही अहद कर के गया था के वो ख़ालिद(र०) बिन वलीद को खून में नहला कर आएगा मगर उस ने हथियार डाल कर अपने आप को मुसलमानों के हवाले कर दिया। मालूम नही मुसलमानों को किस ने बता दिया के ये शख़्स इब्ने वलीद का खून बहाने का अहद कर के आया था। इब्ने वलीद ने मेरे बाप को क़ैदियों से अलग किया और सब के

सामने अपनी तलवार से उस का सर काट दिया.....मै तुझे भी यही कहता हूं के वो बात न कह जो तू नही कर सकती।"

"और मै तुझे एक बात कहना चाहती हूं जो तुझे अच्छी नही लगेगी"-साबिहा ने कहा-"अगर अब मेरे क़बीले ने मैदान हार दिया तो मै अपने आप को मुसलमानों के हवाले कर दूंगी और उन से कहूंगी के मै उस आदमी की बीवी बनना चाहती हूं जो सब से ज़्यादा बहादुर है।"

"हम इस कोशिश में अपनी जानें लड़ा दें के मुसलमान हमारी औरतों तक न पहुंच सकें"-बिलाल बिन अक़ा ने कहा-"लेकिन कोई नही बता सकता क्या होगा। एक तरफ तेरे दिल में मुसलमानों की दुश्मनी है और दूसरी तरफ तुम अपने आप को मुसलमानों के हवाले करने की बातें करती हो।"

"मैं ये बातें इस लिए करती हूं के मेरे दिल में कुछ शक और कुछ शुबहे पैदा होते जा रहे हैं।"-साबिहा ने कहा-"मुझे ऐसे महसूस होने लगा है जैसे मज़हब मुसलामनों का ही सच्चा है। इतनी थोड़ी तादाद में वो फारस के और हमारे तमाम क़बीलों के लश्करों को हर मैदान में शिकस्त देते चले आ रहे हैं तो इस की वजह इस के सिवा और क्या हो सकती है के इन्हें किसी ग़ैबी ताक़त की मदद हासिल है। अगर यसूह मसीह(अ०) खुदा के बेटे होत तो क्या खुदा अपने बेटे की उम्मत को इस तरह ज़लील व ख्वार करता? मुझे बताने वाला कोई नही के मुसलमान इसी खुदा को अल्लाह कहते हैं या अल्लाह कोई और है।"

"ऐसी बातें मुंह से न निकालो साबिहा-बिलाल ने झुंझला कर कहा-"तुम बहुत बड़े सरदार की बेटी हो। अपने मज़हब पर ऐसा शक न करो के इस की सज़ा हम सब को मिले।"

"मैं मजबूर हूं इब्ने अक़ा!"-साबिहा ने कहा-"मेरी ज़ात से कुछ आवाज़े सी उठती है। कभी ख्याल आता है जैसे मै अपने क़बीले में और अपने घर में अजनबी हूं। ऐसे लगता है जैसे मै कहीं और की रहने वाली हूं.....मै कुछ नहीं समझती बिलाल! मै जो कहती हूं वो करो फिर मैं तुम्हारी हूं।"

"ऐसा ही होगा साबिहा!"-बिलाल ने उस के दोनों हाथ अपने हाथों में ले कर कहा-"मैं अगर ज़िन्दा वापस आया तो फातेह हो कर आऊंगा। अगर मारा गया तो वापस आने वालों से पूछ लेना के मैं ने मरने से पहले कितने मुसलमानों को क़त्ल किया है।"

बिलाल सिना की रात की तारीक़ी में ग़ायब हो गया। साबिहा बिन्ते रबीया बिन बुजैर वहीं खड़ी बिलाल को साए की तरह रात की तारीक़ी में तहलील होता

देखती रही।

❁

तीन या चार रातें ही गुज़री थी। सिना की खे़मागाह और इसाईयों की बस्तियां तारीकी में डूबी हुई थी। रमज़ान 12 हिज्री का तीसरा या चौथा चांद कभी का उफक़ में उतर चुका था। इन्सानों का एक सैलाब सिना की तरफ बढ़ा आ रहा था। ये मदीने के मुजाहेदीन की फौज थी जो सैलाब कहलाने के क़ाबिल नही थी क्योंके इन की तादाद पंद्रह और सोलह हज़ार के दरमियान थी और दुश्मन की नफरी तीन चार गुना थी। ख़ालिद(र०) ने सिना पर भी मज़ीह वाला दाव आज़माने का फैसला किया था। उन्होंने अपने मुजाहेदीन से कहा था के दुश्मन को और अपने आप को भी मोहलत देना ख़तरनाक होगा। अल्लाह हमारे साथ है। फतह और शिकस्त उसी के हाथ में है। हम उसी की ज़ाते बारी के नाम पर कुफ्र की आग में कूदे हैं। ख़ालिद(र०) ने और भी बहुत कुछ कहा था। मुजाहेदीन के अंदाज़ में जोश व खरोश पहले वाला ही था, जिस्मों में अल्बत्ता वो दम ख़म नहीं रहा था लेकिन अज़्म रोज़े अव्वल की तरह ज़िन्दा व पाईंदा था।

जैसा के पहले कहा गया है के पंद्रह सोलह हज़ार के लश्कर से दुश्मन पर शबखून मारना इस लिए ख़तरनाक होता है के खमोशी बरक़रार नहीं रखी जा सकती और दुश्मन कब्ल अज़ वक्त बेदार हो जाता है। इस में दुश्मन की घात का ख़तरा भी होता है। ख़ालिद(र०) ने इन ख़तरों से निमटने का ये अहतमाम कर रखा था के पहले शब खून की तरह अब के भी उन्होंने अपने लश्कर को तीन हिस्सों में तक़सीम कर दिया था। सालार भी वही थे जिन्हें पहले शबखून का तजुर्बा हासिल हो चुका था।

अब जासूसों ने इन्हें दुश्मन के क़याम की जो इत्तेलाऐं दी थी उन के मुताबिक़ मदाइन की फौज और इसाईयों का लश्कर एक ही खे़मा गाह में नहीं थे। खे़मा गाह में सिर्फ मदाइन की फौज थी और इसाई अपनी बस्तियां में थे। ये बनी तग़लब की बस्तियां थी। जासूसों ने इन बस्तियों के महल वक़ो बता दिए थे। ख़ालिद(र०) ने अपनी फौज के एक हिस्से की कमान सालार क़ाक़आ को और दूसरे हिस्से की कमान सालार अबु लैला को दी थी। तीसरा हिस्सा अपनी कमान में रखा था। उन्होंने क़ाक़आ और अबु लैला को इसाई क़बीले बनी तग़लब की बस्तियों पर शबखून माने के लिए भेजा और अपने हिस्से को इन के पीछे रखा पीछे रहने की वजह ये थी के ख़ालिद(र०) को खे़मा गाह पर शब खून मारना था जो बस्तियों की निस्बत ज़रा क़रीब थी। तीनों हिस्सों को बैक वक्त हमला क़रना था। मोअररिख़ेन ने लिखा है के ख़ालिद(र०) ने हुक्म दिया था के किसी औरत और किसी बच्चे पर हाथ न

उठाया जाए।

कुफ्फार को मज़ीह के मुक़ाम पर मुसलमानों के एक शबखून का बड़ा ही तल्ख़ तजुर्बा हो चुका था। उन्होंने सिना की ख़ेमा गाह के इर्द गिर्द पहरे का बड़ा सख़्त इन्तेज़ाम कर रखा था। गश्ती पहरे का इन्तेज़ाम भी था। चार चार घुड़सवार ख़ेमा गाह से दूर दूर तक गश्त करते थे। मुसलमान जासूसों ने ख़ालिद(र०) को इस इन्तेज़ाम की भी इत्तेला दे दी थी। ख़ालिद(र०) ने इस इन्तेज़ाम को बेकार करने का बंदोबस्त कर दिया था।

❁

सिना से कुछ दूर ख़ालिद(र०) की फौज पहले से तय किए हुए मंसूबे के मुताबिक़ रूके । इसे आगे की इत्तेला के मुताबिक़ आगे बढ़ना था। चन्द एक शुतर सवार जो मिस्ना बिन हारिसा के आज़माए हुए छापा मार थे, आगे चले गए थे। वो ऊंटों के काफले की सूरत में जा रहे थे। वो सिना की ख़ेमा गाह से अभी दूर ही थे के इन्हें किसी ने लल्कारा। वो रूक गए और अपनी तरफ आते हुए घोड़ों के टाप सुनने लगे। चार घोड़े इन के पास आ रूके।

"कौन हो तुम लोग?"-एक घुड़सवार ने इन से पूछा।

"मुसाफिर हैं"-एक शतुर सवार ने डरे हुए लहजे में जवाब दिया और किसी बस्ती का नाम ले कर कहा के वहां जा रहे हैं।

शतुर सवार आठ दस थे। इन में से एक तो घुड़सवार को बताता रहा के वो कहां से आए हैं और कहां जा रहे हैं।। दूसरे शतुर सवार ऊंटों को आहिस्ता आहिस्ता हरकत देते रहे हत्ता के चार घुसवार उन के नरग़े में आ गए।

"उतरों ऊंटों से!"-एक घुड़सवार ने बड़े रौब से हुक्म दिया।

चार शतुर सवार ऊंटों से इस तरह उतरे के ऊपर से एक एक घुड़सवार पर झपटे। उन के हाथों में खंजर थे जो घुसवारों के जिस्मों में उतर गए। इन्हें घोड़ों से गिरा कर ख़त्म कर दिया गया। चार मुजाहेदीन चारों घोड़ों पर सवार हो गए और दुश्मन की ख़ेमा गाह तक चले गए। एक संतरी इन्हें अपनी सवार गश्त समझ कर इन के क़रीब आया। अंधेरे में दो घुड़सवार उतरे और इस संतरी को हमेशा की नींद सुला दिया।

उन्होंने कई और संतरियों को ख़ामोशी से ख़त्म किया और वापस आ गए। ख़ालिद(र०) बे सब्री से इनका इन्तेज़ार कर रहे थे। वो जो ऊंटों पर गए थे, चार घोड़े भी साथ ले आए। उन्होंने ख़ालिद(र०) को बताया के रास्ता साफ है।

ख़ालिद(र०) ने सरगोशियों में क़ासिदों को दूसरे सालारों की तरफ इस पैग़ाम के

साथ दौड़ा दिया के हल्ला बोल दो। उस वक़्त तक घोड़ों के मुंह बंधे हुए थे। वो हिनहिना नही सकते थे। सवारों ने सालारों के कहने पर घोड़ों के मुंह खोल दिए। उन के हदफ दूर नही थे। कुछ दूर तक घोड़ों पियादों की रफ्तार के साथ आहिस्ता चलाए गए फिर रफ्तार तेज़ कर दी गई और पियादों को दौड़ना पड़ा।

बस्तियों के क़रीब जा कर मशआलें जला ली गईं। ख़ालिद(र०) ने अपने दस्तों को इतनी तेज़ी से आगे न बढ़ाया। इन्हें उन्होंने शब खून की तरतीब में फैला दिया था।

ये ऐसी पेश क़दमी थी जिस में कोई नारा न लगाया गया, न किसी को लल्कारा गया।

❁

नवम्बर 633 ई० के दूसरे और रमज़ानुल मुबारक 12 हिज्री के पहले हफ्ते की वो रात बहुत सर्द थी। बनी तग़लब की बस्तियों में और फारस की फौज की ख़ेमा गाह में जो वसी व अरीज़ थी, लोग गर्म बिस्तरों में दुबके हुए थे। कोई नही बता सकता था के कौन क्या ख्वाब देख रहा था। ये कहा जा सकता है के हर एक के ज़हन पर मुसलमानों की फौज और इस की दहशत सवार होगी। लोग इसी फौज की बात करते सोए थे।

अचानक बस्तियों के घरों के दरवाज़े टूटने लगे। गलियों में घोड़े दौड़ने लगे। मुजाहेदीन ने मकानों से चार पाईयां और लकड़ियां बाहर ला कर जगह जगह इन के ढेर लगाए और आग लगा दी ताके बस्तियां रौशन हो जाएं। औरतों और बच्चों की चीख़ व पुकार ने सर्द रात को हिला कर रख दिया।

"औरतें अपने बच्चों के साथ बाहर आ कर एक तरफ खड़ी हो जाएं-ये मुजाहेदीन की लल्कार थी जो बार बार सुनाई देती थी।

बनी तग़लब के आदमी कट रहे थे। ख़ालिद(र०) का हुक्म था के बूढ़ों, औरतों और बच्चों के सिवा किसी आदमी को ज़िन्दा न रहने दिया जाए।

इन लोगों को वो लश्कर बचा सकता था जो थोड़ी ही दूर ख़ेमा गाह में पड़ा था। बस्तियों का वावेला लश्कर तक पहुंचा लेकिन वहां नीद और सर्दी ने सब को बेहोश सा कर रखा था। लश्कर को जगाने के लिए कोई संतरी ज़िन्दा न था।

आख़िर ख़ेमागाह में कुछ लोग बेदार हो गए। इन्हें इर्द गिर्द की बस्तियों में रौशनी नज़र आई जैसे आग लगी हुई हो। शौर भी सुनाई दिया। वो अभी समझने भी न पाए थे के ये क्या हो रहा है के वैसी ही हड़बोंग ख़ेमागाह के एक गोशे में बपा हुई जो आंधी की मानिंद बढ़ती और फैलती गई। कुछ ख़ेमों को आग लग गई। ख़ालिद(र०) के दस्तों ने आतिश परस्तों की फौज को काटना शुरू कर दिया था। ये फौज अब

कटने के सिवा कुछ भी नहीं कर सकती थी।

दुश्मन के बहुत से सिपाही खेमों में दुबक गए थे। इन खेमों की रस्सियां मुसलमानों ने काट दी। खेमे सिपाहियों के लिए जाल और फंदे बन गए। मुसलमानों ने इन्हें बरछियों से ख़त्म कर दिया। मुसलमानों के नारे और इन की लल्कार बड़ी दहशत नाक थी।

मोअररिख़ों ने लिखा है के मुसलमानों को इतने वसी पैमाने पर शब खून मारने का दूसरा तजुर्बा हुआ। अब उन्होंने ये इन्तेज़ाम कर दिया था के किसी को भागने न दिया जाए। बस्तियों और ख़ेमा गाह के इर्द गिर्द मिस्ना बिन हारिसा के घुड़सवार घूम फिर रहे थे। कोई आदमी भाग के जाता नज़र आता तो उस के पीछे घोड़ा दौड़ा दिया जाता और बरछी या तलवार से उसे ख़त्म कर दिया जाता। अगर कोई औरत भागती नज़र आती तो उसे पकड़ कर उस जगह पहुंचा देते जहां औरतों और बच्चों को इक्ठा किया जा रहा था।

जूं जूं रात गुज़रती जा रही थी, बनी तग़्लब की बस्तियों में और मदाइन की फौज की ख़ेमा गाह में शौर व ग़ोग़ा और वावेला कम होता जा रहा था और ज़ख़्मियों की कर्बनाक आवाज़ें बुलंद होती जा रही थी। मसुलमानों को तबाह व बरबाद करने के लिए जो निकले थे, उन की लाशें ठंडी हो रही थीं और इन के ज़ख़्मी प्यासे मर रहे थे और उन की बेटियां मुसलमानों के कब्ज़े में थीं।

☸

सुबह तुलू हुई तो उजाले ने बड़ा ही भयानक और इब्रतनाक मंज़र दिखाया। लाशों के सिवा कुछ नज़र नहीं आता था। लाशें खून से नहाई हुई थी। ये फतह ऐसी थी जैसे किसरा के बाज़ू काट दिए गए हों। ख़ेमा गाह और बस्तियां मौत की बस्तियां बन गई थीं जिन घोड़ों पर इन कुफ्फार को नाज़ था, वो घोड़े वहीं बंधे हुए थे जहां गुज़िश्ता शाम इन्हें बांधा गया था।

औरतें अलग बैठी रो रही थीं। बच्चे बिलबिला रहे थे। ख़ालिद(र०) ने हुक्म दिया के सब से पहले औरतों और बच्चों को खाना दिया जाए।

मुजाहेदीन माले ग़नीमत ला ला कर एक जगह जमा कर रहे थे। सालार अबु लैला के पास एक बहुत ही हसीन लड़की को लाया गया। उस ने दरख्वास्त की थी के उसे सालारे आला या किसी सालार के साथ बात करने की इजाज़त दी जाए।

"ये एक सरदार की बेटी है"-उसे लाने वाले ने सालार अबु लैला से कहा-"सरदार का नाम रबीया बिन बुजैर बताती है। ये अपने बाप की लाश के पास बैठी रो रही थी।"

"क्या नाम है तेरा!"-अबु लैला ने लड़की से पूछा।

"साबिहा!"-लड़की ने जवाब दिया-"साबिहा बिन्ते रबीया बिन बुजैर....मेरे बाप को लड़ने का मौक़ा ही नही मिला था।"

"क्या तू यही बात कहने के लिए हमारे सालारे आला से मिलना चाहती है?"-सालार अबु लैला ने पूछा-"जिन्हें लड़ने का मौक़ा मिला था, क्या तूने उन का अंजाम नही देखा?....अब बता तू चाहती क्या है!"

"तुम लोग मुझे इजाज़त नही दोगे के मैं लाशों में एक आदमी की लाश ढूंड लूं" साबिहा ने कहा-" उस का नाम बिलाल बिन अक़ा है।"

"क्या जली हुई लकड़ियों के अम्बार में किसी एक ख़ास दरख़्त की लकड़ी को ढूंड लेगी?"-अबु लैला ने पूछा-"तू उसे ढूंड के क्या करेगी? ज़िन्दा है तो हमारा क़ैदी होगा, मर गया है तो तेरे किस काम का?"

साबिहा ने सालार अबु लैला को वो गुफ्तगू सुनाई जो उस के और बिलाल बिन अक़ा के दरमियान हुई थी आर कहा के वो देखना चाहती है के वो ज़िन्दा है या मारा गया है।

मुसलमान सालारों ने चन्द इसाईयों को इस मक़सद के लिए ज़िन्दा पकड़ लिया था के इन से इस इलाक़े और इलाक़े के लोगों के मुताल्लिक़ मालूमात और जंगी अहमीयत की मालूमात ली जाऐं। अबु लैला के हुक्म से ऐसे दो तीन आदमियों को बुला कर बिलाल बिन अक़ा के मुताल्लिक़ पूछा।

"दो तीन रोज़ पहले तक वो यहीं था"-एक इसाई ने बताया-"वो ज़ौमील चला गया है।"

❁

"क्या उसे वहां होना चाहिए था या यहां?"-अबु लैला ने पूछा।

"वो क़बीले के सरदार का बेटा है"-इसाई ने बताया-"वो किसी के हुक्म का पाबंद नहीं। वो हुक्म देने वालों में से है।"

"क्या वो अपने बाप के खून का इन्तेक़ाम लेने आया है?"

"उस ने कई बार कहा है के वो इब्ने वलीद से अपने बाप के खून का इन्तेक़ाम लेगा"-दूसरे इसाई ने जवाब दिया।

"अब बता लड़की!"-अबु लैला ने साबिहा से पूछा।

"मैं तुम्हारी क़ैदी हूं"-साबिहा ने कहा-"मेरे साथ लौंडियों और बांदियों जैसा सुलूक़ करोगे तो मैं तुम्हें रोक नहीं सकूंगी। सुना है मुसलमानों के दिलों में रहम होता है। मेरी एक इल्तिजा है.....मैं एक सरदार की बेटी हूं। क्या मेरी इस हैसियत का

ख्याल रखा जाएगा?"

"इस्लाम में इन्सानों को दर्जों में तक़सीम नहीं किया जाता"-अबु लैला ने कहा-"हम उस शख़्स को भी अपना सरदार बना लिया करते है जिस के आबाओ अजदाद ने कभी ख्वाब में भी सरदाररी नही देखी होती। हम सिर्फ ये देखते है के वो सरदारी का अहल है और उस का अख़लाक़ बहुत ऊंचा और पाक है और उस को अपनी ज़ात का कोई लालच नही......परेशान न हो लड़की! तू खूबसूरत है। ऐसा नही होगा के तुझे जो चाहेगा अपना खिलौना बना लेगा। कोई हिम्मत वाला तुझे ख़रीदेगा और तेरे साथ शादी कर लेगा।"

"तुम्हारी क़ैदी हो कर मेरी पसंद और ना पसंद ख़त्म हो गई है"-साबिहा ने कहा-"अगर मुझे पसंद की ज़रा सी भी आज़ादी दी जाए तो मै तुम में से उस की बीवी बनना पसंद करूंगी जो सब से ज़्यादा बहादुर है। जो अपनी क़ौम और क़बीले की इज़्ज़त और ग़ैरत पर जान देने वाला हो, मैदान से भागने वाला न हो.....औरत का मज़हब वही होता है जो उस आदमी का मज़हब है जिस की मिल्कियत में उसे दे दिया जाता है लेकिन अक़ीदे दिलों में होते हैं। औरत के जिस्म को मिल्कियत में ले सकते हो, उस के दिल का मालिक कोई नही बन सकता....मै वादा करती हूं के मुझे कोई मज़बूत दिल वाला और क़बीले की ग़ैरत पर दुश्मन का खून बहाने और अपना सर कटवाने वाला आदमी मिल जाए तो मैं अपना दिल और अपने अक़ीदे उस पर कुर्बान कर दूंगी।"

"खुदा की क़सम! तू ग़ैरत और अक़्ल वाली लड़की है"-अबु लैला ने कहा-"मैं वादा करता हूं के तूने बिलाल बिन अक़ा से जो वादा किया था वो मैं पूरा करूंगा, शर्ते ये होगी के वो अपना वादा पूरा कर दे। वो हमारे सालारे आला ख़ालिद(र०) बिन वलीद को अपने हाथों क़त्ल कर दे, लेकिन बिन्ते रबीया इब्ने वलीद के सर पर अल्लाह का हाथ है। उसे रसूल अल्लाह(स०) ने अल्लाह की तलवार कहा है....ज़ौमील में बिलाल के साथ हमारी मुलाक़ात होगी।"

"क्या मै अपने घर में रह सकती हूं?"

"क्या है उस घर में?"-अबु लैला ने कहा-"वहां तेरे बाप, भाईयों और मुहाफिज़ों की लाशों के सिवा रह ही क्या गया है? अपने क़बीले की औरतों के साथ रह। कोई तक़लीफ नहीं होगी तुझे। हमारा कोई आदमी किसी औरत के क़रीब नही जाएगा।"

साबिहा बिन्ते रबीया बुजैर रंजीदा सी चाल चलती एक मुजाहिद के साथ उस तरफ चली गई जहां औरतों और बच्चों का रखा गया था। इस की रंजीदा चाल में और

मलूल चेहरे पर तमकनत थी। साफ पता चलता था के वो आम से किरदार की लड़की नहीं।

❁

"इब्ने हारिसा!"–ख़ालिद(र०) ने फतह की मुसर्रत से लबरेज़ लहजे में मिस्ना बिन हासिरा से कहा "क्या अल्लाह ने तेरी हर ख्वाहिश पूरी नहीं कर दी?"

"लारेब, लारेब!"–मिस्ना बिन हारिसा ने जोशीले लहजे में कहा–"कुफ्फार की आने वाली नस्लें कहेंगी के मुसलमानों ने इन के आबाव अजदाद पर बहुत जुल्म किया था और हमारी नस्लें इन्हें अपने अल्लाह का ये फरमान सुनाएंगी के जिस पर जुल्म हुआ, वो अगर ज़ालिम पर जुल्म करे तो इस पर काई इल्ज़ाम नहीं......तू नही जानता वलीद के बेटे! इन आतिश परस्तों ने और सलीब के पुजारियों ने जो जुल्म हम पर तोड़े हैं, तू नही जानता। तूने सुने हैं, हम ने सहे हैं।"

"अब ये लोग अल्लाह की गिरफ्त में आ गए है।"–ख़ालिद(र०) ने कहा–"लेकिन हारिसा के बेटे! मैं डरता हूं तकब्बुर और गुरूर से....दिल में बार बार इरादा आता है हज पर जाऊं। मैं ख़ाना काबा में जा कर अल्लाह का शुक्र अदा करूंगा। क्या अल्लाह मुझे मौक़ा देगा के अपना ये इरादा पूरा कर सकूं?"

"तूने इरादा किया है तो अल्लाह तुझे हिम्मत भी देगा, मौक़ा भी पैदा कर देगा"–मिस्ना ने कहा।

कुछ देर बाद तमाम सालार ख़ालिद(र०) के सामने बैठे थे और ख़ालिद(र०) इन्हें बता रहे थे अगला हदफ ज़ौमील है। जासूसों ज़ौमील भेज दिया गया था।

"पहले यूं होता रहा है के एक जगह हमला करते थे तो दुश्मन के आदमी भाग कर कहीं और इक्ळे हो जाते थे"–ख़ालिद(र०) ने कहा–"अब हम ने किसी को भागने नही दिया। सिना से शायद ही कोई भाग कर ज़ौमील पहुंचा हो लेकिन ज़ौमील खाली नहीं। वहां भी दुश्मन मौजूद है और वो बे ख़बर भी नहीं होगा। कल रात ज़ौमील की तरफ कूच होगा और अगली रात वहां इसी क़िस्म का शब खून मारा जाएगा।"

तारीख़ों में ये नही लिखा के सिना में ख़ालिद(र०) ने किस सालार को छोड़ा। सूरज गुरूब होते ही मुसलमानों का लश्कर ज़ौमील की सिम्त कूच कर गया। सारी रात चलते गुज़री। दिन नशीबी जगहों में छुप कर गुज़ार और सूरज का सफर ख़त्म हुआ तो मुजाहेदीन अपने हदफ की तरफ चल पड़े।

ज़ौमील में भी दुश्मन सोया हुआ था। संतरी बेदार थे। यहां भी गश्ती संतरियों और दीगर संतरियों को उसी तरीक़े से ख़त्म किया गया जो मज़ीह और सिना वग़ैरा में

आज़माया गया था। मुसलमानों की तरतीब वही थी यानी इन का लश्कर तीन हिस्सों में तक़सीम था।

ये शब खून भी पूरी तरह कामयाब रहा। मोअररिख़ लिखते है के किसी एक भी आदमी को ज़िन्दा न निकलने दिया गया। यहां भी औरतों और बच्चों को अलग कर लिया गया था।

❁

सालार अबु लैला ने बिलाल बिन अक़ा के मुताल्लिक़ मालूम किया। पता चला के वो एक रोज़ पहले यहां से निकल गया था। ये भी पता चला लिया गया के ज़ौमील से थोड़ी दूर रज़ाब नाम की एक बस्ती है जिस में इसाईयों की ख़ासी तादाद जमा हो गई है और इन के साथ मदाइन की फौज के एक दो दस्ते भी हैं।

ख़ालिद(र०) ने दो हुक्म दिए। एक ये के सिना से माले ग़नीमत और दुश्मन की औरतों और बच्चों को ज़ौमील लाया जाए दूसरा हुक्म ये के फौरी तौर पर रज़ाब पर हमला किया जाए। आतिश परस्तों का लड़ने का जज़्बा तो जैसे बिल्कुल सर्द पड़ गया था।

मुसलमान तीन इतराफ से रज़ाब पर हमलाआवर हुए लेकिन ये घूंसा हवा में लगा। रज़ाब बिल्कुल खाली था। पता चलता था के यहां फौज मौजूद रही है लेकिन अब वहां कुछ भी न था। अपने बाप अक़ा बिन अबी अक़ा का बेटा बिलाल भी ला पता था। फौज का एक सवार दस्ता दूर दूर तक घूम आया। दुश्मन का कहीं नाम व निशान नहीं मिला। आख़िर फौज वापस आ गई।

सिना की औरतें ज़ौमील में लाई जा चुकी थी। माले ग़नीमत भी आ गया। ख़ालिद(र०) ने ख़िलाफते मदीना का हिस्सा अलग कर के बाक़ी मुजाहेदीन में तक़सीम कर दिया। अबु लैला ने साबिहा को बुलाया।

"बिलाल बिन अक़ा यहां से भी भाग गया है"–अबु लैला ने उसे कहा–"उस ने अपने बाप के खून का इन्तेक़ाम लेना होता तो यूं भागा न फिरता। क्या अब भी तू उस का इन्तेज़ार करेगी?"

"मैं अपनी मर्ज़ी से तो कुछ भी नहीं कर सकती"–साबिहा ने कहा।

अबु लैला ख़ालिद(र०) से बात कर चुके थे। मोअररिख़ लिखते है के इस लड़की की खूबसूरती और जवानी को देख कर सब का ख्याल ये था के ख़ालिद(र०) इस के साथ शादी कर लेंगे। साबिहा की ये ख्वाहिश भी पूरी हो सकती थी के वो सब से ज़्यादा बहादुर और बे ख़ौफ आदमी की बीवी बनना चाहती है लेकिन ख़ालिद(र०) ने कहा के मुझ से ज़्यादा बहादुर मौजूद है चुनांचे ख़ालिद(र०) ने ख़ास पैग़ाम के साथ

माले ग़नीत और औरतें मदीना को रवाना कर दी।

जो दस्ता माले ग़नीमत के साथ भेजा गया इस के कमांडर नौमान बिन औफ शीबानी थे। उन्होंने साबिहा के मुताल्लिक़ मदीने में बताया के ये लड़की कौन है, कैसी है और इस की ख़्वाहिश क्या है।

मोअररिख़ों के मुताबिक़ साबिहा को हज़रत अली(र०) ने ख़रीद लिया। साबिहा ने बखुशी इस्लाम कुबूल कर लिया और हज़रत अली(र०) ने उस के साथ शादी कर ली। हज़रत अली(र०) के साहबज़ादे उमर और साहबज़ादी रूक़य्या साबिहा के बतन से पैदा हुई थी।

❁

मदाइन में किसरा के महल पहले की तरह खड़े थे। इन के दरो दीवार पर ख़राश तक न आई थी इन का हुस्न अभी जवान था लेकिन इन पर ऐसा तास्सुर तारी हो गया जैसे ये खंडर हों। ईरान की अब कोई रक़्क़ासा नज़र नहीं आती थी। रक्स व नग़मा की महफिलें अब सोगवार थीं। ये वही महल था जहां से इन्सानों की मौत के परवाने जारी हुआ करते थे। यहां कुंवारियों की असमतें लुटती थीं। रिआया की हसीन बेटियों को ज़बरदस्ती नचाया जाता था।

अरब के जो मुसलमान ईराक़ में आबाद हो गए थे इन्हें फारस के शहंशाहों ने भेड़ बकरियां बना दिया था। ईराक़ फारस की सल्तनत में शामिल था। मुसलमानों को आतिश परस्तों ने दजला और फरात के संगम के दलदली इलाक़े में रहने पर मजबूर कर दिया था। इन की फसल, इन की खून पसीने की कमाई और इन के माल व अमवाल पर इन का कोई हक़ न था। ह़द ये के मुसलमानों की बेटियों, बहनों और बीवियों पर भी इन का हक़ नहीं रहा था। किसरा का काई हाकिम किसी भी मुसलमान ख़ातून को जब चाहता, ज़बरदस्तर साथ ले जाता था।

यही वो हालात होते हैं जो मिस्ना बिन हारिसा जैसे मुजाहेदीन को जन्म दिया करते है।। मिस्ना बिन हारिसा को पकड़ कर क़त्ल कर देने का हुक्म इन्ही महलात में से जारी हुआ था और जब इन महलात में ये ख़बर पहुंची थी के मदीने के मुसलमानों का लश्कर फारस की सरहद में दाख़िल हो गया है तो यहां से फिरऔनों जैसी आवाज़ उठी थी के अरब के इन बद्दुओं को ये जुर्रत कैसे हुई...थोड़ा ही अर्सा गुज़रा था के फिरऔनों के इन महलात में मौत का सन्नाटा तारी था। इन का कोई सालार मुसलामनों के सामने नहीं ठहर सका था। नामी गिरामी सालार मारे गए थे और जो बच गए थे वो भागे भागे फिर रहे थे।

"मदाइन को बचाओ"–अब किसरा के महलात से बार बार यही आवाज़

उठती थी।

"मदाइन मुसलमानों का क़ब्रस्तान बनेगा"-ये आवाज़ हारे हुए सालारों की थी-"वो मदाइन तक आने की जुर्रत नही करेंगे।"

"क्या तुम अब भी अपने आप को धोके दे रहे हो?"-किसरा का जानशीन कह रहा था-"क्या वो मदाइन तक आने की जुर्रत नही करेंगे जिन्होंने चन्द दिनों में चार मैदान इस तरह मार लिए है के हमारी तजुर्बा कार फौज को ख़त्म कर डाला है? हमारी फौज में रह ही क्या गया है? डरे हुए शिकस्त खूर्दा सालार और अनाड़ी नौजवान सिपाही....क्या कोई इसाई ज़िन्दा रह गया है?.....मदाइन को बचाओ।"

ख़ालिद(र०) की मंज़िल मदाइन ही थी। मदाइन फारस की शहंशाही का दिल था लेकिन मदाइन पर शब खून नही मारा जा सकता था। ख़ालिद(र०) जानते थे के मदाइन को बचाने के लिए किसरा सारी जंगी ताक़त दाव पर लगा देंगे और ख़ालिद(र०) ये भी जानते थे के ग़ैर मुस्लीमों ख़सूसन इसाईयों के कई छोटे छोटे क़बीले हैं जो किसी लड़ाई में शरीक़ नहीं हुए। ख़तरा था के आतिश परस्त इन क़बीलों को अपने साथ मिला लेंगे और मदाइन के इर्द गिर्द इन्सानों की बड़ी मज़बूत दीवार खड़ी हो जाएगी। इस ख़तरे से निमटने के लिए ज़रूरी था के इन क़बीलों को अपना वफादार बना लिया जाए। इस मक़सद के लिए ख़ालिद(र०) ने अपने ऐलची मुख़तलिफ क़बीलों के सरदारों से मिलने के लिए रवाना कर दिये सिर्फ ये देखने के लिए के ये लोग सोचते क्या हैं और इन का रूहजान क्या है।

❋

"इन क़बीलों पर हमारी धाक बैठी हुई है"-एक जासूस ने ख़ालिद(र०) को तफसीली इत्तेला दी-"वो अपनी औरतों और अमवाल के लिए परेशान हैं। इन्हें किसरा पर भरोसा नही रहा।"

".....और वो नो शेरवां आदिल के दौर को याद करते है"-एक ऐलची ने आकर बताया-"वो मदाइन की ख़ातिर लड़ने पर अमादा नही। इन्हें मालूम हो गया है के बनी तग़लब, नम्र और अयाद जैसे बड़े और जंगजू क़बीलों का क्या अंजाम हुआ है।

"वो इताअत कुबूल करने के लिए तैयार हैं"-एक और ऐलची ने बताया-"बशर्त ये के उन के साथ इन्साफ किया जाए और महसूलात के लिए उन्हें मुफिलस और कंगाल न कर दिया जाए।"

"खुदा की क़सम, वो जो मांगेंगे हम इन्हें देंगे"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"क्या किसी ने उन्हें बताया नही के हम ज़मीन पर क़ब्ज़ा करने और यहां के इन्सानों को

गुलाम बनाने नही आए?......बुलाओ, इन सब के सरदारों को बुलाओ।"

एक दो मोअररि़ख़ों ने लिखा है के ख़ालिद(र०) ने ईराक़ के तूल व अर्ज़ में जगह जगह हमले कर के और शब खून कर तमाम क़बीलों को अपना मतीअ बना लिया था। ये सही नही है। हक़ीक़त ये है जो ज़्यादा तर मोअररि़ख़ों ने बयान की है के ख़ालिद(र०) ने दोस्ती का हाथ बढ़ा कर इन क़बीलों को अपना इत्तेहादी बना लिया था। इन के इताअत कुबूल करने में ख़ालिद(र०) की दहशत भी शामिल थी। ये ख़बर सहरा की आंधी की तरह तमाम तर जगहों पर पहुंच गई थी के मुसलमानों में कोई ऐसी ताक़त है जिस के सामने दुनिया की कोई बड़ी से बड़ी फौज भी नहीं ठहर सकती।

ईरानियों के मुताल्लिक़ भी इन्हें मालूम हो गया था के हर मैदान में उन्होंने मुसलमानों से शिकस्त खाई है और इसाईयों को आगे कर के खुद भाग आते रहे हैं। इस के अलावा ईरान के बादशाहों और उन के हाकिमों ने इन्हें ज़र ख़रीद गुलाम बनाए रखा और इन के हकुक़ भी ग़सब किए थे।

ख़ालिद(र०) ने इन के साथ दोस्ती के मुहाएदे कर के इन से इताअत भी क़ुबूल करवाली और इन्हीं में से अमाल मुक़र्रर कर के महसूलात वग़ैरा की फारहमी का बंदोबस्त कर दिया। इन्हें मज़हबी फरायज़ की अदाएगी में पूरी आज़ादी दी। इन लोगों ने ये भी देख लिया के मुसलमान इन की इतनी खूबसूरत औरतों की तरफ आंख उठा कर भी नही देखते थे। ख़ालिद(र०) ने इन के साथ मुहाएदे में ये भी शामिल किया के मुसलमान इन की हिफाज़त के ज़िम्मेदार हैं।

"वलीद के बेटे!"–एक क़बीले के बूढ़े सरदार ने ख़ालिद(र०) से कहा था–"नोशेरवां आदिल के दौर में ऐसा ही इन्साफ था। ये हमें बड़ी मुद्दत बाद नसीब हुआ है।"

❁

ख़ालिद(र०) ने दरियाए फरात के साथ साथ शुमाल की तरफ पेशक़दमी शुरू करा दी आगे ईराक़ (फारस के ज़ेर नगीं) की सरहद ख़त्म होती और रोमियों की सल्तनत शुरू होती थी। शाम पर रोमियों का क़ब्ज़ा था। ख़ालिद(र०) ने बड़े ख़तरे मोल लिए थे मगर ये ख़तरा जिस में वो जा रहे थे, सब से बड़ा था और मुसलमानों की फतूहात पर पानी फैर सकता था। यूं मालूम होता था जैसे यके बाद दीगरे इतनी ज़्यादा फतूहात ने ख़ालिद(र०) का दिमाग़ ख़राब कर दिया है लेकिन ऐसा नही था। मोअररि़ख़ों ने लिखा है के ख़ालिद(र०) हक़ाइक़ का जायज़ा ले कर सोचते थे। इन का कोई क़दम बिला सोचे नहीं उठता था।

"ख़ुदा की क़सम, हम ने मदीने को ज़र्तुश्त के पूजारियों से महफूज़ कर लिया

है"-ख़ालिद(र०) ने अपने सालारों से कहा-"अब ऐसा ख़तरा नहीं रहा के मरकज़ पर हमला करेंगे।"

"क्या ये अल्लाह का करम नहीं के फारसियों को अब अपने मरकज़ का ग़म लग गया है?"-सालार क़ाक़आ बिन उमरो ने कहा-"वो अब अरब की तरफ देखने से भी डरेंगे।"

"लेकिन सांप अभी मरा नहीं"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"अगर हम यहीं से वापस चले गए तो किसरा की फौज फिर उठेगी और ये इलाक़े वापस लेने की कोशिश करेगी जो हम ने फारसियों से छीन लिए हैं हमें इन के रास्ते बन्द करने हैं..... और मेरे भाईयों! क्या तुम में से किसी ने अभी सोचा नहीं के आतिश परस्तों के पहलू में रोमी हैं। अगर रोमियों में कुछ अक्ल है तो वो इस सूरते हाल से जो हम ने ईराक़ में पैदा कर दी है, फायदा उठाऐंगे। वो आगे बढ़ेंगे और अगर वो कामयाब हो गए तो अरब के लिए वही ख़तरा पैदा हो जाएगा जो इस से पहले हमें ज़र्तुश्त के पुजारियों से था।"

ख़ालिद(र०) ने ज़मीन पर उंगली से लकीरें खींच कर अपने सालारों को बताया के वो कौन सा रास्ता है जिस से रोमी आ सकते हैं और वो कौन सा मुक़ाम है जहां क़ब्ज़ा कर के हम इस रास्ते को बन्द कर सकते हैं।

वो मुक़ाम फराज़ था। ये शहर फरात के मग़रबी किनारे पर वाक़े था। वहां से रोमियों और फारसियों की यानी शाम और ईराक़ की सरहदें मिलती थीं। ईराक़ के ज़्यादा तर इलाक़े पर अब मुसलमान क़ाबिज़ हो गए थे। यही इलाक़े ख़तरे में थे। फराज़ से खुश्क़ी के रास्ते के अलावा रोमी या फारसी दरियाई रास्ता भी इख़्तियार कर सकते थे। मशहूर यूरपी मोअररिख़ लेन पोल और हेनरी सिम्थ जो जंगी उमूर पर ज़्यादा नज़र रखता था, लिखते हैं के ख़ालिद(र०) न सिर्फ मैदान जंग में दुश्मन को ग़ैर मुतावक़्क़े चालें चल कर शिकस्त देने की अहलियत रखते थे बल्कि जंगी तदब्बुर भी उन में मौजूद था और उन की निगाह दूर दूर तक देख सकती थी। वो आने वाले वक़्त के ख़तरों को पहले ही भांप लिया करते थे।

ख़ालिद(र०) जब फराज़ की तरफ कूच कर रहे थे उस वक़्त एक ख़तरे से आगाह नहीं थे। वो नहीं जानते थे के वो दुश्मन फौजों के दरमियान आजाऐंगे।

❁

रोमियों के दरबार में ऐसी आवाज़ें सुनाई दे रही थीं जिन में ज़रूरी पन था और साफ पता चलता था के कोई हंगामी सूरते हाल पैदा हो गई है। तख़्त शाही के सामने रोमी फौज के बड़े बड़े जरनैल बैठे थे।

"ख़बर मिली है के मुसलमान फराज़ तक पहुंच गए है। ये मालूम नहीं हो सका के इन का इरादा क्या है।"

"वो किसी अच्छे इरादे से तो नही आए....क्या आप को फारसियों के मुताल्लिक़ कोई ख़बर नही मिली?"

"उन के पास मदाइन के सिवा कुछ नहीं रहा।"

"फिर हमें इन्तेज़ार नही करना चाहिए। पेश्तर इस के के मुसलमान हमारे मुल्क में दाख़िल हो जाएं हमें उन पर हमला कर देना चाहिए।"

"क्या तुम से बढ़ कर कोई अहमक़ हमारी फौज में होगा? क्या तुम नें सुना नहीं के फारस की फौज को और इन के साथी हज़ारहा इसाईयों को इन मुसलामनों ने न सिर्फ ये के हर जगह शिकस्त दी है बल्कि इन के नामूर जरनैलों को और हज़ारों सिपाहियों को मार डाला है?"

"आप ने ठीक कहा है। ये देखना ज़रूरी है के मदीने वालों का लड़ने का तरीक़ा क्या है।"

"बहुत ज़रूरी है देखना। वो जो इतनी थोड़ी तदाद में इतनी ज़्यादा तादाद को शिकस्त देकर ख़त्म कर चुके हैं। इन का कोई ख़ास तरीक़ा-ए-जंग होगा। हम भी फारस की फौज के ख़िलाफ लड़ चुके हैं। ये सही है के हम ने फारसियों को शिकस्त दी थी लेकिन हमारी फौज की नफरी उन से ज़्यादा थी।"

"अब मेरा फैसला सुन लो। हम फारसियों को साथ मिला कर मुसलामनों के ख़िलाफ लड़ेंगे।

"फारसियों को साथ मिला कर? क्या हमें भूल जाना चाहिए के फारसियों के साथ हमारी दुश्मनी है? हमारी आपस में जंगें हो चुकी हैं।"

"हां! हमें भूल जाना चाहिए। मुसलमानों उन के और हमारे मुश्तरका दुश्मन है। ऐसे दुश्मन को शिकस्त देने के लिए अपने दुश्मन को दोस्त बना लेना दानिशमंदी होती है। हम फारसियों की तरह शिकस्त नहीं खाना चाहते। अगर फारसी हमारे साथ दोस्ती का मुहाएदा कर लेते हैं तो इन के साथ इसाई क़बीले भी आजाएंगे।"

इस फैसले के मुताबिक़ रोमियों का ऐलची दोस्ती का पैग़ाम ले कर मदाइन गया तो आतिश परस्तों ने बाज़ू फैला कर ऐलची का इस्तक़बाल किया। तहाइफ का तबादला हुआ और ऐलची के साथ ही मुहाएदे की शर्तें तय हो गईं। फारस वालों को अपना तख़्त उलटता नज़र आ रहा था। रोमियों के पैग़ाम को उन्होंने ग़ैबी मदद समझा।

मदाइन के दरबार से इन तमाम इसाई क़बीलों के सरदारों को बुलावा भेजा

गया। ये वही तीन क़बीले, बनी तग़लब, नम्र और अयाद थे जो मुसलमानों से बहुत बुरी शिकस्त खा चुके थे।

मोअरर्ख़ों ने लिखा है के इन्हें जूं ही इत्तेला मिली तो वो फौरन मदाइन पहुंचे। वो अपने हज़ारहा मक्तूलीन का इन्तेक़ाम लेना चाहते थे और वो इस्लाम के फैलाव को भी रोकना चाहते थे। इन क़बीलों में जो लड़ने वाले थे वो मुसलमानों के हाथों मारे जा चुके थे। जवां साल आदमी बहुत कम रह गए थे। अब अकसरीयत अधेड़ उम्र लोगों की थी।

ख़ालिद(र०) का फराज़ की तरफ कूच उन की खुद सरी का मुज़ाहेरा था। अमीरूल मोमेनीन हज़रत अबुबकर(र०) ने इन्हें सिर्फ फारस वालों से लड़ने की इजाज़त दी थी। अमीरूल मोमेनीन को तो ये भी तवक्क़ो नहीं थी के अपनी इतनी कम फौज फारस जैसी ताक़तवर फौज को शिकस्त देगी लेकिन अमीरूल मोमेनीन ऐसा ख़तरा मोल नहीं लेना चाहते थे के इतनी लड़ाईयां लड़ कर रोमियों से भी टक्कर ली जाए। रोमियों की फौज फारसियों की फौज से बेहतर थी।

ये ख़ालिद(र०) का अपना फैसला था के फराज़ के मुक़ाम पर जा कर रोमियों और फारसियों की नाक़ा बंदी कर दी जाए। ख़ालिद(र०) चैन से बैठने वाले सालार नहीं थे। इस के अलावा वो रसूले अकरम(स०) के जंगी उसूलों के क़ायल थे। मसलन ये के दुश्मन के सर पर सवार रहो। अगर दुश्मन की तरफ से हमले का ख़तरा है तो उस के हमले का इन्तेज़ार न करो। आगे बढ़ो और हमला कर दो। ख़ालिद(र०) ने अपने आप पर जिहाद का जुनून तारी कर रखा था।

❁

ज़ब ख़ालिद(र०) के जासूसों ने इन्हें इत्तेलाऐं देनी शुरू कीं तो ख़ालिद(र०) के चेहरे पर ऐसी संजीदगी तारी हो गई जो पहले कम ही कभी तारी हुई थी। इन्हें पता चला के वो दो फौजों के दरमियान आ गए है। एक तरफ रोमी दूसरी तरफ फारसी और इन के साथ इसाई क़बीलों के भी लोग थे। ख़ालिद(र०) के साथ नफरी पहले से कम हो गई थी क्योंके जो इलाक़े उन्होंने फतह किए थे वहां अपनी कुछ नफरी का होना लाज़मी था। बग़ावत का भी ख़तरा था और आतिश परस्त फारसियों के जवाबी हमले का भी।

ख़ालिद(र०) फराज़ में रमज़ान 12 हिज्री के आख़री(दिसम्बर 633 ई० के पहले) हफ्ते में पहुंचे थे। मुजाहेदीन रोज़े से थे।

मुसलामनों की फौज दरियाए फरात के एक किनारे पर ख़ेमा ज़न थी। दूसरे किनारे पर बिल्कुल सामने रोमी, ईरानी और इसाई पड़ाव डाले हुए थे। दोनों तरफ के

संतरी फरात के किनारों पर हर वक्त पहरे पर खड़े रहते और गश्ती संतरी घोड़ों पर सवार दरिया के किनारों पर फिरते रहते थे। खुद ख़ालिद(र०) दरिया के किनारे दूर तक चले जाते और दुश्मन को देखते थे।

एक शाम रोमियों और ईरानियों की ख़ेमा गाह में हड़बोंग मच गई और वो लड़ाई के लिए तैयार हो गए। वजह ये हुई के मुसलमानों के कैम्प से एक शौर उठा था और दफ और नक़्क़ारे बजने लगे थे। तमाम फौज उछल कूद कर रही थी। दुश्मन इसे हमले से पहले का शौर समझा। उस के सालार वग़ैरा फरात के किनारे पर आकर देखने लगे।

"इन के घोड़े ज़ीनों के बग़ैर बंधे हुए हैं"-दुश्मन के किसी आदमी ने चिल्ला कर कहा।

"वो तैयारी की हालत में नहीं"-किसी और ने कहा।

"वो देखो"-एक और ने कहा-"आसमान की तरफ देखो। मुसलमानों ने ईद का चांद देख लिया है। आज रात और कल सारा दिन ये लोग खुशियां मनाएंगे।"

अगले रोज़ मुसलमानों ने हंगामा खेज़ तरीके से ईद-उल-फितर की खुशियां मनाईं। इस खुशी में फतूहात की मुसर्रतें भी शामिल थीं। मुसलमान जब ईद की नमाज़ के लिएखड़े हुए तो दरिया के किनारे और कैम्प के इर्द गिर्द संतरियों में इज़ाफा कर दिया गया ताके दुश्मन नमाज़ की हालत में हमला न कर सके।

"मुजाहेदीने इस्लाम!"-ख़ालिद(र०) ने नमाज़ के बाद मुंजाहेदीन से मुख़तसिर सा ख़िताब किया-"नमाज़ के बाद ऐसे अंदाज़ से इस तक़रीबे सईद की खुशियां मनाओ के दुश्मन ये तास्सुर ले के मुसलमानों को किसी क़िस्म का अंदेशा नहीं और इन्हें अपनी फतह का पूरा यक़ीन है। दरिया के किनारे जा कर नाचो कूदो। तुम ने जिस तरह दुश्मन पर अपनी तलवार की धाक बिठाई है इस तरह उस पर अपनी खुशियों की दहशत बिठा दो, लेकिन मेरे रफीको! इस हक़ीक़त को न भूलना के तुम अल्लाह की तरफ से आई हुई एक से एक कठिन आज़माईश में पूरे उतरे हो, मगर अब तुम्हारे सामने सब से ज़्यादा कठिन और ख़तरनाक आज़माईश आ गई है। तुम्हारा सामना इस वक़्त की दो ताक़तवर फौजों से है जिन्हें इसाईयों की मदद भी हासिल है। मैं जानता हूं तुम जिस्मानी तौर पर लड़ने के क़ाबिल नहीं रहे, लेकिन अल्लाह ने तुम्हें रूह की जो कुव्वतें बख़्शी हैं इन्हें कमज़ोर न होने देना, क्योंके तुम इन्ही कुव्वतों के बल पर दुश्मन पर ग़ालिब आते चले जा रहे हो। मैं बता नही सकता कल क्या होगा। हर ख़तरे के लिए तैयार रहो। अल्लाह तुम्हारे साथ है।"

ख़ालिद(र०) के ख़ामोश होते ही मुजाहेदीन के नारों ने अर्ज़ व समा को हिला

डाला। फिर सब दौड़ते कूदते दरिया के किनारे जा पहुंचे। उन्होंने दरिया के किनारे घोड़े भी दौड़ाए और हर तरह ईद की खुशी मनाई।

❁

ख़ालिद(र०) के सालारों को तवक्क़ो थी के ख़ालिद(र०) बिन वलीद यहां भी शब खून की सोच रहे होंगे। ख़ालिद(र०) ने इतने दिन गुज़र जाने के बाद भी सालारों को नही बताया था के वो क्या करना चाहते है। एक महीना गुज़र चुका था। फौजें आमने सामने बैठी थी। आख़िर ख़ालिद(र०) ने अपने सालारों को मशवरे, तजावीज़ और अहक़ाम के लिए बुलाया।

"मेरे रफीक़ो!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"शायद तुम ये सोच रहे होगे के यहां भी शब खून मारा जाएगा लेकिन तुम देख रहे हो के यहां सूरते हाल शब खुन वाली नहीं। दुश्मन की तादाद बहुत ज़्यादा है। हम हमेशा क़लील तादाद में लड़े हैं लेकिन यहां हमारे दरमियान दरिया हायल है। दुश्मन इस दरिया से फायदा उठा सकता है। तुम ने देख लिया है के दुश्मन इतनी ज़्यादा तादाद के बावजूद हम पर हमला नहीं कर रहा। इस से साफ ज़ाहिर होता है के वो अहतियात से काम ले रहा है। हमारे लिए बेहतर ये है के उस की अहतियात को हम और तूल दें और हमले में पहल न करें। मैं चाहता हूं के हमले में वो पहल करे। अगर तुम कोई मशवरा देना चाहो तो मैं उस पर ग़ौर और अमल करूंगा।"

तक़रीबन तमाम सालारों ने मुताफक्क़ा तौर पर कहा के हम पहल न करें और कोई ऐसी सूरत पैदा करें के दुश्मन दरिया उबूर कर आए। कुछ देर सालारों ने बहस व मुबाहेसा किया और एक तजवीज़ पर मुत्तफिक़ हो गए और उसी रोज़ उस पर अमल शुरू कर दिया गया। इस के मुताबिक़ कोई एक दस्ता तैयार हो कर दरिया के साथ किसी तरफ चल पड़ता। दुश्मन ये समझता के मुसलमान कोई नक्ल व हरकत कर रहे हैं चुनांचे उसे भी इसके मुतताबिक़ कोई नक्ल व हरकत या पेश बंदी करनी पड़ती।

ये सिलसिला पंद्रह सोलह दिन चलता रहा। बाज़ मोअररिख़ों ने लिखा है के रोमी मुसलामनों की इन हरकात से तंग आ गए। वो पहले मुसलमानों के ख़िलाफ किसी मैदान में नहीं लड़े थे। उन के सालारों के ज़हनों पर ये बात आसेब की तरह सवार हो गई थी के जिस क़लील फौज ने फारसियों जैसी ताक़तवर फौज को हिलने के क़ाबिल नही छोड़ा वो फौज कोई ख़ास दांव चलती है जिसे इन के सिवा कोई और नही समझ सकता।

पहले कहा जा चुका है के ख़ालिद(र०) दुश्मन पर नफसियाती वार करने की

महारत रखते थे। इस सूरते हाल में भी उन्होंने रोमियों को तज़बज़ब में मुब्तला कर के उन के ज़हनों पर ऐसा नफसियाती असर डाला के वो न कुछ समझने और न कोई फैसला करने के क़ाबिल रहे।

❁

21 जनवरी 634 ई०(5 ज़ीक़दा 12हिज्री) के रोज़ दुश्मन इस क़द्र तंग आ गया के उस के एक सालार ने दरिया के किनारे खड़े हो कर बड़ी बुलंद आवाज़ से मुसलमानों से कहा-"क्या तुम दरिया पार कर के इधर आओगे या हम दरिया पार कर के उधर आजाऐं? लड़ना है तो सामने आओ।"

"हम तादाद में बहुत थोड़े हैं"-ख़ालिद(र०) बिन वलीद ने ऐलान करवाया-"हम से डरते क्यों हो? तुम्हारी तादाद इतनी ज़्यादा है के तुम्हें हम से पूछे बग़ैर इधर आ जाना चाहिए।"

"फिर संभल जाओ"-दुश्मन की तरफ से लल्कार सुनाई दी-"हम आ रहे हैं।"

दुश्मन ने दरिया उबूर करना शुरू कर दिया। ख़ालिद(र०) ने अपने मुजाहेदीन को दरिया के किनारे से हटा कर कुछ दूर लड़ाई की तरतीब में कर लिया। हस्बे मामूल इन की फौज तीन हिस्सों में बटी हुई थी और ख़ालिद(र०) खुद दरमियानी हिस्से के साथ थे। जंगी मुबस्सिरों ने लिखा है के ख़ालिद(र०) ने दुश्मन के लिए इतनी ज़्यादा जगह खाली कर दी के दुश्मन और इसके पीछे दरिया, इन दोनों के दरमियान इतनी जगह खाली रहे के इस के अक़ब मे जाना पड़े तो जगह मिल जाए वरना दरिया इन के अक़ब की हिफाज़त करता।

जब दुश्मन मैदान में आ गया तो रोमी जरनैलों ने फारसियों और इसाईयों के लश्कर को इन के क़बीलों के मुताबिक़ तक़सीम कर दिया। उन्होंने ईरानी सालारों से कहा के इस तक़सीम से ये पता चल जाएगा के कौन किस तरह लड़ा है। भागने वालों के क़बीले का भी इल्म हो जाएगा।

ये तक़सीम इस तरह हुई के रोमी अलग हो गए। मदाइन की फौज उन से कुछ दूर अलग हो गई और इसाईयों के क़बीले मदाइन की फौज से अगल और हर क़बीले एक दूसरे से अलग अलग हो गया। रोमी जरनैलों ने (मोअररिख़ों के मुताबिक़) ये तक़सीम इस लिए भी की थी के मुसलमानों को भी इस तक़सीम के मुताबिक़ अपनी तक़सीम करनी पड़ेगी जिस के नतीजे में वो बिखर जाऐं और इन्हें आसानी से शिकस्त दी जा सकेगी।

"मेरे रफीक़ो!"-ख़ालिद ने दुश्मन को इस तरह तक़सीम होते देख कर अपने

सालारों को बुलाया और उन से कहा-"खुदा की क़सम, दुश्मन खुद अहमक़ है या हमें अहमक़ समझता है। क्या तुम देख नहीं रहे के दुश्मन ने अपनी जमीयत को किस तरह बिखेर दिया है?"

"दुश्मन ने हमारे लिए मुश्किल पैदा कर दी है इब्ने वलीद !"-सालार क़ाक़आ बिन उमरों ने कहा-"इसके मुताबिक़ हमें भी बिखरना पड़ेगा। फिर एक एक का मुक़ाबला दस दस के साथ होगा।"

"दिमाग़ों को रौशनी देने वाला अल्लाह है"-ख़ालिद ने कहा-"हम आमने सामने की लड़ाई नहीं लड़ेंगे। सवार दस्तों के सालार सुन लें। फौरन सवार दो हिस्सों में तक़सीम हो कर दुश्मन के दायें और बायें चले जाऐं। पियादे भी इन के साथ रहें और दायें बायें पहुंच कर अक़ब में जाने की कोशिश करें। मैं अपने दस्तों के साथ दुश्मन के सामने रहूंगा। दुश्मन पर हर तरफ से शदीद हमला कर दो। दुश्मन अभी लड़ाई के लिए तैयार नहीं हुआ। चारों तरफ से दुश्मन पर ऐसा हमला करो के उस की तक़सीम दरहम बरहम हो जाए। अल्लाह का नाम लो और निकल जाओ।"

❁

रोमी, ईरानी और इसाई तक़सीम हो गए थे लेकिन अभी लड़ाई के लिए तैयार नहीं हुए थे। ख़ालिद के इशारे पर मुसलामनों ने हर तरफ से उन पर हमला कर दिया। दुश्मन पर जब हमले के साथ हर तरफ से तीर बरसने लगे तो उस के बटे हुए हिस्से अन्दर की तरफ होने लगे और होते होते वो हुजूम की सूरत में यकजा हो गए। मुसलमान सवारों ने थोड़ी सी तादाद में होते हुए इतने सारे दुश्मन को घेरे में ले लिया। दुश्मन की हालत एक घने हुजूम की सी हो गई जिस से घोड़ों के घूमने फिरने के लिए जगह न रही। ईरानी और इसाई पहले ही मुसलमानों से डरे हुए थे। वो छुपने या पीछे हटने के अंदाज़ में रोमी दस्तों के अन्दर चले गए और इन्हें हरकत के क़ाबिल न छोड़ा।

मुसलमान सवारों ने दौड़ते घोड़ों से दुश्मन के इस हुजूम पर तीर बरसाए जिन से दुश्मन की इतनी बड़ी तादाद और ज़्यादा सिमट गई। इस कैफियत में पियादा मुजाहेदीन ने हल्ला बोल दिया। अक़ब से हमला एक सवार दस्ते ने किया। ख़ालिद(र०) ने अपने तमाम दस्तों को एक ही बार हमले में न झोंक दिया। दस्ते बारी बारी हमला करते थे।

ख़ालिद(र०) ने ऐसी चाल चली थी के लड़ाई की सूरत लड़ाई की न रही बल्कि ये रोमियों, आतिश परस्तों और इसाईयों का क़त्ले आम था। रोमियों ने दिफाई लड़ाई लड़ने की कोशिश की लेकिन मैदान उस के ज़ख़्मियों और उस की लाशों से

भर गया। सिपाहियों का हौसला टूट गया और वो मैदान से भागने लगे।

"पीछे जाओ" -ख़ालिद(र०) ने हुक्म दिया- "इन के पीछे जाओ। कोई ज़िन्दा बच कर न जाए।"

मुजाहेदीन ने तआक़्कुब कर के भागने वालों को तीरों और बरछियों से ख़त्म किया और मआरका ख़त्म हो गया। तक़रीबन तमाम मोअररि़ख़ों ने लिखा है के इस मआरका में एक लाख रोमी, ईरानी और इसाई मारे गए। एक बहुत बड़ी इत्तेहादी फौज ख़त्म हो गई। मुसलमानों की तादाद पंद्रह हज़ार से ज़्यदा नहीं थी।

ख़ालिद(र०) दस रोज़ वहीं रहे। उन्होंने बड़ी तेज़ी से वहां का इन्तेज़ामी ढांचा मुकम्मल किया। एक दस्ता वहां छोड़ा और 31 जनवरी 634 ई०(25 ज़ीक़दा 12 हिज्री) के रोज़ लश्कर को हीरा की तरफ कूच का हुक्म दिया।

"क्या तुम देख नहीं रहे इब्ने वलीद चुप सा हो गया है?"–एक सालार अपने एक साथी सालार से कह रहा था–"खुदा की क़सम, मै नहीं मानूंगा के इब्ने वलीद थक गया है या मुसलसल मआरक़ों से उक्ता गया है।

"और मैं ये भी नहीं मानूंगा के इब्ने वलीद डर गया है के वो अपने मुस्तक़िर से इतनी दूर दुशममन मुल्क के अन्दर आ गया है"–दूसरे सालार ने कहा–"लेकिन मैं इसे किसी सोच में डूबा हुआ ज़रूर देख रहा हूं।"

"हां, वो कुछ और सोच रहा है।"

"पूछ न लें?"

"हम नहीं पूछेंगे तो औऱ कौन पूछने आएगा?"

ख़ालिद(र०) सोच में डूब ही जाया करते थे। ये एक मआरके की फराग़त के बाद अगले मआरके की सोच होती थी। वो सोच समझ कर और तमाम तर दिमाग़ी कुव्वतों को बरूऐ कार ला कर लड़ा करते थे। दुश्मन के पास बे पनाह जंगी कुव्वत थी। वो गहरी सोच के बग़ैर अपनी फौज की बरतरी और इफरात के बल बूते पर भी लड़ सकता था। मुसलमान ऐसा ख़तरा मोल नहीं ले सकते थे। इन की तादाद किसी भी मआरके में अळारह हज़ार से ज़्यादा नहीं थी। इन की तादाद पंद्रह और अळारह हज़ार के दरमियान रहती थी। एक एक मुजाहिद का मुक़ाबला तीन से छ: कुफ्फार से होता था। लिहाज़ा इन्हें अक्ल और होशमंदी की जंग लड़नी पड़ती थी।

ऐसी अक्ल और होशमंदी में ख़ालिद(र०) का कोई सानी न था। इन्ही ओसाफ की बदोलत रसूले अकरम(स०) ने इन्हें अल्लाह की तलवार कहा था। जज़्बा तो ख़ालिद(र०) में था ही लेकिन इन्हें दिमाग़ ज़्यादा लड़ाना पड़ता था। हर मआरके से पहले ख़ालिद(र०) जासूसों से दुश्मन की कैफियत और उस के ज़मीन और नफरी वग़ैरा की तफसीलात मालूम करके गहरी सोच में डूब जाते फिर अपने सालारो से

सलाह मशवरा करते थे लेकिन फराज़ की जंग के बाद उन पर ऐसी ख़ामोशी तारी हो गई थी जो कुछ और ही क़िस्म की थी। उन की इस ख़ामोशी को देख कर उन के सालार कुछ परेशान से हो रहे थे। ये फराज़ से हीरा की तरफ कूच (25 ज़ीक़दा 12 हिज्री) से दो रोज़ पहले का वाक़ेया है। तीन चार सालार ख़ालिद(र०) के ख़ेमे मे जा बैठे।

"इब्ने वलीद!"–सालार क़ाक़आ बिन उमरो ने कहा–"खुदा की क़सम, जिस सोच में तू डूबा हुआ है इस का तआल्लुक़ किसी लड़ाई के साथ नही। हम एक ही मंज़िल के मुसाफिर है। तुझे अकेला परेशान नही होने देंगे।"

ख़ालिद(र०) ने सब की तरफ देखा और मुस्कुराए।

"इब्ने उमरो ठीक कहता है"–ख़ालिद(र०) ने कहा–"मैं जिस सोच में पड़ा रहता हूं इस का तआल्लुक़ किसी लड़ाई के साथ नहीं।"

"कुछ हमें भी बता इब्ने वलीद!"–एक और सालार ने कहा–"खुदा की क़सम, तू पसंद नही करेगा के हम सब तुझे देख देख कर परेशान होते रहें।"

"नही पसंद करूंगा"–ख़ालिद(र०) ने कहा–"तुम में से कोई भी परेशान होगा तो ये मुझे नापसंद होगा। मैं किसी लड़ाई के लिए कभी परेशान नही हुआ। तीन तीन दुश्मनों की फौजें मिल कर हमारे ख़िलाफ आईं, मैं परेशान नही हुआ। मैं ने ख़लीफातुल मुस्लिमीन के हुक्म की ख़िलाफ वर्ज़ी करते हुए रोमियों को जा लल्कारा। मैं ने एक ख़तरा मोल लिया था। मैं परेशान नहीं हुआ। मुझे हर मैदान में और हर मुश्किल में अल्लाह ने रोशनी दिखाई है और तुम्हें अल्लाह ने हिम्मत दी है के तुम इतने जरी दुश्मन पर ग़ालिब आए....

"अब मेरी परेशानी ये है के मैं फरीज़ा-ए-हज अदा करना चाहता हूं लेकिन तुम देख रहे हो मैं कहा हूं और मेरी ज़िम्मेदारिया क्या है।। क्या मैं इस फर्ज़ को छोड़ कर हज का फ़र्ज़ अदा कर सकता हूं?....नही कर सकता मेरे रफीक़ो लेकिन मेरा दिल मेरे क़ाबू से बाहर हो गया है। खुदा की क़सम, ये मेरी रूह की आवाज़ है के वलीद के बेटे, क्या तुझे यक़ीन है के तू अगले हज तक ज़िन्दा रहेगा?....मुझे यक़ीन नहीं मेरे रफीक़ो! हम ने जिन दो दुश्मनों को शिकस्तें दी हैं, इन की जंगी ताक़त तुम ने देख ली है और तुम ने ये भी देख लिया है के तमाम क़बीले फौरन उन से जा मिलते हैं।। अभी हमें बड़ी खूंरेज़ जंगें लड़नी हैं। फारसी और रोमी तैयार हो कर हम से शिकस्तों का इन्तेक़ाम लेंगे। मैं महसूस कर रहा हूं के मेरी ज़िन्दगी चन्द रोज़ रह गई है....

"और मेरे रफीक़ो! मैं कुछ भी नही। तुम कुछ भी नही। सिर्फ अल्लाह है जो

हमारे सीनों में है। वही सब कुछ है, फिर मै क्यों न उस के हुज़ूर उस के अज़ीम घर में जाकर सिज्दा करूं। क्या तुम मुझे इजाज़त दोगे के मै अपनी तरफ से, तुम सब की तरफ से और हर एक मुजाहिद की तरफ से खाना-ए-काबा जा कर अल्लाह के हुज़ूर शुक्र अदा करूं?"

"बे शक, बे शक"-एक सालार ने कहा-"कौन रद कर सकता है इस जज़्बे को और इस ख्वाहिश को जो तूने बयान की हे!"

"लेकिन तू हज पे जाएगा कैसे इब्ने वलीद!"-मिस्ना बिन हारिसा ने पूछा-"पीछे कुछ हो गया तो...."

"मै किसी लड़ाई में मारा जाऊंगा तो खुदा की क़सम तुम ये नहीं सोचोगे के अब क्या होगा"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"क्या मेरे न होने से तुम्हारे हौसले टूट जाऐंगे?....नही .....नहीं.....ऐसा नहीं होगा।"

"रब्बे काबा की क़सम, ऐसा नहीं होगा"-क़ाक़आ बिन उमरों ने कहा-"हम में से कोई एक भी ज़िन्दा होगा तो वो इस्लाम के परचम को गिरने नहीं देगा.....यूं कर इब्ने वलीद! आज ही क़ासिद को रवाना कर दे के वो अमीरूलमोमेनीन से इजाज़त ले आए के तू हज पे जा सकता है।"

"जिस सोच ने मुझे परेशान कर रखा है वो यही सोच है"-ख़ालिद(र०) ने मुस्कुरा कर कहा-"मै जानता हूं अमीरूल मोमेनीन इजाज़त नहीं देंगे। इन्हें यहां के हालात का इल्म है। अगर वो इजाज़त दे भी दें तो ये ख़तरा पैदा हो जाएगा के दुश्मन को पता चल जाएगा के इब्ने वलीद चला गया है। मै अपने लश्कर को भी नही बताना चाहता के मै इन के साथ नहीं हूं।"

"खुदा की क़सम, वलीद के बेटे!"-मिस्ना बिन हारिसा ने कहा-"तू नही जानता के तू जो कह रहा है ये ना मुमकिन है।"

"अल्लाह ना मुमकिन को मुमकिन बना दिया करता है"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"इन्सान को हिम्मत करनी चाहिए। मै तुम्हें बताता हूं के मै क्या करूंगा और किस रास्ते से जाऊंगा।"

ख़ालिद(र०) ने इन्हें पहले ये बताया के वो क्या करें फिर वो रास्ता बताया जिस रास्ते से इन्हें हज के लिए मक्का जाना और आना था। हज में सिर्फ चौदह दिन बाक़ी थे और फराज़ से मक्का तक की मुसाफत तेज़ चलने से अढ़ाई महीने से कुछ ज़्यादा थी। ख़ालिद(र०) ताजिर ख़ानदान के फर्द थे। कुबूले इस्लाम से पहले ख़ालिद(र०) ने तिजारत के सिलसिले में बड़े लम्बे और कठिन सफर किए थे। वो ऐसे रास्तों से भी वाक़िफ़ थे जो आम रास्ते नही थे बल्कि वो रास्ते कहलाते ही नहीं थे।

ख़ालिद(र०) ने अपने सालारों को एक ऐसा ही रास्ता बताया।

"खुदा की क़सम इब्ने वलीद!"-मिस्ना बिन हारिसा ने कहा-"तेरा दिमाग़ ख़राब नही हुआ फिर भी तूने ऐसी बात कह दी है जो ठीक दिमाग़ वाले नही कह सकते। तू जो रास्ता बता रहा है वो कोई रास्ता नही, वो एक इलाक़ा है और इस इलाक़े से सहरा की हवाऐं भी डर डर कर गुज़रती है।। क्या तू मरने का कोई और तरीक़ा नही जानता! क्या मैं इस इलाक़े से वाक़िफ़ नहीं?"

"जिस अल्लाह ने हमें इतने ज़बर्दस्त दुश्मनों पर ग़ालिब किया है वो मुझे इस इलाक़े से भी गुज़ार देगा"-ख़ालिद(र०) ने ऐसी मुस्कुराहट से कहा जिस में अज़्म और खुद ऐतमादी थी-"मैं यक़ीन से कहता हूं के तुम मुझे जाने से नहीं रोकोगे और मेरे इस राज़ को इस ख़ेमे से बाहर नहीं जाने दोगे। मैं ये राज़ अमीरूल मोमेनीन से भी छुपा कर रखूंगा।"

"अगर अमीरूल मोमेनीन भी हज पर आ गए तो क्या करेगा तू?"-एक सालार ने पूछा।

"मैं उन से अपना चेहरा छुपा लूंगा"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"तुम सब मेरे लिए दुआ तो ज़रूर करोगे। मैं वादा करता हूं के मैं इस तरह तुम से आ मिलूंगा के तुम कहोगे के ये शख़्स रास्ते से वापस आ गया है।"

ज्यादा तर मोअररिख़ेन, ख़सूसन तिबरी ने ये वाक़ेया बयान किया है के ख़ालिद(र०) ने 12 हिज्री का हज किसी तरह किया। इन हालात में के इन की टक्कर फारस की शहंशाही से थी और उन्होंने रोम की शहंशाही के अन्दर जा कर हमला किया था। ये ख़तरा हर लम्हे मौजूद था के ये दोनों बादशाहईयां मिल कर जवाबी हमला करेंगी। इस ख़तरे के पेश नज़र ख़ालिद(र०) वहां से ग़ैर हाज़िर नही हो सकते थे लेकिन हज का अज़्म इतना पक्का और ख्वाहिश इतनी शदीद थी के इसे वो दबा न सके।

पहले सुनाया जा चुका है के लश्कर फराज़ से हीरा को कूच कर रहा था। ख़ालिद(र०) ने लश्कर को तीन हिस्सों में तक़सीम किया। एक हिस्सा हराविल था, दूसरा इस के पीछे और तीसरा हिस्सा अक़ब में था। ख़ालिद(र०) ने ख़ास तौर पर ऐलान कराया के वो अक़ब के साथ होंगे। लश्कर को हीरा तक पहुंचने की कोई जल्दी नहीं थी। तेज़ कूच इस सूरत में किया जाता था जब कही हमला करना होता या जब इत्तेला मिलती थी के फलां जगह दुश्मन हमले की तैयारी कर रहा है। अब ऐसी सूरत नही थी।

लश्कर के कूच की रफ्तार तेज़ न करने की एक वजह तो ये थी ये कूच मैदाने

जंग की तरफ नही बल्कि अपने मफ्तूहा शहर की तरफ हो रहा था। दूसरी वजह ये थी के मुजाहेदीन मुतावातिर लड़ाईयां लड़ते और पेशक़दमी करते रहे थे। उन के जिस्म शल हो चुके थे। ख़ालिद(र०) ने कूच मामूली रफ्तार से करने का हुक्म एक और वजह से भी दिया था। इस वजह का तीन सालारों और ख़ालिद(र०) के चन्द एक साथियों के सिवा किसी को इल्म न था।

वो वजह ये थी के ख़ालिद(र०) को कूच के दौरान लश्कर के अक़बी हिस्से से खिसक जाना था और एक गुमनाम रास्ते से मक्का को रवाना होना था। लश्कर 31 नवरी 634 ई० के रोज़ चल पड़ा। तारीख़ में उस मुक़ाम का पता नही मिलता जहां लश्कर ने पहला पड़ाव किया था। रात को जब लश्कर गहरी नींद सो गया तो ख़ालिद(र०) अपने चन्द एक साथियों के साथ ख़ेमा गाह से निकले और ग़ायब हो गए। किसी भी मोअररिख़ ने उन के साथियों के नाम नहीं लिखे जो उन के साथ हज को गए थे।

ख़ालिद(र०) और उन के साथी ऊंटों पर सवार थे। जिस इलाक़े में से इन्हें गुज़रना था, वहां से सिर्फ ऊंट गुज़र सकता था। घोड़ा भी ज़वाब दे जाता था। सहराओं में बाज़ इलाक़े बे हद दुश्वार गुज़ार हो थे मुसाफिर उधर से गुज़रने की जुर्रत नहीं करते थे। सहराई क़ज़ाक़ और बड़े पैमाने पर रहज़न करने वाले इन्ही इलाक़ों में रहते थे और लूट मार का माल वहीं रखते थे। इन में कुछ इलाक़े ऐसे खौफनाक़ थे के क़ज़ाक़ और रहज़न भी इन में दाख़िल होने की जुर्रत नहीं कते थे। उस दौर में सहरा के जिस इलाक़े को दुश्वार गुज़ार और ख़तरनाक कहना होता था तो कहा जाता था के वहां तो डाकू और रहज़न भी नही जाते।

ख़ालिद(र०) ने मक्का तक जल्दी पहुंचने का जो रास्ता इख़्तियार किया था वो ऐसा ही था जहां डाकू और हज़्न भी नहीं जाते थे। इतने ख़तरनाक़ और वसीअ इलाक़े से ज़िन्दा गुज़र जाना ही एक कारनामा था लेकिन ख़ालिद(र०) दिनों की मुसाफत मिन्टों में तय करने की कोशिश में थे। इन्हें सिर्फ ये सहूलत हासिल थी के मौसम सर्दियों का था लेकिन सैकड़ों मीलों तक पानी का नाम व निशान न था।

इस इलाक़े में एक और ख़तरा रेत और मिट्टी के उन टीलों का था जिन की शक्लें अजीब व ग़रीब थी। ये कई कई मील वसीअ नशेब में खड़े थे। बाज़ चट्टानों की तरह चौड़े थे, बाज़ गोल और बाज़ सुतूनों की तरह ऊपर को उठे हुए थे। ऐसे नशेब भूल भुलईयों की तरह थे। इन में भटक जाने का ख़तरा ज़्यादा था। घूम फिर कर इन्सान वहीं का वहीं रहता और समझता था के वो बहुत सा फासला तय कर आया है, हत्ता के वो एक जगह ही चलता और मुड़ता थक कर चूर हो जाता था। पानी पी

पी कर पानी का ज़ख़ीरा वहीं ख़त्म हो जाता था।

उस दौर की तहरीरों से पता चलता है के सहरा के उस हिस्से की सऊबतें, दुश्वारियां और वहां के ख़तरे ऐसे थे जो देखे बग़ैर इन्सान के तसव्वुर में नहीं आ सकते। कई जगहों पर ऊंट यूं बिदक गए जैसे उन्होंने कोई ऐसी चीज़ देख ली हो जो इन्सानों को नज़र नहीं आ सकती थी। ऊंट सहराई जानवर होने की वजह से उस पानी की भी बू पा लेता है जो ज़मीन के नीचे होता है। कहीं चश्मा हो जो नज़र न आता हो, ऊंट अपने आप उस तरफ चल पड़ता है। ऊंट ख़तरों को भी दूर से सूंघ लेता है।

ख़ालिद(र०) के मुख़तसिर से काफले के ऊंट कई जगहों पर बिदके। इन के सवारों ने इधर उधर और नीचे देखा मगर इन्हें कुछ भी नज़र न आया। ज़्यादा ख़तरा सहराई सांप का था जो डेढ़ या ज़्यादा से ज़्यादा दो बालिश्त का होता है। ये दुनिया के दूसरे मुल्कों के सांपों की तरह आगे को नहीं रेंगता बल्कि पीछे की तरफ रेंगता है। इन्सान या जानवर को डस ले तो दो चार मिन्टों में मौत वाक़े हो जाती है। सहराई बिच्छु भी इस सांप की तरह ज़हरीला होता है।

एक मोअरिख़ याक़ूबी ने ख़ालिद(र०) के इस सफर को बयान करते हुए हैरत का इज़हार किया है। उस ने अपने दौर के किसी आलिम का हवाला दे कर लिखा है के एक मोअजज़े वो थे जो खुदा ने पैग़म्बरों को दिखाए और ख़ालिद(र०) का ये सफर उन मोअजज़ों में से था जो इन्सान अपनी खुदा दाद कुव्वतों से कर दिखाया करते हैं।

❁

ख़ालिद(र०) अपने साथियों समेत बरवक़्त मक्का पहुंच गए। इन्हें इस ख़बर ने परेशान कर दिया ख़लीफातुल मुस्लेमीन अबु कबकर(र०) भी फरीज़ा-ए-हज की अदायगी के लिए आए हुए हैं। ख़ालिद(र०) ने सुन्नत के मुताबिक़ अपना सर उसतरे से मुंडवा दिया। उन्होंने अपने साथियों से कहा के वो अपने चेहरे छुपा कर रखें ताके कोई इन्हें पहचान न सके।

फरीज़ा-ए-हज अदा कर के ख़ालिद(र०) ने बड़ी तेज़ी से पानी और दीगर ज़ादे राह इक्ठा किया और वापसी के सफर को रवाना हो गए। यूं कहना ग़लत न होगा के वो एक बार फिर मौत की वादी में दाख़िल हो गए।

तमाम मोअरिख़ मुताफक्का तौर पर लिखते हैं के ख़ालिद(र०) उस वक़्त हीरा पहुंचे जब फराज़ से चला हुआ उन का लश्कर हीरा में दाख़िल हो रहा था। लश्कर का अक़बी हिस्सा जिन के साथ ख़ालिद(र०) को होना चाहिए था, वो अभी ही से कुछ दूर था। ख़ालिद(र०) ख़ामोशी से अक़बी हिस्से से जा मिले और हीरा में इस अंदाज़ से दाख़िल हुए जैसे वो फराज़ से आ रहे हों।

मोअररिख़ों ने लिखा है के लश्कर ने जब देखा के उन के सालारे आला ख़ालिद(र०) और चन्द और अफराद के सर उसतरे से साफ किए हुए है तो लश्कर मे चैमेगोईयां होने लगी लेकिन सर मुडवाना कोई अजीब चीज़ नही थी। अगर लश्कर को ख़ालिद(र०) खुद भी बताते के वो हज कर के आए है तो कोई भी यक़ीन न करता।

मशहुर मोअररिख़ तिबरी ने लिखा है के ख़ालिद(र०) मुतमईन थे के इन्हें मक्का मे किसी ने नही पहचाना। चार महीने गुज़र गए। किसरा के ख़िलाफ जंगी कारर्वाईयां ख़त्म हो चुकी थी। ईराक़ का बहुत सा इलाक़ा किसरा से छीन कर सल्तनते इस्लामिया में शामिल कर लिया गया था। किसरा की जंगी ताक़त का दम ख़म तोड़ दिया गया था। आतिश परस्त फारसियों की धोंस आौर धांदली ख़त्म हो चुकी थी। ये ख़तरा अगर हमेशा के लिए नहीं तो बड़ी लम्बी मुद्दत के लिए ख़त्म हो गया था के फारस की जंगी ताक़त हमला कर के मुसलमानों को कुचल डालेगी। फारसी आतिश परस्तों के नामूर जरनैल क़ारन, हरमज़, बहमन जाज़विया, अंदरज़ग़र, रोज़बा और ज़रमोहर और दूसरे जिन की जंगी अहलीयत और दहशत मशहूर थी, ख़ालिद(र०) और उन के मुजाहेदीन के हाथों मुख़तलिफ मआरकों में मारे गए थे। इन जैसे जरनैल पैदा करने के लिए बड़ी मुद्दत दरकार थी। अब तो पूरे ईराक़ में और मदाइन के महलात के अन्दर भी इन मुसलमानों की धाक बैठ गई थी जिन्हें इन्ही महलात में अरब के बद्दु और डाकू कहा गया था। सब से बड़ी फतह तो ये थी के इस्लाम ने अपनी अज़मत का अहसास दिला दिया था।

ख़ालिद(र०) ने हीरा में चार महीने गुज़ार कर अपने लश्कर को आराम करने की मोहलत दी और इस ख्याल से जंगी तरबीयत भी जारी रखी के मुजाहेदीने लश्कर सुस्त न हो जाऐं। इस के अलावा ख़ालिद(र०) ने मफ्तूहा इलाक़ों का नज़्म व नस्क़ और महसूलात की वसूली का निज़ाम भी बेहतर बनाया।

❁

मई 634ई० के आख़री हफ्ते में ख़ालिद(र०) को अमीरूलमोमेनीन अबुबकर(र०) का ख़त मिला जिस का पहला फिक़रा ख़ालिद(र०) के हज के मुताल्लिक़ था जिस के मुताल्लिक़ ख़ालिद(र०) मुतमईन थे के अमीरूलमोमेनीन इस से बे ख़बर है। ख़त में ख़ालिद(र०) के हज का इशारा कर के सिर्फ इतना लिखा था-"आईंदा ऐसा न करना"-बाक़ी ख़त का मतन ये था:

"बिस्मिल्लाहिरहमानिर्रहीम। अतीक़ बिन अबु क़हाफा की तरफ से ख़ालिद(र०) बिन वलीद के नाम-(याद रहे के अमीरूलमोमेनीन अव्वल अबु

बकर(र०) कहलाते थे लेकिन इन का नाम अब्दुल्ला बिन अबु क़हाफा था और अतीक़ उन का लक़ब था जो इन्हें रसूले करीम(स०) ने अता फरमाया था)-अस्सलाम अलेकुम। तारीफ अल्लाह के लिए जिस के सिवा कोई माबूद नहीं। दरूदो सलाम मोहम्मदुर्रसूल अल्लाह पर.......

"हीरा से कूच करो और शाम(सल्तनते रोमा) में उस जगह पहुंचो जहां इस्लामी लश्कर जमा है। लश्कर अच्छी हालत में नहीं, मुश्किल में है। मैं इस तमाम लश्कर का जो तुम अपने साथ ले जाओगे और उस लश्कर को जिस की मदद को तुम जा रहे हो, सिपह सालार मुक़र्रर करता हूं। रोमियों पर हमला करो। अबु उबैदा और उस के साथ के तमाम सालार तुम्हारे मातहत होंगे.....

"अबु सुलेमान!(ख़ालिद(र०)का दूसरा नाम) पुख़्ता अज़्म ले कर पेश क़दमी करो। अल्लाह की हिमायत और मदद से इस मुहिम को पूरा करो। अपने लश्कर को जो इस वक़्त तुम्हारे पास है, दो हिस्सों में कर दो। एक हिस्सा मिस्ना बिन हारिसा के सुपुर्द कर जाओ। ईराक़(सल्तनते फारस के मफ्तूहा इलाक़े) का सिपह सलार मिस्ना बिन हारिसा होगा। लश्कर का दूसरा हिस्सा अपने साथ ले जाओ। अल्लाह तुम्हें फतह अता फरमाए। इस के बाद यहीं वापस आ जाना और इस इलाक़े के सिपह सालार तुम होगे.....

"तक़ब्बुर न करना के तक़ब्बुर और अज़्म तुम्हें धोका देंगे और तुम अल्लाह के रास्ते से भटक जाओगे। कोतही न हो। रहमत व करम अल्लाह के हाथ में है और नेक अमाल का सिला अल्लाह ही दिया करता है।"

ख़त पढ़ते ही ख़ालिद(र०) ने अपने सालारों को बुलाया और कुछ खिस्याना सा हो के इन्हें बताया के उन के खुफिया हज का अमीरूलमोमेनीन को पता चल गया है।

"और मैं खूश हूं इस पर के फराग़त ख़त्म हो गई है"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"हम शाम जा रहे हैं।"

ख़ालिद(र०) तो जैसे मैदाने जंग के लिए पैदा हुए थे। क़िले और शहर में बैठना इन्हें पसंद न था। उन्होंने सालारों को ख़त पढ़ कर सुनाया और तैयारी का हुक्म दिया। इस के साथ ही उन्होंने लश्कर को दो हिस्सों में तक़सीम किया। मोअररिख़ों ने लिखा है के ख़ालिद(र०) ने तमाम सहाबा इकराम को अपने साथ रखा। सहाबा इकराम को लश्कर में इज़्ज़त व एहतराम की निगाह से देखा जाता था।

"वलीद के बेटे!"-मिस्ना बिन हारिसा ने कहा-"खुदा की क़सम, मैं इस तक़सीम पर राज़ी नहीं हूं जो तूने की है। तू रसूल अल्लाह(स०) के तमाम साथियों को अपने साथ ले जा रहा है। सहाबा इकराम को भी सही तक़सीम कर। आधे सहाबा

इकराम तेरे साथ जाऐंगे आधे मेरे साथ रहेंगे। क्या तू नही जानता के इन्ही की बदोलत अल्लाह हमें फतह अता करता है।"

ख़ालिद(र०) ने मुस्कुरा कर सहाबा इक़राम की तक़सीम मिस्ना बिन हारिसा की ख्वाहिश के मुताबिक़ कर दी और अपने लश्कर के सालारों को हुक्म दिया के जितनी जल्दी मुमकिन हो, तैयारी मुकम्मल करें।

"और ये न भूलना के हम अपने उन भाईयों की मदद को जा रहे है जो वहां मुश्किल में फसें हुए है।"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"ज़ाए करने के लिए हमारे पास एक सांस जितना वक़्त भी नही।"

❁

मुसलमानों का वो लश्कर जो शाम में जा कर मुश्किल में फंस गया था, वो एक सालार की जल्द बाज़ी का और हालात को क़ब्ल अज़ वक़्त न समझ सकने का नतीजा था। उस ने शाम के अन्दर जा कर रोमियों पर हमला करने की इजाज़त अमीरूलमोमेनीन से इस तरह मांगी के जिस तरह वो खुद आगे के अहवाल व कवाइफ को नहीं समझ सका था, इसी तरह उस ने अमीरूलमोमेनीन को भी गुमराह किया। अमीरूलमोमेनीन अबुबकर(र०) दानिशमंद इन्सान थे। उन्होंने इस सालार को हमला करने की खुली चिठ्ठी न दी बल्कि ये लिखा:

"....रोमियों से टक्कर लेने की ख्वाहिश मेरे दिल में भी है और ये हमारी दिफाई ज़रूरत भी है। रोमियों की जंगी ताक़त को इतना कमज़ोर कर देना ज़रूरी है के वो सल्तनते इस्लामिया की तरफ देखने की जुर्रत न कर सकें लेकिन अभी हम उन से टक्कर नही ले सकते। तुम उन के ख़िलाफ बड़े पैमाने की जंग न करना। मोहतात हो कर आगे बढ़ना ताके ख़तरा ज़्यादा हो तो पीछे भी हट सको। तुम ये जायज़ा लेने के लिए हमला करो के रोमियों की फौज किस तरह लड़ती है और इस के सालार कैसे है।"

अमीरूलमोमेनीन ने साफ अल्फाज़ में लिखा के अपने लश्कर को ऐसी सूरत में न डाल देना के पस्पाई इख़्तियार करो और तुम्हें अपने इलाक़े में आ कर भी पनाह न मिले।

इस सालार का नाम भी ख़ालिद था, ख़ालिद बिन सईद लेकिन मैदाने जंग में वो ख़ालिद(र०) बिन वलीद की गर्दें पा को भी नही पहुंच सकता था। उसे जिन दस्तों का सालार बनाया गया था वो सरहदी फराइज़ सर अंजाम देने वाले दस्ते थे। इन में लड़ने की अहलीयत थी और इन में लड़ने का जज़्बा भी था लेकिन इन्हें जंग का वैसा तजुर्बा न था जैसा ख़ालिद(र०) के दस्तों ने हासिल कर लिया था। अमीरूलमोमेनीन ने

ख़ालिद बिन सईद को अपनी सरहदों पर पहरा देने के लिए भेजा था। इन दस्तों का हेडक्वाटर तीमा के मुक़ाम पर बनाया गया था।

बाज़ मोअररि्ख़ों ने लिखा है के ख़ालिद(र०) की पै बा पै कामयाबियां देख देख कर ख़ालिद बिन सईद को ख्याल आया के ख़ालिद(र०) ने फारस को शिकस्तें दी है तो वो रोमियों को ऐसी ही शिकस्तें दे कर ख़ालिद(र०) की तरह नाम पैदा करे इब्ने हशाम और एक यूरपी मोअररिख़ हैनरी स्मिथ ने ये भी लिखा है के ख़लीफातुल मुस्लिमीन ख़ालिद बिन सईद की क़यादत और सलाहियतों से वाक़िफ थे इसी लिए उन्होंने इस सालार को बड़ी जंगों से दूर ही रखा था लेकिन वो उस की बातों में आ गए।

ख़ालिद(र०) ने भी फराज़ के मुक़ाम पर रोमियों से टक्कर ली थी लेकिन सरहद पर मआरका लड़ा था। उन्होंने आगे जाने की ग़ल्ती नहीं की थी। ख़ालिद बिन सईद ने अमीरूलमोमेनीन का जवाब मिलते ही अपने दस्तों को कूच का हुक्म दिया और शाम की सरहद में दाख़िल हो गए। उस वक़्त शाम में हरकुल रोमी हुकमरान था जिसे जंगों का बहुत तजुर्बा था। रोमियों की अपनी जंगी तारीख़ और रिवायात थीं। वो अपनी फौज को इन्ही के मुताबिक़ ट्रैनिंग देते थे।

ये तक़रीबन इन्ही दिनों का वाक़ेया है जब ख़ालिद(र०) फराज़ के मुक़ाम पर रोमियों, फारसियों और इसाईयों के मुत्तेहदा लश्कर के ख़िलाफ लड़े और उन्हें शिकस्त दी थी। इस से रोमी मोहतात, मुस्तैद और चौकस हो गए थे। उन्होंने अपनी फौज को हर लम्हा तैयार रहने का हुक्म दे रखा था।

खलिद बिन सईद ने आगे के अहवाल व क़वाईफ मालूम न किए, कोई जासूस आगे न भेजा और अंधा धुंद बढ़ते गए। आगे रोमी फौज की कुछ नफरी ख़ेमा ज़न थी। ख़ालिद बिन सईद ने दायें बायें देखे बग़ैर इस पर हमला कर दिया।

रोमियों का सालार बाहान था जो जंगी चालों के लिहाज़ से ख़ालिद(र०) के हम पल्ला था। ख़ालिद बिन सईद न समझ सका के रोमियों की जिस नफरी पर इस ने हमला किया है, इस की हैसियात जाल में दाने की है। वो इन्ही में उलझ गया।

थोड़ी ही देर बाद उसे पता चला के इस के अपने दस्ते रोमियों के घेरे में आ गए है और अक़ब से रोमी उन पर हल्ला बोलने के लिए बढ़े आ रहे है ख़ालिद बिन सईद के लिए अपने दस्तों को बचाना न मुमकिन हो गया। उस ने ये हरकत की के अपने मुहाफिज़ों को साथ ले करं मैदाने जंग से भाग गया और अपने दस्तों को रोमियों के रहम व करम पर छोड़ गया।

मुसलमानों के इन दस्तों में मशहूर जंगजू अकरमा(र०) बिन अबु जहल भी थे।

इस अब्तर सूरते हाल में उन्होंने अपने हिरासां दस्तों की कमान ले ली और ऐसी चालें चली के अपने दस्तों को तबाही से बचा लाए। जानी नुक़सान तो हुआ और ज़ख़्मियों की तादाद भी ख़ासी थी। ख़ालिद बिन सईद के भाग जाने से तमाम दस्तों के जंगी क़ैदी बनने के हालात पैदा हो गए थे। अकरमा(र०) ने मुसलमानों को इस ज़िल्लत से बचा लिया।

मदीने इत्तेला पहुंची तो ख़लीफ़ातुल मुस्लेमीन ने ख़ालिद बिन सईद को माज़ूल कर के मदीने बुला लिया। ख़लीफ़ातुल मुस्लेमीन के गुस्से का ये आलम था के उन्होंने ख़ालिद बिन सईद को भरी महफिल में बुज़दिल और नालायक़ कहा। ख़ालिद बिन सईद ख़ामोशी की ज़िन्दगी गुज़ारने लगा। इस से ज़्यादा अफसुरदा आदमी और कौन हो सकता था। आख़िर ख़ुदा ने उस की सुन ली। बहुत अर्से बाद जब मुसलमानों न शाम को मैदाने जंग बना लिया था, ख़ालिद बिन सईद को वहां एक दस्ते के साथ जाने की इजातज़ मिल गई। इस ने अपने नाम से शिकस्त का दाग़ यूं धोया के बे जिग्री से लड़ता हुआ शहीद हो गया।

❁

अमीरूलमोमेनीन अबुबकर(र०) ने अपनी मजलिसे मशावरत के सामने ये मसला पेश किया। इस मजलिस में जो अक़ाबरीन शामिल थे। इन में उमर, उसमान, अली, तलहा, ज़ुबैर, अब्दुर्रहमान बिन औफ, साद बिन अबी वक़्क़ास, अबु उबैदा बिन ज़राह, मआज़ बिन जबल, अबी बिन काब और ज़ैद बिन साबित रिज़वान उल्ला अलेहिम अजमाईन ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं।

"मेरे दोस्तों!"–ख़लीफा अबु बकर(र०) ने कहा–"रसूले करीम(स०) का इरादा था के शाम की तरफ से रोमियों के हमले का सद्देबाब किया जाए। आप(स०) ने जो तदबीरें सोची थीं, इन पर टमल करने की आप(स०) को मोहलत न मिली। आप(रस०) इन्तेक़ाल फरमा गए। अब तुम ने सुन लिया है के हरक़ुल जंगी तैयारी मुकम्मल कर चुका है और हमारा एक सालार शिकस्त खा कर भी आ गया है। अगर हम ने रोमियों के ख़िलाफ कोई कारर्वाई न क़ी तो एक तो अपने लश्कर के हौसले कमज़ोर होंगे और वो रोमियों को अपने से ज़्यादा बहादुर समझने लगेंगे।, दूसरा नुक़सान ये होगा के रोमी आगे बढ़ आऐंगे और हमारे लिए ख़तरा बन जाऐंगे। इस सूरते हाल में तुम मुझे क्या मशवरा दोगे? ये भी याद रखना के हमें मज़ीद फौज की ज़रूरत है।"

"ओमरूलमोमेनीन!"–उमर(र०) ने कहा–"आप के अज़्म को कौन रद्द कर सकता है। मैं महसूस कर हूं के शाम पर हमले का इशारा अल्लाह की तरफ से मिला

है। लश्कर के लिए मज़ीद नफरी भर्ती करें और जो काम रसूल अल्लाह(स०) ने करना चाहा था, उसे हम पूरा करें।"

"अमीरूलमोमेनीन!"-अब्दुर्रहमानन बिन औफ ने कहा-"अल्लाह की सलामती हो तुम पर! गौर कर ले, रोमी हम से ताक़तवर है। ख़ालिद बिन सईद का अंजाम देख। हम रसूल अल्लाह(स०) के इरादों को ज़रूर पूरा करेंगे लेकिन हम इस क़ाबिल नही के रोमियों पर बड़े पैमाने का हमला करें। क्या ये बेहतर नहीं होगा के हमारे दस्ते रोमियों की सरहदी चौकियों पर हमले करते रहें और हर हमले के बाद दूर पीछे आ जाएं। इस तरह रोमियों का आहिस्ता आहिस्ता नुक़सान होता रहेगा और अपने मुजाहेदीन के हौसले खुलते जाएंगे। इस दौरान हम अपने लश्कर के लिए लोगों को इक्ळा करते रहें। अमीरूलमोमेनीन! लश्कर में इज़ाफा कर के तुम खुद जिहाद पर रवाना हो जाओ और चाहो तो क़यादत किसी और सरदार को दे दो।"

मोअरिख़ों ने उस दौर की तहरीरों के हवाले से लिखा है के तमाम मजलिस पर ख़ामोशी तारी हो गई। अब्दुर्रहमान बिन औफ(र०) ने बड़ी जुर्रत से अपना मशवरा पेश किया था। ऐसे लगता था जैसे अब कोई और बोलेगा ही नहीं।

"ख़ामोश क्यों हो गए हो तुम?"-अमीरूलमोमेनीन ने कहा-"अपने मशवरे दो।"

"कौन शक कर सकता है तुम्हारी दियानतदारी पर!"-उसमान(र०) बिन ग़फान ने कहा-"बे शक तुम मुसलमानों की और दीन की भलाई चाहते हो। फिर क्यों नहीं तुम हुक्म देते के शाम पर हमला करो। नतीजा जो भी होगा हम सब भुगत लेंगे।"

मजलिस के दूसरे शुरका ने उसमान(र०) बिन ग़फान की ताईद की और मुताफक़्क़ा तौर पर कहा के दीन और रसूल अल्लाह(स०) की उम्मत के वक़ार के लिए मसनदे ख़िलाफत से जो हुक्म मिलेगा इसे सब क़ुबूल करेंगे।

"तुम सब पर अल्लाह की रहमत हो"-ख़लीफातुल मुस्लिमीन ने आख़िर में कहा-"मैं कुछ अमीर मुक़र्रर करता हूं। अल्लाह की और उस के रसूल(स०) के बाद अपने अमीरों की इताअत करो। अपनी नीयतों और इरादों को साफ रखो। बेशक अल्लाह इन्ही लोगों के साथ होता है।"

अमीरूलमोमेनीन अबु बकर(र०) का मतलब ये था के शाम पर हमला होगा और रोमियों के साथ जंग लड़ी जाएगी। मजलिस पर फिर ख़ामोशी तारी हो गई। मोहम्मद हुसैन हैकल लिखता है के ये ख़ामोशी ऐसी थी जैसे वो रोमियों से डर गए हों या इन्हें अमीरूलमोमेनीन का फैसला पसंद न आया हो। उमर(र०) ने सब की तरफ

देखा और उन की आंखें जज़्बात की शिद्दत से सुर्ख़ हो गईं।

"ऐ मोमेनीन!" -उमर(र०) ने गरज कर कहा- "क्या हो गया है तुम्हें? ख़लीफा की आवाज़ पर लब्बैक क्यों नही कहते? क्या ख़लीफा ने अपनी भलाई के लिए कोई हुक्म दिया है? क्या ख़लीफा के हुक्म में तुम्हारी भलाई नही? उम्मते रसूल(स०) की भलाई नही?....बोलो....लब्बैक कहो और आवाज़ अपने दिलों से निकालो।"

मजलिस का सुकूत टूट गया। लब्बैक लब्बैक की आवाज़ें उठीं और सब ने मुताफक्क़ा तौर पर कहा के वो रोमियों से टक्कर लें।

❁

हज से वापस आ कर ख़लीफातुल मुस्लिमीन अबु बकर(र०) ने मदीने में घुड़दौड़, नेज़ा बाज़ी, तेग़ ज़नी, तीरअंदाज़ी और कुश्तियों का मुक़ाबला मुनअक़िद कराया। इर्द गिर्द के क़बीलों को भी इस मुक़ाबले में शिरकत की दावत दी गई थी। तीन दिन मदीने में इन्सानों के हुजूम का ये आलम रहा के गलियों में चलने को रस्ता नहीं मिलता था। कोई जगह नहीं रही थी। जिधर नज़र जाती थी, घोड़े और ऊंट खड़े नज़र आते थे। दफ और नफरियां बजती ही रहती थी। क़बीले अपने शहसवारों और पहलवानों को जुलूसों की शक्ल में ला रहे थे।

तीन दिन हर तरह के मुक़ाबले होते रहे। जिन क़बीलों के आदमी जीत जाते वो क़बीले मैदान में आ कर नाचते कूदते और चिल्ला चिल्ला कर खुशी का इज़्हार करते थे। उन की औरतें अपने जीतने वाले आदमियों की मिदह में गीत गाती थीं। मुक़ाबले में बाहर का कोई घुड़सवार या तेग़ज़न या कोई शतुर सवार ज़ख़्मी हो जाता था तो मदीने का हर बाशिंदा उसे उठा कर अपने घर ले जाने की कोशिश करता था। मदीने वालों की मेज़बानी ने क़बीलों के दिल मोह लिए।

मुक़ाबलों और मेले का ये अहतमाम ख़लीफातुल मुस्लिमीन अबु बकर(र०) ने किया था। मुक़ाबले के आख़री रोज़ मदीने का एक आदमी घोड़े पर सवार मैदान में आया। मैदान के इर्द गिर्द लोगों, घोड़ों और ऊंटों का हुजूम जमा था।

"ऐ रसूल अल्लाह(स०) के उम्मतियों!"-मैदान में उतरने वाले सवार ने बड़ी बुलंद आवाज़ से कहा- "खुदा की क़सम, कोई नही जो तुम्हें नीचा दिखा सके। तुम ने इस मैदान में अपनी ताक़त और अपने जौहर देख लिए हैं। कौन सा दुश्मन है जो तुम्हारे सामने अपने पांव पर खड़ा रह सकेगा। ये ताक़त जो तुम ने एक दूसरे पर आज़माई है, अब इसे उस दुश्मन पर आज़माने का वक्त आ गया है जो तुम्हारी तरफ बढ़ा आ रहा है....

"ऐ मोमेनीन! अपनी ज़मीन को देखो, अपने अमवाल को देखो, अपनी औरतों को देखो जो तुम्हारे बच्चों को दूध पिलाती है, अपनी जवान और कुंवारी बेटियों को देखो जो तुम्हारे दामादों के इन्तेज़ार में बैठी है के हलाल के बच्चे पैदा करें। अपने दीन को देखो जो अल्लाह का सच्चा दीन है। खुदा की क़सम, तुम गै़रत वाले हो, इज़्ज़त वाले हो, अल्लाह ने तुम्हें बरतरी दी है। तुम पसंद नहीं करोगे के कोई दुश्मन उस वक़्त तुम पर आ पड़े जब तुम सोए हुए होगे और तुम्हारे घोड़े और तुम्हारे ऊंट बग़ैर ज़ीनों के बंधे हुए होंगे और तुम नही बचा सकोगे अपने अमवाल को,अपने बच्चों को, अपनी औरतों को और अपनी कुंवारी बेटियों को और दुश्मन तुम्हें मजबूर देगा के सच्चे दीन को छोड़ कर दुश्मन के देवताओं की पूजा करो।"

"बता हमें वो दुश्मन कौन है?"-एक शतुर सवार ने चिल्ला कर पूछा-"कौन है जो हमारी गै़रत को लल्कार रहा है।"

"रोमी!"-घुड़सवार ने ऐलान करने के लहजे में कहा-"वो जो मुल्के शाम पर कब्ज़ा किए बैठे हैं उन की फौज हम से ज़्यादा है। बहुत ज़्यादा है। उन के हथियार हम से अच्छे हैं लेकिन वो तुम्हारा वार नहीं सह सकते। तुम ने इस मैदान में अपनी ताक़त और अपनी हिम्मत देख ली है। अब उस मैदान में चलो जहां तुम्हारी ताक़त और हिम्मत तुम्हारा दुश्मन देखेगा।"

"हमें उस मैदान में कौन ले जाएगा?"-हुजूम में से किसी ने पूछा।

"मदीने वाले तुम्हें अपने साथ ले जाएंगे"-मदीने के घुड़सवार ने कहा-"देखो उन्हें जो बरसों से मुहाज़ पर लड़ रहे हैं। कट रहे हैं और वहीं दफ्न हो रहे हैं। उन्हें अपने बच्चों की याद नहीं रही। उन्हें अपने घर याद नहीं रहे। वो बड़ी थोड़ी तादाद में हैं और उस दुश्मन को शिकस्त पे शिकस्त दे रहे हैं जो तादाद में उन से बहुत ज़्यादा है। वो रातों को भी जागते हैं, तुम्हारी इज़्ज़तों के लिए...उन्होंने आतिश परस्त फारसियों का सर कुचल डाला है। अब रोमी रह गए हैं मगर हमारे मुजाहेदीन थक गए हैं। मुहाज़ एक दूसरे से दूर हैं वो हर जगह फौरन नहीं पहुंच सकते....क्या तुम जो गै़रत और इज़्ज़त वाले हो, ताक़त और हिम्मत वाले हो, इन की मदद को नहीं पहुंचोगे?"

हुजूम जो पहले ही बेचैन था, जोश व ख़रोश से फटने लगा। अमीरूलमोमेनीन का यही मंशा था के लोगो को इस्लामी लश्कर में शामिल किया जाए। क़बीलों की जो औरतें मदीने आई थी, उन्होंने अपने मर्दों को लश्कर में भर्ती होने पर उकसाना शुरू कर दिया।

उस रोज़ जो मुक़ाबलों का आखरी रोज़ था, मुक़ाबलों में कुछ और ही जोश और कुछ और ही शौर था। मुक़ाबलों में उतरने वालों का अंदाज़ ऐसा ही था जैसे वो

लश्कर में अच्छी हैसियत हासिल करने के लिए अपने जौहर दिखा रहे हों। इस के बाद इन लोगों में से कई इस्लामी लश्कर में शामिल हो गए।

❁

यमन में इस्लाम मक़बूले आम मज़हब बन चुका था। अरतदाद भी ख़त्म हो गया था और वहां का ग़ालिब मज़हब इस्लाम था। ख़लीफातुल मुस्लिमीन ने अहले यमन के नाम एक ख़त लिखा जो एक क़ासिद ले कर गया। ख़त में लिखा था:

"अहले यमन! तुम पर अल्लाह की रहमतें बरसें। तुम मोमेनीन हो और मोमेनीन पर उस वक़्त जिहाद फर्ज़ हो जाता है जब एक ताक़तवर दुश्मन का ख़तरा मौजूद हो। हुक्मे रब्बुल आलमीन है के तुम तंगदस्ती में हो या खुशहाली में, तुम्हारे पास सामान कम है या ज़्यादा, तुम जिस हाल में भी हो, दुश्मन के मुक़ाबल के लिए निकल पड़ो। अपने मालों और अपन जानों से खुदा की राह में जिहाद के लिए निकलो। तुम्हारे जो भाई मदीने आए थे, इन्हें मैं ने शाम बग़र्ज़ जिहाद जाने की तरग़ीब दी तो वो बखुशी तैयार हो गए और इस्लामी लश्कर में शामिल हो गए। मैं यही तरग़ीब तुम्हें देता हूं। मेरी आवाज़ तुम तक पहुंच गई है। इस में अल्लाह का हुक्म है वो सुनो और जिस ने तुम्हें पैदा किया है उस के हुक्म की तामील करो।"

उस दौर के रिवाज के मुताबिक़ मदीने के क़ासिद ने यमन में तीन चार जगहों पर लोगों को इक्ळा किया और अमीरूलमोमेनीन का पैग़ाम सुनाया। इस का असर ये हुआ के एक सरदार जुलकला हमैरी ने न सिर्फ अपने क़बीले के जवान आदमियों को तैयार कर लिया बल्कि अपने ज़ेरे असर चन्द और क़बीलों के लड़ने वाले आदमियों को साथ लिया और मदीने को रवाना हो गया।

मदीने का क़ासिद हर क़बीले में गया था। तीन और क़बीलों के सरदारों– क़ैस बिन हबीर मरादी, जंदब बिन उमरूलदोसी और हाबिस बिन साद ताई– ने अपने अपने क़बीले के जवानों और लड़ने के क़ाबिल अफराद को साथ लिया और शाम की जंगी मुहिम में शरीक होने के लिए आज़िमे मदीने हुए।

ये एक अच्छा ख़ासा लश्कर बन गया। हर फर्द घोड़े या ऊंट पर सवार और हर क़िस्म के हथियारों से मुसल्लेह हो कर आया। ये लोग तीरों का बहुत बड़ा ज़ख़ीरा भी साथ ले आए। मदीने में इस लश्कर का इजतेमा मार्च 634ई० (मोहर्रम 13 हिज्री) में हुआ था।

अमीरूलमोमेनीन अबु बकर(र०) ने खुद इस इजतेमा के हर आदमी को अच्छी तरह देखा के वो तंदरूस्त है और वो किसी के मजबूर करने पर नहीं बल्कि जिहाद का मतलब और मक़सद समझ कर खुद आया है। फिर इस लश्कर की छान बीन ये

मालूम करने के लिए की गई के इन में कई अफराद मुर्तेदीन के साथ रहे और मुसलमानों ने अरतदाद के ख़िलाफ ज़ो जंग लड़ी थी, इस में वो मुसलमानों के ख़िलाफ लड़े थे। उन्होंने इस्लाम तो कुबूल कर लिया था लेकिन इन पर भरोसा नही किया जा सकता था। मुर्तेदीन ने ये आदत बना ली थी के मुर्तिद बने रहे। जब मुसलमानों के हाथों मैदाने जंग में पिट गए तो इस्लाम कुबूल कर लिया मगर मसुलमान इन पर भरोसा कर के इन की बस्तियां से हटे तो इन में से कई एक इस्लाम से मुंहरिफ हो कर फिर मुर्तिद हो गए।

मदीने में छान बीन की गई तो इन में से बाज़ को लश्कर से निकाल दिया गया। बाकी लश्कर को चार हिस्सों में बांट कर हर हिस्से का सालार मुक़र्रर किया गया। हर हिस्से में सात हज़ार आदमी थे, यानी लश्कर की तादाद अठ्ठाईस हज़ार थी। ज़्यादा तर मोअरिख़ों ने ये तादाद तीस हज़ार लिखी है। एक हिस्से के सालार थे उमरो बिन आस, दूसरे के यज़ीद बिन अबी सफयान, तीसरे के शरजील बिन हस्ना और चौथे हिस्से के सालार अबु उबैदा बिन जर्राह थे।

इन सालारो ने चन्द दिन लश्कर को बड़े पैमाने की जंग लड़ने की ट्रैनिंग दी जिस में मआरके के दौरान दस्तों का आपस में राब्ता और नज़्म व नस्क़ क़ायम रखना शामिल था।

अप्रैल 634ई० (सफर 13 हिज्री) के पहले हफ्ते में इस लश्कर को शाम की तरफ कूच का हुक्म मिला। हर हिस्से को अलग अलग मुक़ामात पर पहुंचना और एक दूसरे से अलग कूच करना था। उमरो बिन आस को अपने दस्तों के साथ फिलिस्तीन तक जाना था। यज़ीद बिन अबी सफयान की मंज़िल दमिश्क़ थी। इन्हें तबूक के रास्ते से जाना था। शरजील बिन हस्ना को उरदुन की तरफ जाना था। इन्हें कहा गया था के यज़ीद बिन अबी सफयान के दस्तों के पीछे पीछे जाएं। अबु उबैदा बिन जर्राह की मंज़िल हमस थी। इन्हें भी तबूक के रास्ते से जाना था।

"अल्लाह तुम सब का हामी व नासिर हो"–ख़लीफातुल मुस्लिमीन ने आख़री हुक्म ये दिया–"सालार अपने अपने दस्ते एक दूसरे से अलग रखेंगे। अगर रोमियों के साथ कहीं टक्कर हो गई तो सालार एक दूसरे को मदद के लिए बुला सकते है। अगर लश्कर के चारों हिस्सों को मिल कर लड़ना पड़ा तो अबु उबैदा बिन जर्राह तमाम लश्कर के सिपह सालार होंगे।"

सब से पहले यज़ीद बिन अबी सफयान अपने दस्तों को साथ ले कर मदीने से निकले। मदीने की औरतें और बच्चे भी बाहर निकल आए थे। छतों पर औरतें खड़ी हाथ ऊपर कर के हिला रही थी। बूढ़ी औरतों ने दुआ के लिए हाथ उठाए हुए थे। कई

बूढ़ों की आंखें इस लिए अशकबार हो गई थी के वो लड़ने के काबिल नही रहे थे।

यज़ीद बिन अबी सफयान अपने दस्तों के आगे आगे जा रहे थे। यज़ीद के साथ अमीरूल मोमेनीन अबुबकर(र०) पैदल जा रहे थे। यज़ीद घोड़े से उतर आए। अमीरूलमोमेनीन के इसरार के बावजूद वो घोड़े पर सवार न हुए। अमीरूलमोमेनीन ज़ईफ थे फिर भी वो दस्तों की रफ्तार से चले जा रहे थे। यज़ीद ने इन्हें कई बार कहा के वो वापस चले जाऐं लेकिन अबु बक्र(र०) ना माने मदीने से कुछ दूर जा कर यज़ीद रूक गए।

"अमीरूलमोमेनीन वापस नही जाऐंगे तो मैं एक क़दम आगे नही बढ़ाऊंगा"-यज़ीद बिन अबी सफयान न कहा।

"खुदा की क़सम अबी सफयान!"-अमीरूलमोमेनीन ने कहा-"तू मुझे सुन्नते रसूल अल्लाह(स०) से रोक रहा है। क्या तुझे याद नहीं के रसूल अल्लाह(स०) जिहादे को रूख़सत होने वाले हर लश्कर के साथ दूर तक जाते और दुआओं के साथ रूख़सत करते थे? आप(स०) फरमाया करते थे के पांव जो जिहादे फी सबील अल्लाह के रास्ते पर गर्द आलूद हो जाते हैं दोज़ख़ की आग इन से दूर रहती है।"

तारीख़ के मुताबिक़ अमीरूलमोमेनीन लश्कर के इस हिस्से के सथ मदीने से दो मील दूर तक चले गए थे।

"अबी सफयान!"-अमीरूलमोमेनीन ने कहा-"अल्लाह तुझे फत्रह व नुसरत अता फरमाए। कूच के दौरान अपने आप पर और अपने लश्कर पर कोई सख़्ती न करना। फैसला अगर खुद न कर सको तो अपने मातहतों से मशवरा ले लेना और तल्ख़ क़लामी न करना....अदल व इन्साफ का दामन न छोड़ना। जुल्म से बाज़ रहना के जुल्म और बे इन्साफी करने वाली क़ौम को अल्लाह पसंद नहीं करता और ऐसी क़ौम कभी फातेह नहीं होती....मैदाने जंग मैं पीठ न दिखाना के जंगी ज़रूरत के बग़ैर पीछे हटने वाले पर अल्लाह का क़हर नाज़िल होता है....और जब तुम अपने दुश्मन पर ग़ालिब आ जाओ तो औरतों, बच्चों और बूढ़ों पर हाथ न उठाना और जो जानवर तुम खाने के लिए ज़िबह करो, इन के सिवा किसी जानवर को न मारना।"

मोअररिख़ेन वाक़दी, अबु यूसुफ, इब्ने ख़ल्दोन और इब्ने असीर ने अमीरूलमोमेनीन के ये अल्फाज़ लिखे है। इन मोअररिख़ेन के मुताबिक़ अमीरूलमोमेनीन अबु बकर(र०) ने यज़ीद बिन अबी सफयान से कहा-"तुझे ख़ानक़ाहें या इबादत गाहें सी नज़र आऐंगी और इन के अन्दर राहिब बैठे हुए होंगे। वो तारिक्कु दुनिया होंगे। इन्हें अपने हाल में मस्त रहने देना, न ख़ानक़ाहों और इबादत गाहों को कोई नुक़सान पहुंचाना न इन के राहिबों को परेशान करना.....और तुम्हें सलीब को

पूजने वाले भी मिलेंगे। इन की निशानी ये होगी के इन के सरों के ऊपर दरमियान में बाल होते ही नही। मुंडा देते है। इन पर इसी तरह हमला करना जिस तरह मैदाने जंग में दुश्मन पर हमला किया जाता है। इन्हें सिर्फ इस सूरत में छोड़ना के इस्लाम क़ुबूल कर लें या जज़िया अदा करने पर अमादा हो जाऐं...अल्लाह के नाम पर लड़ना, ऐतदाल से काम लेना, ग़द्दारी न करना और जो हथियार डाल दे उसे बिला वजह क़त्ल न करना न ऐसे लोगों के आज़ा काटना।"

ये रसूले अकरम(स०) का तरीक़ा था के रूख़सत होने वाले हर लश्कर के साथ कुछ दूर तक जाते, सालारों को उन के फराइज़ याद दिलाते और लश्कर को दुआओं से रूख़सत करते थे। ख़लीफा अव्वल अबु बकर ने रसूल अकरम(स०) की पैरवी करते हुए चारों सालारों को आप ही की तरह रूख़सत किया।

लश्कर और दस्ते तो मुहाज़ों को रवाना होते ही रहते थे लेकिन ये लश्कर बड़े ही ख़तरनाक और ताक़तवर दुश्मन से नबर्द आज़मा होने जा रहा था। शहंशाह हरकुल जो हमस में था, सिर्फ शहंशाह ही नहीं था, वो मैदाने जंग का उस्ताद और जंगी चालों का माहिर था। इस लश्कर को मदीने से रवाना कर के मदीने वालों पर ख़ामोशी सी तारी हो गई थी और ख़ामोशी की ज़बान में हर किसी के सीने से दुआऐं फूट रही थीं।

❁

ये थी वो जंगी मुहिम जिस के लिए अमीरूलमोमेनीन ने फैसला किया था के इस की कमान और क़यादत के लिए ख़ालिद(र०) से बेहतर कोई सालार नहीं। मदीने का ये अळाईस हज़ार का लश्कर पंद्रह दिनों में शाम की सरहद पर अपने बताए हुए मुक़ामात पर पहुंच चुका था।

हमस में शहंशाह हरकुल के महल में वही शान व शैक़त थी जो शहंशाहों के महलात में हुआ करती थी। मदाइन के महल की तरह हमस के महल में भी हसीन और नौजवान लड़कियां मुलाज़िम थीं। नाचने और गाने वालियां भी थीं और एक मलिका भी थी और जिस की वो मलिका थी उस की मलिका होने की दावेदार चन्द एक और भी थीं।

शहंशाह हरकुल के दरबार में एक मुल्ज़िम पेश था। इस का जुर्म ये था के वो शाही ख़ानदान से ताल्लुक़ नहीं रखता था। उस का ताल्लुक़ उस ख़ानदान के साथ था जो शहंशाह का नाम सुन कर ही सिज्दे में गिर पड़ता था। ये मुल्ज़िम उन लोगों में से था जो शहंशाह को रोज़ी रसां समझा करते थे।

इस मुल्ज़िम का दूसरा जुर्म ये था के शाही ख़ानदान की एक शहज़ादी इस पर

मर मिटी थी। शहज़ादी ग़ज़ाल के शिकार को गई थी और जंगल में कही उसे ये आदमी मिल गया था। शहज़ादी ने एक ग़ज़ाल को तीर से मामूली सा ज़ख़्मी कर दिया था और उस के पीछे घोड़ा डाल दिया था लेकिन ग़ज़ाल मामूली ज़ख़्मी था। वो घोड़े की रफ्तार से कही ज़्यादा तेज़ भाग रहा था।

इस मुल्ज़िम ने देख लिया। वो घोड़े पर सवार था और इसके हाथ में बरछी थी। उस ने ग़ज़ाल के पीछे घोड़ा दौड़ा दिया। ग़ज़ाल मुड़ता था ता सवार रास्ता छोटा कर के उस के क़रीब पुहंच जाता था। वो ग़ज़ाल को उस तरफ ले जाता जिधर शहज़ादी रूकी खड़ी थी। शहज़ादी ने तीन चार तीर चलाए। सब ख़ता गए। इस जवान और खूबरू आदमी ने घोड़े को ऐसा मोड़ा के ग़ज़ाल के रास्ते में आ गया। उस ने बरछी ताक कर फैंकी जो ग़ज़ाल के पहलू में उतर गई और वो गिर पड़ा।

शहज़ादी अपना घोड़ा वहां ले आई तो ये आदमी अपने घोड़े स कूद कर उतरा और शहज़ादी के घोड़े के क़दमों में सिज्दा ज़ेर हो गया।

"मैं अगर शहज़ादी के शिकार को शिकार करने का मुजरिम हूं तो मुझे माफ कर दिया जाए"-उस ने हाथ जोड़ कर कहा-"लेकिन मैं ग़ज़ाल को शहज़ादी के सामने ले आया था के शहज़ादी उसे शिकार करे।"

"तुम शहसवार हो"-शहज़ादी ने मुस्कुरा कर कहा-"क्या काम करते हो?"

"हर वो काम कर लेता हूं जिस से दो वक्त की रोटी मिल जाए"-इस आदमी न कहा-"सिर्फ चोरी नहीं करता और हराम की नहीं खाता।"

"तुम्हें शहंशाह हरकुल की फौज में होना चाहिए"-शहज़ादी ने कहा-"मैं तुझे महल के मुहाफिज़ों में शामिल करूंगी।"

रिआया के इस नाचीज़ बंदे में इतनी जुर्रत नही थी के इन्कार करता। शहज़ादी इसे साथ ले आई और मुहाफिज़ों में रखवा दिया। इसे जब शाही मुहाफिज़ों का लिबास मिला और जब वो इस लिबास में शाही अस्तबल के घोड़े पर सवार हुआ तो इस की मर्दाना वजाहत निखर आई। वो शहज़ादी का मंज़ूरे नज़र बन गया फिर शहज़ादी ने इसे अपना देवता बना लिया।

शहज़ादी की शादी होने वाली थी लेकिन इस ने अवपने मंगेतर के साथ बे रूख़ी बरतनी शुरू कर दी। मंगेतर ने अपने मुख़्बिरों से कहा के वो शहज़ादी को देखते रहा करें के वो कहां जाती है और उस के पास कौन आता है।

एक रात शहज़ादी के मंगेतर को इत्तेला मिली के शहज़ादी शाही महल के बाग़ में बैठी हुई है। वो महल से थोड़ी ही दूर एक बड़ी खूबसूरत जगह थी। वहां चश्मा था और सब्ज़ा ज़ार था। दरख़्त थे और फूलदार पौधों की बाड़ें थी चांदनी रात

थी। शज़ादी और उस का मंज़ूरे नज़र हाथों में हाथ डाले बैठे थे के इन्हें भारी भरकम क़दमों की धमक सुनाई दी। वो शाही मुहाफिज़ों के नरगे में आ गए थे।

इस मुजाफिज़ को क़ैद मे डाल दिया गया। शहंशाह हरकुल को सुबह बताया गया और मुहाफिज़ को ज़ंजीरों में बांध कर दरबार में पेश किया गया। उस पर इल्ज़ाम ये था के उस ने एक शहज़ादी की शान में गुस्ताख़ी की है। ये इल्ज़ाम दरबार में बुलंद आवाज़ से सुनाया गया।

"शहंशाह हरकुल की शहंशाही सारी दुनिया मैं फैले!"–मुल्ज़िम ने कहा–"शहज़ादी को दरबार में बुला कर पूछा जाए के मै ने गुस्ताख़ी की है या महोब्बत की है....और महोब्बत मैंने नहीं शहज़ादी ने की है।"

"ले जाओ इसे!"–शहंशाह हरकुल ने गरज कर कहा–"रथ के पीछे बांध दो और रथ उस वक्त तक दौड़ती रहे जब तक इस का गोशत इस की हड्डियों से अलग नहीं हो जाता।"

"शहंशाह हरकुल!"–मुल्ज़िम लल्कार कर बोला–"तू एक शहज़ादी की महोब्ब्त का खून कर रहा है।"

उसे दरबार से घसीट कर ले जा रहा थे और उस की पुकार और लल्कार सुनाई दे रही थी। वो रहम की भी नहीं मांग रहा था।

"तेरा अंजाम क़रीब आ रहा है हरकुल!"–वो चिल्लाता जा रहा था–"अपने आप को देवता न समझ हरकुल! ज़िल्लत और रूस्वाई तेरी तरफ आ रही है।"

महोब्बत के इस मुजरिम को एक रथ के पीछे बांध दिया गया और दो घोड़ों की रथ दौड़ पड़ी। महल से शौर उठा–"शहज़ादी ने अपने पेट में तलवार उतार ली है।"

❁

ये ख़बर शहंशाह हरकुल तक पहुंची तो उस ने किसी रद्दे टमल का इज़हार न किया। वो तख़्त पर बैठा रहा। दरबारियों पर सन्नाटा तारी थी। कुछ देर बाद उठा और अपने ख़ास कमरे में चला गया। वो सर झुकाए हुए कमरे में टहल रहा था। मलिका कमरे में आई। हरकुल ने उसे क़हर की नज़रों से देखा।

"शगुन अच्छा नहीं"–मलिका ने रूंधी हुई आवाज़ में कहा–"सुबह ही सुबह दो खून बह गए हैं"

"यहां से चली जाओ"–हरकुल ने कहा–"मै शाही ख़ानदान की बे इज़्ज़ती बर्दाश्त नहीं कर सकता।"

"मै कुछ और कहने आई हूं"–मलिका ने कहा–"सरहद से एक इसाई आया है। उस ने तमाम रात सफर में घोड़े की पीठ पर गुज़ारी है। उसे किसी ने दरबार में

दाख़िल नही होने दिया। मुझे इत्तेला मिली तो...."

"वो क्यों आया है"-हरकुल ने झुंझला कर पूछा-"क्या वो सरहद से कोई ख़बर लाया है?"

"मुसलमानों की फौजें आ रही है"-मलिका ने कहा।

"अन्दर भेजो उसे!"-हरकुल ने कहा।

मलिका के जाने के बाद एक अधेड़ उम्र आदमी कमरे में आया। उस के कमड़ों पर और चेहरे पर गर्द की तह जमी हुई थी। वो सलाम के लिए झूका।

"तूने महल तक आने की जुर्रत कैसे की?"-हरकुल ने शहाना जलाल से पूछा-"क्या तू ये ख़बर किसी सालार या नाज़िम को नहीं दे सकता था?"

"ये जुर्म है तो मुझे बख़्श दें"-इस आदमी ने कहा-"मुझे डर था के इस ख़बर को कोई सच नही मानेगा।"

"तू ने मुसलमानों का लश्कर कहां देखा है?"

"हमस से तीन रोज़ के फासले पर!"-उस ने जवाब दिया।

ये एक इसाई अरब था जिस ने अबु उबैदा बिन जर्राह के दस्तों को शाम की सरहद से कुछ दूर देख लिया था। उसी शाम दो और जगहों से इत्तेलाए आईं के मुसलमानों की फौज इन जगहों पर पड़ाव डाले हुए है। मुसलामनों के लश्कर के चौथे हिस्से की इत्तेला अभी नहीं आई थी। रात को हरकुल ने अपने जरनैलों और मुशीरों को बुलाया।

"क्या तुम्हें मालूम है सरहद पर क्या हो रहा है?"-हरकुल ने पूछा-"मदीने की फौज तीन जगहों पर आ गई है। अपनी किसी सरहदी चौकी ने कोई इत्तेला नही दी। क्या वहां सब सोए रहते हैं? क्या तुम बर्दाशत कर सकते हो के अरब के चन्द एक लुटेरे क़बीले तुम्हें सरहदों पर आ कर लल्कारें? क्या तुम उन के एक सालार को अपनी ताक़त नहीं दिखा चुके? वो खुश क़िस्मत था के निकल गया। अब वो ज़्यादा तादाद में आए हैं। वो माले ग़नीमत के भूके हैं। फौरन तैयारी शुरू करो। इन का कोई एक आदमी और कोई घोड़ा या ऊंट वापस न जाए।"

"शहंशाह हरकुल!"-शाम की फौजौं के कमांडर ने कहा-"आप इतने ना तजुर्बाकार तो नहीं जैसी आप ने बात की है। अगर ये मामला कुछ और होता है तो हम आप की ताईद करते लेकिन ये मसला जंगी है। आप जानते है के शिकस्त के बाद क्या होता है।"

"मुझे सबक़ नही मशवरा चाहिए"-हरकुल ने कहा-"वो क्या है जो मै नही जानता।"

"शहंशाह सब कुछ जानते हुए ऐसी बात न करें जिस ने फारस के शहंशाह उर्दशेर की जान ले ली थी"-रोमी फौजों के कमांडर ने कहा-"उस की जंगी ताक़त हमारी टक्कर की थी। आप भी इस फौज से लड़ चुके हैं। इस के बाद आप को भी ईराक़ पर फौज कशी की जुर्रत नही हुई। अब फराज़ के मैदान में हमें मुसलमानों के खिलाफ फारसियों का इत्तेहादी बनना पड़ा और हम ने इसाई क़बीलों को साथ मिलाया मगर खालिद(र०) बिन वलीद हमें शिकस्त दे गया।"

"क्या तुम ये कहना चाहते हो के हमें मुसलमानों से डरना चाहिए?"-हरकुल ने तंज़िया लहजे में पूछा।

"नही शहंशाह!"-कमांडर ने कहा-"उर्दशेर भी मदाइन में बठा ऐसी ही बातें किया करता था जैसी आप हमस में बैठे कर रहे हैं। मैं आप को याद दिया रहा हूं के फारसियों का अंजाम देखो। मदाइन के महल अब भी खड़े हैं लेकिन मकबरों की तरह। उर्दशेर ने पहले पहल मुसलमानों को अरब के बद्दु और डाकू कहा था। मैं ने फारसियों की शिकस्त की छान बीन पूरी तफसील से कही है। उर्दशेर के मुंह से यही अल्फाज़ निकलते थे, कुचल दो, मगर उस का जो भी जरनैल मुसलामनों के मुक़ाबले को गया वो कुचला गया। मसुलमान उन के इलाक़ों पे इलाके फतह करते आए, हत्ता के उन के तीर मदाइन में गिरने लगे....

"और शहंशाह हरकुल! मुझे मालूम हुआ है के मसुलमान मज़हबी जुनून से लड़ते है, माले ग़नीमत के लिए नही। हम ज़मीन के लिए लड़ते हैं। मुसलमान जंग को एक अक़ीदा समझते हैं। हम इन के अक़ीदे को सच्चा समझें या न समझें, इस से क्या फर्क पड़ता है?......शहंशाह को इस पर भी ग़ौर करना पड़ेगा के मुसलमान हर मैदान में थोड़ी तादाद में होते हैं। वो जज़्बे और जंगी चालों के ज़ोर पर लड़ते हैं। फराज़ मे हम ने अपनी, फारसियों की और इसाईयों की नफरी को इतना ज़्यादा फैला दिया था के मुसलमानों की थाड़ी सी नफरी हमारे फैलाव में आ कर गुम हो जाती लेकिन मुसलामनों ने ऐसी चाल चली के हमारा फैलाओ सुकड़ गया और हम पिट कर रह गए।"

दूसरे जरनैलों ने भी इसी तरह के मशवरे दिए और हरकुल क़ायल हो गया के मुसलमानों को ताक़तवर और खतरनाक दुश्मन समझ कर जंग की तैयारी की जाए।

"लेकिन मैं इसे अपनी तौहीन समझता हूं के मुसलमान जो कुछ ही साल पहले वजूद में आए हैं। अज़ीम सल्तनते रोम को लल्कारें"-हरकुल ने कहा-"हमारे पास हमारी सदियों पुरानी तारीख़ है। रोमियों ने सारी दुनिया पर दहशत तारी क्रिए रखी है। हमारा मज़हब देवताओ का मज़हब है। आसमानों पर और ज़मीन पर हमारे देवताओ

की हुकमुरानी है। इस्लाम एक इन्सान का बनाया हुआ मज़हब है जिस के फैल जाने की कोई वजह समझ में नही आती। मै सिर्फ ये हुक्म दूंगा के इस मज़हब के पैरूकारों को इस तरह ख़त्म करो के इस्लाम का नाम लेने वाला कोई ज़िन्दा न रहे। "

❁

अगले ही रोज़ हरकुल को इत्तेला मिली के मुसलमानों के साथ रोमी फौज की टक्कर हुई है और रोमी फौज बड़ी बुरी तरह पस्पा हुई है।

ये उमरो बिन आस के दस्ते थे जो तबूक से आगे बढ़े तो रोमी फौज के कुछ दस्ते इन की राह में हायल हो गए। ये शाम के इसाई अरबों के दस्ते थे जिन के ज़िम्मे सरहदों की देखभाल का काम था। उमरो बिन आस बड़े होशियार सालार थे। उन्होंने ऐसी चाल चली के अपने हराविल दस्ते को दुश्मन से टक्कर लेने के लिए आगे भेजा और दुश्मन को घेरे में लेने की कोशिश की लेकिन शाम के इसाई अरबों के दस्ते थोड़ा सा नुक़सान उठा कर पस्पा हो गए।

उमरो बिन आस ऐला के मुक़ाम पर पहुंच गए। यज़ीद बिन अबी सफयान भी अपने दस्तों के साथ उन से आ मिले। जूं ही मदीने के लश्कर के ये दोनों हिस्से इक्ळे हुए रोम की फौज़ इन का रास्ता रोकने के लिए सामने आ गई मोअररिख़ों के मुताबिक़ रोम की इस फौज की नफरी तक़रीबन इतनी ही थी जितनी मुसलामनों की थी। अब दो मुसलमान सालार इक्ळे हो गए थे। उन्होंने रोमियों के साथ आमने सामने की टक्कर ली...रोममियों ने जम कर मुक़ाबला करने की कोशिश की लेकिन क़दम जमा न सके और पस्पा हो गए।

यज़ीद बिन अबी सफयान ने एक सवार दस्ते को इन के तआक्कुब में भेज दिया। रोमियों पर कुछ ऐसी दहशत तारी हो गई थी के वो सिवाए कट कट कर मरने के और कुछ भी न कर सके।

शहंशाह हरकुल को जब अपने दस्तों की इस पस्पाई की इत्तेला मिली तो वो आग बगूला हो गया। उस ने अपने जरनैलों को एक बार फिर बुलाया और हुक्म दिया के ज़्यादा फौज इक्ळी कर के शाम की सरहद के बाहर किसी जगह मुसलमानों के साथ जंग लड़ी जाए और इन्हें वहीं ख़त्म किया जाए।

मुसलमान सालारों ने इन जगहों से जहां वो पड़ाव डाले हुए थे चन्द आदमियों को अपने ज़ेरे असर ले लिया और इन्हें बे अंदाज़ ईनाम व इकराम का लालच दिया जिस के इवज़ वो मुसलामनों के लिए जासूसी करने पर आमादा हो गए। चन्द दिनों में ही वो मतलूबा ख़बरें ले आए। उन की रिर्पोटों के मुताबिक़ रोमी जो फौज इक्ळी कर रहे थे इस की तादाद एक लाख से कुछ ज़्यादा थी। इस फौज का एक हिस्सा अजना

दीन की तरफ कूच कर रहा था। जासूसों ने ये इत्तेला भी दी के रोमी फैसला कुन जंग के लिए तैयार हो कर आ रहे है जासूसों ने तैयारियों की पूरी तफसील बयान की।

अबु उबैदा बिन जर्राह को अमीरूलमोमेनीन ने ये हुक्म दिया था के लश्कर के चारों हिस्सों को इक्ळे लड़ना पड़ा तो वो यानी अबु उबैदा पूरे लश्कर के सालार होंगे। सूरत ऐसी पैदा हो गई थी के लश्कर के चारों हिस्सों को इक्ळा होना पड़ा। अबु उबैदा ने पूरे लश्कर की कमान ले ली लेकिन लश्कर को मुकम्मल तौर पर एक जगह इक्ळा न होने दिया। इस के साथ ही उन्होंने अमीरूलमोमेनीन को तेज़ रफ्तार क़ासिद के हाथ पैग़ाम भजो जिस में मुकम्मल सूरते हाल लिखी और ये भी के रोमियों की तादाद एक लाश से ज़्यादा होगी।

ये थे वो हालात जिन के पैशे नज़र अमीरूलमोमेनीन ने ख़ालिद(र०) को हुक्म भेजा था के वो शाम की सरहद पर उस जगह पहुंचे जहां मदीने का लश्कर खेमा ज़न है। इस हुक्म में ये भी लिखा था के अपना लश्कर कुछ मुश्किलात में उलझ गया है।

❁

इस पैग़ाम ने ख़ालिद(र०) को परेशान कर दिया था। ये सुनाया जा चुका है के उन्होंने अमीरूलमोमेनीन के हुक्म के मुताबिक़ अपने लश्कर को दो हिस्सों में तक़सीम किया। एक हिस्सा मिस्ना बिन हारिसा के हवाले कर दिया। ख़ालिद(र०) ने फौरी कूच का हुक्म दे दिया। उन्होंने जब फासले का अंदाज़ा किया तो वो इतना ज़्यादा था के ख़ालिद(र०) को वहां पहुंचते बहुत दिन लग जाते। इन्हें डर था के इतने दिन ज़ाए हो गए तो मालूम नहीं क्या हो जाएगा। इन्हें ये भी मालूम था के रोमियों की फौज फारसियों की निस्बत ज़्यादा ताक़तवर और बरतर है। ख़ालिद(र०) इन रास्तों से वाकिफ़ थे। सीधा और आसान रास्ता बहुत तवील था। ख़ालिद(र०) ने अपने सालारों को बुलाया और इन्हें बताया के बहुत जल्द पहुंचने के लिए इन्हें कोई रास्ता मालूम नहीं। सालारों में से किसी को छोटा रास्ता मालूम नहीं था।

"अगर कोई रास्ता छोटा हुआ भी तो वो सफर के क़ाबिल नही होगा"-एक सालार ने कहा-"अगर किसी ऐसे रास्ते से एक दो मुसाफिर गुज़रते भी हों तो ज़रूरी नहीं के वो रास्ता एक लश्कर के गुज़रने के क़ाबिल हो।"

"मै एक आदमी को जानता हूं"-एक और सालार बोला-राफे बिन उमेरा.... वो हमारे क़बीले का ज़बर्दस्त जंगजू है और मैं ने देखा है के खुदा ने उसे कोई ऐसी ताक़त दी है के वो ज़मीन के नीचे के भेद भी बता देता है। वो इस सहरा का भेदी है।"

ख़ालिद(र०) के हुक्म से राफे बिन उमेरा को बुलाया गया और उस से मंज़िल बता कर पूछा गया के छोटे से छोटा रास्ता कोई है?

"ज़मीन है तो रास्ते भी है"-राफे ने कहा-"ये मुसाफिर की हिम्मत पर मुनहसिर है के वो हर रास्ते पर चल सकता है या नही। तुम मंज़िल तक किसी भी रास्ते से पहुंच सकते हो लेकिन बाज़ रास्ते ऐसे होते हैं जिन पर सांप भी नही रेंग सकता। मैं एक रास्ता बता सकता हूं लेकिन ये नही बता सकता के इस से लश्कर के कितने आदमी मंज़िल तक ज़िन्दा पहुंचेंगे, और मैं ये भी बता सकता हूं के घोड़ा इस सहराई रास्ते से नही गुज़र सकता। घोड़ा इतनी प्यास बर्दाशत नहीं कर सकता और घोड़ों के लिए पानी साथ ले जाया नहीं जा सकता।"

ख़ालिद(र०) ने अपना बनाया हुआ नक़्शा उस के आगे रखा और पूछा के वो कौन सा रास्ता बता रहा है।

"ये क़राक़र है"-राफे बिन उमेरा ने नक़्शे पर उंगली रखते हुए कहा-"यहां एक नख़्लिस्तान है जो इतना सरसब्ज़ और शादाब है के मुसाफिरों पर अपना जादू तारी कर देता है। यहां से एक रास्ता निकलता है जो सोया को जाता है। सोया में पानी इतना ज़्यादा है के सारा लश्कर और लश्कर के तमाम जानवर पानी पी सकते हैं लकिन ये पानी उसे मिलेगा जो सोया तक ज़िन्दा पहुंच जाएगा। ऊपर सूरज की तपिश देखो। दिन को कितना चल सकोगे? कितनी दूर तक चल सकोगे? ये मैं नहीं जानता। इतने ऊंट लाओ के लश्कर का हर फर्द ऊंट पर सवार हो.....इब्ने वलीद! तुम सहरा के बेटे हो मगर इस सहरा से नहीं गुज़र सकोगे।"

राफे बिन उमेरा ने जो रास्ता बताया ये मोअररिख़ों की तहरीरों के मुताबिक़ एक सौ बीस मील था। ये एक सौ बीस मील फासला तय करने से मंज़िल तक कई दिन जल्दी पहुंचा जा सकता था। ख़ालिद(र०) वो सालार थे जो मुश्किलात की तफसीलात सुन कर नहीं बल्कि मुश्किलात में पड़ कर अंदाज़ा किया करते थे के इन की शिद्दत कितनी कुछ है। उन के दिमाग़ मैं सिर्फ ये समाई हुई थी के मदीने का लश्कर मुश्किल में है और इस की मदद को पहुंचना है। सीधे रास्ते से फासला छः से सात सौ मील तक बनता था। राफे के बताए हुए रास्ते से जाने से फासला आधा रह जाता था मगर राफे बताता था के इस ख़तरनाक़ रास्ते से जाओ तो पांच छः दिन ऐसी दुश्वारियों से गुज़रना पड़ता है जो इन्सान क्या बर्दाशत करेगा, घोड़ा भी बर्दाशत नही कर सकता। पानी तो मिल ही नही सकता और सब से बड़ी मुश्किल ये के महीना मई का था जब रेगिस्तान जल रहे होते हैं।

"खुदा की क़सम इब्ने वलीद!"-एक सालार ने कहा-"तू इतने बड़े लश्कर को इस रास्ते पर नही ले जाएगा जो तबाही का और बहुत बुरी मौत का रास्ता होगा।"

"और जिस का दिमाग़ सही होगा वो इस रास्ते पर नहीं जाएगा"-एक और

सालार ने कहा।

"हम इसी रास्ते से जाऐंगे"-ख़ालिद(र०) ने ऐसी मुस्कुराहट से कहा जिस में अजीब सी संजीदगी थी।

"हम पर फर्ज़ है तेरी इताअत करें"-राफे बिन उमेरा ने कहा-"लेकिन एक बार फिर सोच ले।"

"मै वो हुक्म देता हूं जो हुक्म अल्लाह मुझे देता है"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"हारते वो है जिन के इरादे कमज़ोर होते हैं अल्लाह की खुशनूदी हमें हासिल है, और फिर अल्लाह की राह में जो मुसीबतें आऐंगी हम क्यों न इन्हें भी बर्दाश्त करें।"

ये वाक़ेया और ये गुफ्तगु तिबरी ने ज़रा तफसील से बयान की है। ख़ालिद(र०) के सालारों ने उन के अज़्म की ये पुख़्तगी देखी तो सब ने पुरजोश लहजे में लब्बेक कही। उन में से किसी ने कहा-"इब्ने वलीद! तुझ पर अल्लाह का करम। वो कर जो तू बेहतर समझता है। हम तेरे साथ हैं।"

❁

ख़ालिद(र०) ने इस सफर पर रवांगी से पहले एक हुक्म ये दिया के लश्कर का हर फर्द ऊंट पर सवार होगा। घोड़ सवारों के बग़ैर पीछे पीछे चलेंगे। दूसरा हुक्म ये के औरतों और बच्चों को मदीने भेज दिया जाए। सालारों को ख़ालिद(र०) ने कहा था के तमाम लश्कर को अच्छी तरह बता दें के वो ऐसे रास्ते पर जा रहे हैं। जिस रास्ते से पहले कभी कोई लश्कर नहीं गुज़रा। हर किसी को ज़हनी तौर पर तैयार किया जाए।

मई का महीना ऊंटों की फराहमी में गुज़र गया। जून 634ई० (रबीउल आख़िर 13 हिज्री) का महीना शुरू हो गया। अब तो सहरा जल रहा था। ख़ालिद(र०) ने कूच का हुक्म दे दिया। इन के साथ नौ हज़ार मुजाहेदीन थे जो इस खुदकुश सफर पर जा रहे थे।

क़राक़र तक सफर वैसा ही था जैसा इस लश्कर का हर सफर हुआ करता था। वो सफर क़राक़र से शुरू होना था जिसे मुसलमान मोअरिख़ों ने और यूरपी मोअरिख़ों ने भी तारीख़ का सब से ख़तरनाक और भयानक सफर कहा है। मिस्ना बिन हारिसा क़राक़र तक ख़ालिद(र०) के साथ गए। मिस्ना को हीरा वापस आना था।

क़राक़र से जिस क़दर पानी साथ ले जाया जा सकता था। मुशकीज़ों में भर लिया गया। मटके भी इक्ळे कर लिए गए थे इन में भी पानी भर लिया गया। अगली सुबह जब लश्कर रवाना होने लगा तो मिस्ना बिन हारिसा ख़ालिद(र०) से और उस

के सालारों से गले लग के मिले। योकूबी और इब्ने यूसुफ ने लिखा है के मिस्ना बिन हारिसा पर रिक्क़त तारी हो गई थी। उन के मुंह से कोई दुआ न निकली, आंखो से आंसू निकल आए। दुआऐं उन के दिल में थी। इन्हें यक़ीन नही था के वो ख़ालिद(र०) को और इन नौ हज़ार मुजाहेदीन को फिर कभी देख सकेंगे।

ख़ालिद(र०) ऊंट पर सवार होने लगे तो राफे बिन उमेरा दौड़ता आया।

"इब्ने वलीद!"-राफे ने ख़ालिद(र०) के दोनों कंधों पर हाथ रख कर कहा-"अब भी सोच ले। रस्ता बदल ले। इतनी जानों के साथ मत खेल!"

"इब्ने उमेरा!"-ख़ालिद(र०) ने गुस्से से कहा-"अल्लाह तुझे ग़ारत करे। मुझे अल्लाह की राह से मत रोक या मुझे वो रस्ता बता जो मुझे मदीने के लश्कर तक जल्दी पहुंचा दे। तू नहीं जानता तू हट मेरे सामने से और हुक्म मान जो मैं ने दिया है।"

राफे ख़ालिद(र०) के आगे से हट गया। ख़ालिद(र०) ऊंट पर सवार हुए और लश्कर चल पड़ा। सब से आगे राफे का ऊंट था। उसे रहबरी करनी थी।

मिस्ना खड़े देखते रहे। उन्होंने अपने साथियों से कहा-"अमीरूलमोमेनीन ने ठीक कहा था के अब कोई मां ख़ालिद(र०) जैसा बेटा पैदा नहीं करेगी।"

❁

वही सहरा जो रात को खुनक था, सूरज निकलते ही तपने लगा और जब सूरज और सर पर आया तो ज़मीन से पानी के रंग के शौले उठने लगे। पानी के रंग का झिलमिल करता एक पर्दा था जो आगे आगे चल रहा था। इस के आगे कुछ पता नहीं चलता था क्या है। जून का सूरज जब सर पर आया तो लश्कर के अफराद एक दूसरे को पहचान नही सकते थे। हर कोई ज़मीन से उठती हुई तपिश के लरज़ते पर्दे में लरज़ता कांपता या लटके हुए बारीक़ कपड़े की तरह लहरों की तरह हिल्ला नज़र आता था।

मुजाहेदीन ने एक जंगली तराना मिल कर गाना शुरू कर दिया। ख़ालिद(र०) ने इन्हें रोक दिया क्यों के बोलने से प्यास बढ़ जाने का इम्कान था। ऊंट कई दिनों तक प्यासा सफर कर सकता है लेकिन इन्सान पैदल जा रहा हो या ऊंट या घोड़े पर सवार हो, वो चन्द घंटों से ज़्यादा प्यास बर्दाशत नही कर सकता। पहली शाम जब पड़ाव हुआ तो तमाम लोग पानी पर टूट पड़े। उन के जिस्म जल रहे थे। खाने की जगह भी उन्होंने पानी पी लिया।

दूसरे दिन लश्कर का हर आदमी महसूस करने लगा था के ये वो सहरा नहीं जिस में उन्होंने बेशुमार बार सफर किया है ये तो जहन्नुम है जिस में वो चले जा रहे हैं। एक तो तपिश थी जो जला रही थी, दूसरे रेत की चमक थी जो आंखें नहीं खोलने देती

थी। रेत का समुंद्र था और लश्कर शोलों में तैरता जा रहा था।

तीसरे रोज़ का सफर इस तरह होलनाक और अज़ीयत नाक हो गया के टीलों और नशेब व फराज़ का इलाक़ा शुरू हो गया था। ये रेत और मिट्टी के टीले थे जो आग की दीवारों की मानिंद थे। पहले तो लश्कर सीधा जा रहा था, अब थोड़े थोड़े फासले पर मुड़ना पड़ता था। दीवारों जैसे टीले मुजाहेदीन को जला रहे थे। यहां सब से ज़्यादा ख़तरा भटक जाने का था। बाज़ दीवारों जैसे टीलों के दरमियान जगह इतनी तंग थी के ऊंट दोनों तरफ रगड़ खा कर गुज़रते थे। ऊंट बिदक जाते थे के इन के जिस्मों के साथ गरम लोहा लगाया गया है।

तीसरी शाम पड़ाव हुआ तो सब के मुंह खुले हुए थे और वो आपस में बात भी नही कर सकते थे। उस शाम लश्कर ने पानी पिया तो ये होलनाक इन्कशाफ हुआ के बाक़ी सफर के लिए पानी नही रहा। पानी का ज़ख़ीरा पांच दिनों के लिए काफी था मगर ये तीसरे रोज़ ख़त्म हो गया। रास्ते में भी मुजाहेदीन पानी पीते थे।

चौथा दिन क़यामत से कम न था। पानी की एक बूंद नहीं थी। प्यास का असर जिस्मानी होता है और एक असर सहरा का अपना होता है जो ज़हन को बिगाड़ देता है। ये होती है वो कैफियत जब सराब नज़र आते हैं। पानी और नख़्लिस्तान दिखाई देते हैं। शहर और समुंद्री जहाज़ नज़र आते हैं और मुसाफिर इन्हें हक़ीक़त समझते हैं रेत की चमक का असर भी बड़ा ही ख़ौफनाक था।

लश्कर में किसी ने चिल्ला कर कहा-"वो पानी आ गया.....पहले मैं पिऊंगा"-और वो आदमी चलते ऊंट से कूद कर एक तरफ दौड़ पड़ा। तीन चार मुजाहेदीन उस के पीछे गए।

"उसे अल्लाह के सुपुर्द करो"-राफे बिन उमेरा ने ज़ोर से कहा-"सहरा ने क़ुर्बानियां वुसूल करनी शुरू कर दी हैं....उस के पीछे मत दौड़ो। सब मरोगे।"

थोड़ी देर बाद एक मुजदिह बे होश हो कर ऊंट से गिरा। वो उठा और ऊंट की तरफ आने की बजाए दूसरी तरफ चल पड़ा। कोई भी उस के पीछे न गया। पीछे न जाने क़ी एक वजह ये भी थी के सब की आंखें बन्द थीं रेत की चमक और तपिश आंखें खोलने ही नहीं देती थी।

❁

चौथे दिन जो पानी के बग़ैर गुज़र रहा था सही मानों में जहन्नुम के दिनों में से एक था। ऐसे लगता था जैसे सूरज और नीचे आ गया हो। पहले तो सब खुद आंखें बन्द रखते थे क्यों चमक और तपिश आंखें को जलाती थीं, अब आंखें खुलती ही नही थी। ऊंट तक हारने लगे थे। कोई ऊंट बड़ी ख़ौफनाक आवाज़ निकालता, बैठने के

लिए अगली टांगें दूहरी करता और एक पहलू पर लुढ़क जाता था। सवार भी गिरता मगर उस में उठने की हिम्मत नही होती थी। लश्कर में हर किसी की आंखें बन्द थी और दिमाग़ बेकार हो गए थे। इन्हें महसूस ही नही होता था के उन का कोई साथी ऊंट से गिर पड़ा है या ये के उस का ऊंट भी गिर पड़ा है और उसे उठा कर अपने साथ ऊंट पर बिठा लें।

सराब का शिकार होने वालों की तादाद बढ़ती जा रही थी। खुद ख़ालिद(र०) की हालत ऐसी हो गई थी के इन्हें कुछ पता नही चल रहा था के लश्कर में क्या हो रहा है। वो तो अज़्म और ईमान की कुव्वत थी जो इन्हें ज़िन्दा रखे हुए थी, और ये ऊंट थे जो चले जा रहे थे। अगर ऊंट रूक जाते तो लश्कर का कोई एक भी फर्द एक क़दम न चल सकता।

घोड़ों के मुंह खुल गए थे और ज़बानें लटक आई थीं। मुजाहेदीन की ज़बानें सूज गई थीं। हलक़ में कांटे पड़ रहे थे। इस वजह से उन के मुंह भी खुल गए थे। वो तो अब लाशों की मानिंद हो गए थे। ऊंटों की पीठों पर अपने आप को संभाल नहीं सकते थे, इसी लिए इन में से कोई न कोई गिर पड़ता था। अब वो आलमे नज़ा के क़रीब पहुंच रहे थे। जिस्मों की नमी खुश्क हो चुकी थी।

रात को लश्कर रूका। तमाम रात मुजाहेदीन ने जागते गुज़ारी। जिस्मों के अन्दर सुईयां चुभती थीं। ज़बानों की हालत ऐसी थी जैसे मुंह में किसी ने लकड़ी का टुकड़ा रख दिया हो।

सफर के आख़री दिन का सूरज तुलू हो कर मुजाहेदीन को मौत का पैग़ाम देने लगा। कई मुजाहेदीन ऊंटों पर बेहोश हो गए। वो खुश क़िस्मत थे जो लुढ़क कर गिरे नहीं। ये लश्कर अब एक लश्कर की तरह नहीं जा रहा था। ऊंट बिखर गए थे। बाज़ बहुत पीछे रह गए थे। कई दायें और बायें फैल गए थे। रफ्तार ख़तरनाक हद तक सुस्त हो गई।

ये पानी के बग़ैर दूसरा दिन था और ये एक मोअजज़ा था के वो अभी ज़िन्दा थे। कौन सी ताक़त थी जो इन्हें ज़िन्दा रखे हुए थी? वो अल्लाह का वो पैग़ाम था जो रसूले करीम(स०) लाए थे और ये मुजाहेदीन इन्सानियात की निजात के लिए अल्लाह का ये पैग़ाम ज़मीन के गोशे गोशे तक पहुंचाने के लिए सहरा की आग में से गुज़र रहे थे। अल्लाह ने इन्हें बड़ी ही अज़ीयत नाक आज़माईश में डाल दिया था और उसी की ज़ात इन्हें ज़िन्दा रखे हुए थी।

❋

गुरूबे आफताब से बहुत पहले ख़ालिद(र०) अपने ऊंट को राफे बिन उमेरा के

ऊंट के क़रीब ले गए।

"इब्ने उमेरा!"-ख़ालिद(र०) ने बड़ी मुश्किल से ये अल्फाज़ ज़ुबान से निकाले-"क्या अब हमें उस चश्मे पर नही होना चाहिए था जिस का तूने ज़िक्र किया था?-सोया एक ही मंज़िल दूर रह गया होगा।"

"अल्लाह तुझे सलामत रखे वलीद के बेटे!"-राफे बिन उमेरा ने कहा-"मैं आशूबे चश्म का मरीज़ था। इस सहरा ने मेरी आंखें का नूर ख़त्म कर दिया है। मैं अब कैसे देखूं?"

"क्या तू अन्धा हो गया है?"-ख़ालिद ने घबराई हुई आवाज़ में पूछा-"जो तू देख सकता था वो हम मैं से कोई भी नही देख सकता। क्या हम भटक गए हैं?"

मोअररिख़ वाक़दी और तिबरी ने लिखा है के राफे बिन उमेरा की बीनाई ख़त्म हो गई थी। उस ने ज़हन में कुछ हिसाब रखा हुआ था। इन दोनों मोअररिख़ों ने उस के सही अल्फाज़ अपनी तहरीरों में नक़्ल किए हैं।

"इब्ने वलीद!"-राफे ने कहा-"लश्कर यहीं रोक ले। अपने कुछ आदमियों को आगे भेज। इन्हें कह के वो औरत के पिस्तानों की शक्ल के दो टीलों को तलाश करें।"

ख़ालिद(र०) ने कुछ आदमियों को आगे भेज दिया। आदमी जल्दी ही वापस आ गए और उन्होंने बताया के वो दो टीले देख आए हैं। राफे ने ख़ालिद(र०) से कहा के अल्लाह के करम से वो सही रास्ते पर जा रहे हैं। लश्कर को आगे ले चलो।

"इब्ने वलीद!"-राफे बिन उमेरा ने कहा-"अब अपने आदमियों से कह के एक दरख़्त को ढूंडें जिस पर कांटे ही कांटे होगें और वो कोई ऊंचा दरख़्त नही होगा, वो दूर से इस तरह नज़र आएगा जैसे कोई आदमी बैठा हुआ हो। ये दरख़्त इन दो टीलों के दरमियान होगा।"

आदमी घूम फिर कर वापस आ गए और उन्होंने ये जांकाह ख़बर सुनाई के उन्हें टीलों के दरमियान और इर्द गिर्द बल्कि दूर दूर तक कोई ऐसा दरख़्त नज़र नही आया।

"इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलेहे राज़ेऊन"-राफे बन उमेरा ने कहा-"समझ लो के हम सब मर गए"-उस ने कुछ सोच कर और क़दरे झुंझला कर कहा-"एक बार फिर जाओ। दरख़्त मिल जाएगा। रेत के अन्दर ढूंडो।"

आदमी फिर गए, बरछियां और तलवारें रेत में मार मार कर मतलूबा दरख़्त को खोजने लगे। एक जगह इन्हें रेत की ढेरी नज़र आई। रेत हटाई तो वहां एक दरख़्त का टुन्ड मुन्ड सा तना ज़ाहिर हुआ। ये ख़ारदार था।

"उखाड़ दो इस दरख़्त को" -राफे ने कहा- "और इस जगह से ज़मीन खोदो।"

ज़मीन इतनी ज़्यादा नही खेदी गई थी लेकिन पानी उमड़ पड़ा और नदी की तरह बहने लगा। इस गढ़े को खोद खोद कर खुला करते चले गए हत्ता के ये एक वसी तालाब बन गया। लश्कर के मुजाहेदीन इस पानी पर टूट पड़े। वाक़दी लिखाता है के ये पानी इतना ज़्यादा था के इतने बड़े लश्कर ने पिया फिर ऊंटों और घोड़े ने पिया तब भी ये उमड़ता रहा। मुजाहेदीन ने मुशकीज़े भर लिए तब उन्हें ख्याल आया के मालूम नहीं उन के कितने साथी पीछे रह गए हैं। और वापस चले गए। वो मंज़र बड़ा होलनाक था। जगह जगह कोई न कोई मुजाहेदीन और कोई ऊंट या घोड़ा रेत पर बेहोश पड़ा जल रहा था। मुजाहेदीन ने उन के मुह में पानी डाला और उन्हें अपने साथ ले आए। बाज़ मुजाहेदीन शहीद हो चुके थे उन्हें उन के साथियों ने वहीं दफ्न कर दिया।

"इब्ने उमेरा!" -ख़ालिद ने राफे बिन उमेरा को गले लगा कर कहा- "तू ने लश्कर को बचा लिया है।"

"अल्लाह ने बचाया है इब्ने वलीद!" -राफे ने कहा- "मै इस चशमे पर सिर्फ एक बार आया था और ये तीस साल पहले का वाकेया है। मै उस वक्त लड़का था और मेरा बाप मुझे अपने साथ लाया था। इस चशमे को अब रेत ने छुपा लिया था लेकिन मुझे यक़ीन था के यहां चशमा मौजूद है। ये अल्लाह का ख़ास करम है के चशमा मौजूद था।"

इन मुजाहेदीन की मुहिम इस सफर पर ख़त्म नहीं हो गई थी। ये तो आज़माईश की एक कड़ी थी जिस में से वो गुज़र आए थे। उन का असल इम्तेहान अभी बाक़ी था। शाम की सरहद तक पहुंचने के लिए अभी दो मंज़िलें बाक़ी थीं लेकिन वो कठिन नहीं थीं। असल मुश्किाल ये थी के रोमी इन के मुक़ाबले के लिए और इन्हें शाम की सरहदों से दूर ही ख़त्म करने के लिए इतनी ज़्यादा फौज इक्ळी कर रहे थे जिस के मुक़ाबले में मुसलमानों की ये नफरी कोई हैसियत ही नहीं रखती थी।

इस्लामी फौज की नफरी तो पहले ही कम थी और ख़ालिद(र०) नौ हज़ार नफरी की जो कुमक ले कर गए थे इस के हर फर्द को बिल्कुल खुश्क और नाक़ाबिले बर्दाश्त हद से भी ज़्यादा गर्म सहरा ने पांच दिनों में चूस लिया था। इन के जिस्मों में दम ख़म ख़त्म हो चुका था। इन में कुछ तो शहीद हो गए थे और कुछ ऐसे थे जिन पर सहरा ने बहुत बुरा असर किया था। वो आठ दस दिनों के लिए बेकार हो गए थे। बाक़ी नफरी को भी दो तीन दिन आराम की ज़रूरत थी लेकिन अहवाल व क़वाइफ ऐसे थे के आराम के लिए मोहलत नहीं मिल सकती थी। दुश्मन बेदार और तैयार था और ये बड़ा ही ताक़त वर दुश्मन था।

उस वक़्त के मुल्क शाम पर रोमी हुकमरान थे और उन की फौज उस दौर की मशहूर ताक़तवर और मज़बूत फौज थी। उस दौर में दो ही शहंशाही फौजें मशहूर थीं। एक फारस की फौज दूसरी रोमियों की। दूर दूर तक इन दानों फौजों की धाक बैठी हुई थी। नफरी ज़्यादा होने के अलावा इन के हथियार बरतर थे। रोम की फौज के मुताल्लिक़ तारीख़ नवीसियों ने लिखा है के जिस रास्ते से गुज़रती थी उस रास्ते की बस्तियां खाली हो जाती थीं।

फारस की जंगी ताक़त को तो मुसलमानों ने बड़ी थोड़ी नफरी से ख़त्म कर दिया था और ईराक़ के बे शुमार इलाक़े पर कब्ज़ा कर लिया था। अब मुसलमान दूसरी बड़ी जंगी ताक़त को लल्कार रहे थे। रोमी अकेले नहीं थे। इन का इत्तेहादी गुस्सान का बड़ा ही ताक़तवर क़बीला था। रोमी जब इन इलाक़ों में आए थे तो गुस्सान बड़ी लम्बी मुद्दत तक लड़ते रहे थे। रोमियों ने शाम के वसी इलाक़े पर क़ब्ज़ा कर लिया तो भी गुस्सानी लड़ते रहे। वो रोमी फौज की सरहदी चौकियों पर शब खून मारते रहते और कभी रोमियों के मक़बूज़ा इलाक़े में दूर अन्दर जा कर भी हमले करते थे।

गुस्सानियों और रोमियों की ये जंग नस्ल बाद नस्ल चलती रही। आख़िर रोमियों को तस्लीम करना पड़ा के गुस्सानी एक क़बीला नही एक क़ौम है और इन्हें तह तेग़ नही किया जा सकता। चुनांचे रोमियों ने गुस्सानियों की अलग क़ौमी हैसियत तस्लीम कर ली और इन्हें शाम का कुछ इलाक़ा दे कर इन्हें इस तरह की खुद मुख़्तारी दे दी के इन का अपना बादशाह होगा और वो किसी हद तक रोम के बादशाह के तहत होगा। ये बड़ा पुराना वाक़ेया है। वक़्त गुज़रने के साथ गुस्सानी क़बीला ऐसी सूरते इख़्तियार कर गया के इस के शाही ख़ानदान को रोम का शाही ख़ानदान समझा जाने लगा।

आज के उरदन और जुनूबी शाम पर गुस्सानियों की हुकमुरानी थी। ये भी रोमियों की तरह एक बादशाही थी जिस की फौज मुनज़्ज़म और ताक़त वर थी और इसे हथियारों के मामले में भी बरतरी हासिल थी। इस बादशाही का पाया-ए-तख़्त बसरा था।

मुसलमान रोमियों और गुस्सानियों को लल्कार कर बहुत बड़ा ख़तरा मोल ले रहे थे। जंग का ये दस्तूर है के हमलाआवर फौज की नफरी उस मुल्क की फौज से तीन गुना न हो तो दुगनी ज़रूर होनी चाहिए क्योंके जिस फौज पर हमला किया जाता है वो क़िलाबन्द होती है और वो ताज़ा दम भी होती है। हमला आवर फौज बड़ा लम्बा सफर कर के आती है इस लिए वो ताज़ा दम नहीं होती। जिस फौज पर हमला किया जाता है, वो अपने मुल्क़ में होती है जहां उसे रसद और कुमक की सहूलत होती है। इस के मुक़ाबले में हमला आवर फौज इस सहूलत से महरूम होती है। वहां का बच्चा बच्चा हमला आवर फौज का दुश्मन होता है।

मुसलमान जब शाम पर हमला करने गए तो उन की नफरी 37 हज़ार थी। इळाईस हज़ार पहले वहां मौजूद थी और नौ हज़ार ख़ालिद(र०) ले कर गए थे। ये नौ हज़ार मुजाहेदीन फौरी तौर पर लड़ने के क़ाबिल नहीं थे। जिस मुल्क पर वो हमला करने गए थे वहां कम व बैश डेढ़ लाख नफरी की ताज़ा दम फौज मौजूद थी और मुक़ाबले के लिए बिल्कुल तैयार।

❁

पांच दिनों के भयानक सफर के बाद जब मुजाहेदीन ने चशमे से पानी पी लिया, खाना भी खा लिया तो उन पर ग़नूदगी का तारी होना क़ुदरती था। उन्हें तवक़्क़ो थी के इन्हें कुछ देर आरम की मोहलत मिलेगी। आराम उन का हक़ भी था लेकिन अपने सालारे आला ख़ालिद(र०) को देखा। ख़ालिद(र०) अब ऊंट की बजाए अपने घोड़े पर सवार थे। इस का मतलब ये था के एक लम्हे का भी आराम नहीं मिलेगा।

मोअररिख़ वाक़दी ने लिखा है के ख़ालिद(र०) ने हल्की सी ज़िरा पहन रखी थी। उन्होंने ये ज़िरा इस चश्मे पर आ कर पहनी थी। ये ज़िरा मुसलीमा कज़्ज़ाब की थी। ख़ालिद(र०) ने जब उसे शिकस्त दी थी तो उस की ज़िरा उतरवा कर अपने पास रख ली थी। ये अरतदाद पर फतह हासिल करते की यादगार थी। इस फतह की एक निशानी और भी ख़ालिद(र०) के पास थी। ये तलवार थी। ये भी मुसलीमा कज़्ज़ाब की ही थी। ख़ालिद(र०) ने वही तलवार कमर से बांध रखी थी।

वाक़दी के मुताबिक़, ख़ालिद(र०) के सर पर ज़ंजीरों वाली खुद थी और खुद पर उन्होंने अमामा बांधा हुआ था। अमामा का रंग सुर्ख था। खुद के नीचे उन्होंने जो टोपी पहन रखी थी वो भी सुर्ख रंग की थी। ख़ालिद(र०) के हाथ में सियाह और सफेद रंग का परचम था जो सिर्फ इस लिए मुक़द्दस नही था के ये कौमी परचम था बल्कि इस लिए के ये परचम हर लड़ाई में रसूले करीम(स०) अपने साथ रखते थे और जब आप(स०) ने ख़ालिद(र०) को सेफ उल्लाह(अल्लाह की तलवार) का लक़ब फरमाया तो इस के साथ इन्हें ये परचम भी दिया था। परचम का नाम अक़ाब था।

इन नौ हज़ार मुजाहेदीन में जहां सहाबा कराम भी थे वहां ख़ालिद(र०) के अपने फरज़न्द अब्दुर्रहमान भी थे जिन की उम्र अठारह साल थी और इन में अमीरूलमोमेनीन अबुबकर(र०) के नौजवान फरज़न्द भी थे। इन का नाम भी अब्दुर्रहमान ही था।

मुजाहेदीन खा पी कर इधर उधर बैठ गए थे। उन्होंने अपने सालारे आला को घोड़े पर सवार अपने दरमियान घूमते फिरते देखा तो सब उठ खड़े हुए। ख़ालिद(र०) ने ज़बान से कुछ भी न कहा। वो हर एक की तरफ देखते और मुस्कुराते थे। उन की खुद और ज़िरा देख कर और उन के हाथ में रसूल अल्लाह(स०) का परचम देख कर मुजाहेदीन समझ गए के उन के सालारे आला चलने को तैयार हैं। तमाम मुजाहेदीन किसी हुक्म के बग़ैर उठ खड़े हुए और अब ऊंटों की बजाए घोड़ों पर सवार हो गए। वो जान गए के अल्लाह की शमशीर थोड़ी सी देर के लिए भी नियाम में नहीं जाएगी।

ख़ालिद(र०) की जांफिज़ा मुस्कुराहट ने पूरे लश्कर की थकन दूर कर दी। लश्कर चलने के लिए तैयार हो गया।

"वलीद के बेटे! ये देख!"–एक आदमी पुरजोश लहजे में कहता और दौड़ता आ रहा था–"ये देख वलीद के बेटे! अल्लाह ने मेरी बिनाई मुझे लोटा दी है। मैं देख सकता हूं। मै तुझे देख रहा हूं।"

"बे शक अल्लाह ईमान वालों पर करम करता है"–किसी ने बुलंद आवाज़ से कहा।

"अल्लाह रहीम व करीम है"-किसी और ने नारा लगाया।

ये था राफे बिन उमेरा जिस ने इस लश्कर की राहनुमाई इस ख़तरनाक़ सहरा में की थी। वो आशूबे चश्म का मरीज़ था। रेत की चमक और तपिश से उस की बीनाई ख़त्म हो गई थी लेकिन जिस्म में चश्मे का पानी गया और आंखों में पानी के छींटे पड़े तो राफे की बीनाई वापस आ गई। ख़ालिद(र०) को इस की बहुत ज़्यादा खुशी हुई जिस की एक वजह ये थी के उन के लश्कर का राहनुमा और मैदाने जंग का शहसवार हमेशा के लिए अंधा नही हो गया था और दूसरी वजह ये थी के राफे बिन उमेरा ख़ालिद(र०) का दामाद था।

❁

मुजाहेदीन बग़ैर आराम किए अपनी अगली मंज़िल को जा रहे थे। अब इन का सफर सहल था लेकिन उस दुश्मन पर फतह सहन नज़र नहीं आती थी जिस से लड़ने वो जा रहे थे। वो दुश्मन बहुत ताक़त वर था। उस के वहां क़िले थे। वो इस की ज़मीन और उस का मुल्क था। मुसलमान खुले मैदान में थे और अपने मुस्तक़ीर से सैंकड़ों मील दूर थे। इन्हे अपने लिए और अपने जानवरों के लिए खुराक़ का खुद ही इन्तेज़ाम करना था, और इन के लिए ये बहुत बड़ा मसला था।

ख़ालिद(र०) जब अपने लश्कर के साथ शाम की सरहद की तरफ बढ़ रहे थे, उस वक्त गुस्सानी बादशाह जबला बिन लाहीम अपने उमरा और सालारों को हुक्म दे चुका था के मुसलमानों की फौज सरहदों पर आ गई है और उसे सरहदों पर ही ख़त्म कर देना है। उस वक्त ख़ालिद बिन सईद को रोमी फौज शिकस्त दे चुकी थी और मदीने का अठ्ठाईस हज़ार मुजाहेदीन का लश्कर चार हिस्सों में शाम की सरहद पर पहुंच चुका था।

"हम ने रोमियों को शिकस्तें दी है।"-गुस्सानी शाह जबला ने अपने उमरा और सालारों से कहा था-"रोमियों से बढ़ कर जाबिर और जंगजू कौन हो सकता है। हम ने इस ज़बरदस्त फौज को घुटनों बिठा कर इस से ये इलाक़ा लिया था जिस पर आज हमारी हुकमुरानी है। तुम्हारे सामने मुसलमानों की कोई हैसियत ही नहीं। ये मत सोचो के मुसलमानों ने फारसियों को शिकस्त दी है और उन्हें उठने के क़ाबिल नही छोड़ा। फारसी बुज़दिल थे। अपने आबाव अजदाद की शुजाअत को याद करो। अगर तुम ने अपने ऊपर मुसलमानों का ख़ौफ तारी कर लिया तो रोमी भी जो आज हमारे भाई बने हुए हैं, तुम पर चढ़ दौड़ेंगे। फिर तुम दो दुश्मनों के दरमियान पिस जाओगे। मुसलमानों की तादाद बहुत थोड़ी है वो ज़्यादा दिन तुम्हारे सामने नही ठहर सकेंगे।"

"शहंशाहे गुस्सान!"-एक मुअम्मिर सालार ने कहा-"उन की तादाद थोड़ी है

तो क्या वजह है के फारस के तमाम नामूर सालार उन के हाथों मारे गए हैं? ये कहना ठीक नही के फारसी बुज़दिल थे। क्या हम अपने आप को धोका नही दे रहे? क्या मुसलमानों ने फराज़ के मैदान में रोमियों और फारसियों की मुत्तहदा फौज को शर्मनाक शिकस्त नही दी?"

"ज़रूर दी है।"-जबला बिन लाहीम ने कहा-"मै तुम्हारी बात कर रहा हूं। अगर तुम ने मुसलमानों को अपनी तलवारो के नीचे रख लिया तो रामियों और फारसियों पर तुम्हारी बहादुरी की दहशत बैठ जाएगी और तुम जानते हो के इस का तुम्हें क्या फायदा पहुंचेगा। मेरा हुक्म ये है के सरदह की हर एक बस्ती में ये पैग़ाम दो के मुसलमानों का लश्कर या इन का कोई दस्ता किसी भी तरफ से गुज़रे उस पर हमला कर दो और उसे ज़्यादा से ज़्यादा नुक़सान पहुचाने की कोशिश करो। हर वो शख़्स जिस ने गुस्सानी मां का दूध पिया है वो अपने क़बीले की आन पर जान कुर्बान कर दे लेकिन तीन चार मुसलमानों की जान ज़रूर ले...मै अपने आप को धोका नहीं दे रहा। मै इन मुसलमानों को कमज़ोर नहीं समझता जो अपने वतन से इतनी दूर आ गए है। वो अपने अक़ीदे के बल बूते पर आए हैं। उन का अक़ीदा है के उन का मज़हब सच्चा है और वो खुदा के बरतर बंदे हैं और खुदा उन की मदद करता है। अगर तुम अपने अक़ीदे को मज़बूती से पकड़ लो तो तुम इन्हें कुचल कर रख दो। क़बीले के बच्चे बच्चे को लड़ाओ। औरातें को भी लड़ाओ और हर कोई ये कोशिश करे के मुसलमानों को यहां से खाने को एक दाना न मिले, पीने को पानी की बूंद न मिले और इन के ऊंट और घोड़े उस घास की एक पत्ती भी न खा सकें जो तुम्हारी ज़मीन ने उगाई है।"

❁

ख़ालिद(र०) की अगली मंज़िल सोया थी जिस के मुताल्लिक़ इन्हें बताया गया था के सरसब्ज़ और शादाब जगह है। इन के रास्ते में पहली बस्ती आई तो इस से कुछ दूर कम व बेश चालिस घुड़सवारों ने मुसलमानों के हराविल पर इस तरह हमला किया के घोड़े अचानक टीलों के नीचे से निकले, सरपट दौड़ते आए और बरछियों से मुजाहेदीन पर हल्ला बोल दिया। मुजोदीन भी शहसवार थे और इस तरह की छापामार लड़ाई में महारत रखते थे इस लिए इन्हें ज़्यादा नुक़सान न उठाना पड़ा। कुछ मुजाहेदीन ज़ख़्मी हो गए और उन्होंने हमलाआवर सवारों से तीन चार को गिरा लिया।

ये गुस्सानी सवार थे जिन्होंने पहले हल्ले में मुसलमानों को बता दिया था के वो लड़ना जानते है और उन में लड़ने और मरने का ज़्ज्बा भी है। वो हल्ला बोल कर आगे निकल गए और बिखर गए थे। दूर जा कर वो फिर वापस आए। अब

मुसलमान पूरी तरह तैयार थे। इसाईयों ने हल्ला बोला। वो बरछियों और तलवारों से मुसल्लेह थे। मुसलमानों ने इन्हें घेरे में लेने की कोशिश की लेकिन वो बे जिग्री से लड़ते हुए निकल गए। इन का अन्दाज़ जम कर लड़ने वाला था ही नही।

तक़रीबन इतने ही गुस्सानी सवारों ने मुजाहेदीन के लश्कर के अक़बी हिस्से पर हमला किया। ये भी छापा मार क़िस्म का हल्ला था। घोड़े सरपट दौड़ते आए और आगे निकल गए। ख़ालिद(र०) लश्कर के वस्त में थे। इन्हें इत्तेला मिली तो उन्होंने लश्कर की तरतीब बदल दी लेकिन वो लश्कर को ज़्यादा फैला न सके क्योंके वो इलाक़ा हमवार नही था।

कुछ देर बाद ख़ालिद(र०) के सामने चन्द एक गुस्सानी लाए गए। इन्हें मुजाहेदीन ने घोड़ों से गिरा लिया था। इन से जब जंगी नोइयत की मालूमात हासिल की जाने लगी तो इन सब ने बड़ी जुर्रत से बातें की।

"तुम जिधर जाओगे तुम पर हमले होंगे"–एक क़ैदी ने कहा।

"जब आदमी नहीं होंगे वहां तुम पर औरतें हमला करेंगी"–एक और क़ैदी ने कहा।

"तुम्हें किस ने बताया है के हम तुम्हारे दुश्मन हैं?"–ख़ालिद(र०) ने पूछा।

"दुश्मन नहीं हो तो यहां आए क्यों हो?"–एक क़ैदी ने जवाब दिया।

इन क़ैदियों ने और तो कुछ न बताया के उन की फौज कितनी है और कहां कहां है, इन से ये पता चल गया के तमाम सरहदी बस्तियों में इन के बादशाह का ये हुक्म पहुंचा था के मुसलमानों पर हमले करते रहें ताके जब मुसलमान गुस्सानियों की फौज के मुक़ाबले में आऐं तो वो थके हुए हों और कमज़ोर हो चुके हों।

"यहां से तुम्हें अनाज का एक दाना नहीं मिलेगा"–एक क़ैदी ने कहा–"पीने को पानी का एक क़तरा नही मिलेगा।"

तुम्हारे ऊंटों और घोड़ों को हम भूका मार देंगे"–एक और क़ैदी ने कहा–"हमारी ज़मीन से ये घास की एक पत्ती नही खा सकेंगे।"

"क्या तुम्हारी मौत तुम्हें यहां ले आई है?"–एक और क़ैदी बोला।

"लड़ने आए थे तो ख़ालिद(र०) बिन वलीद को साथ लाते"–एक और क़ैदी ने कहा।

"वो आ जाता तो तुम क्या करते?"–ख़ालिद(र०) ने पूछा।

"सुना है उस के सामने उस का कोई दुश्मन पांव पर खड़ा नही रह सकता"–क़ैदी ने जवाब दिया–"और सुना है वो बड़ा ज़ालिम आदमी है। क़ैदियों को अपने हाथों क़त्ल कर देता है।"

"अगर वो इतना ज़ालिम होता तो तुम इस वक़्त अपने पांव पर खड़े न होते"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"तुम्हारे सर तुम्हारे कंधों पर न होते।"

"कहां है वो?"-क़ैदी ने पूछा।

"तुम्हारे सामने खड़ा है"-ख़ालिद(र०) बिन वलीद ने मुस्कुराते हुए कहा-"मैं तुम्हारी बहादुरी की तारीफ करता हूं। ऐसा हमला बहादुर किया करते है। जैसा तुम ने किया है।"

तमाम क़ैदियों पर ख़ामोशी तारी हो गई थी और वो हैरत ज़दा तास्सुर चेहरों पर लिए ख़ालिद(र०) को देख रहे थे।

"क्या तुम मुझ से डर रहे हो के मैं तुम्हें क़त्ल कर दूंगा?"-ख़ालिद(र०) ने पूछा।

इन में से कोई भी न बोला।

"नहीं"-ख़ालिद(र०) खुद ही अपने सवाल का जवाब दिया-"तुम्हें क़त्ल नही किया जाएगा। तुम्हारे अभी बहुत से भाई हमारी क़ैद में आऐंगे। किसी को क़त्ल नहीं किया जाएगा। क़त्ल वही होगा जो हमारे मुक़ाबले में आएगा....क्या तुम गुस्सान के लश्कर के आदमी हो?"

"नहीं"-एक क़ैदी ने जवाब दिया-"हम इस बस्ती के रहने वाले हैं।"

"तुम मेरा नाम किस तरह जानते हो?"-ख़ालिद(र०) ने पूछा।

"इब्ने वलीद!"-एक अधेड़ उम्र क़ैदी ने जवाब दिया-"तेरा नाम गुस्सान के बच्चे बच्चे ने सुना है। गुस्सान की फौज तेरे नाम से वाक़िफ है फारस की फौज को शिकस्त देने वाला सालार आम क़िस्म का इन्सान नहीं हो सकता लेकिन इब्ने वलीद अब तेरा मुक़ाबला क़बीला गुस्सान से है।"

ख़ालिद(र०) इस शख़्स के साथ बहस नहीं करना चाहते थे। उन्होंने इस के साथ और दूसरे क़ैदियों के साथ दोस्ताना अंदाज़ में बातें जारी रखीं और इन से कुछ बातें मालूम कर लीं। मोअरिख़ वाक़दी ने लिखा है के ख़ालिद(र०) को अंदाज़ा ही नहीं था के गुस्सानियों और रोमियों तक इन का सिर्फ नाम ही नही पहुंचा था बल्कि इन के नाम के साथ कुछ रिवायतें और हिकायतें भी पहुंच गई थी। बाज़ लोग ख़ालिद(र०) को माफ़ूकुल फितरत शख़्सियत समझने लगे थे।

❁

ख़ालिद(र०) आगे बढ़ते गए। गुस्सानियों के गिरोहो ने दो और जगहों पर मुसलमानों के लश्कर पर हमला किया। एक हमला जो छापा मार क़िस्म का था, खासा सख़्त था। मुसलमान चूंके चौकस और तैयार थे इस लिए उन का ज़्यादा

नुक़सान न हुआ। हमलाआवरों का जानी नुक़सान ज़्यादा हुआ। ख़ालिद(र०) को क़ैदियों से मालूम हो चुका था के उन पर इन हमलों का मक़सद क्या है। उन्होंने सोचा के इस तरह मज़ाहमत जारी रही तो इन्हें अपने लश्कर के खाने पीने के लिए कुछ भी नही मिलेगा।

वो सोया के क़रीब ज़ोहर और असर के दरमियान पहुंचे तो इन्हें बड़ा ही वसी सब्ज़ाज़ार नज़र आया। इस में बे शुमार भेड़ें बकरियां और मवेशी चर रहे थे। ये वसी चराह गाह थी। इस के क़रीब सोया की बस्ती थी। ख़ालिद(र०) ने इस ख्याल से के पेश्तर इस के, के इन पर हमला हो, उन्होंने हुक्म दे दिया के तमाम भेड़ बकरियां और मवेशी पकड़ लिए जाऐं और इन्हें खाने के लिए और इन में जो दूध देने वाले जानवर थे इन्हें दूध के लिए इस्तेमाल किया जाए।

मुजाहेदीन इन जानवरों को पकड़ने लगे तो बस्ती वालों ने मुसलमानों पर हमला कर दिया। गुस्सानियों के घोड़ अच्छे थे और इन के हथियार भी अच्छे थे लेकिन मुसलमानों के आगे वो ज़्यादा देर ठहर न सके। ख़ालिद(र०) ने चराह गाह पर क़ब्ज़ा कर लिया। जब बस्ती में गए तो वहां लड़ने वाला कोई एक भी आदमी नहीं था। वो बूढ़े थे, औरतें थी और बच्चे थे। मुसलामनों को देख कर वो भागने लगे। औरतें अपने बच्चों को उठाए छुप गईं या भाग उठीं। ख़ालिद(र०) के हुक्म से इन सब को रोक कर कहा गया के इन के खिलाफ कोई कारर्वाई नही की जाएगी। अगर बस्ती से मुसलमान लश्कर के ख़िलाफ कोई करर्वाई हहुई तो बस्ती को उजाड़ दिया जाएगा।

❋

मुख़्बिरों ने ख़ालिद(र०) को इत्तेला दी के कुछ दूर आगे एक क़िला है जिस में इसाई फौज है और इस का सालार रोमी है। ये इत्तेला भी मिली के सोया के भागे हुए गुस्सानी इस क़िले में चले गए है।

इस क़िले का नाम आर्क़ था। सूरज गुरूब हो चुका था। शाम गहरी हो गई। क़िले के दरवाज़ सूरज गुरूब होते ही बन्द हो गए थे। इस के बाद क़िले के संतरियों को जो दीवार पर टहल रहे थे, घोड़ों के टाप सुनाई दिए। संतरियों ने "ख़बरदार होशियार" की सदाऐं लगानी शुरू कर दीं। कमांडर दीवार पर गए और नीचे देखा। बहुत से घोड़े दौड़ आ रहे थे। वो क़िले के बड़े दरवाज़े पर आ कर रूक गए। अभी और घोड़े और ऊंट आ रहे थे।

"कौन हो तुम लोग?"-दरवाज़े के ऊपर एक बुर्ज से एक कमांडर ने पूछा।

"हम गुस्सानी हैं"-बाहर से एक सवार ने जवाब दिया-"मुसलामनों का

लश्कर आ रहा है। हम ने सोया में इन्हें रोकने की कोशिश की थी लेकिन हम उन के मुक़ाबले में जम न सके। हम बस्ती में जाते तो मुसलमान हमें ज़िन्दा न छोड़ते।"

"क्या तुम पनाह लेने आए हो?"

"पनाह भी लेंगे"-एक गुस्सानी सवार ने जवाब दिया-"और मुसलमानों के ख़िलाफ लड़ेंगे भी। तुम्हें हमारी ज़रूरत होगी।"

रोमी सालार को बुलाया गया। उस ने इन लोगों से अपनी तसल्ली के लिए कई सवाल किए और इन के लिए कि़ले का दरवाज़ा खुलवा दिया। उन्होंने रोमी सालार को तफसील से बताया के मुसलमानों की नफरी कितनी है और अब वो कहां है।

अगली सुबह तुलू हुई तो ख़ालिद(र०) का लश्कर कि़ले तक पहुंच गया था और कि़ले को मुहासरे में ले रहा था। इसाई फौज जो कि़ले में थी, कि़ले की दीवारों पर चली गई और फौज का एक हिस्सा कि़ले के बड़े दरवाज़े से कुछ दूर खड़ा हो गया। इस हिस्से को ऐसी सूरते हाल के लिए तैयार रखा गया के दरवाज़ा टूट जाए तो ये दस्ता हमला आवरों को अंदर आने दे और हुक्म मिलने पर बाहर जा कर मुसलमानों पर हमले करे। कि़ले के बाहर लल्कार और नारे गरज रहे थे।

"कि़ला हमारे हवाले कर दो"-ख़ालिद(र०) के हुक्म से राफे बिन उमेरा ने बुलंद आवाज़ से कहा-"वरना हर गुस्सानी क़त्ल होने के लिए तैयार हो जाए। हथियार डाल दो और किसी को बाहर भेजो जो हमारे साथ सुलह की शर्तें तय कर ले।"

"ऐ मुसलमानों!"-ऊपर से एक कमांडर ने लल्कार कर कहा-"ये कि़ला तुम्हें इतनी आसानी से नही मिलेगा।"

वाक़दी लिखता है के कि़ले में एक ज़ईफुल उम्र आलिम था। उस ने रोमी सालार को बुलाया। इस आलिम की क़दरो मंज़िलत थी और गुस्सानी उस का हुक्म मानते और उस की हर बात को बरहक़ तस्लीम करते थे।

"क्या इस फौज का परचम काले रंग का है?"-आलिम ने पूछा।

"हां मुक़द्दस बाप!"-रोमी सालार ने जवाब दिया-"उन का झंडा नज़र आ रहा जो सफेद और काले रंग का है।"

"क्या ये फौज सहरा में से उस रास्ते से गुज़र कर आई है जिस रास्ते से कभी कोई नही गुज़रा?"-आलिम ने पूछा।

मोअररिख़ वाक़दी, तिबरी और इब्ने यूसुफ ने लिखा है के दो मुख़्बिरों ने इस आलिम को बताया के मुसलमानों की फौज सहरा के उस हिस्से में से गुज़र कर आई है जहां सांप भी ज़िन्दा नही रह सकते।

"क्या इस फौज के सालार का क़द ऊंचा है?"-मोअम्मिर आलिम ने पूछा-"क्या उस का जिस्म गठा हुआ है और उस के कंधे चौड़े हैं?"

"मुक़द्दस बाप!"-किसी ने जवाब दिया-"क़द तो इन सब के ऊंचे है और जिस्म भी सब के गठे हुए है लेकिन उस के कंधे सब से चौड़े हैं"

"क्या उस की दाढ़ी ज़्यादा घनी है?"-आलिम ने पूछा-"और क्या उस के चेहरे पर कही कही चेचक के गहरे दाग़ हैं?"

"हां मुक़द्दस दुरवेश!"-किसी और ने जवाब दिया-"उस की दाढ़ी दूसरों से ज़्यादा घनी है और ये दाढ़ी उसके चेहरे पर बहुत अच्छी लगती है और उस के चेहरे पर चेचक के कुछ दाग़ है।"

इस आलिम दुरवेश ने रोमी सालार और इसाई सरदारों की तरफ देखा और कुछ देर ख़ामोश रहा फिर उस ने अपना सर दायें बायें दो बार हिलाया।

"ये वही शख़्स है जिस का मुक़ाबला करने की हिम्मत तुम में से किसी में भी नही"-उस ने कहा।

"ऐ के तू जिस का ऐहताम हम सब पर लाज़िम है, क्या कह रहा है?"-रोमी सालार ने कहा-" वो तो हमारा क़ैदी होगा जिस से तू हमें डरा रहा है।"

"क्या तू ने उन का अंजाम नही देखा जिन्होंने उस का मुक़ाबला किया था?"-आलिम ने कहा।

"क्या वो आसमानों का कोई देवता है जिसे ज़मीन का कोई इन्सान शिकस्त नही दे सकता?"-एक इसाई सरदार ने पूछा।

"ऐ इसाई सरदार!"-आलिम ने कहा-"वो चौड़े कंधो और चेचक के दाग़ों वाला जो मदीने से आया है, उस के पास अलम है और मेरे पास इल्म है। तेरे पास अलम है न इल्म। तू रोमी नही तू गुस्सानी भी नहीं, और जो मुझे नज़र आता है वो तू नही देख सकता है....और तू कहता है के वो आसमान का देवता तो नही...सुन रोमी सालार और तू भी सुन इसाई सरदार! जो उस सहरा में से अपने लश्कर को ज़िन्दा गुज़ार लाया है जहां की रेत पहले अंधा करती फिर जिस्म को खुश्क लकड़ी बनाती और फिर जला देती है, वो इन्सान आसमानों के देवताओं को भी शिकस्त दे सकता है....मै और कुछ नहीं कहता सिवाए इस के, के क़िला उस के हवाले कर दो और अगर लड़ना चाहो तो वक़्त और होश से काम लेना लेकिन अक़्ल तुम्हारा साथ नही देगी।"

☸

उस वक़्त जब ये आलिम और दरवेश क़िले दार और इसाई सरदारों को बता

रहा था के वो ख़ालिद(र०) के मुक़ाबले में आऐं तो ज़रा सोच लें, उस वक़्त किले के अन्दर मुसलमानों की लल्कार सुनाई दे रही थी।

"दरवाज़े खोल दो....हथियार डाल दो....हम क़िला लेने आए हैं....अपने लश्कर को, अपनी औरतों और बच्चों को बचाओ।

रोमी सालार इसाई सरदारों के साथ क़िले की दीवार पर आया और हर तरफ जा कर देखा। उसे मुसलमानों की तादाद इतनी ज़्यादा नज़र नही आ रही थी के वो क़िला सर कर लेती लेकिन वो मुसलमानों का परचम "अक़ाब" देखता था तो वो अपने आप में धच्का सा महसूस करता था।

"क्या यही है सारा लश्कर?"-रोमी सालार ने किसी से पूछा-"यही नहीं हो सकता।"

"ये लश्कर इतना ही है"-उसे जवाब मिला।

"तीरों का मीना बरसा दो इन पर!"-उस ने हुक्म दिया-"क़रीब आऐं तो बरछियां फैंको।"

दीवार से तीरों की बौछाड़ आने लगी।

"खुदा की क़सम, ये तीर हमें नही रोक सकते"-ख़ालिद(र०) ने गला फाड़ कर कहा-"ऐसे तीर हम पर बहुत बरसे हैं। तीरअंदाज़ों को आगे करो। दरवाज़ों पर हल्ला बोल दो.... और सब से कह दो के ये शाम का पहला क़िला है। अगर हम पहले क़िले पर हार गए तो शिकस्त हमारा मुक़द्दर बन जाएगी।"

ख़ालिद(र०) के क़ासिदों ने जब क़िले के चारों तरफ ये पैग़ाम पहुंचा दिया तो तीरअंदाज़ तीरों की बोछाड़ों में आगे बढ़े और अंधाधुंद नही बल्कि एक एक आदमी का निशाना ले कर तीर चलाने लगे। सब से ज़्यादा तीरअंदाज़ क़िले के बड़े दरवाज़े के सामने जमा हो गए थे और दरवाज़े के ऊपर और बुर्जों में तीर फैंक रहे थे। मुजाहेदीन की बेख़ौफी और शुजाअत का ये आलम था के कई मुजाहेदीन दरवाज़े तक पहुंच गए और कुल्हाड़ी से दरवाज़ा तोड़ने लगे।

दरवाज़ा मज़बूत था जिसे इस हालत में तोड़ना आसान नहीं था के ऊपर से तीर आ रहे थे लेकिन मुजाहेदीन की इस जुर्रत ने और लश्कर के नारों ने क़िले वालों का हौसला तोड़ दिया। उन पर अपने आलिम दुरवेश की बातों का असर भी था।

"अब भी वक़्त है"-ख़ालिद(र०) के हुक्म से एक बुलंद आवाज़ मुजाहिद ने ऐलान किया-"क़िला दे दोगे तो फायदे में रहोगे। क़िला हम ने लिया तो हम से रहम की उम्मीद न रखना।"

थोड़ी ही देर बाद क़िले पर सफेद झंझडा लहराने लगा। ख़ालिद(र०) ने अपने

सालारों की तरफ कासिद दौड़ा दिए के रूक जाओ।

"बाहर आ कर बात करो"–मुसलमानों की तरफ से ऐलान हुआ।

क़िले का दरवाज़ा खुला। रोमी सालार दो तीन इसाई सरदारों के साथ बाहर आया और मदीने के उस सालार के सामने आन खड़ा हुआ जिस के कंधे चौड़े, दाढ़ी घनी और जिस के चेहरे पर चेचक के चन्द एक दाग़ थे।

"खुदा की क़सम, तू अक्ल वाला है"–ख़ालिद(र०) ने रोमी सालार से कहा–"तू ने अपनी आबादी को और अपने लश्कर को क़त्ले आम से बचा लिया है। अब तू मुझ से वो तवक्क़ो रख सकता है जो दोस्त दोस्तों से रखा करते हैं।"

ख़ालिद(र०) ने अपना हाथ उस की तरफ बढ़ाया। रोमी सालार ने मुसाफह के लिए अपना हाथ बढ़ाया।

"हाथ नहीं"–ख़ालिद(र०) ने कहा–"पहले तलवार।"

रोमी सालार ने अपने कमर बंद से तलवार मय नियाम खोल कर ख़ालिद(र०) के हवाले कर दी, फिर इसाई सरदारों ने अपनी अपनी तलवारें उतार कर ख़ालिद(र०) के आगे फैंक दी।

"अब बता ऐ सालारे मदीना!"–रोमी सालार ने पूछा–"तेरी और शर्त क्या है? क्या हमारी जवान लड़कियां और बच्चे तेरे लश्कर से महफूज़ रहेंगे?"

"हम तुम्हारी लड़कियां उठाने नहीं आए ऐ रोमी सालार!"–ख़ालिद(र०) ने कहा–"हम जज़िया लेंगे। कोई और महसूल नहीं लेंगे। अगर तू कुछ देर और लड़ता और हम क़िला अपने ज़ोर पर लेते तो आर्क की ईंट से ईंट बज जाती और अन्दर लाशों के ढेर लगे होते। तू अमन से आया है अमन से जा। अपनी लड़कियों को, बच्चों को और उन की माओं को साथ ले जा....और दिल में ये बात रख के हम लूट मार करने नहीं आए, हम कुछ देने आए हैं। ये हमारा अक़ीदा है, इस्लाम, इस पर ग़ौर करना।"

मोअररिख़ लिखते है के रोमी सालार और इसाई सरदार ख़ौफ ज़दा हालत में आए थे। ख़ौफ ये था के ख़ालिद(र०) इन्हें क़त्ल कर देगा लेकिन ख़ालिद(र०) ने जज़िया के सिवा कोई और शर्त आयद न की। अब रोमी और इसाई ख़ौफ ज़दा नहीं हैरत ज़दा थे। इन्हें यक़ीन नहीं आ रहा था के कोई फातेह मफ्तूहा के साथ इतनी फय्याज़ी से पेश आ सकता है। इन लोगों पर करम ये किया गया के सिर्फ फौज को वहां से निकाला गया। बाक़ी तमाम आबादी अमन व अमान में वहां मौजूद रही।

❁

ख़ालिद(र०) को वहां से मुक़ामी गाईड मिल गए थे। आर्क से आगे दो

मुक़ामात, सख़ना और क़दमा थे। ख़ालिद(र०) ने आर्क पर क़ब्ज़ा कर लिया था लेकिन अपने लश्कर को क़स्बे के बाहर खेमा ज़न किया। रात को ख़ालिद(र०) ने अपने सालारों के साथ बड़े जज़्बाती अंदाज़ से अल्लाह का शुक्र अदा किया। शाम के पहले ही क़िलेदार ने हथियार डाल दिए थे।

मोअररिख़ लिखते हैं के शाम की सरहद के क़रीब पहुंच कर ख़ालिद(र०) की चाल ढाल में तबदीली सी आ गई थी। वो सुर्ख रंग का अमामा सर पर रखते थे। मुसलीमा कज़्ज़ाब की तलवार इन के पास रहती थी। रसूले अकरम(स०) का दिया हुआ मुक़द्दस परचम उन के ख़ेमे पर लगा रहता और ख़ालिद(र०) को अकसर देखा गया के इस मुक़द्दस परचम पर नज़रें गाड़े खड़े हैं। कूच और पेशक़दमी के दौरान भी वो इस परचम "अक़ाब" को देखते तो उन की नज़रें कुछ देर परचम पर जमी रहती थी। इन्हें शायद ये अहसास परेशान कर रहा था के वो वतन से बहुत दूर एक ताक़तवर मुल्क को फतह करने आ गए हैं लेकिन उन की बातों और मुस्कुराहटों में हौसला मंदी साफ नज़र आती थी।

रात को ख़ालिद(र०) ने अपने सालारों को बुलाया।

"बेशक अल्लाह ग़फ़ूरूर्रहीम है"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"फतह और शिकस्त उसी के हाथ में है। हम लड़ते हैं तो अल्लाह ही के नाम पर लड़ते हैं। जानें देंगे तो उसी के नाम पर देंगे...मेरे दोस्तो! कैसे शुक्र बजा लाओगे रब्बे करीम का जिस ने तुम्हारे नाम का ख़ौफ तुम्हारे क़दम यहां पड़ने से पहले ही दुश्मनाने इस्लाम के दिलों पर तारी कर दिया था। कैसे अहसान चुकाओगे अपने अल्लाह का जिस ने पहला ही क़िला किसी जानी नुक़सान के बग़ैर तुम्हारी झोली में डाल दिया है। तकब्बुर न करना और ये न भूलना के हमारे साथ वो परचम है जो रसूल अल्लाह(स०) अपने साथ रखा करते थे। ये परचम नहीं, ये परचम नहीं, हमारे रसूल(स०) की रूहे मुक़द्दस है जो हमारे साथ है...

"तू ने सब्र और तहम्मुल की, जुर्रत और शुजाअत की जो रिवायत क़ायम की है ये हमारी आने वाली नस्लों को रास्ता दिखाने वाली रौशनी का काम देगी। हमें अभी और रिवायत क़ायम करनी हैं और यही रिवायत इस्लाम को ज़िन्दा रखेंगी।"

ऐसी कुछ और बातें कर के ख़ालिद(र०) अपनी अगली पेशक़दमी के मुताल्लिक़ अहकाम देने लगे। उन्होंने दस्तों के सालारों से कहा के वो अगले दो मुक़ामात पर क़ब्ज़े के लिए जाऐंगे। एक सख़ना और दूसरे को क़दमा जाना था। ख़ालिद(र०) ने इन्हें कहा के इन्हें एक एक दस्ते से इन दोनों बस्तियों को लेना है। जासूसों की इत्तेला के मुताबिक़ ये दानों बस्तियां छोटे छोटे क़िलों या क़िला नुमा

हवेलियों का मजमूआ थी।

"आर्क की फतह दोनों बस्तियों की फतह को मुश्किल बना चुकी होगी"-ख़ालिद(र०) ने सालारों से कहा-"आर्क के शिकस्त खुर्दा आदमी वहां पहुंच चुके होंगे। इसाई और रोमी आर्क की शिकस्त का इन्तेक़ाम ज़रूर लेंगे। तुम्हें बड़े सख़्त मुक़ाबले का सामना होगा। पस्पा न होना। मै कुमक तैयार रखूंगा। अल्लाह ने हमें ये अड्डा दे दिया है। मै तुम्हारी मदद को पहुंचूंगा। अल्लाह तुम्हारे साथ है।"

ख़ालिद(र०) ने सालार अबु उबैदा के नाम एक पैग़ाम लिखवाया और एक क़ासिद को दे कर कहा के फज्र की नमाज़ के फौरन बाद वो रवाना हो जाए और ये पैग़ाम अबु उबैदा को दे आए।

अबु उबैदा उन अळाईस हज़ार मुजाहेदीन के एक हिस्से के सालार थे जो अमीरूलमोमेनीन अबुबकर(र०) ने मदीने से तैयार कर के शाम की फतह के लिए रवाना किया था। इस लश्कर के चार हिस्से किए गए थे और हर हिस्सा शाम की सरहद पर एक दूसरे से दूर मुख़तलिफ जगहों पर पहुंच गया था। सालार अबु उबैदा जाबिया के इलाक़े में थे। ख़ालिद(र०) ने इन्हें पैग़ाम भेजा के वो जहां है वहीं रहें और जब तक इन्हें ख़ालिद(र०) की तरफ से कोई हुक्म न मिले वो कोई हरकत न करें।

"और मैं तदमुर जा रहा हूं"-ख़ालिद(र०) ने अपने सालारों को बताया-"तदमुर बाक़ायदा क़िला है। इसे सर करना आसान नही है इस लिए इसे मैं ने अपने ज़िम्मे ले लिया है....मेरे रफीक़ो! मालूम नही हम एक दूसरे को ज़िन्दा मिल सकेंगे या नहीं, ये ख्याल रखना के हम अल्लाह के हुज़ूर इक्ळे हों तो अल्लाह के आगे शर्मसार हों न एक दूसरे के आगे!"

☸

ख़ालिद(र०) के साथ मुजाहेदीन का जो लश्कर था इस की तादाद नौ हज़ार पूरी नहीं थी। इसे भी ख़ालिद(र०) ने तीन हिस्सों में तक़सीम कर दिया। हर हिस्से को एक एक मुक़ाम फतह करना था। ख़ालिद(र०) ने बहुत बड़ा ख़तरा मोल लिया था लेकिन इन्हें अल्लाह की ज़ात पर और रसूले अकरम(स०) के "अक़ाब" पर इतना भरोसा था के उन्होंने इतना बड़ा ख़तरा मोल ले लिया।

सुबह होते ही ख़ालिद(र०) तदमुर की तरफ कूच कर गए और दो सालार अपने अपने दस्तो को ले कर सख़्ना और क़दमा को रवाना हो गए।

ख़ालिद(र०) ने जाते ही तदमुर के क़िले का मुहासरा कर लिया। इस में भी इसाईयों की फौज थी। ख़ालिद(र०) ने नारों के साथ क़िले के दरवाज़ों पर हल्ले बोले और बार बार ये ऐलान कराया के क़िला उनके हवाले कर दिया

जाए। ये देखा गया के क़िले के दिफाअ में लड़ने वालों में कोई जोश व ख़रोश नहीं था।

ज़्यादा वक़्त नही गुज़रा था के क़िले का दरवाज़ा खुला और इसाई सरदार बाहर आ गए। उन्होंने ख़ालिद(र०) से पूछा के वो किन शर्तों पर सुलह करना चाहते है।

"जज़िया अदा करो"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"और ये मुहाएदा के यहां से मुसलामनों का जो भी लश्कर या दस्ता गुज़रेगा उसे खाने पीने का सामान तुम मोहय्या करोगे और क़िले में रूकना हुआ तो तुम उसे जगह दोगे।"

"तुम्हारी फौज लूट मार तो नहीं करेगी?"-एक इसाई सरदार ने पूछा।

"जज़िये के इवज़ तुम्हारी इज़्ज़त और तुम्हारी जानों और तुम्हारे अमवाल की हिफाज़त हमारी ज़िम्मेदारी होगी"-ख़ालिद(र०) ने क़हा-"किसी और ने तुम पर हमला किया तो मुसलमान तुम्हारी मदद को पहुंचेंगे और तुम रोमी और गुस्सानियों का साथ नहीं दोगे।"

"इब्ने वलीद!"-एक सरदार ने कहा-"हम ने जैसा सुना था तुझे वैसा ही पाया। अब तू हमें अपना दोस्त पाएगा।"

इसाईयों के सब से बड़े सरदार ने आला नस्ल का एक घोड़ा ख़ालिद(र०) को तोहफे पेश किया। ये बड़ा क़ीमती घोड़ा था।

ये दूसरा क़िला था जो ख़ालिद(र०) के क़दमों में आन पड़ा और ख़ालिद(र०) अल्लाह के हुज़ूर सिजदे में गिर पड़े।

☸

उधर सख़ना और क़दमा में एक जैसा ही मोअजज़ा हुआ। दोनों दस्तों के सालारों पर ही जानी कैफियत तारी थी। एक ख़तरा ये था के वो दुश्मन मुल्क के ज़्यादा अन्दर यानी गहराई में जा रहे थे। दूसरा ख़तरा ये के आर्क से फौजी चले गए थे। इन का इन क़स्बों में होना और वहां के लोगों को साथ मिला कर मुक़ाबले में आना लाज़मी था, और सब से बड़ा ख़तरा तो ये था के दोनों सालारों के पास सिर्फ एक एक दस्ता था।

दोनों दस्ते तक़रीबन एक ही वक़्त अपने अपने हदफ पर पहुंचे। दोनों सालारों ने अपने अपने तौर पर तय कर लिया था के उन का मुक़ाबला अगर ज़्यादा तादाद से हो गया तो वो जम कर नहीं लड़ेंगे बल्कि घूम फिर कर और दुश्मन को बिखेर कर लड़ेंगे। उन्होंने ये भी सोच लिया था के ख़ालिद(र०) से मदद नहीं मांगेंगे क्योंके ख़ालिद(र०) एक क़िले पर हमला करने गए थे।

ईमान के जज़्बे की ये इन्तेहा थी के वो इतनी क़लील तादाद में कहां जा पहुंचे थे। उन्होंने अपनी जानें, और अपने अमवाल अल्लाह के सुपुर्द कर दिए थे। वो अपनी बीवियों और अपने मां बाप और अपने बहन भाईयों को फरामोश किए हुए थे। उन पर ये नशा तारी था के कुफ्र के फितने को ख़त्म कर के अल्लाह के पैग़ाम को ज़मीन के दूसरे सिरे तक पहुंचाना है। इन के दिलों में अल्लाह का नाम और रसूल(स०) का इश्क़ था और उन के ज़हनों में कोई वहम और कोई शक न था। जिहाद इन की इबादत थी और वो अल्लाह से ही मदद मांगते थे- और अब वो उस मुक़ाम पर और ऐसे हालात में जा पहुंचे थे के अल्लाह ही उन का हाफिज़ था।

एक सालार सख़ना के क़रीब और दूसरा क़दमा के क़रीब पहुंचा तो दोनों जगहों पर एक ही जैसा मंज़र देखने में आया। वहां के लोग बाहर निकल आए और इन की तादाद बढ़ती गई। सालारों ने अपने अपने दस्ते को फैला दिया। यहां कोई धोका दिखाई दे रहा था। वो लोग मुसल्लेह नहीं थे। उन की औरतें और बच्चे भी बाहर आ गए और सब हाथ ऊपर कर के हिला रहे थे।

सालारों ने अपने अपने दस्ते को मुहासरे की तरतीब में कर दिया। उन की नज़रें उन मकानों पर लगी हुई थीं जो छोटे छोटे कि़लों की मानिंद थे। सालारों को ख़तरा ये नज़र आ रहा था के वो आगे बढ़ेंगे तो इन मकानों से इन पर तीर बरसने लगेंगे।

वो रूक रूक कर आगे बढ़ने लगे। दोनों बस्तियों की आबादी अरबी इसाईयों की थी। इन में से चार पांच मुअम्मिर सफेद रेश आगे बढ़े। क़रीब आकर उन्होंने इस्तक़बाल के अंदाज़ में बाज़ू फैला दिए।

"हम तुम्हारा इस्तक़बाल करते हैं"-एक सफेद रेश इसाई ने कहा-"आओ...दोस्तों की तरह आओ। हम अमन के बंदे हैं"

"और अगर हम पर एक भी तीर आया तो इस बस्ती की तबाही देख कर भी यक़ीन नहीं करोगे"-सालार ने कहा।

"मकानों के दरवाज़े खुले है।"-इसाई बुज़ुर्ग ने कहा-"आबादी का एक बच्चा भी अन्दर नहीं। देख लो, किसी के हाथ में कमान नहीं, बरछी नहीं, तलवार नहीं।"

"कहां हैं वो जो आर्क से यहां आए थे"-सालार ने पूछा।

"कुछ हैं कुछ चले गए हैं"-एक मुअम्मिर इसाई ने कहा-"उन्होंने ही हमें बताया है के तुम्हारी फौज लूट मार नहीं करती, निहत्ते और बे कसों पर

हाथ नहीं उठाती और तुम ऐसी शर्तों पर दोस्ती क़ुबूल कर लेते हो जो किसी पर बार नहीं होतीं।"

"और जो हमारी शर्तें क़ुबूल न करे उस का अंजाम कुछ और होता है"-सालार ने कहा।

"ऐ मदीने के सालार!"-इसाई सरदार ने कहा-"बता तेरी शर्तें क्या हैं?"

"वही जो तुम्हारी पीठ उठा सकेगी और कमर को तोड़ेगी नहीं"-सालार ने कहा-"जज़िया....हम खुद देखेंगे के जज़िया अदा करने के क़ाबिल नहीं उस से हम कुछ भी नहीं लेंगे।"

"कुछ और?"

"मुसलमानों का लश्कर या कोई दस्ता या कोई क़ासिद यहां से गुज़रेगा तो ये इस बस्ती की ज़िम्मेदारी होगी के उस पर हमला न हो"-सालार ने कहा-"अगर वो यहां रूकना चाहेंगे तो उन के जानवरों का चारा बस्ती के ज़िम्मे होगा। उन की कोई और ज़रूरत जो तुम पर बार नहीं होगी वो तुम पूरी करोगे। हमारे लश्कर का कोई फर्द बस्ती के किसी घर में दाखि़ल नहीं होगा। तुम्हारी इज़्ज़तों की और तुम्हारे जान व माल की हिफाज़त के ज़िम्मेदार हम होंगे। रोमियों की तरफ से, गुस्सनियों और फारसियो की तरफ से तुम्हें कोई धमकी मिलेगी या तुम पर कोई हमला करेगा तो इस का जवाब हम देंगे।"

दोनों बस्तियों में ऐसे ही हुआ। उस दौर में फौजों का ये रिवाज था के बस्तियों को लूटती और उजाड़ती चली जाती थीं। कोई औरत इन से महफूज़ नहीं रहती थी। जो आबादियां इन के आगे झुक जाती थी, इन के साथ तो फातेह फौजें और ज़्यादा बुरा सुलूक करती थीं लेकिन ये रिवायत मुसलमानों ने क़ायम की के जिस ने दोस्ती का हाथ बढ़ाया उसे अपनी पनाह में ले लिया और उस की इज़्ज़त की हिफाज़त को अपनी ज़िम्मेदारी समझा। इसी का असर था के कुफ्फार की बस्तियां उनके साथ दोस्ती के मुहाएदे करती जा रही थीं।

खा़लिद(र०) को इत्तेला मिली के सखना और क़दमा की आबादी ने इताअत क़ुबूल कर ली है तो उन्होंने वहां के लिए अमाल मुक़र्रर कर के दोनों दस्तों को अपने पास बुला लिया।

❁

खा़लिद(र०) ने आगे बढ़ने का हुक्म दिया। आगे क़रीतीन का क़स्बा था जिस की आबादी दूसरी बस्तियों की निस्बत ज़्यादा थी। खा़लिद(र०) ने इस के

क़रीब पहुंच कर लश्कर को रोक लिया और अपने नायबीन से कहा के वो बस्ती में जा कर सुलह और मुहाएदे की बात करें। ये दोनों अभी चले ही नहीं थे के वहां की आबादी ने दायें और बायें से मुसलमानों के लश्कर पर हमला कर दिया।

ये हमला अगर ग़ैर मुतावक़्क़ा नहीं तो अचानक ज़रूर था। ख़ालिद(र०) ने अपने लश्कर को हुजूम की सूरत में नहीं बल्कि जंगी तरतीब में रखा हुआ था वो आख़िर दुश्मन मुल्क में थे, उन्होंने एक दो दस्ते पीछे रखे हुए थे। जूं ही हमला हुआ, ख़ालिद(र०) ने पीछे वाले दस्तों को आगे बढ़ा दिया।

हमलाआवरों में बस्ती के लोग ज़्यादा मालूम होते थे और इन में कुछ तादाद बाक़ायदा फौजियों की भी थी। ये दूसरी जगहों मसलन आर्क और तदमुर से आए हुए फौजी थे। ये सब लोग तादाद में तो ज़्यादा थे लेकिन उन के लड़ने का अंदाज़ा अपना ही था और ये अंदाज़ बाक़ायदा फौज वाला नहीं था। ख़ालिद(र०) की जंगी चालों के सामने तो बड़े तजुर्बाकार सालार भी नहीं ठहर सके थे। थोड़े से वक़्त में मुजाहेदीन ने इस हुजूम की ये हालत कर दी के उन के लिए भाग निकलना भी मुहाल हो गया।

चूंके ये लड़ाई थी और मुसलमानों पर बाक़ायदा हमला हुआ था इस लिए ख़ालिद(र०) ने जंगी उसूलों के तहत अहकाम दिए। मुसलमानों ने बस्ती पर हमला किया और माले ग़नीमत इक्ळा किया। क़ैदी भी पकड़े और आगे बढ़े। अब ख़ालिद(र०) पहले से ज़्यादा मोहतात हो गए थे। जूं जूं वो आगे बढ़ते जाते उन्हें दुश्मन क़िस्म के लोगों से वास्ता पड़ता जाता था।

इस झड़प से फारिग़ हो कर आगे गए तो आठ नौ मील आगे बे शुमार मवेशी चर रहे थे। ख़ालिद(र०) ने हुक्म दिया के तमाम मवेशी अपने क़ब्ज़े में ले लिए जाऐं। ये हव्वारी का इलाक़ा था। मुजाहेदीन मवेशियों को पकड़ रहे थे तो हज़ारों आदमियों ने उन पर हमला कर दिया। ये सब इसाई थे। गुस्सनियों की ख़ासी तादाद न जाने कहां से उन की मदद को आन पहुंची। ये एक शदीद हमला था। हमलाआवर क़हर और ग़ज़ब से लड़ रहे थे। उन का एक ही नारा सुनाई दे रहा था-"इन्हें(मुसलमानों को) काट दो....इन्हें ज़िन्दा न जाने दो।"

ख़ालिद(र०) की हाज़िर दिमाग़ी और मुजाहेदीन की हिम्मत और उन के इस्तक़लाल ने इन्हें इस मैदान में भी फतह दी लेकिन मुजाहेदीन के जिस्मों में अगर कुछ ताज़गी रह गई थी तो वो भी ख़त्म हो गई।

किसी भी तारीख़ में मुजाहेदीन की शहादत और ज़ख़्मी होने के आदाद

व शुमार नहीं मिलते। इन पर जो हमले हुए थे इन में यक़ीनन कई मुजाहेदीन शहीद हुए होंगे। बाज़ शदीद ज़ख़्मी हो कर सारी उम्र के लिए माज़ूर भी हुए होंगे। शहीदों की तादाद दुश्मन के मुक़ाबले में कम हो सकती है, ये कहना के कोई भी शहीद नहीं हुआ, दरूस्त नहीं। इस तरह मुजाहेदीन की तादाद कम होती जा रही थी और कुमक की कोई उम्मीद नहीं थी, फिर भी मुजाहेदीन सैलाब की मनिंद बढ़े जा रहे थे।

❁

ख़ालिद(र०) अब ज़ंजीरों वाली खुद जिस पर वो सुर्ख अमामा बांधे रखते थे, रात को ही उतारते थे। लश्कर का कहीं क़याम होता था तो ख़ालिद(र०) मुजाहेदीन के दरमियान घूमते फिरते रहते। उन के चेहरे पर ताज़गी और मुस्कुराहट होती थी। उन की मुस्कुराहट में तिलिस्माती सा तास्सुर था जो मुजाहेदीन के हौसलों और जज़्बे को तरो ताज़ा कर देता था।

हव्वारीं के लोगों को शिकस्त दे कर ख़ालिद(र०) ने वहां सिर्फ एक रात क़याम किया और सुबह दमिश्क की सिम्त कूच कर गए।

शाम और लेबनान के दरमियान एक सिलसिला-ए-कोह है। इस की एक शाख शाम में चली जाती है। दमिश्क़ से तक़रीबन बीस मील दूर दो हज़ार फिट की बुलंदी पर एक दर्रा है जिस का नाम सीनातुलअक़ाब (दर्रा-ए-अक़ाब) है। इसे ये नाम ख़ालिद(र०) ने दिया था। दमिश्क़ की तरफ कूच के दौरान ख़ालिद(र०) का लश्कर तक़रीबन एक घंटे के लिए रूका था और ख़ालिद(र०) ने अपना परचम "अक़ाब" यहां गाड़ा था।

मोअररि़ख़ लिखते हैं के ख़ालिद(र०) जितनी देर वहां रूके रहे, एक जगह खड़े दमिश्क़ की तरफ देखते रहे उनके सामने सरसब्ज़ शादाब इलाक़ा था। सहराओं के ये मुजाहिद इतना सरसब्ज़ और दिल नशीं ख़ित्ता देख कर हैरत का इज़हार कर रहे थे।

दमिश्क़ से ग्यारा बारह मील दूर मर्ज राहित नाम का एक शहर था। इस की तमाम तर आबादी गुस्सनियों की थी। गुस्सानियों की बादशाही में हलचल बपा थी। इन के पाया-ए-तख़्त बसरा में इत्तेला पहुंच चुकी थी के मुसलमान बड़ी तेज़ी से बढ़े आ रहे हैं और इसाई इन के आगे हथियार डालते चले जा रहे हैं।

गुस्सनियों का बादशाह जबला बिन लाहीम गुस्से में रहने लगा था। फ़ारसियों की तरह वो भी बार बार कहता था के इन ज़रा जितने मुसलमानों को

उस की बादशाही में दाखिल होने की जुर्रत कैसे हुई है। उस ने अपने जासूस भेज कर मालूम कर लिया था के मुसलमान किस तरफ से आ रहे हैं और इन की नफरी कितनी है। उसे आखरी इत्तेला ये मिली के ख़ालिद(र०) बिन वलीद दमिश्क से कुछ दूर रह गया है और वो मर्ज राहित के रास्ते दमिश्क तक पहुंचेगा।

"मर्ज राहित!"-जबला गुस्सनी ने कहा और सोच में पड़ गया फिर भड़क कर बोला-"मर्ज राहित....क्या इन दिनों वहां मेला नहीं लगा करता?"

"मेला शुरू है"-उसे जवाब मिला।

जबला ने उसी वक्त अपने सालारों को बुलाया और इन्हें कुछ अहकाम दिए और कहा के इन अहकाम पर फौरन अमलदरामद शुरू हो जाए। ये एक जाल था जो उस ने ख़ालिद(र०) के लश्कर के लिए मर्ज राहित के मैले में बिछा दिया था।

"वो इसाई थे जिन्होंने मुसलमानों के आगे घुटने टेक दिए हैं"-उस ने कहा-"मुसलमान खुशी के साथ बढ़ते आ रहे हैं के उन के रास्ते में जो भी आएगा इन की इताअत कुबूल कर लेगा। रोमियों को नीचा दिखाने वाले गुस्सानी अरब के बद्दुओं की इताअत कुबूल नहीं करेंगे। हम मर्ज राहित में ही इन का ख़ात्मा कर देंगे।"

❁

ख़ालिद(र०) मर्ज राहित के क़रीब पहुंच रहे थे और इन्हें मेला नज़र आ रहा था। बहुत बड़ा मेला था। ये गुस्सानियों का कोई त्यौहार था। हज़ारों लोग जमा थे। खेल तमाशे हो रहे थे। घुड़दौड़ और शतुर दौड़ भी हो रही थी। कहीं नाच था कहीं गाने थे। एक वसी मैदान था जिस में आदमी ही आदमी थे। इन की तादद बीस हज़ार के लगभग थी।

ख़ालिद(र०) का लश्कर जब कुछ और क़रीब गया तो तहवार मनाने वाला ये हुजूम देखते ही देखते फौज की सूरत इख़्तियार कर के जंगी तरतीब में आ गया। घुड़सवार बाक़ायदा रिसाला बन गएउ। हर आदमी तलवार या बरछी से मुसल्लेह था। औरतें और बच्चे भाग कर क़स्बे में चले गए और हुजूम जो फौज की सूरत इख़्तियार कर गया था, इस तरह दायें और बायें फैलने लगा जैसे मुजाहेदीन को घेरे में लेना चाहता हो।

मुजाहेदीन को अपने पीछे सरपट दौड़ते घोड़ों का क़यामत खेज़ शौर

सुनाई दिया। उधर देखा तो गुस्सानी सवारों का एक दस्ता तलवारें और बरछियां ताने समुद्र की तूफानी लहरों की तरह चला आ रहा था। ये था वो जाल जो जबला बिन लाहीम ने ख़ालिद(र०) के लिए बिछाया था।

मुमकिन नज़र नहीं आता था के ख़ालिद(र०) अपने लश्कर को इस जाल में से निकाल सकेंगे। मुजाहेदीन की तादाद नौ हज़ार भी नहीं रह गई थी और जिस दुश्मन ने इन्हें अपने जाल में ले लिया था उस की तादाद तीन गुना थी। मुजाहेदीन थके हुए भी थे। पांच रोज़ा सहराई सफर के बाद वो मुसलसल पेशक़दमी और मआरका आराई करते आ रहे थे।

गुस्सानियों के बादशाह जबला ने ठीक सोचा था के मुसलमान कूच की तरतीब में आ रहे होंगे और इन्हें जंगी तरतीब में आते कुछ वक़्त लगेगा और उन पर हमला इस तरह होगा के इन्हें संभलने का मौक़ा नहीं मिलेगा। उस ने मुसलमानों की क़लील तादाद को भी पेशे नज़र रखा था और ये भी के मुसलमान मेले को बे ज़रर लोगों का मेला ही समझेंगे।

गुस्सानियों को मालूम नहीं था के ख़ालिद(र०) मेले पर नहीं आए थे। वो तजुर्बाकार सालार थे। इन्हें अचानक हमलों का तजुर्बा हो चुका था। इन्हें अहसास थ के जूं जूं वो दुश्मन मुल्क के अन्दर ही अन्दर जा रहे हैं, हमलों और छापों का ख़तरा बढ़ता जा रहा है चुनांचे वो लश्कर को ऐसी तरतीब में रखते थे के अचानक और ग़ैर मुतावक़्क़े हमले का फौरन मुक़ाबला किया जाए

इन के अक़ब से गुस्सनियों के जो सवार तूफानी मौजों की तरह आ रहे थे वही मुसलमानों को कुचलने के लिए काफी थे। ख़ालिद(र०) की तवज्जह इस रिसाले पर थी और वो मुतमइन थे। मुजाहेदीन एक मशीन की हाल से निमटने की तरतीब मे आ गए। ख़ालिद(र०) ने खुद नारा-ए-तक़बीर बुलंद किया जिस का मुजाहेदीन ने रोद की कड़क की तरह जवाब दिया। इस के साथ ही उन्होंने बुलंद आवाज़ से कुछ अहकाम दिए।

"खुदा की क़सम, हम इन्हें संभाल लेंगे"-ख़ालिद(र०) ने बुलंद आवाज़ से कहा-"अल्लाह के नाम पर, मोहम्मदुर्रसूलअल्लाह(स०) के नाम पर!"

गुस्सानियों का रिसाला बड़ी तेज़ी से क़रीब आ रहा था। इस के पीछे और कुछ दायें से एक और रिसाला निकला। सैंकड़ों घोड़े इन्तेहाई रफ्तार से दौड़ते आ रहे थे। इन का रूख़ गुस्सानी सवारों की तरफ था।

"पीछे देखो"-किसी गुस्सनी सवार ने चिल्ला कर कहा-"ये मुसलमान सवार मालूम होते हैं।"

पीछे से आने वाले सवार मुसलमान ही थे। ये मुजाहेदीन के लश्कर का अक़बी हिस्सा (रियरगार्ड) था। इन सवारों ने गुस्सानी सवारों को आन लिया। गुस्सानी सवार इस हमले के लिए तैयार नहीं थे। उनका हल्ला(चार्ज) बे तरतीब होते होते रूक गया। इधर से ख़ालिद(र०) ने अपने सवार दस्ते को तेज़ हमले का हुक्म दे दिया। गुस्सानी सवार घेरे में आकर सुकड़ने लगे। फिर वो इतने सुकड़ गए के इन के घोड़ों को एक क़दम भी दायें बायें और आगे पीछे हिलने जुलने की जगह नहीं मिलती थी।

इस के साथ ही ख़ालिद(र०) ने शतुर सवार तीरअंदाज़ों को मेले वाले लश्कर पर तीर बरसाने का हुक्म दे दिया और दूसर दस्तों को दुश्मन के पहलुओं पर हमले के लिए भेज दिया। उन्होंने अपने दस्त से सामने से हल्ला किया।

ये अक़्ल और जज़्बे की लड़ाई थी। गुस्सानी पियादों को अपने घुड़सवारों पर भरोसा था जो अब मुजाहेदीन की तलवारों से कट रहे थे या मआरके से निकल कर भाग रहे थे।

ख़ालिद(र०) की कोशिश ये थी के दुश्मन के लश्कर के अक़ब में चले जाऐं ताके दुश्मन शहर में न जा सके। ख़ालिद(र०) के हुक्म से गुस्सानियों के ख़ेमों को आग लगा दी गई। ये ख़ेमे मेले के लिए लगे हुए थे। शौलों ने गुस्सानियों पर ख़ौफ तारी कर दिया। इन के हौसले तो यही देख कर टूट गए थे के उन्होंने जो जाल बिछाया था वो बुरी तरह नाकाम हो गया था।

गुस्सानियों के पांव उखड़ने लगे। इन का जानी नुक़सान इतना ज़्यादा हो रहा था के खून देख कर वो घबरा गए। आख़िर वो भागने लगे। ख़ालिद(र०) बार बार ऐलान कर रहे थे के अपने शहर को तबाही से बचाना चाहते हो तो बाहर रहो।

शाम तक ख़ालिद(र०) इस शहर से माले ग़नीमत और बहुत से क़ैदी इक्ळे कर चुके थे। शहर में उन औरतों के बीन सुनाई दे रहे थे जिन के ख़ाविंद, भाई, बाप और बेटे मारे गए थे।

ख़ालिद(र०) ने रात को अबु उबैदा के नाम पैग़ाम भेजा के वो ख़ालिद(र०) को बसरा के क़ुर्ब व जवार में मिलें। बसरा गुस्सानी हुकूमत का पाया-ए-तख़्त था। गुस्सानी और रोमी मिल कर बसरा के दिफाअ का इन्तेज़ाम कर रहे थे। मुजाहेदीन का बड़ा ही सख़्त इम्तेहान अभी बाक़ी था।

वो जो मोहम्मदुर्रसूलअल्लाह(स०) को अल्लाह का भेजा हुआ रसूल नहीं मानते थे और अल्लाह को वाहदहू लाशरीक नहीं समझते थे, वो अभी तक जंगी ताक़त को अफराद की कमी बैशी और हथियारों की बरतरी और कमतरी से नाप तूल रहे थे। हैरान तो वो होते थे के मुसलमान किस तरह और किस ताक़त के बल बूते पर फतह हासिल करते आ रहे हैं लेकिन अपनी फौजों और घोड़ों की इफरात और अपने हथियारों की बरतरी का उन को ऐसा घमंड था के वो सोचते ही नहीं थे के इन्सान में कोई और ताक़त भी हो सकती है और ये ताक़त अक़ीदे और मज़हब की सच्चाई होती है।

गुस्सानियों का बादशाह जबला बिन लाहीम बसरा में इस ख़बर का इन्तेज़ार बड़ी बेताबी से कर रहा था के मर्ज राहित में उस का धोका कामयाब रहा है और मुसलमानों को काट दिया गया है। उस ने फर्ज़ कर लिया था के मुसलमानों को शिकस्त दी जा चुकी है। उसे आख़री इत्तेला ये मिली थी के मुसलमानों के लिए मेले की सूरत में फंदा तैयार हो चुका है और मुसलमान तेज़ी से इस फंदे में आ रहे हैं।

जबला के तौर और अंदाज़ ही बदल गए थे। गुज़िश्ता रात उस ने अपने हां जश्न का समां बना दिया था। शराब के मटके खाली हो गए थे। जबला बिन लाहीम शराब में तैरता और नशे में उड़ता जवान हो गया था। उस ने बुढ़ापे का मज़ाक़ उड़ाया था। उस ने ये भी नहीं देखा था के उस के हरम की जवान औरतें मन मानी कर रही हैं और इन में से बाज़ उस की क़ैदबंद से आज़ाद हो कर अपनी पसंद के आदमियों के साथ महल के बाग़िचों में ग़ायब हो गई हैं।

खुद जबला की बद मस्ती का ये आलम था के इस जश्न मै नोशी में एक

बड़ी हसीन और नौजवान लड़की उस के सामने से गुज़री तो उस ने लपक कर लड़की को पकड़ लिया और इसे अपने बाज़ूओं में जकड़ कर बेहूदा हरकतें करने लगा। लड़की उस के बाज़ूओं से आज़ाद होने को तड़पने लगी।

"तेरी ये जुर्रत?"-उसने लड़की को अलग कर के एक झटके से अपने सामने खड़ा किया और बड़े सख़्त गुस्से में बोला-"कौन है तू जो मेरे जिस्म को नापसंद कर रही है?"

"तेरी भांजी!"-लड़की ने रोते हुए चिल्ला कर कहा-"तेरे बाप की बेटी की बेटी।"

जबला बिन लाहीम ने बड़ी ज़ोर से क़हक़हा लगाया।

"फतह की खुशी का नशा शराब के नशे से तेज़ होता है"-जबला ने कहा। उस की आवाज़ लड़खड़ा रही थी-"कल जब मुझे खबर मिलेगी के मुसलमानों को कुचल दिया गया है और इन में से कोई भी भाग नहीं सका तो मेरी और ज़्यादा बुरी हालत हो जाएगी।"

उस की भांजी रोती हुई जश्न से निकल गई।

❁

फिर वो वक्त आ गया जब वो मुसलामनों पर अपनी फतह की ख़बर का मुतज़िर था। अब तक ख़बर आजानी चाहिए थी। वो बाग़ में जा बैठा था। एक जवां साल ख़ादिमा तश्तरी में शराब की सुराही और पियाला रखे उस की तरफ जा रही थी। उधर से दरबान बड़ा तेज़ चलता उस तक पहुंचा।

"आया है कोई?"-जबला ने बेताब हो कर दरबान से पूछा-"कोई मर्ज राहित से आया है?"

"क़ासिद आया है"-दरबान ने दबे दबे से लहजे में कहा-"ज़ख़्मी है।"

"भेजो उसे!"-जबला ने जोश से उठते हुए कहा-"वो फतह की ख़बर लाया है। उसे जल्दी मेरे पास भेजो।"

ख़ादिमा तश्तरी उठाए उस के क़रीब खड़ी थी। उधर से एक ज़ख़्मी चला आ रहा था।

"वहीं से कहो के तुम फतह की ख़बर लाए हो"-जबला बिन लाहीम ने कहा।

ज़ख़्मी क़ासिद ने कुछ भी न कहा, वो चलता आया। उस के कपड़े अपने ज़ख़्मों के खून से लाल थे। उस का सर कपड़े में लिपटा हुआ था।

"क्या तुम इतने ज़ख़्मी हो के बोल नहीं सकते?"-जबला ने बुलंद

आवाज़ से पूछा।

"बोल सकता हूं"-क़ासिद ने कहा-"लेकिन जो ख़बर लाया हूं वो अपनी ज़बान से सुनाने की जुर्रत नहीं।"

"क्या कह रहे हो?"-जबला की आवाज़ दब सी गई-"क्या मुसलमान फंदे में नहीं आए?....आकर निकल गए हैं?"

"हां!"-क़ासिद ने शिकस्त खुर्दा आवाज़ में कहा-"वो निकल गए... उन्होंने ऐसी चाल चली के हम उन के फंदे में आ गए....अपनी फौज कट गई है। मर्ज राहित को उन्होंने लूट लिया है।"

जबला बिन लाहीम ने तश्तरी से शराब की सुराही उठाई। ख़ादिमा ने पियाला उठा कर उस के आगे किया। जबला ने सुराही बड़ी ज़ोर से क़ासिद पर फैंकी। क़ासिद बहुत क़रीब खड़ा था। सुराही उस के माथे पर लगी। वो तेवरा कर गिरा। जबला ने ख़ादिमा के हाथ से पियाला छीन कर उस के मुंह पर मारा और लम्बे लम्बे डग भरता वहां से चला गया।

गुस्सानियों के बादशाह का महल मातमी फिज़ा में डूब गया। मर्ज राहित के भगोड़े गुस्सानी बसरा में आ गए और बसरा मातमी शहर बन गया। असल मातम तो उन के हां था जिन के बेटे, भाई, ख़ाविंद और बाप उस फंदे में आ कर मारे गए थे जो उन्होंने ख़ालिद(र०) के मुजाहेदीन के लिए तैयार किया था।

इस मातम के साथ एक दहशत भी आई थी और ये दहशत हर घर में पहुंच गई थी।

"उन के तीर ज़हर में बुझे हुए होते हैं। किसी को इस तीर से ख़राश आ जाए तो भी वो मर जाता है।"

"उन के घोड़े परों वाले हैं। कहते हैं हवा से बातें करते हैं"

"इन मुसलमानों का रसूल(स०) जादूगर था। उस का जादू चल रहा है।"

"उन के सामने लाखों की फौज भी नहीं ठहर सकती।"

"सुना है दिल के बड़े नर्म हैं जो उन के आगे हथियार डाल देते हैं, इन्हें वो गले लगा लेते हैं।"

"जिस शहर में उन का मुक़ाबला होता है उस शहर की ईंट से ईंट बजा देते हैं"

"किसी को ज़िन्दा नहीं छोड़ते। लड़ने वालों को पकड़ कर ले जाते

हैं।"

दबी दबी ऐसी आवाज़ भी सुनाई देती थी-"मज़हब इन का सच्चा मालूम होता है। वो अल्लाह और उस के रसूल(स०) को मानते हैं। यही उन की ताक़त है। जुनून से लड़ते हैं।"

इन लोगों पर जो हैरत और दहशत तारी हो गई थी इस में वो हक़ बजानिब थे।

❁

"तुम लोग बसरा को भी नहीं बचा सकोगे"-जबला बिन लाहीम क़हर भरे लहजे में अपने सालारों से कह रहा था-"तुम्हारी बुज़दिली को देख कर मैं ने रोमियों को मदद के लिए पुकारा है। अगर तुम मुसलमानों को शिकस्त दे देते तो मैं रोमियों के सीने पर कूदता। उन पर मेरी धाक बैठ जाती मगर तुम ने मुझे कहीं का कहीं छोड़ा रोमी हमारे पाया-ए-तख़्त की हिफाज़त करने आए हैं।"

वो अपने सालारों को कोस ही रहा था के उसे इत्तेला मिली के मुसलमानों की एक फौज बसरा की तरफ बढ़ रही है।

"इतनी जल्दी?"-उस ने घबराए हुए लहजे में कहा-"मर्ज राहित से वो इतनी जल्दी बसरा तक किस तरह आ गए हैं,रोमी सालार को इत्तेला दो।"

रोमी फौज जो ख़ालिद(र०) की कामयाबियों की ख़बर सुन कर जबला बिन लाहीम की मदद को आई थी वो बसरा के बाहर खे़मा ज़न थी। इस के सालार को इत्तेला मिली के मुसलमानों की फौज आ रही है तो सालार ने फौज को तैयारी का हुक्म दे दिया। इस फौज में अरब इसाई भी थे।

फौज जो बसरा की तरफ बढ़ रही थी वो ख़ालिद(र०) की नहीं थी। ये एक मुसलमान सालार शरजील(र०) बिन हस्ना का लश्कर था जिस की नफरी चार हज़ार थी। मुसलमान लश्कर जो शाम की फतह के लिए भेजा गया था। ये उस का एक हिस्सा था। ख़लीफातुलमुस्लेमीन के अहकाम के मुताबिक़ सालार अबु उबैदा(र०) ने लश्कर के दूसरे हिस्सों को भी यकजा कर के अपनी कमान में ले लिया था।

बसरा पर शरजील(र०) के हमले का पसे मंज़र ये था के ख़लीफातुलमुस्लेमीन ने अबु उबैदा(र०) को एक ख़त लिखा था:

"मैं ने ख़ालिद(र०) बिन वलीद को ये काम सौंपा है के रोमियों पर चढ़ाई करे। तुम पर इस की इताअत फर्ज़ है। कोई काम उस के हुक्म के खिलाफ न करना।

मैं ने उसे तुम्हारा अमीर मुक़र्रर किया है। मुझे अहसास है के दीन के मामलात में तुम ख़ालिद(र०) से बरतर हो और तुम्हारा रूत्बा ऊंचा है लेकिन जंग की जो महारत ख़ालिद(र०) को है वो तुम्हें नहीं। अल्लाह हम सब को सिराते मुस्तक़ीम पर चलने की तौफीक़ दे।"

ख़ालिद(र०) को इस लश्कर का सालारे आला मुक़र्रर किया गया। जिस वक़्त ख़ालिद(र०) अपने रास्ते मैं आने वाली तमाम रूकावटों को कुचलते जा रहे थे उस वक़्त अबु उबैदा(र०) फारिग़ बैठे थे। ख़ालिद(र०) ने जब मर्ज राहित के मुक़ाम पर भी दुश्मन को शिकस्त दे दी तो अबु उबैदा(र०) ने अपने सालारों को बुलाया। उस वक़्त अबु उबैदा(र०) के दस्ते दरिया-ए-यरमूक के शुमाल मश्रिक़ में एक मुक़ाम हवारन में थे। इन के मातहत दो सालार थे। एक शरजील(र०) बिन हस्ना और दूसरे यज़ीद(र०) बिन अबी सफयान।

"रफीक़ों!"-अबु उबैदा(र०) ने दोनों सालारों से कहा-"हम किस तरह शुक्र अदा करें अल्लाह तबारक वतआला का जो इब्ने वलीद को रास्ते में आने वाले हर दुश्मन पर हावी करता जा रहा है। क्या तुम ने नहीं सोचा के हम इब्ने वलीद के किसी काम नहीं आ रहे? वो जूं जूं आगे बढ़ता जाता है उस की मुश्किलात ख़तरनाक होती जा रही हैं। उस का लश्कर थक कर बेहाल हो चुका होगा। आगे दमिश्क़ है, बसरा है। गुस्सानी हैं, इसाई और रोमी हैं क्या ये तीनों ये नहीं सोच रहे होंगे के मुसलमान को आगे आने दें और जब वो मुसलसल कूच और लड़ाईयों से शल हो जाऐं और इन की नफरी कम हो जाए तो इन्हें किसी मुक़ाम पर घेर कर ख़त्म कर दिया जाए?"

"रोमियों ने ऐसा ज़रूर सोचा होगा"-सालार यज़ीद(र०) ने कहा-"रोमी लड़ने वाली क़ौम है और इस के सालार अक़्ल वाले हैं।"

"खुदा की क़सम, मैं रोमियों को ऐसा मौक़ा नहीं दूंगा"-अबु उबैदा(र०) ने पुरजोश लहजे में कहा-"क्या हम इतनी दूर से इब्ने वलीद की कोई मदद नहीं कर सकते?....बेशक कर सकते हैं"

"तू ने जो सोचा है वो हमें बता अबु उबैदा(र०)!"-शरजील(र०) बिन हस्ना ने कहा-"अल्लाह उस का मददगार है।"

"इब्ने वलीद के आगे दमिश्क़ और बसरा दो ऐसे मुक़ाम हैं जहां रोमियों और गुस्सानियों ने अपनी फौजें जमा कर रखी होंगी"-अबु उबैदा(र०) ने

कहा-"इस से पहले के सालारे आला इब्ने वलीद बसरा पहुंचे हम बसरा पर हमला कर देते हैं। इस से ये होगा के रोमी और गुस्सानी भी ताज़ा दम नही रहेंगे....इब्ने हस्ना!"-अबु उबैदा(र०) ने शरजील(र०) से कहा-"मैं ये काम तुम्हें सौंपता हूं। चार हज़ार नफरी काफी होगी।"

अबु उबैदा(र०) ने सालार शरजील(र०) बिन हस्ना को हिदायत दी और बसरा को रवाना कर दिया।

❁

इस वक्त ख़ालिद(र०) मर्ज राहित से फारिग़ हो चुके थे और उन्होंने अबु उबैदा के नाम ये पैग़ाम दे कर क़ासिद को रवाना कर दिया था के अबु उबैदा(र०) अपने दस्तों के साथ इन्हें बसरा के क़रीब कहीं मिलें। ख़ालिद(र०) ने मर्ज राहित के क़स्बे के बाहर दो चार रोज़ क़याम किया था।

शरजील(र०) चार हज़ार मुजाहेदीन के साथ बसरा पहुंच गए। रोमी बसरा के बाहर ख़ेमा ज़न थे। वो समझे के ये ख़ालिद(र०) की फौज है। इन के जासूसों ने इन्हें बताया के इस फौज का सालार कोई और है।

मोअररिख़ लिखते हैं के इस रोमी फौज के सालार ये समझे के ये मुसलमानों की फौज का हराविल है और पूरी फौज पीछे आ रही है। वो मान नहीं सकते थे के इतनी फौज इतने बड़े शहर को मुहासरे में लेने आई होगी। रोमी फौज जिस की तादाद बारह हज़ार थी क़िले के अन्दर चली गई। बसरा क़िला बन्द शहर था।

शरजील(र०) ने क़िले के क़रीब मग़रिब की तरफ कैम्प किया और अपने लश्कर को कई दस्तों में तक़सीम कर के क़िले के हर तरफ मुतईयन कर दिया।

दो दिन गुज़र गए। रोमी और गुस्सानी क़िले की दीवारों के ऊपर से मुसलमानों को देखते रहे। शरजील(र०) ने क़िले के इर्द गिर्द कुछ न कुछ हरकत जारी रखी। दुश्मन क़िले से दूर दूर भी देखता था। उसे तवक़्क़ो थी के मुसलामनों की पूरी फौज आ रही है। उसे अब अपने जासूसों के ज़रिये कोई ख़बर नहीं मिल सकती थी क्योंके क़िला मुहासरे में था।

सालार शरजील(र०) बिन हस्ना के मुताल्लिक़ ये बताना ज़रूरी है के वो रसूले अकरम(र०) के क़रीबी सहाबी थे। जो सहाबा इकराम वही लिखते थे, इन में शरज़ील(र०) ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं। इसी हवाले से इन्हें कातिबे रसूल(स०) कहा जाता था। शरजील(र०) का जहद व तक़वा तो मशहूर था

ही, वो फन-ए-हर्ब व ज़र्ब और मैदाने जंग में क़यादत की महारत रखते और कहा करते थे के उन्होंने ये फन ख़ालिद(र०) से यमामा की जंग में फिर आतिश परस्तों के ख़िलाफ लडाईयों में सीखा है। मुहासरा-ए-बसरा के वक़्त उन की उम्र सत्तर साल से कुछ ही कम थी। जज़्बे और जोश व ख़रोश के लिहाज़ से वो जवान थे और इन की शहसवारी और तेग़ ज़नी जवानों जैसी थी।

❁

मुहासरे का तीसरा दिन था। रोमियों को यक़ीन हो गया के मुसलमानों की नफरी इतनी ही है जिस ने मुहासरा कर रखा है अगर मज़ीद फौज ने आना होता तो अब तक आ चुकी होती। चुनाचे उन्होंने अपनी बारह हज़ार नफरी की फौज बाहर निकाल ली। मुसलमान कुल चार हज़ार थे। शरजील ने बड़ी तेज़ी से अपने दस्तों को इक्ळा कर के जंगी तरतीब में कर लिया। इस तरह दोनों फौजें आमने सामने आ गईं।की नफरी इतनी ही है जिन ने मुहासरा कर रखा है। अगर मज़ीद फौज ने आना होता तो अब तक उचकी होती। चुनांचे उन्होंने अपनी बारह हज़ार नफरी की फौज बाहर निकल ली। नफरी की इफरात के बल पर वो ऐसी दिलेराना कारर्वाई कर सकते थे। मुसलमान कल चार हज़ार थे।

शरजील(र०) ने बड़ी तेज़ी से अपने दस्तों को इक्ळा कर के जंगी तरतीब में कर लिया। इस तरह दोनों फौजें आमने सामने आ गईं।

"ऐ रोमियों!"-शरजील(र०) ने आगे आ कर बुलंद आवाज़ से कहा-"खुदा की क़सम, हम भागने के लिए नहीं आए। अपनी पहली शिकस्तों को याद करो। तुम हर मैदान में हम से ज़्यादा थे। खून ख़राबे से तुम बचते क्यों नहीं? हमारी शर्तें सुन लो और अपने शहर और अपनी आबादी को तबाही से बचा लो।"

"हम शिकस्त खाने के लिए बाहर नहीं आए"-रोमी सालार ने आगे आ कर कहा-"वापस चले जाओ और ज़िन्दा रहो। वो कोई और थे जिन्होंने तुम से शिकस्तें खाई हैं"

"खुदा की क़सम, हम लड़ाई से मुंह नहीं मोड़ेंगे"-शरजील(र०) ने ऐलान किया-"लेकिन तुम्हें एक मौक़ा देंगे के सोच लो। आगे आओ और हमारी शर्तें सुन लो।"

मकालमों और लल्कार का तबादला हुआ और रोमी सालारों ने शरायत पर बात चीत करने का फैसला कर लिया। इन का सिपह सालार आगे गया।

उधर से शरजील(र०) आगे गए।

"बोल ऐ मुसलमान सालार!"-रोमी सालार ने कहा-"अपनी शरायत बता।"

"इस्लाम कुबूल कर लो"-शरजील(र०) ने कहा-"ये मंजूर नही तो जज़िया अदा करो। ये भी मंजूर नहीं तो लड़ाई के लिए तैयार हो जाओ।"

"हम अपना मज़हब नहीं छोड़ेंगे"-रोमी सालार ने कहा-"और हम जज़िया नही देंगे। लड़ाई के लिए हम तैयार हैं"-इस के साथ ही रोमी सालार ने मुसलमानों पर हमले का हुक्म दे दिया।

रोमियों की तादाद तीन गुना थी। शरजील(र०) ने अपने चार हज़ार मुहाजेदीन को जंगी तरतीब में सफ आरा कर रखा था। इन्हें अपनी नफरी की क़िल्लत का भी अहसास था। उन्होंने अपने दोनों पहलूओं को फैला दिया था ताके दुश्मन घेरे में न ले सके।

रोमी जंगजू थे और इन के सालार तजुर्बा कार थे। वो मुसलमानों को घेरे में लेने की ही कोशिश कर रहे थे। लड़ाई घमसान की थी। शरजील(र०) क़ासिदों को दायें बायें दौड़ा रहे थे और मुजाहेदीन को लल्कार भी रहे थे। मुजाहेदीन अपनी रिवायत के मुताबिक़ बे जिग्री से लड़ रहे थे लेकिन रोमी बारह हज़ार थे। इन के सालार इन्हें दायें बायें फैलाते जा रहे थे।

शरजील(र०) ने अपने दायें और बायें देखा तो इन्हें अपने दस्तों की सूरते हाल बड़ी तशवीशनाक दिखाई दी। ऐसी सूरते हाल पस्पाई का मुताल्बा किया करती है लेकिन शरजील(र०) की लल्कार पर मुजाहेदीन का जोश और जज़्बा बढ़ गया। वो पस्पाई के नाम से ना वाक़िफ थे। उन पर जुनूनी कैफियत तारी हो गई- और चार पांच घंटे गुज़र गए।

❁

फिर वो सूरत पैदा हो ही गई जिस से शरजील(र०) बचने की कोशिश कर रहे थे। दुशमन के पहलू फैल कर मुसलमानों के पहलूओं से आगे निकल गए थे। वो घेरे में आ चुके थे।

"अन्दर की तरफ नहीं सुकड़ना"-शरजील(र०) ने अपने दोनों पहलूओं के कमानदारों को पैग़ाम भेजे-"बाहर की तरफ होने की कोशिश करो।"

शरजील(र०) की चालें बेकार होने लगीं। बे शक मुसलमानों का जज़्बा रोमियों की निस्बत ज़्यादा था लेकिन रोमी तादाद में इतने ज़्यादा थे के मुसलमानों पर ग़ालिब आ सकते थे।

"अल्लाह के परस्तारों!"-शरजील(र०) ने लल्कार कर कहा-"फतह या मौत....फतह या मौत....फतह या मौत....अल्लाह से मदद मांगो। अल्लाह की राह में जानें दे दो...अल्लाह की मदद आएगी।"

मुसलमानों के लिए ये ज़िन्दगी और मौत का मआरका बन गया था। शरजील(र०) की पुकार और लल्कार पर मुजाहेदीन ने बुलंद आवाज़ से कल्मा-ए-तइयबा का विर्द शुरू कर दिया जिस से उन्हें तक़वीयत मिली लेकिन रोमी उन पर हावी हो गए थे। मुसलमानों के जोश और जज़्बे में क़हर पैदा हो गया था।

रोमी फौज मुसलमानों के अक़ब में चली गई। अब मुसलमानों का कुचला जाना यक़ीनी हो गया था।

रोमी जो मुसलमानों के अक़ब में चले गए थे इन्हें अपने अक़ब में घोड़े सरपट दौड़ने का तूफानी शौर सुनाई दिया। उन्होंने पीछे देखा तो सैंकड़ों घोड़े इन की तरफ दौड़े आ रहे थे। इन के आगे दो सवार थे जिन के हाथों में तलवारें थीं। इन में से एक के सर पर जो अमामा था इस का रंग सुर्ख था-वो ख़ालिद(र०) थे।

ख़ालिद(र०) अपने लश्कर के साथ बसरा की तरफ आ रहे थे। उन के रास्ते में दमिश्क़ आया था लेकिन वो दमिश्क़ से हट कर गुज़र आए थे। पहले वो बसरा को फतह करना चाहे थे। ये अल्लाह के इशारे पर हुआ था। अल्लाह ने कातिबे रसूल(स०) की पुकार और दुआ सुन ली थी। ख़ालिद(र०) जब कूच करते थे तो अपने जासूसों को बहुत आगे भेज दिया करते थे। बसरा की तरफ आते वक्त भी उन्होंने जासूसों को बहुत आगे भेज दिया था।

ख़ालिद(र०) बसरा से तक़रीबन एक मील दूर थे जब उन का एक शतुर सवार जासूस ऊंट को बहुत तेज़ दौड़ाता वापस ख़ालिद(र०) के पास गया और इन्हें बताया के मुसलमानों का कोई लश्कर बसरा के बाहर रोमियों के घेरे में आ रहा है।

"कौन है वो सालार!"-ख़ालिद(र०) ने कहा और सवार दस्तों को ऐड़ लगाने और बरछियां और तलवारें निकाल लेने का हुक्म दे दिया।

ख़ालिद(र०) के साथ जो दूसरा सवार घुड़सवारों के आगे आगे आ रहा था वो ख़लीफातुल मुस्लेमीन अबुबकर(र०) का बेटा अब्दुर्रहमान था। उस ने अल्लाह अकबर का नारा लगाया।

रोमियों ने मुक़ाबले की न सोची। इन के सलारों ने तेज़ी दिखाई। अपने

पहलूओं के दस्तों को पीछे हटा लिया और अपने तमाम दस्तो को क़िले के अन्दर ले गए। इन का मुसलमानों की तलवारों से कट जाना यक़ीनी थी। क़िले में दाख़िल होते होते मुसलामनों ने इन का तआक़ुब किया और कई रोमियों को ख़त्म कर दिया।

क़िले के दरवाज़े बन्द हो गए। ख़ालिद(र०) गुस्से में थे। उन्होंने एक हुक्म ये दिया के ज़ख्मियों और लाशों को संभालो और दूसरा हुक्म ये के तमाम लश्कर इकठ्ठा किया जाए। उन्होंने सालार शरजील(र०) को बुलाया।

"वलीद के बेटे!"-शरजील(र०) ने आते ही ख़ालिद(र०) से कहा-"खुदा की क़सम, तू अल्लाह की तलवार है। तू अल्लाह की मदद बन कर आया है।"

"लेकिन तू ने ये क्या किया इब्ने हस्ना!"-ख़ालिद(र०) ने गुस्से से कहा-"क्या तू नहीं जानता था के ये क़स्बा दुश्मन का मज़बूत क़िला है और यहां बे शुमार फौज होगी? क्या इतनी थोड़ी नफरी से तू ये क़िला सर कर सकता था?"

"मैंने अबु उबैदा(र०) के हुक्म की तामील की है इब्ने वलीद!"-शरजील(र०) ने कहा।

"आह अबु उबैदा(र०)!-ख़ालिद(र०) ने आह ले कर कहा-"मैं उस का अहतराम करता हूं। वो मुत्तक़ी और परहेज़गार है लेकिन मैदाने जंग को वो अच्छी तरह नहीं समझता।"

मोअररि़ख़ वाक़दी लिखता है के अबु उबैदा(र०) को सब, ख़सूसन ख़ालिद(र०), बुज़ुर्ग व बरतर समझते थे लेकिन जिस नोइयत की लड़ाईयां लड़ी जा रही थीं इन के लिए अबु उबैदा (र०) मोज़ूं नहीं थे लेकिन जहां नफरी की कमी थी वहां सालारों की भी कमी थी। बहरहाल, मोअररि़ख़ लिखते हैं के अबु उबैदा(र०) जज़्बे और हौसले में किसी से पीछे नहीं थे और वो बड़ी तेज़ी से तजुर्बा हासिल करते जा रहे थे। बसरा पर उन का हमला जुर्रतमंदाना इक़दाम था।

❁

ख़ालिद(र०) क़िले के बाहर अपनी और शरजील(र०) की नफरी का हिसाब कर रहे थे और ये मालूम करने की कोशिश भी कर रहे थे के क़िले के अंदर कितनी नफरी है। मुसलमानों के हाथ में चन्द एक रोमी सिपाही आ गए थे जो ज़ख़्मी थे। ख़ालिद(र०) के लश्कर के आजाने से मुसलमानों की नफरी

तेरा हज़ार हो गई थी लेकिन रोमियों, गुस्सानियों और इसाईयों की तादाद दुगनी से भी ज्यादा थी।

"क्या तुम भी डर कर भाग आए हो?"-क़िले के अन्दर जबला बिन लाहीम रोमी फौज के सिपह सालार पर गुस्सा झाड़ रहा था-"क्या तुम ने उस फौज का जो क़िले के अन्दर थी और शहर के लोगों का हौसला तोड़ नहीं दिया?"

"नहीं!"-रोमी सिपह सालार ने कहा-"मैं मुसलामनों पर बाहर निकल कर हमला कर रहा हूं। अगर मैं उन के अक़ब में गए हुए दस्तों को पीछे न हटा लेता तो उन के अक़ब से मुसलमान सालार इन्हें बुरी तरह काट देते। मुझे इन की नफरी का अंदाज़ा नहीं था। मैं सिर्फ एक दिन इन्तेज़ार करूंगा। हो सकता है इन की मज़ीद फौज आ रही हो। मैं इन्हें आराम करने की मोहलत नहीं दूंगा।"

"फिर इन्हें क़िले का मुहासरा कर लेने दो"-जबला ने कहा-"इन्हें क़िले के इर्द गिर्द फेल जाने दो, फिर तुम क़िले से इतनी तेज़ी से निकलना के इन्हें अपने दस्ते इक्ळा करने की मोहलत न मिले....और शहर में ऐलान कर दो के घबराने की कोई वजह नहीं। दुश्मन को क़िले के बाहर ही ख़म कर दिया जाएगा।"

क़िले के अन्दर हड़बोंग बपा थी। शहरियों में भगदड़ और अफरातफरी मची हुई थी। रोमी फौज का बाहर जाकर लड़ना और अन्दर आजाना शहरियों के लिए दहशतनाक था। मुसलमान फौज की डरावनी डरावनी सी बातें तो शहर में पहले ही पहुंची हुई थी।

मोअररि्ख़ों के मुताबिक़ रोमियों ने ये सोचा था के मुसलमानों को आराम की मोहलत न दी जाए लेकिन इन्हें मालूम न था के मुसलमान आराम करने के आदी ही नहीं। इन्हें इतनी ही मोहलत की ज़रूरत थी के ज़ख़्मियों को संभाल लें और शहीदों की लाशें दफ्न कर लें।

❁

अगले रोज़ का सूरज तुलू होने तक रोमी फौज क़िले से बाहर आ गई और दरवाज़े बन्द हो गए। ख़ालिद(र०) ने अपने लश्कर को जंगी तरतीब में कर लिया। क़िले के बाहर खुला मैदान था।

ख़ालिद(र०) ने हस्बे मामूल अपने लश्कर को तीन हिस्सों में तक़सीम कर दिया। क़ल्ब की कमान अपने पास रखी। अब चूंके इन्हें शरजील(र०) के

चार हज़ार मुजाहेदीन मिल जाने से उन के पास नफरी कुछ ज़्यादा हो गई थी इस लिए उन्होंने क़ल्ब को महफूज़ रखने के लिए एक दस्ता क़ल्ब के आगे रखा। इस दस्ते की कमान ख़लीफ़ातुलमुस्लेमीन के बेटे अब्दर्रहमान बिन अबुबकर(र०) के पास थी।

एक पहलू के दस्तों के सालार राफे बिन उमेरा और दूसरे पहलू के सालार ज़रार बिन लाज़ोर थे।

जंग का आग़ाज़ मुसलमानों के नारा-ए-तकबीर से हुआ। रोमी सिपह सालार अपने क़ल्ब के आगे आगे आ रहा था। अब्दुर्रहमान बिन अबुबकर(र०) जवान थे। ख़ालिद(र०) ने जूं ही उन के दस्ते को आगे बढ़ने का हुक्म दिया, अब्दुर्रहमान(र०) सीधे रोमी सालार की तरफ गए। लड़ाई शुरू होने से पहले ही उन की नज़रें इस रोमी सिपह सालार पर लगी हुई थीं।

अब्दुर्रहमान(र०) ने घोड़े को ऐड़ लगाई और तलवार सूंत कर उस की तरफ गए मगर उसके क़रीब गए तो वो बड़ी फूर्ती से आगे से हट गया। अब्दुर्रहमान(र०) आगे निकल गए। रोमी ने घोड़ा मोड़ा और अब्दुर्रहमान के पीछे गया। अब्दुर्रहमान(र०) घोड़ा मोड़ते मोड़ते देख लिया। रोमी ने वार कर दिया जो अब्दुर्रहमान(र०) बचा गए। तलवार का ज़न्नाटा उन के सर के क़रीब से गुज़रा।

अब अब्दुर्रहमान(र०) उस के पीछे थे। रोमी घोड़ा मोड़ रहा था। अब्दुर्रहमान(र०) ने तलवार का ज़ोरदार वार किया जिस से रोमी तो बच गया लेकिन उस के घोड़े की ज़ीन का तंग कट गया और ज़र्ब घोड़े को भी लगी। घोड़े का खून फूट आया और वो रोमी के क़ाबू से निकलने लगा।

रोमी तजुर्बाकार जंगजू था। उस ने बड़ी महारत से घोड़े को क़ाबू में रखा और उस ने वार भी किए। अब्दुर्रहमान(र०) ने हर वार बचाया और जब उन्होंने रकाबों में खड़े हो कर वार किए तो रोमी घबरा गया। उस के आहनी खुद और ज़िरा ने उसे बचा लिया लेकिन अपनी एक टांग को न बचा सका। घुटने के ऊपर से इस की टांग ज़ख्मी हो गई। ताबड़तोड़ वार उसे मजबूर करने लगे के वो भागे और वो भाग उठा। उसे अपनी जान का ग़म था या नहीं, उसे ख़तरा ये नज़र आ रहा था के वो गिर पड़ा तो इस का सारा लश्कर भाग उठेगा। ये सोच कर वो अपने लश्कर में ग़ायब होने की कोशिश करने लगा। अब्दुर्रहमान(र०) इस के तआक़्क़ुब से न हटे। वो उन के हाथ तो न आया लेकिन अपने लश्कर की नज़रों से भी ओझल हो गया।

ख़ालिद(र०) ने रोमियों पर इस तरह हमला किया के सालार राफे बिन उमेरा और सालार ज़रार बिन लाज़ोर को हुक्म दिया के वो बाहर को हो कर रोमियों पर दायें और बायें से तेज़ और शदीद हल्ला बोलें। मुजाहेदीन शदीद का मतलब समझते थे। मोअररिख़ों की तहरीरों के मुताबिक़ ये हल्ला इतना तेज़ और इतना सख़्त था जैसे मुजाहेदीन ताज़ा दम हों और इन की तादाद दुश्मन से दुगनी हो। दोनों सालारों के दस्ते दीवांगी के आलम में हमला आवर हुए।

मोअररिख़ वाक़दी और इब्ने क़तीबा लिखते हैं के सालार ज़रार ने जोश में आ कर अपनी ज़िरा उतार फैंकी। ये हल्की सी थी लेकिन जुलाई का आंग़ाज़ था और गर्मी उरूज पर थी। ज़रार ने गर्मी से तंग आ कर और लड़ाई में आसानी पैदा करने के लिए ज़िरा उतारी थी। उन्होंने अपने दस्तों को हमले का हुक्म दिया। इन का घोड़ा अभी दुश्मन के क़रीब नहीं पहुंचा था के उन्होंने क़मीज़ भी उतार फैंकी। इस तरह उन का ऊपर का धड़ बिलकुल नंगा हो गया।

ऐसी खूंरेज़ लड़ाई में ज़िरा ज़रूरी थी और सर की हिफाज़त तो और ज़्यादा ज़रूरी थी लेकिन ज़रार बिन लाज़ोर ने अपनी जान हथेली पर रख ली थी। इन्हें इस हालत में देख कर उन दस्तों मे कोई और ही जोश पैदा हो गया। ज़रार दुश्मन को लल्कारते और टूट टूट पड़ते थे। उन के सामने जो आया इन की तलवार से कट गया। वो सालार से सिपाही बन गए थे।

राफे बिन उमेरा ने रोमियों के दूसरे पहलू पर हल्ला बोला था। उन का अंदाज़ ऐसा ग़ज़बनाक था के दुश्मन पर ख़ौफ तारी हो गया।

ख़ालिद(र०) ने जब देखा के ज़रार और राफे ने दोनों पहलूओं से वैसा ही हल्ला बोला है जैसा वो चाहते थे और दुश्मन के पहलू क़ल्ब की तरफ सुकड़ रहे हैं तो ख़ालिद(र०) ने सामने से हल्ला बोल दिया।

रोमी पीछे हटने लगे लेकिन पीछे क़िले की दीवार थी जो दरअसल शहर पनाह थीं। उन के लिए पीछे हटने को जगह न रही। मुजाहेदीन इन्हे दबाते चले

"दरवाज़े खोल दो"-दीवार के ऊपर से कोई चिल्लाया।

क़िले के उस तरफ के दरवाज़े खुल गए और रोमी सिपाही क़िले के अन्दर जाने लगे। इन्हें क़िले में ही पनाह मिल सकती थी। मुसलमानों ने दबाव जारी रखा और रोमी जम कर मुक़ाबले करते रहे। इन में से जिसे मौक़ा मिल जाता वो क़िले के अन्दर चला जाता।

जो रोमी क़िले में पनाह लेने को जा रहे थे वो इनकी तमाम नफरी नही थी। उन की आधी नफरी भी नही थी। उन की आधी नफरी ख़ालिद(र०) के दस्तों से नबर्द आज़मा थी। ख़ालिद(र०) ने जब देख लिया था के उन के पहलूओं के सालारों ने वैसा ही हमला किया है जैसा वो चाहते थे तो उन्होंने दुश्मन के क़ल्ब पर हमला कर दिया। रोमी बड़े अच्छे सिपाही थे। वो पस्पा होने की नहीं सोच रहे थे और ख़ालिद(र०) इन्हें पस्पाई के मुक़ाम तक पहुंचाने की सर तोड़ कोशिश कर रहे थे।

ख़ालिद(र०) ने शुजाअत का और बेख़ौफ क़यादत का ये मुज़ाहेरा किया के घोड़े से उतर आए और सिपाहियों की तरह पा पियादा लड़ने लगे। इस का असर मुजाहेदीन पर ऐसा हुआ के वो बिजलियों की मानिंद कूंदने लगे। ये उन के ईमान का और इश्के रसूल(स०) का करिश्मा था के मुसलसल कूच और मआरक़ों के थके हुए जिस्मों में जान और ताज़गी पैदा हो गई थी। ये मुबाल्ग़ा नहीं के वो रूहानी कुव्वत से लड़ रहे थे।

ख़ालिद(०) इस कोशिश में थे के रोमियों को घेरे में ले लें लेकिन रोमी ज़िन्दगी और मौत का मआरका लड़ रहे थे। वो अब वार और हल्ले रोकते और पीछे या दायें बायें हटते जाते थे। वो मुहासरे से बचने के लिए फैलते भी जा रहे थे। आख़िर वो भी भाग भाग कर क़िले के एक और ख़ुले दरवाज़े में ग़ायब होने लगे।

ख़ालिद(र०) ने बुलंद आवाज़ से हुक्म दिया-"इन के पीछे क़िले में दाख़िल हो जाओ"-लेकिन दीवार के ऊपर से तीरों की बौछाड़ें आने लगीं। बरछियां भी आईं। मुजाहेदीन को मजबूरन पीछे हटना पड़ा और रोमी जो बच गए थे वो क़िले में चले गए और क़िले का दरवाज़ा बन्द हो गया।

बाहर रोमियों और इन के इत्तेहादी इसाईयों की लाशें बिख़री हुई थी। ज़ख्मी तड़प रहे थे। ज़ख्मी घोड़े बिदके और डरे हुए बे लगाम और मुंह ज़ोर हो कर दौड़ते फिर रहे थे। चन्द एक घुड़सवारों के पांव रकाबों में फंसे हुए थे और घोड़े इन्हें घसीटते फिर रहे थे। सवार खून में नहाई हुई लाशें बन चुके थे।

लड़ाई ख़त्म हो चुकी थी। मुजाहेदीन के फातेहाना नारे गरज रहे थे। फतह अभी मुकम्मल नहीं हुई थी। दुश्मन का नुक़सान तो बहुत हुआ था लेकिन वो क़िले बन्द हो गया था। फतह मुकम्मल करने के लिए क़िला सर

करना ज़रूरी था। ख़ालिद(र०) ने अपने ज़ख़्मियों को उठाने का हुक्म दिया और क़ासिद से कहा तमाम सालारों को बुला लाए।

❁

ख़ालिद(र०) ने एक सवार को देखा जो उन की तरफ आ रहा था। वो दूसरों से कुछ अलग थलग लगता था। एक इस लिए के उस का क़द लम्बा था और जिस्म दुबला पतला था। अरब ऐसे दुबले पतले नहीं होते थे। ये सवार कुछ आगे को झूका हुआ भी था। उस की दाढ़ी घनी नहीं थी और लम्बी भी. नहीं थी। इस दाढ़ी को इस शख़्स ने मसनवी तरीक़े से काला कर रखा था।

वो इस लिए भी अलग थलग लगता था के ख़ालिद(र०) ने उसे लड़ते देखा था और इस का अंदाज़ कुछ मुख़्तलिफ सा था। सब की तवज्जह इस शख़्स की तरफ इस वजह से भी हुई थी के उस के हाथ में पीले रंग का परचम था। ये वो परचम था जो ख़ेबर की लड़ाई में रसूले अकरम(स०) ने अपने साथ रखा था।

ख़ालिद(र०) उसे पहचान न सके। धूप बहुत तेज़ थी। उस ने सर पर कपड़ा डाल रखा था जिस से उस का आधा चेहरा ढका हुआ था। ख़ालिद(र०) के क़रीब आ कर वो शख़्स मुस्कुराया तो ख़ालिद(र०) ने देखा के इस आदमी के सामने के दो तीन दांत टूटे हुए हैं।

"अबु उबैदा(र०)!"-ख़ालिद(र०) ने मुसर्रत से कहा और उस की तरफ़ दौड़े।

वो अबु उबैदा(र०) थे। मर्ज राहित से ख़ालिद(र०) ने इन्हें पैग़ाम भेजा था के वो इन्हें बसरा के बाहर मिले अबु उबैदा(र०) हवारीन के मुक़ाम पर पड़ाव डाले हुए थे जहां से उन्होंने शरजील(र०) बिन हस्ना को चार हज़ार मुजाहेदीन दे कर बसरा पर हमला कराया था। उन के पास ख़ालिद(र०) का क़सिद बाद में पहुंचा था। अबु उबैदा(र०) पैग़ाम पर उस वक़्त बसरा पहुंचे जब ख़ालिद(र०) रोमियों के साथ बड़े सख़्त मआरके में उल्झे हुए थे। उन्होंने तलवार निकाली और मआरके में शामिल हो गए।

अबु उबैदा(र०) की उस वक़्त उम्र पचपन साल के लगभग थी। वो रसूले करीम(स०) के खास साथियों में से थे। इन के दादा अपने वक़्तों के मशहूर जर्राह थे। इसी निस्बत से उन्होंने अपना नाम अबु उबैदा बिन जर्राह(र०) रख लिया था। इन का नाम आमिर बिन अब्दुल्ला बिन जर्राह था लेकिन उन्होंने उबैदा(र०) के नाम से शोहरत हासिल की। दुबला पतला और कुछ

झुका होने के बावजूद उनके चेहरे पर जलाल जैसी रौनक़ रहती थी। वो दानिशमंद थे। मैदाने जंग में वो कोई मुक़ाम पैदा न कर सके लेकिन ज़हानत और अक़्लमंदी में उन का मुक़ाम ऊंचा था।

अबु उबैदा(र०) के सामने के दांत जंगे ओहद में टूटे थे। इस मआरके में रसूले अकरम(स०) ज़ख़्मी हो गए थे। आप(स०) के खुद की ज़ंजीरों की दो कड़ियां आप(स०) के रूख़सार में ऐसी गहरी उतरी थीं के हाथ से निकलती नहीं थी। अबु उबैदा(र०) ने ये दोनों अपने दांतों से निकाली थीं और इस कामयाब कोशिश में उन के सामने के दो तीन दांत टूट गए थे।

इब्ने क़तीबा ने लिखा के रसूल अल्लाह(स०) अबु उबैदा(र०) से बहुत मोहब्ब्त करते थे और आंहुज़ूर(स०) ने एक बार फरमाया था था के अबु उबैदा(र०) मेरी उम्मत का अमीन है। इस हवाले अबु उबैदा(र०) को लोग अमीनुलउम्मत कहने लगे।

उस दौर की तहरीरों से पता चलता है के ख़ालिद(र०) ने जब अबु उबैदा(र०) को बसरा के मैदान में देखा तो उन्हें ख़दशा महसूस हुआ के उबैदा(र०) इन की सिपह सालारी को कुबूल नहीं करेंगे। गो ख़लीफातुल मुस्लेमीन ने अबु उबैदा(र०) को तहरीरी हुक्म भेजा था के जब ख़ालिद(र०) शाम के मुहाज़ पर पहुंच जाऐं तो तमाम लश्कर के सालार आला ख़ालिद(र०) होंगे लेकिन ख़ालिद(र०) को अह्सास था के मआशरे में जो मुक़ाम और रूत्बा अबु उबैदा(र०) को हासिल था वो इन्हें हासिल नहीं था। ख़ालिद(र०) खुद भी अबु उबैदा(र०) क़ा बहुत अहतराम करते थे।

ये अहतराम ही था के बसरा के मैदाने जंग में ख़ालिद(र०) ने इन्हें अपनी तरफ आते देखा तो ख़ालिद(र०) दौड़कर उन तक पहुंचे। अबु उबैदा(र०) घोड़े से उतरने लगे।

"नहीं इब्ने अब्दुल्ला!"-ख़ालिद(र०) ने अबु उबैदा(र०) से कहा-"घोड़े से मत उतरो। मैं इस क़ाबिल नहीं हूं के अमीनुलउम्मत मेरे लिए घोड़े से उतरे।"

अबु उबैदा(र०) घोड़े पर सवार रहे और झुक कर दोनों हाथ ख़ालिद(र०) की तरफ बढ़ाए। ख़ालिद(र०) ने अहतराम से मुसाफह किया।

"अबु सुलेमान!"-अबु उबैदा(र०) ने ख़ालिद(र०) से कहा-"अमीरूलमोमेनीन का पैग़ाम मुझे मिल गया था जिस में उन्होंने तुम्हें हम सब का सालारे आला मुक़र्रर किया है। मैं इस पर बहुत खुश हूं। कोई शक नहीं के जंग के मामलों में

जितनी अक्ल तुझ में है वो मुझ में नहीं।"

"खुदा की क़सम इब्ने अब्दुल्ला!"–ख़ालिद(र०) ने कहा–"अमीरूलमोमेनीन(र०) के हुकम की तामील मुझ पर फर्ज़ है वरना मैं तुम पर सिपह सालार कभी न बनता। रूत्बा जो तुम्हें हासिल है वो मुझे नही।"

"ऐसी बात न कर अबु सुलेमान!"–अबु उबैदा(र०) ने कहा–"अबु बकर(र०) ने बिल्कुल सही फैसला किया है। मै तेरे मातहत हूं। तेरे हुक्म पर आया हूं। अल्लाह तुझे ग़स्सानियों और रोमियों पर फतह अता फरमाए।"

❁

ख़ालिद(र०) ने बसरा को मुहासरे में लेने का हुक्म दिया। रोमियों और इसाईयों की लाशें जहां पड़ी थीं वही पड़ी रहीं। ऊपर गिद्धों के ग़ोल उड़ रहे थे और दरख्तों पर उतर रहे थे। मुजाहेदीन अपने शहीदों की लाशें उठा रहे थे। इन की तादाद एक सौ तीस थी।

ख़ालिद(र०) ने शहर पनाह के इर्द गिर्द घोड़ा दौड़ा कर जायज़ा लिया के दीवार कहीं से तोड़ी जा सकती है या नहीं। दीवार के ऊपर से तीर आ रहे थे लेकिन मसुलमान इन की ज़द से दूर थे।

क़िले के अन्दर मायूसी छाई हुई थी। जबला बिन लाहीम और रोमी सिपह सालार ख़ामोशी से एक दूसरे का मुंह देख रहे थे।

"क्या तुम हिम्मत बिल्कुल ही हार बैठे हो?"–जबला बिन लाहीम ने रोमी सालार से पूछा।

"तुम ने कहां कहां हिम्मत नही हारी!"–रोमी सालार ने शिकस्त का गुस्सा जबला पर निकाला और कहा–"मुसलमानों के रास्ते में सब से पहले तुम और इसाई आए थे और मुसलमानों को न रोक सके। मर्ज राहित में भी तुम्हारी फौज नाकाम रही। क्या तू मुझे और मेरी फौज को मरवाना चाहता है? बाहर निकल के देख। फौज की कितनी नफरी रह गई है हमारे साथ? कुछ नफरी मैदाने जंग में मारी गई है, और मुझे बताया गया हैं के हमारे बहुत से सिपाही और कमांडर अजनादीन की तरफ भाग गए हैं। क़िले में थोड़ी सी नफरी आई है। दीवार पर जा के बाहर देख और लाशों से हिसाब कर के हमारे पास किया रह गया है।"

बाहर से मुसलमानों की लल्कार सुनाई दे रही थी।

"रोमी सालार बाहर आ कर सुलह की बात करे।"

"रोमियों! क़िला हमारे हवाले कर दो।"

"हम ने खुद क़िला सर किया तो हम से रहम की उम्मीद न रखना।"

इस के साथ ही ख़ालिद(र०) के हुक्म से मुजाहेदीन दरवाज़ा तोड़ने के लिए आगे जाते रहे मगर ऊपर के तीरों ने इन्हें कामयाब न होने दिया। उन्होंने एक जगह से दीवार तोड़ने की कोशिश भी की लेकिन कामयाबी न हुई।

शहर के लोगों पर ख़ौफ तारी था। वो मुसलामनों की लल्कार सुन रहे थे। वो जानते थे के फातेह फौजें शहर के लोगों को किस तरह तबाह किया करती हैं। मुसलमान कह रहे थे के क़िला खुद दे दोगे तो शहरी और इन के घर महफूज़ रहेंगे।

जबला बिन लाहीम और रोमी सालार कमरे से बाहर नहीं आते थे। शहर के लोग एक एक लम्हा ख़ौफ व हिरास में गुज़ार रहे थे। वो तंग आकर जबला के महल के सामने इक्ळे हो गए।

"मुसलमानों से सुलह कर लो"-वो कह रहे थे-"हमें बचाओ। क़िला इन्हें दे दो। हमारा क़त्ले आम न कराओ।"

जबला और रोमी सालार ने तीन चार दिनों तक कोई फैसला न किया। ख़ालिद(र०) ने मुहासरे के बहाने अपने लश्कर को आराम की मोहलत दे दी। उन्होंने शहीदों का जनाज़ा पढ़ कर इन्हे दफ्न कर दिया।

आख़िर एक रोज़ क़िले पर सफेद झझडा नज़र आया। क़िले का दरवाज़ा खुला और रोमी सालार बाहर आया। इस ने सुलह की भीक मांगी। ख़ालिद(र०) ने उन पर ये शर्त आयद की वो जज़िया अदा करें। रोमी सालार ने क़िला ख़ालिद(र०) के हवाले कर दिया। ये जूलाई 634ई० (जमादीउलअव्वल) का वस्त था।

रोमी और गुस्सानी क़िले से निकलने लगे।

शरजील(र०) बिन हस्ना ने देखा था के रोमी सिपाही अजनादीन की तरफ भाग रहे थे। शरजील(र०) ने अपना एक जासूस अजनादीन भेज दिया। इस जासूस ने आकर इत्तेला दी रोमी फौज अजनादीन में जमा हो रही हं और तवक्क़ो है के वहां नव्वे हज़ार फौज तैयार हो जाएगी।

"हमारी अगली मंज़िल अजनादीन होगी"-ख़ालिद(र०) ने कहा।

नेपोलियन उन जरनेलों में से था जिन्होंने अपने अपने दौर में तारीख़ का पांसा पल्टा और कुर्रा-ए-अर्ज़ को हिला दिया था। फ्रांस के तारीख़ साज़ जरनेल हुक्मरां नेपोलियन ने ख़ालिद(र०) बिन वलीद के मुताल्लिक़ कहा था-"अगर मुसलमानों की फौज का सिपह सालार कोई और होता तो ये फौज अजनादीन की तरफ पेशक़दमी ही न करती।"

नेपोलियन का दौर ख़ालिद(र०) के दौर के तक़रीबन बारह सौ साल बाद का था। तारीख़ के इस नामूर जरर्नल ने तारीख़ के मआदूदे चन्द जरनेलों की जंगी क़यादत का, इन की कामयाबियों और नाकामियों का और इनकी फौजों की कैफियत और कारकर्दगी का गहरा मुतालेआ किया था। जूलाई 634ई० में बसरा की फतह के बाद ख़ालिद(र०) ने अपनी फौज को अजनादीन की तरफ पेशक़दमी का जो हुक्म दिया था वो मुसलामनों की फौज की जिस्मानी कैफियत और तादाद के बिल्कुल ख़िलाफ था। इन्हें जासूस ने सही रिर्पोट दी थी के अजनादीन में रोमियों ने जो फौज मुसलामनों को कुचलने के लिए इक्ळी कर रखी है, इस की तादाद नव्वे हज़ार से ज़्यादा हो सकती है कम नही। ये फौज ताज़ा दम थी। इस के मुक़ाबले में मुसलमानों की तादाद तीस हज़ार के लगभग थी और ये फौज मुसलसल लड़ती चली जा रही थी। सिर्फ बसरा की लड़ाई में एक सौ तीस मुजाहेदीन शहीद और बहुत से ज़ख्मी हुए थे।

यहां मोज़ू मालूम हाता है के उस दौर की इस्लामी फौज के मुताल्लिक़ कुछ तफसील पेश की जाए। इस्लामी फौज की कोई वर्दी नही थी। जिस किसी को जैसे कपड़े मयस्सर आते थे वो पहन लेता था। ऐसा तो अकसर देखने में आता था के कई सिपाहियों ने बड़े क़ीमती कपड़े पहन रखे हैं और सालार, नायब सालार वग़ैरा बिल्कुल मामूली लिबास में हैं। वजह ये थी के सिपाही माले ग़नीमत में मिले हुए कपड़े पहन लेते थे।

इस्लामी फौज की एक खूबी ये थी के सालारों, कमांडरों यानी अफसरों का

कोई इम्तयाज़ी निशान न था। अफसरी का ये तसुव्वर ही नही जो आज कल है। बाज़ क़बीलों के सरदार सिजाही थे और इन्ही क़बीलों के बाज़ अदना से आदमी कमांडर थे। ओहदे और तरक्कियां नही थी। आज एक आदमी जज़्बे के तहत फौज में सिपाही की हैसियत से शामिल हुआ है तो एक दो रोज़ बाद वो एक दस्ते का कमांडर बन गया है। जज़्बा और जंगी अहलियत देखी जाती थी। ऐसे भी होता था के एक मआरके का अफसर अगले मआरके में सिपाही हो।

इस्लाम की तालीमात के मुताबिक़ अफसरी और मातहती का तसुव्वर कुछ और था। जिस किसी को अफसर बनाया जाता था वो फराइज़ की हद तक अफसर होता था। उस का कोई हुक्म ज़ाती नोइयत का नहीं होता था। चूंके अफसर के इन्तेख़ाब का मैयार कुछ और था इस लिए उस वक़्त का मआशरा खुशामद और सिफारिश से आशना ही नहीं हुआ था।

इतनी वसी इस्लामी सल्तनत का ज़वाल उस वक़्त शुरू हुआ था जब मुसलमान अफसर और मातहत में तक़सीम हो गए थे और हाकिमों ने मातहतों को महकूम समझना शुरू कर दिया था और वो खुशामद पसंद हो गए थे।

हथियारों का भी कोई मैयार न था। फौज में शामिल होने वाले अपने हथियार खुद लाते थे। ज़िरा और खुद हर किसी के पास नहीं होती थी। मसुलमान सिपाही जो ज़िरा और खुद पहनते थे वो दुश्मन से छीनी हुई होती थीं। इन में उस क़िस्म की यकसानियत नहीं होती थी जैसी फौजों में हुआ करती है।

इस्लामी फौज का कूच मुनज़्ज़म फौज जैसा नहीं होती था। ये फौज ग़ैर मुनज़्ज़म क़ाफले की मानिंद चलती थी। इन की खूराक और रसदइन के साथ होती थी। बैल, गायें, दुम्बे और भेड़ बकरियां जो फौज की खुराक बनती थी, फौज के साथ होती थीं। रसद का बाक़ायदा इन्तेज़ाम बहुत बाद में किया गया था।

घुड़सवार कूच के वक़्त पैदल चला करते थे ताके घोड़े सवारों के वज़न से थक न जाएं। सामान ऊंटों पर लदा होता था। औरतें और बच्चे साथ होते थे। इन्हें ऊंटों पर सवार कराया जाता था।

उस वक़्त की इस्लामी फौज को देख कर कोई नही कह सकता था के ये फौज है। इसे काफला समझा जाता था लेकिन इस फौज की एक तनज़ीम थी। आगे हराविल दस्ता होता था जिसे अपने फराइज़ और ज़िम्मेदारियों का पूरा अहसास होता था। इस के पीछे फौज का बड़ा हिस्सा, इस के पीछे औरतें और बच्चे और इस के पीछे अक़ब की हिफाज़त के लिए एक दस्ता होता था। इसी तरह पहलूओं की हिफाज़त क़ा भी इन्तेज़ाम होता था।

ये फौज उमूमन दुश्वार रास्ता इख्तियार किया करती थी। इस से एक फायदा ये होता था के मंज़िल तक का रास्ता छोटा हो जाता था। दूसरा फायदा ये के रास्ते में दुश्मन के हमले का ख़तरा नही रहता था। अगर दुश्मन हमला कर भी देता तो इस्लामी फौज फौरन इलाके़ की दुश्वारियों यानी नशीब व फराज़ वग़ैरा में रूपोश हो जाती थी। दुश्मन ऐसे इलाके़ में लड़ने के जुर्रत नही करती था।

❁

जूलाई 634ई० के आख़री हफ्ते में ख़ालिद की फौज इसी तरह अजनादीन की तरफ पेश क़दमी कर रही थी। पहले सुनाया जा चुका है के मदीने की फौज के चार हिस्से मुख़तलिफ मुक़ामात पर थे। ख़ालिद ने इन के सालारों को पैग़ाम भेज दिए थे के सब अजनादीन पहुंच जाऐं।

ख़ालिद ने बसरा पर क़ब्ज़ा कर लिया था। रोमियों और गुस्सनियों के लिए ये चोट मामूली नही थी। बसरा शाम का बड़ा अहम शहर था। ये मुसलामनों का अड्डा बन गया था। सब से बड़ा नुक़सान रोमियों को ये हुआ था के लोगों पर और उन की फौज पर मसलमानों की धाक बैठ गई थी। मुसलामनों ने बसरा तक शिकस्तें दी थीं।, कहीं भी शिकस्त खाई नही थी। कही एक सालार को पस्पा होना पड़ा तो फौरन दूसरे सालार ने शिकस्त को फतह में बदल दिया। क़ैसरे रोम की तो नींदें हराम हो गई थी। ख़ालिद ने जब बसरा को मुहासरे में ले रखा था और सूरते हाल बता रही थी थी के बसरा रोमियों के हाथ से जा रहा है तो शहंशाहे हरकुल रोमी ने हमस के हाकिम विरदान को एक पैग़ाम भेजा था।

"क्या तुम शराब में डूब गए हो या तुम उन औरतों जैसी औरत बन गए हो जिन के साथ तुम्हारी रातें गुज़रती हैं?"-हरकुल ने लिखा था-"और इस में कोई शक नही के तुम्हारा दिन ऊंघते गुज़रता है। क्या है इन मुसलमानों के पास जो तुम्हारे पास नही? अगर मैं कहूं के कैसरे रोम की ज़िल्लत के ज़िम्मेदार तुम जैसे हाकिम है तो क्या जवाब दोगे? शायद ये भी नहीं सोच रहे के मुसलमानों की इतनी तेज़ पेश क़दमी और फतह पे फतह हासिल करते चले आने को किस तरह रोका जा सकबता है। क्या तुम्हारी तलवारों को ज़ंग ने खा लिया है? क्या तुम्हारे घोड़े मर गए है? लोगों को तुम बताते क्यों नहीं के मुसलमान तुम्हारे माल व अमवाल लूट लेंगे, तुम्हारी बेटियों को, तुम्हारी बीवियों और तुम्हारी बहनों को अपने क़ब्ज़े में ले लेंगे!....मुझे बताया गया है के मुसलमानों की तादाद तीस हज़ार से ज़रा कम या ज़्यादा है। तुम ज़्यादा से ज़्यादा फौज इक्ळी करो और अजनादीन के इलाक़े में पहुंच जाओ। मुहाज़ को इतना फैला दो के मुसलमान इस के मुताबिक़ फैलें तो इन की हालत कच्चे धोगे की सी हो जाए...

...इन्हें अपनी तादाद में जज़्ब कर लो। इन्हें अपनी तादाद में गुम कर दो।

रोमियों की बादशाही में हंगामा बपा हो गया था। रोमियों और इसाईयों की इबादत गाहों में पादरियों और पुरोहितों ने मुसलमानों के ख़िलाफ इश्तेआल अंगेज़ वाज़ शुरू कर दिए थे। वो कहते थे के इस्लाम उन के मज़हबों को हमेशा के लिए ख़त्म कर देगा और इन्हें मजबूरन इस्लाम कुबूल करना पड़ेगा और ये ऐसा गुनाह होगा जिस की सज़ा बड़ी भयानक होगी।

रोमियों की फौज एक मुनज़्ज़म लश्कर था। इन के पास घोड़ों की तादाद ज़्यादा थी और इन के पास गाड़ियां भी थीं जो घोड़े और बैल खींचते थे। रसद का इन्तेज़ाम बहुत अच्छा था। इबादत गाहों में लोगों ने वाज़ सुने तो वो फौज में शामिल होने लगे। इस तरह फौज की तादाद नव्वे हज़ार थी।

मुसलनमानों के जासूसों ने इस लश्कर को अजनादीन के इलाक़े में खे़मा ज़न होते देखा था। इतने बड़े और ऐसे मुनज़्ज़म लश्कर के मुक़ाबले के लिए जाना ही बहुत बड़ी जुर्रत थी, मुक़ाबला तो बाद का मसला था।

❁

24 जूलाई 634ई० के रोज़ ख़ालिद(र०) अपनी फौज के साथ अजनादीन पहुंच गए। वो बैतुलमुक़द्दस के जुनूब में पहाड़ों में से गुज़रे थे। इन पहाड़ियों के एक तरफ मैदान था। ख़ालिद(र०) ने वहां क़याम का हुक्म दिया। तक़रीबन एक मील दूर रोमी फौज खे़मा ज़न थी। इस का सालारे आला विरदान और सालार कुबकुलार था। रोमी फौज तो जैसे इन्सानों का समुंद्र था। मुसलामनों की फौज इस के मुक़ाबले में छोटा सा दरिया लगती थी।

इस्लामी फौज के जो दस्ते दूसरी जगहों पर थे वो आ गए और मुसलमानों की तादाद बत्तिस हज़ार हो गई। एक मील कोई ज़्यादा फासला नही होता। मुसलमान ऊंची जगहों पर खड़े हो कर रोमियों की खे़मागाह की तरफ देखते थे। इन्हें हद्दे निगाह तक इन्सान और घोड़े नज़र आते थे। दो तीन दिनों बाद ख़ालिद(र०) को बताया गया के फौज में कुछ घबराहट सी पाई जाती है।

मोअर्रिख़ लिखते है के उन नौहज़ार मुजाहेदीन में ज़रा सी भी घबराहट नही थी जो ख़ालिद(र०) के साथ थे। वो इसाईयों, गुस्सानियों और रोमियों के ख़िलाफ लड़ते चले आ रहे थे। वो रोमियों की इतनी ज़्यादा फौज से खौ़फज़दा नही थे। दूसरे दस्तों का हौसला बढ़ाने के लिए ख़ालिद(र०) खे़मागाह में घूमने फिरने लगे। वो जहां रूकते उन के इर्द गिर्द मुजाहेदीन का मजमा लग जाता। ख़ालिद(र०) ने सब से एक ही जैसे अल्फाज़ कहे:

"इस्लाम के सिपाहियों! मै जानता हूं तुम ने इतनी ज़्यादा रोमी फौज पहले कभी नही देखी लेकिन तुम इतनी बड़ी फौज को पहले शिकस्त दे चुके हो। खुदा की क़सम, तुम डर गए तो हार जाओगे और अगर तुम ने इस लश्कर पर फतह पा ली तो रोमी हमेशा के लिए ख़त्म हो जाऐंगे। अपने अल्लाह के नाम पर लड़ो। इस्लाम के नाम पर लड़ो। अगर तुम ने पस्पाई इख़्तियार की तो दोज़ख़ की आग में जलोगे। जब लड़ाई शुरू हो जाए तो अपनी सफों में बदनज़्मी पैदा न होने देना। क़दम जमा कर रखना। जब तक मेरी तरफ से हुक्म न मिले, न पीछे हटना न हमला करना....अल्लाह तुम्हारे साथ है और अल्लाह के रसूल(स०) की रूहे मुक़द्दस तुम्हें देख रही है।"

उधर रोमियों का सलारे आला विरदान अपने कमांडरों से कह रहा था:

"ऐ रोमियो! क़ैसरे रोम को शिकस्त की ज़िल्लत से बचाना तुम्हारा फर्ज़ है। क़ैसरे रोम को तुम पर ऐतमाद है। अगर तुम ने इन अरबी मुसलमानों को फैसला कुन शिकस्त न दी तो ये तुम पर हमेशा के लिए ग़ालिब आ जाऐंगे। ये तुम्हारी बेटियों, बहनों और बीवियों को बे आबरू कर देंगे। अपने आप को मुंतशिर न होने देना। सलीब की मदद मांगो। फतह तुम्हारी है। मुसलमानों की तादाद बहुत थोड़ी है। एक के मुक़ाबले में तुम तीन हो।"

❋

दो तीन दिन मज़ीद गुज़र गए। ख़ालिद(र०) दुश्मन की सही तादाद और कैफियत मालूम करना चाहते थे। वो किसी भी जासूस को भेज सकते थे लेकिन उन्हें जिस क़िस्म का मालूमात की ज़रूरत थी, वो कोई ज़हीन और दिलैर आदमी हासिल कर सकता था। उन्होंने अपने सालारों से कहा के इन्हें कोई आदमी दिया जाए।

"इब्ने वलीद!"–सालार ज़रार बिन लाज़ोर ने कहा–"क्या मै ये काम नही कर सकूंगा? खुदा की क़सम, मुझ से बेहतर ये काम कोई और नही कर सकेगा।"

ज़रार वो सालार थे जिन्होंने बसरा के मआरके में अपनी न सिर्फ ज़िरा उतार फैंकी बल्कि क़मीज़ भी उतार कर कमर तक बरहना हो गए और ऐसे जोश से लड़े थे के सारे लश्कर के जोश व जज़्बे में बे पनाह इज़ाफा हो गया था।

"हां इब्ने लाज़ोर!"–ख़ालिद(र०) ने कहा–"तुम्हारे सिवा ये काम और कौन कर सकता है! तुम ही बेहतर जानते हो के तुम्हें वहां क्या देखना है।"

ज़रार ने क़मीज़ उतार फैंकी और कमर तक बरहना हो गए। वो घोड़े पर सवार हुए तो ख़ालिद(र०) और दूसरे सालारों ने क़हक़हा लगाया।

"खुदा हाफिज़ मेरे रफीक़ो!"–ज़रार ने हल्की सी ऐड़ लगा कर कहा।

"अल्लाह तुझे सलामत रखे इब्ने लाज़ोर!"–ख़ालिद(र०) ने कहा।

रोमियों की खेमागाह के क़रीब एक ऊंची टेकरी थी। ज़रार ने घोड़ा नीचे छोड़ा और टेकरी पर चढ़ गए। मुसलमानों और रोमियों की खेमागाहों के दरमियान एक मील इलाक़ा खली था। दोनो फरीक़ेन के गश्ती संतरी इस इलाक़े में गश्त करते रहते थे। ये संतरी घुड़सवार होते थे।

ज़रार को रोमियों के गश्ती सवार नहीं देख सके थे। ज़रार टेकरी पर चढ़े तो दूसरी तरफ रोमियों के संतरी मौजूद थे। उन्होंने ज़रार को देख लिया। ज़रार तेज़ी से नीचे उतरे और कूद कर घोड़े पर सवार हुए। इन्हें पकड़ने के लिए रोमी सवार टेकरी के दोनों तरफ से आए। इन की तादाद (मोअररि़खों के मुताबिक़) तीस थी। ज़रार ने घोड़े को ऐड़ लगाई लेकिन घोड़े को तेज़ न दौड़ाया।

रोमी सवारों ने भी घोड़े तेज़ न दौड़ाए। वो ग़ालिबन मोहमात थे के मुसलमान संतरी क़रीब कहीं मौजूद होंगे। फिर भी रोमी सवारों ने ज़रार का तआक्कुब जारी रखा और ज़रार मामूली रफ्तार से चलते आए। रोमी सवार इन्हें घेरे में लेने के लिए फैलते चले गए और वो एक दूसरे से दूर होते गए।

ज़रार इन के बिखरने के ही मुंतज़िर थे। उन के पास बरछी थी। इन की अपनी ख़ेमा गाह क़रीब आ गई थी। अचानक ज़रार ने घोड़े को तेज़ी से पीछे मोड़ा और ऐड़ लगाई। इन का रूख़ उस रोमी सवार की तरफ था जो इन के क़रीब था। उन्होंने इस रोमी पर बरछी का वार किया। वार बड़ा ज़ोर दार था। रोमी संभल न सका। ज़रार का हमला ग़ैर मुतावक़्क़े था। ये सवार घोड़े से गिर पड़ा।

दूसरे रोमी सवार अभी समझ भी न पाए थे के ये क्या हुआ है के ज़रार की बरछी एक और रोमी के पहलू में उतर चुकी थी। तीसरा सवार ज़रार की तरफ आया तो ज़रार की बरछी में पिरोया गया। मुसमलानों की ख़ेमागाह क़रीब ही थी फिर भी रोमी ज़रार को घेरे में लेने की कोशिश कर रहे थे। ज़रार माने हुए शहसवार थे। वो रोमियों के हाथ नहीं आ रहे थे। रोमियों की तादाद अब सत्ताईस थी। ज़रार भाग निकलने की बजाए, इन्ही में घोड़ा दौड़ाते और पैंतरे बदलते फिर रहे थे। उन की बरछी का कोई वार ख़ाली नहीं जाता था।

वाक़दी और तिबरी ने लिखा है के ज़रार ने बरछी के साथ साथ तलवार भी इस्तेमाल की थी। इन की तहरीरों के मुताबिक़ ज़रार ने तीस में से उन्नीस रोमी सवारों को मार डाला था। ज़रार को ज़द में लेने की कोशिश में रोमी मुसलमानों की ख़ेमागाह के और क़रीब आ गए थे। बहुत से मुसलमान सवार ज़रार की मदद को पहुंचने के लिए तैयार होने लग। रोमियों ने ये ख़तरा बरवक़्त भांप लिया और वो भाग गए।

ज़रार जब अपनी ख़ेगाह में दाख़िल हुए तो मुजाहेदीन ने दाद व तहसीन का

शौर व गोगा बपा कर के उन का इस्तक़बाल किया लेकिन ख़ालिद(र०) के सामने गए तो ख़ालिद(र०) के चेहरे पर ख़फ़्गी थी।

"क्या मै ने तुझे किसी और काम के लिए नही भेजा था?"-ख़ालिद(र०) दरश्त लहजे में कहा-"और तू ने दुश्मन से लड़ाई शुरू कर दी। क्या तू ने अपने फ़र्ज़ के साथ बे इन्साफी नही की?"

"इब्ने वलीद!"-ज़रार बिन लाज़ोर ने कहा-"खुदा की क़सम, तेरे हुक्म का और तेरी नाराज़गी का ख्याल न होता तो जो रोमी बच कर निकल गए है वो भी न जाते। उन्होंने मुझे घेर लिया था।"

इस के बाद ख़ालिद(र०) ने किसी को रोमी ख़ेमा गाह की जासूसी के लिए न भेजा।

❁

तीन चार दिन और गुज़र गए। ख़ालिद(र०) के लश्कर ने आराम कर लिया लेकिन ख़ालिद(र०) के अपने शब व रोज़ जागते सोचते और ख़ेमे मे टहलते गुज़रे। अपने से तीन गुना ताक़तवार दुश्मन को शिकस्त देना तो ज़रा दूर की बात है, उस के मुक़ाबले में उतरना ही एक बहादुरी थी, लकिन ख़ालिद(र०) तो फतह के सिवा कुछ सोच ही नही सकते थे। वो हर शाम सालारों और कमांडरों को बुला कर इन से मशवरे लेते और हिदायत देते थे।

रोमी कैम्प में कुछ और ही सूरते हाल पैदा हो गई थी। इन के सालार कुबकुलार का हौसला जवाब दे रहा था। मुताद्दिद मोअरिख़ों ने, ख़सूसन वाक़दी ने ये वाक़ेया तफसील से लिखा है।

"मैं बड़ा ही खुश किस्मत होता अगर मैं मुसलमानों की फौज से दूर रहता"-कुबकुलार ने अपने सालारे आला विरदान से कहा-"ऐसे नज़र आ रहा है के वो हम पर ग़ालिब आ जाऐंगे।

"ऐसी बे मानी बात मै आज पहली बार सुन रहा हूं"-विरदान ने कहा-"क्या एक आदमी कभी तीन आदमियों पर ग़ालिब आया है?"

"ऐसा कई बार हुआ है"-कुबकुलार ने कहा।

"हां, ऐसा कई बार हुआ है"-विरदान ने कहा-"और वो तुम जैसे तीन आदमी थे जो मैदान में उतरने से पहले ही हौसला हार बैठे थे।"

"क्या वो एक आदमी नहीं था जिस ने हमारे तीस में से उन्नीस सवारों को मार गिराया है?"-कुबकुलार ने कहा-"तीस सवार एक सवार पर ग़ालिब नहीं आ सके।"

"वो सिपाही थे, बुज़दिल थे"–विरदान ने कहा–"तुम सालार हो। तुम ये भी भूल गए हो के मैदाने जंग में बुज़दिली की सज़ा मौत है. लेकिन मुझे ये बताओ के तुम्हें हुआ क्या है? क्या तुम पर मुसलमानों का जादू चल गया?"

"जब से एक मुसलमान ने हमारे तीस आदमियों का मुक़ाबला किया और उन्नीस को मार गया है, मैं सोच में पड़ गया हूं के इस एक आदमी में इतनी ताक़त और इतनी फुर्ती कहां से आ गई थी?"–सालार कुबकुलार ने कहा–"मैं ने एक अरबी इसाई को मुसलमानों के कैम्प में भेज रखा था। वो तीन चार दिन मुसलमान बन कर उन की ख़ेमा गाह में रहा। कल वो वापस आया है। उस ने जो कुछ बताया है इस से मुझे पता चला है के उन की ताक़त क्या है।"

"उस ने क्या बताया है?"–विरदान ने पूछा।

"मैं उसे साथ लाया हूं"–कुबकुलार ने कहा–"सारी बात उसी से सुन लें।"

जासूस को बुलाया गया। विरदान ने उस से पूछा के मुसलमानों की ख़ेमागाह में उस ने क्या देखा है।

"सालारे आला का रूत्बा क़ैसरे रोम जितना हो"–जासूस ने ताज़ीम से कहा–"मैं ने उस ख़ेमागाह में अजीब लोग देखे हैं। वो जो अपने आप को मुसलमान कहलाते है, हम जैसे नहीं।"

"तुम इतने दिन उन के दरमियान किस तरह रहे?"–विरदान ने पूछा–"क्या तुम पर किसी ने शक नही किया?"

"मैं उन की ज़बान बोलता हूं"–जासूस ने जवाब दिया–"उन के तौर तरीक़े जानता हूं। उन के मज़हब और उन की इबादत से वाक़िफ़ हूं। वो अपनी फौज में आप की तरह किसी को भर्ती नहीं करते। जो कोई उन की फौज में शामिल होना चाहता है, अपने हथियार और अपना घोड़ा साथ ले कर शामिल हो जाता है। मै मसुलमान बन कर उन की फौज में शामिल हो गया था....

"मैंने उन मुसलमानों में कुछ नए उसूल देखे हैं। रात को वो इबादत गुज़ार होते हैं और दिन को ऐसे जंगजू जेसे वो लड़ने मरने के सिवा कुछ जानते ही न हों। अपने अक़ीदे के तहफ्फुज़ और इस के फरोग़ के लिए लड़ने और जान देने को ये अपना ईमान कहते हैं। इन का हर एक सिपाही इस तरह बातें करता है जैसे वो किसी सालार के हुक्म से नहीं बलिक अपनी ज़ाती लड़ाई लड़ने आया हो। वो सब एक जैसे है। लिबास से सालार और सिपाही में फर्क़ मालूम नहीं किया जा सकता....

"मै ने इन में मसावत के अलावा इन्साफ देखा है। अगर इन के हाकिम या अमीर का बेटा चोरी करे तो इस का भी हाथ काट देते है। अगर वो किसी औरत के

साथ बदकारी करते पकड़ा जाए तो उसे सरे आम खड़ा कर के पत्थर मारते है। हत्ता के वो मर जाता है। ये लोग इतने मुतमईन है के इन्हें कोई फिक्र और कोई परेशानी नही. ....

"सालारे आला अगर मुझे माफ कर दें तो कहूं....हमारी फौज में वो वस्फ नही जो मै मुसलमानों में देख कर आया हूं। मुसलमानों का कोई बादशाह नही। हमारे सिपाही बादशाह के हुक्म से लड़ते है और जब देखते है के बादशाह इन्हें देख नही रहा तो वो अपनी जानें बचाने की कोशिश करते है। मुसलमान एक खुदा को अपना बादशाह समझते है और कहते है के खुदा हर जगह मौजूद है और इन्हें देख रहा है।"

मशहूर मोअररिख़ तिबरी ने लिखा है के कुबकुलार बोल पड़ा। उस ने कहा- "मै कहता हूं मै उस ज़मीन के नीचे चला जाऊं जिस ज़मीन पर इन से मुक़ाबला करना पड़े। काश, मै उन के क़रीब न जा सकूं। न खुदा उन के खि़लाफ मेरी न मेरे खि़लाफ उन की मदद करे।"

विरदान ने कुबकुलार से कहा के उसे लड़ना पड़ेगा, लेकिन कुबकुलार का लड़ने का ज़ज़्बा मांद पड़ गया था।

❁

27 जमादीउलअव्वल 13 हिज्री (29 जूलाई 634ई०) की शाम खा़लिद(र०) ने अपने सालारों को आखरी हिदायत दी और अपने लश्कर की तक़सीम कर दी।

28 जमादीउ़ल अव्वल 13 हिज्री (30 जूलाई 634ई०) को मुजाहेदीन ने रोज़मर्रा की तरह फज्र की नमाज़ बा जमाअत पढ़ी। सब ने गिड़गिड़ा कर बड़े ही जज़्बाती अंदाज़ में दुआऐं मांगी। बहुत से ऐसे थे जिन की आंखों से आंसू आ गए। इन में से न जाने किस किस की ये आखरी नमाज़ थी। नमाज़ के फौरन बाद इन्हें अपने अपने दस्तों के साथ उन जगहों पर चले जाना था जो उन के लिए गुज़िश्ता रात मुक़र्रर की गई थी।

सूरज निकलने से पहले पहले खा़लिद(र०) का लश्कर अपनी जगहों पर पहुंच चुका था। रोमियों ने ये सोचा था के वो अपनी इतनी ज़्यादा तादाद के बल बूते पर इतना फैल जाऐंगे के मुसलमान इतना फैले तो उन की सफों में खिगाफ पड़ जाऐंगे लेकिन खा़लिद(र०) ने तादाद की कि़ल्लत के बावजूद मुहाज़ पांच मील लम्बा बना दिया। इस से ये ख़तरा ख़त्म हो गया के रोमी पहलूओं में जा कर या पहलूओं से अक़ब में जा कर हमला करेंगे।

खा़लिद(र०) ने दूसरी दानिशमंदी ये की के अपने लश्कर का मुंह मग़रिब की तरफ रखा ताके सूरज उन के पीछे और रोमियों के सामने रहे और वो आंखों में सूरज

की चमक पड़ने की वजह से आंखों को खोल न सकें।

हस्बे मामूल ख़ालिद(र०) ने अपनी फौज को तीन हिस्सों में तक़सीम किया। एक पहले के दस्तों के सालार सईद बिन आमिर थे, दूसरे के अमीरूलमोमेनीन अबुबकर(र०) के बेटे अब्दुर्रहमान और क़ल्ब की कमान मआज़ बिन जबल के पास थी। ख़ालिद(र०) ने दोनों पहलूओं के दस्तों की हिफाज़त का या मुश्किल के वक़्त उन की मदद को पहुंचने का ये अहतमाम किया था के इन दस्तों के आगे एक एक दस्ता खड़ा कर दिया था।

चार हज़ार नफरी जिस के सालार यज़ीद बिन अबी सफयान थे, ख़ालिद(र०) ने क़ल्ब के अक़ब में मजहफूज़ के तौर पर रख ली। वहां इस नफरी की मौजूदगी इस लिए भी ज़रूरी थी के वहां औरतें और बच्चे थे।

ख़ालिद(र०) ने सालारी के रूत्बे के अफ़राद को अपने साथ रख लिया। मक़सद ये था के जहां कहीं सालार की ज़रूरत पड़े, इन में से एक को वहां भेज दिया जाए। ये चारों बड़े क़ाबिल और तजुर्बेकार सालार थे। ये थे, उमर(र०) के बेटे अब्दुल्ला, उमरों बिन आस, ज़रार बिन लाज़ोवर और राफे बिन उमेरा।

सूरज तुलू हुआ तो रोमी संतरियों ने अपने सालारों को इत्तेला दी के मुसलमान जंगी तरतीब में तैयार हो गए है।। रोमी के इजतेमा में हड़बोंग मच गई। इन का ये ख़दशा बजा था के मुसलमान हमला कर देंगे। रोमी सालारों ने बड़ी तेज़ी से अपने लश्कर को तैयार किया और मुसलमानों क़े सामने खड़ा कर दिया। दोनों फौजों के दरमियान फासला तक़रीबन चार फरलांग था।

ख़ालिद(र०) ने अपने मुहाज़ को कम व बैश पांच मील लम्बा कर दिया था। रोमी अपने लश्कर को इस से ज़्यादा फैला सकते थे लेकिन उन्होंने अपने मुहाज़ की लम्बाई तक़रीबन इतनी ही रखी जितनी ख़ालिद(र०) ने रखी थी। इस से ख़ालिद(र०) का ये मसला तो हल हो गया के रोमी मुसलमानों के पहलूओं के लिए ख़तरा न बन सके लेकिन रोमी लश्कर की गहराई ज़्यादा बल्कि बहुत ज़्यादा थी। दस्तों के पीछे दस्ते और इन के पीछे दस्ते थे। मुसलमानों के लिए उन की सफें तोड़ना तक़रीबन ना मुमकिन था।

मोअररिख़ लिखते हैं के रोमियों का लश्कर जब इस तरतीब में आया तो देखने वालों पर हैबत तारी करता था। बहुत सी सलीबें, इन में कुछ बड़ी और कुछ ज़रा छोटी थीं, इस लश्कर में से ऊपर को उभरी हुई थी और कई रंगों के झझडे ऊपर को उठे हुए लहरा रहे थे। इस के मुक़ाबले में मुसलामनों की फौज निहायत मामूली और बे रौब सी लगती थी।

रोमियों का सालार विरदान और सालार कुबकुलार अपने लश्कर के कलब के सामने घोड़ों पर सवार खड़े थे। इन के साथ इन के मुहाफिज़ों का एक एक दस्ता था जो लिबास वगैरा से बड़ी शान वाले लगते थे।

❁

रोमियों की तादाद और उन के ज़ाहिरी जाह व जलाल को देख कर खालिद(र०) ने महसूस किया होगा के उन के मुजाहेदीन पर रोमियों का ऐसा असर हो सकता है के इन का जज़्बा ज़रा कमज़ोर हो जाए। शायद इसी लिए खालिद(र०) ने अपने घोड़े को ऐड़ लगाई और घोड़े का रूख़ अपनी फौज के एक सिरे की तरफ कर दिया। ये पहला मौका था के उन्होंने अपना मुहाज़ इतना ज़्यादा फैलाया था। उन्होंने घोड़ा एक पहलू के दस्ते के सामने जा रोका।

"याद रखना के तुम उस अल्लाह के नाम पर लड़ने आए हो जिस ने तुम्हें ज़िन्दगी अता की है"-खालिद(र०) ने एक हाथ और इस हाथ की शहादत की उंगली आसमान की तरफ कर के इनतेहाई बुलंद आवाज़ में कहा-"अल्लाह किसी और तरीके से भी अपनी दी हुई ज़िन्दगी तुम से वापस ले सकता है। अल्लाह ने तुम्हारे साथ एक रिश्ता कायम कर रखा है। क्या ये अच्छा नहीं के तुम अल्लाह की खातिर अपनी जानें कुर्बान कर दो? अल्लाह इस का अज्र देगा। ऐसा पहले भी हो चुका है के तुम थोड़े थे और तुम्हारा मुकाबला उस दुश्मन से हुआ के जो तुम से दो गुना और तीन गुना था और इतना ताकत वर दुश्मन तुम्हारी ज़र्ब से इस तरह भागा जिस तरह बकरी शेर को और भेड़ भेड़िये को देख कर भागती है....रोमियों की ज़ाहिरी शान व शौकत को देखो। शान व शौकत ईमान वालों की होती है। जाह व जलाल उन का है जिन के साथ अल्लाह है। अल्लाह तुम्हारे साथ हे। आज अपने अल्लाह पर और अल्लाह के रसूल(स०) की रूह पर साबित कर दो के तुम बातिल के पहाड़ों को रेज़ा रेज़ा करने वाले हो।"

ये तो जज़्बाती बातें थीं जो खालिद(र०) ने की और इन का असर वही हुआ जो होना चाहिए था, खालिद(र०) ने इन बातों के अलावा कुछ हिदायत दीं। मोअररिख़ों ने इन के सही अल्फाज़ लिखे हैं:

"जब आगे बढ़ कर हमला करो तो मिल कर दुश्मन पर दबाव डालो जैसे एक दीवार बढ़ रही हो। जब तीर चलाओ तो सब के तीर इक्ळे कमानों से निकलें और दुश्मन पर बौछाड़ की तरह गिरें। दुश्मन को अपने साथ बहा ले जाओ।"

खालिद(र०) तमाम दस्तों के सामने रूके और यही अल्फाज़ कहे। इस के बाद वो अकब में औरतों के पास चले गए।

"दुआ करती रहना अपने ख़ाविंदों के लिए, अपने भाईयों और अपने बापों के लिए!"-ख़ालिद(र०) ने औरतों से कहा-"तुम देख रही हो के दुश्मन की तादाद कितनी ज़्यादा है और हम कितने थोड़े हैं। ऐसा हो सकता है के दुश्मन हमारी सफों को तोड़ कर पीछे आ जाए। खुदा की क़सम, मुझे पूरी उम्मीद है के अपनी इज़्ज़त और अपनी जानें बचाने के लिए तुम मर्दों की तरह लड़ोगी। हम इन्हें तुम तक नहीं पहुंचने देंगे लेकिन वो सब कुछ हो सकता है जो हम नही चाहते के हो जाए।"

"वलीद के बेटे!"-एक औरत ने कहा-"क्या वजह है के हमें आगे जा कर लड़ने की इजाज़त नही।"

"मर्द ज़िन्दा हों तो औरत क्यों लड़े!"-एक औरत ने कहा-"और अपने आप को बचाने के लिए लड़ना तुम पर फर्ज़ है के मर्द थोड़े रह जाएं, दुश्मन ग़ालिब आ रहा हो तो आगे बढ़ो और मर्दों की तरह लड़ो और अपने ऊपर ग़ैर मर्द का ग़ल्बा कुबूल न करो।"

ये पहला मौक़ा था के ख़ालिद(र०) ने औरतों को भी दुश्मन से ख़बरदार किया और इन्हें अपने दिफाअ में लड़ने के लिए तैयार किया था। इस से ज़ाहिर होता है के इन्हें ख़ासी तशवीश थी। उन्होंने किसरा की फौजों को शिकस्त पे शिकस्त दी थी लेकिन रोमी फारसियों की निस्बत ज़्यादा मुनज़्ज़म और ताक़तवर थे। ख़ालिद(र०) के सामने यक़ीनन ये पहलू भी होगा के मुजाहेदीन को घरों से निकले खासा अर्सा गुज़र चुका था और वो मुसलसल लड़ाईयों के थके हुए भी थे। इन्हें अपने अल्लाह पर, अल्लाह की दी हुई रूहानी ताक़तों और ईमान पर भरोसा था।

दोनो फौजें लड़ाई के लिए तैयार हो गईं

रोमियों की तरफ से एक मोअम्मिर पादरी आगे आया और मुसलामनों से कुछ दूर आ कर रूक गया।

"ऐ मुसलमानों!"-उस ने बुलंद आवाज़ से कहा-"तुम में कोई ऐसा है जो मेरे पास आ कर बात करे?"

ख़ालिद(र०) ने अपने घोड़े की लगाम को हल्का सा झटका दिया और पादरी के सामने जा घोड़ा रूका।

"तुम सालार हो"-बूढ़े पादरी ने कहा-"क्या तुम में मुझ जैसा कोई मज़हबी पैश्वा नहीं?"

"नही!"-ख़ालिद(र०) ने जवाब दिया-"हमारे साथ कोई मज़हबी पैश्वा नही होता। सालार ही इमाम होता है। मै सिपह सालार हूं और मै मोअज़्ज़िज़ पादरी को ये भी बता देता हूं के मै उस वक़्त तक सिपह सालार होगा जब तक मेरी क़ौम और मेरी

फौज चाहेगी। अगर मै अपने अल्लाह वाहदाहू लाशरीक के अहकाम और उस के रसूल(स०) के फरमान से इन्हराफ करूंगा तो मुझे सिपह सालार नही रहने दिया जाएगा। अगर इस हालत में भी सिपह सालार रहूंगा तो सिपाही को हक़ हासिल है के वो मेरा कोई हुक्म न मानें। "

मोअरिख़ लिखते है के मोअम्मिर पादरी पर ख़ामोशी तारी हो गई और वो कुछ देर ख़ालिद(र०) के मुंह की तरफ देखता रहा।

"शायद यही वजह है"-पादरी ने ज़रा दबी ज़बान मे कहा-"यही वजह हो सकती है के फतह हमेशा तुम्हारी होती है। "

"वो बात कर मोअज़्ज़ि पादरी जो तू करने आया है"-ख़ालिद(र०) ने कहा।

"हां!"-पादरी ने जैसे बेदार हो कर कहा-"ऐ अरब से फतह की उम्मीद ले कर आने वाले! क्या तू नहीं जानता के जिस ज़मीन पर तू फौज ले कर आया है, इस पर किसी बादशाह को कभी पांव रखने की जुर्रत नहीं हुई थी? तू अपने आप को क्या समझ कर यहां आ गया है! फारसी आए थे लेकिन उन पर ऐसी दहशत तारी हुई के भाग गए। कई दूसरे भी आए थे। वो बड़ी बहादूरी से लड़े थे लेकिन नाकामी और मायूसी के सिवा उन्हें कुछ हासिल न हुआ और वो चले गए....तुझे हमारे ख़िलाफ कुछ कामयाबियां हासिल हुई हैं। लेकिन ये ख्याल दिमाग़ से निकाल दे के हर मैदान में तू फतह ही पाएगा।

मोअरिख़ों के मुताबिक़, ख़ालिद(र०) ख़ामोशी से सुन रहे थे और बूढ़ा पादरी पुर असर लहजे में बोल रहा था।

"मेरा सिपह सालार विरदान जो मेरा आक़ा है, तुझ पर करम और नवाज़िश करना चाहता है"-पादरी कह रहा था-"इस से बड़ी नवाज़िश और क्या होगी के उस ने तेरी फौज को काट देने की बजाए मुझे ये पैग़ाम दे कर तेरे पास भेजा है के अपनी फौज को हमारे मुल्क से वापस ले जा। मेरा आक़ा तेरे हर सिपाही को एक दीनार, एक क़बा और एक अमामा देगा और तुझे एक सौ अमामे, एक सौ क़बाऐं और एक सौ दीनार अता करेगा। तेरे लिए ये फय्याज़ी मामूली नहीं। क्या तू देख नही रहा के हमारा लश्कर रेत के ज़रों की तरह बे हिसाब है? तू जिन फौजों से लड़ चुका है, हमारी फौज उन फौजों जैसी नही। तू नही जानता के इस फौज के सर पर कैसरे रोम का हाथ है। इस ने मंझे हुए तजुर्बेकार सालार और चौटी के पादरी इस फौज को दिए है....बोल तेरा क्या जवाब है? ईनाम चाहता है या अपनी और अपनी फौज की तबाही?"

"दो मै से एक!"-ख़ालिद(र०) ने जवाब दिया-"मेरी दो शर्तों में से एक पूरी

कर दो तो मै अपनी फौज को ले कर चला जाऊंगा....अपने आक़ा से कहो के इस्लाम क़ुबूल कर लो या जज़िया अदा करो। अगर नही तो हमारी तलवारें फैसला करेंगी। मै तेरे आक़ा के कहने पर वापस नही जाऊंगा....तेरे आक़ा ने जो दीनार, क़बाऐं और अमामे पेश किए है वो तो हम वसूल कर ही लेंगे।"

"एक बार फिर सोच अरबी सालार!"

"अरब के सालार ने सोच कर जवाब दिया है"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"जा, अपने आक़ा तक मेरा जवाब पहुंचा दे।"

❁

बूढ़े पादरी ने रोमी सिपह सालार विरदान को ख़ालिद(र०) का जवाब दिया।

"अरब के डाकुओं की ये जुर्रत?"-विरदान ने गुस्से से फटते हुए कहा-"क्या वो नही जानते के मैं इन सब को एक ही हल्ले में ख़त्म कर सकता हूं?"-उस ने अपनी सिपह की तरफ घोड़ा घुमा कर हुक्म दिया-"तीरअंदाज़ आगे जाऐं और इन बदबख़्तों को फना करने के लिए तैयार हो जाऐं। फलाख़न भी आगे ले आओ।

तीरअंदाज़ आगे आए तो मुसलमानों के क़ल्ब के सालार मआज़ बिन जबल ने अपने दस्तो को हमले की तैयारी का हुक्म दिया।

"ठहर जा इब्ने जबल!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"जब तक मैं न कहूं हमला न करना। सूरज सर पर आकर आगे जाने लगेगा तो हम हमला करेंगे।"

"इब्ने वलीद!"-माज़ बिन जबल ने कहा-"क्या तू देख नही रहा के उन की कमानें हम से अच्छी और बड़ी हैं जो बहुत दूर तक तीर फैंक सकती हैं? वो हमारे तीरअंदाज़ों की ज़द से दूर हैं। मैं इन तीरअंदाज़ों पर हमला कर के इन्हें बेकार करना चाहता हूं। इन के फलाख़न देखो। ये पत्थर बरसाऐंगे।"

"रोमी तरतीब में खड़े हैं"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"हमने हमले में पहल की तो हमें पस्पा होना पड़ेगा। उन की तरतीब ज़रा उखड़ने दो उन का कोई न कोई कमज़ोर पहलू हमारे सामने आजाएगा।"

रोमियों ने कुछ देर इन्तेज़ार किया। मुसलमानों ने कोई हरकत न की तो विरदान के हुक्म पर उस के तीरअंदाज़ों ने तीरों की बौछाड़ें फैंकनी शुरू कर दीं और फलाख़न से वो पत्थर फैंकने लगे। कई मुसलमान शहीद और ज़ख्मी हो गए। ख़ालिद(र०) ने ये नुक़सान देख कर भी हमले का हुक्म न दिया। रोमी तीरअंदाज़ों को तीरों से मोअस्सर जवाब नही दिया जा सकता था क्योंके मुसलमानों की कमानें निस्बतन छोटी होने की वजह से दूर तक तीर नहीं फैंक सकती थीं।

उधर से तीर और पत्थर आते रहे। तब मुसलमानों में हीजान और इज़्तराब नज़र

आने लगा। वो हमला करना चाहते थे लेकिन इन्हें हुक्म नही मिल रहा था। सालार ज़रार बिन लाज़ोर दौड़े दौड़े ख़ालिद(र०) के पास गए।

"इब्ने वलीद!"-ज़रार ने ख़ालिद(र०) से कहा-"तू क्या सोच रहा है? क्या तू दुश्मन को ये बताना चाहता है के हम उस से डर गए हैं?.....अगर अल्लाह हमारे साथ है तो मत सोच! हमले का हुक्म दे।"

ख़ालिद(र०) ने होंटों पर मुस्कुराहट आ गई। ये इतमेनान और सकून की मुस्कुराहट थी। उन के सालार और सिपाही पस्पाई की बजाए हमले की इजाज़त मांग रहे थे।

"इब्ने लाज़ोर!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"तू आगे जा कर दुश्मन को मुक़ाबले क लिए लल्कार सकता है।"

ज़रार ने ज़िरा और खुद पहन रखी थी। उन के एक हाथ में चमड़े की ढाल और दूसरे हाथ में तलवार थी। उन्होंने पिछले एक मआरके में ये ढाल एक रोमी से छीनी थी। ज़रार आगे गए तो रोमी तीरअंदाज़ों ने अपने सालार के हुक्म से कमानें नीचे कर लीं।

❁

ये उस ज़माने का रिवाज था के फौजों की लड़ाई से पहले दोनों फौजों में से किसी एक का एक आदमी अपने दुश्मन को इंफेरादी मुक़ाबले के लिए लल्कारता था। उधर से एक आदमी आगे आता और दोनों ज़िन्दगी और मौत का मआरका लड़ते थे। इस के बाद जंग शुरू होती थी। मुक़ाबले के लिए लल्कारने वालाअपने दुश्मन को तौहीन आमेज़ बातें कहता था।

ज़रार बिन लाज़ोर रोमियों के सामने गए और इन्हें लल्कारा:

"मैं सफेद चमड़ी वालों के लिए मौत का पैग़ाम लाया हूं
रोमियों! मैं तुम्हारा क़ातिल हूं
मैं खुदा का क़हर बन कर तुम पर गिरूंगा
मेरा नाम ज़रार बिन लाज़ोर है।"

रोमियों की तरफ से एक आदमी को ज़रार के मुक़ाबले के लिए आना था लेकिन चार पांच रोमी सवार आगे आ गए। ज़रार ने पहले अपनी खुद उतारी फिर ज़िरा उतारी फिर क़मीज़ भी उतार दी और कमर तक बरहना हो गए। तब उन रोमियों ने इन्हें पहचाना जो बसरा में इन्हें इस हालत में लड़ते देख चुके थे और वो ये भी देख चुके थे के इस शख़्स मैं जिन्नात जैसे फुर्ती और ताक़त है। हक़ीक़त भी यही थी। ज़रार एक से ज़्यादा आदमियों का मुक़ाबला करने की ख़सूसी महारत रखते थे।

ज़रार के मुक़ाबले में जो रोमी आए थे इन में दो सालार भी थे। एक तिबरिया का और दूसरा अमान का हाकिम या अमीर था। बाक़ी भी कोई आम सिपाही नही थे। वो कमांडरों के रूत्बे के थे। उन्होंने ज़रार को घेरे में लेने के लिए घोड़ों के रूख़ मोड़े। ज़रार ने अचानक घोड़े को ऐड़ लगाई और जब वो अमान के हाकिम के क़रीब से गुज़र गए तो ये सालार अपने घोड़े की पीठ पर ही दूहरा हो गया फिर घोड़े से लढ़क कर नीचे जा पड़ा। ज़रार की तलवार उस के पहलू से उस के जिस्म में गहरी उतर गई थी।

हैरान कुन फुर्ती से ज़रार का घोड़ा मुड़ा और एक और रोमी उन की तलवार से कट कर गिरा। ज़रार ऐसी चाल चलते और ऐसा पैंतरा बदलते थे के रोमी सवारों के दो तीन घोड़े आपस में टकरा जाते या एक दूसरे के आगे आ जाते थे। इस मौक़ा से फायदा उठा कर ज़रार इन में से एक को तलवार से काट जाते थे।

कोई रोमी सवार गिरता था तो मसुलमान बड़े जोश से नारे लगाते थे। ज़रार का ये आलम था जैसा उन में माफ़ूकुल फितरत ताक़त आ गई हो। अपने मुक़ाबले में आने वाले रोमियों में से ज़्यादा तर को उन्होंने गिरा दिया। इन में एक दो ऐसे भी थे जिन्हें मोहलक ज़ख्म नहीं आए थे लेकिन वो दौड़ते घोड़ों के क़दमों तले कुचले गए। दो रोमी सवार भाग कर अपने लश्कर में चले गए।

ज़रार फातेहाना अंदाज़ से खून टपकाती तलवार को लहराते और रोमियों को लल्कार रहे थे:

"मैं सफेद चमड़ी वालों का क़ातिल हूं....रोमियो! मेरी तलवार तुम्हारे खून की प्यासी है।"

मोअर्रिख़ों(वाक़दी, इब्ने हशाम और तिबरी) ने लिखा है के दस रोमी सवार घोड़े दौड़ाते आगे आए। ये सब सालारी से ज़रा नीचे के ओहदों के रोमी थे। ख़ालिद(र०) ने जब दस सवारों को आगे आते देखा तो अपने मुहाफिज़ दस्ते में से उन्होंने दस सवार मुंतख़िब किए और इन्हें आगे ले गए।

रोमी सवार ज़रार की तरफ आ रहे थे। ख़ालिद(र०) ने नारा लगाया-"ख़ुदा की क़सम, ज़रार को अकेला नही छोडूंगा"-इस के साथ उन्होंने अपने दस सवारों को इशारा कर के घोड़े को ऐड़ लगाई। दस सवार उन के साथ गए। रोमी सवारों की नज़रें ज़रार पर लगी हुई थीं। ख़ालिद(र०) और इन के सवार रोमी सवारों पर जा झपटे। ज़रार की तलवार भी हरकत में आ गई। रोमियों ने मुक़ाबला करने की कोशिश की लेकिन ख़ालिद(र०) और उन के सवारों की तेज़ी और तुंदी ने रोमियों की एक न चलने दी और सब कट गए।

रोमी सालारों ने इसे अपनी बे इज़्ज़ती समझा और मज़ीद आदमियों को इंफेरादी मुक़ाबलों के लिए आगे भेजने लगे। ज़रार ने इन में से दो तीन को हलाक कर दिया। मुक़ाबले के लिए आगे आने वाले हर रोमी के साथ ज़रार ही मुक़ाबला करना चाहते थे लेकिन ख़ालिद(र०) ने इन्हें पीछे बुला लिया और दूसरे मुजाहेदीन(तारीख़ों में इन के नाम नही) को बारी बारी आगे भेजा। हर मुक़ाबले में मुजाहेदीन फातेह रहे। दोनों फौजों के दरमियान बहुत से रोमियों की लाशें पड़ी थीं।

मोअररिख़ों के मुताबिक़, ये मुक़ाबले कम व बैश दो घंटे जारी रहे और सूरज उस मुक़ाम पर आ गया जिस मुक़ाम पर ख़ालिद(र०) चाहते थे के आ जाए तो हमला करेंगे।

मुक़ाबलों के दौरान तीरअंदाज़ और फलाख़न से पत्थर फैंकने वाले खामोश खड़े थे। मुक़ाबला अभी जारी था। ख़ालिद(र०) ने हमले का हुक्म दे दिया। ये आम क़िस्म का हमला था जिसे हल्ला या चार्ज कहा जाता है। इस से पहले रोमी तीरअंदाज़ और फलाखन बहुत बड़ी रूकावट थे। इन्हें खामोश देख कर ख़ालिद(र०) ने हमला किया था। हमला इतना ज़ोरदार था और मुजाहेदीन में इतना क़हर भरा हुआ था के रोमी सालारे आला विरदान को कोई चाल चलने की मोहलत ही न मिली। वो अपने लश्कर के आगे खड़ा मुक़ाबले देख रहा था। उस ने पीछे को भाग कर अपनी जान बचाई।

❁

तवक़्क़ो तो ये थी के विरदान अपनी तादाद की इफरात के बल बूते पर अपने पहलूओं को आगे बढ़ा कर ख़ालिद(र०) के पहलूओं से आगे निकलने और अक़ब में आने की कोशिश करेगा लेकिन उसे इतनी होश नहीं थी। उस ने अपने लश्कर को फैलाने की बजाए इस की गहराई ज़्यादा कर दी थी यानी दस्तों के पीछे दस्ते रखे थे। उस की ये तरतीब बड़ी अच्छी थी लेकिन ख़ालिद(र०) की चाल ने उस की तरतीब को उस के लिए एक मसला बना दिया।

मुसलमान दस्तों ने सामने से हमला किया तो रोमियो के अगले दस्ते पीछे हटने लगे। पिछले दस्तों को और पीछे होना पड़ा। फिर इन की तरतीब गुडमुड़ हो गई। मुसलमानों को इस से बहुत फायदा पहुंचा। ये बड़ा ही शदीद मआरका था और बड़ा ही खूंरेज़।

सूरज मग़रिब की सिम्त ढल गया था। ख़ालिद(र०) ने महसूस किया के मुजाहेदीन थक गए होंगे। उन्होंने मुजाहेदीन को मआरके से निकलने का हुक्म दिया। ऐसे लगा जैसे रोमी सालार भी यही चाहते थे। उन्होंने अपने दस्तों को पीछे हटाना

बेहतर समझा। जब दोनों फौजें पीछे हटी तो पता चला के रोमी हज़ारों की तादाद में मारे गए है और ज़ख्मियों की तादाद भी बे शुमार है। इस के मुक़ाबले में मुसलमानों का नुक़सान बहुत ही थोड़ा था। सूरज ग़रूब होने को था इस लिए दोनों में से कोई भी फौज हमला नही कर सकती थी। इस तरह पहले रोज़ की जंग ख़त्म हो गई।

❁

रात को दोनों फौजों के सालारों ने अपने अपने नायब सालारों वग़ैरा को बुलाया और अपने अपने नुक़सान का जायज़ा लेने लगे और अगली कारर्वाई के मुताल्लिक़ सोचने लगे। रोमियों के सालारे आला विरदान की कांफ्रेन्स में गर्मा गर्मी ज़्यादा थी। विरदान ने साफ कह दिया के जंग की यही सूरते हाल रही जो आज हो गई थी तो नतीजा ज़ाहिर है क्या होगा और इस नतीजे का नतीजा क्या होगा।

"क्या मैंने पहले ही नही कह दिया था?"-विरदान के सालार कुबकुलार ने कहा-"मै अब भी कहता हूं के और ज़्यादा सोचो और वजह मालूम करो के हर मैदान में फतह मुसलमानों की ही क्यों होती है और वही खूबी हमारी फौज में क्यों पैदा नहीं होती। आज की लड़ाई देख कर मुझे अपनी फतह मशकूक नज़र आने लगी है।"

"क्या तू ये कहना चाहता है के हम मैदान छोड़ कर भाग जाएं?"-विरदान ने कहा-"मै तुम सब को कहता हूं के अपनी अपनी राय और मशवारा दो के हम मुसलामनों को किस तरह शिकस्त दे सकते है।।"

कुबकुलार के होंटों पर अजीब सी मुस्कुराहट आ गई। उस ने कुछ भी न कहा और दूसरे सालार अपनी आरा और मशवरे देने लगे। इन सालारों के मशवरे मुख़तलिफ थे लेकिन एक बात मुश्तरिक थी। सब कहते थे के मुसलामनों को शिकस्त देनी है और ऐसी शिकस्त के इन में से ज़िन्दा वही रहे जो जंगी क़ैदी हो।

"अगर ख़ालिद(र०) इन का सालार न हो तो इन्हें शिकस्त देना आसान हो जाए"-एक सालार ने कहा-"वो जिधर जाता है, उस की शौहरत और दहशत उस के आगे आगे जाती है। हमें तस्लीम करना चाहिए के मुसलामनों के इस सालार में इतनी ज़्यादा जंगी महारत है जो बहुत कम सालारों में होती है....मै एक मशवारा देना चाहता हूं।

सब मुतावज्जेह हुए।

"मुसलामनों को ख़ालिद(र०) से महरूम कर दिया जाए"-उस ने कहा-"और इस का एक ही तरीक़ा है...क़त्ल!"

"कल की लड़ाई में इसे क़त्ल करने की कोशिश की जाएगी"-विरदान ने कहा-"ये मशवरा कोई मशवरा नही।"

"लड़ाई में अभी तक उसे कोई क़त्ल नही कर सका"–मशवरा देने वाले सालार ने कहा–"मेरी तजवीज़ ये है के हमारी तरफ से एक ऐलची ख़ालिद(र०) के पास जाए और कहे के हम मज़ीद खून ख़राबा रोकना चाहते हैं। हमारे पास आओ और हमारे साथ बात चीत तय कर लो। वो जब हमारे सालारे आला विरदान से मिलने आ रहा हो तो कम अज़ कम दस आदमी रास्ते में घात में बैठे हुए हों। वो ख़ालिद(र०) को इस तरह क़त्ल करें के उस के जिस्म की बोटी बोटी कर दें।"

"बहुत अच्छी तजवीज़ है"–विरदान ने कहा–"मै अभी इस का बंदोबस्त करता हूं....दाऊद को बुलाओ।

थोड़ी ही देर बाद एक इसाई जिस का तारीख़ों में नाम दाऊद लिखा है विरदान के सामने खड़ा था।

"दाऊद!"–विरदारन ने इस इसाई अरब से कहा–"अभी मुसलमानों की ख़ेमा गाह में जाओ और इन के सिपह सालार ख़ालिद(र०) बिन वलीद को ढूंड कर उसे बताना के मै रोमियों के सालार का ऐलची हूं। उसे मेरी तरफ से ये पैग़ाम देना के हम उस के साथ सुलह की बात करना चाहते हैं। वो हमारे पास कल सुबह आए और हमारे साथ बात करे के किन शरायत पर सुलह हो सकती है। उसे ये भी कहना के इस बात चीत में सिर्फ वो और मै अकेले होंगे। हम दोनों के साथ एक भी मुहाफिज़ नहीं होगा।"

दाऊद मामूली आदमी नहीं था न वो फौजी था। वो क़ैसरे रोम का एक तरह का नुमाईंदा था और उस का रूत्बा विरदान से ज़रा ही कम था।

"विरदान!"–दाऊद ने कहा–"मेरा ख़्याल है क़े तुम क़ैसरे रोम के हुक्म की ख़िलाफ वर्ज़ी कर रहे हो। क्या शहंशाह हरकुल ने ये हुक्म नहीं भेजा था के मुसलमानों को तबाह व बर्बाद कर दो? मै समझ नही सकता के तुम सुलह और शरायत की बात किस के हुक्म से कर रहे हो...मै सुलह का पैग़ाम ले कर नही जाऊंगा।"

"फिर तुम्हें अपने राज़ में शरीक करना पड़ेगा"–विरदान ने कहा–"मै मुसलामनों को तबाह व बर्बाद करने का ही मंसूबा बना रहा हूं। मै ख़ालिद(र०) बिन वलीद को सुलह का धोका दे रहा हूं। वो अगर आ गया तो मुझ तक उस की लाश पहुंचेगी। मै ने रास्ते में उस के क़त्ल का इन्तेज़ाम कर रखा है।"

"अगर ये काम करना है तो मै तुम्हारे साथ हूं"–दाऊद ने कहा–"मै अभी जाता हूं।"

❁

दाऊद मुसलमानों के कैम्प में चला गया। हर तरफ छोटी बड़ी मशअलें जल रही थी। दाऊद ने अपना तआरूफ कराया के वो रामियों का ऐलची है और उन के सिपह सालार के लिए पैग़ाम लाया है। उसे उसी वक्त ख़ालिद(र०) के ख़ेमे तक पहुंचा दिया गया। दाऊद आदाब बजा लाया और अपना तआरूफ करा के विरदान का पैग़ाम दिया।

ख़ेमे में मशअलों की रौशनी थी। ख़ालिद(र०) ने दाऊद से इतना भी न कहा के वो बैठ जाए। वो ख़ालिद(र०) के सामने खड़ा रहा। ख़ालिद(र०) आहिस्ता आहिस्ता उठे और उस के थोड़ा और क़रीब चले गए। उन की नज़रें दाऊद की आंखों में गड़ गईं थी। उन्होंने दाऊद से कुछ भी न कहा और उसकी आंखों में आंखें डाले देखते रहे। ख़ालिद(र०) दराज़क़द और क़वी हैकल थे। उन की खश्सियत का पर तो उन की आंखों की चमक में था। उस दौर की तहरीरों से पता चलता है के ख़ालिद(र०) की आंखों का सामना कोई मज़बूत दिल गुर्दे वाला ही कर सकता था। ये ईमान का जलाल था और आंखों की इस चमक में इश्क़े रसूल(स०) रचा बसा था। इस के अलावा ख़ालिद(र०) शाम के इलाक़े में ख़ौफ व हिरास का एक नाम बन गया था।

ख़ालिद(र०) दाऊद को देखे जा रहे थे। दाऊद का ज़मीर मुजरिमाना था। वो ख़ालिद(र०) की नज़रों की ताब न ला सका। मोअररिख़ लिखते है ख़ालिद(र०) के चेहरे पर एक या दो ज़ख़्मों के निशाान थे जिन से इन का चेहरा बिगड़ा तो नहीं था लेकिन ज़ख़्मों के निशानात का अपना एक तास्सुर था जो दाऊद के लिए ग़ालिबन दहशतनाक बन गया था।

"ऐ अरबी सालार!"-दाऊद बौखलाए हुए लहजे में बोला- "मैं फौजी नहीं हूं। मैं ऐलची हूं।"

"सच बोल दाऊद!"-ख़ालिद(र०) ने उस के और क़रीब आ कर कहा-"तू एक झूट बोल चुका है। अब सच बोल और अपनी जान सलामत ले जा।"

दाऊद ख़ालिद(र०) के सामने खड़ा छोटा सा आदमी लगता था हालांके क़द उस का भी कुछ कम नहीं था।

"ऐ अरबी सालार!"-दाऊद ने अपने झूट को दोहराया-"मैं सुलह का पैग़ाम ले कर आया हूं और इस में कोई धोका नहीं।"

"अगर तू धोका देने आया है तो मेरी बात सुन ले"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"जितनी मक्कारी और अय्यारी हम लोगों में है इतनी तुम में नहीं। मकरव फरैब में हमें कोई मात नहीं दे सकता। अगर तुम्हारे सिपह सालार विरदान ने कोई फरैब कारी सोची है तो इस का नतीजा ये होगा के रोमियों की तबाही का टमल उस से तेज़

हो जाएगा जितना मै ने सोचा था...और अगर उस ने सच्ची नीयत से सुलह का पैग़ाम भेजा है तो जाओ उसे कहो के जज़िया अदा कर दे फिर हम सुलह कर लेंगे।"

दाऊद में इतनी सी भी हिम्मत नही थी के वो कोई और बात करता। वो आदाब बजा ला कर चल पड़ा। खेमे के दरवाज़ में जा कर पीछे देखा। ख़ालिद(र०) की नज़रें अभी तक उसे घूर रही थीं। दाऊद ने मुंह फैर लिया लेकिन चला नहीं वहीं खड़ा रहा। वो महसूस कर रहा था के ख़ालिद(र०) की नज़रें उस की खोपड़ी में से गुज़र कर उस की आंखों में दाख़िल हो रही है। वो ख़ालिद(र०) की तरफ घूमा और अचानक इस तरह तेज़ क़दम उठाए जैसे ख़ालिद(र०) पर झपटने लगा हो।

"इब्ने वलीद!"–दाऊद ने शिकस्त खुर्दा आवाज़ में कहा–"मैं तुझे धोका देने आया था"–उस ने विरदान की साज़िश पूरी की पूरी बयान कर दी और ये भी बता दिया के कल सुबह विरदान के दस आदमी किस जगह घात में होंगे।

"क्या तू बता सकता है"–ख़ालिद(र०) ने दाऊद से पूछा–"के तू जाते जाते रूक क्यों गया और तूने सच क्यों बोला?"

"सच का सिला लेने के लिए"–दाऊद ने कहा–"मुझे नक्द ईनाम की ज़रूरत नही। जिस फौज के सालार की नज़रें इन्सानों के जिस्मों में बरछी की तरह उतर जाने वाली हो उस फौज को कोई ताक़त शिकस्त नहीं दे सकती.....ऐ अरबी सालार! मेरा तजुर्बा और मेरी अक्ल बताती है के फतह तेरी होगी। मैं सिर्फ इतना सिला मांगता हूं के जब तू हमारी बस्तियों पर क़ब्ज़ा कर ले तो मेरे ख़ानदान पर रहम करना और उन की इज्ज़त का उन की जान व माल का ख्याल रखना"–उस ने बताया के उस का ख़ानदान कौन सी बस्ती में रहता है।

ख़ालिद(र०) ने दाऊद को रूख़सत कर दिया।

दाऊद ने वापस जा कर विरदान को बताया के वो ख़ालिद(र०) को पैग़ाम दे आया है और ख़ालिद(र०) मुक़र्ररा वक़्त पर अकेले आऐंगे।

दाऊद ने ख़ालिद(र०) की शख़्सियत से ऐसा तास्सुर लिया था के उस ने अपने आप को यक़ीन दिला लिया था के रोमी हारेंगे और फतह मुसलमानों की हागी। उस ने अपनी फ़ौज के सालारे आला से झूट बोला के ख़ालिद(र०) मुक़र्ररा वक़्त पर आजाऐंगे।

❈

सुबह तुलू हुई। अबु उबैदा ख़ालिद(र०) के पास आए। ख़ालिद(र०) ने इन्हें रोमी सालार विरदान की साज़िश सुनाई।

"वो दस रोमी मुझे क़त्ल करने के लिए घात में पहुंच चुके होंगे"–ख़ालिद(र०)

ने कहा-"मै चाहता हूं के अकेला जा कर इन दस रोमियों को ख़त्म कर दूं। बड़ा अच्छा शिकार है।"

"नही इब्ने वलीद!"-अबु उबैदा(र०) ने कहा-"ये तेरा काम नही। दस आदमियों के मुक़ाबले में तू क़त्ल या ज़ख्मी हो सकता है। तू बड़ा क़ीमती आदमी है। यूं कर, दस आदमी ऐसे चुन ले जो बहुत ही बहादुर हों। इन्हें वो जगह बता कर भेज दे।"

ख़ालिद(र०) ने दस मुजाहेदीन मुंतख़िब किए और इन्हें बताया के कहां जाना और क्या करना है। इन में ज़रार बिन लाज़ोर भी थे। इन्हें इन दस आदमियों का कमांडर मुक़र्रर किया गया।

मशहूर मोअरिख़ वाक़दी ने ये वाक़ेया ज़रा मुख़तलिफ बयान किया है। वो लिखता है के तय ये पाया था के ख़ालिद(र०) और विरदान की मुलाक़ात होगी। विरदान ख़ालिद(र०) को दबोच लेगा और उस की पुकार पर उस के दस रोमी घात से निकल कर ख़ालिद(र०) को क़त्ल कर देंगे। तीन और मोअरिख़ों ने भी ये वाक़ेया इसी तरह बयान किया है।

विरदान ने अपने दस आदमी रात के आख़री पहर की तारीकी में घात लगाने के लिए भेज दिए थे। ख़ालिद(र०) ने अपने दस आदमी उसी वक़्त के लग भग भेज दिए। इस के साथ ही ख़ालिद(र०) ने अपने सालारों से कहा के वो गुज़िश्ता रोज़ की तरतीब से मैदाने जंग में खड़े हो जाऐं और हमले के लिए तैयार रहे।

विरदान ने मुसलमानों को जंगी तरतीब में आते देख कर जंगी तरतीब में हो जाने का हुक्म दिया और सुबह तुलू होते ही वो शाहाना जंगी लिबास में उस जगह चला गया जहां उस ने ख़ालिद(र०) को मुलाक़ात के लिए बुलाया था। उधर से ख़ालिद(र०) भी आ गए और दोनों एक दूसरे के सामने खड़े हो गए।

"ओ अरब के बद्दु!"-विरदान ने ख़ालिद(र०) से कहा-"तू और तेरे लोग अरब में भूके मरते है और तू क़ैसरे रोम की शाही फौज के मुक़ाबले में आ गया है?.... .ओ लुटैरे! क्या मैं नही जानता के तुम लोग वहां मुफलिसी की बदतरीन ज़िन्दगी गुज़ारते हो?"

"और रोमी कुत्ते!-ख़ालिद(र०) ने ग़ज़ब नाक आवाज़ में कहा-"मै तुझे आख़री बार कहता हूं इस्लाम कुबूल कर ले या जज़िया अदा कर।"

विरदान ने झपट कर ख़ालिद(र०) को अपने बाज़ूओं में जकड़ लिया।

"आओ, आओ"-विरदान ने अपने दस आदमियों को पुकारा जो क़रीब कहीं छुपे हुए थे। ख़ालिद(र०) कम ताक़त वर तो नहीं थे लेकिन विरदान भी ताक़त में कुछ

कम न था। ख़ालिद(र०) ने बहुत ज़ोर लगाया के विरदान से ज़रा सा आज़ाद हो जाएं ताके तलवार नियाम से निकाल सकें लेकिन कामयाब न हो सके। उन्होंने देखा के दस रोमी अपनी फौजी वरदी में उन की तरफ दौड़े आ रहे है। ख़ालिद(र०) को अपना आख़री वक्त नज़र आने लगा। इन्हें तवक्क़ो थी के ज़रार और उस के नौ मुजाहेदीन ने घात वाले दस रोमियों को ख़त्म कर दिया होगा मगर वो दस के दस ज़िन्दा चले आ रहे थे। ख़ालिद(र०) को ख्याल आया के ज़रार और इन के मुजाहेदीन रोमियों के हाथों मारे गए है। या बरवक्त पहुंच नही सके।

रोमी जब क़रीब आए तो एक ने खुद, ज़िरा उतार कर फैंक दी और अल्लाह अकबर का नारा लगाया। तब ख़ालिद(र०) ने देखा के ये तो ज़रार हैं। उन्होंने बाक़ी नौ को क़रीब से देखा तो वो उन के अपने ही मुंतख़िब किए हुए मुजाहेदीन थे।

ये मज़ाक़ ज़रार बिन लाज़ोर ने किया था। उन्होंने घात में बैठे हुए रोमियों को बड़े ईतमेनान से क़त्ल कर दिया था फिर उन की वर्दियां उतार कर पहन लीं। इन्हें मालूम था के विरदान पुकारेगा। वो विरदान की पुकार पर निकल आए। विरदान खुश हो गया के उस की साज़िश कामयाब हो गई है।

"पीछे हट इब्ने वलीद!"-ज़रार ने तलवार निकाल कर कहा-"ये मेरा शिकार है"-और वो विरदान की तरफ बढ़ने लगे।

"क़सम है तुझे उस की जो कोई भी तेरा माबूद है"-विरदान ने ख़ालिद(र०) से कहा-"मुझे अपनी तलवार से ख़त्म कर और इस शैतान को मुझ से दूर रख।"

ज़रार ने अपनी एक दहशत नाक मिसाल क़ायम कर रखी थी। विरदान ने ज़रार को ज़ाती मुक़ाबलों में रोमियों को काटते देखा भी था। उसे डर था के ज़रार उसे अज़ीयत दे दे कर मारेंगे। उस के लिए अब भाग निकलना ना मुमकिन था। वो चाहता था के उसे जल्दी मार दिया जाए।

ख़ालिद(र०) ने ज़रार को इशारा किया और हाथ उन की तरफ बढ़ाया। ज़रार ने अपनी तलवार ख़ालिद(र०) को दे दी। विरदान ने मुंह दूसरी तरफ कर लिया। ख़ालिद(र०) के एक ही वार से विरदान का सर ज़मीन पर जा पड़ा।

❂

ख़ालिद(र०) वहां रूके नहीं। फौरन अपनी फौज तक पहुंचे और हमले का हुक्म दे दिया। ये हमला भी गुज़िश्ता रोज़ की मानिंद था। ख़ालिद(र०) ने क़ल्ब और दोनों पहलूओं के दस्तों को एक ही बार हल्ला बोलेने का हुक्म दिया। उन्होंने चार हज़ार मुजाहेदीन का महफूज़ जिस के सालार यज़ीद बिन जबल थे, पीछे रखा।

मसुलमान हमला करते और पीछे हट आते थे और फिर हमला करते थे। रोमी

तादाद में बहुत ज़्यादा थे लेकिन उन का सालारे आला इन मै नही था। उस की जगह उन का सालार कुबकुलार कमान कर रहा था। रोमी जम कर मुक़ाबला कर रहे थे लेकिन मुसलमानों के हमले ग़ज़ब नाक थे। इन के सालार सिपाहियों की तरह लड़ रहे थे। खुद ख़ालिद(र०) सालार से सिपाही बन गए थे। रोमी सालार लड़ा नही करते बल्कि हुक्म दिया करते थे लेकिन इस मआरके में वो मुसलमान सालारों की देखा देखी सिपाहियों की तरह लड़ने लगे। जंग की शिद्दत और खूंरेज़ी बढ़ती चली गई। दोनों तरफ कोई चाल नही चली जा रही थी। ज़्यादा नुक़सान रोमियों का हो रहा था। इन का लश्कर तह दर तह था। ख़ालिद(र०) ने ये सोच कर इतना शदीद हमला कराया था के दुश्मन का सालारे आला मारा जा चुका है और मुजाहेदीन ये देख कर ताबड़ तोड़ हमले करते थे के रोमियों की तादाद इतनी ज़्यादा है के वो एक दूसरे में फंस के रह गए है।

ख़ालिद(र०) हमले का एक और मरहला शुरू करना चाहते थे जिस के लिए वो मोज़ूं मौक़ा देख रहे थे। चन्द घझटों बाद इन्हें ये मौक़ा मिला। दोनो फौजें थक गई थीं। रोमियों को पता चल गया था के इन का सालारे आला उन में नहीं, अल्बत्ता दूसरे रोमी सालार पूरे जोश व खरोश से लड़ भी रहे थे और लड़ा भी रहे थे।

ख़ालिद(र०) ने चार हज़ार नफरी के महफुज़ को जिस के सालार यज़ीद बिन जबल थे, दुश्मन के क़लब पर हमले का हुक्म दिय। ये चार हज़ार मुजाहेदीन ताज़ा दम थे और लड़ाई में शरीक होने के लिए इतने बे ताब के नारे लगाते और बे क़ाबू हुए जाते थे। हुक्म मिलते ही वो रूके हुए सैलाब की तरह गए और इतना शदीद हमला किया के रोमियों की सफों के दूर अन्दर तक चले गए।

मुजाहेदीन के सालार रोमियों के सालार कुबकुलार को ढूंड रहे थे। मरकज़ी झझडा उसी के पास था और वो विरदान का क़ायम मुक़ाम था। पहले बताया जा चुका है के उस ने विरदान से कह दिया था के मुसलमानों के साथ सुलह समझौता कर लिया जाए। उस की दूरबीनें निगाहों ने देख लिया था के मुसलमान रोमियों पर ग़ालिब आजाऐंगे। विरदान ने उसे डांट दिया था।

मोअररिख़ तिबरी और अबु सईद ने लिखा है के मुजाहेदीन को कुबकुलार मिल गया। उसे देख कर सब हैरान रह गए। वो सालार लगता ही नही था। वो तो जंग से ला तआल्लुक़ खड़ा था। उस ने अपने सर पर इस तरह कपड़ा लिपटा हुआ था के उस की आंखें भी ढकी हुई थीं उस के मुहाफिज़ों ने बे दिली से मुक़ाबला किया, शायद इस लिए के वो अपने सिपह सालार को नीम मुर्दा समझ रहे थे। इन्ही से पता चला था के ये है कुबकुलार। मुजाहेदीन ने उसे उसी हालत में क़त्ल कर दिया। बाज़ मोअररिख़ों

ने ख्याल ज़ाहिर किया है के कुबकुलार ने अपनी आंखों पर इस लिए कपड़ा डाल रखा था के वो अपने लश्कर का कत्ले आम नही देख सकता था। उस की कुव्वते बर्दाश्त जवाब दे गई थी।

रोमियों का मरकज़ी परचम गिर पड़ा। मुजाहेदीन अब ये नारे लगा रहे थे:

"खुदा की क़सम, हम ने रोमियों के दोनों सिपह सालारों को क़त्ल कर दिया है।"

"रोमियों! तुम्हारा परचम कहां है!"

"शहंशाह हरकुल को बुलाओ।"

"रोमियों! तुम्हारी सलीबें और झंडे कहां है!"

मुजाहेदीने इस्लाम तो अपने अल्लाह, रसूल(स०) और एक अक़ीदे की ख़ातिर लड़ रहे थे लेकिन रोमी जिन के हुक्म से लड़ रहे थे वो मारे जा चुके थे। मुजाहेदीन के पस ईमान की कुव्वत थी जो जादू की तरह रोमियों पर ग़ालिब आ गई।

❁

रोमी भागने लगे। इन में से कुछ बैतुलमुक़द्दस की तरफ भागे जा रहे थे, कुछ ग़ाज़ा और बाज़ याफा की तरफ। रोमियों की जंगी ताक़त को मुकम्मल तौर पर तबाह करने के लिए ख़ालिद(र०) ने अपने सवार दस्तों को हुक्म दिया के भागते दुश्मन का तआक्कुब करें और किसी को ज़िन्दा न छोड़े।

वो एक इबरतनाक मंज़र था। रोमी जानें बचाने के लिए इधर उधर भाग रहे थे और मुसलमान सवार उन के तआक्कुब में जा कर इन्हें बरछियों में पिरो रहे थे। इन रोमियों ने अपनी तादाद पर भरोसा किया था। शराब के नशे को वो अपनी ताक़त समझे थे। उन्होंने मुसमलानों को ग़रीब और नादार समझ कर इन्हें एक एक दीनार पेश किया था। ख़ालिद(र०) ने इन्हें कहा थे के तुम से दीनार तो हम ले ही लेंगे। अब उन रोमियों को कहीं पनाह नहीं मिल रही थी। इन का मैदाने जंग में इतना जानी नुक़सान नहीं हुआ था जितना मैदाने जंग से भागते वक़्त हुआ। इन में खुश क़िस्मत वो थे जो बैतुलमुक़द्दस पहुंच गए और शहर में दाख़िल हो गए थे।

ये क़त्ले आम उस वक़्त रूका जब सूरज गुरूब हो गया और अंधेरा इतना के सवारों को अपने घोड़ों के सर नज़र नहीं आते थे। उस वक़्त ख़ालिद(र०) अपने ख़ेमे में थे। इन्हें बताया गया के दाऊद नाम का एक इसाई अरब उन से मिलने आया है। ख़ालिद(र०) नाम सुनते ही बाहर को दौड़े।

"खुदा की क़सम दाऊद"-ख़ालिद(र०) उसे गले लगा कर बोले- "तू ने सिर्फ मेरी जान नहीं बचाई, तू ने मेरी फतह आसान कर दी है। कोई भी ईनाम काफी नही हो

सकता जो मै तुझे दूं....कहां है तेरे बीवी बच्चे? किसी ने उन पर हाथ तो नही उठाया?"

"नही इब्ने वलीद!"-दाऊद ने कहा-"मै कोई ईनाम लेने नही आया। मुझे ईनाम मिल चुका है। देख मै ज़िन्दा हूं और मेरा सारा ख़ानदान ज़िन्दा है। अब एक ईनाम मुझे ये दे के ये राज़ तेरे सीने में रहे के मै ने तेरी कुछ मदद की थी। रोम की शहंशाही ज़िन्दा है। अभी तो तू इस शहंशाही में दाख़िल हुआ है।"

"तेरा राज़ क़ैसरे रोम तक नही पहुंचेगा"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"और खुदा की क़सम, तू माले ग़नीमत के हिस्से का हक़दार है। मै तुझे हिस्सा दूंगा और तू जो मांगेगा दूंगा।"

चन्द रोज़ बाद मदीने में ईद जैसी खुशियां मनाई जा रही थीं। ख़ालिद(र०) ने अमीरूलमोमेनीन अबुबकर(र०) को ख़त लिखा था के तीन गुना ताक़तवर रोमियों पर किस तरह फतह हासिल की गई है जिस में पचास हज़ार रोमी हलाक हुए हैं इस के मुक़ाबले में शहीद होने वाले मुजाहेदीन की तादाद चार सौ पचास थी। ख़ालिद(र०) का ये ख़त पहले मस्जिद में पढ़ कर सुनाया गया फिर मदीने की गलियों में लोगों को इक्ळा कर के सुनाया गया। लोगों ने नाचना शुरू कर दिया। वो एक दूसरे से बग़ल गीर होने लगे। मदीना फतह और मुसर्ररत के नारों से गूंजने लगा।

ख़ालिद(र०) ने अमीरूलमोमेनीन को ये भी लिखा था के अब वो दमिश्क़ को मुहासरे में लेंगे जो शाम का यानी रोम की शहंशाही का बड़ा ही अहम शहर था। रोम की शहंशाही बहुत ही वसी थी।

जब मदीने और गर्दो नवाह के लोगों को ये ख़बर मिली के ख़ालिद(र०) रोमियों पर एक फतह हासिल कर के दमिश्क़ की तरफ बढ़ रहे हैं तो कई मुसलमान ख़ालिद(र०) की फौज में शामिल होने के लिए तैयार हो गए। इन में अबु सुफयान भी थे जो मशहूर शख़्सियत थे। वो अपनी बीवी हुन्द के साथ रवाना हो गए।

एक हज़ार तीन सौ बावन साल पहले माह अगस्त के एक रोज़ जब मदीने में मुसलमान अजनादीन की फतह पर खुशियां मना रहे थे, मदीने से दूर, बहुत ही दूर, शुमाल में रोम की शहंशाही के एक अहम शहर हमस पर मायूसी और मातम की सियाह काली घटा छा गई थी। रोमियों के शहंशाह हरकुल के महल में क़हर और ग़ज़ब की आवाज़ें गरज रही थीं। बसरा की शिकस्त की ख़बर ले जाने वाला क़ासिद अगर वहां से खिसक न आता तो हरकुल गुस्से में उस का सर काट देता।

"हमारे सिपह सालार विरदान को क्या हो गया था?"–शहंशाह हरकुल ने ग़ज़ब नाक आवाज़ में पूछा।

"मारा गया है"– उसे कांपती हुई आवाज़ में जवाब मिला।

"और वो कुबकुलार?.....वो कहता है के मेरी तलवार की हवा से ही दुश्मन कट जाता है!"

"वो भी मारा गया है।"

"और फामूस?"

"वो लड़ाई से पहले ज़ाती मुक़ाबले में मारा गया था।"

शहंशाह हरकुल ने उन तमाम सालारों के नाम लिए जो अजनादीन की लड़ाई में शामिल थे और जिन की बहादुरी और जंगी क़यादत पर उसे भरोसा था। उसे यही जवाब मिला के मारा गया है या शदीद ज़ख़्मी हो गया है। वो सब हलाक या ज़ख़्मी नहीं हुए थे। इन में से बाज़ भाग गए थे।

"और अब मुसलमान दमिश्क़ की तरफ बढ़े आ रहे हैं"–शहंशाह हरकुल को बताया गया।

"दमिश्क़ की तरफ?"–उस ने हड़बड़ा कर कहा–"नही.....नहीं.....मैं उन्हें दमिश्क़ तक नही प्रहुंचने दूंगा। वो दमिश्क़ हम से नहीं ले सकते। वहां मेरा शेर मौजूद है......तूमा.....दमिश्क़ का सालार तूमा है।"

हरकुल तेज़ तेज़ क़दम उठाता अपने शाहाना कमरे में चल रहा था और अपनी एक हथेली पर दूसरे हाथ के मुक्के मारे जा रहा था। उस के खुशामदी दरबारियों, ख़ास ख़ादिमों और इस की ख़िदमत में हाज़िर रहने वाली बड़ी हसीन लड़कियों को मालूम था के जब शहंशाह इस तरह परेशानी, यासियत और गुस्से की कैफियत में होता है तो सब से ज़्यादा खूबसूरत लड़की शराब पेश करती है।

एक लड़की जो बारीक़ रेशमी लिबास में बरहना लगती थी, चांदी के पियाले में शराब ले कर आई और इश्तआल अंगेज़ अदा से हरकुल के सामने गई हरकुल बिफरे हुए सांड की तरह फुंकार रहा था। उस ने लड़की के हाथों में तश्तरी देख कर बड़ी ज़ोर से तश्तरी के नीचे हाथ मारा। शराब का पियाला लड़की के मुंह पर लगा। तश्तरी छत तक जा कर वापस आई। हरकुल ने लड़की को धक्का दिया तो वो दरवाज़े में जा पड़ी।

"शराब......शराब....शराब!"–हरकुल ने ग़ुस्से से कहा–"तुम ने शराब और हसीन लड़कियों से दिल बहलाने और बदमस्त रहने वालों का अंजाम देखा नहीं? तुम देख नहीं रहे वो सल्तनते रोम को ज़िल्लत और रूसवाई में फैंक रहे हैं?.....और जिन्होंने हमें शिकस्त दी है उन्होंने अपने ऊपर शराब हराम कर रखी है"–उस ने हुक्म दिया–"घोड़ा तैयार करो। मैं अंताकिया जा रहा हूं, और मैं उस वक्त वहां से वापस आऊंगा जब मैं आख़री मुसलमान की भी लाश देख लूंगा।"

बादशाह जंग के लिए जब कूच करते थे तो इस के लिए बहुत से इंतेज़ामात किए जाते थे। मुहाफिज़ दस्ता और बादशाह की मन पसंद औरतें साथ जाती थीं। ऐसे इंतेज़ामात हर वक्त तैयार रहते थे मगर अब के हरकुल तो जैसे उड़ कर अंताकिया पहुंचने की कोशिश में था। उस के कूच के इंतेज़ामात करने वालों पर क़यामत टूट पड़ी और वो इंतेज़ामात में मसरूफ हो गए।

❁

ख़ालिद(र०) अजनादीन में साथ रोज़ रहे। उन्होंने अपने सालारों से कहा के दुश्मन को कहीं सुस्ताने और दम लेने की मोहलत न दो। उसे इतनी मोहलत न दो के वो अपनी बिखरी हुई जमीयत को इक्ठा कर सके। इस उसूल के तहत दमिश्क़ की तरफ उन का कूच बहुत तेज़ था। उन्होंने अपने जासूस पहले भेज दिए थे। अब ख़ालिद(र०) ने जासूसी का निज़ाम मज़ीद बेहतर बना दिया था। वो इस हक़ीक़त को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते थे के क़ैसरे रोम की सल्तनत बहुत वसी है और इस के मुताबिक़ इस की फौज ज़्यादा भी है और बरतर भी। ऐसी फौज पर ग़ल्बा पाने के लिए इस के अहवाल व कवाइफ का क़ब्ल अज़वक्त मालूम करना ज़रूरी था और

इतना ही ज़रूरी इन इलाक़ों के ख़दोख़ाल को जानना था। जहां जहां इस फौज के दस्ते मौजूद थे उन की नक़्ल व हरकत के मुताल्लिक़ क़ब्ल अज़ वक़्त मालूमात हासिल करना भी सूदमंद था।

रास्ते में बैतुलमुक़द्दस आता था। ख़ालिद(र०) ने इस अहम शहर को नज़र अंदाज़ कर दिया और इस से कुछ फासले से आगे चले गए लेकिन एक मुक़ाम को नज़र अंदाज़ करना मुश्किल था। इस बस्ती का नाम फहल था जो एक मज़बूत क़िला था। ख़ालिद(र०) इस के क़रीब पहुंचे तो एक फक़ीर ने जो पागल लगता था, ख़ालिद(र०) का रास्ता रोक लिया। ख़ालिद(र०) बिन वलीद ने उसे अपने पास बुला लिया।

"क्या ख़बर लाए हो?"–ख़ालिद(र०) ने उस से पूछा।

वो ख़ालिद(र०) का जासूस था।

"इस बस्ती का नाम फहल है"–जासूस ने जवाब दिया–"आप देख रहे हैं। ये क़िला है। इस के अन्दर फौज है। बाहर कुछ भी नहीं । रोमियों से हमारी जहां कहीं भी टक्कर हो गई, इस क़िले से रोमियों को कुमक और दीगर मदद मिलेगी।"

ख़ालिद(र०) ने इस क़िले का मुहासरा ज़रूरी न समझा। वो अपनी नफरी कम नहीं करना चाहते थे। दमिश्क़ की तसख़ीर कोई मामूली नहीं थी।, बल्कि अपनी शिकस्त के इम्कानात बढ़ते जा रहे थे। ख़ालिद(र०) ने अपने एक नायब सालार अबुलाऔर को बुलाया और उसे हुक्म दिया के वो एक सवार दस्ता अपने साथ रखे और फहल के क़रीब कहीं तैयारी की हालत में मौजूद रहे। यहां से फौज बाहर निकले तो तीरों की बौछाड़ें मारे और किसी को बाहर न निकलने दे।

ख़ालिद(र०) वहां रूके नहीं। अबुलाऔर ने एक सवार दस्ता वहां रोक लिया और इस क़िला बंद बस्ती के जितने दरवाज़े थे, इन सब के सामने सवार मुतइय्यन कर दिए। सवारों को घोड़ों से उतरने की और महदूद से फासले तक घूमने फिरने की इजाज़त दे दी गई।

❋

ख़ालिद(र०) की फौज जिस की तादाद बत्तीस हज़ार से कम हो गई थी, बज़ाहिर बे तरतीब क़ाफले की सूरत में दमिश्क़ की जानिब जा रही थी, लेकिन इस के हर दस्ते को अपने फराइज़ का इल्म था। इन में हराविल का दस्ता भी था और इन में अक़ब और पहलूओं के हिफाज़ती दस्ते भी थे और ये तमाम दस्ते चौकन्ने हो कर चले जा रहे थे। किसी भी जगह और किसी भी वक़्त उन पर हमला हो सकता था। दाऊद इसाई ने ख़ालिद(र०) को ख़बरदार कर दिया था के वो तो अभी रोम की

शहंशाही में दाख़िल हुए है और इस शहंशाही की हदूद बहुत वसी है।

उस वक्त तक रोमी फौज के दस्ते जाहं जहां थे वहां हरकुल का ये हुक्म पहुंच चुका था के मुसलमानों की फौज को रोका जाए। इस हुक्म के तहत दमिश्क़ की तरफ जाने वाले रास्तों पर रोमियों ने अपने जासूस भेज दिए थे। दरियाए यरमूक के किनारे वाक़ोसा एक क़स्बा था। किसी रोमी जासूस ने ख़ालिद(र०) के लश्कर को आते देख लिया और पीछे जा कर इत्तेला दी। जब ख़ालिद(र०) वाक़ोसा के क़रीब पहुंचे तो रोमी फौज के बहुत से दस्ते ख़ालिद(र०) का रास्ता रोकने के लिए तैयार खड़े थे।

मोअररिख़ों ने लिखा है के अजनादीन की लड़ाई से भागे हुए कई रोमी फौजी वाक़ोसा पहुंच चुके थे। इन्हें भी इन दस्तों में शामिल कर लिया गया था जो मुसलमानों को रोकने के लिए जंगी तरतीब में खड़े थे मगर इन में लड़ने का जज़्बा सर्द था क्योंके इन पर मुसलमानों का ख़ौफ तारी था। जिन कमांडरों और सिपाहियों ने अभी मुसलमानों से जंग नहीं लड़ी थी, वो अजनादीन के भगोड़ों से पूछते थे के मुसलमान लड़ने में कैसे हैं।

"देख लो"–इन्हें कुछ इस क़िस्म के जवाब मिले– "तीस हज़ार ने नव्वे हज़ार को इस तरह शिकस्त दी है के सिपह सालार से छोटे से सालार तक एक भी ज़िन्दा नही....उन्होंने हमारी आधी नफरी मार डाली है। ज़ख़मियों का कोई हिसाब ही नहीं... .मत पूछो दोस्तों, मत पूछो। मै तो इन्हें इन्सान समझता ही नहीं। इन के पास कोई जादू है या वो जिन्नात जैसी कोई मख़लूक़ है....उन का एक एक आदमी दस दस का मुक़ाबला करता है...इन के सामने कोई जम कर लड़ ही नही सकता....पूछते क्या हो, वो आ रहे हैं खुद देख लेना।"

"वो आए और "उन्हों" ने देख लिया।

देख ये लिया के मुसलमान जो बे तरतीब क़ाफले की तरह आ रहे थे, देखते ही देखते जंगी तरतीब में हो गए। औरतें और बच्चे पीछे रह गए और इन का हिफाज़ती दस्ता अपनी जगह पर चला गया। ख़ालिद(र०) अपने मुहाफिज़ों वग़ैरा के साथ आगे हो गए और दोनों फौजें आमने सामने आ गईं।

पहले बयान हो चुका है के ख़ालिद(र०) की जंगी चालों का और मुजाहेदीन का लड़ाने का अंदाज़ ऐसा था के दुश्मन बौखला जाता फिर मुसलमानों के हमले की शिद्दत से दुश्मन के सिपाहियों पर ख़ौफ तारी हो जाता था। इन में से जो सिपाही भाग निकलते थे, वो जहां जाते इस ख़ौफ को अपने साथ ले जाते और फौज में फैलाते थे। ये साबित करने के लिए वो बिला वजह नही भागे, वो इस ख़ौफ को मुबालग़े से और

ऐसे तरीके से बयान करते थे के सुनने वाले ये समझ लेते के मुसलमानों में कोई माफ़ूकुलफितरत कुव्वत है। इस तरह ख़ालिद(र०) ने दुश्मन पर एक नफसियाती असर डाल रखा था जो हर मैदान में उन के काम आता था।

ये कुव्वत माफ़ूकुलफितरत ही थी जो अक़ीदे की सच्चाई, ईमान की पुख़्तगी और जज़्बे की शिद्दत से पैदा हुई थी। मुसलमान अल्लाह के हुक्म से लड़ते थे। उन के दिलों में कोई ज़ाती ग़र्ज़ और लालच नही था।

वाक़ोसा के मैदान में जब रोमी मुसलमानों के मुक़ाबले में आए तो उन के अंदाज़ में जोश व ख़रोश था और जारहीयत भी शदीद नज़र आती थी लेकिन ख़ालिद(र०) ने जब हमला किया तो रोमियों में लड़ने का जज़्बा इतना शदीद न था जितना होना चाहिए था। ख़ालिद(र०) ने सामने से हमला किया और दोनों पहलूओं के कुछ दस्तों को फैला कर इस हुक्म के साथ आगे बढ़ाया के दुश्मन के पहलूओं की तरफ जा कर हमला करें।

मोअररिख़ों के मुताबिक़, रोमी सामने के हमले को रोकने के लिए ऐसी सूरत इख़्तियार कर बैठे के अपने पहलूओं को न देख सके। उन पर जब दायें और बायें से भी हमला हुआ और उन के दायें बायें के दस्ते मुसलामनों के दबाव से अन्दर को सुकड़ने और सिमटने लगे तो वो घबरा गए और उन पर वो ख़ौफ तारी हो गया जो ख़ालिद(र०) के नाम से मंसूब था। इस ख़ौफ ने रोमियों के पांव उखाड़ दिए।

इन रोमी दस्तों के लिए हुक्म ये था के वो मुसलमानों को ज़्यादा से ज़्यादा दिनों तक रोके रखें। वजह ये थी के दमिश्क़ में जो रोमी फौज थी, उस में दूसरी जगहों से दस्ते भेज कर इज़ाफा किया जा रहा था। हरकुल इस कोशिश में था के उस के ये दस्ते मुसलमानों से पहले दमिश्क़ पहुंच जाऐं। इस के लिए ज़रूरी था के वाक़ोसा में मुसलमानों की फौज को रोक लिया जाता और ऐसी लड़ाई लड़ी जाती जो तूल पकड़ जाती। ऐसी लड़ाई के तौर तरीके मुख़तलिफ होते हैं। ख़ालिद(र०) ने रोमियों को कुछ सोचने की मोहलत ही न दी। रोमी बेशुमार लाशें और ज़ख़्मी मैदान में छोड़ कर भाग गए।

ख़ालिद(र०) वहां इतना ही रूके के अपने शहीदों का जनाज़ा पढ़ कर दफ्न किया, ज़ख़्मियों को साथ लिया और माले ग़नीमत इकठा किया और चल पड़े।

ये अगस्त 634ई० का तीसरा हफ्ता (जमादीउलआख़िर 13 हिज्री) था।

❁

शहंशाहे हरकुल अंताकिया जा पहुंचा और वहां अपना हैडक्वाटर बना लिया। हमस से अंताकिया को रवाना होने से पहले उस ने दमिश्क़ की रोमी फौज के

सालारों- तूमा, हरबीस और अज़ाज़ीर- को पैग़ाम भेज दिया था के वो फौरन अंताकिया पहुंचे। हरकुल के पहुंचते ही तीनों सालार अंताकिया पहुंच गए।

"क्या तुम ने सुन लिया है के तुम्हारे सालार विरदान और कुबकुलार भी मारे जा चुके है?"-शहंशाह हरकुल ने उन से पूछा-"क्या तुम भी कैसरे रोम की अज़मत को ज़हन से उतार दोगे? क्या तुम्हारी नज़रों में भी सलीब का तक़दुस ख़त्म हो चुका है?"

"मुसलमान अभी हमार सामने तो आए ही नहीं"-सालारे तूमा ने कहा-"हमें अभी न आप ने आज़माया है न मुसलमानों ने। इन्हें आने दें। मै आप की बेटी के आगे शर्मसार नहीं होंगा।

तूमा शहंशाह हरकुल का दामाद था और वो दमिश्क़ का सिपह सालार था। बड़ा पक्का मज़हबी आदमी था और अपने मज़हब इसाईयत के फरोग़ और तहफ्फुज़ के लिए सरगर्म रहता था।

"तूमा!"-हरकुल ने उसे कहा-"तुम मज़हब में इतने मगन रहते हो के दमिश्क़ के दिफाअ की तरफ पूरी तवज्जह नहीं दे रहे।"

"मै तो ये समझता हूं के मज़हब न रहा तो दमिश्क़ भी नही रहेगा"-तूमा ने कहा-"क्या आप नहीं जानते के मुसलामनों के ख़िलाफ जंग भी मज़हब में शामिल है?....मै यहां अकेला तो नंही। जंगी मामले सालार हरबीस के पास हैं और सालार अज़ाज़ीर भी मेरे साथ है। क्या अजाजीर फारसियों को और दिगर दुश्मनों को कई लड़ाइयों में शिकस्त नहीं दे चुका है?"

"मुझे जितना भरोसा अज़ाज़ीर पर है इतना तुम दोनों पर नहीं"-हरकुल ने कहा-"अज़ाज़ीर तुजुर्बेकार सालार है। तुम दोनों को अभी साबित करना है के तुम अज़ाज़ीर के हम पल्ला हो।"

अज़ाज़ीर रोमियों का बड़ा ही क़ाबिल और दिलैर सालार था। उस ने बहुत सी लड़ाईयां लड़ीं और हर मैदान में फतह हासिल की थी। अरबी ज़बान पर उसे इतना उबूर हासिल था के वो अरबी बोलता तो शक होता था के अरब का रहने वाला है। दमिश्क़ की फौज का कमांडर दरअसल वही था।

अंताकिया में कलूस नाम का एक रोमी सालार था। उसे हरकुल ने पांच हज़ार नफरी की फौज दे कर दमिश्क़ जाने को कहा।

"शहंशाहे हरकुल!"-कलूस ने कहा-"मै हल्फिया कहता हूं के मै आप के सामने उस वक्त आऊंगा जब मेरी बरछी की अन्नी के साथ मदीने के सालार ख़ालिद(र०) बिन वलीद का सर होगा।"

"तुम मुझे सिर्फ हलफ से खुश नही कर सकते"-हरकुल ने कहा-"मैं सिर्फ इब्ने वलीद का सर नही, तमाम मुसलमानों की लाशें देखना चाहता हूं.....फौरन दमिश्क़ पहुंचो। वहां कुमक की ज़रूरत है। सब चले जाओ और दमिश्क़ को बचाओ।"

तमाम सालार फौरन रवाना हो गए। हरकुल का एक मुशीर ख़ास हरकुल के पास मौजूद रहा।

"शहंशाहे हरकुल!"-इस मुशीर ने कहा-"सालार कलूस को दमिश्क़ न भेजते तो अच्छा था। अगर इसे भेजना ही था तो सालार अज़ाज़ीर को दमिश्क़ से निकाल लेते।"

"क्यों?"

"क्या शहंशाह भूल गए हैं के इन दोनों में ऐसी चपक़लिश है जो दुश्मनी की सूरत इख़्तियार कर जाया करती है"-मुशीर ने कहा-"इन की आपस में बोल चाल बंद है....दरअसल कलूस अज़ाज़ीर की अच्छी शौहरत से हसद करता है। कोई और वजह भी हो सकती है।"

"क्या तुम ये ख़तरा महसूस कर रहे हो के वो लड़ाई के दौरान एक दूसरे को नुक़सान पहुंचाने की कोशिश करेंगे?"-हरकुल ने पूछा।

हां शहंशाहे रोम!"-मुशीर ने कहा-"मैं यही ख़तरा महसूस कर रहा हूं।"

"ऐसा नहीं होगा"-हरकुल ने क़हा-"इन्हें ये अहसास तो ज़रूर होगा के वो मिल कर न लड़े तो बड़ी बुरी शिकस्त खाऐंगे, और वो मुझे खुश करने और एक दूसरे को मेरी नज़रों में गिराने के लिए जोश व ख़रोश से लड़ेंगे....और अगर उन्होंने एक दूसरे को नुक़सान पहुंचाने की कोशिश की तो इन्हें यक़ीनन मालूम है के इन की सज़ा क्या होगी।"

मुशीर ख़ामोश हो गया लेकिन उस के चेहरे पर परेशानी के आसार पहले से ज़्यादा हो गए।

❁

ख़ालिद(र०) के मुजाहेदीन दमिश्क़ की जानिब बढ़े जा रहे थे।

रोमी सालार अज़ाज़ीर ने दमिश्क़ पहुंचते ही शहर के दिफाअ को मज़बूत बनाना शुरू कर दिया। दमिश्क़ की शहर पनाह के छः दरवाज़े थे और हर दरवाज़े का एक नाम था। अज़ाज़ीर ने दमिश्क़ को मुहासरे से बचाने का ये इन्ज़ाम किया के ज़्यादा फौज शहर के बाहर रखी ताके मुसलामनों को शहर तक पहुंचने ही न दिया जाए। इन्हें शहर से बाहर ख़त्म कर दिया जाए। शहर में ख़ास तौर पर मुंतख़िब किए हुए

दस्ते रखे गए। इन में एक मुहाफिज़ दस्ता था। जिसे जांबाज़ दस्ता कहा जाता था।

इस एक मील से कुछ ज़्यादा लम्बे और चार पांच फरलांग चौड़े शहर की आबादी में इस ख़बर ने हड़बोंग बपा कर दी थी के मुसलमान शहर को मुहासरे में लेने के लिए आ रहे है। इस ख़बर से पहले मुसलामनों की दहशत शहर में दाख़िल हो चुकी थी। सालार शहरियों को भी शहर के दिफाअ के लिए तैयार कर रहे थे लेकिन शहरियों से इन्हें तआवुन नही मिल रहा था। शहरी तो अपना माल व दौलत और अपनी जवान लड़कियों को छुपाते फिर रहे थे। इन में से बाज़ ने अपने कुन्बों को साथ ले कर भागने की भी कोशिश की लेकिन फौज ने इन्हें रोक दिया।

मुजाहेदीन का लश्कर दमिश्क़ से ज़्यादा दूर नहीं रह गया था। जासूस जो आगे गए हुए थे वो बारी बारी पीछे आते, रिर्पोट देते और फिर आगे चले जाते थे। अब मुजाहेदीन की जज़्बाती कैफियत ऐसी थी जैसे इन का कोई घर न हो, कोई वतन न हो, बीवी न हो, बच्चा न हो, बस़ अल्लाह ही अल्लाह हो जिस के नाम का वो विर्द करते जाते या चन्द मुजाहेदीन मिल कर कोई जंगी तराना गाते थे। उन्होंने अपना रिश्ता अल्लाह के साथ और रसूल अल्लाह(स०) की रूह अक़दस के साथ जोड़ लिया था। उन्होंने अपनी जानें अल्लाह की कुर्बान गाह पर रख दी थी। रोमियों के लिए वो जिस्म थे लेकिन अपने लिए वो रूहें थीं और अपने जिस्मों की तकालीफ और ज़रूरियात से वो बेनियाज़ हो गए थे। इन्हें तो जैसे ये अहसास भी नही रहा था के उन की तादाद बहुत कम है और दुश्मन की तादाद कई गुना है।

इन के सिपह सालार ख़ालिद(र०) की जज़्बाती कैफियत भी ऐसी थी लेकिन तारीख़ के इस अज़ीम जरनेल की निगाह हक़ायक़ पर थी। वो सोचते रहते थे के इतनी कम नफरी को इतनी ज़्यादा नफरी के ख़िलाफ किस तरह इस्तेमाल किया जाए के मतलूबा नताइज हासिल हों। उन्होंने रोमियों को देख लिया और तस्लीम किया था के ये एक उम्दा फौज है। उन्होंने ये भी पेशेनज़र रखा था के रोमी अपने मुल्क में है और जो सहूलतें इन्हें हासिल हैं वो हमें नही मिल सकती। शिकस्त की सूरत में मुसलमानों के लिए वहां कोई पनाह नही थी। इस सूरत में इन्हें क़ैद या क़त्ल होना था। इन अहवाल व कवाइफ के पेशे नज़र ख़ालिद(र०) ने अपनी फौज में कुछ तबदीलियां की थी।

एक तो उन्होंने जासूसी के इन्तेज़ामात और ज़राय को पहले से बेहतर बना कर इन्हें मुनज़्ज़म कर दिया। चन्द और तबदीलियों में क़ाबिले ज़िक्र ये है के ख़ालिद(र०) ने एक सवार दस्ता बनाया जिस में चार हज़ार मुंतख़िब घुड़सवार रखे। ये तेज़ रफ्तार और मुताहरिक दस्ता था। इसे तलीआ कहते थे। मुताहरिक से मुराद ये है के इस

रिसाले ने जम कर नही बल्किं भागते दौड़ते, हमला कर के इधर उधर हो जाते और दुश्मन को घुमा फिरा कर लड़ाते जंग में शरीक रहना था।

ख़ालिद(र०) ने इस दस्ते की कमान अपने हाथ में रखी। दमिश्क़ की जानिब कूच के दौरान ये सवार दस्ता मुसलमानों के लश्कर के हराविल में था।

कूच का चौथा दिन था। हराविल का ये सवार दस्ता एक बस्ती मराजुल सुफर के क़रीब पहुंचा तो आगे गए हुए दो जासूस आए। ख़ालिद(र०) इस दस्ते के साथ थे। जासूसों ने इन्हें बताया के थोड़ी दूर आगे रोमी फौज तैयारी की हालत में पड़ाव किए हुए है। जासूसों के अंदाज़ के मुताकिब़, वो मुक़ाम दमिश्क़ से बारह तेरह मील दूर था।

मोअररिख़ों ने लिखा है के इस रोमी फौज की तादाद बारह हज़ार थी और इस में सवार ज़्यादा थे। इस के दो सालार थे। एक अज़ाज़ीर और दूसरा कलूस। ये वही रोमी सालार थे जिन की आपस में दुश्मनी थी। इन्हें दमिश्क़ के सिपह सालार तूमा ने इस मंसूबे के तहत भेजा था के मुसलमानों के लश्कर को दमिश्क़ तक न पहुंचने दिया जाए। अगर इसे तबाह न किया जा सके तो इतना कमज़ोर कर दिया जाए के वो वापस चला जाए। अगर ये भी न हो सके तो इतनी सी कामयाबी हर क़ीमत पर हासिल की जाए के मुसलमानों को ज़्यादा से ज़्यादा दिन दमिश्क़ से दूर रखा जाए ताके दमिश्क़ के दिफाअ के लिए मज़ीद दस्ते वहां पहुंचाए जा सके और शहर में इतनी खुराक़ पहुचा कर जमा की जा सके के मुहासरा तूल पकड़ जाए तो शहर में क़हत की सूरत पैदा न हो।

ख़ालिद(र०) के लिए ये मसला पैदा हो गया के उन के साथ हराविल का सिर्फ ये सवार दस्ता था जिस की नफरी चार हज़ार थी। बाक़ी लश्कर अभी बहुत दूर था। हराविल की रफ्तार तेज़ थी। दुश्मन की मौजूदगी की इत्तेला पर ख़ालिद(र०) ने रफ्तार सुस्त कर दी। इस का एक मक़सद तो ये था के पूरा लश्कर आ जाए और दूसरा ये के दुश्मन के क़रीब शाम को पहुचें ताके रात को आराम किया जा सके और अललसुबह लड़ाई शुरू की जाए।

अगर जासूस आगे गए हुए न होते तो ख़ालिद(र०) लाइल्मी में चार हज़ार सवारों के साथ दुश्मन के सामने जा पहुंचते फिर सूरते हाल इन के हक़ में न रहती। रोमियों के इस बारह हज़ार लश्कर ने बड़ी अच्छी जगह पड़ाव डाला हुआ था। वहां एक वादी थी जिस में घने दरख़्त थे और एक पहाड़ी थी। रोमी इस पहाड़ी के सामने और वादी के मुंह में थे। उन्होंने लड़ाई के लिए ये जगह मुंतख़िब की थी जो उन को कई जंगी फायदे दे सकती थी। मुसलमान इस फंदे में आ सकते थे।

ख़ालिद(र०) ने अपनी रफ्तार ऐसी रखी के सूरज गुरूब होने से ज़रा पहले दुश्मन के सामने पहुंचे। दुश्मन से इन का फासला एक मील के लगभग था। ख़ालिद(र०) ने अपने दस्ते को रोक लिया और वही पड़ाव करने को कहा। सूरज गुरूब हो गया इस लिए ये ख़तरा न रहा के दुश्मन हमला कर देगा।

जमादीउलसानिया 13 हिज्री के चांद की अठारवी थी। आधी रात को चांदनी बड़ी साफ थी। ख़ालिद(र०) पा पियादा आगे चले गए। रोमियों के सवार गश्ती संतरी गश्त पर थे। ख़ालिद(र०) इन से बचते पहाड़ी तक गए। वो ज़ीमन के ख़दोख़ाल का जायज़ा ले रहे थे। रात गुज़रते ही इन्हें यहां लड़ना था। वो देख रहे थे के उन के सवार दस्ते के लिए भागने दौड़ने की जगह है या नहीं।

ख़ालिद(र०) के लिए परेशानी ये थी के उन का लश्कर बहुत दूर था। उन्होंने पैग़ाम तो भेज दिया था के रफ्तार तेज़ करें, फिर भी लश्कर जल्दी नहीं पहुंच सकता था। इस की रफ्तार तो पहले ही तेज़ थी। मुसलमानों का कूच होता ही तेज़ था।

❁

19 अगस्त 634ई० (19 जमादीउलसानिया 13 हिज्री) की सुबह तुलू हुई। फज्र की नमाज़ से फारिग़ होते ही ख़ालिद(र०) ने अपने सवार दस्ते को जंग की तैयारी का हुक्म दिया। रोमी भी तैयारी में आ गए। ख़ालिद(र०) ने रोमियों की तरतीब देखी तो इन्हें शक हुआ के रोमी हमले में पहल नहीं करना चाहते। ख़ालिद(र०) भी पहल करने की पोज़िशन में नहीं थे। इन्हें इतना वक्त दरकार था के बाक़ी लश्कर पहुंच जाए।

ख़ालिद(र०) ने रोमियों का इरादा मालूम करने के लिए अपने सवार दस्ते के एक हिस्से को हमला कर के पीछे या दायें बायें निकल जाने का हुक्म दिया। तक़रीबन एक हज़ार घोड़े समुद्री तूफान की मौजों की तरह गए। रोमियों ने हमला रोकने की बजाए ये हरकत की के पीछे हटने लगे। मुसलमान सवार इस ख्याल से आगे न गए के दुश्मन घेरे में ले लेगा। वैसे भी इन्हें आमने सामने की लड़ाई नहीं लड़नी थी। वो जिस रफ्तार से गए थे इसी रफ्तार से घोड़े मोड़ते हुए दूर का चक्कर काट कर आ गए।

चन्द एक सालार ख़ालिद(र०) के साथ थे। सब को तवक्क़ो थी के अब रोमी हमले के लिए आऐंगे। उन की फौज तीन गुना थी मगर उन्होंने कोई जवाबी हरकत न की।

"खुदा की क़सम, रोमी कुछ और चाहते हैं" -ख़ालिद(र०) ने अपने सालारों से कहा- "ये हमारे साथ खेलना चाहते हैं और मैं अपने लश्कर के इन्तेज़ार में हूं।"

"इन के साथ खेलो इब्ने वलीद!"–सालार ज़रार बिन लाज़ोर ने कहा–"ये लड़ना नहीं चाहते। हमारा रास्ता रोकना चाहते हैं।"

"और इन्हें शायद मालूम नहीं के हमारा लश्कर अभी दूर है"–ख़ालिद(र०) ने कहा।

"ये भी सोच इब्ने वलीद(र०)!"–सालार शरजील(र०) ने कहा–"क्या ये चौकस नहीं के हमारा लश्कर शायद किसी और तरफ से इन पर हमला करेगा?"

"मैं इन का ध्यान फेर देता हूं–ख़ालिद(र०) ने कहा।

रोमियों की तवज्जह अपनी तरफ करने के लिए ख़ालिद(र०) ने ये तरीक़ा इख़्तियार किया के दुश्मन को इंफिरादी मुक़ाबलों के लिए लल्कारा। पहले बयान हो चुका है के उस दौर में फौजों की लड़ाई से पहले दोनों फौजों से एक एक आदमी सामने आता और इन में इंफिरादी लड़ाई होती थी।

ख़ालिद(र०) ने ज़रार बिन लाज़ौर(र०), शरजील बिन हस्ना(र०) और अमीरूमोमेनीन अबुबकर(र०) के बेटे अब्दुर्रहमान को मुक़ाबले के लिए आगे किया।

❁

ये तीनों सालार थे। वो दोनों फौजों के दरमियान जा कर घोड़े दौड़ाने और दुश्मन को लल्कारने लगे। रोमियों की सफों से तीन सवार निकले। वो भी सालारी के रूत्बे के आदमी थी। रोमी जंगजू क़ौम थी। इस क़ौम ने तारीख़ साज़ तेग़ ज़न और शहसवार पेदा किए हैं। ख़ालिद(र०) के इन तीन सालारों के मुक़ाबलों में जो रोमी निकले वो ज़बरदस्त लड़ाके थे।

खुले मैदान में मुक़ाबले शुरू हो गए। ये तीन जोड़ों का मुक़ाबला था। तीनों जोड़े अलग हो गए। घोड़े दौड़ रहे थे, घूम रहे थे और बरछियों से बरछियां टकरा रही थीं। दोनों फौजों से नारे गरज रहे थे। घोड़े अपनी उड़ाई हुई गर्द में छिपते जा रहे थे, फिर गर्द से एक घोड़ा निकला। इस का सवार एक तरफ लुढ़क गया था। घोड़ा बेलगाम हो कर इधर उधर दौड़ रहा था। वो एक रोमी सालार था जो बड़ा गहरा ज़ख़्म खा कर घोड़े से गिर रहा था। रोमियों की सफों से एक घोड़ा सरपट दौड़ता निकला और गिरते हुए सवार के पीछे गया। उस ने घोड़े के सवार को घोड़े की पीठ पर कर दिया लेकिन वो मर चुका था।

थोड़ी ही देर बाद एक और रोमी सवार गिरा फिर तीसरा भी गिर पड़ा। तीनों रोमी मारे गए। ज़रार बिन लाज़ौर(र०) का अंदाज़ वही था के मुक़ाबले में उतरते ही उन्होंने खुद, ज़िरा और क़मीज़ उतार कर फैंक दी थी। मुक़ाबला ख़त्म हुआ तो तीन रोमियों की लाशें एक दूसरी से दूर दूर पड़ी थीं। ज़रार(र०), शरजील(र०) और

अब्दुर्रहमान रोमियों की अगली सफ के क़रीब जा कर घोड़े दौड़ाते और इन्हें लल्कारते थे।

"रोमियो! ये लाशें उठाओ। आगे आओ बुज़दिलों!"

"है कोई और मौत का तलबगार!"

"हम रोमियों के क़ातिल हैं।"

"रोमियो! ये ज़मीन तुम पर तंग हो गई है।"

इधर मुजाहेदीने इस्लाम ने वो शौर व गुल बपा कर रखा था के आसमान हिलने लगता था।

एक और रोमी घोड़ा दौड़ता मैदान मै आया और उस ने तलवार लहरा कर घोड़ा चक्कर में दौड़ाया।

अब्दुर्रहमान बिन अबी बकर(र०) उस की तरफ गए तो ज़रार(र०) ने अपने घोड़े को ऐड़ लगाई और चिल्लाए-"पीछे रह अबी बकर(र०) के बेटे! इसे मेरे लिए छोड़ दे"-वो अब्दुर्रहमान(र०) के क़रीब से गुज़र गए। रोमी ने घोड़ा उन की तरफ मोड़ा लेकिन ज़रार(र०) ने उस के घोड़े को पूरी तरह मुड़ने भी न दिया। उन्होंने तलवार की नोक रोमी के पहलू में उतार दी लेकिन इतनी नहीं के वो गिर पड़े। ज़रार(र०) ने उसे मुक़ाबले का मौक़ा दिया था। उस ने मुक़ाबला किया लेकिन उसका दम ख़म पहले ज़ख़्म से ही ख़त्म हो चुका था। ज़रार(र०) इस के साथ खेलते रहे, आख़िर ऐसा भरपूर वार किया के वो घोड़े पर दोहरा हुआ फिर लुढ़क कर नीचे आ पड़ा।

मदीने के इन तीन सालारों के मुक़ाबले में चन्द और रोमी आए और मारे गए। ज़रार(र०), शरजील(र०) और अब्दुर्रहमान(र०) ने सिर्फ यही नहीं किया के रोमियों की अगली सफ के क़रीब जा कर घोड़े दौड़ाते और इन्हें लल्कारते थे बल्कि कोई रोमी सफ से आगे हो कर उन की तंज़िया लल्कार का जवाब देता तो वो इन तीनों में से जिस के सामने होता वो उसे बरछी य तलवार से ख़त्म कर देता। इस तरह उन्होंने चन्द एक रोमियों को ज़ख्मी भी किया और क़त्ल भी।

ख़ालिद(र०) पहले तो तमाशा देखते रहे फिर वो जोश में आ गए। उन्होंने घोड़े को ऐड़ लगाई और आगे चले गए।

"पीछे आ जाओ तुम तीनों!"-ख़ालिद(र०) ने बड़ी बुलंद आवाज़ में कहा और मैदान में घोड़ा दौड़ाने लगे।

उन के हाथ में बरछी थी। मोअररिख़ों ने उन की लल्कार के अल्फाज़ लिखे हैं:

मैं इस्लाम का सतून हूं

मै अल्लाह के रसूल(स०) का सहाबी हूं
मै ख़ालिद(र०) बिन वलीद हूं
मै अपनी फौज का सिपह सालार हूं। मेरे मुक़ाबले में सिपह सालार आए।

वाक़दी और तिबरी ने लिखा है के रोमी सालारों अज़ाज़ीर और कलूस के दरमियान चपक़लिश थी। जब ख़ालिद(र०) ने कहा के उन के मुक़ाबले में सिपह सालार आए तो रोमी सालार अज़ाज़ीर ने अपने साथी सालार कलूस की तरफ देखा और कहा के कलूस अपने आप को सिपह सालार समझता है। मैं तो इस के मुक़ाबले में कुछ भी नही। कलूस ये सुन कर ख़ामोश रहा और मुक़ाबले के लिए आगे भी न बढ़ा।

"हमारा सालार कलूस डर गया है" –अज़ाज़ीर ने तंज़िया कहा।

उस ने कलूस को कुछ और ताने भी दिए। कलूस का अंदाज़ बता रहा था के वो ख़ालिद(र०) के मुक़ाबले में जाने से हिचकिचा रहा है लेकिन अज़ाज़ीर उस पर तानों के तीर चला रहा था। इन से तंग आकर कलूस ने घोड़ा बढ़ाया और ख़ालिद(र०) की तरफ गया।

चार मोअररिख़ों ने मुताफक्क़ा तौर पर बयान किया है के ख़ालिद(र०) के हाथ में बरछी थी। कलूस उन की तरफ आया तो उस का अंदाज़ हमले वाला नहीं था और उस ने ख़ालिद(र०) को कुछ ऐसा इशारा किया था जैसे कोई बात करना चाहता हो। ख़ालिद(र०) ने उस के इशारे की परवाह न की। दुश्मन का दोस्ताना इशारा धोका भी हो सकता था। ख़ालिद(र०) ने अपना घोड़ा उस की तरफ दौड़ाया और उस पर बरछी का वार किया। कलूस तजुर्बेकार जंगजू था। उस ने अपने आप को इस वार से साफ बचा लिया।

ख़ालिद ने आगे जा कर घोड़ा मोड़ा और कलूस पर दूसरे हमले के लिए गए। अब के उन्होंने संभल कर कलूस को बरछी मारी। कलूस ने अब फिर उन का वार बेकार कर दिया। ख़ालिद(र०) ने बरछी फैंक दी। कलूस ने देखा के अब ख़ालिद(र०) खाली हाथ आ रहे हैं तो उस ने तलवार तानी। ख़ालिद(र०) ने घोड़ा उस की ज़द से परे कर लिया और घोड़े को ज़्यादा आगे न जाने दिया। इसे फौरन रोक कर मोड़ा और कलूस पर आए। कलूस ने घोड़ा दौड़ाया। वो बेहतर पोज़ीशन मे आ कर वार कनरना चाहता था लेकिन ख़ालिद(र०) ने पीछे से आकर उसे मज़बूती से पकड़ लिया और घोड़े से गिरा दिया। उन्होंने घोड़े से बूंद कर कलूस को दबोच लिया।

कलूस ज़ीमन पर पड़ा था। उस ने उठने की ज़रा सी भी कोशिश न की। ख़ालिद(र०) ने अपने मुहाफिज़ों को पुकारा के आऐं। दो तीन मुहाफिज़ दौड़े गए।

ख़ालिद ने इन्हें कहा के कलूस को क़ैदी बना लें। इस तरह कलूस मरने से बच गया और क़ैदी बन गया।

❁

जब कलूस को क़ैदी बना कर ख़ालिद(र०) के मुहाफिज़ ले गए तो उसे पीछे ले जाने की बजाए सामने खड़ा कर दिया गया ताके रोमी उसे देखते रहें। ख़ालिद(र०) फिर घोड़े पर सवार हो गए और घोड़ा चक्कर में दौड़ते और रोमियों को लल्कारते थे और उन का मज़ाक़ भी उड़ाते थे। कलूस का घोड़ा एक जगह रूक गया था। ख़ालिद(र०) के इशारे पर उन का एक मुहाफिज़ कलूस का घोड़ा पकड़ लाया।

ख़ालिद(र०) की लल्कार के जवाब में अब रोमी सालार अज़ाज़ीर सामने आया।

"ओ कलूस!"–सालार अज़ाज़ीर ने ख़ालिद(र०) को लल्कारने की बजाए अपने साथी सालार कलूस को लल्कार कर ताना दिया–"देख ले अपना अंजाम कुज़दिल कमीने! तू मुझे रूसवा कर रहा था। अब मेरी तलवार का कमाल देख"–उस ने ख़ालिद(र०) पर हमला करने की बजाए घोड़ा आम चाल से ख़ालिद(र०) की तरफ बढ़ाया और ख़ालिद(र०) से तंज़िया लहजे में कहा–"अरबी भाई! मैं तुझ से कुछ पूछूंगा। मेरे क़रीब आ जा।"

"ओ अल्लाह के दुश्मन!"–ख़ालिद(र०) ने इसकी तंज़ को समझते हुए कहा–"मैं तेरे क़रीब गया तो तेरा सर तेरे जिस्म के साथ नहीं रहेगा। तू ही आ जा।"

अज़ाज़ीर ने तलवार निकाली और ख़ालिद(र०) की तरफ आया लेकिन वो हंस रहा था जैसे ख़ालिद(र०) को कुछ समझता ही न हो। वो ख़ालिद(र०) से कुछ दूर रूक गया।

"अरबी भाई!"–उस ने कहा–"तुझे मेरे मुक़ाबले में आने को किस ने कहा है? क्या तू ने सोचा नहीं के तू मेरे हाथों मारा जाएगा तो तेरे साथी सालार तेरे बग़ैर क्या करेंगे?"

"अल्लाह से दुश्मनी रखने वाले रोमी!"–ख़ालिद(र०) ने कहा–"क्या तू ने देखा नहीं के मेरे साथियों ने क्या कर दिखाया है? इन्हें अगर मेरी इजाज़त होती तो ये तेरे इस सारे लश्कर को इसी तरह काट देते जिस तरह तेरे ये साथी कटे हुए मुर्दा पड़े हैं। मेरे साथी आख़रत से मोहब्बत करते हैं। ये दुनिया और ये ज़िन्दगी तो इन के लिए कुछ भी नहीं......तू है कौन? मैं तुझे नहीं जानता।"

"ओ बद् क़िस्मत अरबी!"–अज़ाज़ीर ने ख़ालिद(र०) का मज़ाक़ उड़ाने के लहजे में कहा–"मैं इस मुल्क का जाबिर सालार हूं। तेरे लिए क़हर हूं। मै फारसियों

का क़ातिल हूं, तुर्कों के लश्कर को बरबाद करने वाला हूं।"

"मै तेरा नाम पूछ रहा हूं"-ख़ालिद(र०) ने कहा।

"मै मौत का फरिश्ता हूं"-अज़ाज़ीर ने कहा-"मेरा नाम अज़ाज़ीर है लेकिन मै इज़राईल हूं।"

"खुदा की क़सम, जिस मौत का तू फरिश्ता है वो मौत तुझे ढुंड रही है"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"वो तुझे जहन्नुम के सब से नीचे वाले हिस्से में पहुंचाएगी।"

अज़ाज़ीर को ख़ालिद(र०) की इस तंज़ पर भड़क उठना उठना चाहिए था। लेकिन उस ने अपने आप को ठझडा रखा।

"मेरे अरबी भाई!"-उस ने ख़ालिद(र०) से कहा-"तू कलूस के साथ क्या सलूक कर रहा है जो तेरी क़ैद में है?"

"वो देख रोमी सालार!"-ख़ालिद(र०) ने जवाब दिया-"तेरा सालार बंधा हुआ है।"

अज़ाज़ीर का रवैया और लहजा और ज़्यादा ठझडा हो गया।

"क्या वजह है के तूने इसे अभी तक क़त्ल नहीं किया?"-अज़ाज़ीर ने कहा-"तू नही जानता के रोमियों में अगर कोई सब से ज़्यादा अय्यार और शैतान है तो वो कलूस है.....तू उसे क़त्ल क्यों नहीं करता?"

"कोई वजह नहीं"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"सिर्फ ये इरादा है के तुम दोनों को इक्ळा क़त्ल करूंगा।"

इन दोनों रोमी सालारों की आपस की दुश्मनी इतनी ज़्यादा थी के वो ख़ालिद(र०) की किसी बात पर भड़कता ही नहीं था।

"मेरी एक बात पर कान धर अरबी सालार!"-अज़ाज़ीर ने दोस्ताना लहजे में कहा-"अगर तू कलूस को मेरे सामने क़त्ल कर दे तो मै तुझे एक हज़ार दीनार, दस क़बाऐं रशम की और आला नस्ल के पांच घोड़े दूंगा।"

"ओ रोम के जाबिर सालार!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"ये सब तो मुझे कलूस को क़त्ल करने का ईनाम दे रहा है। ये बता के मेरे हाथों क़त्ल होने से बचने के लिए तू मुझे क्या देगा। अपनी जान की क़ीमत बता दे।"

"तू ही बता"-अज़ाज़ीर ने कहा-"क्या लेगा?"

"जज़िया!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"अगर नहीं तो इस्लाम क़ुबूल कर ले।"

अब अज़ाज़ीर भड़का।

"आ अरब के बद्दु!"-अज़ाज़ीर ने कहा-"अब मेरा वार देख हम अज़मत की

तरफ जाते है, तू ज़िल्लत में जाता है। आ, आपने आप को मेरे हाथों क़त्ल होने से बचा।"

❁

उस ने तलवार हूं में लहराई और ख़ालिद(र०) पर हमला करने के लिए घोड़े को ऐड़ लगाई। ख़ालिद(र०) उस से तेज़ निकले। उन्होंने अपने घोड़े को ऐड़ लगाई। अज़ाज़ीरे क़रीब ही था। ख़ालिद(र०) ने तलवार का वार किया जो अज़ाज़ीर ने फुर्ती से एक तरफ हट कर बेकार कर दिया। इस के बाद ख़ालिद(र०) ने हर तरफ से आकर इस रोमी सालार पर वार किए मगर वो बड़ी फुर्ती से इधर उधर हो कर वार बचाता रहा। उस ने बाज़ वार अपनी तलवार पर रोके।

मोअरर्ख़ि वाक़दी ने उस दौर की तहरीरों के हवाले से ख़ालिद(र०) और अज़ाज़ीर के मुक़ाबले को तफसील से बयान किया है। अज़ाज़ीर वार रोकता था वार करता नही था। रोमी लश्कर से तो दाद व तहसीन का शौर उठ ही रहा था, मुसलमानों ने भी अज़ाज़ी र की फुर्ती की दाद दी। ख़ालिद(र०) ने अपना हाथ रोक लिया।

"ऐ अरब के सालार!"-अज़ाज़ीर ने कहा-"क्या मैं तुझे क़त्ल नहीं कर सकता?....मैं तुझे ज़िन्दा पकडूंगा और तुझ से ये शर्त मनवाऊंगा के तू जिधर से आया है, अपने लश्कर के साथ उधर ही चला जाए।"

"खुदा की क़सम, अब तू मेरे हाथों ज़िन्दा गिरफ्तार होगा"-ख़ालिद(र०) ने भड़क कर कहा और उस पर झपटे।

अज़ाज़ीर ने घोड़े को तेज़ी से मोड़ा और भाग निकला। ख़ालिद(र०) ने घोड़ा उस के पीछे डाल दिया। अज़ाज़ीर ने घोड़ा तेज़ कर दिया और दोनों फौजों के दरमियान चक्कर में घोड़ा दौड़ाने लगा। अब मुसलमानों का लश्कर नारे लगाने लगा। ख़ालिद(र०) उस के तआक़ुब में रहे। अज़ाज़ीर अपना घोड़ा ज़रा आहिस्ता कर लेता और जब ख़ालिद उस तक पहुंचते तो वो घोड़े को ऐड़ लगा देता।

इस दौड़ और तआक़ुब में बहुत सा वक़्त गुज़र गया। ख़ालिद(र०) का घोड़ा सुस्त पड़ने लगा और इस का पसीना फूट आया। अज़ाज़ीर का घोड़ा ख़ालिद(र०) के घोड़े से बेहतर और ज़्यादा ताक़तवर था। अज़ाज़ीर ने देख लिया के ख़ालिद(र०) का घोड़ा रह गया है उस ने अपना घोड़ा घुमाया और ख़ालिद(र०) के इर्द गिर्द चक्कर काटने लगा।

"ओ अरबी!"-अज़ाज़ीर ने लल्कार कर कहा-"तू समझता है मै तेरे डर से भाग उठा हूं।मै तुझे कुछ देर और ज़िन्दा देखना चाहता था। मैं तेरी रूह निकालने वाला फरिश्ता हूं।"

खालिद(र०) ने देखा के उन का घोड़ा अज़ाज़ीर के घोड़ के साथ नही दे सकता तो वो अपने घोड़े से कूद कर उतरे। उन के हाथ में तलवार थी। अज़ाज़ीर ने ख़ालिद(र०) को आसान शिकार समझा और इन पर घोड़ा दौड़ा दिया। ख़ालिद(र०) खड़े रहे। अज़ाज़ीर क़रीब आया तो उस ने घोड़े से झुक कर ख़ालिद(र०) पर वार किया। ख़ालिद(र०) बचते नज़र नहीं आते थे लेकिन उन्होंने सर को नीचे कर के वार को बेकार कर दिया।

अज़ाज़ीर घोड़े को घुमा कर आया। ख़ालिद(र०) पहले की तरह खड़े रहे। अब के फिर अज़ाज़ीर ने उन पर वार किया। ख़ालिद(र०) ने न सिर्फ ये के झुक कर अपने आप को बचा लिया बल्कि दुश्मन के घोड़े की अगली टांगों पर ऐसी तलवार मारी के घोड़े की एक टांग कट गई और दूसरी घोड़े के बोझ के नीचे दूहरी हो गई घोड़ा गिरा और अज़ाज़ीर घोड़े के आगे जा पड़ा।

वो बड़ी तेज़ी से उठा लेकिन ख़ालिद(र०) ने उसे पूरी तरह उठने न दिया। तलवार फैंक कर उसे दबोच लिया और उसे उठा कर ज़ीमन पर पटख़ दिया। उसे फिर उठाया और पहले से ज़्यादा ज़ोर से उसे पटख़ा। अज़ाज़ीर को इस ख़ौफ ने बे जान कर दिया के ख़ालिद(र०) इसे मार डालेंगे लेकिन ख़ालिद(र०) ने उसे घसीटा और इसी तरह अपने लश्कर की तरफ ले गए और कलूस के पास जा खड़ा किया।

"ये ले!"–ख़ालिद(र०) ने उसे कहा–"अपने दोस्त कलूस से मिल।"

ख़ालिद(र०) ने हुक्म दिया के अज़ाज़ीर को भी बांध लिया जाए।

❁

इधर अल्लाह ने दुश्मन के दो सिपह सालार मुसलमानों को दे दिए उधर शौर उठा के बाक़ी लश्कर आ गया है। ख़ालिद(र०) अपने इसी लश्कर के इन्तेज़ार में थे और वक़्त हासिल करने की कोशिश कर रहे थे। इस लश्कर के साथ तारीख़े इस्लाम के दो अज़ीम सालार थे–उमरो बिन आस(र०) और अबु उबैदा(र०)।

ख़ालिद(र०) ने ज़रा सा भी वक़्त ज़ाए किए बग़ैर अपनी फौज को जंगी तरतीब में किया। चार हज़ार जांबाज़ सवारों के दस्ते तलिया को अपनी कमान में रखा और हमले का हुक्म दे दिया। ये पहला मौक़ा था के मुसलमानों की तादाद दुश्मन के बराबर थी बल्कि कुछ ज़्यादा ही थी। रोमियों ने मुक़ाबला तो किया लेकिन उन के अंदाज़ में जारहीयत नही थी, वो दिफाई जंग लड़ रहे थे।

उन का हौसला और जज़्बा तो इसी एक वजह से टूट गया था, के इन के दो सिपह सालार मुसलमानों की क़ैद में थे और बाक़ी सालार इंफिरादी मुक़ाबलों में मारे जा चुके थे। इस रोमी फौज में पहली जंगों से भागे हुए आदमी भी थे। उन पर

मुसलमानों का ख़ौफ तारी था। उन्होंने मुसलमानों को क़हर और ग़ज़ब से लड़ते और अपने साथियों को कटते देखा था। उन्होंने बे दिली से मुक़ाबला किया और पीछे हटते गए। इन्हें लड़ाने वाला कोई था ही नही।

मुसलमानों ने इन्हें पस्पाई से रोकने के लिए इन के अक़ब में जाने की कोशिश की लेकिन पीछे दरख्तों से अटी हुई वादी थी जिस में वो ग़ायब होते जा रहे थे। इन की पीठ के पीछे दमिश्क़ था जो क़िला बंद शहर था। फासला बारह मील था। ये रोमियों के लिए एक कोशिश थी। पनाह क़रीब ही थी। चुनांचे वो फरदन फरदन दरख्तों के झुझडों में से गुज़रते दमिश्क़ की तरफ भाग रहे थे।

रोमी ऐसी बुरी तरह मुसलमानों के हाथों हलाक हो रहे थे के मैदाने जंग इन की लाशों और तड़पते हुए ज़ख्मियों से अट गया। दौड़ते घोड़े और पियादे इन्हें कुचल रहे थे। रोमियों ने अपने पहलूओं के दस्तों को आम पस्पाई के लिए कह दिया। मुसलमानों ने तआक्कुब न किया क्योंके ख़ालिद(र०) अपनी नफरी को बचाना चाहते थे। वो बड़े लम्बे कूच के थके हुए भी थे।

बचे कुछे रोमी दमिश्क़ पहुंच गए और शहर के इर्द गिर्द दीवार ने इन्हें पनाह में ले लिया।

मुसलमानों ने माले ग़नीमत इक्ळा किया। औरतों ने ज़ख्मियों को उठाया और इन्हें मरहम पट्टी के लिए पीछे ले गईं। शहीदों की लाशें एक जगह रख कर जनाज़ा पढ़ाया गया और इन्हें अलग अलग क़ब्रों में दफ्न किया गया।

ख़ालिद(र०) ने रात वहीं गुज़ारने का हुक्म दिया और तमाम सालारों को अपने पास बुलाया और इन्हें बताया के दमिश्क़ के मुहासरे को कामयाब करने के लिए ज़रूरी होगा के दमिश्क़ की तरफ आने वाले तमाम रास्तों की नाका बंदी कर दी जाए ताके दुश्मन अपने दमिश्क़ के दस्तों को कुमक और रसद न पहुंचा सके।

ख़ालिद(र०) ने फहल के क़िले के क़रीब पहले ही एक घुड़सवार दस्ता छोड़ दिया था। वहां से इमदाद आने की तवक्क़ो थी। ख़ालिद(र०) ने दो घुड़सवार दस्ते दो और मुक़ामात पर भेज दिए। इन के लिए हुक्म था के इन रास्तों से कुमक आए तो उस पर हमला कर दें।

20 अगस्त 634ई० (20 जमादीउलआख़िर 13 हिज्री) ख़ालिद(र०) ने दमिश्क़ पहुंच कर इस शहर को मुहासरे में ले लिया।

दमिश्क़ के अन्दर जो रोमी फौज थी इस की तादाद सोलह हज़ार के लगभग थी। ख़ालिद(र०) के लश्कर में बीस हज़ार मुजाहेदीन थे। शहीदों और शदीद ज़ख्मियों की वजह से तादाद इतनी कम रह गई थी। कुछ दस्ते मुख़तलिफ मुक़ामात

पर रोमियों की कुमक को रोकने के लिए भेज दिए गए। ये वजह भी थी के मुजाहेदीन की तादाद बीस हज़ार रह गई थी।

दमिश्क़ बड़ा शहर था। इस के छः दरवाज़े थे और हर दरवाज़े का नाम था- बाबुलशिर्क, बाबे तूमा, बाबे हाबिया, बाबे फरादीस, बाबे कीसान और बाबे सग़ीर-ख़ालिद(र०) ने हर दरवाज़े के सामने दो दो तीन तीन हज़ार नफरी के दस्ते खड़े कर दिए। हर दरवाज़े के लिए एक सालार मुक़र्रर किया गया-राफे(र०) बिन उमेरा, उमरो(र०) बिन आस, शरजील(र०) बिन हस्ना, अबु उबैदा(र०), यज़ीद(र०) अबी सुफयान-यज़ीद की ज़िम्मेदारी में दो दरवाज़े दे दिए गए।

ज़रार बिन लाज़ोर(र०) को मुंतख़िब सवारों का दो हज़ार नफरी का दस्ता इस मक़सद के लिए दिया गया के वो क़िले के इर्द गिर्द घुमते फिरते रहें और अगर रोमी बाहर आ कर किसी दस्ते पर हमला करें तो ज़रार(र०) इस की मदद को पहुंचें।

शहर की दीवार पर रोमी कमानें और बरछियों लिए खड़े थे। इन में दूसरे सलारों के अलावा दमिश्क़ के दिफाअ का ज़िम्मेदार सालार तूमा भी था जो शहंशाह हरकुल का दामाद भी था।

ख़ालिद(र०) ने हुक्म दिया के रोमियों के दोनों क़ैदी सालारों अज़ाज़ीर और कलूस को आगे लाया जाए। दोनों बंधे हुए लाए गए। इन्हें दीवार के इतना क़रीब ले जाया गया जहां से वो दीवार पर खड़े रोमियों को नज़र आ सकते थे।

"क्या तुम दोनों इस्लाम कुबूल करोगे?"-ख़ालिद(र०) ने दोनों से बुलंद आवाज़ में पूछा।

"नहीं"-दोनों ने इक्ळे जवाब दिया।

ख़ालिद(र०) ने ज़रार(र०) बिन लाज़ोर को आगे बुलाया और कहा के इन्हें इन के अंजाम तक पहुंचा दो।

ज़रार(र०) ने तलवार निकाली और दोनों की गर्दनों पर एक एक वार किया। दोनों के सर ज़मीन पर जा पड़े। उन के धड़ गिरे, तड़पे और साकित हो गए। दीवार से तीरों की बौछाड़ आई लेकिन ख़ालिद(र०) और ज़रार इन की ज़द से निकल आए थे।

दमिश्क़ का मुहासरा रोमियों की तारीख़ का बहुत बड़ा वाके़या बल्कि हादसा और अल्मिया था और मुसलमानों की तारीख़ का भी ये बहुत बड़ा और बाज़ तारीख़ों नवीसों के लिए हैरान कुन वाके़या था। हैरान कुन तो रोमियों के लिए भी था क्योंके रोम की फौज उस दौर की बेहतरीन फौज और नाक़ाबिले तसख़ीर जंगी ताक़त तस्लीम की जाती थी। रोमी फौज दहशत और तबाही का दूसरा नाम था। इस फौज ने हर मैदान में फतह पाई थी। किसरा की फौज भी इस से कम न थी लेकिन रोमी फौज ने इसे भी शिकस्त दे कर अलग बैठा दिया था लेकिन इतनी दूर से आए हुए और इतने थोड़े मुसलमान इसी रोमी फौज को शिकस्त पे शिकस्त दिए चले जा रहे थे और उन्होंने दमिश्क़ को मुहासरे में ले लिया था जो रोमियों का बड़ा ही अहम और क़ीमती शहर था। कै़सरे रोम ने तो कभी सोचा भी न था के दुनिया की कोई ताक़त उस की बेहतरीन और दहशतनाक फौज को इस मुक़ाम पर ले आएगी के उस के लिए रोमियों की रिवायात और वक़ार का तहफ्फुज़ मुहाल हो जाएगा।

मुसलामनों के लिए भी शाम में फातेहाना दाख़ला और दमिश्क़ का मुहासरा बहुत बड़ा वाके़या था। एक तो नफरी दुश्मन के मुक़ाबले में बहुत थोड़ी थी जो ज़ख्मियों और शहीदों की वजह से कम ही कम होती चली जा रही थी, दूसरे अपने वतन से दूरी। पस्पाई की सूरत में इन के लिए कोई पनाह नहीं थी। इस सूरत में इन्हें खाने पीने को भी कुछ नहीं मिल सकता था।

मुख़्तलिफ अदवार के जंगी मुबस्सिरों और वक़ाए निगारों ने लिखा है के ख़ालिद(र०) के लश्कर ने जिस की नफरी हमेशा ख़तरनाक हद तक कम रही, तारीख़ नवीसों को हैरत में डाल दिया है। अगर जंगी महारत और क़यादत की बात की जाए तो सरे फेहरिस्त दो फौजें आती हैं। एक कै़सरे रोम की फौज और दूसरी किसरा की फौज। ये दोनों फौजें असकरी अहलियत और क़यादत की वजह से मशहूर थी। बेशक ख़ालिद(र०) की जंगी क़यादत तेज़ रफ्तार नक़्ल व हरकत और

मैदाने जंग में चालों का मुक़ाबला कम ही सालार कर सकते थे लेकिन अक़ीदे की सच्चाई और जज़्बे की शिद्दत को नज़र अंदाज़ नही किया जा सकता। घरों और अहलो अयाल से इतनी लम्बी जुदाई सिपाहियो के जज़्बे को कमज़ोर कर दिया करती है लेकिन मुसलमानों की फौज में ऐसी कमज़ोरी देखने में नही आती थी। इस कैफियत को मुबस्सिरों ने अक़ीदे और जज़्बे का करिश्मा कहा है।

"मेरे अज़ीज़ रफीक़ों!"—ख़ालिद(र०) ने अपने सालारों से दमिश्क़ के मुज़ाफात में कही कहा। "सोचो हम कहां थे और देखो हम कहां है। क्या अब भी कुफ्फार अल्लाह को वाहदाहू ला शरीक नही मानेंगे और क्या वो तस्लीम नहीं करेंगे के अल्लाह ने हमारे क़बीले को रिसालत अता की है जो बरहक़ है और कोई दलील इसे झुटला नही सकती?....और तुम अल्लाह का शुक्र अदा नहीं करोगे जिस ने तुम्हें इतने ताक़तवर दुश्मन पर फतह दी है? कोई शुमार नहीं उस की रहमतों का लेकिन उन के लिए जो उस की रस्सी को मज़बूती से पकड़ते हैं।"

"बेशक, बेशक"—कई आवाज़ें सुनाई दीं।

"और ऐ बरहना जंगजू!"—ख़ालिद(र०) ने ज़रार(र०) बिन लाज़ौर से जो खुद, ज़िरा और क़मीज़ उतार कर लड़ा करते थे, कहा—"खुदा की क़सम, तू अपने आप को क़ाबू में नही रखेगा तो एक दिन तू ही नहीं हम सब अफसोस कर रहे होंगे।"

"वलीद के बेटे!"—ज़रार(र०) ने कहा—"दीने इस्लाम के दुमन को देख कर अपने आप पर क़ाबू नहीं रहता लेकिन इस में कोताही नहीं करूंगा के तेरे हर हुक्म की तामील मुझ पर फर्ज़ है।"

ज़रार(र०) बिन लाज़ौर के बोलने का अंदाज़ इतना शगुफ्ता था के सब हंस पड़े। ख़ालिद(र०) के होंटों पर जांफरां मुस्कुराहट आ गई।

अंताकिया की फिज़ा हंसी और मुस्कुराहटों से महरूम हो गई थी। इस शहर को रोमी शहंशाह हरकुल ने अपना जंगी अड्डा बना लिया। उसे जंग की जो ख़बरें रोज़ बरोज़ मिल रही थी, इन से उस की ज़हनी और जज़्बाती हालत वैसी ही हो गई थी जो मदाइन में शहंशाह उर्दशहर की हुई थी और सिर्फ शिकस्त की ख़बरें सुन सुन कर वो सदमे से मर गया था।

मर्जुसुफर में रोमियों को जो शिकस्त हुई थी, इस ने तो हरकुल को बावला कर दिया था, फिर उसे अपने सालारों के मारे जाने की इत्तेलाऐं मिलने लगीं।

"अज़ाज़ीर ज़िन्दा है"—हरकुल ने बड़े जोश से कहा—"कलूस है.....ये दोनों अरब के इन बद्दुओं को दमिश्क़ तक नहीं पहुंचने देंगे।"

"शहंशाहे मोअज़्ज़म!"—महाज़ से आए हुए क़ासिद ने कहा—"वो दोनों ज़िन्दा

नही।"

"क्या तुम मुझ से झुट मनवाना चाहते हो?"-हरकुल ने ग़ज़ब नाक आवाज़ में कहा-"क्या तुम झूट की सज़ा से वाकिफ नही?"

"सब कुछ जानते हुए ये ख़बर सुना रहा हूं शहंशाहे मोअज़्ज़म!"-क़ासिद ने का-"इन दोनों को मुसलमानों ने ज़िन्दा पकड़ लिया था और दोनों को उन्होंने दमिश्क़ की शहर पनाह के क़रीब ला कर क़त्ल कर दिया है।"

"और मेरी बेटी के खाविंद की क्या ख़बर है?"-शहंशाहे हरकुल ने अपने दामाद सालार तूमा के बारे में क़सिद से पूछा।

"सालार तूमा दमिश्क़ के अन्दर है"-क़ासिद ने जवाब दिया-"और मुहासरा तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं।"

"दमिश्क़ का मुहासरा हम तोड़ेंगे"-शहंशाहे हरकुल ने कहा।

हरकुल ने अंताकिया में इसी लिए डेरे डाले थे के फौज तैयार कर के जहां भी कुमक की ज़रूरत होगी वहां फौज भेजेगा। उस ने पहले ही लोगों को फौज में भर्ती होने के लिए तैयार करना शुरू कर दिया था। गिर्जों में पादरी सिर्फ इस मोजू पर वाज़ करते थे के लोगों का फौज में भर्ती होना कितना ज़रूरी है। वो कहते थे के इसाइयत का ख़ात्मा हो जाएगा और वो इस्लाम से लोगों को ख़ौफज़दा करते थे।

ख़ालिद(र०) जब दमिश्क़ की तरफ बढ़ रहे थे उस वक्त हरकुल ने ऐलान किया था के जो फौज तैयार हो गई है वो उस के मआयने और अहकाम के लिए उसे दिखाई जाए। ये फौज उस के सामने लाई गई तो उस ने ऐसे जोशीले और जज़्बाती अंदाज़ से फौज़ से ख़िताब किया के सिपाही आग बगूला हो गए।

"तुम्हें कोई शहंशाह हुक्म नहीं दे रहा"-शहंशाह हरकुल ने कहा-"ये खुदा के बेटे का हुक्म है के उस के दुश्मनों को तबाह कर दो। सलीब की आन पर मर मिटो। मै आज शहंशाह नही, तुम जैसा सिपाही हूं।"

9 सितम्बर 634ई० (10 रजब 13 हिज्री) का दिन था। दमिश्क़ के मुहासरे का गयारवां दिन था। मुहासरे के दस रोज़ ये सरगर्मी रही के दमिश्क़ के किसी न किसी दरवाज़े से रोमियों के एक दो दस्ते बाहर आते और मुसलमानों पर हमला करते लेकिन ज़्यादा आगे न आते। मुख़तसिर सी झड़प ले कर क़िले में वापस जाने की करते। ख़ालिद(र०) ने अभी क़िले पर किसी भी क़िस्म का हल्ला नही बोला था।

ख़ालिद(र०) ने देख भाल के लिए हर तरफ जासूस भेज रखे थे। मुहासरे के ग्यारवें रोज़ एक जासूस इस हालत में ख़ालिद(र०) के पास आया के इस का घोड़ा पसीने में नहाया हुआ था और जब घोड़ा रोका तो कांप रहा था। सवार की अपनी

हालत भी कुछ ऐसी ही थी। उस से अच्छी तरह बोला भी नही जाता था। ख़ालिद(र०) ने पहले तो उसे पानी पिलाया फिर पूछा के वो क्या ख़बर लाया है।

"रोमियों की एक फौज आ रही है"-जासूस ने कहा-"तादाद दस हज़ार से ज़्यादा होगी कम नही।"

"तुम ने इसे कहां देखा है?"-ख़ालिद(र०) ने पूछा।

"हमस से आगे निकल आई है"-जासूस ने जवाब दिया और एक जगह का नाम ले कर उस ने कहा-"हमारा एक दस्ता वहां मौजूद है। रोमी फौज कल किसी भी वक़्त वहां तक पहुंच जाएगी। हमारे दस्ते की नफरी उस के मुक़ाबले में बहुत थोड़ी है। इसी लिए में कहीं एक सानिया भी नही रूका। हमारा दस्ता मारा जाएगा और रोमी दमिश्क़ तक आ जाऐंगे।"

ख़ालिद(र०) ने जासूस को रूख़सत कर दिया। उन के लिए ये ख़बर हैरान कुन भी नही थी, परेशान कुन भी नही थी। इन्हें मालूम था के हरकुल अंताकिया में है और वहां वो आराम और सुकून से नहीं बैठा हुआ बल्कि वो दमिश्क़ को बचाने के इन्तेज़ामात कर रहा है। ये रोमी फौज जिस की इत्तेला एक जासूस लाया था, अंताकिया से शहंशाह हरकुल ने अपनी दमिश्क़ वाली फौज के लिए कुमक के तौर पर भेजी थी। मोअररिख़ों ने इस की तादाद बारह हज़ार लिखी है।

ख़ालिद(र०) ने इसी तवक्क़ो पर के रोमियों की कुमक आएगी, दमिश्क़ की तरफ आने वाले रास्तों पर पहले से ही थोड़ी थोड़ी नफरी का एक एक दस्ता भेज दिया था। इन के सुपुर्द ये काम था के कुमक को रोके रखें मगर ये जो फौज आ रही थी इस की नफरी बहुत ज़्यादा थी। ख़ालिद(र०) ने उसी वक़्त सालारों को बुलाया और इन्हें बताया के दुश्मन की ज़्यादा नफरी आ रही है और इसे रोकने के लिए अपनी नफरी बहुत थोड़ी है।

"रोमियों की इस कुमक को रोकना है"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"और अपनी नफरी जो इस के रास्ते में मौजूद है इसे जानी नुक़सान से बचाना है। हमें मुहासरे को ज़रा कमज़ोर करना पड़ेगा।"

"इस कमी को हम अपने जज़्बे से पूरा कर लेंगे"-सालार शरजील ने कहा-"इब्ने वलीद! तू जितनी नफरी काफी समझता है, यहां मे निकाल कर भेज दे।"

"पांच हज़ार काफी होंगे"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"रोमियों की नफरी दस हज़ार से ज़्यादा है।"

"बहुत है"-ज़रार(र०) बिन लाज़ोर ने कहा-"और मुझे यक़ीन है इब्ने वलीद के तू मुझे मायूस नही करेगा। इन पांच हज़ार सवारों का सालार मैं होंगा।"

"तेरी ख्वाहिश को मै रद नही करूंगा इब्ने लाज़ौर!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"लेकिन अहतियात करना के जोश में आकर दुश्मन की सफों में न घुस जाना, अगर ऐसा ज़रूरी हो जाए तो तुझे पीछे नही रहना चाहिए.....और ये भी सुन ले इब्ने लाज़ौर! अगर तू ने देखा के तू दुश्मन को नही संभाल सकेगा तो फौरन कुमक मांग लेना मै भेज दूंगा। वहां पहले अपना जो दस्ता मौजूद है, इसे भी अपनी कमान में ले लेना। ये सारी नफरी तेरे मातहत होगी। अपना नायब खुद ही चुन ले।"

"राफे बिन उमेरा!"-ज़रार(र०) ने कहा।

"ले जा इसे!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"और इतनी जल्दी वहां पहुंच जैसे तू उड़ता गया हो।"

❁

ज़रार(र०) बिन लाज़ौर को दर्रा अक़ाब (सनीईयतुलअक़ाब) के क़रीब पहाड़ी इलाके में पांच हज़ार सवारो के साथ पहुंचना था। वो जगह दमिश्क़ से कम व बेश बीस मील दूर थी। ज़रार(र०) तो जैसे उड़ते हुए वहां पहुंच गए। उन्होंने वहां जो नफरी मौजूद थी उसे भी अपनी कमान में ले लिया।

ये इलाक़ा पहाड़ी होने की वजह से घात के लिए मोजू था। रोमी फौज अभी वहां तक नहीं पहुंची थी। ज़रार(र०) ने बड़ी तेज़ी से अपनी तमाम नफरी को घात में छुपा दिया। इस के साथ ही उस रोज़ का सूरज गुरूब हो गया। ज़रार(र०) ने संतरी इस हिदायत के साथ मुक़र्रर किए के वो टेकरियों और चट्टानों के ऊपर चले जाऐं, बाहर न जाऐं। पूरी अहतियात की जा रही थी के दुमन को घात का पता न चले।

रात गुज़र गई। सुबह तुलू हुई और इस से थोड़ी ही देर बाद दुश्मन की फौज आ गई-और ये सही मानों में फौज थी, नफरी ज़्यादा, तंज़ीम निहायत अ़च्छी। देख गया के इस फौज के साथ बे शुमार घोड़ा गाड़ियां थीं जो सामान से लदी हुई थी और ऊंटों की तादाद भी बे हिसाब थी जिन पर बोरियां लदी हुई थी। ये बाद में पता चला था के ये सामान खुर्द व नोश था जो दमिश्क़ जा रहा था। ख़ालिद(र०) दमिश्क़ के अन्दर की इस सूरते हाल से बे ख़बर थे के रोमियों ने दमिश्क़ का दिफाअ तो बड़ा अच्छा किया था लेकिन शहर में रसद और खुराक की इतनी कमी थी के दस दिनों के मुहासरे में ही शहरी हर चीज़े की क़िल्लत महसूस करने लगे थे। हरकुल को इत्तेला मिल चुकी थी। उस ने कुमक भेजी और इस के साथ खुराक का ज़ख़ीरा भेज दिया था।

ज़रार(र०) बिन लाज़ौर को बताया गया के रोमी फौजी के साथ माल अस्बाब बे हिसाब आ रहा है तो ज़रार(र०) ने जोश में आकर हस्बे मामूल ज़िरा, खुद और क़मीज़ उतार फैंकी। नीम बरहना हो कर उन्होंने ऐलान किया के बहुत मोटा शिकार आ रहा है।

रोमी जब पहाड़ियों में आए तो ज़रार(र०) की लल्कार पर मुजाहेदीने इस्लाम घात से निकल कर रोमियों पर टूट पड़े। तवक्को तो ये थी के रोमी अचानक हमले से घबरा और बोखला कर भाग उठेंगे लेकिन उन का रद्देअमल ऐसा बिल्कुल नही था। उन्होंने ये चाल चली के पीछे हटने लगे और दर्रा-ए-अक़ाब के क़रीब उस जगह जा रूके जो हमवार मैदान था और ये पहाड़ी की बुलंदी थी। उन्होंने सामान की गाड़ियां पीछे भेज दी और उन के पीछे की फौज आगे आ गई। इन की तादाद मुसलमानों से दुगनी थी और उन के अंदाज़ से साफ पता चलता था के मुसलमानों का ये हमला उन के लिए ग़ैर मुतावक़्क़े न था, वो इस के लिए तैयार थे। उन्होंने क़दम जमा लिए।

❁

ज़रार(र०)बिन लाज़ौर ने दुश्मन को इस कैफियत में देखा के उसने न सिर्फ ये के हमला रोक लिया है बल्कि वो सामने से भी और दायें बायें से भी हमले कर रहा है। मुसलमानों का जोश व ख़रोश कुछ कम न था लेकिन रोमी जिस मुनज़्ज़म अंदाज़ से लड़ रहे थे इस से यही एक ख़तरा नज़र आने लगा था के वो मुसलमानों को भगा कर और काट कर आगे निकल जाऐंगे।

ज़रार(र०) को ख़ालिद(र०) ने जिस हरकत से मना किया था, उन्होंने वही हरकत की। पहले तो वो मुनज़्ज़म तौर पर रोमियों पर हमले कराते रहे लेकिन देखा के रोमी पीछे हटने की बजाए चढ़े आ रहे हैं तो ज़रार(र०) जोश में आ गए और चन्द एक मुजाहेदीन को साथ ले कर रोमियों पर टूट पड़े। उन्होने अपनी मख़सूस जुर्अत और शुजाअत का मुज़ाहेरा किया और जो रोमी उन के सामने आया वो कट कर गिरा और इस तरह वो अंधा धुंद बहुत आगे निकल गए।

"ये है बरहना जंगजू!"-किसी रोमी ने नारा लगाया। ये कोई सालार हो सकता था। उस ने लल्कार कर कहा-"घेरे में ले लो। इसे ज़िन्दा पकड़ो।"

ज़रार(र०) नीम बरहना हो कर लड़ने और दुश्मन को हर मैदान में हैरान कुन नुक़सान पहुंचाने में इतने मशहूर हो गए थे के अंताकिया तक उन की शुजाअत के चर्चे पहुंच गए थे। रोमियों ने इस नीम बरहना जंगजू को पहचान लिया। ज़रार(र०) के दायें बाज़ू में एक तीर लग चुका था। मोअररिख़ों ने लिखा है के ज़रार के जिस्म पर दो ज़ख़्म और भी थे। बहरहाल इन के बाज़ू में तीर उतरने पर सब मुत्ताफिक़ है। ज़रार(र०) ने तीर खींच कर बाज़ू से निकाल फैंका। तीर निकालना बड़ा ही अज़ीयतनाक होता है। वहां से गोश्त बाहर निकल आता है लेकिन ज़रार(र०) बिन लाज़ौर आशिक़े रसूल(स०) थे। वो तो जैसे अपने जिस्म और अपनी जान से दस्तबरदार हो गए थे। ये तीर और तलवारें तो जैसे उन का कुछ नहीं बिगाड़ सकती थीं। रोमियों की तीर खा कर उन्होंने तीर यूं

निकाल फैंका जैसे एक कांटा निकाल फैंका हो। उन का दायां हाथ तलवार को मज़बूती से थामे रहा और रोमी कटते और गिरते रहे।

रोमी इन्हें ज़िन्दा पकड़ने का तहइय्या कर चुके थे। उन्होंने ज़रार(र०) के आदमियों को जो उन के साथ आगे निकल गए थे, बिखेर कर अलग अलग कर दिया और ज़रार(र०) को घेरे में ले लिया। इस मौक़े पर इन्हें एक या दो ज़ख़्म आए। आख़िर कई रोयिमों ने मिल कर इन्हें पकड़ लिया और इन्हें बांध लिया। रोमी बुलंद आवाज़ से चिल्लाने लगे:

"मुसलमानों! तुम्हारा सालार हमारा क़ैदी हो गया है।"

"हम ने तुम्हारे नंगे सालार को पकड़ लिया है।"

"हम शहंशाहे हरकुल को तोहफा देंगे।"

रोमियों की लल्कार बुलंद होती जा रही थी। वो ठीक कहते थे। शहंशाहे हरकुल के लिए ज़रार(र०) से बढ़ कर और कोई तोहफा अच्छा नहीं हो सकता था। रोमी इन्हें बांध कर पीछे ले गए। उन के ज़ख़्मों से खून बड़ी तेज़ी से बहा जा रहा था जिस से ये ख़तरा पैदा हो गया था के वो हरकुल तक ज़िन्दा नहीं पहुंच सकेंगे। रोमियों ने उन की मरहम पट्टी कर दी।

उस दौर की जंगों में फौजें यूं भी शिकस्त खा जाती थीं के सिपह सालार मारा गया, परचम गिर पड़ा और पूरी की पूरी फौज भाग उठी लेकिन मुसलमानों का मामला इस के बरअक्स था। ज़रार(र०) जैसा सालार पकड़ा गया तो दुश्मन की ये लल्कार सुन कर के उस ने इन के सालार को पकड़ लिया है, मुसलमानों ने हमलों की शिद्दत में इज़ाफा कर दिया। वो लपकते हुए शौलों और कड़कती हुई बिजलियां बन गए।

राफे बिन उमेरा ज़रार(र०) के नायब सालार थे। उन्होंने गरज कर ऐलान किया के अब कमान इन के हाथ में है। उन्होंने सामने से रोमियों पर हमले कराए। खुद भी हमलों की क़यादत की और दुश्मन की सफों को तोड़ कर आगे जाने की कोशिश की लेकिन रोमियों की सफें मिल कर बड़ी मज़बूत दीवार बन गई थी। राफे ज़रार(र०) को रिहा कराने की कोशिश में थे लेकिन उन की कोशिश कामयाब नहीं हो रही थी।

मुसलमान अपने सालार को दुश्मन से छुड़ाने के लिए जान की बाज़ी लगाए हुए थे।

❋

दोपहर से ज़रा बाद का वक़्त था। ख़ालिद(र०) दमिश्क़ के दई गिर्द घूम फिर कर जाएज़ा ले रहे थे के दीवार कहीं से तोड़ी जा कती है या नहीं। दो सालार उन के साथ थे।

"खुदा की क़सम, दमिश्क़ हमारा है"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"रोमियों को कुमक नही मिल सकती। ज़रार(र०) और राफे इन की कुमक को भगा चुके होंगे"-ख़ालिद(र०) चुप हो गए। एक घुड़सवार उन की तरफ बड़ा तेज़ आ रहा था।

"क़ासिद मालूम होता है"-ख़ालिद(र०) ने कहा और घोड़े को ऐड़ लगा कर उस की तरफ बढ़े।

"सालारे आली!"-घुड़सवार ने घोड़ा उन के क़रीब रोक कर कहा-"रोमियों ने ज़रार(र०) बिन लाज़ौर को पकड़ लिया है इब्ने उमेरा ने इन की जगह ले ली है। उन्होने इब्ने लाज़ौर को रिहा कराने की बहुत कोशिश की है लेकिन रोमियो की तादाद इतनी ज़्यादा है के हम नाकाम हो गए है।। इब्ने उमेरा ने मुझे इस पैग़ाम के साथ भेजा है के कुमक के बग़ैर हम रोमियों को नहीं रोक सकेंगे।"

"क्या मै ने उसे मना नहीं किया था के अपने आप को क़ाबू में रखना?"-ख़ालिद(र०) ने बरहम सा हो कर कहा-"रोमी हमारे इतनी क़ीमती सालार को नही ले जा सकते।"

ख़ालिद(र०) ने तमाम सालारों को बुलाया और इन्हें ज़रार की गिरफ्तारी और बैतुल लहिया में रोमियों के सामने मुसलमानों की कमज़ोर हालत के मुताल्लिक़ बताया।

"मैं खुद इब्ने उमेरा की मदद के लिए जाना चाहता हूं"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"लेकिन मुहासरा कमज़ोर हो जाएगा। रोमी बाहर आकर तुम पर हमला कर देंगे। हमारी नफरी पहले ही कम रह गई है। अगर मैं नहीं जाता और मैं कुमक नही भेजता तो हमारे पांच छः हज़ार सवार मारे जाएंगे और रोमियों की कुमक सीधी यहां आकर हल्ला बोल देगी। बता सकते हो मुझे क्या करना चाहिए?"

"राफे की मदद को पहुंचना और रोमियो की कुमक को रोकना ज़्यादा ज़रूरी है"-अबु उबैदा(र०) ने कहा-"इब्ने वलीद! तू समझता है के तेरा जाना ज़रूरी है तो अभी चला जा। हमें और दमिश्क़ के मुहासरे को अल्लाह पर छोड़। रोमियों को बाहर आ कर हमला करने दे। वो ज़िन्दा अन्दर नहीं जाएंगे।"

दूसरे सालारों ने अबु उबैदा(र०) की ताईद कर के ख़ालिद(र०) को यक़ीन दिलाया के इन की नफरी कम हो गई तो भी वो मुहासरे को दरहम बरहम नही होने देंगे।

"अगर मुझे जाना ही है तो मै फौरन नहीं जाऊंगा"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"मै ऐसे वक़्त यहां से सवारों को साथ ले कर निकलूंगा जब दुश्मन हमें नही देख सकेगा.... अबु उबैदा(र०)! मेरी जगह ले ले। मैं आधी रात के बाद चार हज़ार सवार ले कर निकल जाऊंगा तुम सब पर अल्लाह की सलामती हो। अल्लाह तुम्हारा हामी व

नासिरी हो। चार हज़ार सवारो को तैयारी की हालत में अलग कर दो और इन्हें बता दो के आधी रत के बाद रवाना होना है।"

❁

बैतुल लहिया कम व बैश बीस मील दूर था। सूरज ग़रूब होने तक वहां रोमियों और मुसलमानों में लड़ाई होती रही। राफे बिन उमेरा ने शाम तारीक होने के बाद भी मुजाहेदीन को रोमियों के अक़ब में पहाड़ियों के दरमियान से गुज़ार कर भेजा मगर हर टोली नाकाम वापस आई।

"जूं जूं वक़्त गुज़रता जा रहा है। ज़रार(र०) बिन लाज़ौर मौत के क़रीब होता जा रहा है"–राफे न कई बार कहा–"अल्लाह करे वो ज़िन्दा हो। अल्लाह उसे ज़िन्दा रखे। हम उसे छुड़ा कर ज़रूर लाऐंगे।"

रात गुज़र गई। सुबह का उजाला अभी पूरी तरह नहीं निखरा था के ख़ालिद(र०) चार हज़ार सवारों के साथ राफे के पास पहुंच गए। ख़ालिद(र०) आधी रात गुज़र जाने के बहुत बाद दमिश्क़ से रवाना हुए थे। उन्होंने चार हज़ार सवारों को शाम के बाद खामोशी से मुहासरे से हटा कर पीछे करना शुरू कर दिया था और सवार पीछे जा कर इक्ळे होते जा रहे थे। ये जगह दमिश्क़ से ज़रा दूर थी। ख़ालिद(र०) इन्हें साथ ले कर रवाना हुए तो शहर में महसूर रोमियों को ख़बर तक न हुई।

ख़ालिद(र०) और उन के सवार दस्ते को देख कर राफे और उन के सवारो ने नारे लगाने शुरू कर दिए। ख़ालिद(र०) ने बड़ी तेज़ी से दुश्मन का और राफे के सवारो का जाएज़ा लिया और दोनों दस्तों को ज़रूरत के मुताबिक़ तरतीब में कर के हमले का हुक्म दे दिया।

हमला अभी शुरू नही हुआ था के एक घुड़ सवार मुसलमानों की सफों से निकला और घोड़ा सरपट दौड़ता ख़ालिद(र०) से भी आगे निकल गया। उस के एक हाथ में तलवार और दूसर में बरछी थी। ख़ालिद(र०) को उस पर गुस्सा आया और उन्होंने चिल्ला कर उसे पुकारा लेकिन वो रोमियों की अगली सफ तक पहुंच चुका था। जिस्म के लिहाज़ से वो मोटा ताज़ा नहीं था। उस के सर पर सब्ज़ रंग का अमामा था और उस ने अपना चेहरा एक कपड़ा बांध कर छुपाया हुआ था। उस की सिर्फ आंखें नज़र आती थी।

"ये ख़ालिद(र०) है"–राफे बिन उमेरा ने कहा–"ऐसी जुर्रत ख़ालिद(र०) के सिवा कोई नही कर सकता।"

राफे एक पहलू पर थे जहां से ख़ालिद(र०) नज़र नहीं आते थे। ख़ालिद(र०) ने हमला रोक लिया और वो राफे के पास गए। राफे इन्हें देख कर हैरान हुए।

"इब्ने वलीद !"–राफे ने ख़ालिद(र०) से कहा–"अगर वो तू नही जो रोमियों पर अकेला टूट पड़ा है तो वो कौन है?"

"मै यही तुझ से पूछने आया हूं"–ख़ालिद(र०) ने कहा–"में ने इब्ने लाज़ौर को इसी हरकत से रोका था।"

"वो देख इब्ने वलीद !"–राफे ने कहा–"वो जो कोई भी है ज़रा देख !"

वो जो कोई भी था वो मुसलमानों को भी और रोमियों को भी हैरान कर रहा था। जो रोमी उस के सामने आता था वो उस की बरछी या तलवार का शिकार हो जाता था। ये सवार क़ही रूकता नहीं था। एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में बरछी होने के बावजूद उस ने घोड़े को अपने काबू में रखा हुआ था। एक रोमी को गिरा कर वो दूर चला जाता। कोई उस के तआक़ुब में जाता तो ये सवार यख़्लख़्त घोड़े को रोक कर या घुमा कर अपने तआक़ुब में आने वाले को ख़त्म कर देता।

ख़ालिद(र०) भी (मोअररिख़ों की तहरीरों के मुताबिक़) दम बखुद हो गए थे। एक बार दो रोमियों को गिरा कर उस ने घोड़ा दूर से मोड़ा तो ख़ालिद(र०) के क़रीब से गुज़रा। ख़ालिद(र०) ने चिल्ला कर उसे रूकने को कहा लेकिन सवार न रूका। देखने वालों को उस की सिर्फ आंखें नज़र आईं। इन आंखों में कुछ और ही चमक थी, बल्कि इन आंखों में दिलकशी सी थी। उस की तलवार और उस की बरछी की अन्नी खून से सुर्ख थी। वो एक बार फिर रोमियों की तरफ जा रहा था।

❁

"इब्ने वलीद !"–राफे ने ग़ज़ब नाक आवाज़ में कहा–"तू हमले का हुक्म क्यों नहीं देता? खुदा की क़सम, ये जंग इस अकेले सवार की नहीं।"

मुजाहेदीन इस सवार की हैरत नाक शुजाअत को देख कर जोश से फट रहे थे और वो भी हमले का मुताल्बा कर रहे थे।

ख़ालिद(र०) ने हमले का हुकम दे दिया।

अब मुजाहेदीने इस्लाम ने जो हमला किया तो ये ऐसे ग़ज़ब नाक सैलाब की मानिंद था जो बंद तोड़ कर आया हो। उस एक पुरइस्रार सवार ने मुजाहेदीन के लश्कर में क़हर भर दिया था। मुजाहेदीन ने ख़ालिद(र०) की बताई हुई तरतीब से हमला किया लेकिन वो सवार अपने लश्कर से अलग थलग अपनी तर्ज़ की लड़ाई लड़ता रहा। ख़ालिद(र०) उस तक पहुंचने की कोशिश कर रहे थे लेकिन वो तो जैसे पागल हो चुका था या खुदकशी के अंदाज़ से लड़ रहा था।

एक बार फिर वो ख़ालिद(र०) के क़रीब से गुज़रा।

"रूक जा ऐ जान पर खेलने वाले !"–ख़ालिद(र०) चिल्लाए–"कौन है तू?"

सवार ने घोड़ा ज़रा रोका, खा़लिद(र०) की तरफ देखा, कपड़े के नक़ाब से इस की चमकती हुई आंखें नज़र आईं और उस ने घोड़े को ऐड़ लगा दी। खा़लिद(र०) ने अपने दो मुहाफिज़ों से कहा के इस सवार को घेर कर ले आऐं वरना ये मारा जाएगा। देखे, ये थक भी गया है। दोनों मुहाफिज़ों ने घोड़े दौड़ा दिए और उसे जा लिया।

"क्या तू ने सुना नही सालारे आला ने तुझे बार बार पुकारा है?"-एक मुहाफिज़ ने उसे कहा।

सवार मुहाफिज़ों को चुप चाप देखता रहा।

"सालारे आला तुझ से खफ़ा नही"-दूसरे मुहाफिज़ ने कहा-"आ और उस से खिराजे तहसीन वसूल कर।

सवार ने एक बार फिर घोड़े का रूख दुश्मन की तरफ कर दिया लेकिन इस से पहले के वो ऐड़ लगाता, एक मुहाफिज़ ने अपना घोड़ा उस के आगे कर दिया और दूसरे ने इस की लगाम पकड़ ली। अजीब बात थी के सवार ने कोई बात न की और नक़ाब से उस की सिर्फ आंखें नज़र आती रहीं। ये आम सी आंखें नहीं थी।

मुहाफिज़ उसे अपने साथ ले गए और खा़लिद(र०) के सामने जा खड़ा किया। उस ने बरछी और तलवार से इतने ज़्यादा रोमियों को हलाक किया था के दोनों हथियार पूरे के पूरे लाल हो गए थे और इन से खून बह बह कर इस सवार के हाथें तक चला गया था और कपड़ों पर भी छींटे पड़े थे। खा़लिद(र०) ने उस की आंखें में देखा तो उस ने नज़रें झुका लीं।

"आंखों से तू नौ उम्र लड़का लगता है"-खा़लिद(र०) ने कहा-"तू ने अपनी शुजाअत का सिक्का मेरे दिल पर बैठा दिया है। तेरी क़द्र मेरे सिवा और कोई नही कर सकता। खुदा की क़सम, मैं तेरा चेहरा देखूंगा और तू बता के तू है कौन?"

"तू मेरा अमीर है और मेरा सालार है"-सवार ने कहा-"और तू मेरे लिए गै़र मर्द है। मै तेर सामने अपना चेहरा कैसे बे नक़ाब कर दूं। जिसे तू मेरी शुजाअत कहता है ये ऐसा इश्तेआल और गुस्सा है जो मेरे इख्तियार से बाहर है।"

"तुझ पर अल्लाह की रहमत हो"-खा़लिद(र०) ने इस सवार की बात सुन कर कहा-"किस की बेटी है तू?किस की बहन है तू?"

"मै लाज़ौर की बेटी खो़ला हूं"-उस ने जवाब दिया।

"ज़रार(र०) बिन लाज़ौर की बहन!"-खा़लिद(र०) ने कहा।

"खुदा की क़सम!"-खो़ला बिन्ते लाज़ौर ने कहा-"मै अपने भाई को रोमियों की कै़द से छुड़ा कर दम लूंगी।"

"खुश नसीब है लाज़ौर जिस के घर में ज़रार(र०) जैसे बेटे और खो़ला जैसी बेटी

ने जन्म लिया है" -ख़ालिद(र०) ने कहा- "ये लड़ाई सिर्फ तेरी नही बिन्ते लाज़ौर ! हमारे साथ रह और देख के हम तेरे भाई को किसी तरह रिहा कराते है। "

उस दौर मे औरतें भी अपने ख़ाविंदों और भाईयों के साथ मैदाने जंग में जाया करती थी। ख़ोला अपने भाई ज़रार(र०) के साथ आई थी। इन्हें पता चला के उन के भाई को रोमियों ने क़ैद कर लिया है तो उन्होंने इसे ज़ाती जंग समझ लिया। सिपह सालार ख़ालिद(र०) की भी परवाह न की और रोमियों पर टूट पड़ी। औरतें और बच्चे दमिश्क़ के मुज़ाफात में थे। ख़ोला वहां से ख़ालिद(र०) के चार हज़ार सवारों के पीछे पीछे चल पड़ी थी। जूं ही रोमी और मुसलमान आमने सामने आए ख़ोला ने घोड़े को ऐड़ लगा दी और रोमियों पर टूट पड़ी।

ख़ोला ने ऐसी मिसाल क़ायम कर दी जिस ने मुजाहेदीने इस्लाम को नया हौसला और नया वलवला दिया।

☸

अब मुसलमानों की नफरी भी ज़्यादा हो गई थी और क़यादत ख़ालिद(र०) की थी। ख़ालिद(र०) के साथ जो चार हज़ार सवार गए थे वो ताज़ा दम थे। इस के अलावा पूरा लश्कर ज़रार(र०) के क़ैदी हो जाने पर आग बगूला था। रोमियों के लिए इस हमले को बर्दाशत करना ना मुममिन हो गया। उन्होंने जम कर लड़ने की कोशिश की लेकिन ख़ालिद(र०) की चालों और उन के लश्कर के ग़ेज़ व ग़ज़ब के सामने रोमी ठहर न सके। रोमियों की फौज चूंके एक मुनज़्ज़म और तरतीब याफ्ता फौज थी इस लिए इस की पस्पाई भी मुनज़्ज़म थी। इसे पस्पा करने में ख़ालिद(र०) को बहुत ज़ोर लगाना पड़ा। रोमियों की पस्पाई से ये मक़सद तो पूरा हो गया के दमिश्क़ के दिफाई दस्ते कुमक और रसद से महरूम रहे। रोमियों का ये कमाल था के वो जो रसद साथ लाए थे वो अपने साथ ही ले जा रहे थे।

अब दूसरा मक़सद सामने था और वो था ज़रार की रिहाई। इस मक़सद के लिए ख़ालिद(र०) ने रोमियों का तआक्कुब जारी रखा। रोमी और तेज़ी से पस्पा होने लगे। ख़ालिद(र०) ने तआक्कुब की रफ्तार कम न की। उन की कोशिश ये थी के रोमी कहीं रूकने न पाऐं। ख़ालिद(र०) खुद पीछे रह गए।

ये बहन का ईसार था जो अल्लाह ने कुबूल किया और ये ज़रार(र०) का इश्के रसूल(स०) था जो अल्लाह को अच्छा लगा। ज़रार(र०) की सरफरोशी को अल्लाह ने नज़र अंदाज़ न किया। पता चला के ज़रार(र०) रोमियों की क़ैद में ज़िन्दा है। ये ख़बर देने वाले दो अरबी थे जो इस इलाक़े में आकर आबाद हुए थे। ख़ालिद(र०) के दो चार सवार छोटी सी एक बस्ती के क़रीब से गुज़रते रूक गए। वो पानी पीना चाहते थे।

बस्ती के लोग इस ख़्याल से ख़ौफज़दा हो गए के ये फातेह फौज के आदमी है इस लिए ये लूट मार करेंगे और जवान लड़कियों पर हाथ डालेंगे। आबादी में हड़बोंग सी मच गई। दो आदमी मुसलमान सवारों के पास आए।

"हम भी अरब के बाशिंदे हैं"–उन्होंने सवारों से कहा–"हम मुसलमान तो नही फिर भी अरब की मट्टी का वास्ता दे कर कहते है के हमारी ख़ातिर इस बस्ती पर हाथ न उठाऐं।"

"तुम न कहते तो भी हम इस बस्ती की तरफ देखना भी गवारा न करते–एक मुसलमान सवार ने कहा–"इन लोगों से कहो के हम से न डरें। हम तुम सब के मुहाफिज़ हैं। हम पानी पी कर चले जाऐंगे।"

दोनों अरबों ने बस्ती के लोगों से कहा के वा डरें नहीं और अपने घरों में रहें। इन अरबों ने सवारों को और उन के घोड़ों को पानी पिलाया और इस दौरान वो सवारों के साथ बातें भी करते रहे। बातों बातों में इन अरबों ने सवारों को बताया के एक घोड़े पर रामियों ने एक आदमी को बांध रखा था। उस का सर नंगा था और उस की क़मीज़ भी नही थी और उस के एक बाज़ू पर पट्टियां बंधी हुई थीं।

"उसे उन्होंने यहां पानी पिलाने लिए रोका था"–एक अरब ने बताया–"वो तुम्हारा साथी मालूम होता था।"

मुसलमान सवारों को शक न रहा। ये ज़रार(र०) थे। सवारों ने इन अरबों से मज़ीद मालूमात ली। ज़रार(र०) के साथ तक़रीबन एक सौ रोमी थे। वो रोमी लश्कर की पस्पाई से बहुत पहले वहां से गुज़रे थे और वो हमस की तरफ जा रहे थे।

मुसलमान सवारों ने अपने एक साथी से कहा के वो पीछे जा कर सिपह सालार को ज़रार(र०) बिन लाज़ौर के मुताल्लिक़ ये इत्तेला दे।

❋

"अल्हमदौ लिल्लाह !–ख़ालिद(र०) ने ये ख़बर सुन कर कहा–"ज़रार ज़िन्दा है और वो ज़िन्दा रहेगा। उन्होंने इसे क़त्ल करना होता तो कर चुके होते। वो उस अपने बादशाह के पास ले जा रहे है.......इब्ने उमेरा को बुलाओ।"

राफे इब्ने उमेरा आए तो ख़ालिद(र०) ने इन्हें ज़रार(र०) के मुताल्लिक़ जो इत्तेला मिली थी, पूरी सुना कर कहा के वो एक सौ सवार चुन लें जो जान पर खेलने वाले शहसवार हों। इन्हें साथ ले कर हमस की तरफ ऐसा रास्ता इख़्तियार करें जो रास्ता न हो। मतलब ये था के रास्ता छोटा कर के हमस की तरफ जाऐं और उन एक सौ रोमियों को रोकें और इब्ने लाज़ौर को रिहा कराऐं।

राफे जब सवारों का इन्तेख़ाब कर रहे थे तो ज़रार(र०) की बहन को पता चल

गया के राफे ज़रार(र०) को आज़ाद कराने के लिए जा रहे हैं। वो राफे के पास दौड़ी गईं और कहने लगी के वो भी उन के सथ जाऐंगी।

"नही बिन्ते लाज़ौर!"–राफे ने कहा–"खुदा की क़सम, जो काम हमारा है वो हम एक औरत से नही कराऐंगे। तुझे तेरा भाई चाहिए। वो तुम्हें मिल जाएगा। नही मिलेगा तो हम भी वापस नही आऐंगे।"

"मै अगर सिपह सालार से इजाज़त ले लूं!"

"इब्ने वलीद तुझे इजाज़त नही देगा लाज़ौर की बेटी!"–राफे ने कहा।

खो़ला मायूस हो गईं।

राफे चुने हुए एक सौ सवारों के साथ बड़ी उजलत से रवाना हो गए। उन्होंने हमस की तरफ जाने वाले रास्ते का अंदाज़ा कर लिया था। वो इस रास्ते से दूर दूर तेज़ रफ्तार से घोड़े दौड़ाते गए। वो ज़्यादा दूर नहीं गए होंगे के एक तरफ से एक घोड़ा सरपट दौड़ाता आ रहा था। वो रेमी नहीं हो सकता था। रोमी होता तो अकेला न होता। वो खा़लिद(र०) का क़ासिद हो सकता था। कोई नया हुक्म लाया होगा। वो क़रीब आया तो उस का सब्ज़ अमामा और चेहरो पर कपड़े का नक़ाब नज़र आया।

"इब्ने उमेरा!"–सवार ने लल्कार कर कहा–"अपने भाई को आज़ाद कराने के लिए मैं आ गई हूं।"

"क्या सिपह सालार ने तुझे इजाज़त दे दी है?"–राफे ने पूछा।

"अपने भाई को कै़द से छुड़ाने के लिए मुझे किसी की इजाज़त की ज़रूरत नहीं"–खो़ला लाज़ौर ने कहा–"अगर तू मुझे अपने सवारों में शामिल नहीं होने देगा तो मैं अकेली आगे जाऊंगी।"

"खुदा की क़सम बिन्ते लाज़ौर!"–राफे ने कहा–"मै तुझे अकेला नही छोडूंगा। आ, हमारे साथ चल।"

ये जवां साल औरत साथ चल पड़ी।

❁

एक सौ रोमी सवार ज़रार बिन लाज़ौर को घोड़े पर इस हालत में बिठाए ले जा रहे थे के उन के हाथ रस्सियों से बंधे हुए थे और पांव इस तरह बंधे थे के घोड़े के पेट के नीचे से रस्सी गुज़ार कर दोनों टख़्नों से बंधी हुई थी। रोमी उन पर फब्तियां कसते और उन का मज़ाक़ उड़ाते जा रहे थे और ज़रार(र०) चुप चाप सुनते जा रहे थे।

एक जगह रास्ता नशीब में चला जाता था। इस के दायें बायें इलाक़ा खडों का था। जब रोमी इस नशीब में से गुज़र रहे थे तो अचानक दायें, बायें आगे और पीछे से राफे के सवारों ने उन पर हल्ला बोल दिया। रोमियों के लिए ये हमला गै़र मुतावक़्क़े था।

वो इस तरह जा रहे थे जैसे मेले पर जा रहे हों।

ज़रार(र०) की बहन ख़ोला ने अपने भाई को देखा तो उस ने रोमियों पर इसी तरह हमले शुरू कर दिए जिस तरह वो पूरी रोमी फौज पर कर चुकी थी। राफे भी ऐसे ही जोश में थे। उन के सवार हज़ारों में से चुने हुए थे। उन्होंने रोमियों का ऐसा बुरा हाल कर दिया के उन में से जो मरे नही या ज़ख्मी नहीं हुए थे, भाग उठे।

ख़तरा ये था के रोमी ज़रार(र०) को क़त्ल कर देंगे। उन की बहन तलवार और बरछी चलाती ज़रार(र०) तक पहुंच गई। रोमियों ने उन की ये कोशिश कामयाब न होने दी लेकिन राफे ने ऐसा हल्ला बोला के रोमी सवार बिखर गए फिर फरदन फरदन भाग उठगे। सब से पहले ज़रार(र०) ने राफे से हाथ मिलाया और जब बहन भाई मिले तो वो मंज़र रक्त अंगेज़ भी था और वलवला अंगेज़ भी। बहन अपने भाई के ज़ख़्म देखने को बेताब थी।

बाज़ मोअरिख़ों ने ख़ोला के ये अल्फाज़ लिखे हैं-"मेरे अज़ीज़! मेरे दिल की तपिश देख किस तरह तेरे फिराक़ में जल रहा है।"

"अपने ज़ख़्म दिखाओ ज़रार!"-बहन ने बेताबी से कहा।

"मत देख ख़ोला!"-ज़रार(र०) ने बहन से कहा-"और ये ज़ख़्म मुझे भी न देखने दो। ये ज़ख़्म देखने का वक्त नहीं"-ज़रार(र०) ने राफे और उन के सवारों से कहा-"चलो दोस्तो! रोमी कहां हैं? दमिश्क़ के मुहासरे का क्या बना?"

रोमी लड़ भी रहे थे और पस्पा भी हो रहे थे। ये इन की तंज़ीम भी थी और जुर्रत भी के वो भाग नहीं रहे थे। एक ऐसी जगह आ गई जिस के दोनों तरफ चट्टानें और कुछ बुलंद टेकरियां थीं। रोमी लश्कर को सुकड़ना पड़ा। ख़ालिद(र०) ने अपने दोनों पहलूओं के सालारों से कहा के वो चट्टानों की दूसरी इतराफ में निकल जाएं और सरपट रफ्तार से रोमियों के अक़ब में चले जाएं।

रोमी न देख सके के चट्टानों के पीछे से उन पर क्या आफत टूटने वाली है। ख़ालिद(र०) ने तआक्कुब की रफ्तार कम कर दी। रोमी समझे होंगे के मुसलमान थक गए है। उन्होंने पस्पाई रोक ली। ख़ालिद(र०) ने अपने दस्तों को रोक लिया।

अचानक अक़ब से रोमियों पर क़यामत टूट पड़ी। सामने से ख़ालिद(र०) ने शदीद हमला कर दिया। रोमियों की हालत ये हो गई के वो घोड़ों को चट्टानों और टेकरियों पर चढ़ा ले गए और दूसरी तरफ उतर कर भागने लगे। तवक़्क़ो थी के रोमी रसद वग़ैरा का जो ज़ख़ीरा साथ ला रहे थे वो मुसलमानों के हाथ आ जाएगा लेकिन रोमियों ने घोड़ा गाड़ियों और ऊंटों को पहले ही हमस को रवाना कर दिया था।

"काश! मेरे पीछे दमिश्क़ न होता"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"मै दुश्मन के एक

आदमी को भी हमस तक न पहुंचने देता।"

ख़ालिद(र०) ने ताक़्क़ुब तर्क कर दिया लेकिन इस ख़तरे के पेशे नज़र रोमी कही इक्ठे या हमस से कुमक मंगवा कर वापस न आजाऐं, अपने एक सालार सिम्त बिन असवद को बुलाया।

"एक हज़ार सवार अपने साथ लो और रोमयों के पीछे जाओ"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"इन्हें कहीं इक्ठे न होने देना। जंगी क़ैदी नही लेने। जो सामने आए उसे ख़त्म करो। फौरन रवाना हो जाओ।"

"वलीद के बेटे!"-ख़ालिद(र०) को किसी की पुकार सुनाई दी।

"वो आ गया मेरा नंगा जंगजू!"-ख़ालिद(र०) ने ज़रार(र०) को आते देख कर नारा लगाया।

ज़रार को अपने ज़ख़्मों की परवाह ही नहीं थी। वो घोड़े से कूद कर उतरे। ख़ालिद(र०) भी घोड़े से उतरे और तारीखे़ इस्लाम के दो अज़ीम मुजाहिद एक दूसरे के बाज़ूओं में जकड़े गए। ख़ोला घोड़े पर सवार थी। उस का चेहरा नक़ाब में था। सिर्फ आंखें नज़र आती थीं जिन की चमक और ज़्यादा रौशन हो गई थी।

"खुदा की क़सम इब्ने लाज़ोर!-ख़ालिद(र०) ने कहा-"तेरी बहन ने तेरी ख़ातिर मेरा भी मुंह फैर दिया था।"

"इस बहन पर अल्लाह की रहमत हो"-ज़रार ने कहा-"तू मुझे बता मैं क्या करूं।"

"क्या तू महसूस नहीं कर रहा के तुझे अभी आराम करना चाहिए?"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"पहले जर्राह के पास जा और उसे अपने ज़ख़्म दिखा।"

ज़रार बिन लाज़ोर जर्राह के पास चले तो गए लेकिन पट्टियां बंधवा कर आ गए।

❁

सालार सिम्त बिन असवद रोमियों के तआक़्क़ुब में गए। रोमी बुरी तरह भागे जा रहे थे। उन की आधी नफरी तो लड़ाई में ख़त्म हो गई थी और बाक़ी निस्फ बिखर गई थी। सिम्त जब हमस के क़रीब पहुंचे तो देखा के रोमी हमस के क़िले में दाख़िल होते जा रहे है। उस दौर में हमस एक क़िलाबंद कस्बा हुआ करता था।

सिम्त वहां जा कर रूक गए। इन्हें मालूम नहीं था के क़िले के अन्दर कितनी फौज है, फिर भी उन्होंने अपने हज़ार सवारों को क़िले के इर्द गिर्द इस अंदाज़ से दौड़ाया जेसे वो मुहासरा करना या क़िले पर हमला करना चाहते हों।

क़िले का दरवाज़ा खुला और तीन चार आदमी जो फौजी नही थे, बाहर आए।

वो रोमी नही मुक़ामी बाशिंदे थे। सालार सिम्त बिन असवद ने इन्हें अपने पास बुलाया।

"क्यों आए हो?" -सिम्त ने पूछा।

"अमन और दोस्ती का पैग़ाम ले कर आए हैं" -एक ने कहा- "रोमी मज़ीद लड़ाई नही चाहते।"

"क्या तुम्हारा शहंशाह हरकुल भी मज़ीद लड़ाई नही चाहता?" -सिम्त ने पूछा।

"हम शहंशाहे रोम की तरजुमानी नही कर सकते" -हमस के एक शहरी ने कहा- "हम ये पैग़ाम लाए है के हमस वाले नही लड़ना चाहते। आप जिस क़द्र सामाने खुर्द व नोश चाहते है हम से ले लें। आप जितने दिन भी यहां क़याम करना चाहते हैं करें। आप की फौज और घोड़ो को खुराक हम मोहय्या करेंगे।"

किसी भी तारीख़ में नहीं लिखा के सालार सिम्त ने हमस में रोमियों से सुलह की क्या शरायत मनवाई थी। वो वापस आ गए। ख़ालिद(र०) अपने लश्कर के साथ दमिश्क़ जा चुके थे।

मोअररिख़ लिखते हैं के ख़ालिद(र०) जब दमिश्क़ पहुंचे तो शहर के अन्दर मायूसी और ख़ौफ व हिरास की लहर दौड़ गई। शहर वालों को पहले ये इत्तेला मिली थी के अंताकिया से कुमक और रसद आ रही है। अब इन्हें इत्तेला मिली के कुमक को मुसलमानों ने रास्ते में ख़त्म कर दिया है। दमिश्क़ में रोमी सालार तूमा था जो शहंशाहे हरकुल का दामाद था। चन्द एक शहरी वफद की सूरत में तूमा के पास गए।

"क्या आप को किसी ने बताया है के शहर में लोग क्या बातें कर रहे हैं?" -एक शहरी ने कहा।

"क्या तुम लोग नही जानते के ये बुज़दिली है?" -तूमा ने कहा- "हम ने अभी मुहासरा तोड़ने की कारर्वाई की ही नहीं। क्या तुम लोग मुझे ये मशवरा देने आए हो के मैं मुसलमानों के आगे हथियार डाल दूं?"

"हम सालारे मोअज़्ज़म को शहर की सूरते हाल बताने आए हैं" -वफद के एक और आदमी ने कहा- "शहर के लोग ये सुन कर हिरासां है के जिस फौज ने मुहासरा भी कर रखा है और हमारी कुमक को भी ख़त्म कर दिया है, वो इस शहर में भी दाख़िल हो जाएगी फिर घर हमारे लूटे जाऐंगे, बच्चे हमारे कुचले जाऐंगे और लड़कियां हमारी उठाई जाऐंगी।"

"हम यहां तक नौबत नही आने देंगे" -सालार तूमा ने कहा।

"सालारे मोअज़्ज़म!"-एक और शहरी ने कहा-"आप को यकीनन मालूम होगा के नौबत कहां तक पहुंच चुकी है। शहर में खुराक इतनी कम रह गई है के लोगों ने दूसरे वक्त का खाना छोड़ दिया है। दो तीन दिनों बाद सिर्फ पानी रह जाएगा। ग़ौर करो। लोग फाक़ा कशी से तंग आ कर बग़ावत भी कर सकते है। ये सूरत सल्तनते रोम के लिए अच्छी नही होगी।"

"क्या तुम लोग नही जानते के बग़ावत की सज़ा क्या है?"-तूमा ने शाही रौब से कहा।

"हम जानते है सालारे आली!-वफद के एक आदमी ने कहा-"हम आप को क़हत और इस से पैदा होने वाली बग़ावत के नताइज बताने आए है। क्या इस तबाही से और लोगों को भूका मारने से बेहतर न होगा के आप मुसलमानों से सुलह कर लें?"

"दुश्मन से सुलह का मतलब होता है हथियार डालना"-तूमा ने कहा-"तूमा ने कहा-"मैं लड़े बग़ैर कोई ऐसा फैसला नहीं करूंगा जो रोम की अज़ीम सल्तनत की तौहीन का बाअस हो। हम अपनी जानें कुर्बान कर रहे हैं और तुम लोग एक वक्त की भूक बर्दाश्त नही कर सकते.....जाओ, कल तक इन्तेज़ार करो।"

❋

वो सितम्बर 634ई० के तीसरे हफ्ते की एक सुबह थी। रोमी सालार तूमा ने शहर के हर दरवाज़े की हिफाज़त के लिए जो दस्ते मुताइय्यन किए हुए थे, इन सब में से ज़्यादा से ज़्यादा नफरी निकाल कर इक्ळी की और वो दरवाज़ा खुलवाया जो उस के अपने नाम से मोसूम था-बाबे तूमा-और अपनी क़यादात में मुसलमानों के उस दस्ते पर हमला कर दिया जो इस दरवाज़े के सामने मुताइय्यन था।

ये पांच हज़ार मुसलमान सवारों का दस्ता था जिस के सालार शरजील बिन हस्ना थे। तूमा के हमले का अंदाज़ आज के दौर की जंग का सा था। उस ने दीवार और बर्जों से मुसलमानों पर तीरों की बौछाड़ें मारनी शुरू कीं और इस के साथ फलाख़नों से संग बाज़ी की। तीरों और पत्थरों के साए में तूमा ने अपनी फौज को तेज़ हमले के लिए आगे बढ़ाया था। ये तरीक़ा कारगर था। मुसलमान पीछे हटने पर मजबूर नज़र आने लगे थे और उन का ध्यान तीरों और पत्थरों से बचने पर लग गया था।

"कोई पीछे नही हटेगा"-सालार शरजील(र०) ने चिल्ला कर कहा-"तमाम तीरअंदाज़ आगे हो जाओ।"

मुसलमान तीर अंदाज़ों ने जवाबी तीरअंदाज़ी शुरू कर दी। रोमियों के पत्थर और तीर चूंके ऊपर से आ रहे थे और ज़्यादा भी थे इस लिए मुसलमानों को नुक़सान ज़्यादा हो रहा था। पहली बौछाड़ों में कई मुसलमान शहीद हो गए। इन के तीरों ने रोमियों का कुछ नुक़सान किया लेकिन ये मुसलमानों के मुक़ाबले में कम था।

मोअररि्ख़ वाक़दी, तिबरी और अबु सईद ने एक वाक़या बयान किया है। रोमी तीरों से शहीद होने वालों में एक मुजाहिद आबाद बिन सईद भी थे जिन का पूरा नाम आबाद बिन सईद बिन आस(र०) था। फौरन ही आबान की शहादत की ख़बर पीछे उन ख़ेमों में पहुंच गई जिन में मुसलमानों की ख्वातीन और बच्चे थे।

आबान बिन सईद की बीवी भी वहीं थी। इन की शादी हुए चन्द ही दिन गुज़रे थे। ये खातून लश्कर के साथ जख़्मियों की देख भाल और पानी पिलाने के फराइज़ के लिए आई थी और मुहाज़ पर ही उसे आबान शहीदी ने अपने अक़्द में ले लिया। किसी भी मोअररि्ख़ ने इस ख़ातून का नाम नहीं लिखा। उसे पता चला के उस का ख़ाविंद शहीद हो गया है तो वो उठ दौड़ी और शरजील(र०) के दस्ते में जा पहंची।

"कहां है मेरे ख़ाविंद की लाश?" -वो चिल्लाने लगी- "कहां है सईद के बेटे की लाश।"

पांच हज़ार घुड़ सवारों में जिन पर तीर और पत्थर बरस रहे थे, आबान बिन सईद शहीद की बेवा दौड़ती और शहीद की लाश का पूछती फिरती थीं किसी ने उसे पीछे जाने को कहा और ये भी के उस के ख़ाविंद की लाश उस के पास भेज दी जाएगी लेकिन वो तो सदमे से जैसे दिमाग़ी तवाज़ुन खो बैठी थी।

किसी ने उसे वो जगह दिखा दी जहां आबान की लाश पड़ी थी। अभी लाशें नहीं उठाई जा सकती थीं। आबान तीरअंदाज़ थे। उन के जिस्म में तीन तीर उतरे हुए थे और वो घोड़े से गिर पड़े थे। उन की कमान लाश के क़रीब पड़ी हुई और तरकश में अभी कई तीर मौजूद थे। इन की बीवी ने कमान और तरकश उठाई और दौड़ कर तीरअंदाज़ों की सफ में जा पहुंची।

सामने दीवार पर एक पादरी खड़ा था। उस के हाथ में बड़े साइज़ की सलीब थी जो उस ने ऊपर कर रखी थी। ये उस दौर का रिवाज था के सलीब फौज के साथ रखते थे ताके फौज का ये अहसास ज़िन्दा रहे के वो सलीब की नामूस की ख़ातिर लड़ रहे हैं।

आबान शहीद की बेवा अपने तीरअंदाज़ों से आगे निकल गई। उस के क़रीब

तीर गिरने और ज़मीन में उतरने लगे। अपने तीरअंदज़ों ने उसे पीछे आने को कहा लेकिन वो किसी की सुन ही नही रही थी। उस की बे ख़ौफी ख़ोला बिन्ते लाज़ौर जैसी थी। वो जूं जूं आगे को सरकती जा रही थी, उस के क़रीब रोमियों के आए हुए तीर ज़मीन पर खड़े होते जा रहे थे। यहां तक के एक तीर उस के पहलू में कपड़ों में लगा और वही लटक गया। ये तीर भी उसे आगे बढ़ने से रोक न सका।

आख़िर वो रूक गई और उस ने कमान में तीर डाला और कमान सामने कर के निशाना बांधते कुछ देर लगाई। उस ने कमान इतनी ज़्यादा खींच ली जितनी एक तंदरूस्त मर्द खींच सकता है और उस ने तीर छोड़ दिया। उस का तीर रोमी तीरों की बौछाड़ों को चीरता हुआ उस पादरी की गर्दन में उतर गया जिस ने सलीब को थाम रखा था। पहले उस के हाथ से सलीब गिरी और लुड़कती हुई बाहर आ पड़ी। पादरी भी पीछे या दायें बायें गिरने की बजाए दीवार पर गिरा और सलीब के पीछे पीछे बाहर आ पड़ा।

आबान शहीद की बेवा ने नारा लगाया और पीछे आ गई–"मैं ने इन्तेक़ाम ले लिया है....सुहाग के बदले सलीब गिरा दी है"–वो तीरअंदज़ों से आ मिली और तीर चलाती रही। सलीब और पादरी के गिरने का असर मुसलमानों पर ये हुआ के इन का हौसला बढ़ गया और उन का हौसला इस लिए भी बढ़ा के ये तीर एक औरत ने चलाया था। सलीब के गिरने का असर जो रोमियों पर हुआ वो उन के लड़ने के जज़्बे के लिए अच्छा न था।

❁

दरवाज़ा–बाबे तूमा–खुल चुका था। तूमा ने देख लिया था के उस की तीरअंदाज़ी और संग बाज़ी ने मुसलमानों की हालत कमज़ोर कर दी है। उस ने हमले का हुकम दे दिया। अजीब बात ये है के उस ने सवारों के मुक़ाबले में सवार न निकाले। इस ने पियादों से हमला कराया और कमान खुद बाहर आकर की। वो सिपाहियों की तरह लड़ रहा था। मोअरिख़ वाक़दी और बलाज़ी ने लिखा है के तूमा की आवाज़ ऐसी थी जैसे ऊंट बदमस्ती की हालत में बड़ी बुलंद और गुसैली आवाज़ें निकालता है।

शरजील(र०) ने बड़ी तेज़ी से अपने सवारों को आमने सामने की लड़ाई की तरतीब में कर लिया। तूमा ने ये चाल चली के अपने दस्तों को फैला दिया। इस की फौज की तादाद मुसलमानों की निस्बत ज़्यादा थी। उस के पियादे सवारों का मुक़ाबला

बड़ी बे जिगरी और महारत से कर रहे थे। शहर के दूसरे दरवाज़ों के सामने मुसलमानों के जो दस्ते मुतइय्यन थे वो इस वजह से शरजील(र०) की मदद को नही आ रहे थे के ऐसा ही हमला दूसरे दरवाज़ो से भी हो सकता था।

तूमा गरज और धहाड़ रहा था। उसे मुसलमानों का परचम नज़र आ गया। इस का मतलब ये था के मुसलमानों का सालार वहां है। वो सीधा इधर आया। शरजील(र०) ने उसे देख लिया और तलवार सूंत कर उस के मुक़ाबले के लिए तैयार हो गए। दोनों ने एक दूसरे को लल्कारा। उन में दस बारह क़दम फासला रह गया होगा के एक तीर तूमा की दायें आंख में उतर गया। उस ने हाथ उस आंख पर रख लिए और वो बैठ गया। शरजील(र०) ने आगे बढ़ कर उस पर हमला न किया। तूमा के मुहाफिज़ों ने उस के गिर्द हिसार बना लिया फिर उसे उठा कर ले गए।

मोअररि़खों ने मुताफक्क़ा तौर पर लिखा है के ये तीर आबान बिन सईद शहीद की बेवा ने चलाया था। अपने सालार के गिरने से रोमियों का हौसला भी गिर पड़ा और वो पीछे हटने लगे। शरजील(र०) के पहलूओं वाले तीरअंदाज़ों ने तीरों की बौछाड़ें मारनी शुरू कर दी। रोमी तेज़ी से पीछे हटे और क़िले के दरवाज़े में ग़ायब होते चले गए और पीछे जो लाशें छोड़ गए इन का कोई हिसाब न था।

"रोमियों का सिपह सालार मारा गया है"–मुसलमानों ने नारे लगाने शुरू कर दिए–"हम रोमियों के क़ातिल हैं.....रोमी सालार को एक औरत ने मार डाला है.... तूमा रोमी को अंधा कर के मारा है.....बाहर आओ रोमियो! अपनी सलीब और पादरी को उठा ले जाओ।"

दीवान पर खड़े रोमी ये नारा सुन रहे थे और ये नारे शहर के अन्दर भी सुनाई दे रहे थे। ये नारे रोमी फौज और दमिश्क़ के शहरियों के हौसले और जज़्बे के लिए तीरों की तरह मोहलक थे।

मुसलमानों का जानी नुक़सान भी कुछ कम नही था। बहुत से मुजाहेदीन रोमियों के तीरों और पत्थरों से शहीद और ज़ख़्मी हो गए, फिर इतनी तादाद लड़ाई में शहीद हुई। शरजील(र०) परेशान से हो गए और ख़ालिद(र०) के पास गए।

❁

शरजील(र०) बिन हस्ना ने ख़ालिद(र०) को लड़ाई की सारी रौदाद सुनाई और ये भी बताया के रोमी सिपह सालार तूमा अगर मरा नही तो वो लड़ाई के लिए नाकारा

हो गया है। उन्होंने ये भी बताया के उन की कितनी नफरी शहीद और कितनी ज़ख़्मी हो गई है।

"अगर रोमियों ने ऐसा ही एक और हमला किया तो शायद हम न रोक सकें"-शरजील(र०) ने ख़ालिद(र०) से कहा-"मुझे कुमक की ज़रूरत है।"

"हस्ना के बेटे!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"ऐसा हमला किसी और दरवाज़े से हम में से किसी और पर भी हो सकता है। किसी भी दस्ते की नफरी कम नहीं की जा सकती....इब्ने हस्ना! खुदा की क़सम, तू हिम्मत हारने वालों में से नही था। क्या अपने इतने ज़्यादा साथियों के खून ने तेरा हौसला कमज़ोर कर दिया है?

"नहीं इब्ने वलीद!"-शरजील(र०) ने कहा-"अगर मजबूरी है तो मै एक आदमी की भी कुमक नही मांगूंगा।"

"मै तुझे तन्हा नहीं छोड़ूंगा"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"तुझ पर हमला हुआ तो हम देखते रहेंगे। अगर हमला तेरी बर्दाश्त से बाहर हुआ तो ज़रार(र०) तेरी मदद को पहुंचेगा। फिर भी ज़रूरत पड़ी तो मै भी आ जाऊंगा....तेरे पास जितनी भी नफरी रह गई है इसे तैयार रख। रोमियों के सालार को अगर आंख मे तीर लगा है तो एक दो दिन रोमी बाहर आ कर हमला नहीं करेंगे।"

ख़ालिद(र०) की राय सही नहीं थी। तूमा ने एक मोअजज़ा कर दिखाया था। वो सही मानों में जंगजू था। चूंके वो शही ख़ानदान का फर्द था इस लिए सल्तनते रोम की जो मोहब्बत उस के दिल में थी वो कुदरती थी। बाद में पता चला था के उस की आंख में तीर लगा तो उसे उठा कर अन्दर ले गए। जर्राह ने देखा के तीर इतना ज़्यादा नहीं उतरा के तूमा की हलाकत का बाअस बन जाए। खोपड़ी की हड्डी को तीर ने मजरूह नही किया था। ये सिर्फ आंख में उतरा लेकिन निकला नही जा सकता था।

"काट दो इसे!"-तूमा ने जर्राह से कहा-"बाक़ी अंदर ही रहने दो और इस आंख पर पट्टी बांध दो। दूसरी आंख पर पट्टी न आए। मै आज रात एक और हमला करूंगा।"

"सालारे आली!"-जर्राह ने कहा-"क्या कह रहे है आप? आप लड़ाई के क़ाबिल नहीं।"

"इस एक आंख के बदले मुसलमानों की एक हज़ार आंखें ज़ाए करूंगा-तुमा ने कहा-"मै इन्हें सिर्फ शिकस्त नही दूंगा। मै इन के वतन अरब तक इन का तआक़्क़ुब करूंगा। मै अपने काम को उस वक़्त मुकम्मल समझूंगा जब इन के मुल्क को इस

क़ाबिल रहने दूंगा के वहां सिर्फ जानवर रह जाऐंगे।"

तूमा के ये अल्फाज़ मुताद्दिद मोअररि़खों ने लिखे है और वाक़या तफसील से बयान किया है। इन में यूरपी तारीख़ दान हैनरी स्मिथ खास तौर पर क़ाबिले जि़क्र है। इन सब की तहरीरों के मुताबिक़ तूमा के हुक्म से जर्राह ने तीर आंख के क़रीब से काट दिया और ऊपर पट्टी कस कर बांध दी। ये जज़्बे और अज़्म की पुख्तगी का करिशमा था के तूमा ने इतने शदीद ज़ख़्म को बर्दाश्त कर लिया और हुक्म दिया के आज ही रात बाहर निकल कर मुसलमानों पर हमला किया जाएगा।

"इतनी ही फौज बाबे तूमा के सामने इक्ळी की जाए जितनी मैं दिन के हमले में ले गया था"-तूमा ने हुक्म दिया और उठ खड़ा हुआ।

चलते चलते इस ने शराब पी और हथियार बंद हो कर बाहर निकल गया।

❁

उन रातों को चांद पूरा होता था। फिज़ा साफ रहती थी इस लिए चांदनी शफ्फाफ होती थी। तूमा ने बड़ा अच्छा तरीक़ा इख़्तियार किया। उस ने अपने तमाम दस्तों के कमांडरों को हुक्म दिया के तीन और दरवाज़ों-बाबे सग़ीर , बाबे शिर्क और बाबे जाबिया- से बाहर जा कर मुसलमानों पर इस तरह हमले करें के अपने आप को लड़ाई में ज्यादा न उलझाऐं बल्कि इन्हें अपने साथ लड़ाई में मसरूफ रखें। वो खुद बड़ा हमला बाबे तूमा से कर रहा था। दूसरे दरवाज़ों से हमले कराने से उस का मतलब ये था के शरजील(र०) को किसी तरफ से मदद न मिल सके।

"तुम्हारा दुश्मन इस वक्त हमले की तवक्क़ो नही रखता होगा"-तूमा ने अपने नायब सालारों से कहा-"तुम इन्हें सोते में दबोच लोगे।

तूमा की फौज चार दरवाज़ों से बाहर निकली। वक्त आधी रात का था। चांदनी इतनी साफ थी के अपने पराए को पहचाना जा सकता था। मुसलमानों पर चार जगहों से हमले हुए। एक दरवाज़े के सामने सालार अबु उबैदा थे, दूसरे के सामने यज़ीद बिन अबु सफयान थे। अबु उबैदा(र०) ने रोमियों को जल्दी भगा दिया और रोमी क़िले में वापस चले गए।

यज़ीद बिन अबु सफयान की हालत कमज़ोर सी हो गई। रोमियों ने उन पर बड़ा ही शदीद हल्ला बोला था। यज़ीद ने मुक़ाबला तो किया लेकिन रोमी इन पर हावी होते जा रहे थे। ज़रार(र०) बिन लाज़ौर मदद देने के काम पर मामूर थे। इन्हें पता चला के

यज़ीद को मदद की ज़रूरत है तो वो दो हज़ार सवार और पियादा मुजाहेदीन के साथ यज़ीद के पास पहुंच गए। ज़रार(र०) की जिस्मानी हालत लड़ने के क़ाबिल नही थी। उन के बाज़ू में तीर लगा था और जिस्म पर दो तीन और गहरे ज़ख्म थे। फिर भी वो मैदाने जंग में मौजूद थे और इन की बरछी पूरा काम कर रही थी।

ज़रार ने अपनी और यज़ीद की फौज को मिला कर हमले का हुक्म दिया। ये बड़ा ही शदीद हमला था। रोमियों पर ऐसा रौब तारी हुआ के वो क़िले में वापस चले गए। उन की लाशें और ज़ख्मी पीछे रह गए।

तीसरे दरवाज़े के सामने राफे बिन उमेरा के दस्ते थे। इन पर भी रोमियों ने शदीद हमला किया और राफे के पांव उखाड़ दिए। मुसलमान बड़ी बेख़ौफी से लड़ रहे थे लेकिन रोमियें का दबाव बड़ा सख्त था। इत्तेफाक़ से ख़ालिद(र०) ने देख लिया और वो चार सौ सवारों को साथ ले कर राफे के पास पहुंचे।

❁

"मैं फारसे जलील हूं"-ख़ालिद(र०) ने नारा लगाया-"मैं ख़ालिद(र०) इब्ने वलीद हूं।

ख़ालिद(र०) ने रोमियों पर सिर्फ चार सौ सवारों से हमला कर दिया। रोमी जो राफे के दस्तों पर ग़ल्बा पा रहे थे, पीछे को दौड़ पड़े और दरवाज़े में दाख़िल हो कर दवाज़ा बंद कर दिया।

असल लड़ाई तो बाबे तूमा के सामने हो रही थी। तूमा ने खुद वहां हमला किया था। शरजील(र०) की नफरी थोड़ी थी। मुजाहेदीन की तादाद कम रह गई थी और वो दिन की लड़ाई के थके हुए भी थे। शरजील(र०) ने अब भी पहलुओं के तीरअंदाज़ों को इस्तेमाल किया। रोमी तीर खा खा कर गिरते थे लेकिन हमले के लिए बढ़ आ रहे थे। शरजील(र०) ने दिन के हमले में तूमा की गरजदार आवाज़ सुनी थी। उन्होंने रात को भी इसी आवाज़ की लल्कार सुनी तो वो हैरान रह गए के तूमा हमले की क़यादत कर रहा है। यही वजह थी के रोमी तीरों की बौछाड़ों में भी बढ़े आ रहे थे।

चांदनी रात में दोनों फौजों की बड़ी सख़्त टक्कर हुई। शरजील(र०) के मुजाहेदीन ने हमला रोक लिया और बड़ी खूंरेज़ लड़ाई होती रही। मोअररिख़ो ने लिखा है के ये लड़ाई कम व बेश दो घंटे जारी रही और दोनों फौजों के आदमी गिरते रहे। शरजील(र०) का किसी से भी मदद मिलने की तवक्क़ो नहीं थी।

लड़ाई शिद्दत इख़्तियार करती गई। शरजील(र०) को तूमा की आवाज़ हैरान कर रही थी और तूमा शरजील(र०) को ढूंड रहा था। उस की दिलैरी ग़ैर मामूली थी। उसे चांदनी मै मुसलमानों का परचम नज़र आ गया और वो शरजील(र०) को लल्कार कर उन की तरफ बढ़ा। शरजील(र०) उस के मुक़ाबले के लिए तैयार हो गए।

"एक आंख के बदले एक हज़ार आंखें लूंगा"–तूमा ने कहा।

"खुदा की क़सम, तू दूसरी आंख भी देने आया है"–शरजील(र०) न कहा।

दोनों आमने सामने आ गए और दोनों घोड़ो से उतर आए। दोनों के हाथों में तलवारें और ढालें थी और दोनों तेग़ ज़नी के माहिर थे। शरजील(र०) को तवक़्क़ो थी के तूमा की एक ही आंख है और उस की दूसरी आंख ज़ख़्मी है इस लिए वो लड़ नही सकेगा लेकिन वो पूरी महारत से लड़ रहा था। शरजील(र०) को ये तो मालूम ही नहीं था के तीर अभी तक तूमा की आंख में है।

शरजील(र०) का हर वार तूमा बचा जाता था और तूमा का हर वार शरजील(र०) बचा रहे थे। शरजील(र०) ने एक वार बड़ा ही ज़ोरदार किया। उन की तलवार पहले तूमा के आहनी खुद पर लगी और वहां से फिसल कर कंधे पर लगी जहां आहनी ज़िरा थी। इतना ज़ोरदार वार लोहे पर पड़ा तो तलवार टूट गई। तूमा ने लल्कार कर वार किया जो शरजील(र०) ने ढाल पर लिया। वो अब तलवार के बग़ैर थे, वार सिर्फ रोक सकते थे। तूमा बढ़ बढ़ कर वार कर रहा था।

शरजील(र०) के दो मुजाहिदों ने देख लिया के शरजील(र०) तलवार के बग़ैर ख़तरे में है तो वो शरजील(र०) और तूमा के दरमियान आ गए। शरजील(र०) ने इधर उधर देखा। वो किसी की तलवार ढूंड रहे थे। कुछ दूर इन्हें अपने एक शहीद मुजाहिद की लाश के क़रीब उस की तलवार पड़ी नज़र आई। उन्होंने दौड़ कर तलवार उठा ली और वापस आए लेकिन तूमा वहां नही था। शरजील(र०) ने अपने दोनों मुजाहिदों से पूछा के रोमी सालार कहां है। उन्होंने बताया के वो पीछे हटते हटते लड़ाई के हंगामे में गुम हो गया है। उन्होंने उसे घोड़े पर सवार होते देखा था।

शरजील(र०) के आसाब पर बड़ा तकलीफ दह दबाव था। इन्हें पूरी तरह यक़ीन नही था के वो रोमियों को शिकस्त दे सकेंगे। लड़ने में शरजील(र०) और उन के दस्ते ने कोई कसर नही छोड़ी थी। उन्होंने चन्द सौ सवारों को अलग कर के पहले से

रोमियों पर एक ज़ोरदार हल्ला बोला। कुछ तो इस हल्ले ने काम किया, कुछ रोमी मायूस हो गए और वो पीछे हटने लगे। रोमियों में ये खूबी थी के वो बे तरतीब हो कर नही भागते थे बल्कि तरतीब और तंज़ीम से पीछे हटते थे।

शरजील(र०) ने इन्हें पीछे हटते देखा तो उन के पीछे न गए क्योंके मुसलमानों की नफरी थोड़ी रह गई थी। शरजील(र०) ख़तरा मोल नहीं लेना चाहते थे। पीछे जाने की बजाए उन्होंने तीरअंदाज़ों को आगे कर के पीछे हटते हुए रोमियों पर तीरों का मीना बरसा दिया। रोमी अपनी लाशों और ज़ख़्मियों को पीछे छोड़ते दरवाज़े में जा कर ग़ायब हो गए।

❁

रोमी जिस दरवाज़े से भी बाहर आए थे वो लाशें और ज़ख़्मी फैंक कर उसी दरवाज़े से अन्दर चले गए। सब से बड़ा हमला तूमा ने किया था वो भी नाकाम रहा। अगर बात नाकामी तक होती तो रोमी ऐसे हमले फिर भी कर सकते थे लेकिन इन्हें जो जानी नुक़सान उठाना पड़ा वो उन की बर्दाश्त से बाहर था। उन की नफरी पहले ही कुछ इतनी ज़्यादा नहीं थी और अब तो आधी रह गई थी। तूमा के लिए एक और दुश्वारी ये पैदा हो गई के जब शहर पनाह के दरवाज़े बंद हो गए और तूमा शहर में आकर रूका तो कई शहरियों ने उसे घेर लिया।

"सालारे मोअज़्ज़म!"-एक आदमी ने कहा-"हम सल्तनते रोम के वफादार हैं। हम नहीं चाहते के रोम की शहंशाही को मज़ीद नुक़सान पहुंचे। हम पहले ही अर्ज़ कर चुके हैं के मुसलमानों के साथ सुलह की बात की जाएं।

"शहरियों में जो बेचैनी और बदअमनी फैल चुकी है इसे आप नहीं देख रहे"-एक और ने कहा-"फौज जो नुक़सान उठा चुकी है वो आप के सामने है और आप खुद भी ज़ख्मी हैं। ख़तरा ये है के शहरी जो अब फाक़ा कशी तक पहंच गए है अपनी ही फौज के लिए नुक़सान का बाअस बन जाऐंगे।"

तूमा जाबिर क़िस्म का सालार था। उस की दिलैरी और अज़्म की पुख़्तगी में कोई शक नही था लेकिन उस की हालत ये हो गई थी के जो शहरी उस के साथ बात करता था वो इस शहरी की तरफ देखने लगता था। ये वो तूमा था जो किसी की बात बर्दाश्त नही करता था। उस के चेहरे के तास्सुरात में शिकस्त साफ नज़र आ रही थी। उस ने अपनी उस आंख पर हाथ रख लिया जिस के अन्दर तीर का एक टुकड़ा मौजूद

था और ऊपर पट्टी बंधी हुई थी। साफ पता चलता था के इसे ये ज़ख्म परेशान कर रहा है।"

"मुझे सोचने दो" -उस ने हारी हुई आवाज़ में कहा- "मैं सुलह कर लूंगा लेकिन कोई ऐसी शर्त नही मानूंगा जो रोम की शहंशाही की तज़लील का बाअस बने।"

दरअसल तूमा ज़हनी तौर पर शिकस्त तस्लीम कर चुका था। उस के सामने अब यही एक मसला रह गया था के कोई ऐसी सूरत पैदा हो के मुसलमानों के साथ बा इज़्ज़त समझौता हो जाए। मोअररि्ख़ों के बयानात के मुताबिक़ उसे किसी ने ये बताया था के मुसलमानों के नायब सालार अबु उबैदा(र०) नर्म मिज़ाज और सुलह जू इन्सान है। अगर इन तक रसाई हो जाए तो बा इज़्ज़त समझोता हो सकता है। ख़ालिद(र०) के मुताल्लिक़ वो जानता था के वो मुकम्मल शिकस्त और हथियार डालने से कम बात नही करते। तूमा ने अपने मुशीरों को बुलाया।

बाहर मुसलमानों की कैफियत ये थी के उन के हौसले बढ़ गए थे और वो लल्कार रहे थे के रोमियों! शहर हमारे हवाले कर दो लेकिन शहर में दाख़िल होने का कोई ज़रिया नज़र नहीं आता था। ख़ालिद(र०) ने फैसला कर लिया के मुजाहेदीन को एक दो दिन आराम के लिए दे कर शहर के दरवाज़े तोड़ने की या दीवार में सुरंग लगाने की कोशिश करेंगे।

सुबह तुलू हुई तो अल्लाह ने एक ग़ैर मुस्लिम को ख़ालिद(र०) के सामने खड़ा कर दिया। ये एक यूनानी था जिस का नाम यूनुस इब्ने मरक़ुस था। वो रात के वक़्त जब रोमी अन्दर बैठे अपने ज़ख्म चाट रहे थे, शहर की दीवार से एक रस्से के ज़रीये उतरा था। उस ने कहा के वो एक लड़की को हासिल करने के लिए अपनी जान का ख़तरा मोल ले कर आया है। ये लड़की भी यूनानी थी और ये 18 सितम्बर 634 ई० (19 रजब 13 हिज्री) का वाक़ेया है।

18 सितम्बर 634 ई० की रात थी। ख़ालिद(र०) को बताया गया के क़िले के अन्दर से एक आदमी आया है जो अपना नाम यूनुस इब्ने मरक़स बताता है।

"वो क़िले से नहीं आया"–ख़ालिद(र०) ने कहा–"अगर क़िले के अन्दर से ही आया है तो साफ नीयत से नहीं आया। अगर बाहर से आया है तो भी उस की नीयत ठीक नहीं हो सकती। वो रामियों का जासूस होगा.....उसे मेरे पास भेज दो।"

वो एक जवां साल आदमी था। खूबरू और फुर्तीला था। ख़ालिद(र०) के दो मुहाफिज़ों ने उस की तलाशी ली। उस ने कमरबंद में एक खंजर उड़सा हुआ था जो उस ने छुपा कर नहीं रखा था। ये उस से ले कर उसे ख़ालिद(र०) के खेमे में भेज दिया गया। ख़ालिद(र०) ने उसे सर से पांव तक देखा फिर उस पर नज़रें जमा दी।

"सालारे आला मुझे शक की निगाहों से देख सकते हैं"–इस जवां साल आदमी ने कहा–"मैं आप के दुश्मन के क़िले से आया हूं। आप को मुझ पर शक करना चाहिए. ....मेंरा नाम यूनुस इब्ने मरक़स है और मैं यूनानी हूं। आप की और रोमियों की जंग के साथ मुझे कोई दिलचस्पी नहीं।"

"यूनान के जवान!–ख़ालिद(र०) ने कहा–"क्या ये बेहतर नही होगा के अपने आने का मक़सद फौरन बता दो?"

"मक़सद मेरा ज़ाती है"–यूनुस इब्ने मरक़स ने कहा–"अगर आप ये पूरा कर दें तो मैं आप की मदद कर सकता हूं।"

"तू मेरी क्या मदद कर सकता है?"

"मैं आप को क़िले के अन्दर पहुंचा सकता हूं"–यूनुस इब्ने मरक़स ने कहा–"फिर दमिश्क़ आप का होगा।"

"तू क़िले से निकला कैसे?"–ख़ालिद(र०) ने कहा–"मैं कैसे यक़ीन करूं के तू झूट नही बोल रहा?"

"मै बाबुलशिर्क के क़रीब फसील से रस्सा लटका कर उतरा हूं"–यूनुस इब्ने मरक़ुस ने कहा–"मेरे आने का मक़सद भी सुन लें सालारे आला! दमिश्क़ में यूनानियों के तीन चार ख़ानदान आबाद है। एक यूनानी लड़की के साथ मेरी मोहब्बत है। मै आप को बता नही सकता के हम दोनों एक दूसरे को किस तरह चाहते है आप की फौज ने दमिश्क़ का मुहासरा किया तो इस से थोड़ी ही देर पहले इस लड़की के साथ मेरी शादी हो गई। इतने में शहर में शोर उठा के मुसलमानों ने शहर का मुहासरा कर लिया है। लड़की के वालदेन ने लड़की को मेरे हवाले करने से इन्कार कर दिया। कहते है के मुहासरा टूट जाने के बाद लड़की को मेरे हवाले करेंगे......

"सालारे आला! मै मोहब्बत के हाथों इतना मजबूर हूं के इन्तेज़ार नही कर सकता। दरअसल लड़की की मां की नीयत ठीक नहीं। वो अपनी बैटी की शादी एक बड़े ही मालदार ताजिर के साथ करना चाहती थी लेकिन उस की बेटी ने मेरी मोहब्बत की ख़ातिर उसे मजबूर कर दिया के उस की शादी मेरे साथ कर दे। आप की फौज ने शहर को मुहासरे में ले लिया तो उसे बहाना मिल गया। उस ने कहा के हर कोई शहर के दिफाअ में लगा हुआ है, अच्छा नहीं लगता के तुम दोनों शादी की तक़रीब मनाओ।"

"लेकिन मै क्या कर सकता हूं?"–ख़ालिद(र०) ने कहा–"क्या मै यहां मोहब्बत की दास्तानें सुनने आया हूं? तू वो बात फौरन क्यों नहीं बता देता जो कहने आया है? अगर तू किसी और नीयत से आया है तो तू यहां से ज़िन्दा किस तरह जाएगा?"

"आह इब्ने वलीद!"–यूनुस इब्ने मरक़ुस ने आह ले कर कहा–"कौन है जो तेरे ख़ेमे में बुरी नीयत से आने की जुर्रत कर सकता है! जिस ने सल्तनते रोम जैसी अज़ीम और जाबिर सल्तनत की बुनियादों तक को हिला डाला है उसे मुझ जैसे मामूली आदमी से नहीं डरना चाहिए....और ये भी सोच के मै रोमी नही यूनानी हूं। मुझे सिर्फ अपनी बीवी चाहिए और तुझे दमिश्क़ चाहिए....राज़ की बात ये है के तीन चार दिन लड़ाई नही होगी।"

"क्यों नही होगी?"

"दमिश्क़ का सालार तूमा ज़ख़्मी है"–यूनुस इब्ने मरक़ुस ने जवाब दिया–"लेकिन लड़ाई न होने की सिर्फ ये वजह नहीं। एक वजह ये भी है के शहर के लोग सालार तूमा के पीछे पड़े हुए है के वो मुसलमानों के साथ जंग बंदी और सुलह की बात करे। शहर में अनाज की किल्लत क़हत की हद तक पहुंच गई है और सब से बड़ी वजह लड़ाई न होने की ये है के कल रात दमिश्क़ के लोगों का एक जशन है जिस में रोम की फौज भी शरीक होगी। किसी को किसी का होश नही होगी। मै आप की ये मदद

करूंगा के फसील पर कमंद फैंकने की मोज़ू जगह बता दूंगा। आप के चन्द एक आदमी फसील पर चढ़ आऐं और अन्दर से एक दरवाज़ा खेल दें फिर आप की फौज शहर में दाखि़ल हो जाए।"

बाज़ मोअररिख़ों ने लिखा है के अहले दमिश्क़ अपना कोई सालाना जश्न मना रहे थे। ऐसे जश्न में वो इतनी ज़्यादा शराब पीते और रंग रलियों में ऐसे मग्न होते थे के इन्हें अपने पराए की होश नही रहती थी और फौज भी इस में शरीक होती थी लेकिन ऐसे मुहासरे की हालत में दमिश्क़ वालों का ऐसा जश्न मनाना के वो अपने होश व हवास भी खो बैठें क़ाबिले यक़ीन नही लगता था। दमिश्क़ के अन्दर की हालत बयान की जा चुकी है। वहां तो क़हत और ख़ौफ व हिरास की कैफियत थी। रोम की फौज की बे शुमार नफरी मारी जा चुकी थी। लाशें बाहर गल सड़ रही थीं और ज़ख़्मी अन्दर कराह रहे थे। इन हालात में जश्न को तस्लीम नहीं किया जा सकता।

एक यूरपी मोअररिख़ हैनरी सिम्थ ने इस वाक़ये को जिस तरह बयान किया है वो हक़ीक़ी लगता है। उस ने शाम से रोमियों की पस्पाई के बयान में लिखा है के दमिश्क़ के मुहासरे में रोमियों की हालत इतनी बुरी हो गई थी के वो हथियार डालने पर आ गए थे। उन के मज़हबी पेशवाओं ने रोमी सालार तूमा से कहा था के इन से खुदा नाराज़ है। खुदा को राज़ी करने के लिए मज़हबी क़िस्म के जश्न का अहतमाम किया गया था। दमिश्क़ में दूसरे अक़ीदों के लोग भी थे जो अपने अंदाज़ से मज़हबी तक़रीब मुनअक़िद कर रहे थे। चूंके ये मज़हब का और फतह के लिए दुआ का मामला था इस लिए इस में हर किसी की शिरकत लाज़मी थी। फौज को भी इस में शामिल होना था।

इस यूरपी मोअररिख़ ने ये भी लिखा है के ऐसा कोई ख़तरा नही था के मुसलमान क़िले पर चढ़ाई कर देंगे। ये कोई आसान काम नही था। मुसलमानों की अपनी हालत ऐसी मज़बूत नहीं रही थी के वो हल्ला बोल देते। ये तो ख़ालिद(र०) का अज़्म था और इन्हें अपने तमाम सालारों का भर पूर तआवुन हासिल था के दमिश्क़ को चन्द दिनों में सर करना है।

यूनुस इब्ने मरक़स के मुताल्लिक़ तमाम मोअररिख़ मुत्ताफिक़ हैं। उस ने ख़ालिद(र०) को क़ायल कर लिया के वो इन्हें क़िले में दाखि़ल करा देगा और इस के इवज़ वो सिर्फ ये चाहता है के इस की बीवी उसे दिला दी जाए। ख़ालिद(र०) ने इस यूनानी पर ऐतबार कर लिया और उसे सब से पहले इस्लाम की दावत दी।

"मै ने इस्लाम के मुताल्लिक़ बहुत कुछ सुना है"–यूनुस बिन मरक़स ने कहा–"लेकिन मुझे कोई बताने वाला न था और मेरा हाथ था मने वाला कोई न था। मुझे अपने पास रखें। मै इस्लाम कुबूल करता हूं। क्या मुझे अपना नाम बदलना

पड़ेगा?"

"नही!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"तुम्हारा नाम पहले ही इस्लामी है।"

ख़ालिद(र०) नें उसे मुसलमान कर लिया और उस से पूछने लगे के कमंद कहां और किस तरह लगाई जाए और अन्दर की तरफ दरवाज़े की हिफाज़त का क्या इन्तेज़ाम है।

यूनुस इब्ने मरक़स ने इन्हें पूरी तफसील से सब कुछ बताया।

❁

यूनुस इब्ने मरक़स को इतना ही मालूम था के दो तीन दिन लड़ाई नही होगी और कल रात लोग एक तक़रीब या जश्न मनाऐंगे। उसे ये मालूम नहीं था के रोमी सालार तूमा हिम्मत हार चुका है और वो कोई और चाल चल रहा है। ये चाल तूमा और उस के मुशीरों ने मिल कर सोची थी। जिस तरह मुसलमानों के पास उसी इलाक़े के जासूस मौजूद थे! इसी तरह रोमियों के पास ऐसे जासूस मौजूद थे जो ख़ालिद(र०) और उस के तमाम सालारों के किरदार और आदात के मुताल्लिक़ पूरी वाक़फियत रखते थे। ये अरब के इसाई थे और मक्का, मदीना और इन्ही इलाक़ों के रहने वाले यहूदी भी थे। ये सब सिर्फ जासूस ही नहीं थे बल्कि इन में से दो चार तूमा के मुशीर भी बने हुए थे।

तूमा ने बाहर निकल कर मुसलमानों पर हमले किए थे, पूरा ज़ोर लगा लिया था मगर सिवाए जानी नुक़सान के उसे कुछ भी हासिल नहीं हुआ था। शहरियों ने उसे अलग परेशान कर रखा था। शहर में खुराक ख़त्म थी और उस की अपनी हालत ये थी के एक तीर का अगला हिस्सा उस की आंख में उतरा हुआ था और ऊपर पट्टी बंधी हुई थी।

"फिर भी मै शहर को तबाही और लूट मार से और लोगों को क़त्ले आम से बचाना चाहता हूं"-तूमा ने अपने सालारों और मुशीरों को बुला कर इन्हें अपनी सूरते हाल बताई और कहा-"हम अब लड़ नहीं सकते। मुसलमान आसानी से अन्दर नही आ सकते लेकिन अनाज और रसद का जो हाल है वो तुम सब जानते हो। मुसलमानों ने सिर्फ मुहासरा ही जारी रखा तो लोग भूक से मरने लगेंगे।"

"और वो बग़ावत भी कर सकते हैं"-एक मुशीर ने कहा।

"बग़ावत करें या न करें"-तूमा ने कहा-"ये मेरा फर्ज़ है के इन्हें हर तकलीफ से बचाए रखूं। मुझे तुम्हारे मशवरों की ज़रूरत है। क्या कोई ऐसी सूरत हो सकती है के हम शहर खाली करना चाहें तो मुसलमान हमें इजाज़त दे दें और हमें कोई नुक़सान न उठाना पड़े?"

"ख़ालिद(र०) इब्ने वलीद बड़ा जाबिर सालार है"-एक यहूदी मुशीर ने

कहा–"वो हमें पुरअम्न तरीके से नही निकलने देगा। उस की फौज का जो नुक़सान हो चुका है वो कभी नही बख़्शेगा। हमें कहेगा के इस्लाम कुबूल करो।"

"ये मैं कभी नहीं करूंगा"–तूमा ने कहा।

"अगर आप नही करेंगे तो वो आप से इतना तावान मांगेगा जो आप अपने ख़ज़ाने के अलावा लोगों के घरों से इक्ळा करें तो भी मुश्किल से पूरा होगा"–यहूदी मुशीर ने कहा।

तूमा गहरी सोच में पड़ गया।

"इन में कोई सालार ऐसा है जो नर्म मिज़ाज हो?"–उस ने पूछा।

"अबु उबैदा!"–यहूदी ने जवाब दिया–"बड़ा ही क़ाबिल, बड़ा ही दिलैर सालार है मगर रहम दिल है।"

"अपन फौज में उस की हैसियत क्या है?"

"इब्ने वलीद के बाद हैसियत अबु उबैदा(र०) की है"–दूसरे यहूदी ने कहा–"इनकी खिलाफत में जो क़द्र मंज़िलत अबु उबैदा(र०) की है वो इब्ने वलीद की नहीं इब्ने वलीद का दर्जा इस के बाद का है। तमाम मुसलमान खुद ख़लीफा और इब्ने वलीद अबु उबैदा का अहतराम करते हैं।"

यहां से तूमा के दिमाग़ में एक फरैबकारी आ गई। यहूदी और इसाई अरब मुशीरों और दानिशवरों ने उस की राहनुमाई और मदद की और एक मंसूबा तैयार हो गया जो इस तरह था के तूमा अबु उबैदा(र०) के आगे इस शर्त पर हथियार डालेगा के उसे, उस की फौज और शहर के हर उस बाशिंदे को जो शहर छोड़ कर जाना चाहे उसे उस के माल व असबाब, और तों और बच्चों समेत निकल जाने दिया जाए। शहर में लूट मार न हो। तूमा ने ये फैसला कर लिया था के वो जज़िया अदा करेगा।। ये भी तय पाया के ख़ालिद(र०) को क़ब्ल अज़ वक़्त पता न चले।

ये मंसूबा इस बुनियाद पर बनाया गया था के अबु उबैदा शहर के उस दरवाज़े (बाबे जाबिया) के सामने अपने दस्तों के साथ को जो उस दरवाज़े (बाबुल शिर्क) के बमुक़ाबिल था। दोनों दरवाज़ों के दरमियान पूरा शहर हायल था और फासला एक मील से कुछ ज़्यादा था। तूमा आसानी से अपने ऐलची अबु उबैदा के पास भेज सकता था।

तूमा ने ये कांफ्रेंस उस रात से दो तीन रातें पहले मुनअक़िद की थी जिस रात यूनुस इब्ने मरक़ुस ख़ालिद(र०) के पास आया था।

❁

अगली रात का वाक़ेया है। ख़ालिद(र०), क़ाक़आ और एक बड़े बहादुर

मुजाहिद मज़ऊर बिन ऐदी शहर पनाह के दरवाज़े बाबुल शिर्क से कुछ दूर खड़े थे। उन के हाथों में रस्से थे। दीवार के साथ लगे एक सौ मुजाहेदीन खड़े थे। ये सारे लश्कर में से चुने हुए निडर और ज़हीन मुजाहेदीन थे। यूनुस इब्ने मरक़स ख़ालिद(र०) के साथ था। उसी ने ख़ालिद(र०) को ये जगह बताई थी। वो रस्से के ज़रिये यहीं से उतरा था।

ख़ालिद(र०) अपनी ज़िन्दगी का बहुत बड़ा ख़तरा मोल ले रहे थे। वो सिपह सालार थे। इन्हें ऊपर नही जाना चाहिए था। पकड़े जाने का इम्कान था। मारे जाने का ख़तरा था लेकिन इस ख़तरे में वो किसी और को नहीं डालना चाहते थे। इन्हें ऐतमाद था के उन के न होने से मुजाहेदीन में बददिली नहीं फैलेगी और अबु उबैदा इन की जगह ले लेंगे। ये फैसला पहले ही हो चुका था के ख़ालिद(र०) की ग़ैर हाज़री में सालारे आला अबु उबैदा(र०) होंगे।

ख़ालिद(र०) ने अपने हाथ से कमंद ऊपर फैंकी। दीवार की बुलंदी तेरा चौदह गज़ थी। कुमंद दीवार के ऊपर अटक गई उन्होंने कुछ देर इन्तेज़ार किया। दीवार पर कोई हरकत न हुई जिस का मतलब ये था के ऊपर कोई नहीं। अगर कोई था भी तो उसे पता नहीं चला था के दीवर पर कमंद फैंकी गई है।

ख़ालिद(र०) ने अपने आप को मज़ीद ख़तरे में यूं डाला के सब से पहले खुद कुमंद के ज़रिये ऊपर गए। इन के पीछे क़ाक़आ और मज़ऊर ऊपर गए। ऊपर कोई भी नहीं था। दीवार का हिस्सा शहर से कुछ दूर था। शहर की आवाज़ों से पता चलता था के लोग जाग रहे हैं और किसी तक़रीब में मसरूफ हैं। ख़ालिद(र०) को यक़ीन आ गया के यूनुस इब्ने मरक़स इन्हें धोका नहीं दे रहा। उन्होंने दीवार यानी शहर की फसील के साथ वो तीन चार रस्से बांध कर नीचे लटका दिए जो वो इसी मक़सद के लिए साथ ले गए थे।

उन के एक सौ मुजाहेदीन में से पचास इन रस्सों से ऊपर चले गए। यूनुस इब्ने मरक़स भी इन के साथ गया। वो ख़ालिद(र०) का गाइड था। ख़ालिद(र०) ने इन जांबाज़ों में से कुछ को इस काम के लिए दीवार पर बैठा दिया के रोमी फौज के आदमी अगर ऊपर आ जाऐं तो इन्हें ख़त्म कर दें लेकिन खामोशी से ताके शहर में किसी को पता न चले। हर काम खामोशी से करना था।

ख़ालिद(र०) ने क़ाक़आ और मज़ऊर को अपने साथ रखा और पचास जांबाज़ों में से बाक़ी को अपने साथ फसील से उतार कर ले गए। जू ही वो दीवार से उतरे इन्हें किसी की बातें सुनाई दी।

"रोमी सिपाही!"-यूनुस इब्ने मरक़स ने ख़ालिद(र०) के कान में सरगोशी की-"मै इन की ज़बान समझता हूं।"

"इन्हें इन की ज़बान में रौब से कहो के जल्दी चलो" -ख़ालिद(र०) ने यूनुस इब्ने मरक़स से कहा और अपने जांबाज़ों से कहा- "तलवारें निकाल लो और इतनी तेज़ी से वार करने है के रोमियों को मुंह से कोई आवाज़ निकालने की मोहलत न मिले।"

यूनुस इब्ने मरक़स ने फौजी अफसरों की तरह बड़े रौब से रोमी सिपाहियों को बुलाया। उन के आने तक ख़ालिद(र०) के जांबाज़ घेरे की तरतीब में हो गए। रोमी सिपाही कम व बैश चालीस थे। वो दौड़े आए। रात का वक़्त था। चांद आधी रात के लग भग उफक़ से उठता था। जब रोमी सिपाही आ रहे थे उस वक़्त चांद शहर की फसील से ऊपर आ गया था। रोमी सिपही ख़ालिद(र०) के जांबाज़ों को अपने आदमी समझे होंगे। वो क़रीब आए तो मुसलमान जांबाज़ तलवारों से उन पर टूट पड़े। इन में से सात आठ ने तलवारें निकली और मुक़ाबले की कोशिश की लेकिन मारे गए मगर खामोशी टूट गई दो तीन रोमी सिपाहियों ने ज़ख़्मी होते ही बड़ी ऊंची आवाज़ों में शौर बपा किया के मुसलमान क़िले में दाख़िल हो गए हैं।

❁

"अब दरवाज़ा फौरन खुलना चाहिए" -ख़ालिद(र०) ने कहा- "रोमी फौज को आने में ज़्यादा वक़्त नहीं लगेगा...मेरे पीछे आओ।"

जहां दरवाज़ा था वहां देवढ़ी थी। ख़ालिद(र०) अपने जांबाज़ों से आगे थे। वो दौड़ते हुए दरवाज़े वाली देवढ़ी में गए। वहां सिर्फ दो रोमी सिपाही थे जिन के हाथों में बरछियां थी। वो शौर सुन चुके थे इस लिए मुक़ाबले के लिए तैयार थे लेकिन ख़ालिद(र०) ने इन्हें मुक़ाबले की ज़्यादा मोहलत न दी। एक को ख़ालिद(र०) ने और दूसरे को क़ाक़आ ने मार डाला।

"दरवाज़ा खोलो" -ख़ालिद(र०) ने हुक्म दिया- "और ज़्यादा आदमी बाहर तैयार रहो रोमी आ रहे है।"

दरवाज़े के अन्दर की तरफ बड़े वज़नी ताले लगे हुए थे और बड़ी ज़ंजीरें बांध कर दरवाज़े को मुस्तेहकम किया हुआ था। बड़ी मुश्किल से ताले तोड़े गए और ज़ंजीरें भी उतार दी गईं। ख़ालिद(र०) दरवाज़ा खोल कर बाहर निकले। इन के बाक़ी पचास जांबाज़ बाहर खड़े थे। ख़ालिद(र०) ने इन्हें अन्दर बुलाया और कहा के वो दरवाज़े के बाहर फैल कर मुक़ाबले के लिए तैयार रहें। रोमी फौज आ रही है। इस के साथ ही इस दरवाज़े के सामने जो दस्ते थे इन्हें ख़ालिद(र०) तैयारी का हुक्म दे आए थे, और ये हुक्म भी के दरवाज़ा खुलते ही तूफान की तरह दरवाज़े में दाख़िल हो जाएं।

दरवाज़ा खुलते ही ये दस्ते तूफान की तरह दरवाज़े में दाख़िल होने लगे। चांद अब और ऊपर आ गया था। अपने पराए की पहचान में सहूलत पैदा हो गई थी। उधर

से रोमी फौज का एक दस्ता बाबुलशिर्क की तरफ आ रहा था। ये मुसलमानों की तूफानी लपेट में आ गया और ज़रा सी देर में ये दस्ता लाशों में तबदील हो गया।

दमिश्क़ की ताम तर रोमी फौज फसील की तरफ दौड़ी और जिन दस्तों को जिन दरवाज़ों की ज़िम्मदारी दी गई थी वो तक़सीम हो कर उन दरवाज़ों के सामने चले गए। सारे शहर में भगदड़ मच गई। शहरी पहले ही डरे हुए थे। वो भाग नहीं सकते थे। दरवाज़े बंद थे। वो अपनी क़ीमती चीज़ें इधर उधर छिपा रहे थे। और तों का ये आलम था के चीख़ती चिल्लती थीं।

"हमारे आदमी बे ग़ैरत हैं।"-औरतों की चीख़ नुमा आवाज़ें सुनाई देने लगीं-"हमारे आदमी हमें मुसलमानों से नहीं बचा सकते...हमारे आदमी बुज़दिल हैं। अपनी जानें बचाते फिर रहे हैं।"

औरतों की इस ताना ज़नी ने दमिश्क़ के जवानों को गरमा दिया। वो तलवारें और बरछियाँ ले कर निकल आए। इस तरह रोमी फौज को सहारा मिल गया लेकिन ख़ालिद(र०) के दस्ते रोमियों पर हावी हो चुके थे। मुसलमान मुहासरे से तंग आए हुए थे। वो दमिश्क़ को फतह करने के लिए क़हर और ग़ज़ब से लड़ रहे थे।

❁

तक़रीबन तमाम मोअररिख़ों ने लिखा है के ख़ालिद(र०) ने ऐसा दानिस्ता तौर पर किया था या उन के पास इतना वक़्त नहीं था के उन्होंने दूसरे दरवाज़ों पर जो सालार मुतइय्यन किए थे इन्हें न बताया के आज रात वो क्या करने वाले हैं। ख़ालिद(र०) ने अबु उबैदा(र०) तक को इत्तेला न दी के वो बहुत बड़ा ख़तरा मोल ले रहे हैं। किसी भी तारीख़ में इस सवाल का जवाब नहीं मिलता के ख़ालिद(र०) ने ऐसी ग़ल्ती क्यों की थी।

अबु उबैदा(र०) वहां से बहुत दूर थे। उन्होंने शहर में शौर सुना तो कहने लगे के रोमियों ने किसी दरवाज़े से बाहर जा कर उस दरवाज़े वाले मुसलमान दस्तों पर हमला किया है। रोमी ऐसे हमले पहले भी कर चुके थे। दूसरे दरवाज़ों वाले मुसलमान सालार भी गलत फहमी में रहे। ख़ालिद(र०) शहर के अन्दर इतने उलझ गए थे के दूसरे सालारों को अन्दर न बुला सके। उन्होंने शायद ये भी सोचा होगा के दूसरे सालार दरवाज़ों के बाहर अपने दस्तों को तैयार रखें ताके रोमी फौज किसी दरवाज़े से भाग न सके।

ये भी ज़हन में रखें के मुसलमान दस्ते शहर की फसील और दरवाज़ों के क़रीब नहीं थे। वो फसील से कम अज़ कम एक एक मील दूर थे। क़रीब हो कर वो तीरों की ज़द में आते थे। इतनी दूर से वो शहर के अन्दर का शौर अच्छी तरह नहीं सुन सकते थे।

तूमा को जब इत्तेला मिली के मुसलमान शहर में दाखि़ल हो गए है। तो उस ने अपने मुशीरों को बुलाया।

"कौन कौन से दरवाज़े से मुसलमान अन्दर आए हैं?" -तूमा ने पूछा।

"सिर्फ एक दरवाज़े से!"-उसे किसी ने जवाब दिया-"शिर्की दरवाज़े से। बाक़ी सब दरवाज़े बंद है। "

"क्या किसी ने फसील पर जा कर देखा है?" -तूमा ने पूछा-"क्या मुसलमानों की बाक़ी फौज भी क़रीब आ गई है?"

"देखा है" -उसे जवाब मिला- "उन के बाक़ी दस्ते जहां पहले थे वही है। "

"बाबे जाबिया को देखा है?" -तूमा ने पूछा-"क्या अबु उबैदा(र०) के दस्ते भी आगे नही आए?"

"नही" -उसे बताया गया- "वो दस्ते भी आगे नहीं आए....ये सिर्फ इन के सिपह सलार ख़ालिद(र०) इब्ने वलीद के दस्ते हैं। "

तूमा के मुशीर और सालार आ गए।

"हम शहर को नहीं बचा सकेंगे। "-तूमा ने इन से कहा-"मुझे अभी तक किसी ने नही बताया के मुसलमानों ने दरवाज़ा खोल किस तरह लिया है। इन्हें अन्दर से कोई मदद नही मिल सकती थी। "

"क्या फायदा ये सोचने का के मुसलमान शहर में किस तरह दाखि़ल हो गए हैं" -एक मुशीर ने कहा- "वो अन्दर आ गए हैं अब ये सोचना है के क्या किया जाए। "

"उसी मंसूबे पर अम्ल किया जाए जो हम ने पहले सोचा था "-एक और मुशीर ने कहा-"अबु उबैदा(र०) को सुलह का पैग़ाम भेजें। "

इस मसले पर कुछ तबादला-ए-ख्यालात होता रहा, आखि़र तय पाया के अबु उबैदा(र०) की तरफ एक ऐल्ची भेजा जाए।

"और मैं ने जो दस्ते महफूज़ रखे हुए हैं इन्हें उधर भेज दिया जाए जिधर मुसलमान अन्दर आ गए हैं" -तूमा ने हुक्म दिया-"इन्हें मेरा पैग़ाम दिया जाए के दमिश्क़ शहर की नही बल्कि सल्तनते रोम की आबरू और आन उन के हाथ में है। वो जानें कुर्बान कर दें और मुसलमानों के सालार इब्ने वलीद को ज़िन्दा या मुर्दा मेरे पास ले के आएं। "

हैनरी सिम्थ, अबु सईद, वाक़दी और तिबरी ने लिखा है के तूमा ज़हनी तौर पर हथियार डाल चुका था। वो अपने महफूज़ा के दस्तों को इस लिए शहर की लड़ाई में झोंक रहा था के ख़ालिद(र०) को अपने फरैब काराना मंसूबे की कामयाबी तक रोका जा सके। उस के यहूदी और इसाई मुशीर मामली दिमाग़ों के आदमी नही थे।

रात गुज़रती जा रही थी और शहर के अन्दर की लड़ाई बढ़ती जा रही थी। अब गलियों में लड़ाई हो रही थी। पल्ला ख़ालिद(र०) के दस्तों का भारी था। रोमियों के महफूज़ा के दस्तों ने ख़ालिद(र०) के लिए मुश्किल पैदा कर दी लेकिन ख़ालिद(र०) हिम्मत हारने वाले नही थे। उन के आगे बढ़ने की रफ्तार कम हो गई थी।

उधर अबु उबैदा(र०) फज्र की नमाज़ पढ़ चुके तो इन्हें बताया गया के रोमी सिपह सालार के दो ऐल्ची आए है। अबु उबैदा(र०) ने उन्हें बुला लिया।

"क्या तुम्हारे सालार के अभी होश ठिकाने नहीं आए?–अबु उबैदा(र०) ने एल्चियों से कहा–"कहो, तुम क्यों आए हो?"

"सिपह सालार तूमा का पैग़ाम लाए हैं"–एक ऐल्ची ने कहा।

"जब तक हथियार नही डालोगे मैं सुलह के लिए तैयार नही हो सकता"–अबु उबैदा(र०) ने कहा।

"ऐ अरब के रहम दिल सालार!"–दूसरे ऐल्ची ने कहा–"हम लड़ाई और खूंरेज़ी ख़त्म करने आए हैं। सिपह सालार तूमा ने हमें पैग़ाम दिया है के वो हथियार डालने पर रज़ामंद हैं हम सिर्फ ये चाहते हैं के हमें शहर से निकल जाने दिया जाए, शहर में लूट मार न हो, किसी को क़त्ल न किया जाए, हर शहरी और फौजी अपने साथ अपना जो माल व अमवाल ले जा सकता है ले जाने की इजाज़त दी जाए।"

"हम नाहक़ खून बहाने नहीं आए ऐ रोमियों!"–अबु उबैदा(र०) ने कहा–"खुदा की क़सम, मैं अपने उन साथियों का खून तुम्हें माफ नहीं कर सकता जो तुम ने बहाया है।"

"शहंशाहे हरकुल के दामाद सिपह सालार तूमा ने कहा है के हम तावान अदा करेंगे"–एक ऐल्ची ने कहा–"आप इसे शायद जज़िया कहते हैं। या जो कुछ भी कहते हैं।"

"हमारा शहंशाह अल्लाह है"–अबु उबैदा(र०) ने कहा–"तुम ने हरकुल को इस तरह शहंशाह कहा है जैसे वो हमारा भी शहंशाह हो और वो हमें ख़ैरात दे रहा हो।"

"हरकुल हथियार डाल देगा तो भी हम उसे शहंशाह ही कहेंगे"–ऐल्ची ने कहा–"हम उस के नौकर हैं और उस का हुक्म बजा लाते हैं....क्या आप हम पर और दमिश्क़ की और तों और बच्चें पर रहम नही करेंगे?"

"ऐ सालारे मदीना!"–दूसरे ऐल्ची ने कहा–"दमिश्क़ के शहरी तो लड़ना ही नही चाहते थे वो तो बहुत पहले से सिपह सालार तूमा को कह रहे थे के मदीने वालों के

साथ सुलह कर लो। अगर इस्लाम के मुताल्लिक़ हम ने जो सुना है वो दुरूस्त है तो आप को ज़्यादा नही सोचना चाहिए।"

"खुदा की क़सम!" अबु उबैदा(र०) ने कहा-"तुम मेरे सिपह सालार खालिद(र०) बिन वलीद के पास जाते तो वो भी वही कहता जो मैं कहूंगा। हमारे आगे जो झुक जाता है और हम से जो सुलह की भीख़ मांगता है उसे हम बख़्श देते हैं के इस्लाम का हुक्म यही है। अगर कोई आखिर दम तक लड़े और हम बज़ोरे शमशीर उस से हथियार डलवाऐं तो फिर हम उसे रहम के क़ाबिल नहीं समझते।"

उस वक़्त ख़ालिद(र०) शहर के मशरिक़ी हिस्से में लड़ रहे थे और वो रोमी फौजियों का और उन शहरी जवानो का जो अपनी फौज के दोश बदोश लड़ रहे थे, सफाया करते चले जा रहे थे। रोमियों की फौज दूसरे दरवाज़ों के आगे भी चली गई थी। इस तरह ये फौज तक़सीम हो कर कमज़ोर हो गई थी। इस से ख़ालिद(र०) ने बहुत फायदा उठाया।

उधर बाबे जाबिया खुल गया और अबु उबैदा(र०) अपने दस्तों के साथ तूमा के ऐलचियों की रहनुमाई में शहर में दाख़िल हुए। तूमा ने तीन और दरवाज़े खोल कर ऐलान कर दिया के सुलह हो गई है और रोमी दमिश्क़ से जा रहे हैं। मुहाएदा हो गया है के लूट मार नहीं होगी। मुसलमान किसी शहरी को क़त्ल नहीं करेंगे और किसी और त को मुसलमान अपने कब्ज़े में नही लेंगे।

गुरूबे आफताब में कुछ वक़्त अभी बाक़ी था जब अबु उबैदा(र०) शहर में दाख़िल हुए थे। खुद तूमा ने आगे बढ़ कर अबु उबैदा(र०) का इस्तक़बाल किया। तूमा के साथ उस का एक सलार हरबीस भी था। दमिश्क़ का बड़ा पादरी भी था।

"ऐ रामियो!"-अबु उबैदा(र०) ने तूमा और हरबीस से कहा-"तुम खुश क़िस्मत हो के तुम ने खुद ही शहर हमारे हवाले कर दिया है। इस से तुम ने अपने आप को, अपनी फौज और शहरियों को बहुत बड़ी ज़िल्लत से बचा लिया है, और तुम ने अपने माल व अमवाल को भी बचा लिया है...और ये शोर कैसा है? क्या कही लड़ाई हो रही है?"

"लोग सुलह की खुशी में शोर व गुल मचा रहे हैं" तूमा ने झूट बोला-"वो देखें। मेरी फौज दीवार के साथ खड़ी है। सब के हथियार ज़मीन पर पड़े हैं।"

उस वक़्त ख़ालिद(र०) शहर के उस हिस्से पर ग़ालिब आ चुके थे जिस में रोमी फौज के दो तीन दस्तों ने उनका मुक़ाबला किया था। अब ख़ालिद(र०) बच बच कर आगे बढ़ रहे थे। वो हैरान थे के शहर की बाक़ी फौज उन के मुक़ाबले के लिए क्यों नही आ रही? इसे ख़ालिद(र०) फंदा समझ रहे थे, इसी ख़तरे के पेशे नज़र वो मोहतात हो

कर आगे बढ़ रहे थे। बाहर से उन का राब्ता टूट गया था। इन्हें ऐसी तवक्को नही थी के दरवाज़े खुल जाऐंगे और उन की बाक़ी फौज भी अन्दर आजाएगी। ख़ालिद(र०) अपने आप को बड़ी ही ख़तरनाक सूरते हाल में फंसा हुआ महसूस कर रहे थे।

❋

दमिश्क़ के वस्ती हिस्से में शहर का बड़ा गिरजा था जो कलिसाए मरीयम कहलाता था। अबु उबैदा(र०) को वहां ले जाया जा रहा था। वो गिरजे के क़रीब पहुंचे ही थे के ख़ालिद(र०) अपने मुहाफिज़ों के साथ इधर आ निकले। उन्होंने अबु उबैदा(र०) को ऐसे पुरअम्न अंदाज़ से तूमा वग़ैरा के साथ देखा के उन की तलवारें नियामों में थी तो ख़ालिद(र०) बिन वलीद परेशान हो गए।

अबु उबैदा(र०) ने ख़ालिद(र०) और उन के मुहाफिज़ों को देखा। ख़ालिद(र०) के हाथ में तलवार और ढाल थी। तलवार खून से लाल थी। दस्ते तक खून गया हुआ था। ख़ालिद(र०) पसीने में नहाए हुए थे और उन के कपड़ों पर खून के बे शुमार छींटे और धब्बे थे। इन का सांस फूला हुआ था। ख़ालिद(र०) के मुहाफिज़ों की भी हालत वैसी ही थी। इस में कोई शक नहीं था के ख़ालिद(र०) लड़ते हुए यहां तक पहुंचे है। मुहाफिज़ों के पास बरछियां थीं जिन अन्नियां जैसे खून से निकाली गई थी।

ख़ालिद(र०) और अबु उबैदा(र०) एक दूसरे को हैरत ज़दगी के आलम में देखते रहे।

"अबु सुलेमान!"–अबु उबैदा(र०) ने आख़िर सकूत तोड़ा और ख़ालिद(र०) से कहा–"क्या तू अल्लाह का शुक्र अदा नहीं करेगा के उस की ज़ाते बारी ने ये शहार हमें अता कर दिया है? अल्लाह ने सुलह मंजूर करने की सआदत मुझे अता फरमाई है। इन लोगों ने बग़ैर लड़े मेरे आगे हथियार डाल दिए हैं फिर तू क्यों खून टपकाती तलवार अपने हाथ में लिए फिरता है! मैं ने इन्हें शहार से अपने माल अमवाल ले जाने की इजाज़त दे दी है।"

"अबु उबैदा!"– ख़ालिद(र०) ने कहा–"कोन सी सुलह की बात करते हो? क्या तू देख नही रहा के मैं ने लड़ कर ये शहर हासिल किया है? खुदा की क़सम, रोमियों ने मुझे अमन और सुलह का पैग़ाम दे कर अन्दर नही बुलाया। मेरे लिए उन्होंने दरवाज़ नही खोला था। मैं खुद शहर में दाख़िल हुआ हूं। मैं ने खून बहाया है और मेरे आदमियों का खून बहाया गया है। मैं रोमियों को ये हक़ नहीं दे सकता के ये ख़ेर व आफियत से शहर से निकल जाऐं। इन के शहर का ख़ज़ाना और जो कुछ भी शहर में है वो हमारा माले ग़नीमत है....और मैं नहीं समझ सका के ये सुलह किस ने की और क्यों की है।"

"अबु सुलेमान!"–अबु उबैदा(र०) ने कहा–"मैं और मेरे दस्ते पुरअम्न तरीक़े से शहर में दाख़िल हुए है।। देख, शहर के दरवाज़े खुल गए हैं। अगर तू मेरे फैसले को रद करना चाहे तो कर दे लेकिन ये सोच के मै दुश्मन के हथियार डालने पर इसे बख़्शिश का वादा दे चुका हुं। अगर ये वादा पूरा न हुआ तो रोमी कहेंगे के मुसलमान वादों के कच्चे है। इस की ज़द इस्लाम पर भी पड़ेगी।"

ख़ालिद(र०) की हालत ये थी के गुस्से से इन के होंट कांप रहे थे। वो बर्दाश्त नही कर सकते थे के सालारे आला वो हों और सुलह के मुहाएदे कोई और करता फिरे। अबु उबैदा(र०) अपनी बात पर इस तरह अड़े हुए थे के इन्हें परवाह ही नही थी के ख़ालिद(र०) ख़लीफा की तरफ से सालारे आला मुक़र्रर किए गए हैं। तूमा, उस का नायब सालार हरबीस, पादरी और मुशीर वग़ैरा खड़े तमाशा देख रहे थे। इन्हें अपनी चाल कामयाब होती नज़र आ रही थी, बल्कि चाल ज़रूरत से ज़्यादा कामयाब हो रही थी। वो इस तरह के मुसलमानों का सिपह सालार और उस का क़ायम मुक़ाम सालार आपस में लड़ने पर आ गए थे।

अबु उबैदा(र०) की जगह कोई और सालार होता तो ख़ालिद(र०) उसे सालारी से माज़ूल कर के सिपाही बना देते या उसे वापस मदीना भेज देते लेकिन वो अबु उबैदा(र०) थे जिन्हें रसूले अकरम(स०) ने अमीनुलउम्मत का ख़िताब दिया था। इन्हें असरम भी कहते थे क्यों इन के सामने के दांत ओहद की जंग में शहीद हुए थे। मशहूर मोअरिख़ इब्ने क़तीबा और वाक़दी ने लिखा है के रसूल अल्लाह(स०) को अबु उबैदा(र०) से ख़ास मोहब्बत थी। ये भी लिखा गया है के अबु उबैदा(र०) बग़ैर दांतों के दांतों वालों से ज़्यादा खूबरू लगते थे। उन का ज़हद और तक़वा ज़र्बुलमिस्ल था। खलीफातुलमुस्लेमीन अबुबकर(र०) इन का बहुत अहतराम करते थे और मुजाहेदीन उन के इशारे पर जानें कुर्बान करने को तैयार रहते थे। ख़ालिद(र०) के दिल में अबु उबैदा(र०) का इतना अहतराम था के मैदने जंग में दोनों की पहली मुलाक़ात हुई तो ख़ालिद(र०) घोड़े पर सवार नही थे। अबु उबैदा(र०) घोड़े पर सवार थे। ख़ालिद(र०) चूंके सालारे आला थे इस लिए अबु उबैदा(र०) ने उतर कर ख़ालिद(र०) से मिलना चाहा लेकिन ख़ालिद(र०) ने इन्हें रोक दिया और कहा के मेरे दिल में अपने अहतराम को क़ायम रखें।

वो अबु उबैदा(र०) अब ख़ालिद(र०) से पूछे बग़ैर दुश्मन के मुताल्लिक़ बड़ा अहम फैसला कर बैठे और उसे बदलने पर आमादा नही हो रहे थे। अबु उबैदा(र०) अशरा बश्शरा में से भी थे। अबु उबैदा(र०) की तमाम खूबियों और इस्लामी मुआशरे मे उन की क़द्र व मंज़िलत को तस्लीम करते हुए उस दौर के वक़ाए निगार और

मोअररि़ख़ लिखते हैं के जंगी उमूर की जो सूझ बूझ ख़ालिद(र०) में थी वो अबु उबैदा(र०) में नही थी। वो बारीकियों को नही समझते थे। अल्बत्ता हर्ब व ज़र्ब में महारत रखते थे।

"मै तुझे अमीर मानता हूं अबु सुलेमान!-अबु उबैदा(र०) ने कहा-"लेकिन ये सोच के मै अपने दस्तों के साथ पुर अम्न तरीक़े से शहर में लाया गया हूं।"

"इब्ने जर्राह!-ख़ालिद(र०) ने कहा-"आ तुझे दिखाऊं के मैं किस तरह शहर मे दाखि़ल हुआ हूं और रात से अब तक मुझे कैसी लड़ाई लड़नी पड़ी है। इन रोमियों ने देखा के ये लड़ नही सकते और मै शहर की ईंट से ईंट बजा दूंगा तो ये तेरे पास जा पहुंचे। मै इन्हें माफ नही करूंगा।"

"अबु सुलेमान"-अबु उबैदा(र०) ने दबदबे से कहा-"क्या तू अल्लाह से नही डरता? मैं ने इन्हें अपनी पनाह मे ले लिया है। इन से हिफाज़त का वादा कर चुका हूं।"

लेकिन ख़ालिद(र०) अबु उबैदा(र०) की बात मानने पर आमादा नही थे।

"आह अबु सुलेमान"-अबु उबैदा(र०) ने अफसोस के लहजे में कहा-"मैं ने जब इन की शर्तें सुन कर इन्हें हिफाज़त का वादा दिया था, उस वक्त मुझे गुमान तक न हुआ था के तू मेरे फैसले पर ऐतराज़ करेगा। मैं ये भी नहीं जानता था के तू लड़ रहा है। मैं ने अपने अल्लाह और रसूले करीम(स०) के अहकाम के मुताबिक़ और इन्ही के नाम पर रामियों को बख़्श दिया है....समझ ले अबु सुलेमान, मेरी बात समझ ले। मुझे बदअहदी का अरतकाब न करने दे।"

दोनों के दरमियान बहस चलती रही। ख़ालिद(र०) के मुहाफिज़ों को भी गुस्सा आ गया। वो तलवारें सूंत कर तूमा और उस के साथियों पर झपटे। वो इन्हें क़त्ल कर देना चाहते थे। इन्हें किसी तरह शक हो गया था के ये रोमियों की चाल है जो दो सालारों को लड़ा रही है। मुहाफिज़ों ने तूमा वग़ैरा पर हल्ला बोला तो अबु उबैदा(र०) दौड़ कर उन के आगे हो गए।

"ख़बरदार!"-अबु उबैदा(र०) ने कहा-"पहले कुछ फैसला होने दो। ये अभी मेरी पनाह में हैं, और तुम्हें जब तक हुक्म नही मिलता तुम कोई हरकत नही कर सकते।"

ख़ालिद(र०) ने अबु उबैदा(र०) के इस हुक्म को भी बर्दाश्त किया। ख़ालिद(र०) की मौजूदगी में अबु उबैदा(र०) कोई हुक्म नहीं दे सकते थे। ये सूरते हाल मुसलमानों के लिए अच्छी नही थी। एक ग़ल्ती तो ख़ालिद(र०) से हुई थी के कमंद फैंक कर शहर में दाखि़ल होने जैसा ख़तरनाक काम कर रहे थे मगर अबु उबैदा(र०) को इत्तेला न दी, हालांके वो ख़ालिद(र०) के क़ायम मुक़ाम सालार थे। ख़ालिद(र०) ने तो

उन सालारों में से भी किसी को न बताया जो शहर के दूसरे दरवाज़ों के सामने अपने दस्तों के साथ मौजूद थे। इस के बाद गल्ती अबु उबैदा(र०) की थी जिन्हों ने वो फैसला किया जो सिर्फ सलारे आला को करना चाहिए था।

ख़ालिद(र०) और अबु उबैदा(र०) के दरमियान ये झगड़ा उन की अना का मसला बन कर कोई नागवार सूरत इख़्तियार कर सकता था लेकिन ये उस दौर का वाक़ेया है जब मुसलमान आपस के किसी झगड़े को ज़ाती मसला नही बनाया करते थे और उन के हाकिम अपने आप को आज कल के हाकिमों की तरह नही समझा करते थे। ख़ालिद(र०) ने दूसरे सालारों को बुलाया। उस वक़्त तक दूसरे दस्ते भी शहर में आ चुके थे। सालार जब ख़ालिद(र०) के पास आए तो ख़ालिद(र०) ने अपना और अबु उबैदा(र०) का झगड़ा उन के आगे रख दिया।

"इब्ने वलीद !"-सालारों ने आपस में बहस मुबाहेसा कर के ख़ालिद(र०) से कहा-"अबु उबैदा(र०) को ऐसा नही करना चाहिए था लेकिन वो जो फैसला कर चुके है हमें इसी पर अमल करना चाहिए, वरना ये ख़बर दूर दूर तक फैल जाएगी के मुसलमान धोके बाज़ है, सुलह और आम माफी का वादा करते हैं फिर लूट मार और क़त्ले आम करते है।"

"इब्ने वलीद !"-सालार शरजील(र०) बिन हस्ना ने कहा-"हम ने पहले देखा है के बाज़ शहर हमें मज़ाहमत के बग़ैर मिल गए थे। इस की वजह ये थी के इन शहरों में हमारी वहां आमद से आगे आगे ये खबर मशहूर हो गई थी के मुसलमानों की शर्तें सख़्त नहीं होतीं और अपनी शर्तों पर क़ायम रहते है। और रहमदिली से हर किसी से पेश आते हें.....इब्ने वलीद ! हमें इस रिवायत को बरक़रार रखना चाहिए वरना फिर कोई शहर हमें आसानी से नही मिलेगा।"

"खुदा की क़सम !"-ख़ालिद(र०) ने गुस्से को दबाते हुए कहा-"तुम सब ने मुझे मजबूर कर दिया है।"

रोमी सालार तूमा और हरबीस ज़रा दूर खड़े अपनी क़िस्मत के फैसले का इन्तेज़ार कर रहे थे। ख़ालिद (र०)ने उन की तरफ देखा तो गुस्सा फिर तेज़ हो गया।

"मैं तुम सब का फैसला कुबूल करता हूं"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"लेकिन इन दोनों रोमी सालारों को नही छोड़ूंगा। मैं इन्हें ज़िन्दा रहने का हक़ नहीं दे सकता।"

"तुझ पर अल्लाह की रहमत हो वलीद के बेटे!"-अबु उबैदा(र०) ने कहा-"इन्ही दोनों के साथ तो मेरा मुहाएदा हुआ है और इन्ही को मैं ने हिफाज़त की ज़मानत दी है। मेरे फैसले को तूने कुबूल कर ही लिया है तो इन दोनो को भी जाने दे।"

"तेरे अहद ने इन्हें मेरे हाथ से बचा लिया है"-ख़ालिद(र०) ने ग़ज़ब नाक

आवाज़ में कहा- "लेकिन ये दोनों अल्लाह की लानत से नही बच सकेंगे।"

एक और मोअररिख़ बलाज़ी ने लिखा है के तूमा और हरबीस के पास एक आदमी खड़ा था जो अरबी ज़बान समझता और बोलता था। वो मुसलमान सालारों की बातें सुन कर तूमा और हरबीस को रोमी ज़बान मे सुनाता जा रहा था। आख़िर इन्हें आम माफी के फैसले से आगाह किया गया।

"आप सब ने हम पर अहसान किया है"-तूमा ने ख़ालिद(र०) और अबु उबैदा(र०) का शुक्रया अदा किया और कहा-"हमें इजाज़त दी जाए के अपनी मंज़िल तक हम अपनी पसंद के रास्ते से जा सकेंगे।"

अबु उबैदा(र०) ने ख़ालिद(र०) की तरफ देखा के वो जवाब देंगे लेकिन ख़ालिद(र०) ने मुंह फैर लिया।

"तुम्हें इजाज़त है"-अबु उबैदा(र०) ने तूमा को जवाब दिया-"जिस रास्ते पर चाहो जा सकते हो लेकिन ये भी सुन लो। तुम जहां रूकोगे या जहां क़याम करोगे, अगर हम ने उस जगह पर क़ब्ज़ा कर लिया तो हम से अपनी हिफाज़त की तवक़्क़ो न रखना। तुम्हारे साथ जो मुहाएदा किया जा रहा है ये सिर्फ उस मुक़ाम तक है जहां तुम जा रहे हो। ये दोस्ती का मुहाएदा नहीं।"

"अगर मुहाएदा आरज़ी है तो मेरी एक दरख्वास्त और है"-तूमा ने कहा-"हमें तीन दिनों की मोहलत दी जाए के हम अपनी मंज़िल पर पहुंच जाऐं। तीन दिनों बाद हम मुहाएदे को ख़त्म समझेंगे।"

"फिर हम तुम्हारे साथ जो सुलूक करना चाहेंगे करेंगे"-ख़ालिद(र०) गरज कर बोले।

"आप हमें क़त्ल कर सकते हैं"-तूमा ने कहा-"हमें पकड़ कर अपना गुलाम बना सकते हैं।"

"ये भी मंजूर है"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"तीन दिनों में ही कहीं ग़ायब हो जाना। वहां तक चले जाने की कोशिश करना जहां तक मैं न पहुंच सकूं....अब एक शर्त मेरी भी सुन लो....तुम अपने साथ चन्द दिनों के खाने पीने का सामान ले जा सकोगे। इस से ज़्यादा तुम कुछ नहीं ले जा सकोगे। कौई आदमी हथियार ले कर नही जाएगा।"

"नही अबु सुलेमान!"-अबु उबैदा(र०) ने ख़ालिद(र०) से कहा-"तेरी ये शर्तें उस मुहाएदे के खिलाफ हैं जो मैं ने इन के साथ किया है। ये अपना माल व अस्बाब और जो कुछ ये ले जा सकते हैं ले जाऐं। मैं इन्हें ये हक़ दे चुका हूं।"

ख़ालिद(र०) ने गुज़िश्ता रात को अपने आप को ज़िन्दगी के सब से बड़े ख़तरे में डाला था के दीवार पर कमंद फैंक कर ऊपर चले गए थे। अब अबु उबैदा(र०) ने

ख़ालिद(र०) को एक और बड़े ही सख़्त इम्तेहान में डाल दिया था। ख़ालिद(र०) रोमियों पर अपनी कोई न कोई शर्त आइद करना चाहते थे मगर अबु उबैदा(र०) उन की हर शर्त को ये कह कर रद कर देते थे के तूमा के साथ वो कुछ और मुहाएदा कर चुके हैं। ख़ालिद(र०) को बार बार अपने गुस्से को दबाना पड़ता था। ये काम बहुत मुश्किल था।

"ले जाएें"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"जो कुछ उठा सकते है ले जाए लेकिन इन में कोई भी कोई हथियार अपने साथ नही ले जाएगा।"

"हम पर ये जुल्म न करें"-तूमा ने कहा-"हम लम्बे सफर पर जा रहे हैं। रास्ते में ोई और दुश्मन हम पर हमला कर सकता हे। हमें निहत्था देख कर डाकू ही हमें लूट लेंगे। अगर आप हमें निहत्था यहां से निकालना चाहते हैं तो हमें यही रहने दें और हमारे साथ जैसा सुलक चाहें करें। एक तरफ आप की नेकियों इतनी हैं के इन का शुमार नही मगर आप का ये हुक्म हमारे क़त्ल के बराबर है के हम निहत्थे जाऐं।"

ख़ालिद(र०) कुछ देर तूमा के मुंह की तरफ देखते रहे। उन का चहरा बता रहा था के वो अपने ऊपर जब्र कर रहे हैं।

"ऐ रोमी सालार!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"तू खुश क़िस्मत है के सुलह के लिए तू मेरे पास नही आ गया था ....मैं तुझे हथियार अपने साथ ले जाने की भी इजाज़त दे देता हूं लेकिन शर्त ये है के हर शख़्स जिस में तू भी शामिल है, सिर्फ एक हथियार ले जा सकता है। एक तलवार या एक बरछी या एक कमान और एक तरकश या एक बरछी या एक खंजर।"

इस के बाद मुहाएदा लिखा गया जिस के अल्फाज़ ये थे:

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। सालारे आला असाकरे मदीना ख़ालिद बिन वलीद की तरफ से दमिश्क़ के बाशिंदगान के साथ ये मुहाएदा हुआ है। मुसलमान शहर दमिश्क़ में दाख़िल होंगे वो इस के ज़िम्मेदार होंगे के शहर के लोगों के जान व माल का, उन की अमलाक का, उन की इज़्ज़त व आबरू का तहाफ्फुज़ करें। इस में उन की इबादत गाहों और शहर की फसील का तहाफ्फुज़ भी शामिल है। इन्हें अल्लाह और रसूल(स०) और तमाम तर मोमेनीन और खलीफातुल मुस्लेमीन की तरफ से ज़मानत दी जाती है। इन के साथ मुसलमान रहमदिली और हमदर्दी का सुलूक उस वक़्त तक जारी रखेंगे जब तक अहले दमिश्क़ जज़िया देते रहेंगे।"

जज़िया की रक़म एक दीनार फीकस मुक़र्रर हुई और कुछ मिक़दार अनाज वग़ैरा की मुक़र्रर हुई जो अहले दमिश्क़ ने मुसलमानों को देनी थी।

❁

वो मंज़र मुजाहेदीन के लिए बड़ा ही तकलीफदह था जब रोमी फौज दमिश्क़ से रवाना हुई। जो शहरी दमिश्क़ में नही रहना चाहते थे वो फौज के साथ जा रहे थे। उन की फौज ने शहरियों को अपने हिसार में ले रखा था जैसे मुसलमान इन पर टूट पड़ेंगे। रोमी सिपह सालार तूमा भी जा रहा था। उस की उस आंख पर पट्टी बंधी हुई थी जिस में तीर का टुकड़ा अभी तक मौजूद था। उस के साथ उस की बीवी थी जो शहंशाहे रोम हरकुल की बेटी थी। उस वक़्त की वो बहुत ही हसीन और जवान और त थी। शाही माल व असबाब बे शुमार घोड़ा गाड़ियों में जा रहा था। ज़ाहिर है इन गाड़ियों में ख़ज़ाना भी जा रहा था।

दमिश्क़ के वो बाशिंदे जिन्होंने दमिश्क़ में रहना पसंद नही किया था वो अपना माल व मताअ घोड़ा गाड़ियों और रेड़ियों पर ले जा रहे थे। जिन्हें ख़च्चर खींच रहे थे। इन में मंडी का माल और तिजारती सामान भी जा रहा था। मोअर्रिख़ बलाज़ी और वाक़दी लिखते हैं के सोने चांदी के बाद जो बेश क़ीमत सामान जा रहा था वो बड़े उम्दा ज़रबफ़्त की तीन सौ से कुछ ज़ाइद गांठें थीं। एक मोअर्रिख़ ने लिखा है के ये हरकुल की थीं और बाज़ ने लिखा है के ये मंडी का माल था। लोग दूध वाले मवेशी भी साथ ले जा रहे थे। मुख़्तसिर ये के दमिश्क़ से तमाम माल व दौलत जा रहा था।

ख़ालिद(र०) के मुजाहेदीन देख रहे थे। ये उन का माले ग़नीमत था जो उन का जायज़ हक़ था। ज़्यादा अफसोस उन दस्तों के मुजाहेदीन को हो रहा था जिन्होंने शहर के अन्दर जा कर बड़ी सख़्त लड़ाई लड़ी थी। इस से भी ज़्यादा अफसोस उन एक सौ जांबाज़ों को था जिन में से पचास कमंदों से दीवार पर गए थे और बाक़ी पचास दरवाज़ा खुलते ही सब से पहले अन्दर गए थे। इन सब ने लड़ कर शहर लिया था।

ख़ालिद(र०) का अपना ये हाल था के दमिश्क़ से जाने वाले माल व असबाब को देख देख कर गुस्से से उन का चेहरा सुर्ख हो गया थे। उन्होंने अपने मुजाहेदीन को देखा। उन के चेहरो पर अफसुरदगी और ग़ुस्से के तास्सुरात साफ नज़र आ रहे थे। बाज़ के तास्सुरात तो ऐसे थे जैसे वो दमिश्क़ से जाने वालों पर हल्ला बोल देंगे और अपना हक़ वसूल कर लेंगे।

मोअर्रिख़ वाक़दी और इब्ने क़ुतीबा ने लिखा है के ख़ालिद(र०) के लिए अपने गुस्से पर क़ाबू पाना मुहाल हो रहा था आख़िर उन्होंने दोनों हाथ आगे और कुछ ऊपर कर के आसमान की तरफ देखा और ज़रा ऊंची आवाज़ में कहा-"या अल्लाह! ये सामान तो तेरे मुजाहेदीन का था। ये इन्हें दे दे"-ख़ालिद(र०) की जज़्बाती हालत ठीक नही थी।

"सालार-ए-मोहतरम!"-ख़ालिद(र०) को अपने क़रीब आवाज़ सुनाई दी-"आप को दमिश्क़ मुबारक हो।"

ख़ालिद(र०) ने उधर देखा। वो यूनुस इब्ने मरक़ुस था। उसे देख कर ख़ालिद(र०) को याद आया के इस शख़्स ने उस लड़की की ख़ातिर दमिश्क़ फतह करा दिया था जिस के साथ उस की शादी हो चुकी थी लेकिन लड़की के मां बाप उसे यूनुस इब्ने मरक़ुस के साथ नही भेज रहे थे।

"इब्ने मरक़ुस!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"दमिश्क़ तुझे मुबारक हो। ये कारनामा तेरा है। तू न होता तो हम इस शहर में दाख़िल नही हो सकते थे।"

"लेकिन मैं ने जिसे हासिल करने के लिए अपने आप को ख़तरे में डाला और यहां की बादशाही ख़त्म करा दी है, वो मुझे नहीं मिली।"

"क्या उस के मां बाप यहीं हैं?"-ख़ालिद(र०) ने पूछा।

"वो चले गए हैं"-यूनुस इब्ने मरक़ुस ने जवाब दिया-"मैं लड़की से मिला था। उसे कहा के वो मां बाप को बताए बग़ैर साथ आ जाए। मेरी मोहब्बत उस की रूह में उतरी हुई है। वो फौरन तैयार हो गई लेकिन कहने लगी के मुसलमान आ गए हैं, ये मुझे अपने साथ ले जाएंगे फिर तुम क्या करोगे? मैं ने उसे कहा के मैं भी मुसलमान हूं। तुम अब महफ़ूज़ हो....

"उस ने हैरान हो कर पूछा के तुम ने ये क्यों कहा है के तुम भी मुसलमान हो? मैं ने उसे बताया के मैं मुसलमान हो चुका हूं। इतना सुनना था के वो बिल्कुल ही बदल गई। कहने लगी के अपने मज़हब में वापस आ जाओ। मैं ने इस्लाम की ख़ूबियां बयान कीं तो उस ने कहा-'अगर तुम अपने मज़हब में वापस नहीं आओगे तो मेरी मोहब्बत नफरत में बदल जाएगी'-मैं ने कहा के मोहब्बत मज़हब को नहीं देखा करती। मैं ने ये भी कहा के मैं अब मुसलमान ही रहूंगा। उस ने कहा-'मैं क़सम खाती हूं के आज के बाद तुम्हारी शक्ल देखना भी गवारा नहीं करूंगी। मैं दमिश्क़ से जा रही हूं'-और वो चली गई।"

"क्या-तुम भी उस की मोहब्बत को नफरत में नही बदल सकते?"-ख़ालिद(र०) ने पूछा।

"नहीं मोहतरम सालार!"-यूनुस इब्ने मरक़ुस ने कहा-"मेरी मोहब्बत ऐसी नहीं। ये लड़की मुझे न मिली तो शायद मैं पागल हो जाऊं। मैं ने आप को एक शहर दिया है, क्या आप मुझे एक लड़की नही दिला सकते? वो मेरी बीवी है। आप ने मेरे साथ वादा किया था। आप चाहें तो अपना एक दस्ता भेज कर लड़की को ज़बरदस्ती ला सकते हैं। आप फातेह हैं।"

"इब्ने मरक़ुस!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"मुहाएदा हो चुका है। हम जाने वालों

का एक बाल भी उन से ज़बरदस्ती नही ले सकते।"

मोअररिख़ बलाज़ी ने लिखा है के यूनुस इब्ने मरक़स अक़्ल और ज़हानत के लिहाज़ से कोई मामूली आदमी नहीं था। ख़ालिद(र०) उस से मुतासिस्र थे और ख़ालिद(र०) इस के अहसान मंद भी थे। दमिश्क़ की फतह इस यूनानी जवान के बग़ैर अगर ना मुमकिन नही तो बे हद मुश्किल ज़रूर थी। ख़ालिद(र०) को ये शख़्स इस लिए भी अच्छा लगता था के उस ने इस्लाम कुबूल कर लिया था और जिस लड़की की मोहब्बत उसे पागल किए हुए थी, उस के कहने पर भी उस ने इस्लाम तर्क नहीं किया था।

"मै ने सुना है"-यूनुस इब्ने मरक़स ने कहा-"के आप ने दमिश्क़ से जाने वालों को तीन दिनों के लिए तहाफ्फुज़ का वादा किया है। क्या इन तीन दिनों के दौरान आप इन लोगों का तआक्कुब कर के इन पर हमला नहीं कर सकते?"

"नही इब्ने मरक़स!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"ये मुहाएदे के खिलाफ है।"

"तीन रोज़ गुज़र जाने के बाद तो आप उन पर हमला कर सकते हैं"-यूनुस इब्ने मरक़स ने कहा।

"तीन दिनों में तो ये बहुत दूर पहुंच चुके होंगे"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"ये क़ाफला बहुत तेज़ जाएगा क्योंके इस के पास खज़ाना है और बहुत क़ीमती माल भी है। रास्ते में रोमियों के क़िले आते हैं। वो किसी क़िले में जा पनाह लेंगे। मैं किसी क़िले पर इतनी जल्दी हमला नहीं कर सकूंगा।"

"ऐ इस्लाम के अज़ीम सालार!"-यूनुस इब्ने मरक़स ने कहा-"ये उस रास्ते पर नहीं जा रहे जिस रास्ते पर क़िले आते हैं। मैं इन क़िलों से वाक़िफ हूं....लबलबक, हमस और *तराबलिस*....ये क़ाफला अंताकिया जा रहा है। मैं जानता हूं। क़ाफले के साथ सालार तूमा है। वो अपनी फौज और शहरियों को अंताकिया ले जा रहा है जहां उस का ससुर शहंशाह हरकुल रह रहा है। मैं तमाम इलाक़े से वाक़िफ हूं। अंताकिया तक पहुंचने के लिए तीन से बहुत ज़्यादा दिन सफर करना पड़ता है। मैं आप को ऐसी तरफ से ले जा सकता हूं जो कोई रास्ता नही। आप के घुड़ सवार तेज़ हों तो मैं चौथे दिन की सुबह तक इन्हें क़ाफले तक पहुंचा सकता हूं।"

ख़ालिद(र०) ने ये सुना तो उन की आंखें चमक उठी। यही तो वो चाहते थे। इन का इरादा ये था के मुजाहेदीन को माले ग़नीमत ज़रूर दिलाएंगे। इन्हें दमिश्क़ वालों पर ग़ुस्सा था जो दमिश्क़ से अपने माल व मताअ ले कर चले गए थे।

"मै आप की रहनुमाई करूंगा"-यूनुस इब्ने मरक़स ने कहा-"मै आप से कुछ नहीं लूंगा। मुझे सिर्फ मेरी बीवी दिला देना।

चौथे दिन की सुबह तुलू हुई तो तूमा का क़ाफला अंताकिया से अभी बहुत दूर था। तूमा को शिकस्त का अफसोस तो था ही लेकिन वो खुश था के उस की चाल कामयाब रही थी और वो दमिश्क़ के लोगों को क़ीमती अश्या समेत अपने साथ ले जा रहा था। उस रोज़ क़ाफला एक पहाड़ी सिलसिले में पड़ाव किए हुए था और कुछ देर में चलने को था। अचानक किसी तरफ से हज़ारों घुड़सवार सहराई आंधी की तरह आए और रोमियों पर टूट पड़े।

इस से ज़रा ही पहले रोमियों पर एक और क़हर टूटा था। ये बड़ी तेज़ बारिश थी। घटाऐं फट पड़ी थीं। इस रोमी क़ाफले के लिए कोई पनाह नहीं थी। ये बारिश आसमानी आफत थी और इस आफत में रोमी फौज और दमिश्क़ के बाशिंदों पर एक और आफत हज़ारों घुड़सवारों की शक्ल में टूटी। उस वक़्त तक क़ाफले वाले इधर उधर बिखर गए थे। वो अपने सामान को घसीटते फिर रहे थे। ज़रबफ्त की तीन सौ से ज़ाइद गाठें जो बड़े बड़े बंडलों की मानिंद थीं, हर तरफ बिखरी पड़ी थीं। बाज़ गाठें खुल गईं और कपड़ा खुल कर बिखर गया था।

ज़रबफ्त का कपड़ा इतना ज़्यादा बिखरा के इस जगह का नाम "मर्जुलदीबाज" यानी रेशम का ख्याबान पड़ गया। यहां जो मआरका लड़ा गया इसे तमाम मोअरिख़ों ने मआरका मर्जुलदीबाज लिखा है।

ये घुड़सवार जिन्होंने रोमियों और दमिश्क़ वालों के क़ाफले पर हमला किया था , इन की तादाद एक हज़ार थी और ये ख़ालिद(र०) के भेजे हुए सवार थे। इस हमले की तफसीलात यूं हैं के यूनुस इब्ने मरक़ुस ने जब ख़ालिद(र०) को बताया के वो इन्हें एक छोटे रास्ते से रोमियों तक पहुंचा सकता है तो ख़ालिद(र०) को रौशनी नज़र आई। यूनुस इब्ने मरक़ुस ख़ालिद(र०) को इस लिए तआक़्क़ुब और हमले पर उक्सा रहा था के वो अपनी बीवी को पकड़ कर अपने साथ लाना चाहता था लेकिन ख़ालिद(र०) कुछ और सोच रहे थे। उन्होंने अपनी फौज की मायूसी देखी थी।। दुश्मन माले ग़नीमत अपने साथ ले जा रहा था।

ख़ालिद(र०) पर पाबंदी ये आयद हो गई थी के रोमियों को तीन दिनों की मोहलत दी गई थी। इस दौरान मुसलमान इन पर हमला नहीं कर सकते थे। तीन दिनों में रोमियों को किसी न किसी पनाह में पहंच जाना था लेकिन यूनुस इब्ने मरक़ुस कहता था क़े क़ाफला अंताकिया जा रहा है और यूनुस इसे रास्ते में पकड़वा सकता है। ख़ालिद(र०) को गुस्सा और तास्सुफ परेशान कर रहा था। दुश्मन बमया माले ग़नीमत के अबु उबैदा(र०) की ग़ल्ती या ग़ल्त फहमी से हाथ से निकल गया था। यूनुस की यक़ीन

दहानी पर ख़ालिद(र०) ने हमले का पलान तैयार कर लिया।

इस पलान के मुताबिक़ ख़ालिद(र०) ने वो सवार दस्ता साथ लिया जो उन्होंने घूम फिर कर लड़ने के लिए तैयार किया था। इसे तलीआ कहते है। ये चार हज़ार मुंतखिब सवारों का दस्ता थे। ये सब शहसवार और जांबाज़ थे। इस दस्ते का गाइड यूनुस इब्ने मरक़स था। वो ख़ुश था के ख़ालिद(र०) उस की बीवी उसे दिलाने के लिए इतना बड़ा जंगी अहतमाम कर रहे है लेकिन ख़ालिद(र०) के सामने कुछ और मसला था जो ऊपर बयान किया गया है।

ख़ालिद(र०) ने इस दस्ते को चार हिस्सो में तक़सीम किया और रवाना हो गए। इन की रफ्तार बहुत तेज़ थी। ख़ालिद(र०) ने हर हिस्से के सालार को और सवारों को भी बता दिया था के जिस क़ाफले पर हमला करने जा रहे हैं इसे सिर्फ क़ाफला न समझें। वो सब मुसल्लेह हैं, उन के पास घोड़े भी हैं और वो रोमी है जो जान की बाज़ी लगा कर लड़ना जानते हैं और वो पस्पा होते हैं तो मुनज़्ज़म तरीक़ से पीछे हटते हैं, भागते नही।

❀

चौथे दिन रोमी फौज और दमिश्क़ के बाशिंदों का ये क़ाफला अंताकिया से अभी कुछ दूर था के मूस्ला धार बारिश ने इसे बिखेर दिया। जूंही बारिश ख़त्म हुई, एक हज़ार घुड़सवारों ने इन पर हमला कर दिया। रोमी ये देख कर हैरान रह गए के इन सवारों के आगे आगे ज़रार बिन लाज़ौर थे जिन्होंने हस्बे मामूल सर पर खुद भी नही रखी थी और क़मीज़ भी उतारी हुई थी। वो कमर तक बरहना थे।

मोअरिख़ लिखते हैं के रोमी सालार तूमा और हरबीस पहले तो इस पर हैरान हुए के मुसलमान किधर से आ निकले हैं। इन्हें मालूम नही था के इन्हें दमिश्क़ का ही एक गाइड मिल गया था जो इन्हें एक छोटे रास्ते से ले गया था।

"हरबीस!"–तूमा ने कहा–"सब को मुक़ाबले के लिए तैयार करो। मुसलमानों ने हमें तीन दिनों की ज़मानत दी थीं। ये तीन दिन ख़त्म हो गए हैं।"

"जम कर मुक़ाबला करो"–हरबीस ने लल्कार कर कहा–"ये बहुत थोड़े है। काट दो इन्हें।"

रोमी फौज हमला रोकने की तरतीब में हो गई। दमिश्क़ के जो शहरी लड़ सकते थे वो भी मुसलमानों के मुक़ाबले में आ गए। रोमी सिपाही और अहले दमिश्क़ बारिश से भागे हुए थे और उन का सामान बिखरा हुआ था। उन्होंने अपनी औरतों को बच्चों को पीछे कर दिया और उन के डेढ़ दो सौ आदमी तलवारें और बरछियां ले कर औरतों और बच्चों की हिफाज़त के लिए खड़े हो गए।

रोमी लल्कार कर और नारे लगा लगा कर लड़ रहे थे। ज़रार जो बरहना जंगजू के नाम से मशहूर हो गए थे अपनी रिवायत के मुताबिक़ लड़ रहे थे बल्कि जो सामने आया उसे काटते जा रहे थे लेकिन रोमी जिस बेजिग्री से लड़ रहे थे इस से यही नज़र आ रहा था के वो मुसलमान सवारों का सफाया कर देंगे।

तक़रीबन निस्फ घझटा गुज़रा होगा के एक तरफ से ख़ालिद(र०) के दस्ते के एक हज़ार मज़ीद सवार घोड़े सरपट दौड़ाते आ रहे थे। इन के सालार राफे थे। रोमी सालारों ने देखा तो उन्होंने अपनी तरतीब बदल डाली और चिल्ला चिल्ला कर कहने लगे के वो इन सवारों को भी ख़त्म कर देंगे। उन के लड़ने का अंदाज़ ही ऐसा था के वो अपने दावे को सही साबित कर सकते थे। मआरका और ज़्यदा खूंरेज़ हो गया।

निस्फ घझटा और गुज़रा होगा के मज़ीद एक हज़ार सवार शुमाल की तरफ से आए। इन के सालार ख़लीफातुलमुस्लेमीन के बेटे अब्दुर्रहमान थे। अब रोमियों के हौसले मजरूह होने लगे। ये एक हज़ार सवार जिधर से आए थे। ये रोमियों की पस्पाई का रास्ता था। उधर अंताकिया था। मुसलमानों ने ये रास्ता रोक लिया था।

अब तीन हज़ार मुसलमान सवार रोमियों पर टूट टूट पड़ते थे लेकिन रोमी और अहले दमिश्क़ पहले से ज़्यादा शिद्दत से लड़ने लगे। ये मआरका उन के लिए ज़िन्दगी और मौत का मआरका बन गया था। उन का बड़ा ही क़ीमती माल व मताअ, उन के बच्चे और बड़ी खूबसूरत और जवान बेटियां, बहनें और बीवियां उन के साथ थीं। वो भाग नहीं सकते थे। उन के लड़ने में शिद्दत पैदा हो गई।

तक़रीबन एक घझटे तक रोमियों ने मुसलमानों का नाक में दम किए रखा। उन का सालार तूमा जिस की आंख में तीर उतरा हुआ था , सिपाहियों की तरह लड़ रहा था। अचानक एक हार मज़ीद घुड़सवार एक और सिम्त से आए। इन का सालार तलवार बुलंद किए नारे लगा रहा था :

अना फारस-उल-ज़दीद
अना ख़ालिद(र०) बिन वलीद

रोमी इस नारे से बखूबी वाक़िफ थे। इन एक हज़ार सवारों के क़ायद ख़ालिद(र०) खुद थे। ये था ख़ालिद(र०) का प्लान। वो एक एक हज़ार सवार भेजते रहे और आख़िर में खुद एक हज़ार सवारों के साथ आए। ख़ालिद(र०) तूमा और हरबीस को ढूंड रहे थे।

"कहां है एक आंख वाला रोमी"-ख़ालिद(र०) लल्कार रहे थे-"कहां है वो जिस की एक आंख में मोमिन का तीर उतरा हुआ है।"

रोमी सालारों की तलाश में ख़ालिद(र०) दुश्मन के दूर अन्दर चले गए। वो

अकेले थे। उन के मुहाफिज़ों को भी पता न चला के वो कहां ग़ायब हो गए हैं।"

"इब्ने अबी बकर(र०)!"-ख़ालिद(र०) का एक मुहाफिज़ सालार अब्दुर्रहमान(र०) को देख कर उन तक पहुंचा और लड़ाई के शौर व गुल में चिल्ला कर बोला-"सालारे आला का कुछ पता नही। अकेले आगे चले गए हैं।"

"नही, नहीं"-अब्दुर्रहमान(र०) ने घबरा कर कहा-"इब्ने वलीद ला पता नही हो सकता। अल्लाह की तलवार गिर नही सकती।"

अब्दुर्रहमान(र०) ने कुछ सवारों को साथ लिया, बे तरह और बे ख़तर उस तरफ गए जिधर ख़ालिद(र०) चले गए थे। लड़ाई ऐसी थी जैसे सवार गुथ्थम गुथ्था हो गए हों। अब्दुर्रहमान(र०) इन में रास्ता बनाते ख़ालिद(र०) को ढूंडने लगे। देखा के ख़ालिद(र०) दुश्मन के क़ल्ब में पहुंचे हुए थे और वो तूमा को और दूसरे रोमी सालार हरबीस को हलाक कर चुके थे और अब रोमियों के नरग़े से निकलने की कोशिश कर रहे थे। उन की ये कोशिश कामयाब नहीं हो सकती थी क्योंके रोमी ज़्यादा थे। ये ख़ालिद(र०) थे जो अभी तक हर वार बचा रहे थे। रोमियों के हाथों उन की शहादत यक़ीनी थी। अब्दुर्रहमान अपने सवारों के साथ पहंच गए और रोमियों पर ऐसा ज़ोर दार हमला किया के इन में से कई एक को हलाक कर दिया और ख़ालिद(र०) को वहां से ज़िन्दा निकाल लाए।

इस मआरके की सूरत ऐसी बन गई थी के कोई तरतीब नहीं रही थी। ये खुली लड़ाई थी जो लड़ने वाले अपने अपने अंदाज़ से इंफेरादी तौर पर लड़ रहे थे। मुसलमान सवारों की कमज़ोरी ये थी के इन की तादाद कम थी इस लिए वो रोमियों और अहले दमिश्क़ की इतनी ज़्यादा नफरी को घेरे में नही ले सकते थे। इस से ये हुआ के रोमी अपने सालारें की हलाकत के बाद एक एक दो दो मआरके में से निकलने लगे। वो इलाक़ा पहाड़ी था और खड नाले भी थे। रोमी वहीं कहीं ग़ायब होते गए और अंताकिया की तरफ निकल गए। इस तरह मआरका आहिस्ता आहिस्ता ख़त्म हो गया।

❁

ख़ालिद(र०) के हुक्म से औरतों को घेरे में ले लिया गया। कुछ औरतें भाग गई थीं। औरतों के साथ कई आदमियों को भी क़ैदी बना लिया गया। इस क़ाफले के साथ जो माल अमवाल, ख़ज़ाना और दीगर क़ीमती सामान जा रहा था वो सब वहीं रह गया। ये मुजाहेदीन का माले ग़नीमत था।

वहां एक हादसा यूं हुआ के यूनुस इब्ने मरक़स अपनी बीवी को ढूंडता फिर रहा था। वो उसे नज़र आ गई। वो उस की तरफ दौड़ा। लड़की भाग निकली लेकिन वो

कही जा नही सकती थी क्योंके सब और तें मुसलमान सवारों के घेरे में थी। लड़की ने जब देखा के कोई राहे फरार नही और यूनुस जो मुसलमान हो चुका था, उसे पकड़ लेगा तो उस ने अपने कपड़ों के अन्दर हाथ डाला और खंजर निकाल लिया। यूनुस के पहुंचने तक लड़की ने खंजर अपने सीने में घोंप लिया। वो गिरी और यूनुस उसे उठाने लगा।

"जा इब्ने मरक़स!"-लड़की ने कहा-"मेरा खाविंद मुसलमान नही हो सकता"-और वो मर गई।

यूनुस इब्ने मरक़स धाड़ें मार मार कर रोने लगा। इस लड़की की ख़ातिर उस ने दमिश्क़ मुसलमानों को दिलवाया था फिर ये खूंरेज़ मआरका लड़ाया था मगर लड़की ने अपना खून बहा कर उस की मोहब्बत का खून कर दिया।

मुसलमान सवारो ने अपने शहदों की लाशों को और ज़ख्मियों को उठाया, माले ग़नीमत रोमियों की घोड़ा गाड़ियों पर लादा, और तों और बच्चों को मरे हुए रोमियों के घोड़ों पर बिठाया और दमिश्क़ को चल पड़े। ये अगली सुबह थी।

जब माले ग़नीमत वग़ैरा इक्ळा किया जा रहा था उस वक़्त ख़ालिद(र०) और तों के क़रीब जा कर अहकाम दे रहे थे। उन्हें यूनुस इब्ने मरक़स अपनी तरफ आता दिखाई दिया। उस से पूछा के उसे अपनी बीवी मिली है या नही।

"मिल गई है"-यूनुस ने रोते हुए जवाब दिया-"लेकिन ज़िन्दा नहीं। उस ने अपने ख़ंजर से अपने आप को मार दिया है।"

"ग़म न कर इब्ने मरक़स!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"तू इस से ज़्यादा क़ीमती ईनाम का हक़दार है। आ, मैं तुझे उस से ज़्यादा खूबसूरत बीवी दूंगा।"

ख़ालिद(र०) ने उसे एक रोमी और त दिखाई जो जवान थी और जिस का हुस्न लाजवाब था। उस का लिबास रैशम का था और उस के गले में बड़ा ही क़ीमती हार था।

"ये तेरा माले ग़नीमत हे-ख़ालिद(र०) ने उसे हुस्न का ये पैकर दिखा कर क़हा-"मैं इस के साथ तेरी शादी कर दूंगा।"

"नही सालार-ए-मोहतरम!"-यूनुस इब्ने मरक़स ने घबराए हुए लहजे में कहा-"मैं इस के साथ शादी नही कर सकता। आप शायद नही जानते। ये शहंशाह हरकुल की बेटी है। ये इन के सालार तूमा की बीवी थी।"

"अब ये किसी शहंशाह की बेटी नही-ख़ालिद(र०) ने कहा-"अब ये तेरी बीवी होगी।"

"ये मुझे वापस करनी पड़ेगी"-यूनुस इब्ने मरक़स ने कहा-"हरकुल अपनी

बेटी को वापस लेने के लिए अपनी तमाम तर सल्तनत की फौज इक्ठी कर के दमिश्क़ पर हमला कर देगा। ऐसा नही करेगा तो फिदया अदा कर के इसे आप से वापस ले लेगा।

खा़लिद(र०) खामोश हो गए।

❁

अगली सुबह खा़लिद(र०) वापस रवाना हुए। वो बहुत खुश थे। उन्होंने मुहायदा नही तोड़ा था और अपना मक़सद भी पूरा कर लिया था।

दमिश्क़ तक जाने वाला रास्ता आधा तय हुआ था के अंताकिया की तरफ से बारह चौदह घुड़सवार आए। वो रोमी थे। इन में एक ऊंची हैसियत का मालूम होता था। वो खा़लिद(र०) से मिलना चाहता था। उसे खा़लिद(र०) तक पहुंचा दिया गया।

"मैं शहंशाह हरकुल का ऐल्ची हूं" -उस ने कहा- "और ये मेरे मुहाफिज़ हैं। मैं अमन से आया हूं इस उम्मीद के साथ के आप से भी मुझे अमन और दोस्ती मिलेगी।"

"क्या पैग़ाम लाए हो?" -खा़लिद(र०) ने पूछा।

"शहंशाह हरकुल को इत्तेला मिल गई है के आप ने हमारी फौज और दमिश्क़ से हिजरत करने वालों पर हमला किया है" -हरकुल के ऐल्ची ने कहा- "शहंशाह ने आप के हमले के मुताल्लिक़ कुछ नही कहा। उन्होंने अपनी बेटी वापस मांगी है और कहा है के आप जिस क़द्र फिदया तलब करेंगे, अदा किया जाएगा। शहंशाह ने ये भी कहा के आप फय्याज़ और कुशादा ज़र्फ हैं। अगर आप फिदया न लेना चाहें तो मेरी बेटी मुझे बख़्श दें।"

हरकुल ने खा़लिद(र०) को फय्याज़ और कुशादा ज़र्फ कह कर उन की खुशामद नही की थी। वही खा़लिद(र०) जो मैदाने जंग मैं दुश्मन के लिए क़हर थे, मैदान के बाहर इतने ही हलीम और फय्याज़ थे।

"अगर तुम्हारे शहंशाह ने बख़्शिश मांगी है तो उस की बेटी को बख़्शिश के तौर पर ले जाओ" -खा़लिद(र०) ने ऐल्ची से कहा और रकाबों पर खड़े हो कर बुलंद आवाज़ से हुक्म दिया- "रोमियों के शहंशाह हरकुल की बेटी को उस के ऐल्ची के हवाले कर दो। खुदा की क़सम, मैं ने तुम सब की तरफ से इसे बख़्शिश के तौर पर छोड़ दिया है।

हमें हरकुल की सल्तनत चाहिए उस की बेटी नहीं।"

हरकुल की बेटी उस के सफीर के साथ चली गई।

यूनुस इब्ने मरक़स ने ठीक कहा था के हरकुल हर क़ीमत पर अपनी बेटी वापस ले लेगा। यूनुस को खा़लिद(र०) ने अपने हिसे के माले ग़नीमत में से बे अंदाज़ ईनाम देना

चाहा लेकिन इस ने साफ इंकार कर दिया और कहा के वो बाकी उम्र शादी नही करेगा। बाद में उस ने अपनी ज़िन्दगी इस्लाम और जिहाद के लिए वक्फ कर दी थी लेकिन उस की बाकी ज़िन्दगी सिर्फ दो साल थी। वो जंग-ए-यरमूक में शहीद हो गया था।

❁

ख़ालिद(र०) जब माले गनीमत के साथ दमिश्क में दाखिल हुए तो उन की फौज ने दीवाना वार उन का इस्तकबाल किया। वो कामयाब लौटे थे। ख़ालिद(र०) ने पहला काम ये किया के अमीरूलमोमेनीन अबुबकर(र०) के नाम बड़ा लम्बा पैग़ाम लिखवाया जिस में इन्हें दमिश्क की फतह की खुशखबरी सुनाई। ये भी लिखा के वो दमिश्क में किस तरह दाखिल हुए थे और अबु उबैदा(र०) ने क्या गल्ती की थी। उन्होंने तफसील से लिखा के वो किस तरह रोमियों के पीछे गए और इन के सालारों तूमा और हरबीस को हलाक किया फिर हरकुल की बेटी किस तरह वापस की? माले गनीमत के मुताल्लिक लिखा के इस का पांचवां हिस्सा खिलाफत के लिए जल्दी भेज दिया जाएगा।

ख़ालिद(र०) ने ये पैग़ाम अक्तुबर 634ई० की पहली तारीख़ (2 शबान 13 हिज्री) के रोज़ भेजा था।

कासिद रवाना हो गया। कई घझटे गुज़र गए तो अबु उबैदा(र०) ख़ालिद(र०) के खेमे में आए। अबु उबैदा(र०) मगमूम थे। ख़ालिद(र०) ने पूछा के उन का चेहरा मलूल क्यों है?

"इब्ने वलीद!"-अबु उबैदा(र०) ने बोझल आवाज़ मे कहा-"ख़लीफा अबु बकर(र०) फोत हो गए हैं और अब उमर(र०) ख़लीफा है।"

ख़ालिद(र०) सुन हो के रह गए और कुछ देर अबु उबैदा(र०) के मुंह पर नज़रें जमाए रहे।

"कब फोत हुए हैं?"-ख़ालिद(र०) ने सरगोशी में यूं पूछा जैसे सिस्कियां ले रहे हों।

"22 जमादी-उल-आखिर के रोज़!"-अबु उबैदा(र०) ने जवाब दिया।

ये तारीख़ 22 अगस्त 634ई० थी। हज़रत अबु बकर(र०) को फोत हुए एक महीना और आठ दिन हो गए थे।

"इत्तेला इतनी देर से क्यों आई?"

"इत्तेला जल्दी आ गई थी"-अबु उबैदा(र०) ने जवाब दिया-"मदीना से कासिद आया तो उस ने देखा के हम ने दमिश्क का मुहासरा कर रखा है। उस ने सोचा के मुहासरे के दौरान ये इत्तेला दी तो अपने लश्कर में कोहराम बपा हो जाएगा और इस का मुहासरे

पर बहुत बुरा असर पड़ेगा। उस ने सिर्फ ये बताया के मदीने में खेरियत है और कुमक आ रही है। एक दो दिनों बाद उस ने पैग़ाम मुझे दे दिया और चला गया। मैं ने पढ़ा और यही बेहतर समझा के दमिश्क़ का फैसला हो जाए तो तुझे और लश्कर को इत्तेला दूं"-अबु उबैदा(र०) ने नए खलीफा का ख़त जो अबु उबैदा(र०) के नाम लिखा गया था , ख़ालिद(र०) को दे कर कहा-"और ये वो ख़बर है जो मैं तुझे लड़ाई ख़त्म होने तक नहीं देना चाहता था।"

ख़ालिद(र०) ख़त पढ़ने लगे। ये ख़लीफा उमर(र०) ने अबु उबैदा(र०) को लिखा था :

"ख़लीफातुलमुस्लेमीन उमर(र०) की तरफ से अबु उबैदा(र०) के नाम !

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं तुझे अल्लाह से डरते रहने की नसीहत करता हूं। अल्लाह लाज़वाल है जो हमें गुमराही से बचाता है और अंधेरे में रौशनी दिखाता है। मैं तुम्हें ख़ालिद(र०) बिन वलीद की जगह वहां के तमाम लश्कर का सिपह सालार मुक़र्रर करता हूं। फौरन अपनी जगह लो। ज़ाती मुफाद के लिए मोमेनीन को किसी मुश्किल में न डालना। इन्हें उस पड़ाव पर न ठहराना जिस के मुताल्लिक़ तूने पहले देख भाल न कर ली हो। किसी लड़ाई के लिए दस्तों को उस वक़्त भेजना जब वो पूरी तरह मुनज़्ज़म हों और कोई ऐसा फैसला न करना जिस से मोमेनीन का जानी नुक़सान हो। अल्लाह ने तुझे मेरी आज़माईश का और मुझे तेरी आज़माइश का ज़रिया बनाया है। दुनियावी लालचों से बचे रहना, कहीं ऐसा न हो के जिस तरह तुझ से पहले तबाह हुए हैं तू भी तबाह हो जाए। तू जानता है वो अपने रूत्बे से किस तरह गिरे हैं।"

इस ख़त का मतलब ये था के ख़लीफातुल मुस्लेमीन उमर(र०) ने ख़ालिद(र०) को सिपह सालारी से माजूल कर दिया था। अब अबु उबैदा(र०) सिपह सालार थे बल्कि वो एक महीना आठ दिन पहले से सिपह सालार थे।

"अल्लाह की रहमत हो अबु बकर(र०) पर!"-ख़ालिद(र०) ने ख़त अबु उबैदा(र०) को दे कर कहा-"वो ज़िन्दा होते तो मेरा ये अंजाम न होता।"

मोअररिख़ याक़ूबी और वाक़दी लिखते हैं के अल्लाह की तलवार झुक गई थी। उस रात ख़ालिद(र०) सो न सके। अबु बकर(र०) को याद करते और रोते रहे।

रात जो ख़ालिद(र०) ने मदीने से दूर दमिश्क़ में ख़लीफा-ए-अव्वल, अबु बकर(र०) की रहलत पर रोते गुज़ार दी थी, उस रात से डेढ़ दो महीने पहले मदीने पर मातम के बादल छाने लगे थे। अमीरूमोमेंनीन अबुबकर(र०) ऐसी हालत में ठण्डे पानी से नहा बैठे जब उन का जिस्म गरम और पसीने से शराबोर था। फौरन इन्हें बुखार हो गया। इलाज होता रहा लेकिन बुखार जिस्म को ख़ाता रहा। अगर अमीरूमोमेंनीन आराम करते तो शायद बुख़ार का दरजा-ए-हरारत गिर जाता मगर बीमारी की हालत में भी उन्होंने अपने आप को उमूरे सल्तनत में मसरूफ रखा।

एक रिवायत ये भी है के अबु बकर(र०) ने इलाज कराया ही नही था। उन्हें एक रोज़ तीमारदारों ने कहा के तबीब को बुला कर इलाज कराऐं।

"में ने तबीब को बुलाया था" -अमीरूलमोमेनीन ने कहा- "उस ने कहा था के इलाज और आराम की ज़रूरत है। में ने उसे कहा था के में जो चाहूंगा करूंगा। में ने इसे वापस भेज दिया था।"

"इलाज क्यों नहीं कराया अमीरूलमोमेनीन?"

"आख़री मंज़िल पर आन पहुंचा हूं मेंरे रफीक़ो!" -ख़लीफातुलमुस्लेमीन अबु बकर(र०) ने कहा- "अल्लाह ने जो काम मेंरे सुपुर्द किए थे, वो अगर सब के सब पूरे नहीं हुए तो मेंरे लिए ये इतमिनान क्या कम है के में ने कोताही नहीं की....में अल्लाह के महबूब(स०) के पास जा रहा हूं।"

तारीख़ गवाह है के अबु बकर(र०) ने अपने दो साल और तीन माह के दौरे ख़िलाफत में मोअजज़ा नुमा काम किए थे। रसूले करीम(स०) की वफात के फौरन बाद अरतदाद का जो फितना तमाम तर सर ज़मीने अरब में फैल गया था वो एक जंगी ताक़त थी जिसे ख़त्म करने के लिए इस से ज़्यादा जंगी ताक़त की ज़रूरत थी लेकिन अबु बकर(र०) ने तदब्बुर से और जंगी फहम व फिरासत से मुजाहेदीने इस्लाम की क़लील तादाद को इस्तेमाल किया और थोड़े से अर्से में अरतदाद के फितने और उस की जंगी ताक़त को रेज़ा रेज़ा कर दिया। इस के नतीजे में उन तमाम क़बीलों ने जो अरतदाद की लपेट में आ गए थे, इस्लाम कुबूल कर लिया।

अबु बकर(र०) ने अपने वाले मुसलमान हुकमुरानों, उमरा और वज़रा के लिए ये

सबक़ विरसे में छोड़ा के इन में बे लोस जज़्बा हो, इक़्तेदार की हवस और कोई ज़ाती मुफाद न हो तो पूरी क़ौम मुजाहेदीन का लश्कर बन जाती है और क़ोम की तदाद कितनी ही कम क्यों न हो वो कुफ्र की चट्टानों के दिल चाक कर दिया करती है। ये सरबराहे सल्तनत पर मुनहसिर है के क़ौम फतह व कामरानी की रिफअतों तक जाती है या ज़िल्लत व रूसवाई की अंधेरी खाईयों में।

अतरतदाद के अलावा भी कहीं बग़ावत और कहीं शोरिश थी। ख़लीफा-ए-अव्व्ल अबु बकर(र०) ने हर सू अमन व अमान क़ायम कर दिया था। फितना व फसाद न रहा, बग़ावत और शोरिश न रही तो अबु बकर(र०) ने इन्तेहाई जुर्रत मंदाना फैसला किया। उन्होंने मुजाहेदीन को फारस जैसी शहंशाही के खिलाफ और फिर इसी जैसी दूसरी बड़ी जंगी ताक़त के खिलाफ भेज दिया। मुजाहेदीन ने किसरा की ताक़त को कुचल कर उस के बे शुमार इलाक़े को इस्लामी सल्तनत में शामिल कर लिया फिर क़ैसरे रोम की फौज पर दहशत बन कर छा गए और इस के कई इलाक़े इस्लामी सल्तनत में आ गए।

किसरा भी और क़ैसर भी अपने आप को नाक़ाबिले तस्ख़ीर समझते थे। मुसलमानों ने ख़लीफा अव्वल के अहकाम की पैरवी करते हुए, इन दोनों दुश्मनाने इस्लाम का घमंड तोड़ दिया और इस्लामी फौज को एक ताक़त बना दिया। इन्ही जंगों में मुजाहेदीन को फौज की सूरत में मुनज़्ज़म किया गया था।

अबु बकर(र०) की सब से बड़ी कामयाबी ये थी के इस्लाम एक मज़हब की सूरत में ही अरब से ईराक़ और शाम में न फैला बल्कि इस से इस्लामी तमद्दुन और इस्लामी तहज़ीब भी फैली बल्कि चूं कहना दुरूस्त होगा के एक नए कल्चर ने जन्म लिया जिसे लोगों ने इस्लामी कहा और इसे अपनाया। इस से पहले तो लोग फारस और रोम के कल्चर को ही तहज़ीब व तमद्दुन समझते और इसे फौरन क़ुबूल कर लेते थे।

❁

ख़लीफा-ए-अव्वल जैसे थक से गए थे और पूरी तरह मुतमईन थे के वो ख़ालिक़-ए-हक़ीक़ी के हुज़ूर जा रहे हैं और सुरखुरू जा रहे हैं। उस दौर की तहरीरों से और मोअररिख़ों की तहक़ीक़ात से पता चलता है के अबु बकर(र०) को एक मसला परेशान कर रहा था। ये था उन की जानशीनी का मसला। उन्होंने अपने अहले ख़ाना से इस मसले का ज़िक्र किया था।

"मेरे अल्लाह के रसूल(स०) को मौत ने इतनी मोहलत नहीं दी थी के किसी को खुद ख़लीफा मुक़र्रर करते"-अबु बकर(र०) ने कहा था-"इस का ये नतीजा निकला के सक़ीफा बनी साअदा में मुहाजरीन और अन्सार के दरमियान इख़्तेलाफ पर फितना और

फसाद पैदा हो गया था। ये तो अल्लाह को मंजूर न था के उस के रसूल(स०) की उम्मत जिस की तादाद अभी बहुत थोड़ी है, आपस में लड़ कर खत्म हो जाए। अल्लाह ने उम्मत का इत्तेहाद मेंरे हाथ पर क़ायम रखा। खुदा की क़सम, मेंरसूल अल्लाह की उम्मत को इस फसाद में नही डाल कर मरूंगा के मेंरे बाद ख़लीफा कौन हो। में ख़लीफा खुद मुक़र्रर कर के जान अल्लाह के सपुर्द करूंगा।"

अज़ीम थे ख़लीफा-ए-अव्वल के उन्होंने ये बात सोच ली थी। उस दौर के थोड़ा अर्से बाद के वक़ाए निगार और मुबस्सिर लिखते हैं के ख़लीफा अव्वल ने सोच लिया था क़बीलों या तबक़ों या अफराद में जब इक्तेदार की हवस पैदा हो जाती है तो क़ौम का इत्तेहाद फटे हुए दामन की मानिंद हो जाता है। फौजें की पेशक़दमी पस्पाई में बदल जाती है। पीछे हटता हुआ दुश्मन आगे बढ़ने लगता है, फिर फौज भी इक्तेदार की जंग का हथियार बन जाती है और सालार सुल्तानी के ख्वाब देखने लगते हैं।

मुसलमानों का वो दौर फतूहात से माला माल हो रहा था। दरख़्शां रिवायत जन्म ले रही थीं और यही तारीखे इस्लाम की बुनियाद बन गई थीं। अबु बकर(र०) की दूरबीन निगाहों ने देख लिया था के क़ैसर व किसरा जो पस्पाई और ज़वाल के अमल से गुज़र रहे हैं और नेस्त व नाबूद हो जाने तक पहुंच गए हैं वो मुसलमानों के निफाक़ से फायदा उठाऐंगे और अफरीयत बन कर इस्लाम को निगल जाऐंगे।

"क्या उमर(र०) को लोग कुबूल कर लेंगे?"-अबु बकर(र०) ने अपने अहले ख़ाना से कहा-"शायद न करें। उमर(र०) मिज़ाज का बहुत तेज़ है....अपने अहबाब से मशवरा ले लेता हूं।"

अबु बकर(र०) ने अब्दुर्रहमान(र०) बिन ओफ को बुलाया और तन्हाई में बिठाया।

"इब्ने ओफ!"-अबु बकर(र०) ने कहा-"क्या तू मुझे सच्चे दिल से बता सकता है के उमर(र०) बिन खत्ताब कैसा आदमी है? तू उसे कैसा समझता है?"

"खुदा की क़सम ख़लीफा-ए-रसूल(स०)!-अब्दुर्रहमान(र०) बिन ओफ ने कहा-"जो मेंजानता हूं वो उस से बेहतर नहीं जो तू जानता है।"

"जो कुछ भी तू जानता है कह दे"-अबु बकर(र०) ने कहा।

"ख़लीफा-ए-रसूल(स०)!"-अब्दुर्रहमान(र०) बिन ओफ ने कहा-"हम में कोई भी ऐसा नही जो उमर(र०) बिन खत्ताब से बेहतर हो लेकिन उस की तबीयत में जो सख्ती है वो भी हम में से किसी में नहीं।"

"राय मेंरी भी यही है इब्ने ओफ!"-अबु बकर(र०) ने कहा-"तुम सब को उमर(र०) की सख्ती इस लिए ज्यादा महसूस होती है के मेंरे मिज़ाज में बहुत नर्मी है। क्या

ऐसा नही होगा के अपने बाद ख़िलाफत का बोझ उस के कंधो पर डाल दूं तो उस की सख़्ती कम हो जाए?.....ऐसे ही होगा। क्या तू ने नही देखा के में किसी पर सख़्ती करता हूं तो उमर(र०) उस के साथ नर्मी से पेश आता है? और में किसी की कोताही या ग़ल्ती पर अपना रवैया नर्म रखता हूं तो उमर(र०) उस पर सख़्ती करता है? वो समझता है कब सख़्ती और कब नर्मी की ज़रूरत है।"

"बेशक ऐसा ही है" -अब्दुर्रहमान ने कहा- "खलीफा-ए-रसूल(स०)! बे शक ऐसा ही है।"!"

"इस बात का ख्याल रखना अबु मोहम्मद!(अब्दुर्रहमान(र०) बिन ओफ)!" -अबु बकर(र०) ने कहा- "मेरे तेरे दरमियान जो बातें हुईं हैं ये किसी और तक न पहुंचें।"

अब्दुर्रहमान(र०) बिन ओफ चले गए तो अमीरूलमोमेनीन ने अपने एक और रफीक़ और मुशीर उस्मान(र०) बिन अफ्फान को बुलाया।

"अबु अब्दुल्ला!" -अबु बकर(र०) ने उस्मान(र०) बिन अफ्फान से कहा- "तुझ पर अल्लाह की रहमत हो। क्या तू बता सकता है के उमर(र०) बिन ख़त्ताब कैसा आदमी है?"

"अमीरूलमोमेनीन!" -उस्मान(र०) बिन अफ्फान ने जवाब दिया- "खुदा की क़सम, इब्ने ख़त्ताब को तू मुझ से ज़्यादा अच्छी तरह जानता है फिर तू मुझ से क्यों पूछता है?"

"इस लिए के में अपनी राय रसूल अल्लाह(स०) की उम्मत पर नहीं ठूसना चाहता" -अबु बकर(र०) ने कहा- "में तेरी राय ज़रूर लूंगा।"

"अमीरूलमोमेनीन!" -उस्मान(र०) बिन अफ्फान ने कहा- "उमर(र०) का बातिन उस के ज़ाहिर से अच्छा है और जो इल्म व दानिश उस के पास है वो हम में से किसी में नहीं।"

"एक और सवाल का जवाब दे दे अबु अब्दुल्ला!" -अबु बकर(र०) ने उस्मान(र०) बिन अफ्फान से कहा- "अगर में अपने बाद ख़िलाफत उमर(र०) के सुपुर्द कर जाऊं तो तेरा क्या ख्याल है के वो तुम सब पर सख़्ती करेगा?"

"इब्ने ख़त्ताब जो कुछ भी करेगा हम उस की इताअत में फर्क़ नही आने देंगे" -उस्मान(र०) बिन अफ्फान ने कहा।

"अबु अब्दुल्ला! अल्लाह तुझ पर रहम व करम करे" -अबु बकर(र०) ने कहा- "मेंने जो तुझे कहा और तू ने जो मुझे कहा, ये किसी और के कानों तक न पहुंचे।"

❁

अबु बकर(र०) ने कई और सहाबा-ए-इकराम से उमर(र०) के मुताल्लिक़ राय ली। इन में महाजरीन भी थे अन्सार भी। अबु बकर(र०) ने हर एक से कहा था के वो किसी और से इस गुफ्तगु का ज़िक्र न करे लेकिन ये मामला इतना अहम था के उन्होंने एक दूसरे के साथ बात की। ये आईंदा ख़िलाफत का मामला था और सहाबा-ए-इकराम(र०) के लिए मसला ये था के अबु बकर(र०) उमर(र०) को ख़लीफा मुक़र्रर कर रहे थे। उमर(र०) सख़्त तबीयत के मालिक थे। उन के फैसले बड़े सख़्त होते और वो बड़ी सख़्ती से इन पर अमल कराते थे।

इन सब ने एक वफद इस मक़सद के लिए बनाया के अबु बकर(र०) को क़ायल करें के उमर(र०) बिन ख़त्ताब को ख़लीफा मुक़र्रर न करें। जब ये वफ़द ख़लीफा-ए-अव्वल के पास गया तो वो लेटे हुए थे। बुखार ने उन्हें इतना कमज़ोर कर दिया था के अपने ज़ोर से उठ भी नही सकते थे।

"अमीरूलमोमेनीन!"-वफद के क़ायद ने कहा-"खुदा की क़सम, उमर(र०) ख़लीफा नही हो सकता। अगर तूने उस को ख़लीफा मुक़र्रर कर दिया तो अल्लाह की बाज़ पुर्स का तेरे पास कोई जवाब न होगा। उमर(र०) तेरी ख़िलाफत में सब पर रौब और गुस्सा झाड़ता है वो खुद ख़लीफा बन गया तो उस का रवैया ज़ालिमों जैसा हो जाएगा।"

अबु बकर(र०) को गुस्सा आ गया। उन्होंने उठने की कोशिश की लेकिन उठ न सके।

"मुझे बैठाओ"-उन्होंने गुसेली आवाज़ में कहा।

इन्हें सहारा दे कर बैठा दिया गया।

"क्या तुम सब मुझे अल्लाह की बाज़ पुर्स से और उस के ग़ज़ब से डराने आए हो?"-अबु बकर(र०) ने गुस्से और नक़ाहत से कांपती हुई आवाज़ में कहा -"मैं अल्लाह के हुज़ूर जा कर कहूंगा, मेरे रब! मैं ने तेरे बंदों में से बेहतरीन बंदे को ख़िलाफत की ज़िम्मेदारी सौंपी है....और मैंने जो कहा है वो तमाम लोगों को सुना दो। मैं ने उमर(र०) बिन ख़त्ताब को ख़लीफा मुक़र्रर कर दिया है।"

वो सब जो अबु बकर(र०) को उन के फैसले के ख़िलाफ क़ायल करने आए थे, खामोश हो गए और शर्मसार भी हुए के उन्होंने अमीरूलमोमेनीन को बीमारी की हालत में परेशान किया है। वो सब उठ कर चले गए।

इस से अगले रोज़ अबु बकर(र०) ने उस्मान(र०) बिन अफ्फान को बुलाया। उस्मान(र०) ख़लीफा के कातिब थे।

"अबु अब्दुल्ला!-अबु बकर(र०) ने उस्मान(र०) बिन अफ्फ़ान से कहा-"लिख जो मैं बोलता हूं"-उन्होंने लिखवाया:

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। ये वसीयत है जो अबु बकर(र०) बिन अबु कहाफा ने उस वक्त लिखवाई है जब वो दुनिया से रूख़सत हो कर मौत के बाद की ज़िन्दगी में दाखि़ल हो रहा था। ऐसे वक्त पक्का काफिर भी ईमान ले आता है और जिस ने कभी सच न बोला हो वो भी सच बोलने लगता है। में अपने बाद उमर(र०) बिन खत्ताब को तुम्हारा ख़लीफा मुक़र्रर करता हूं। तुम सब पर उस की इताअत फर्ज़ है। मेंने तुम्हारी भलाई और बेहतरी में कोई कसर नही रहने दी। अगर उमर(र०) ने तुम पर ज़्यादाती की और अदल व इन्साफ न या तो वो हर इन्सान की तरह अल्लाह के हुज़ूर जवाब दह होगा। मुझे उम्मीद है के उमर(र०) अदल व इन्साफ का दामन नहीं छोड़ेगा। में ने जो फैसला किया है इस में तुम्हारी भलाई और बड़ाई के सिवा और कुछ नहीं सोचा।"

वसीयत लिखवाते लिखवाते अबु बकर(र०) पर गशी तारी हो गई थी। उन्होंने यहां तक लिखवाया-"में अपने बाद उमर(र०) बिन ख़त्ताब को..." और वो ग़शी में चले गए। उस्मान(र०) बिन अफ्फान ने खुद ये फिक़रा मुकम्मल लिख दिया...."तुम्हारा ख़लीफा मुक़र्रर करता हूं। तुम सब पर उस की इताअत फर्ज़ है। मेंने तुम्हारी भलाई और बेहतरी में कोई कसर नहीं रहने दी।"

अबु बकर(र०) होश में आ गए।

"अबु अब्दुल्ला!"-अबु बकर(र०) ने कहा-"पढ़ जो मेंने लिखवाया है।"

अस्मान(र०) बिन अफ्फान ने पढ़ कर सुनाया।

"अल्लाह अकबर!"-अबु बकर(र०) ने कहा-"खुदा की क़सम, तू ने जो सोच कर लिखा है वो सोच ग़लत नहीं थी। तू ने ये सोच कर इबारत पूरी कर दी के में। ग़शी की हालत में ही दुनिया से रूख़सत हो गया तो ना मुकम्मल वसीयत खि़लाफत के लिए झगड़े का बाअस बन जाएगी।"

"बे शक अमीरूलमोमेनीन!"-उस्मान(र०) बिन अफ्फान ने कहा-"में ने यही सोच कर इबारत मुकम्मल कर दी है।"

"अल्लाह तुझे इस की जज़ा दे"-अबु बकर(र०) ने कहा। उन्होंने उस्मान(र०) बिन अफ्फान के अल्फाज़ न बदले और वसीयत मुकम्मल लिखवा दी।

"मुझे उठा कर मस्जिद के दरवाज़े तक ले चलो"-अमीरूलमोमेनीन ने कहा।

उन के मकान का एक दरवाज़ा मस्जिद में खुलता था। वो दरवाज़ा खोला गया। नमाज़ का वक्त था। बहुत से लोग मस्जिद में आ चुके थे। अबु बकर(र०) की ज़ोजा असमा-ए-बिन्ते अमेस इन्हें दोनों हाथों से सहारा दे कर मस्जिद वाले दरवाज़े तक ले गईं। नमाज़ियों ने इन्हें देखा तो मुतावज्जह हुए।

"मेरे भाईयो!"-अबु बकर(र०) ने नक़ाहत के बावजूद बुलंद आवाज़ से बोलने

की कोशिश करते हुए कहा-"क्या तुम इस शख़्स पर राज़ी होगे जिसे में ख़लीफा मुक़र्रर करूं? मेंने इस में तुम्हारी भलाई सोची है और अपने किसी रिश्तेदार को ख़लीफा मुक़र्रर नही किया। मेंरे बाद उमर(र०) बिन ख़त्ताब ख़लीफा होगा। क्या तुम सब इस की इताअत करोगे?"

"हां अमीरूलमोमेनीन!"-बहुत सी आवाज़ें सुनाई दी-"हम इस फैसले को क़ुबूल करते है। हम इब्ने ख़त्ताब(र०) की इताअत क़ुबूल करेंगे।"

इस के बाद अबु बकर(र०) ने वसीयत पर अपनी मोहर सिब्त कर दी।

❁

अबु बकर(र०) का पेशा तिजारत था लेकिन ख़िलाफत का बोझ कंधों पर आ पड़ा तो तिजारत की तरफ तवज्जह न दे सके। गुज़र ओक़ात तो करनी ही थी। उन्होंने अपने कुन्बे के लिए बैतुलमाल से कुछ अलाउंस मंजूर करा लिया था। अब जब उन्होंने महसूस कर लिया के वो ज़िन्दा नही रह सकेंगे तो उन्होंने अपने अहले ख़ाना से कहा के इन की जो थोड़ी सी ज़मीन है वो इन की वफात के बाद बेच कर ये तमाम रक़म जो वो गुज़ारे के लिए बैतुलमाल से लेते रहे हैं, बैतुलमाल में जमा करा दें।

"सब मेंरे क़रीब आ जाओ"-अबु बकर(र०) ने आख़री वक़्त अहले ख़ाना को बैठा कर कहा-"मुझे सिर्फ दो कपड़ों का कफन पहना कर दफ्न करना। तुम देखते रहे हो के में एक ही कपड़ा पहना करता था। इस के साथ एक कपड़ा और मिला लेना। इन कपड़ों को पहले धो लेना।"

"हम तीन नए कपड़े ले सकते हैं"-आयशा(र०) ने कहा-"कफन तीन कपड़ों का होता है।"

"नहीं अज़ीज़ बेटी!"-अबु बकर(र०) ने कहा-"कफन तो इस लिए होता है के जिस्म से कोई मवाद और नमी निकले तो इसे कफन चूस ले। कफन पुराने कपड़ों का हुआ तो क्या! नए कपड़े का हक़ ज़िन्दा लोगों का है.....मुझे गुसल अस्मा(र०) बिन्ते उमेंस(ज़ोजा) देगी। अगर अकेले गुसल न दे सके तो अपने बेटे को साथ ले ले।"

इतने में अन्दर इत्तेला दी गई के ईराक़ के मुहाज़ से मिस्ना बिन हारिसा आए हैं। घर के किसी फर्द कहा के अमीरूलमोमेनीन(र०) इस वक़्त बात करने के क़ाबिल नही।

"नहीं"-अमीरूलमोमेनीन(र०) ने क़दरे दरश्त लहजे में कहा-"उसे आने दो। वो बहुत दूर से आया है। जब तक मेंरा सांस चल रहा है में अपने फराइज़ से कोताही नही कर सकता।"

मिस्ना को अन्दर बुला लिया गया। उन्होंने जब अबु बकर(र०) की हालत देखी तो पशेमान हो गए और बात करने से झिझकने लगे।

"मुझे गुनाहगार न कर इब्ने हारिसा !" -अबु बकर(र०) ने कहा- "हो सकता है तू मदद लेने आया हो। मैं अगर तेरे लिए कुछ न कर सका तो अल्लाह की बाज़ पुर्स पर क्या जवाब दूंगा?"

"या अमीरूलमोमेनीन !" -मिस्ना बिन हारिसा ने कहा- "मुहाज़ हमारे क़ाबू में है। हालात हमारे हक़ में है लेकिन तादाद की कमी परेशान करती है। मुसलमान अब इतने नही रहे के उन्हें फौज में शामिल कर के मुहाज़ों पर भेजा जाए। जो जिहाद के क़ाबिल थे वो पहले ही मुहाज़ों पर है। अमीरूलमोमेनीन के हुक्म से उन लोगों को मुहाजेदीन की सफों में खड़ा नही किया जा सकता जो मुर्तिद हो गए थे। मैं ये दरख्वास्त ले कर आया हूं के उन में बहुत से ऐसे है जो सच्चे दिल से इस्लाम क़ुबूल कर चुके है और मुहाज़ों पर जाना चाहते हैं। क्या अमीरूलमोमेनीन उन्हें फौज में शामिल होने की इजाज़त देंगे?"

"इब्ने ख़त्ताब को बुलाओ" -अमीरूलमोमेनीन ने कहा।

उमर(र०) दूर नहीं थे, जल्दी आ गए।

"इब्ने ख़त्ताब !" -अमीरूलमोमेनीन ने उमर(र०) से कहा- "इब्ने हारिसा मदद मांगने आया है। ये जो कहता है ऐसा ही कर और इसे फौरन मदद दे कर मुहाज़ को रवाना कर....और अगर मैं इस दौरान फोत हो जाऊं तो इस काम में रूकावट न हो।"

☸

अरबों में रिवाज था के बातें शायराना अल्फाज़ और अंदाज़ से किया करते थे। ख़लीफा-ए-अव्वल अबु बकर(र०) की नज़आ के वक़्त की चन्द बातें तारीख़ में महफूज़ हैं। उन की बेटी आयशा(र०) उनके साथ लगी बैठी थीं। उन्होंने बाप को नज़आ के आलम में देख कर उस वक़्त के एक शायर हातिम का एक शेर पढ़ा:

"नज़आ का आलम तारी होता है। सांस न आने से सीना घुटने लगता है तो दौलत इन्सान की कोई मदद नहीं कर सकती।"

"नही बेटी !" -अबु बकर(र०) ने नहीफ़ आवाज़ में कहा- "हमें दौलत से क्या काम ! इस शेर की बजाए तू ने कुर्आन की ये आयत क्यों न पढ़ी....तुझ पर नज़आ का आलम तारी हो गया है। यही है वो वक़्त जिस से तू डरा करता था।"

अबु बकर(र०) की ज़बान से ये अल्फाज़ निकले तो उन्हें आख़री हिचकी आई। उन्होंने सरगोशी में ये दुआ की- "या अल्लाह ! मुझे मुसलमान की हैसियत में दुनिया से उठाना और बादअज़ मर्ग मुझे स्वालेहीन में शामिल करना" -ये ख़लीफा-ए-अव्वल अबुबकर(र०) के आख़री अल्फाज़ थे। दिन सोमवार था। सूरज गुरूब हो चुका था। तारीख़ 22 अगस्त 634ई० (बमुताबिक़ 21 जमादी-उल-आख़िर 13 हिज्री) थी।

उसी रात दफ्न कर देने का फैसला हुआ। अबु बकर(र०) की वसीयत के मुताबिक़ उन की ज़ोजा अस्मा(र०) बिन्त उमेंस ने गुसल दिया। मय्यत पर पानी उन के बेटे अब्दुर्रहमान(र०) डालते जाते और अब्दुर्रहमान(र०) की वालदा गुसल देती जाती थी।

गुसल के बाद वो चार पाई लाई गई जिस पर रसूले करीम(स०) का जस्द-ए-मुबारक क़ब्र तक पहंचाया गया था। इस चार पाई पर ख़लीफा-ए-रसूल(स०) का जनाज़ा उठा और जनाज़ा मस्जिद नबवी में रसूल अल्लाह(स०) के मज़ार और मिम्बर के दरमियान रखा गया। नमाज़े जनाज़ा की इमामत उमर(र०) ने की।

मदीना की वो रात सोगवार थी। गलियों में हिचकियां और सिस्कियां सुनाई दे रही थीं। रात भी रो रही थी। वो अज़ीम हस्ती दुनिया से उठ गइ थी जिस ने इस्लामी सल्तनत की न सिर्फ बुनियादें मज़बूत बनाई थी बल्कि इन पर मज़बूत इमारत खड़ी कर दी थी।

अबु बकर(र०) को रसूले करीम(स०) के पहलू में दफ्न किया गया। क़ब्र इस तरह खोदी गई के अबु बकर(र०) का सर रसूले अकरम(स०) के कंधों के साथ था। इस तरह रसूले करीम(स०) और ख़लीफा-ए-रसूले करीम(स०) की वो रिफाक़त जो उन्होंने ज़िन्दगी में क़ायम रखी थी, वफात के बाद भी क़ायम रही। अबु बकर(र०) सब से पहले आदमी थे जिन्होंने इस्लाम कुबूल किया था।

☸

अब ख़लीफातुलमुस्लेमीन उमर(र०) बिन ख़त्ताब थे। उन्होंने अपनी ख़िलाफत के पहले रोज़ ही जो पहला हुक्म नामा जारी किया वो ख़ालिद(र०) की माज़ूली का था। उन्होंने तहरीरी हुक्म नामा अबु उबैदा(र०) के नाम क़ासिद के हाथों भेज दिया। ख़ालिद(र०) अब सालारे आला नहीं बल्कि आम सालार बना दिए गए थे। इस का मतलब ये था के वो अब किसी मफ्तूहा इलाक़े के अमीर नहीं बन सकते थे।

मदीना में उमर(र०) ने अपनी ख़िलाफत के दूसरे दिन मस्जिद नबवी में नमाज़ की इमामत की और ख़लीफा की हैसियत से पहला खुत्बा दिया। उन्होंने सब से पहले ये बात कही-"कौम उस ऊंट की मानिंद है जो अपने मालिक के पीछे पीछे चलता है। उसे जहां बैठा दिया जाता है वो उसी जगह बैठा अपने मालिक का इन्तेज़ार करता रहता है। रब्बे काबा की क़सम, में तुम्हें सिराते मुस्तक़ीम पर चलाऊंगा" -उन्होंने खुत्बे में और भी बहुत कुछ कहा और आख़िर में कहा-"में ने ख़ालिद(र०) बिन वलीद को उस के ओहदे से माज़ूल कर दिया है और अब अबु उबैदा(र०) अफवाज के सलारे आला और शाम के मफ्तूहा इलाक़ों के अमीर हैं।"

मस्जिद में जितने मुसलमान मौजूद थे उन के चेहरों के रंग बदल गए। बाज़ के चेहरों पर हैरत और बाज़ के चेहरों पर गुस्सा साफ दिखाई दे रहा था। वो सब एक दूसरे की तरफ देखने लगे। ख़ालिद(र०) की फतूहात थोड़ी और मामूली नही थीं। अबु बकर(र०) उन की हर फतह और हर कारनामा मस्जिद में बयान किया करते और ये खबर तमाम तर अरब में फैल जाती थी। ख़ालिद(र०) की ज़्यादा तर फतूहात मोअजज़ा नुमा थी। इस तरह ख़ालिद(र०) सब के लिए क़ाबिले अहतराम शख़्सियत बन गए थे मगर उमर(र०) ने खलीफा बनते ही ख़ालिद(र०) को माजूल कर दिया।

हर कोई उमर(र०) से पूछना चाहता था के ख़ालिद(र०) ने क्या जुर्म किया है जिस की उसे इतनी सख़्त सज़ा दी गई है इन में कुछ ऐसे भी थे जो पूछे बग़ैर उमर(र०) के फैसले की मुख़ालफत करना चाहते थे लेकिन किसी में भी इतनी जुर्रत नहीं थी के उमर(र०) से बाज़ पुर्स करता। सब जानते थे के उमर(र०) अबु बकर(र०) जैसे नर्म मिज़ाज नहीं और इन की तबीयत में इतनी दरश्ती है जो बाज़ ओक़ात बर्दाश्त से बाहर हो जाती है। एक नौजवान जो ख़ालिद(र०) के क़बीले बनी मख़ज़ूम से ताल्लुक़ रखता था, फट पड़ा। तारीख़ में उस का नाम नहीं आया। इतना ही लिखा है के अभी उस की मसें भीगी थीं।

"अमीरूलमोमेनीन!"-इस नौजवान ने इन्तेहाई बुलंद आवाज़ में कहा-"क्या तू इस सालार को माजूल कर सकता है जो इस्लाम की शमशीर-ए-बेनियाम है? क्या इब्ने वलीद को रसूल अल्लाह(स०) ने सैफुल्ला नही कहा था? तू इस तलवार को ज़बरदस्ती नियाम में डाल रहा है जिसे अल्लाह ने इस्लाम की सर बुलंदी के लिए बे नियाम किया है...क्यों? तू ने ऐसा हुक्म क्यों दिया है?"

क्या उमर(र०) से यूं जवाब तल्बी की जुर्रत कोई कर सकता था? उमर(र०) से तो हर कोई दबता था। अब तो वो खलीफा थे। इस कम उम्र जवान ने जिस तल्ख़ी से बात की थी ये उमर(र०) के लिए क़ाबिले बर्दाश्त नही थी। मस्जिद में सन्नाटा तारी हो गया। सब की नज़रें उमर(र०) के चेहरे पर जम गईं। उमर(र०) के चेहरे पर गुस्से या ख़फ्गी का हल्का सा तास्सुर भी नही था।

"ये लड़का मुझ से ख़फा हो रहा है"-उमर(र०) ने ऐसे लहजे में कहा जिस में हल्की सी दरश्ती भी नहीं थी, तंज़ भी नहीं थी। कहने लगे-"मैं इसे जानता हूं। इब्ने वलीद इस का चचा ज़ाद भाई है"-इतना ही कह कर उमर(र०) मस्जिद से निकल गए।

अगर उमर(र०) ख़लीफा न होते तो उन का रद्दे अमल मुख़्तलिफ होता, लेकिन वो जानते थे के इस्लाम ने कौम के हर फर्द को, ख्वाह उस की हैसियत कुछ भी न हो, ख़लीफा और उस के किसी भी अमीर से बाज़पुर्स की इजाज़त दे रखी है।

इस से अगले रोज़ उमर(र०) ने नमाज़ की इमामत की और फिर खुत्बा देने लगे। वो ख़ालिद(र०) की माजूली की वजह बयान करना ज़रूरी समझते थे।

"मैं अल्लाह के सामने और क़ौम के सामने अपने आमाल का जवाब दह हूं"-उमर(र०) ने कहा-"इब्ने वलीद को मैं ने किसी ज़ाती रंजिश या किसी बे बुनियाद इल्ज़ाम पर माज़ूल नही किया। वो अमीर ख़ानदान का फर्द है। उस ने अमीरी में परवरिश पाई है इस लिए अभी तक उस की आदतें अमीरों जैसी है। वो शायरों को बड़े बड़े ईनाम देता है। रक़में ज़ाय करता है। ये रक़में बैतुलमान में आनी चाहिऐं या इम्दाद के तलबगार घरों में जानी चाहिऐं। वो पहलवानों, शहसवारों और तेग़ ज़नों को भी ईनाम देता है.....

"मुझे अबु बकर(र०) की ख़िलाफत के वक़्त बताया गया था के इब्ने वलीद ने अशअत बिन कैस को दस हज़ार दरहमं ईनाम में दिए हैं। अगर उस ने ये रक़म माले ग़नीमत में से दी है तो ये मुजरिमाना ख्यानत है और अगर उस ने अपने हिस्से में से ये ईनाम दिया है तो ये मुजरिमाना इस्राफ है। इस्लाम इस अय्याशी और फिजूल खर्ची की इजाज़त नही देता....में ख़लीफा-ए-अव्वल को जो मशवरे दिया करता था उन पर मैं खुद अमल क्यों न करूं?"

लोग खामोश तो हो गए लेकिन इन में बेशतर ऐसे थे जो ख़ालिद(र०) की माजूली को बहुत ज़्यादा सज़ा और बे इन्साफी कहते थे।

मोअरर्ख़ि यहां तक तो मुत्ताफिक़ है के ख़लीफा-ए-दोम उमर(र०) बिन ख़त्ताब ने ख़ालिद(र०) को उन की फिजूल खर्ची की वजह से माजूल किया था। लेकिन मोअरर्ख़िों में कुछ इख़्तेलाफ पाया जाता है। इन में बाज़ ने कुछ और वजूहात भी बयान की है। वो कहते हैं के ख़ालिद(र०) के तौर तरीक़े शाहाना थे। वो मफ्तूहा इलाक़ों के अमीर थे लकिन उन की आदतें खुद मुख्तार हुकमुरानों जैसी थीं जिसे चाहते ईनाम व इकराम से माला माल कर देते और किसी हक़दार और नादार का ख्याल नही रखते थे।

उन्होंने ये भी लिखा है के उमर(र०) को ख़दशा था के ख़ालिद(र०) का हाथ न रोका तो मफ्तूहा इलाक़ों के लोग किसी वक़्त मदीने के ख़िलाफ बग़ावत कर दें। इस सूरत में रोमी उन की मदद को आ जाएंगे।

सही इल्ज़ाम वही मालूम होता है जो उमर(र०) ने खुत्बे में बता दिया था। यानी ख़ालिद(र०) ने अशअस बिन कैस को दस हज़ार दरहम ईनाम दिया था और ये भी सही था के ख़ालिद(र०) इख़्राजात के मामले में मोहतात नही थे लेकिन इन के ख़िलाफ बददियानती और ख्यानत का इल्ज़ाम सही नही था। वो अपने हिस्से के माले ग़नीमत में से खर्च किया करते थे।

ख़लीफा-ए-दोम उमर(र०) ने सालारों और दीगर आला हुक्काम में डिसीपिलीन

पैदा करने के लिए बड़ा ही जुर्रत मंदाना फैसला किया था लेकिन इस फैसले में बहुत बड़ा ख़तरा था जो उन्होंने मोल लिया। ख़तरा ये था के ख़ालिद(र०) की जंगी क़यादत, क़ाबलियत और पे ब पे फतूहात की वजह से इन्हें लोगों में और फौज में ग़ैर मामूली मक़बूलियत हासिल थी। उन की माजूली पर लोगों में इज़्तेराब फैल गया था और वो एहतजाजी बातें कर रहे थे।

अबु उबैदा(र०) और ख़ालिद(र०) जिस मुहाज़ पर थे, वहां की तमाम फौज को इक्ळा कर के अबु उबैदा(र०) ने ऐलान किया के अमीरूलमोमेनीन अबु बकर(र०) फोत हो गए है और अब उमर(र०) बिन खित्ताब ख़लीफा है। फौज को दूसरी ख़बर ये सुनाई गई के ख़ालिद(र०) को सिपह सालारी से माजूल कर के आम सालार बना दिया गया है और अब अबु उबैदा(र०) सालारे आला है।

अबु बकर की वफात की ख़बर पर तमाम लश्कर से गुंज उठी-"इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलेही राजेऊन"-फिर लश्कर से खुसर फुसर और सरगोशियां सुनाई देने लगी लेकिन ख़ालिद(र०) की माजूली की ख़बर ने सब पर सन्नाटा तारी कर दिया। यूं लगता था जैसे अबु बकर(र०) की वफात को फौज ने ज़हन से उतार दिया है। मोअररिख़ लिखते हैं के फौज के खेमों से बड़ी तल्ख़ और गुसैली बातें उठने लगीं।

"नया ख़लीफा ख़ालिद(र०) की मक़बूलीयत से डर गया है।"

"इब्ने ख़त्ताब गुसैला आदमी हैं वो इब्ने वलीद को दबा कर रखना चाहता है।"

"क्यों माजूल कर दिया है? इब्ने वलीद कहां से पस्पा हुआ है? किस मैदान में शिकस्त खाई है?"

"ख़लीफा को डर है के ख़ालिद(र०) बिन वलीद खुद मुख्तार हुकमुरान बन जाऐंगे।"

और जो संजीदा ज़हन के लोग थे वो पूछ रहे थे के ख़ालिद(र०) का रद्दे अमल और रवैया क्या होगा ये एक तारीख़ी अहमीयत का सवाल था। ख़ालिद(र०) के बग़ैर इस्लामी फौज की मज़ीद फतूहात मख़दूश थीं। मोअररिख़ों ने और जंगी मुबस्सिरों ने लिखा है के जो अहलियत और जारहियत ख़ालिद(र०) में थी वो और किसी सालार मे नही थी। अबु उबैदा(र०) ज़ाहिद और परहेज़गार थे और उन्हें अमीनुल उम्मत कहा जाता था और वो बड़े ही दिलैर सिपाही थे लेकिन उन में ख़लिद(र०) वाली क़यादत के जोहर नही थे।

इस सवाल का जवाब अगली कारर्वाई दे सकती थी।

❁

अगला मआरका एक ही हफ्ते बाद आ गया। अबु उबैदा(र०) को फौज की

कमान लिए अभी एक ही हफ्ता गुज़रा था। इन्हें इत्तेला दी गई के एक अजनबी उन से मिलने आया है। अपने आप को अरबी ज़ाहिर करता है लेकिन इसाई है। अबु उबैदा(र०) ने उसे बुलाया। अजनबी तन्हाई में बात करना चाहता था। अबु उबैदा(र०) ने सब को बाहर निकाल दिया।

"क्या मुसलमान सालारे आला एक इसाई अरब पर ऐतबार करेगा?"-इस इसाई ने कहा-"अगर माले ग़नीमत की ज़रूरत है तो एक जगह बताता हूं। हमला करें और माला माल हो जाऐं।"

"पहले ये बता के तू हम पर इतनी महरबानी करने क्यों आया है?"-अबु उबैदा(र०) ने पूछा-"रोमी तेरे हम मज़हब है तू इन्हें क्यों नुक़सान पहंचा रहा है?"

"अपने वतन की मोहब्बत की ख़ातिर!"-इसाई ने जवाब दिया-"रोमी मेंरे हम मज़हब तो है लेकिन ज़िन्दा इसाईयों को शेरों के आगे रोमियों ने ही डाला था और ईसा(अ०) को मसलूब करने वाले रोमी ही थे। मेंइन की शहंशाही देख रहा हूं। ये रिआया को इन्सान नहीं समझते। में ने मफ्तूहा इलाक़ों में आप की हकूमत भी देखी है। आप रिआया को इन्सानियत का दर्जा देते है। में रोमियों के ज़ुल्म व सितम का शिकार हूं। मेंरे दिल में सिर्फ अपना नहीं, पूरी इन्सानियत का दर्द है...... में मुसलमान नही लेकिन में ये तो फख्र से कह सकता हूं के में अरबी हूं और अरब के लोग अच्छे होते हैं।"

इस इसाई अरब ने अबु उबैदा(र०) को मुतास्सिर कर लिया। अबु उबैदा(र०) ने उस से पूछा के वो कौन सी जगह बता रहा है जहां हमला करना है।

"अबु-उल-कुदस!"-इसाई अरब ने जवाब दिया और ये बता कर के ये मुक़ाम अबु-उल-कुदस कितनी दूर और कहां है, अबु उबैदा(र०) को बताया-"दो तीन दिनों बाद वहां एक मेला शुरू होने वाला है। इस में दूर दूर के ताजिर बेंचने के लिए माल लाऐंगे। बड़ी क़ीमती अशिया की दुकानें लगेंगी। बड़े दौलत मंद ख़रीदार आऐंगे। अगर आप को माल-ए-ग़नीमत चाहिए तो छोटा सा एक दस्ता भेज कर सारे मेले का माल समेंट लें।"

"क्या इस मेले की हिफाज़त के लिए रोमी फौज का कोई दस्ता वहां है?-अबु उबैदा(र०) ने पूछा।

"नही होगा"-इसाई अरब ने जवाब दिया-"में ये जानता हूं के बहरा-ए-रोम के साहिली शहर तराबिस में रोमी फौज मौजूद है। वहां से फौज इतनी जल्दी अबु-उल-कुदस नही पहुंच सकती। आप के लिए मेंदान साफ है"-वो जाने के लिए उठ खड़ा हुआ। कहने लगा-"मुझे ज़्यादा देर यहां नही रूकना चाहिए।"

वो चला गया।

अबु उबैदा(र०) ने इस मेले को मोटा और आसान शिकार समझा। उन्होंने अपने मुशीर सालारों को बुलाया जिन में ख़ालिद(र०) भी शामिल थे। अबु उबैदा(र०) ने इन्हें तफ़सील से बताया के इसाई अरब इन्हें क्या बता गया है।

"ये माले ग़नीमत हाथ से जाना नही चाहिए"–अबु उबैदा(र०) ने कहा–"अबु–उल–क़ुदस दुश्मन का इलाक़ा है और इस दुश्मन के साथ हमारी जंग है। जंग की सूरत में मेले पर हमारा छापा जायज़ है। इस से रोमियों पर हमारी धाक बैठ जाएगी"–अबु उबैदा(र०) ने बारी बारी सब को देखा और कहने लगे–"तुम में कौन इस छापा मार कारर्वाई के लिए जाना चाहता है"–अबु उबैदा(र०) की नज़रें ख़ालिद(र०) के चेहरे पर ठहर गईं।

नज़रें ख़ालिद(र०) पर जमा लेने का मतलब यही था के ख़ालिद(र०) अपने आप को इस छापे के लिए पेश करेंगे लेकिन ख़ालिद(र०) इस तरह खामोश बैठे रहे जैसे इस काम के साथ इन का कोई ताल्लुक़ ही न हो। ज़ाहिर है अबु उबैदा(र०) को ख़ालिद(र०) की खामोशी और बे रूखी से बहुत मायूसी हुई होगी। उन्हें ये ख्याल भी आया होगा के ख़ालिद(र०) का ये रवैया उन की माजूली का रद्दे अमल है।

वहां एक नौजवान भी मौजूद था। उस के चेहरे पर दाढ़ी अभी अभी आई थी।

"में जाऊंगा–ये नौजवान बोल उठा–"ये फैसला सालारे आला करेंगे के मेरे साथ कितनी नफरी होगी।"

"क्या तू अभी कम्सिन नहीं इब्ने जाफर?"–अबु उबैदा(र०) ने कहा और एक बार फिर ख़ालिद(र०) की तरफ देखा मगर ख़ालिद(र०) ला ताल्लुक़ बैठे थे।

"अमीनुलउम्मत!"–नौजवान ने जवाब दिया–"में मदीना से आया ही क्यों हूं? में कुछ कर के दिखाना चाहता हूं। क्या मेरे बुज़ुर्ग भूल गए है के मेरे सर पर अपने शहीद बाप का कर्ज़ है?.....अमीन–उल–उम्मत! में कम्सिन ज़रूर हूं लेकिन अनाड़ी नही हूं, बुज़दिल नहीं हूं। कुछ सीख कर आया हूं। क्या मेरे बुज़ुर्ग मेरी हौसला शिकनी करेंगे?"

"खुदा की क़सम, इब्ने जाफर!"–अबु उबैदा(र०) ने कहा–"तेरी हौसला शिकनी नही होगी। पांच सौ सवारों का दस्ता ले ले। तू इस दस्ते का सालार होगा।"

अबु उबैदा(र०) ने एक कम्सिन लड़के को पांच सौ सवारों का सालार ग़ालिबन ये सोच कर बना दिया था के ये छापा निहायत आसान था। वहां कोई फौज नही थी जो इन सवारों के मुक़ाबले में आती।

ये नौजवान कोई आम सा लड़का नहीं था। उस का नाम अब्दुल्ला था और वो रसूले करीम(स०) के चचा ज़ाद भाई जाफर(र०) का बेटा था। जाफर(र०) मोता की

लड़ाई में शहीद हो गए थे।

❁

उस रात चांद पूरा था। शाबान की पंद्रह तारीख़ थी। ईसवी सन के मुताबिक़ ये 14 अक्तुबर 634ई० की रात थी। नौजवान अब्दुल्ला पांच सौ सवारों को साथ ले कर रात को रवाना हुए। उन के साथ आशिके़ रसूल(स०) और नामूर मुजाहिद अबुज़र ग़फ़्फ़ारी(र०) भी थें ये दस्ता उस वक्त रवाना किया गया था जब मेला शुरू हो चुका था।

अब्दुल्ला का दस्ता सुबह तुलू हो चुकी थी जब वहां पहुंचा। मेला क्या था, वो तो ख़ेमों, शामियानों और क़न्नातों का एक गांव आबाद था और ये गांव बहुत ही खूबसूरत था। दुकानों पर बड़ा ही क़ीमती माल सजा हुआ था। मेले की रौनक़ जाग उठी थी।

अब्दुल्ला नौजवान था। वो अपने आप को अनाड़ी नहीं समझता था लेकिन अनाड़ी पन का ही मुज़ाहेरा किया। सब से पहले उन्हें एक दो जासूस ये देखने के लिए भेजने चाहिऐं थे के रोमी फौज का कोई दस्ता क़रीब कहीं मौजूद है या नहीं और मेले में जो लोग आए हुए हैं वो बहरूप में रोमी फौज तो नहीं। उस ने वहां जाते ही हमले का हुक्म दे दिया।

पांच सौ मुसलमान सवार मेले के इर्द गिर्द घेरा डालने लगे और अचानक कम व बेश पांच हज़ार रोमी सवार जाने कहां से निकल आए और वो मेले और मुसलमान सवारों को नरग़े में लेने लगे। पांच सौ का मुक़ाबला पांच हज़ार से था और सूरत ये पैदा हो गई थी के मुसलमान सवार घेरे में आ गए थे। उन की तबाही लाज़मी थी। ये पांच हज़ार रोमी सवार मेले की हिफाज़त के लिए वहां क़रीब ही मौजूद थे। इन्हें मालूम था के मुसलमान बहुत तेज़ पेशक़दमी किया करते है।, कहीं ऐसा न हो के मुसलमान फौज अचानक आजाए और मेले को लूट ले।

मुसलमान सवार रोमी सवारों के घेरे से निकलने के लिए घोड़े दौड़ा रहे थे लेकिन कहां पांच सौ और कहां पांच हज़ार। मुसलमान जिधर जाते थे, उधर से रोक लिए जाते थे। मेले में भगदड़ मच गई। लोगों की चीख़ व पुकार थी। दुकानदार अपना माल समेट रहे थे और जिन के पास रक़में थी वो भाग रहे थे। कई एक घोड़ों तले कुचले गए।

मुसलमान हर मैदान में क़लील तादाद में लड़े है। इस से इन्हें अपने से कई गुना ज़्यादा लश्कर से लड़ने और फतहयाब होने का तजुर्बा था। उन्होंने पांच सौ की तादाद में पांच हज़ार का घेरा तोड़ने की कोशिश की लेकिन कामयाबी की कोई सूरत नज़र न आई। उन्होंने किसी की हिदायत के बग़ैर ही अपने आप को गोल तरतीब में कर लिया और रोमियों का मुक़ाबला करने लगे। अब्दुल्ला लड़ सकता था, इस ख़तरनाक सूरते

हाल में अपने सवारों की क़यादत नही कर सकता था। वो सिपाहियों की तरह बे जिग्री से लड़ रहा था। अबुज़र गफ्फारी(र०) भी जान पर खेल कर लड़ रहे थे। तमाम सवार अगे बढ़ बढ़ कर रोमियों पर हमले कर रहे थे और रोमियों के हमले रोकते भी थे। उन की गोल तरतीब इस तरह थी के सब के मुंह बाहर की तरफ थे यानी उन का अक़ब था ही नही जिस पर दुश्मन के हमले का ख़तरा होता।

रोमियों ने जब मुसलमानों को इस अनोखी तरतीब में देखा तो वो सट पटाए और आगे बढ़ने में मोहतात हो गए लेकिन उन की तादाद दस गुना थी और वो लड़ना जानते थे। उन के मोहतात होने से सिर्फ ये फर्क़ पड़ा था के मुसलमानों की तबाही थोड़ी सी देर के लिए मुल्तवी हो गई थी। ये मुमकिन ही नहीं था के पांच सौ सवार पांच हज़ार सवारों के नरगे से ज़िन्दा निकल आते।

ये पांच सौ मुजाहेदीन अपने सालारे आला की एक ख़तरनाक लग़ज़िश की सज़ा भुगत रहे थे। अबु उबैदा(र०) अमीन-उल-उम्मत थे। ज़हद और तक़वा में बे मिसाल थे। सहाबा-ए-इकराम(र०) में उन का मुक़ाम सब से बुलंद था लेकिन हकूमत करने के लिए और फौज की क़यादत के लिए और जंगी उमूर और कारर्वईयों में फैसले करने के लिए सिर्फ इन औसाफ की ज़रूरत नहीं होती बल्कि ये औसाफ बाज़ हालात में क़ौम और फौज को ले डूबते है।

अबु उबैदा(र०) की सादगी का ये असर के उन्होंने एक इसाई पर ऐतमाद किया और महज़ माले ग़नीमत की ख़ातिर पांच सौ सवारों को एक बच्चे की क़यादत में ये मालूम किए बग़ैर भेज दिया के वहां दुश्मन की फौज मौजूद है या नही।

❁

अबु उबैदा(र०) अपने सालारों के साथ बैठे हुए थे। दमिश्क़ फतह हो चुका था। अगली पेशक़दमी का मंसूबा तैयार हो रहा था और फौज आराम कर रही थी।

एक घुड़सवार घोड़ा सरपट दौड़ाता अबु उबैदा(र०) के खेमें के सामने आ रूका। सवार कूद कर उतरा और दौड़ता हुआ खेमें में दाख़िल हो गया। वो हांप रहा था। उस के चेहरे पर गर्द की तह जमी हुई थी। सब उस की तरफ मुतावज्जह हुए।

"सालारे आला!"-उस ने अबु उबैदा(र०) से कहा-"वो सब मारे जा चुके होंगे। वो घेरे में आए हुए हैं।"

"कौन?"-अबु उबैदा(र०) ने घबराए हुए लहजे में पूछा-"किस की बात कर रहे हो? कौन किस के घेरे में आया हुआ है?"

"अबु-उल-क़ुदस!"-सवार ने कहा-"अबु-उल-क़ुदस के पांच सौ सवारों की बात कर रहा हूं...उन की मदद को जल्दी पहुंचें। एक भी ज़िन्दा नही रहेगा।"

जिन मोअररि्ख़ों ने ये वाक़ेया लिखा है इन सब ने लिखा है के ये वाहिद सवार था जो मेले में भगदड़ मच जाने से फायदा उठाते हुए रोमियों के घेरे से निकल आया था। अभी घेरा मुकम्मल नही हुआ था। इस मुजाहिद ने अंदाज़ा कर लिया था के उस के साथियों का अंजाम क्या होगा। उस ने इन्तेहाई तेज़ रफ्तार से घोड़ा दौड़ाया और दमिश्क़ पहुंचा था।

उस ने बड़ी तेज़ी से बोलते हुए तफसील से बताया के अबु-उल-क़ुदस के मेले में क्या हुआ और क्या हो रहा है। अबु उबैदा(र०) का रंग ज़र्द हो गया। उन्होंने ख़ालिद(र०) की तरफ देखा। ख़ालिद(र०) के चेहरे पर परेशानी का गहरा तास्सुर था।

"अबु सुलेमान!"-अबु उबैदा(र०) ने ख़ालिद(र०) से इल्तेजा के लहजे में कहा-"अल्लाह के नाम पर अबु सुलेमान! तेरे सिवा इन्हे घेरे से कोई नहीं निकाल सकता। जाओ, फौरन जोओ।"

"अल्लाह की मदद से में ही इन्हें घेरे से निकालूंगा"-ख़ालिद(र०) ने जोश से उठते हुए कहा-"मेंतेरे हुक्म के इन्तेज़ार में था अमीन-उल-उम्मत!"

"मुझे माफ कर देना अबु सुलेमान!"-अबु उबैदा(र०) ने कहा-"में ने तेरी नीयत पर शक किया था इस लिए हुक्म न दिया। मेंरा ख्याल था के माजूली ने तुझ पर बहुत बुरा असर किया है।"

"खुदा की क़सम, मुझ पर एक बच्चे को सालारे आला मुक़र्रर कर दिया जाएगा तो मेंउस का भी मतीअ रहूंगा"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"मुझे तो रसूल अल्लाह(स०) के अमीन-उल-उम्मत ने कहा है। क्या मेंऐसे गुनाह की जुर्रत कर सकता हूं के तेरा हुक्म न मानूं? मेंतो तेरे क़दमों की ख़ाक की भी बराबरी नहीं कर सकता....और बता दे सब को के अबु सुलेमान(र०) अब्ने वलीद ने अपनी ज़िन्दगी इस्लाम के लिए वक़्फ कर दी है।"

मोअररि्ख़ वाक़दी और तिबरी लिखते हैं के अबु उबैदा(र०) की आंखों में आंसू आ गए और वो कुछ देर इब्ने वलीद(र०) को देखते रहे।

"तुझ पर अल्लाह की रहमत हो"-अबु उबैदा(र०) ने कहा-"जा अबू सुलेमान! अपने भाईयोंकी जानेंबचा।"

❁

तारीख़ों मेंऐसी तफसीलात नहीमिलती के ख़ालिद(र०) अपने साथ कितने सौ या कितने हज़ार सवार ले कर गए थे। बाक़ी हालात मुख़तलिफ तारीख़ों में बयान किए गए है ख़ालिद(र०) ने "बरहना मुजाहिद" ज़रार बिन लाज़ौर(र०) को साथ ले लिया था और इन दोनों के पीछे मुसलमान रिसाला सरपट घोड़े दौड़ाता जा रहा था।

ख़ालिद(र०) और ज़रार(र०) तो घिरे हुए मुजाहेदीन की मदद को चले गए। पीछे अबु उबैदा(र०) की हालत बिगड़ गई।

"अल्लाह, अल्लाह, अल्लाह!"-वो दुआ के लिए हाथ उठा कर गिड़गिड़ाने लगे- "ख़लीफ़ातुलमुस्लेमीन उमर(र०) ने मुझे लिखा था के माले ग़नीमत के लालच में मुजाहेदीन को ऐसी मुश्किल में न डालना के उन की जानें ज़ाय हो जाएं। उमर(र०) ने लिखा था के फैसला करने से पहले देख भाल कर लेना....मुझे माफ कर देना अल्लाह! ये मुझ से क्या फैसला हुआ है। में ने एक इसाई की बात को सच माना और में ने एक कमसिन लड़के को पांच सौ सवारों की कमान दे दी और उसे इतना भी न कहा के वो अपने दस्ते को दूर रोक कर हदफ की देख भाल ज़रूर कर ले।"

अबु उबैदा(र०) के रफीक़ सालार इन्हें तसल्लियां देते रहे लेकिन अबु उबैदा(र०) ने जो पंच सौ क़ीमती सवारों को अपनी लग़ज़िश की भट्टी में झोंक दिया था इस पर वो मुतमईन नहीं थे।

❁

ख़ालिद(र०) और ज़रार अपने सवारों के साथ इन्तेहाई रफ्तार से अबु-उल-कुदस पहुंच गए। वहां मुजाहेदीन की हालत बहुत बुरी थी। ख़ालिद(र०) के हुक्म से इन के सवारों ने तकबीर के नारे लगाने शुरू कर दिए। इन नारों से इन का मक़सद ये था के घेरे में आए हुए मुसलमान सवारों की हौसला अफज़ाई हो और रोमियों पर दहशत तारी हो।

इस के बाद ख़ालिद(र०) ने अपना नारा बुलंद किया:

अना फारस-ए-ज़दीद

अना ख़ालिद(र०) बिन वलीद

रोमियों ने पहले माअरकों में ये नारा सुना था। इस नारे के साथ हीं मुसलमानों ने उन्हें जिस हालत में काटा और भगाया था, इसे तो वो बाक़ी उम्र नही भूल सकते थे।

रोमी सवार अपने नरग़े में लिए हुए मुसलमानों को तो भूल ही गए। ख़ालिद(र०) ने अपने सवारों को फैला कर बर्क़ रफ्तार हमला कराया ताके रोमियों को आमने सामने की लड़ाई की तरतीब में आने की मोहलत ही न मिले। ख़ालिद(र०) को अपनी एक कमज़ोरी का अहसास था। वो दमिश्क़ से घोड़ों को दौड़ाते हुए अबु-उल-कुदस तक पहुंचे थे। घोड़े थक गए थे। इन के जिस्मों से पसीना टपक रहा था। ख़ालिद(र०) की कोशिश ये थी के रोमियों को जल्दी भगाया जाए वरना घोड़े जवाब दे जाएंगे।

ज़रार बिन लाज़ौर(र०) ने अपना वही कमाल दिखया जिस पर वो रोमियों में मशहूर हो गए थे। उन्होंने अपनी खुद ज़िरा और अपनी क़मीज़ भी उतार फैंकी और

रामियों पर टूट पड़े। रोमी सवार इतनी आसानी से पीछे हटने वाले नही थे। वो अपने नरगे में लिए हुए मुसलमान सवारों में से कई एक को शहीद और ज़्यादा तर को शदीद ज़ख़्मी कर चुके थे। इन में जो बच गए थे, इन्हें ख़ालिद(र०) के आजाने से नया हौसला मिला। रोमी खालिद(र०) और ज़रार(र०) के सवारों के मुक़ाबले लिए मुड़े तो पीछे से उन बचे कुदे सवारों ने उन पर हल्ला बोल दिया जो कुछ देर पहले तक उन के नरगे में आए हुए थे।

माअरका खूंरेज़ और तेज़ था। अब रोमी घेरे में आ गए थे। उन की तादाद ज़्यादा थी। वो सुकड़ते थे तो उन के घोड़ों को खुल कर हरकत करने की जगह नही मिलती थी। मुसलमान सवारों ने इन्हें बुरी तरह काटा और ज़्यादा वक़्त नहीं गुज़रा था के रोमी सवार माअरके से निकल निकल कर भागने लगे। आख़िर वो अपनी बहुत सी लाशों और शदीद ज़ख़्मियों को पीछे छोड़ कर भाग गए।

उन मुसलमान सवारों का जानी नुक़सान कुछ कम न था जो रोमियों के घेरे में लड़ते रहे थे। ख़ालिद(र०) ने हुक्म दिया के मेले का सामान इक्ठा किया जाए। उन्होंने बहुत से मुजाहेदीन को ज़ख़्मियों और लाशों को उठाने पर लगा दिया। ख़ालिद(र०) की अपनी ये हालत थी के उन के जिस्म पर कई ज़ख़्म आए थे और उन के कपड़े खून से सुर्ख़ हो गए थे। इन्हें इन ज़ख़्मों की जैसे परवाह ही नहीं थी। ज़ख़्म ख़ालिद(र०) के लिए कोई नई चीज़ नहीं थी। उन के जिस्म पर उस वक़्त तक इतने ज़ख़्म आ चुके थे के मज़ीद ज़ख़्मों की जगह ही नहीं थी।

ख़ालिद(र०) वापस दमिश्क़ आए। वो जो माले ग़नीमत लाए थे वो बहुत ज़्यादा और क़ीमती था। ज़ख़्मी हो कर गिरने और मरने वाले रोमियों के सैकड़ों घोड़े भी उन के साथ थे मगर इस माले ग़नीमत के लिए बड़ी क़ीमती जानों की क़ीमत दी गई थी।

अबु उबैदा(र०) को इस जानी नुक़सान का बहुत अफसोस था, अल्बत्ता इन्हें ये देख कर इतमेंनान हुआ के ख़ालिद(र०) ने अपने खिलाफ ये शक दूर कर दिया था के माजूली की वजह से उन में पहले वाली दिलचस्पी और जोश व ख़रोश नहीं रहा। ख़ालिद(र०) ने अपना जिस्म ज़ख़्मी कराके साबित कर दिया था के माजूली का उन पर ज़रा सा भी असर नही हुआ।

अबु उबैदा(र०) ने माले ग़नीमत का पांचवा हिस्सा ख़िलाफत के लिए मदीना भेजा और इस के साथ उमर(र०) को पूरी तफसील लिखी के उन्होंने क्या कारर्वाई की थी, इस से क्या सूरते हाल पैदा हुई और ख़ालिद(र०) ने क्या कारनामा किया। मोअरिख़ लिखते हैं के अबु उबैदा(र०) ने ख़ालिद(र०) की बे तहाशा तारीफ लिखी।

हर मुहाज़ से और हर मैदान से रोमी पस्पा हो रहे थे। रोमियों का शहंशाह हरकुल अंताकिया में था। उस के हां जो भी क़ासिद आता था, वो एक ही जैसी ख़बर सुनाता था:

"उस क़िले पर भी मुसलमानों का क़ब्ज़ा हो गया।"

"फलां मैदान से भी अपनी फौज पस्पा हो गई है।"

"मुसलमान फलां तरफ पेशक़दमी कर गए हैं।"

"हमारे फलां शहर के लोगों ने मुसलमानों को जज़िया देना कुबूल कर लिया है।"

हरकुल के कानों मे अब कोई और बात पड़ती ही नही थी। नीद में भी वो यही ख़बरें सुनता होगा। उस के वज़ीर, मुशीर और सालार वग़ैरा अब उस के सामने शिकस्त का कोई पैग़ाम ले कर जाने से डरते थे, लेकिन उन्हें उस के सामने जाना पड़ता था और उस के साथ शिकस्त की बातें करनी और सुननी पड़ती थीं।

वो अंताकिया की एक शाम थी। अंताकिया की शमें हसीन हुआ करती थीं। ये शहर सल्तनते रोमा का एक अहम और बारौनक़ शहर था। रोम के आला हुक्काम, उमरा और वुज़रा यहां रहते थे। अब तो कुछ अर्से से शहंशाहे रोम हरकुल ने इसे आरज़ी दारूलहुकूमत और फौज हैडक्वाटर बना लिया था। रोमी जंगजू थे। उस दौर में उन की सल्तनत दुनिया की सब से वसी और मुस्तहकम सल्तनत थी। इस्तेहकाम की वजह ये थी के रोम की फौज मुस्तेहकम थी। असलाह की बरतरी और नफरी की इफ्रात के लिहाज़ से ये फौज अपने दुश्मनों के लिए दहशतनाक थी।

इस फौज ने और इस के सालारों और दीगर आला हुक्काम ने अंताकिया को पुर रौनक़ शहर बना रखा था। ऐश व इशरत का हर सामान मौजूद था। वहां क़हबा ख़ाने थे। रक्स और नग़मे थे और वहां निस्वानी हुस्न की चलती फिरती नुमाइश लगी रहती थी। वहां शामें मुस्कुराती और रातें जागती थी लेकिन अब अंताकिया की शामें उदास हो गई थी।

फौजी यहां आते जाते रहते थे। जब कोई नया दस्ता आता था तो क़हबा ख़ानो की रौनक़ बढ़ जाती थी और चलती फिरती तवाईफों में इज़ाफा हो जाता था, मगर अब अंताकिया में बाहर से जो फौजी आते थे वो ज़ख्मी होते थे।, और जो ज़ख्मी नही होते थे, उन के चेहरों पर मुर्दनी छाई हुई होती थी। हर फौजी शिकस्त की तस्वीर बना होता था। उन की चाल में और उन के चेहरों पर शिकस्त साफ नज़र आती थी। ग़ैर औरतें उन के

क़रीब क्यों आती, उन की अपनी बीवियां उन्हें अच्छी निगाहों से नही देखती थी। इन रोमी फौजियों ने रोम की जंगी रिवायात को तोड़ दिया था। क़ैसरे रोम की अज़मत को पामाल कर दिया था।

अंताकिया में जो रोमी औरतें थी, उन्होंने हरकुल को भी नही बख़्शा था। वो शाम अंताकिया की अफसुर्दा शामों मे से एक शाम थी। हरकुल शाही बग्घी पर कही से आ रहा था। उस के आगे आठ घोड़े शाहाना चाल चलते आ रहे थे। इन के सवार हरकुल के मुहाफिज़ थे। इन सवारों की शान निराली थी। उन के हाथों में बरछियां थी जिन की अन्नियां ऊपर को थीं और हर बरछी की अन्नी से ज़रा नीचे रेशमी कपड़े की एक एक झंडी थी। बग्घी के पीछे भी आठ दस घुड़ सवार थे।

एक शौर उठा–"शहंशाह की सवारी आ रही है।"

लोग अपने शहंशाह को देखने के लिए रास्ते के दोनों तरफ खड़े हो गए। इन में औरतें भी थी। औरतें उमूमन अपने दरवाज़ों के सामने या मुंडेरों पर खड़ी हो कर अपने शहंशाह को गुज़रता देखा करती थी लेकिन उस शाम चन्द एक औरतें हरकुल के रास्ते में आ गईं। अगले दो सवार मुहाफिज़ों ने घोड़े दौड़ाए और औरतों को रास्ते से हटाने लगे लेकिन औरतें गुल मचाने लगी के वो अपने शहंशाह से मिलना चाहती है।

दो और सवार आगे बढ़े क्योंके औरतें पीछे नही हट रही थी। हरकुल की बग्घी उन तक पहंच गई। वो औरतों को देख रहा था। उस ने बग्घी रूकवा ली और उतर आया।

"छोड़ दो इन्हें"–हरकुल ने गरज जैसी आवाज़ में कहा–"इन्हें मुझ तक आने दो।"

वो आगे गया और औरतों ने उसे घेर लिया। वो सब बोल रही थी।

"मै कुछ नही समझ रहा"–हरकुल ने बुलंद आवाज़ से कहा–"कोई एक बोलो। मै सुनूंगा।"

"शहंशाहे रोम!"–एक औरत बोली–"तू कुछ नही समझेगा।"

"जिस ने सल्तनते रोम की तबाही बर्दाश्त कर ली है वो ग़ैरत वाली औरत की बात नही समझेगा"–एक और औरत ने कहा–""हम सब रोमी है हम मुक़ामी नही। यहां की औरतें तेरे रास्ते में नही आएंगी। रोमी चले जाएं, अरब के मुसलमान आ जाएं, इन्हें क्या! बेइज़्ज़ती तो हमारी हो रही है। बेइज़्ज़ती रोमी की हो रही है।"

"अब आगे बोलो"–हरकुल ने कहा–"जो कहना है वो कहो।"

"क्या तू ने फैसला कर लिया है के तूने हमें मुसलमानों के हवाले करना है?"–एक औरत ने कहा–"इस के सिवा कोई और बात कान में नही पड़ती के फलां

शहर पर मुसलमानों का क़ब्ज़ा हो गया है और वहां की रोमी औरतें मुसलमानों की लोंडियां बन गई हैं।"

"हमारी फौज लड़ने के क़ाबिल नही रही तो हमें आगे जाने दे"-एक और औरत ने कहा-"घोड़े, बरछियां और तलवारें हमें दे।"

"जिस फौज से फारसी भी डरते थे"-एक और बोली-"वो फौज अब डरे हुए, ज़ख़्मी और भगोड़े सिपाहियों का हुजूम बन गई है।"

"यहां अब रोम का जो फौजी आता है किसी न किसी क़िले या मैदान से भागा हुआ आता है"-एक और औरत ने कहा।

हरकुल के मुहाफिज़ डर रहे थे के शहंशाहे रोम का अताब उन पर गिरेगा के वो चन्द एक औरतों को उस के रास्ते से नहीं हटा सके। तमाशाई इस इन्तेज़ार में थे के हरकुल इन तमाम औरतों को घोड़ों तले कुचल देने का हुक्म देगा लेकिन हरकुल खामोशी से, तहम्मुल और बुर्दबारी से औरतों के ताने सुन रहा था, शायद इस लिए के वो मुक़ामी नहीं रोमी औरतें थीं।

"हमारी फौज बुज़दिल साबित हुई है"-हरकुल ने कहा-"मैं बुज़दिल नहीं हो गया। शिकस्त खा कर जो भाग आए हैं वो फिर लड़ेंगे। मैं ने शिकस्त को कुबूल नहीं किया।"

"फिर हमारा शहंशह क्या सोच रहा है?"-एक औरत ने पूछा।

"तुम जल्द ही सुन लोगी"-हरकुल ने कहा-"मैं ज़िन्दा हूं। मैं जो सोच रहा हूं वो कर के दिखाऊंगा। फतह और शिकसत होती ही रहती है। वो क़ौम हमेशा दूसरों की गुलाम रहती है जो शिकस्त को तस्लीम कर लेती है। मैं तुम्हें किसी का गुलाम नहीं बनने दूंगा। मुसलमानों ने जहां तक आना था आ चुके हैं अब मेरी बारी है। वो मेरे फंदे में आ गए है अब वो ज़िन्दा वापस नहीं जाएंगे। उन्होंने जो लिया है इस से कई गुना ज़्यादा देंगे... ..मेरे लिए दुआ करती रहो। तुम बहुत जल्दी खुशख़बरी सुनोगी.......और तुम अपने खाविंदों के, अपने भाईयों के, अपने बापों और अपने बेटों के हौसले बढ़ाती रहो।"

"हम उन पर अपने घरों के दरवाज़े बंद कर देंगी"-एक औरत ने कहा।

"तुम उन्हें गले लगाओगी"-हरकुल ने कहा-"अब वो फातेह बन कर तुम्हारे सामने आएंगे।"

औरतों ने अपने शहंशाह को रास्ता दे दिया।

❁

हरकुल ने इन औरतो की महज़ दिल जोई नहीं की थी। मोअररिख़ लिखते है के वो शिकस्त तस्लीम करने वाला जंगजू था ही नही और वो शहंशाह बाद में और सिपाही

पहले था और अपने दौर का मंझा हुआ जरनेल था। ये कहना ग़लत नही के वो ख़ालिद(र०) की टक्कर का जरनेल था और जंगी चालों में उस की महारत का अंदाज़ अपना ही था।

अगर वो सिर्फ शहंशाह होता तो अपनी सवारी के रास्ते में इन औरतों की रूकावट को बर्दाश्त न करता। इन्हें सज़ा देता लेकिन उस ने इन औरतो से हौसला लिया और इन का हौसला बढ़ाया।

उस ने ये भी महसूस किया था के किसी तरफ से शिकस्त की और उस की फौज की पस्पाई की इत्तेला आती थी तो उस के हुक्काम उस के सामने आने से गुरेज़ करते थे। ऐसा ही एक मौक़ा था के उस का एक सालार जो मुशीर की हैसियत से उस के साथ रहता था, उस के सामने गया। इस सालार के चहरे पर मायूसी का जो तास्सुर था वो हरकुल ने भांप लिया।

"क्या है?"–हरकुल ने पूछा।

"मर्जुल दिनयाज से क़ासिद आया है"–सालार ने कहा।

"तो कहते क्यों नहीं के वो एक और पस्पाई की ख़बर लाया है"–हरकुल ने जोशीले लहजे में कहा–"अपने दिलों से मेरा ख़ौफ निकालते क्यों नहीं? शिकस्त और पस्पाई के नाम से घबराते क्यों हो?......बोलो!"

"हां शहंशाह!"–सालार ने कहा–"क़ासिद पस्पाई की ख़बर लाया है...और वहां से भागे हुए सिपाही यहां आना शुरू हो गए हैं।"

"आने दो इन्हें!"–हरकुल ने ऐसे लहजे में कहा जिस में गुस्सा नहीं था और उस के लहजे में शाहाना जलाल भी नही था–"उन का हौसला बढ़ाओ। कोई इन्हें शिकस्त और पस्पाई का ताना न दे। यही सिपाही शिकस्त को फतह में बदलेंगे।"

"सिपाहियों का हौसला तो बहाल हो जाएगा"–सालार ने कहा–"लेकिन लोगों का हौसला टूटता जा रहा है। लोग मुसलमानों को जिन्नात और भूत समझने लगे हैं ऐसी अफवाहें फेल रही है जो लोगों को बुज़दिल बना रही हैं।"

"जानते हो ये अफवाहें कौन फैला रहा है?"–हरकुल ने कहा–"हमारे अपने सालार, कमांडर और सिपाही। ये ज़ाहिर करने के लिए के वो तो बे जिग्री से लड़ते थे लेकिन उन का मुक़ाबला जिन्नात से हो गया।"

"शहंशाहे रोम!"–सालार ने कहा–"मुसलमानों की कामयाबी की एक वजह और भी है....हमारे जिस शहर के लोग उन से सुलह का मुहाएदा कर लेते और जज़िया अदा कर देते हैं, उन के साथ मुसलमान बहुत अच्छा सुलूक करते है उन की औरतों और उन की जवान लड़कियों की तरफ आंख उठा कर भी नही देखते। उन के जान व माल

की हिफाज़त करते है। उन के मज़हब का भी एहतराम करते है। ये खबरें सारे इलाके में फैल जाती है। इस का असर ये होता है के दूसरी जगहों के लोग भी फौज का साथ छौड़ देते है और उसे सुलह पर मजबूर कर देते है। ...इस का कोई इलाज होना चाहिए।"

"इस का इलाज सिर्फ ये है के मुसलमानों को फैसला कुन शिकस्त दे कर हमेशा के लिए खत्म कर दिया जाए" –हरकुल ने कहा– "और इस का बंदोबस्त हो रहा है।"

❁

अबु–उल–कुदस में हरकुल को जो चोट पड़ी थी, उस ने उसे झिंझोड़ डाला था। उसे इस माअरके की तफसीली इत्तेला मिली थी। अबु उबैदा(र०) एक गल्ती कर बैठे थे। रोमी खुश थे के मुसलमानों का एक दस्ता तो फंदे में आया लेकिन खालिद(र०) और ज़रार(र०) ने बरवक्त पहुंच कर न सिर्फ रोमियों का फंदा तोड़ डाला था बल्कि उन्हें बे शुमार जानी नुकसान पहुंचा कर माले गनीमत से मालामाल हो कर लौटे थे।

इस के बाद हरकुल ने जैसे रातों को सोना भी छोड़ दिया था। उस ने उसी रोज़ अपनी सल्तनत के दूरदराज़ गोशों तक कासिद दौड़ा दिए थे। उस ने हुक्म ये भेजा था के ज़्यादा फौजी दस्ते अंताकिया भेज दिए जाऐं। वो सल्तनत की तमाम तर फौज तो इक्ळी नहीं कर सकता था, हर जगह फौज की ज़रूरत थी। उस ने इतने दस्ते मांगे थे जिन के आजाने से किसी भी जगह का दिफाअ कमज़ोर नहीं होता था।

जिन इलाकों से दस्ते आए इन में शुमाली शाम, यूरप के चन्द शहर और जज़ीरा शमिल थे। हरकुल ने अपने हुक्म में कहा था के दस्ते बहुत तेज़ी से आऐं। जब ये आने लगे तो इन में से बाज़ को अंताकिया में रखा गया। और दूसरों को दरियाए उरदन के मगरबी किनारे से ज़रा ही दूर एक मुकाम बीसान पर भेज दिया गया।

हरकुल ने अपने मुशीरों और सालारों को बुलाया। इन में सकलार, शन्स और थियोडोर्स खास तौर पर काबिले ज़िक्र थे। इन तीनों को मुहाज़ों से बुलाया गया था। हरकुल ने इन सब को बताया के मुसलमानों को फैसला कुन शिकस्त देने के लिए उस ने क्या बंदोबस्त किया है और सालारों ने क्या करना है।

"तुम ने देख लिया है के मुसलमान किस तरह लड़ते हैं"–उस ने कहा– "शिकस्त और पस्पाईयों से तुम्हें बद दिल नही होना चाहिए। इन से तुम्हें तजुर्बा हासिल हुआ है। अगर तुम ने कुछ नही सीखा तो तुम्हारे लिए यही एक रास्ता है। जाओ और मुसलमानों की इताअत कुबूल कर लो। कैसरे रोम की अज़मत को मुसलमानों के कदमों में डाल दो और सलीब को बेहरा–ए–रोम में फैंक कर मुसलमानों के मज़हब में दाखिल हो जाओ। तुम्हें अपनी जानें, अपनी बीवियां और अपने माल व अमवाल ज़्यादा अज़ीज़ है। इसी का नतीजा है के अरब के लूटेरे का एक गिरोह तुम्हें शिकस्त पे शिकस्त

देता चला जा रहा है।"

सब पर सन्नाटा तारी हो गया। हरकुल की निगाहें हर एक पर घूम गईं।

"शहंशाहे रोम!"–उस के सालार थियोडोर्स ने सकूत तोड़ा–"हम पीछे ही नही हटते आऐंगे। मै अपने मुताल्लिक् कह सकता हूं के मै आप के पास ज़िन्दा आया तो शिकस्त खा कर नही आऊंगा। अगर मै ने शिकस्त खाई तो मेरी लाश भी यहां नही आएगी।"

इस एक सालार के बोलने से न सिर्फ सन्नाटा टूटा बल्कि सब में जो तनाव पैदा हो गया था वो भी टूट गया। सब ने हरकुल को यक़ीन दिलाया के इन्हें सल्तनते रोम से ज़्यादा और कोई चीज़ अज़ीज़ नहीं।

"मै ने मुसलमानों को यहीं पर ख़त्म करने के लिए जो बंदोबस्त किया है वो नाकाम नहीं हो सकता"–हरकुल ने कहा–"अब तक हमारी फौज मुख़तलिफ जगहों पर बटं कर लड़ती रही है। एक जगह से हमारे सिपाही भागे तो उन्होंने दूसरी जगह जाकर वहां के दस्तों में बददिली फैलाई और अपने आप को शिकस्त के इल्ज़ाम से बचाने के लिए ऐसी बातें की जिन से वहां के दस्तों पर मुसलमानों की दहशत बैठ गई। अब मैं फौज को यक्जा कर के लड़ाऊंगा.....

"तुम ने देखा है के मैं ने कहां कहां से दस्ते मंगवाए हैं और किस क़द्र लश्कर जमा हो गया है। मेरी नज़र दमिश्क़ पर है लेकिन हम दमिश्क़ पर हमला नहीं करेंगे न इस का मुहासरा करेंगे। हम दमिश्क़ से दूर छोटी छोटी लड़ाईयां ज़्यादा नफरी के दस्तों से लड़ा कर मुसलमानों के रसद के वो रास्ते बन्द कर देंगे जो अरब से दमिश्क़ को जाते हें। हम दमिश्क़ या इस के गर्दोनवाह में कोई लड़ाई नही लड़ेंगे बल्कि मुसलमान तंग आकर लड़ना चाहेंगे तो भी हम इन्हें नज़रअंदाज़ करेंगे। हम उन के लिए ऐसे हालात पैदा कर देंगे के वो लड़ने के क़ाबिल रह ही नही जाऐंगे। उन्हें न कहीं से रसद पहुंच सकेगी न कुमक। शहर के लोग ही क़हत से तंग आ कर उन्हें दमिश्क़ छोड़ने पर मजबूर कर देंगे। अगर वो दमिश्क़ से निकल गए तो हम कहीं भी उन के क़दम जमने न देंगे। ये भी ख्याल रखो के हमारी फौजों का इजतेमा ऐसे खुफिया तरीके से हो रहा है के मुसलमानों को इस की ख़बर तक नहीं होगी।"

❁

हरकुल का तो ये ख्याल था के उस के लश्कर का इजतेमा खुफिया रखा गया है लेकिन मुसलमानों के सालारे आला अबु उबैदा(र०) के साथ ख़ालिद(र०) थे। ख़ालिद(र०) ने निहायत मज़बूत और तेज़ जासूसी निज़ाम तरतीब दिया था। अबु उबैदा(र०) ने ख़ालिद(र०) बिन वलीद को सवार दस्ते का सालार बना रखा था और इस

के साथ ही इन्हें अपना मुशीर भी समझते थे। मोअररिख़ों के मुताबिक़ अबु उबैदा(र०) सालार की महारत रखते थे और जंगी उमूर को भी पूरी तरह समझते थे लेकिन उन में वो तेज़ रफ्तारी नही थी जो ख़ालिद(र०) में थी। ख़ालिद(र०) अपने फैसलों में बड़े ख़ौफनाक क़िस्म के ख़तरे भी मोल ले लिया करते थे। इस के बरअक्स अबु उबैदा(र०) अहतियात के क़ायल थे। अपनी इस आदत को समझते हुए उन्होंने ख़ालिद(र०) को हर लम्हा अपने साथ रखा। वो कोई भी मंसूबा बनाते या फैसला करते थे तो इस में ख़ालिद(र०) के मशवरों को ख़ास तौर पर शामिल करते थे।

ख़ालिद(र०) जासूसी और देखभाल के निज़ाम पर ज़्यादा तवज्जह दिया करते थे। अब ये उन की ज़िम्मेदारी नहीं रही थी क्योंके ये ज़िम्मेदारी सालारे आला की थी और ख़ालिद(र०) दूसरों सालारों की तरह आम क़िस्म के सालार थे, लेकिन अपनी माज़ूली के बावजूद वो अपने फराइज़ से बे इन्साफी गवारा नहीं करते थे। उन्होंने जासूसी के निज़ाम पर पहले की तरह तवज्जह दिए रखी। इसी का नतीजा था के मुसलमान जासूस रोमियों की सल्तनत के दूर अन्दर तक चले गए थे।

एक रोज़ एक जासूस आया। वो बहुत दूर से आया था। उस ने बताया के रोमियों का एक लश्कर बेहरा-ए-रोम के रास्ते कश्तियों पर आया है। इस जासूस ने अपने उन जासूसों से राब्ता किया जो और आगे तक गए हुए थे। वो उन सब की इत्तेला ले कर बड़ी ही तेज़ रफ्तार से दमिश्क़ पहुंचा और ये इत्तेला दी के रोमियों ने कम बेश एक लाख नफरी का लश्कर दरियाए उरदन के मग़रिब में जमा कर लिया है।

तारीख़ के मुताबिक़ बीसान के मुक़ाम पर दिसम्बर 634ई० के आख़री और ज़ीक़दा 13 हिज्री के पहले हफ्ते में रोमियों की फौज का ये इजतेमा हुआ था। जासूस ने अपने अंदाज़े के मुताबिक़ इस लश्कर की तादाद एक लाख बताई थी। असल में रोमी फौज की तादाद अस्सी हज़ार थी।

इतनी बड़ी तादाद इक्ठी करने का मतलब यही लिया जा सकता था के रोमी बहुत बड़ी जंगी कारर्वाई करना चाहते हैं। सालारे आला अबु उबैदा(र०) ने अपने सालारों को बुलाया।

"मेरे अज़ीज़ साथियों!" -अबु उबैदा(र०) ने सालारों से कहा- "तुम पर अल्लाह की रहमत हो। शुक्र अदा करो अल्लाह की ज़ात-ए-बारी का जिस ने हमें हर मैदान में फतह अता की,....मैं तुम्हें अहसास दिलाना चाहता हूं के हम इतनी दूर निकल आए है जहां से हमारी वापसी ना मुमकिन हो गई है। अल्लाह ने हमे बड़े सख़्त इम्तेहान में डाला है। अगर हम इस इम्तेहान में पूरे उतरे तो ये एक रिवायत बन जाएगी जो हमारी आने वाली नस्लों के लिए मशअले राह बनेगी। मत भूलना के हम न माले ग़नीमत के लिए

लड़ रहे है न हमारा मक़सद कशोरकशाई है। अल्लाह और उस के रसूल(स०) ने हमें बनी नूअ इन्सान को ज़ुल्मत और गुलामी से निजात दिलाने का फर्ज़ सौंपा है। अब दुश्मन ने हमारे सामने दीवारें खड़ी कर दी है.....

"रोमी कम व बेश एक लाख का लश्कर ले कर आए हैं इस से उन के अज़ाइम का पता चलता है। जहां तक मै समझ सका हूं, और यही हो सकता है के रोमी दमिश्क़ पर हमला करेंगे। अगर दमिश्क़ हमारे हाथ से निकल गया तो फिर कहीं क़दम जमाना हमारे लिए मुश्किल हो जाएगा। दुश्मन ने बेहरा-ए-रोम से अंताकिया, बैरूत और एक दो और बंदरगाहों पर यूरोप से फौज ला कर उतारी है। हमें सब से पहले दमिश्क़ के दिफाअ को मज़बूत करना है लेकिन हम एक ही जगह पर जमा नहीं हो जाऐंगे।"

"हमारी तादाद इस वक़्त कितनी होगी?"-एक सालार ने पूछा।

अबु उबैदा(र०) ने ख़ालिद की तरफ देखा।

"हमारी तादाद पहले से कुछ ज़्यादा हो सकती है"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"पिछ्ली लड़ाईयों में जो मुजाहेदीन ज़ख़्मी हुए थे वो अल्हम्दो लिल्लाह सेहतयाब हो कर वापस आ चुके हैं। मेरे अंदाज़े के मुताबिक़ हमारी नफरी तीस हज़ार तक हो जाएगी। हमें एक सहूलत और हासिल हो गई है। वो ये है के मुजाहेदीन ने काफी आराम कर लिया है।"

अबु उबैदा(र०) और ख़ालिद(र०) ने मिल कर मंसूबा तैयार किया के रोमियों के इस लश्कर का मुक़ाबला किस तरह किया जाएगा। अमीरूलमोमेनीन उमर(र०) ने मुहाज़ पर लड़ने वाले सालारों पर ये पाबंदी आयद कर दी थी के किसी बड़ी जंग का मंसूबा बना कर उन से मंज़ूर कराया जाए। उमर(र०) ग़ैर मा़ली फहम व फिरासत के मालिक थे। बाज़ जगहों की प्लानिंग वो खुद मदीने में बैठ कर करते और मुहाज़ को भेजते थे। अबु उबैदा(र०) ने इस पाबंदी के मुताबिक़ एक तेज़ रफ्तार क़ासिद मदीने को रवाना कर दिया। उसे जो पैग़ाम दिया गया इस में नई सूरते हाल लिखी गई थी और मंसूबा भी तहरीर था।

वक़्त बहुत थोड़ा था। दुश्मन बे तहाशा नफरी ले कर आया था। कुछ कहा नहीं जा सकता था के किस लम्हें वो क्या कारर्वाई शुरू कर दे लेकिन मुसलमानों ने पैग़ाम रसानी का निज़ाम इतना तेज़ और महफूज़ बना रखा था के थोड़े से वक़्त में दूर के फासले पर पैग़ाम पहुंच जाता था।

अमीरूलमोमेनीन ने सूरते हाल और मंसूबे का जाएज़ा लिया। इस में कुछ रद्दोबदल किया और मंसूबे को मंज़ूरी दे दी। यज़ीद बिन अबु सफयान(र०) दमिश्क़ में थे। वो सालार भी थे और दमिश्क़ के हाकिम भी। उन्हें पैग़ाम भेजा गया के दुश्मन क्या

सूरते हाल पैदा कर रहा है और वो बदस्तूर दमिश्क़ में रहें। इन्हें ये हिदायत भी दी गई के दमिश्क़ के शुमाल मग़रिब पर जासूसों और देख भाल करने वाले आदमियों के ज़रिये नज़र रखें क्यों के तवक़्क़ो यही है के रोमी उधर से हमला करेंगे।

सालार शरजील(र०) बिन हस्ना अपने दस्तों के साथ इस इलाक़े में थे जिस में बीसान और फहल वाक़े थे। ख़लीफा उमर(र०) ने ख़ास तौर पर लिखा था के सालार शरजील(र०) को इस जंग के लिए सालार मुक़र्रर किया जाए जिस की रोमी तैयारी कर के आए हैं ख़ालिद(र०) को इस फौज के हराविल दस्ते की सालारी सौंपी गई थी। जनवरी 635 ई० के दूसरे हफ्ते में इन दस्तों ने जिन की तादाद तक़रीबन तीस हज़ार थी, कूच किया। इन्हें बीसान से कुछ दूर फहल के मुक़ाम तक पहुंचना था। ये दस्ते जब फहल पहुंचे तो देखा के वहां रोमी फौज नहीं थी। वहां रोम की पूरी फौज को नहीं होना चाहिए था। ख़बर मिली थी के चन्द एक दस्ते वहां मौजूद हैं लेकिन ये दस्ते जा चुके थे। वहां के मुक़ामी लोगों ने बताया के रोमियों के ये दस्ते बीसान चले गए हैं जहां उन के पूरे लश्कर का इजतेमा है।

मुसलमान आगे बढ़ना चाहते थे लेकिन दरिया के दोनों तरफ दूर दूर तक दलदल थी जिस में से गुज़रना मुमकिन नही था। बाज़ मोअररिख़ों ने लिखा है के ये दलदल दरिया के दोनों किनारों से ले कर एक एक मील दूर तक फैली हुई थी। ये इलाक़ा सतह-ए-समुंद्र से कई सौ फिट नीचे है और वहां उस दौर में नशीब ज़्यादा थे। देख गया के वहां दरिया के किनारे टूटे हुए नही थे फिर ये पानी कहां से आ गया था जिस ने इस नशीबी इलाक़े को दलदल बना डाला था?

"कुछ दूर ऊपर जा कर देखें"-एक मुक़ामी आदमी ने बताया-"फहल में रोमी फौज के दस्ते रहते थे। वो यहीं से चले गए। ऊपर की तरफ जा कर उन्होंने दरिया में पत्थरों का बन्द बांधा और दोनों किनारे तोड़ दिए। इस तरह ऊपर से ये पानी यहां आ कर जमा हो गया और फैलता चला गया।"

रोमियो ने मुसलमानों को रोकने का बड़ा सख़्त इन्तेज़ाम किया था। रोमियों ने ग़ालिबन ये सोचा था के मुसलमान सहरा में या मैदान में चलने और लड़ने के आदी हैं और वो दलदल में से नहीं गुज़र सकेंगे।

अगर उन्होंने ये सोचा था तो ठीक सोचा था। दलदल मुसलमानों के लिए बिल्कुल नई चीज़ थी। उन के लिए तो चट्टानें और पहाड़ियां भी नई चीज़ थी लेकिन उन्होंने पहाड़ी इलाक़ो में भी लड़ाईयां लड़ी थीं और दुश्मन को शिकस्त दी थी। वो दलदल में से भी गुज़र जाते लेकिन इन के पास इतना वक़्त नही था।

❋

सालार शरजील(र०) ने दलदल से कुछ दूर हट कर अपने दस्तों को एक तरतीब में कर दिया। दायें और बायें पहलूओं पर अबु उबैदा(र०) और उमरो(र०) बिन आस थे। सवार दस्ते की कमान ज़रार(र०) बिन लाज़ोर को दी गई। ख़ालिद(र०) को वो दस्ते दिए गए जिन्हें बीसान की तरफ जाना था।

ख़ालिद(र०) हराविल में थे। कुछ आगे गए तो दलदल ने उन के पांव जकड़ लिए। ख़ालिद(र०) अपनी आदत के मुताबिक़ दलदल में से गुज़रने की कोशिश करने लगे लेकिन दलदल ज़्यादा होती गई और वो मुक़ाम आ गया जहां दलदल में से पांव निकालना भी नामुमकिन हो गया। चुनांचे वो दलदल में से निकलने लगे। निकलना भी दुश्वार हो गया। बड़ी कोशिश के बाद ख़ालिद(र०) अपने दस्तों के साथ दलदल से निकलने और वापस फहल आ गए।

रोमी सालार सक़लार तजुर्बाकार सालार था। वो जंग के लिए बिल्कुल तैयार था। मोअरिख़ लिखते हैं के वो अपने इस धोके को कामयाब समझता था के मुसलमान दलदल में से नही निकल सकेंगे। इसी दलदली इलाके में ऐसी जगह भी थी जहां पानी के नीचे ज़मीन बहुत सख़्त थी और वहां कीचड़ नहीं था। वहां से आसानी से गुज़रा जा सकता था। इस क़िस्म के रास्ते का इल्म सिर्फ रोमियों को था। सक़लान ने अपने लश्कर से कुछ दस्ते अलग किए और इन्हें एक जगह इक्ळा किया।

"अज़मते रोम के पास्बानों!"-उस ने अपने लश्कर से कहा-"आज तुम्हारा दुश्मन फंदे में आ गया है। मुसलमान दलदल में से नहीं गुज़र सके। उन्होंने दलदल से परे फहल के मुक़ाम पर पड़ाव डाल दिया है। हम इसी दलदल में से जिस में से मुसलमान नही गुज़र सके इन्हें गुज़र कर दिखऐंगे। वो समझते होंगे के उन के आगे दलदल है जो उन्हें हम से महफूज़ रखेगी। हम रात को हमला करेंगे। उस वक़्त वो अपने पड़ाव मे गहरी नींद सोए हुए होंगे.....

"ऐ रोमियों! ये रात की लड़ाई होगी जो आसान नहीं होती लेकिन आज तुम्हें अपने उन साथियों के खून का बदला लेना है जो अब तक मुसलमानों के हाथों मारे गए हैं। तुम्हें अपना शिकार सोया हुआ मिलेगा। कोई एक भी ज़िन्दा निकल कर न जाए। इन के घोड़े इन के हथियार और इन के पास हमारा लूटा हुआ जो माल है, सब तुम्हारा है। अगर तुम इन सब को ख़त्म कर दोगे तो समझो तुम ने इस्लाम को ख़त्म कर दिया और यही हमारा मक़सद है। शहंशाह हरकुल का ये वहम दूर कर दो के हम मुसलमानों को शिकस्त दे ही नही सकते।"

रोमी सिपाही ये सुन कर के वो अपने दुश्मन को बे ख़बरी में जा लेंगे, जोश से फटने लगे। इन में कुछ ऐसे भी थे जो पहली लड़ाईयों में मुसलमानों के हाथों ज़ख़्मी हुए

थे, कई भागे भी थे। वो दांत पीस रहे थे। वो इन्तेकाम की आग में जल रहे थे और वो मुसलमानों को अपनी तलवारों से कटता और बरछियों से छलनी होता देख रहे थे।

❁

23 जनवरी 635ई० बमुताबिक 27 ज़ीक़द 13 हिज्री का सूरज गुरूब हो गया तो रोमियों के सालार सक़लार ने अपनी फौज को तैयारी का हुक्म दिया। शाम बड़ी तेज़ी से तारीक होती गई। सक़लार ने पेश क़दमी का हुक्म दे दिया। उसे दलदल में से गुज़रने का रास्ता मालूम था। अपने दस्तों को उस ने इस रास्ते से गुज़ारा। जब तमाम दस्ते गुज़र आए तो सक़लार ने इन्हें उस तरतीब में कर लिया जिस तरतीब में हमला करना था। ये हमला नहीं शब खून था और ये यक तरफा काररवाई थी।

इस तरतीब में सक़लार ने अपने दस्तों को फहल की तरफ पेशक़दमी का हुक्म दिया। वो खुद सब से आगे था। उस ने पेशक़दमी की रफ्तार तेज़ रखी ताके मुसलमानों को इन के आने की ख़बर हो भी जाए तो इन्हें संभलनगे की मोहलत न दी जाए।

रोमी उस जगह पहुंच गए जहां मुसलमानों का पड़ाव तथा लेकिन वहां कुछ भी नहीं था। सक़लार जासूसों को कोसने लगा जिन्होंने उसे बताया था के पड़ाव फलां जगह है।

उसे अल्लाह अकबर के नारे की गरज सुनाई दी। इस के साथ ही मशालें जल उठीं। सक़लार ने देखा के मुसलमान न सिर्फ बेदार हैं बल्कि लड़ने की तरतीब में खड़े हैं।

सालार शरजील(र०) मोहतात सालार थे। इन्हें यहां आ कर जब मालूम हुआ था के ये दलदल कहां से आ गई है तो उन्होंने महसूस कर लिया था के रोमियों ने उन का सिर्फ रास्ता ही नहीं रोका बल्कि वो कुछ और भी करेंगे। रोमी यही कर सकते थे के हमला कर दें। चुनांचे शरजील(र०) ने शाम के बाद अपनी फौज को सोने की बजाए लड़ाई के लिए तैयार कर लिया था।

इस के अलावा उन्होंने अपने जासूस दलदल के इर्द गिर्द फैला दिए थे। रोमी जब दलदल में से गुज़र रहे थे, एक जासूस ने शरजील(र०) को इत्तेला दे दी के दुश्मन आ रहा है। शरजील(र०) ने अपने दस्तों को एक मोज़ूं जगह जो उन्होंने दिन को देख ली थी, जंगी तरतीब में खड़ा कर दिया।

"मदीना वालों!"-सक़लार ने बुलंद आवाज़ से मुसलमानों को लल्कारा-"आगे आओ। अपना और अपनी फौज का अन्जाम देखो।"

"हमला करने तुम आए हो"-शरजील(र०) ने लल्कारा का जवाब लल्कार से दिया-"आगे तुम आओ। तुम उस दलदल से निकल आए हो, अब हमारी दलदल से

निकल कर देखो....रोमियों! कल सुबह का सूरज नहीं देख सकोगे। "

लल्कार का तबादला होता रहा। आख़िर सक़लार ने अपने एक दस्ते को हमले का हुक्म दे दिया। उस ने ये चाल चली थी के उस का दस्ता हमला कर के पीछे हट आएगा तो मुसलमान भी उस के साथ उल्झे हुए आगे आ जाऐंगे लेकिन शरजील (र०) ने पहले ही हुक्म दे रखा था के दिफाई लड़ाई लड़नी है। इस के मुताबिक़ मुसलमान जहां थे वहीं रहे। रोमी मौजों की सूरत में उन पर हमला करते थे और मुसलमन हमला रोकते थे। अपनी तरतीब नहीं तोड़ते थे।

सालार शरजील(र०) रात के वक़्त कोई चाल चलने का ख़तरा मोल नहीं लेना चाहते थे। उन की नफरी रोमियों के मुक़ाबले में बहुत थोड़ी थी। इसे वो कारगर अंदाज़ से दिन की रौशनी में ही इस्तेमाल कर सकते थे। सक़लार ग़ालिबन इस धोके में आ गया था के मुसलमानों में लड़ने की ताब नहीं रही। इस ख्याल से उस ने मोज दर मौज हमलों में इज़ाफा कर दिया लकिन मुसलमानों ने अपनी सफों को टूटने न दिय। वो आगे बढ़ कर हमला रोकते फिर अपनी जगह पर आ जाते। रोमी हर हमले में अपने ज़ख्मी छोड़ कर पीछे हट जाते।

एक हमले की क़यादत सक़लार ने खुद की। वो अपने दस्ते को लल्कारता हुआ बड़ी तेज़ी से आगे गया। मशालों की रौशनी में मुसलमानों ने रोमियों का परचम देख लिया। चन्द एक मुजाहेदीन रोमियों में घुस गए और सक़लार को घेर लिया। उस के मुहाफिज़ों ने उसे अपने हिसार में ले लिया।

मुहाफिज़ बे जिग्री से लड़े और इस दौरान सक़लार निकलने की कोशिश करता रहा लेकिन वो अपने मुहाफिज़ें के हिसार से जिधर भी निकलता था, मुसलमान उसे रोक लेते थे। एक मुजाहिद इस मआरके से निकल गया और उस ने सालार शरजील(र०) को बताया के अब के रोमियों को इतनी जल्दी पीछे न जाने देना क्योंके कुछ मुजाहेदीन ने रोमियों के सालार को नरग़े में ले रखा है।

शरजील(र०) ने इस इत्तेला पर अपने चन्द एक मुंतख़िब जांबाज़ रोमियों के क़ल्ब में घुस जाने के लिए भेज दिए। थोड़ी ही देर बाद मुजाहेदीन के नारे सुनाई देने लगे:

"खुदा की क़सम, हम ने रोमी सालार को मार डाला है। "

"रोमियों! अपना परचम उठाओ। "

"अपने सालार की लाश ले जाओ रोमियो !"

रोमियों ने देखा। उन का परचम इन्हें नज़र नही आ रहा था और इन्हें अपने सालार की लल्कार भी नही सुनाई दे रही थी। उन में बददिली फैलने लगी लेकिन किसी नायब सालार ने परचम उठा लिया और लड़ाई जारी रखी।

सूरज तुलू हुआ लेकिन मैदाने जंग के गर्दोगुबार में इसे कोई देख ही न सका। मुसलमान भी शहीद हुए थे लेकिन रोमियों की अमवात ज़्यादा थी। मैदान में उन की लाशें बिखरी हुई थीं और उन के ज़ख़्मी जो उठने के क़ाबिल नही थे, रेंग रेंग कर घोड़ों तले कुचले जाने से बचने की कोशिश कर रहे थे। मैदान रोमियों के खून से लाल हो गया था।

"इस्लाम के अलमबदारों!"–सालार शरजील(र०) की लल्कार उठी–"हम ने रोमियों को इन्हीं के खून में नहला दिया है। तुम ने सारी रात इन के हमले रोके हैं अब हमारी बारी है।"

अल्लाह अक्बर का नारा बुलंद हुआ।

शरजील(र०) ने अपने दायें पहलू के एक दस्ते को आगे बढ़ाया। रोमी हमला रोकने के लिए तैयार थे लेकिन रात वो हमले करते और पीछे हटते रहे थे। उन के जिस्म थकन से चुर हो चुके थे। शरजील(र०) ने अपनी फौज की जिस्मानी ताक़त को ज़ाए नहीं होने दिया था। इसी लिए वो दिफाई लड़ाई लड़ाते रहे थे।

शरजील(र०) के दायें पहले के एक दस्ते ने बाहर की तरफ हो कर हमला किया। इस से रोमियों के उस तरफ का पहलू फैलने पर मजबूर हो गया। शरजील(र०) ने फौरन ही रोमियों के दूसरे पहलू पर भी ऐसा ही हमला कराया और इस पहलू को भी क़ल्ब से अलग कर दिया। रोमियों के पहलू दूर दूर हट गए तो शरजील(र०) ने क़ल्ब के दस्तों को अपनी क़यादत में बड़े शदीद हमले के लिए आगे बढ़ाया।

रोमी रात के थके हुए थे और उन का सालार भी मारा गया था। साफ नज़र आ रहा था के उन में लड़ने का जज़्बा मांद पड़ चुका है। मुसलमानों के पहलूओं के दस्ते दुश्मन के पहलूओं को और ज़्यादा फैलाते चले गए। वो अब अपने क़ल्ब के दस्तों की मदद को नहीं आ सकते थे।

मुसलमानों के पहलूओं के दस्तों के सालार मामूली सालार नही थे। वो तारीख़ साज़ सालार अबु उबैदा(र०) और उमरो बिन आस(र०) थे और क़ल्ब के चन्द एक दस्तों के सालार ख़ालिद(र०) थे। रोमियों के लिए ख़ालिद(र०) दहशत का दूसरा नाम बन गया था।

घुड़सवार दस्तों के सालार ज़रार(र०) बिन लाज़ोर थे जो सल्तनते रोम की फौज में इस लिए मशहूर हो गए थे के वो मैदान मे आकर खुद और क़मीज़ उतार कर कमर से ऊपर बरहना हो जाते और लड़ते थे। इन्फेरादी मआरका होता या वो दस्ते की कमान कर रहे होते, वो इस क़द्र तेज़ी से पैंतरा बदते थे के दुश्मन देखता रह जाता और उन की

बरछी में पिरोया जाता या तलवार से कट जाता था।

मुसलमानों की नफरी बहुत कम थी। इस कमी को इन सालारों ने ज़ाती शुजाअत, जारहाना क़यादत औरअसकरी फहम व फिरासत से पूरा किया और सूरज गुरूब होने में कुछ देर बाक़ी थी जब रोमी नफरी की इफरात के बावजूद मुंह मोड़ने लगे। रोमियों में ये खूबी थी के वो तित्तर बित्तर हो कर भागा नहीं करते थे। उन की पस्पाई मुनज़्ज़म होती थी लेकिन फहल के मआरके से वो बे तरह भागने लगे। उन की मरकज़ी क़यादत ख़त्म हो चुकी थी और उन का जानी नुक़सान इतना हुआ था के न सिर्फ ये के उनकी नफरी कम हो गई थी बल्कि इतना ज़्यादा खून देख कर इन पर ख़ौफ तारी हो गया था।

❁

उन की ऐसी बे तरतीब पस्पाई की वजह और भी थी। उन का सालार सक़लार इन्हें दलदल में से निकाल लाया था। उसे मालूम था के कहां से ज़मीन सख़्त है जहां पांव कीचड़ में नहीं धंसेंगे मगर अब उन के साथ वो सालार नहीं था। उस की लाश मैदाने जंग में पड़ी थी। सिपाहियों ने इस लिए भागना शुरू कर दिया के वो जल्दी जल्दी दलदल में वो रास्ता देख कर निकल जाएं।

सालार शरजील(र०) ने दुश्मन को यूं भागते देखा तो इन्हें दलदल का ख़्याल आ गया। उन्होंने दुश्मन के तआक्कुब का हुक्म दे दिया। मुसलमान पियादे और सवार नारे लगाते इन के पीछे गए तो रोमी और तेज़ दौड़े लेकिन दलदल ने उन का रास्ता रोक लिया। हड़बोंग और अफरा तफरी में इन्हें याद ही न रहा के दलदल में से वो कहां से गुज़र आए थे। उन के पीछे भी मौत थी आगे भी मौत। वो दलदल में दाख़िल हो गए और इस में धंसने लगे। मुसलमान भी दलदल में चले गए और इन्हें बुरी तरह काटा। जो रोमी दलदल में और आगे चले गए थे, इन्हें, तीरों का निशाना बनाया गया।

दरिया का पानी छोड़ कर रोमियों ने जो दलदल पैदा की थी के मुसलमान आगे न बढ़ सकें, वो दलदल रोमियों के लिए ही मौत का फंदा बन गई। फहल में लड़े जाने वाले इस मआरके को ज़ातुलरोग़ा यानी कीचड़ की लड़ाई कहा जाता है। इस में से बहुत थोड़े रोमी बच सके थे। वो बीसान चले गए थे।

इस मआरके में दस हज़ार रोमी मारे गए थे और जो ज़ख़्मी हो कर मैदाने जंग में रह गए थे, इन की तादाद भी कुछ कम नही थी।

सालार शरजील(र०) ने वहां ज़्यादा रूकना मुनासिब न समझा। वो दुश्मन के साथ साये की तरह लगे रहना चाहते थे ताके दुश्मन फिर से मुनज़्ज़म न हो सके। उन्होंने अबु उबैदा(र०) और ख़ालिद(र०) को चन्द एक दस्तों के साथ फहल में रहने दिया और

खुद बाक़ी मांदा फौज के साथ आगे बढ़े लेकिन दलदल ने फिर उन का रास्ता रोक लिया। उन्होंने दो तीन ज़ख़्मी रोमियों से पूछा के दलदल से पार जाने का रास्ता कौन सा है।

रोमी ज़ख़्मियों ने इन्हें एक और रास्ता बता दिया। ये बड़े ही दूर का चक्कर था लेकिन दलदल से गुज़रने में भी इतना ही वक़्त लगता था जितना दूसरा रास्ता इख़्तियार करने में। शरजील(र०) ने अबु उबैदा(र०) और ख़ालिद(र०) को उन दस्तों के साथ फहल में छोड़ दिया और दलदल से दूर हट कर इस रास्ते से गुज़र गए ज्रो रोमी ज़ख़्मियों ने इन्हें बताया था। इन्हें दरियाए उरदन भी उबूर करना पड़ा। उन्होंने आगे बढ़ कर बीसान का मुहासरा कर लिया।

बीसान में रोमियों की ख़ासी नफरी थी। हरकुल ने नफरी के बल बूते पर मुसलमानों को फैसला कुन बल्कि तबाह कुन शिकस्त देने का इन्तेज़ाम किया था। उस के मंसूबे की पहली ही कड़ी नाकाम हो गई थी। फहल के मआरके के भागे हुए रोमी चन्द एक ही खुशक़िस्मत थे जो दलदल में से निकल गए थे। उन की पनाह बीसान ही थी।

बीसान का रोमी सालार इस ख़बर के इन्तेज़ार में था के उस के साथी सालार सक़लार ने मुसलमानों को बे ख़बरी में जा लिया है और अब मुसलमानों का ख़तरा हमेशा के लिए टल गया है लेकिन बीसान में पहले रोमी ज़ख़्मी दाख़िल हुए। ज़ख़्मी होने के अलावा उन की ज़हनी हालत भी ठीक नहीं थी। थकन और ख़ौफ से उन की आंखें बाहर को आ रही थीं। उन के होंट खुले हुए थे और वा पांव पर खड़े रहने के क़ाबिल भी नहीं थे।

बीसान में दाख़िल होते ही इन्हे बीसान के फौजियों ने घेर लिया और पूछने लगे के आगे क्या हुआ है।

"काट दिया"-एक सिपाही ने ख़ौफ और थकन से कांपती हुई आवाज़ में कहा-"सब को काट दिया।

"मुसलमानों को काट दिया?"-उन से पूछा गया।

"नहीं"-सिपाही ने जवाब दिया-"उन्होंने काट दिया.....कीचड़ ने मरवा दिया।"

इस के साथ कुछ और सिपाही भी थे। उन की जिस्मानी और ज़हनी हालत भी इसी सिपाही जैसी थी। उन्होंने भी ऐसी ही बातें सुनाई जिन में मायूसी और दहशत थी। इन की ये बातें उस रोमी फौज में दहशत फैल गईं जो बीसान में मुक़ीम थी। इस फौज में ऐसे सिपाही भी थे जो किसी न किसी मआरके में मुसलमानों से लड़ चुके थे। उन्होंने

फहल से आए हुए सिपहियों की बातों में रंग आमेज़ी की। इस का तास्सुर रोमियों पर बहुत बुरा पड़ा।

"मै कहता हूं वो इन्सान है ही नही" –एक सिपाही ने मुसलमानों के मुताल्लिक़ कहा–"हमारी फौज जहां जाती है मुसलमान वहां जैसे उड़ कर पहुंच जाते हैं।"

"उन की तादाद हम से बहुत कम होती है" –एक और सिपाही ने कहा–"लेकिन लड़ाईं शुरू होती है तो उन की तादाद हम से ज़्यादा नज़र आने लगती है।"

❁

दहशत के मारे हुए इन ज़ख़्मी सिपहियों की बातें जो हवा की तरह बीसान के कोनों खुदारों तक पहुंच गई थीं, जल्दी सच साबित हो गईं। एक शौर उठा–"मुसलमान आ गए है। मुसलमानों ने शहर का मुहासरा कर लिया है" –और इस के साथ ही बीसान के अन्दर हड़बोंग मच गई। इन लोगों में से कोई भी क़िले से बाहर नहीं जा सकता था। दरवाज़े बन्द हो चुके थे। वो अब अन्दर ही छिपने की कोशिश कर रहे थे। दरहम व दीनार और सोना वग़ैरा घरों के फर्शों में दबाने लगे।

रोमी फौज क़िले की दीवारों पर और बुर्जों में जा खड़ी हुई।

"रोमियों!" –सालार शरजील(र०) ने लल्कार कर कहा–"खून ख़राबे के बग़ैर क़िला हमारे हवाले कर दो।"

इस के जवाब में ऊपर से तीरों की बौछाड़ें आईं लेकिन मुसलमान इन की ज़द से दूर थे।

"रोमियों!" –सालार शरजील(र०) ने एक बार फिर ऐलान किया–"हथियार डाल दो। जज़िया क़ुबूल कर लो। नही करोगे तो बीसान की ईंट से ईंट बजा देंगे। तुम सब मुर्दा होगे या हमारे क़ैदी। हम किसी को बख़्शेंगे नहीं।"

रोमी फौज में तो मुसलमानों की दहशत अपना काम कर रही थी लेकिन इस फौज के सालार और दीगर ओहदेदारान जंगजू थे। अपनी असकरी रिवायत से इतनी आसानी से दस्तबरदार होने वाले नहीं थे। उन्होंने न हथियार डालने पर आमादगी ज़हिर की न जज़िया की अदाएगी क़ुबूल की।

मुसलमान एक रात और एक दिन मुसलसल लड़े थे, फिर उन्होंने भागते रोमियों का तआक़ुब किया, फिर बीसान तक आए थे। इन्हें आराम की ज़रूरत थी। शरजील(र०) ने इन्हें आराम देने के लिए फौरी तौर पर क़िले पर धावा न बोला। अलबत्ता खुद क़िले के इर्द गिर्द घोड़े पर घूम फिर कर देखते रहे के दीवार कहीं से कमज़ोर है या नहीं या कहीं से सुरंग लगाई जा सकती है?

सात आठ रोज़ गुज़र गए। रोमी इस खुश फहमी में मुब्तेला हो गए के

मुसमलमान कि़ले पर हल्ला बोलने की हिम्मत नही रखते, लेकिन रोमी सालार ये भी देख रहा था के उस की अपनी फौज की हिम्मत मांद पड़ी हुई है। उस ने अपनी फौज के जज़्बे को बेदार करने के लिए ये फैसला किया के वो बाहर निकल कर मुसलमानों पर हमला कर दे और कि़ले की लड़ाई का फैसला कि़ले से बाहर ही हो जाए।

अगले ही रोज़ कि़ले के तमाम दरवाज़े खुल गए और हर दरवाज़े से रोमी फौज रूके हुए सैलाब की तरह निकली। इस में ज़्यादा तर सवार दस्ते थे। उन्होंने तूफान की मानिंद मुसलमानों पर हल्ला बोल दिया। मुसालमानों के लिए ये सूरते हाल ग़ैर मुतावक़्क़े थी। उन की नफरी भी दुश्मन के मुक़ाबले में कम थी।

पहले तो ऐसे लगता था जैसे रोमी मुसलमानों पर छा गए हैं और मुसलमान संभल नहीं सकेंगे लेकिन सालार शरजील(र०) आम सी कि़स्म के सालार नहीं थे। उन्होंने दिमाग़ को हाज़िर रखा और क़ासिदों को दौड़ा दौड़ा कर और खुद भी दौड़ दौड़ कर अपने दस्तों को पीछे हटने को कहा।

मुसलमानों ने इस हुक्म पर फौरी अमल किया और पीछे हटने लगे। इस के साथ ही शरजील(र०) ने बहुत से मुजाहेदीन को कि़ले के दरवाज़ों के क़रीब भेज दिया। इन में ज़्यादा तर तीरअंदाज़ थे। इन के लिए ये हुक्म था के रोमी वापस दरवाज़ों की तरफ आऐंगे तो उन पर इतनी तेज़ी से तीर फैंके जाऐं के वो दरवाज़ों से दूर रहें।

शरजील(र०) और उन के कमांडरों ने अपने दस्तों को मुहासरे की तरतीब से मैदान की लड़ाई की तरतीब में कर लिया। वो इतना पीछे हट आए थे के रोमी कि़ले से दूर आ गए। अब शरजील(र०) ने अपने अंदाज़ से जवाबी हमला किया। रोमी अपने हमले में इतने मगन थे के वो बिखरे रहे। मुसलमानों ने हमला किया तो रोमी बे तरतीबी की वजह से हमले का मुक़ाबला न कर सके। वो कि़ले की तरफ दौड़े तो उधर से मुसलमानों के तीरों ने इन्हें गिराना शुरू कर दिया। मुसलमानों की तीरअंदाज़ी बहुत तेज़ और मोहलक थी।

रोमियों का लड़ने का जज़्बा पहले ही टूटा हुआ था, अब जज़्बा बिल्कुल ही ख़त्म हो गया। रोमियों का जानी नुक़सान इतना ज़्यादा था जिसे वो बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। आखि़र उन्होंने हथियार डाल दिए और शरजील(र०) की शर्तें मानने पर आमादगी ज़ाहिर कर दी। उन्होंने जज़िया और कुछ और महसूलात अदा करने की शर्त भी कुबूल कर ली और कि़ला मुसलमानों के हवाले कर दिया।

फरवरी 635ई० (ज़िलहज 13 हिज्री) के आख़री हफ्ते में बीसान मुकम्मल तौर पर मुसलमानों के क़ब्ज़े में आ गया।

उस वक़्त अबु उबैदा(र०) और ख़ालिद(र०) फहल के शुमाली इलाक़े में पेशक़दमी कर रहे थे।

अंताकिया के बड़े गिरजे का घण्टा बज रहा था। ये बहुत बड़ा घण्टा था। इस की आवाज़ सारे शहर में सुनाई देती थी। नूर के तड़के की ख़ामोशी में इस की "डनडनाडन" और ज़्यादा ऊंची सुनाई दे रही थी। ये 635ई० (14 हिज्री) के मार्च का महीना था। गिर्जे का घण्टा तो बजा ही करता था और लोग इस की आवाज़ में तक़द्दुस महसूस करते थे। उन पर ऐसा तास्सुर तारी हो जाता था जो उन की रूहों को सरशार कर दिया करता था, मगर मार्च 635ई० की एक सुबह इस घझटे की मुतरन्नुम आवाज़ में कुछ और ही तास्सुर था। इस तास्सुर में मायूसी भी थी और ख़ौफ भी।

इस घझटे की अवाज़ें शहंशाह हरकुल के महल में भी सुनाई दे रही थीं। हरकुल सोने की कोशिश कर रहा था। ये तो जागने का वक़्त था लेकिन वो सारी रात नही सोया था। मुहाज़ की ख़बरें उसे सोने नहीं देती थीं। उस ने मुसलमानों की पेशक़दमी को रोकने और इन्हे हमेशा के लिए ख़त्म करने के जो मंसूबे बनाए थे वो बेकार साबित हो रहे थे। मुसलमान बढ़े चले आ रहे थे। हरकुल रातों को जागता और नए से नए मंसूबे बनाता था लेकिन उसका हर इरादा और हर मंसूबा मुसलमानों के घोड़ों के सुमों तले रोंदा जाता था।

एक निहायत हसीन और जवान औरत उस के कमरे में आई। वो उस की नई बीवी ज़ारान थी।

"शहंशाह आज रात भी नहीं सोए"-ज़ारान ने कहा-"क्यों नहीं आप उन सालारों और सिपाहियों को सब के सामने तह तेग़ कर देते जो शिकस्त खा कर वापस आते हैं? वो अपनी जानें बचा कर भाग आते हैं और दूसरे सिपाहियों में बददिली फैलाते हैं।"

शहंशाह हरकुल पलंग पर लेटा हुआ था। ज़ारान उस के पास बैठ गई। हरकुल उठ खड़ा हुआ और कमरे में टहलने लगा।

"ज़ारान!"–उस ने रूक कर कहा–"वो मुसलमानों के हाथों क़त्ल हो रहे हैं। तुम कहती हो के बच कर आने वालों को मै क़त्ल कर दूं। मै इन का ख़ुदा नही। यही है जिन्होंने फारसियों को मेरे क़दमों में बैठा दिया था। फारसी ऐसे कमज़ोर तो नही थे। हमारी टक्कर की क़ौम है। मुसलमानों ने उन्हें भी हर मैदान में शिकस्त दी है। अब वो हमें भी शिकस्त देते चले आ रहे है मै मुसलमानों की क़द्र करता हूं अगर हमारे सालारों ने हथियार डाले हैं तो इस का ये मतलब नही के वो कमज़ोर है।, बल्कि मुसलमान ज्यादा ताक़तवर हैं। उन के सालारों में अक्ल ज़्यादा है"

"तो क्या शहंशाह मायूस हो गए है।?"–ज़ारान ने पूछा।

"नही!"–हरकुल ने कहा–"ये मायूसी नहीं। एक जंगजू एक जंगजू की तारीफ कर रहा है। मुसलमान ओछे दुश्मन नहीं। अगर वो मुझ से हथियार डलवा लेंगे तो तुम मेरे पास ही रहोगी। वो तुम्हें मुझ से नहीं छीनेंगे।"

ज़ारान उस का दिल बहलाने आई थी। उस के खिंचे तने आसाब को सहलाने आई थी। वो हरकुल की चहीती बीवी थी। वो हरकुल को बहलाने के तरीक़े जानती थी लेकिन हरकुल ने उसे ज़्यादा तवज्जह न दी।

गिर्जे का घण्टा बज रहा था।

"लोग गिर्जे को जा रहे हैं"–ज़ारान ने कहा–"सब आप की फतह के लिए दुआऐं करेंगे।"

हरकुल ने ज़ारान को कंखियों से देखा जैसे इस औरत ने उस पर तंज़ की हो। हरकुल ने ज़ारान की बात को भोंडा सा मज़ाक़ समझ कर नज़रअंदाज़ कर दिया।

"सिर्फ दुआऐं शिकस्त को फतह में नहीं बदल सकतीं ज़ारान!"–हरकुल ने कहा–"जाओ, मुझे कुछ सोचने दो। अभी मुझे तुम्हारी ज़रूरत नहीं।"

शहंशाह हरकुल को इत्तेला मिल चुकी थी के उस के सालार सक़लार ने मुसलमानों का रास्ता रोकने और इन्हें फंसाने के लिए जो दलदल फैलाई थी उसी दलदल में उस के अपने सिपाहियों की लाशें पड़ी है और फहल के मुक़ाम पर सक़लार मुसलमानों के हाथों मारा गया और बीसान पर भी मुसलमानों का क़ब्ज़ा हो गया है।

हरकुल का ये मंसूबा तबाह हो चुका था के वो दमिश्क़ पर हमला नही करेगा न इस का मुहासरा करेगा बल्कि अपनी फौज को दमिश्क़ से दूर रख कर दमिश्क़ को जाने वाले रास्ते बन्द कर देगा फिर मुसलमानों को बिखेर कर लड़ाएगा मगर मुसलमानो ने उस के मंसूबे की पहली कड़ी को ही फहल के मुक़ाम पर तोड़ दिया था।

रोम का शहंशाह हरकुल हिम्मत हारने वाला आदमी नहीं था। उस की ज़िन्दगी जंग व जदाल में गुज़री थी। खुदा ने उसे अक्ल ऐसी दी थी जिस से उस ने बड़े खतरनाक हालात का रूख अपने हक में मोड़ लिया था। उसे रोम की शहंशाही 610ई० में मिली थी। उस वक्त रोम की सल्तनत में शुमाली अफरीका का कुछ हिस्सा, युनान और कुछ हिस्सा तुर्की का शमिल था। रोम की शहंशाही तो इस से कहीं ज़्यादा वसी व अरीज़ थी लेकिन हरकुल को जब इस का तख़्त व ताज मिला उस वक्त ये शहंशाही सुकड़ चुकी थी और ज़वाल पज़ीर थी।

हरकुल ने अपने दौरे हकूमत के बीस साल दुश्मनों के ख़िलाफ लड़ते और महलाती साज़िशों को दबाते गुज़ार दिए थे। उस की शहंशाही के दुश्मन मामूली सी कौमें नहीं थीं। एक तरफ फारस की शहंशाही थी, दूसरी तरफ बरबर थे जो बड़े जाबिर जंगजू थे। उन के अलावा तुर्क थे जिन की जंगी ताकत और महारत मुसल्लिमा थी। ये हरकुल की गैर मामूली इन्तेज़ामी फहम व फिरासत और असकरी कयादत की महारत थी के उस ने इन तीनों दुश्मनों को शिकस्त दे कर रोम की शहंशाही को शाम और थ्थ्फलस्तीन तक फैलाया और मुस्तेहकम किया था।

इतने ताकतवर दुश्मनों के ख़िलाफ मुतावातिर मआरका आरा रहने से हरकुल की फौज तजुर्बाकार और मुनज़्ज़म हो गई थी। मुनज़्ज़म भी ऐसी के पस्पा होते वक्त भी तंज़ीम को बरकरार रखती थी। हरकुल की फौज में सिर्फ रोमी ही नहीं थे, कई और अक़वाम के लोग इस फौज में शमिल थे। शाम और थ्थ्फलस्तीन के इसाई भी थे, इन इसाईयों पर उसे कुली तौर पर भरोसा नहीं था। इन के मुताल्लिक़ हरकुल की राय ये थी के ये लोग माले गनीमत के लिए लड़ते हैं और जहां दुश्मन का दबाव ज़्यादा हो जाता है ये भाग उठते हैं।

मुसलमानों को वो अरब के बद्दु कहा करता था। उस ने मुसलमानों को लूटेरे भी कहा था लेकिन उस ने जल्दी ही तस्लीम कर लिया था के अब उस का मुकाबला ऐसे दुश्मन के साथ है जो उस से ज़्यादा फहम व फिरासत का मालिक है और उस के सामने एक मकसद है। हरकुल मुसलमानों के मकसद को कुबूल नहीं कर सकता था। ये मज़हब का मामला था लेकिन वो जान गया था के मुसलमान ज़मीन की ख़ातिर और शहंशाही के कयाम और वुसअत की खातिर घरों से नहीं निकले बल्कि वो एक अकीदे पर जानें कुर्बान कर रहे हैं।

"मैं अपनी फौज में वो जज़्बा पैदा नहीं कर सकता जो मुसलमानों में है" -उसी

रोज़ उस ने अपने उन सालारों को जो अंताकिया में मौजूद थे, बुला कर कहा-"अपने सिपाहियों से कहो के अपने अपने अकीदे की खातिर लड़ें। इन्हें बताओ के जिन जगहों पर मुसलमानों का क़ब्ज़ा हो गया है, वहां के लोग अपना मज़हब तर्क कर के इस्लाम कुबूल करते जा रहे हैं। इन्हे कहो के और कुछ नही तो अपने ज़ाती वकार की खातिर लड़ो। अपनी जवान बेटियों और बहनों को मुसलमानों से बचाने के लिए लड़ो।"

उस ने अपने सालारों की मुहाज़ को ताज़ा सूरते हाल से आगाह किया।

"तो क्या अब तुम महसूस नही करते के हमें अपना मंसूबा बदलना पड़ेगा?"-उस ने अपने सालारो से पूछा।

"हमें मुसलमानों पर ज़्यादा से ज़्यादा ताक़त से हमला करना चाहिए"-एक सालार ने कहा।

"वो तो मै करना ही चाहता हूं"-हरकुल ने कहा-"मैं इतनी ज़्यादा और हर लिहाज़ से इतनी ताक़तवर फौज तैयार कर रहा हूं जिसे देख कर पहाड़ भी कांपेंगे। हम जो इलाके खो चुके है, इन का हमे ग़म नहीं होना चाहिए। ये सब वापस आजाएंगे। मैं तुम मे से किसी के चेहरे पर मायूसी नहीं देखना चाहता। मै ने बीस साल मुसलसल लड़ कर सल्तनते रोम की अज़मत को बहाल किया था। अब भी कर लूंगा लेकिन तुम मुसलमानों से मरऊब हो गए तो मेरी नाकामी यक़ीनी है।"

सालारों ने बारी बारी उसे जोशीले अल्फाज़ में यक़ीन दिलाया के वो अपनी जानें कुर्बान कर देंगे।

"जोश बातों में नही मैदाने जंग में दिखाया जाता है"-हरकुल ने कहा-"ये मै जानता हूं के तुम जानें कुर्बान कर दोगे लेकिन तारीख़ ये देखेगी के तुम्हारी जानें किस काम आईं और तुम दुश्मन को मार कर मरे थे या लड़ाई में मारे जाने वाले सिपाहियों की तरह सिर्फ मारे गए थे......

"अब सुनो हमें क्या करना है। मैं ने दमिश्क़ पर हमला नही करना था लेकिन अब हमें दमिश्क़ को मुहासरे में ले कर इस शहर पर क़ब्ज़ा करना है। वहां से जो इत्तेलाऐं आईं है, इन से पता चला है के दमिश्क़ का दिफाअ कमज़ोर है। वहां मुसलमानों की नफरी बहुत थोड़ी है। ये हमारा फौजी मरकज़ था जिसे मुसलमानों अपना मरकज़ बना लिया है। ये हमें वापस ले लेना चाहिए।"

उस ने एक सालार शन्स से कहा के वो हमस से अपने दस्ते ले कर दमिश्क़ पहुंचे।

".....और थ्यूडोर्स!"-उस ने अपने एक और सालार से कहा-"तुम अपने

साथ ज़्यादा नफरी ले कर दमिश्क़ को रवाना हो जाओ। कूच बहुत तेज़ हो ताके मुसलमानों का कोई इमदादी दस्ता तुम से पहले दमिश्क़ न पहुंच जाए। शन्स तुम्हारी मदद के लिए तुम्हारे क़रीब रहेंगा। दमिश्क़ पर क़ब्ज़ा कर के हम इस को अड्डा बना लेंगे....अब दुनिया को भूल जाओ। अपनी बीवियों और अपनी दाश्ताओं को भूल जाओ। जिसे एक बार शिकस्त हो जाए उसे खाने पीने का भी होश नही रहना चाहिए"-हरकुल ने तारीख़ी अहमियत के अल्फाज़ कहे-"जो क़ौम अपनी शिकस्त को भूल जाती है, उसे ज़माना भूल जाता है और जो क़ौम अपने दुश्मन से नज़रें फैर लेती है वो एक रोज़ इसी दुश्मन की गुलाम हो जाती है....तुम्हारी अज़मत सल्तनत की अज़मत के साथ वाबस्ता है। सल्तनत की अज़मत का दिफाअ नही करोगे तो बे वक़ार ज़िन्दगी बसर करोगे और गुमनाम मरोगे।"

मोअररिख़ लिखते हैं के हरकुल के बोलने के अंदाज़ में बारौब और पुरअज़्म ठहराव था। उस का अंदाज़ा तहक्कुमाना नही था लेकिन उस के अल्फाज़ उस के सालारों पर वही तास्सुर पैदा कर रहे थे जो वो पैदा करना चाहता था।

सालार थ्यूडोर्स और सालार शन्स उसी वक्त नए अहकाम और हिदायत के साथ रवाना हो गए।

उस वक्त अबु उबैदा और ख़ालिद फहल के शुमाल की तरफ जा रहे थे।

मुसलमानो की फौज अब पहले वाली फौज नहीं रही थी। ख़ालिद जब इस के सालारे आला थे तो उन्होंने इसे मुनज़्ज़म कर दिया था। मुजाहेदीन तो पहले भी मुनज़्ज़म ही थे। उन का खुदा एक, रसूल(स०) एक, कुर्आन एक, अक़ीदा और नज़रिया एक था और सालार से सिपाही तक जंग के मक़सद से आगाह थे। फिर भी इसे फारस और रोम की फौजों की तरह मुनज़्ज़म करना ज़रूरी था। वो ख़ालिद(र०) ने कर दिया था। जासूसी और देखभाल को भी बाक़ायदा और मोअस्सर बना दिया था। इस के अलावा ख़पलिद(र०) ने एक सवार दस्ता तैयार किय था जो मुताहर्रिक रहता और इन्तेहाई रफ्तार से वहां पहुंच जाता जहां मदद की ज़रूरत होती थी मगर इन की तादाद थोड़ी थी और रोज़ ब रोज़ थोड़ी होती जा रही था और वो अपने वतन से दूर ही दूर हटते जा रहे थे।

वो इस्लाम का तारीख़ साज़ दौर था। अल्लाह ने इन्हें ये फर्ज़ सौंपा था के वो रिवायात तख़लीक़ करें और उस रास्ते का तईय्युन करें जो आने वाले हर दौर में मुसलमानों की रिवायात और फतह इस्लाभ का रास्ता बन जाए। शमा-ए-रिसालत(स०) मुसलमानों के लहू से ही फरोज़ां रह सकती थी और मुसमलानों को हर दौर और हर मैदान में क़लील तादाद में रहना था।

वो जो 635ई० के अवायल में शाम और थ्फिलस्तीन में आगे ही आगे बढ़े जा रहे थे, उन्होंने अपना आप और अपना सब कुछ इस्लाम की कुर्बान गाह में रख दिया था। वो एक मुक़द्दस लगन से सरशार थे। तलवारों की झंकार और तीरों के ज़न्नाटे और ज़ख़्मियों की कर्बनाक आवाज़ें उन के लिए वज्द आफरी मौसीक़ी बन गई थी। उन के रूकूअ व सजूद भी तलवारों की छांव में होते थे। वो अब गोश्त पोश्त के जिस्म नही, दीन व ईमान और जज़्बा-ए-ईसार के पैकर बन गए थे जो रूकूअ की कुव्वतों से हरकत करते है और ये हरकत बहुत ही तेज़ थी।

❁

अबु उबैदा(र०) और ख़ालिद(र०) अपने दस्तों के साथ हमस की जानिब जा रहे थे। वो फहल से चले थे जहां से हमस तक़रीबन अस्सी मील दूर था। उन के रास्ते में दमिश्क़ पड़ता था जो कम व बैश तीस मील दूर था लकिन इन सालारों ने दमिश्क़ से कुछ दूर से गुज़र जाना था।

दमिश्क़ और फहल के दरमियान एक सरसब्ज़ इलाक़ा था जो बहुत खूबसूरत और रूह परवर था। इस सब्ज़हज़ार का नाम मर्जुलरोम था। मुसलमान दस्तों को वहां कुछ देर के लिए रूकना था। इस से थोड़ी ही दूर रह गए थे के एक घुड़सवार जो फौजी मालूम नहीं होता था, रास्ते में खड़ा मिला। वो कोई शिकारी मालूम होता था। जब दोनों सालार उस के सामने से गुज़रे तो उस ने अपना घोड़ा उन के पहलू में कर लिया और उन के साथ साथ चलने लगा।

"क्या ख़बर है?"-अबु उबैदा(र०) ने उस से पूछा।

"रोमी हमारे मुनतज़िर हैं"-घुड़सवार ने जवाब दिया-"तादाद हम से ज़्यादा है, हमस की तरफ दुश्मन का एक लश्कर आ रहा है।"

ये घुड़सवार कोई शिकारी और अजनबी नहीं था, ये एक मुसलमान जासूस था जो शिकरियों के बहरूप में बहुत आगे निकल गया था। वो अकेला नहीं था। उस के चन्द और साथी भी आगे गए हुए थे। जासूसी इतना आसान काम नही था के दुश्मन की नक़्ल व हरकत देखी और वापस आ कर अपने सालारों को इत्तेला दे दी। दुश्मन के जासूस भी आगे आए हुए होते थे। वो जासूसी के अलावा ये भी देखते थे के दूसरी तरफ का कोई जासूस इन के इलाक़े में न आया हुआ हो। पता चल जाने की सूरत में जासूस पकड़ा या मारा जाता था।

इस जासूस ने सब्ज़ाज़ार में जिस फौज की मौजूदगी की इत्तेला दी थी, मोअरर्ख़िों के मुताबिक़ वो रोमी सालार थ्यूडोर्स के दस्ते थे और जो रोमी फौज आ रही थी, उस का सालार शन्स था।

"अबु सुलेमान!"-अबु उबैदा(र०) ने ख़ालिद(र०) से पूछा-"क्या तू ये तो नही सोच रहा के हम इन रोमियों को नज़र अंदाज़ कर के आगे निकल जाऐं? हमारी मंज़िल हमस है।"

"नही!"-ख़ालिद(र०) ने जवाब दिया-" इन दो फौजों के इधर आने का मक़सद और क्या हो सकता है के ये दमिश्क़ के रास्तों की नाका बंदी कर रहे हैं। मुझे दमिश्क़ ख़तरे में नज़र आ रहा है।"

"अगर रोमी दो हिस्सों में आ रहे है तो क्यों न हम भी दो हिस्सों में हो जाऐं?"--अबु अबैदा(र०) ने पूछा।

"दो हिससें में ही होना पड़ेगा"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"अल्लाह हमारे साथ है। हमारी राहनुमाई अल्लाह करेगा।"

"तुझे अल्लाह सलामत रखे!"-अबु उबैदा(र०) ने कहा-"क्या ये मुनासिब नही होगा के मुजाहेदीन को बता दें?"

ख़ालिद(र०) रकाबों में खड़े हो गए और अपनी फौज को रूकने का इशारा किया।

"मुजाहेदीने इस्लाम!"-अबु उबैदा(र०) ने बड़ी ही बुलंद आवाज़ में अपनी फौज से कहा-"दुश्मन ने हमारा रास्ता रोक लिया है। क्या तुम ने कुफ्र के पहाड़ों के सीने चाक नही किए? क्या शिर्क और अरतदाद की चट्टानों को तुम ने पहले रौंदा नहीं? ये रोमी लश्कर जो हमारे रास्ते में खड़ा है, तादाद में ज़्यादा है लेकिन इस में ईमान की वो ताक़त नही जो तुम में है। अल्लाह तुम्हारे साथ है, बातिल के इन पुजारियों के साथ नही। अल्लाह की खुशनूदी को अपने दिल में रखो और अपने आप को एक और मआरके के लिए तैयार कर लो।"

"हम तैयार हैं"-मुजाहेदीन के नारे गरजने लगे-"हम तैयार है....लब्बेक अबु उबैदा(र०)....लब्बेक अबु सुलेमान(र०)!"

ऐसा जोश व ख़रोश जिस मे घोड़े भी बे चैनी में खुर मारने लगे हों और ऐसे गरजदार नारे जैसे मुजाहेदीन का ये लकश्र तरोताज़ा हो और पहली बार कूच कर रहा हो। ये ईमान की ताज़गी और रूहों का जोश था।

☸

बाज़ मोअरिख़ों ने मर्जुलरोम की लड़ाई को ज़्यादा अहमियत नही दी। इस की जंगी तफसीलात दो यूरपी मोअरिख़ों ने लिखी है जिन में हैनरी सिम्थ क़ाबिले ज़िक्र है। उस ने इसे जंगी मुबस्सिर की निगाहों से देखा और लिखा है। इन तहरीरों के मुताबिक़ अबु उबैदा(र०) और ख़ालिद(र०) ने अपने दस्तों को अलग कर के इन्हें इस

तरह तक़सीम कर लिया के दोनों सालार एक दूसरे की मदद को भी पहुंच सकें।

दानों हिस्सों का हराविल मुश्तरक था और हराविल से आगे देख भाल का भी इन्तेज़ाम था। दोनों सालार इस ज़मीन पर अजनबी थे। दायें और बायें से भी हमला हो सकता था। वो मुसलमान जासूसों को जो बहुत आगे चले गए थे, एक शतुर सवार मिला और रूक गया।

"मेरे दोस्तों!"--उस ने मुसलमान जासूसों से कहा-"तुम उधर से आ रहे हो और मै उधर जा रहा हूं। सुना है उधर से मुसलमान लश्कर आ रहा है। अगर तुम ने इस लश्कर को देखा हो तो बता दो। मै रास्ता बदल दूंगा। कहीं ऐसा न हो के वो मेरा ऊंट मुझ से छीन लें।"

"और तू ये बता के आगे कही रोमी लश्कर मौजूद है?"-मुसलमान जासूस ने पूछा और कहने लगा-"हमें भी वही डर है जो तुझे है। रोमी हम से घोड़े छीन लेंगे।

"रोमी लश्कर का तो कहीं नाम व निशान नहीं"-शतुर सवार ने जवाब दिया-"किस ने बताया है तुम्हें?"

"मर्जुलरोम से आने वालों ने!"-एक मुसलमान जासूस ने जवाब दिया।

"किसी ने ग़लत बताया है।"-शतुसवार ने कहा-"मैं उधर से ही आ रहा हूं।"

दोनों मुसलमान जासूस किसी बहरूप में घोड़ों पर सवार थे। एक ने शतुर सवार की टांग पकड़ कर इतनी ज़ोरा से खींची के वो ऊंट.की पीठ से ज़मीन पर जा पड़ा। दोनों मुसलमान बड़ी तेज़ी से घोड़ों से कूदे और शतुर सवार को संभलने का मौक़ा न दिया। तलवारें निकाल कर नोकें उस की शह रग पर रख दीं।

"तुम इसाई अरब हो"-एक जासूस ने उसे कहा-"और रोमियों के जासूस हो.. ...इन्कार करो। हम तुम्हारे दोनों बाज़ू कंधों से काट देंगे.....मर्जुलरोम की पूरी ख़बर सुनाओ।"

उस ने जां बख़्शी के वादे पर तस्लीम किया के वो रोमियों का जासूस है और उस ने ये भी बता दिया के रोमी सालार थ्यूडोर्स अपने दस्तों के साथ पहले ही मर्जुलरोम में मौजूद था और दूसरा सालार शन्स भी कुछ देर पहले पहुंच गया है।

इस रोमी जासूस को पकड़ कर पीछे ले गए और उसे सालार अबु उबैदा(र०) और सालार ख़ालिद(र०) के हवाले कर दिया गया।

❁

जब मुजाहेदीन का लश्कर मर्जुलरोम के सब्ज़ाज़ार के क़रीब गया तो रोमी लश्कर दो बड़े हिस्सों में लड़ाई के लिए तैयार खड़ा था।

अबु उबैदा(र०) ने अपने दस्तों को उस जगह रोमी लश्कर के सामने रोका जहां

रोमी सालार थ्यूडोर्स के दस्ते थे और ख़ालिद(र०) ने अपने दस्तों को रोमी सालार शन्स के दस्तों के सामने सफ आरा किया। रामियों ने कोई हरकत न की। वो शायद मुसलमानों को हमले की पहल का मौक़ा देना चाहते थे लेकिन ख़ालिद(र०) ने पहल न की। अबु उबैदा(र०) को भी उन्होंने हमला न करने दिया। दोनों मुसलमान सालार हैरान थे के रोमी आगे बढ़ कर हमला क्यों नहीं करते, हालांके इन की तादाद मुसलमानों से बहुत ज़्यादा थी। मुसलमान इसे एक चाल समझ कर आगे न बढ़े।

सूरज गुरूब हो गया। दोनों तरफ की फौजें पीछे हट गईं और सिपाहियों को कुछ देर के लिए सोने की इजाज़त दे दी गई।

मोअररिख़ों ने लिखा है के ख़ालिद(र०) दुश्मन पर टूट पड़ने के आदी थे लेकिन सालारे आला अबु उबैदा(र०) उन की मौजूदगी में कोई आज़ादाना फैसला नही कर सकते थे लेकिन उन की फितरत में जो जंगजू सिपाही था वो इन्हें सोने नही दे रहा था। ख़ालिद(र०) बेचैनी से करवटें बदलते रहे। दुश्मन इन के सामने मौजूद था और लड़ाई नही हुई थी। एक तो ये वजह थी के इन्हें नींद नहीं आ रही थी और एक वजह और भी थी जो इन्हें बेक़रार करती जा रही थी। ये शायद उन की छटी हिस थी। उन्होंने रोमियों के पड़ाव की तरफ से हल्की हल्की आवाज़ें भी सुनी थीं।

इन्हें शक होने लगा के दुश्मन सोया नही और किसी न किसी सरगर्मी में मसरूफ है। आधीं रात के बहुत बाद का वक़्त था जब ख़ालिद(र०) उठ खड़े हुए और अपने पड़ाव में खरामां खरामां चलते पड़ाव से निकल गए। वहां सब्ज़ा ही सब्ज़ा था और दरख़्त बहुत थे। ख़ालिद(र०) झाड़ियों और दरख़्तों की ओट में दुश्मन के पड़ाव की तरफ चले गए।

वो उस जगह पहुंच गए जहां रोमी सालार थ्यूडोर्स के दस्तों को होना चाहिए था लेकिन वहां रोमी फौज का एक भी सिपाही नहीं था। कोई संतरी न था जो उन्हें रोकता। शाम के वक़्त उन्होंने रोमी दस्तों को इस जगह पड़ाव डालते देखा था। रात ही रात वो कहां चले गए? कुछ और आगे जा कर इन्हें ऐसी निशानियां मिली जिन से साफ पता चलता था के फौज ने यहां क़याम किया था।

ख़ालिद(र०) उस तरफ चले गए जिधर रोमियों की फौज के दूसरे हिस्से का पड़ाव था। ख़ालिद(र०) को दूर से ही पता चल गया के वहां फौज मौजूद है वो छिपते छिपाते और आगे चले गए। रोमी संतरी घूम फिर रहे थे। ख़ालिद(र०) दुश्मन के पड़ाव के इर्द गिर्द बढ़ते गए। चांदनी में इन्हें दुश्मन का कैम्प दिखाई दे रहा था।

ख़ालिद(र०) को यक़ीन हो गया के रोमियों की आधी फौज कही चली गई है। ख़ालिद(र०) बड़ी तेज़ी से चलते अबु उबैदा(र०) के पास चले गए और इन्हें बताया के

रोमियों की आधी फौज ला पता हो गई है।

"कहां चली गई होगी?" -अबु उबैदा(र०) ने पूछा।

"जहां भी गई है" -ख़ालिद(र०) ने कहा- "इसे वहीं पहुंचाने के लिए दिन को रोमियों ने लड़ाई से गुरेज़ किया था।"

कुछ देर दोनों सालार इसी पर तबादला-ए-ख्यालात करते रहे के रामियों की फौज का एक हिस्सा कहां ग़ायब हो गया है। मोअररिख़ों के मुताबिक़ ये सालार थ्यूडोर्स के दस्ते थे जो चले गए थे। पीछे सालार शन्स रह गया था। उस के दस्तों की तादाद भी खासी ज़्यादा थी।

❁

सुबह तुलू होते ही रोमी लड़ाई के लिए तैयार हो गए। अबु उबैदा(र०) पहले ही तैयार थे। उन्होंने रोमियों पर हमला कर दिया। उन्होंने अपने दस्तों को हस्बे मामूल तीन हिस्सों में तक़सीम कर लिया था और हमला दुश्मन के पहलूओं पर किया था। खूद उन्होंने दुश्मन के क़ल्ब पर नज़र रखी हुई थी जहां इन्हें सालार शन्स का परचम दिखाई दे रहा था।

मजाहेदीन ने दुश्मन के पहलूओं पर हमला किया और अबु उबैदा(र०) आगे बढ़े और शंस को मुक़ाबले के लिए लल्कारा। शन्स ने घोड़े को ऐड़ लगाई और आगे आ ग़या। अबु उबैदा(र०) ने अपने घोड़े को ऐड़ लगाई और उस की तरफ ग़ए। दोनों सालारों ने एक दूसरे पर वार किया और दोनों की तलवारें टकराईं। शन्स ने ज़रा दूर जा कर घोड़ा मौड़ा लेकिन अबु उबैदा(र०) ने अपने घोड़े को ज़्यादा आगे न जाने दिया। फौरन ही मोड़ कर फिर ऐड़ लगाई। शन्स अभी सीधा भी नही हुआ था के अबु उबैदा(र०) की तलवार उस के कंधे पर पड़ी लेकिन उस की ज़िरा ने उसे बचा लिया।

दोनों के घोड़े फिर दौड़ते एक दूसरे की तरफ आए तो शन्स ने वार करने के लिए तलवार ऊपर की। अबु उबैदा(र०) ने बरछी की तरह वार कर के तलवार उस की बग़ल में उतार दी। ज़रा ही आगे जा क़र घोड़े को मोड़ा। शन्स को ज़ख़्म परेशान कर रहा था। वो अपने घोड़े को बरवक़्त न मोड़ सका। अबु अबैदा(र०) ने उस की एक टांग पर भरपूर वार किया और टांग काट डाली। शन्स गिर रहा था जब अबु उबैदा(र०) फिर वापस आए और शन्स के सर को ढल्का हुआ देख कर गर्दन पर वार किया। शन्स का सर पूरा तो न कटा लेकिन अलग हो कर लटकने लगा। फिर उस की लाश घोड़े से इस तरह गिरी के एक पंव रकाब में फंस गया। अबु उबैदा(र०) ने

शन्स के घोड़े को तलवार की नोक चुभोई। घोड़ा बिदक कर दौड़ पड़ा और अपने सवार की लाश घसीटता फिरा।

इस के साथ ही अबु उबैदा(र०) ने अपने क़ल्ब के दस्तों को दुश्मन के क़ल्ब पर हमले का हुक्म दे दिया जहां खलबली बपा हो चुकी थी क्योंके उन का सालार मारा गया था। रोमी पीछे हटने लगे लेकिन मुजाहेदीन ने उन के अक़ब में जा कर उन के लिए भाग निकलना मुश्किल कर दिया, फिर भी बहुत से रोमी निकल गए और हमस का रूख़ कर लिया।

ये मआरका मार्च 635ई० (मोहर्रमुलहराम 14 हिज्री) में लड़ा गया था।

❁

उसी सुबह दमिश्क़ के बाहर भी खूंरेज़ी हो रही थी।

पहले बयान किया जा चुका है के दमिश्क़ मुसलमानों के क़ब्ज़े में था लेकिन वहां मुसलमान फौज की तादाद बहुत थोड़ी थी। दमिश्क़ में हाकिम शहर और सालार यज़ीद बिन अबी सफयान थे। शहंशाह हरकुल का मंसूबा ये था के दमिश्क़ में मुसलमान फौज की तादाद कम है इस लिए इसे आसानी से ख़त्म किया जा सकेंगे। उस ने ये काम अपने एक तजुर्बाकार सालार थ्यूडोर्स को सौंपा था।

दमिश्क़ के दिफाअ का एक इन्तेज़ाम ये भी था के देखभाल के लिए चन्द आदमी शहर से दूर दूर घूमते फिरते रहते थे। उस सुबह यज़ीद बिन अबी सफयान को इत्तेला मिली के रोमी फौज आ रही है। दमिश्क़ पर हर लम्हा हमले की तवक्क़ो रहती थी। रोमी कोई ऐसे गए गुज़रे तो नहीं थे के अपनी शहशाही का खोया हुआ इतना बड़ा शहर वापस लेने की कोशिश न करते। यज़ीद बिन अबी सफयान हर वक़्त तैयारी की हालत में रहते थे। उन्होंने रोमी फौजी के आने की इत्तेला मिलते ही अपने दस्ते को शहर से बाहर सफ आरा होने का हुक्म दे दिया।

मोअररिख़ों ने लिखा है के मुसलमान मुहासरे में लड़ने के आदी नहीं थे। इन्हें मुहासरा करने का तजुर्बा था, महसूर हो कर लड़ने का इन्हे कोई तजुर्बा भी नहीं था और इन्हें महसूर होना पसंद भी नहीं था। वो मैदान में अपने से कई गुना ताक़वर दुश्मन से भी लड़ जाते थे।

रोमी चूंके जुनूब मग़रिब की तरफ से आ रहे थे इस लिए यज़ीद ने अपने दस्ते को उसी सिम्त जंगी तरतीब में खड़ा कर दिया। रोमी फौज सामने आई तो पता चला

के इस की तादाद कई गुना ज़्यादा है। इन रोमी दस्तो का सालार थ्यूडोर्स था। वो अंताकिया से बैरूत के रास्ते दमिश्क़ को फतह करने आ रहा था। जब मर्जुलरोम पहुंचा तो अबु उबैदा(र०) और ख़ालिद(र०) की ज़ेर-ए-क़यादत मुजाहेदीन की फौज आ गई। उसे दमिश्क़ पहुंचना था। वो वक़्त ज़ाए नही कर सकता था।

मोअररिख़ वाक़दी, इब्ने हशाम और अबु सईद लिखते हैं के उस ने बड़ी कारगर तरकीब सोच ली। एक ये के मुसलमानों के सामने मर्जुलरोम में सफ आरा रहा लेकिन लड़ाई से गुरेज़ करता रहा। रात हो गई तो निहायत ख़ामोशी से अपने दस्तों को दमिश्क़ ले गया। रोमी सालार शन्स पीछे रह गया। उस के ज़िम्मे ये काम था के अबु उबैदा और ख़लिद के दस्तों को यही रोके रखे। इस मुक़ाम से दमिश्क़ बीस मील भी दूर नहीं था। थ्यूडोर्स सुबह के वक़्त दमिश्क़ के मुज़ाफात तक पहुंच गया।

वो जब दमिश्क़ के क़रीब गया तो मुसलमानों को क़िले के बाहर मुंतज़िर पाया। ये दमिश्क़ के दिफाई दस्ते थे जिनके सालार यज़ीद अबी सफयान थे। थ्यूडोर्स को मालूम था के दमिश्क़ के दिफाअ में मुसलमानों की यही नफरी है जो बाहर खड़ी है। उस ने अपने दस्तों को लल्कार कर कहा के अरब के इन बद्दुओं को कुचल डालो। दमिश्क़ तुम्हारा है।

"मुजाहेदीन!"–यज़ीद बिन अबी सफयान ने अपने दस्तों से बड़ी ही बुलंद आवाज़ से कहा–"दमिश्क़ तुम्हारी आबरू है। दुश्मन शहर की दीवार के साए तक भी न पहुंचे। कुफ्र के तूफान को शहर से बाहर रोक लो।"

❁

ये जोशे–ए–लल्कार थी जिस ने मुजाहिदों को गर्मा दिया लेकिन हक़ीक़त बड़ी तल्ख़ थी। दुश्मन की तादाद कई गुना ज़्यादा और कुमक की कोई सूरत नहीं थी। न सिर्फ ये के दमिश्क़ हाथ से जा रहा था बल्कि मुजाहेदीन में से किसी का भी ज़िन्दा रहना मुमकिन नहीं था। मुजाहिद जहां भी लड़े कम तादाद में लड़े लेकिन कमी की भी एक हद होती है। रोमियों की नफरी इतनी ज़्यादा थी के वो यज़ीद के दस्तों को आसानी से घेरे में ले सकते थे। हरकुल ने यही कुछ सोच कर वहां ज़्यादा नफरी भजी थी और थ्यूडोर्स उस का आज़मोदा सालार था।

थ्यूडोर्स ने मुसलमानों को देख कर अपने दस्तों को रोका नही। उस ने हमले का हुक्म दे दिया। हमला दोनों पहलूओं की तरफ से हुआ था। यज़ीद बिन अबी सफयान

समझ गए के रोमी इन्हें अन्दर की तरफ सुकड़ने पर मजबूर कर रहे है। यज़ीद अबी सफयान ने अपने दस्ते को और ज़्यादा फैला दिया और सवार दस्ते से कहा के वो दुश्मन के पहलूओं पर जाने की कोशिश करें लेकिन रोमी तो सैलाब की मांनिद थे। मुसलमान जज़्बे से हमले रोक रहे थे और वो इस से ज़्यदा कुछ भी नहीं कर सकते थे। वो दिफाई लड़ाई लड़ने पर मजबूर थे। जवाबी हमला नही कर सकते थे।

रोमी शहर की तरफ जाने की भी कोशिश कर रहे थे। यज़ीद ने इस का इन्तेज़ाम पहले ही कर रखा था। उन्होंने शहर के हर दरवाज़े के सामने और कुछ दूर तीरअंदाज़ खड़े कर रखे थे और इन के साथ थोड़ी थोड़ी तादाद में घुड़सवार भी थे।

सूरज सर के ऊपर आ गया। आधा दिन गुज़र गया था। मुजाहेदीन अभी तक रोमियों के मोज दर मोज हमले रोक रहे थे और उन के नारों और लल्कार में अभी जान मौजूद थी। उस वक्त तक ज़ख्मियों और शहीदों की वजह से उन की तादाद मज़ीद कम हो गई थी। रोमी नफरी की इफरात के बावजूद मुसलमानों पर ग़ालिब नहीं आ सकते थे लेकिन मुसलमानों के जिस्म अब जवाब देने लगे थे। घोड़े भी थक गए थे।

दोपहर के बाद मुजाहेदीन को साफ तौर पर महसूस होने लगा के शिकस्त इन के बहुत क़रीब आ गई है। वो पस्पाई के आदी नहीं थे। उन्होंने कल्मा-ए-तईयबा का बुलंद विर्द शुरू कर दिया और इस कोशिश में लहू लहान होने लगे के हमला रोक कर हमला करें भी। उन की तंज़ीम टूट गई थी और वो अब इंफेरादी तौर पर लड़ रहे थे। सालार यज़ीद बिन अबी सफयान सिपाही बन चुके थे। वो अपने अलमबरदार और मुहाफिज़ों से कहते थे के अलम न गिरने देना।

बड़ी जल्दी वो वक्त आ गया जब मुजाहेदीन को यक़ीन हो गया के एक तरफ दुश्मन की क़ैद और दूसरी तरफ मौत है। वो जीते जी ये नहीं सुनना चाहते थे के दुश्मन दमिश्क़ पर क़ाबिज़ हो गया है।

ऐन उस वक्त जब मुजाहेदीन ने ज़िन्दगी का आख़री मआरका लड़ने के लिए जानों की बाज़ी लगा दी थी, रोमियों के अक़ब में शौर उठा और देखते ही देखते रोमियों मे भगदड़ मच गई। दमिश्क़ के दिफाअ में लड़ने वालों को पता नहीं चल रहा था के पीछे क्या हो रहा है और रोममियों पर क्या आफत टूटी है उन की तंज़ीम दरहम बरहम हो गई और इन के हमले भी ख़त्म हो गए।

"इस्लाम के जां निसारो!"-यज़ीद बिन अबी सफयान ने बुलंद आवाज़ से

कहा–"अल्लाह की मदद आ गई है। हौसले बुलंद रखो।"

हक़ीक़त ये थी के यज़ीद को मालूम ही नही था के रोमियों के अक़ब में क्या हो रहा है। उन्होंने रोमियों पर हमले का हुक्म दे दिया। रोमियो को तो हमला रोकने का भी होश न रहा। यज़ीद बिन अबी सफयान पहले की तरफ निकल गए। मुहाफिज़ उन के साथ थे। वो रोमियों के अक़ब में जा रहे थे।। शौर व ग़ोग़ा इस क़द्र ज़्यादा था के अपनी अवाज़ भी नही सुनाई देती थी। सिर्फ ये पता चलता था के रोमियों में भगदड़ और अफरातफरी बपा हो गई है।

कुछ और आगे गए तो यज़ीद के कानों में आवाज़ पड़ी:

अना फारस उल ज़दीद

अना खालिद(र०) बिन वलीद

"दमिश्क़ के मुहाफिज़!"–यज़ीद बिन अबी सफयान गला फाड़ फाड़ कर ऐलान करते पीछे आए–"खुदा की क़सम, इब्ने(र०) वलीद आ गया है......अबु सुलेमान(र०) पहुंच गया है....अल्लाह की मदद पहुंच गई है.....अल्लाह को पुकारने वालो! अल्लाह ने हमारी सुन ली है....खुदा की क़सम, रोमी अपनी क़ब्रों पर लड़ रहे है....फतह हक़ परस्तों की होगी।"

उस दौर की तहरीरी रिवायात से पता चलता है के यज़ीद पर दीवांगी तारी हो गई थी और ऐसी ही दीवांगी उन के दस्ते पर तारी हो गई– और इस के साथ ही रोमियों का क़त्ले आम शुरू हो गया।

❋

यज़ीद बिन अबी सफयान के लिए ख़ालिद(र०) का आजाना एक मओजज़ा था लेकिन ख़ालिद(र०) इतनी जल्दी आ कैसे गए?

हम फिर गुज़िश्ता रात मर्जुलरोम चले चलते है जहां ख़ालिद(र०) छुप छुप कर रोमियों के कैम्प देख रहे हैं। उन्होंने देखा के रोमियों की फौज का वो हिस्सा जो दिन के वक़्त उन के सामने सफ आरा था, वहां नही है ख़ालिद(र०) को यक़ीन हो गया के ये हिस्सा कही चला गया है तो उन्होंने सालारे आला अबु उबैदा(र०) से बात की। ख़ालिद(र०) दूरअंदेश थे। इन्हें शक हुआ के रोमियों की फौज का ये हिस्सा दमिश्क़ की जानिब गया है और रोमियों का मक़सद सिर्फ ये हो सकता है के दमिश्क़ पर क़ब्ज़ा कर लिया जाए।

"हरकुल मामूली दिमाग़ का आदमी नहीं"-ख़ालिद(र०) ने अबु उबैदा(र०) से का-"उसे मालूम होगा के दमिश्क़ में हमारी नफरी बहुत थोड़ी है....मैं इस के सिवा और कुछ नही समझ सकता के दमिश्क़ ख़तरे में है। अगर तू मुझे इजाज़त दे तो मैं दमिश्क़ पहुंच जाऊं।"

"तुझ पर अल्लाह की सलामती हो अबु सुलेमान(र०)!"-अबु उबैदा(र०) ने कहा-"मैं तुझे इजाज़त देता हूं और तुझे अल्लाह के सुपुर्द करता हूं....ये जो रोमी पीछे रह गए है इन्हें मै संभाल लूंगा।"ख़ालिद(र०) ने एक लम्हा भी ज़ाए न किया। अपने सवार दस्ते को तैयार कर के दमियक़ को रवाना हो गए। रास्ते में कई निशानियां और कई आसार इन्हें यक़ीन दिलाते रहे के इस रास्ते पर एक फौज गुज़री है। थ्यूडोर्स आधी रात से पहले मर्जुलरोम से रवाना हो गया था। ख़ालिद(र०) रात के आख़री पहर रवाना हुए और दमिश्क़ उस वक्त पहुंचे जब मुसलमान हारी हुई जंग लड़ रहे थे और इन्हें कुमक की ज़रा सी भी तवक्क़ो नहीं थी।

ख़ालिद(र०) को वहां वही नज़र आया जो उन्होंने सोचा था। उन्होंने अक़ब से रोमियों पर हल्ला बोल दिया। ख़ालिद(र०) को रोमियों का परचम नज़र आया तो अपने मुहाफिज़ों के साथ वहां जा पहुंचे। इन्हें थ्यूडोर्स बोखलाहट के आलम में दिखाई दिया। उसे दमिश्क़ अपने क़दमों में पड़ा नज़र आ रहा था। वो उस के हाथ से निकल गया था और उस की फौज फतह के क़रीब पहुंच कर कटने लगी थी।

"मैं रोमियों का क़ातिल हूं"-ख़ालिद(र०) ने थ्यूडोर्स को लल्कारा-"मैं वहीं से आया हूं जहां से रात को तू आया था।"

थ्यूडोर्स ने तलवार लिकाल ली। दोनों सालारों के मुहाफिज़ अलग हट गए। ख़ालिद(र०) ने थ्यूडोर्स के दो तीन वार बेकार कर दिए और उस के इर्द गिर्द घोड़ा दौड़ाते रहे। थ्यूडोर्स को भरपूर वार करने के लिए मोज़ूं पोज़ीशन नही मिल रही थी। वो ख़ालिद(र०) के रहम व करम पर था। वो माना हुआ जंगजू सालार था लेकिन उस का मुक़ाबला ऐसे सालार के साथ आ पड़ा था जो हर लम्हा शिकार की तलाश में रहता था।

आख़िर उस ने बड़े गुस्से में ख़ालिद(र०) तक पहुंचने की कोशिश की लेकिन ख़ालिद(र०) ने एक पैंतरा बदल कर अपने आप को थ्यूडोर्स की ज़द से दूर कर लिया और दूसरे पैंतरे में ऐसा वार किया के थ्यूडोर्स घोड़े पर ही दोहरा हो गया। ख़ालिद(र०)

के दूसरे वार ने उसे ख़त्म कर दिया।

अब रोमियों के करने का एक ही काम रह गया था के भागें और अपनी जानें बचाऐं। वो रोमी खुश क़िस्मत थे जो ज़िन्दा निकल गए। माले ग़नीमत में ज़िरा, खुदें, हथियर और घोड़े ख़ास तौर पर क़ाबिल ज़िक्र थे।

उधर अबु उबैदा(र०) ने दूसरे रोमी सालार शन्स को ख़त्म कर दिया था।

❁

अबु उबैदा(र०) ने ख़ालिद(र०) को इस हुक्म के साथ रवाना कर दिया के वो हमस पहुंच कर वहां का मुहासरा कर लें। अबु उबैदा(र०) खुद एक और अहम मुक़ाम लाबलबक की तरफ रवाना हो गए। तवक्क़ो ये थी के इन दोनों जगहों का मुहासरा तूल पकड़ेगा और मुक़ाबला बड़ा सख़्त होगा लेकिन (मोअरर्ख़ों के मुताबिक़) मुसलमानों की तलवार की दहशत वो काम नही कर सकती थी जो उन के हुस्ने अख़लाक़ ने किया। मुसलमान जिधर जाते थे वहां के लोगों में पहले ही मशहूर हो चुका होता था के मुसलमान किसी पर कोई ज़्यादती नहीं करते और वो इन्ही शर्तों के पाबंद रहते हैं जो वो पेश करते हैं।

उस दौर की फातह फौजें सब से पहले मफ्तूहा शहर की खूबसूरत औरतों पर हल्ला बोलती थीं, फिर लोगों के घर लूट लेती और घरों को आग लगा देती थीं। ये उस ज़माने का रिवाज था और इसे फातह फौजों का हक़ समझा जाता था। लेकिन मुसलमानों ने इस रिवाज को न अपनाया बल्कि निहत्थे लोगों की इज़्ज़त व आबरू और जान व माल की हिफाज़त की।

इसी का नतीजा था के अबु उबैदा(र०) लाबलबक पहुंचे और शहर का मुहासरा किया तो वहां जो रोमी दस्ता था, उस ने ग़ैर मशरूत तौर पर हथियार डाल दिए।

ख़ालिद(र०) ने हमस क़ा मुहासरा किया तो रोमी सालार हरबीस बाहर आ गया और अमन के समझोते की पेशकश की। अबु उबैदा(र०) भी पहुंच चुके थे। इन के हुक्म से रोमी सालार से दस हज़ार दीनार और ज़रबख़्त की एक सौ क़बाओं का मुताल्बा किया गया जो रोमी सालार ने कुबूल कर लिया। मुहाएदा ये हुआ के मुसलमान एक साल तक हमस पर हमला नहीं करेंगे और अगर इस दौरान रोम की फौज ने इस इलाक़े में मुसलमानों के ख़िलाफ कोई मामूली सी भी जंगी कारर्वाई की

तो मुसलमान सुलह के मुहाएदे को मंसूख़ समझ कर जवाबी कारर्वाई करेंगे।

इस मुहाएदे पर दस्तख़त होते ही शहर के दरवाज़े खुल गए और मुसलमान फौज दाख़िल हुई। मोअररिख़ इब्ने असीर लिखता है के हमस के लोग ये देख कर हैरान होते थे के मुसलमान दुकानों में जाते और जो चीज़ लेते उस की क़ीमत अदा करते थे। बाज़ लोगों ने मुजाहेदीन को तोहफे पेश किए तो मुजाहेदीन ने उन की भी क़ीमत अदा की। वो कहते थे के मुसलमान तोहफे को माले ग़नीमत समझते हैं और कोई मुसलमान अपने तौर पर कोई माले ग़नमत अपने पास नही रख सकता। इस के अलावा सुलह के मुहाएदे के बाद इस्लाम माले ग़नीमत को जायज़ नही समझता।

ऐसे मुक़ामात भी आए जहां के लोगों ने मुसलमान फौज का बाक़ायदा इस्तक़बाल किया। मुसलमान नवम्बर 635ई० (रमज़ान 14 हिज्री) मुसलमान फौज हमस से हमा गई तो शहरी बाहर आ गए और मुसमलमानों की इताअत कुबूल कर ली। मारतुलनोमान के शहरियों ने मुसलमानों का इस्तक़बाल इस तरह किया के पहले साज़िंदे साज़ बजाते और खुशी के गीत गाते बाहर आए। इन के पीछे मोअज़्ज़िन आए और जज़िया पेश कर के शहर अबु उबैदा(र०) के हवाले कर दिया। इस के बाद इन क़स्बों और शहरों के कई लोगों ने इस्लाम कुबूल कर लिया।

❁

"मुसलमान हमारे जाल में आ गए"–शहंशाह हरकुल अपने सालारों से कह रहा था–"मैं सर्दियों के इन्तेज़ार में था। अरब के ये मुसलमान ऊंट का गोश्त खाते और ऊंटनी का ही दूध पीते हैं। रेगिस्तान के इन बाशिंदों ने कभी इतनी सर्दी नही देखी। ये सर्दी बर्दाश्त नहीं कर सकते इस मुल्क की सर्दी इन के जोश और जज़्बे को मुंजमिद कर देगी फिर मौसमे सरमा ख़त्म होने तक मुसलमान ख़त्म हो जाऐंगे। हम इन्हें बड़ी आसानी से शिकस्त देंगे। इन के खे़मे इन्हें सर्दी से नही बचा सकेंगे।"

हरकुल ने हुक्म दिया के हमस से मुसलमानों को बेदख़ल कर दिया जाए।

कुछ दिनों बाद अबु उबैदा(र०) का इत्तेला मिली के रोमियों की कुमक हमस पहुंच गई है। रोमियों की इस कारर्वाई के बाद हमस का मुहाएदा टूट गया। था। अबु उबैदा(र०) और ख़ालिद(र०) कही और थे। इत्तेला मिलते ही वो अपने दस्तों को साथ ले कर हमस जा पहुंचे। ख़ालिद(र०) पहले पहुंचे थे। वो हमस के क़रीब गए तो बाहर रोमी फौज लड़ने के लिए तैयार खड़ी थी।

ख़ालिद(र०) ने इस फौज पर हम्ला कर दिया। रोमी पीछे हटते गए और क़िले में दाख़िल हो कर उन्होंने दरवाज़े बन्द कर दिए। इस के फौरन बाद अबु उबैदा(र०) भी अपने दस्तों के साथ आन पहुंचे।

"अबु सुलेमान!" -अबु उबैदा(र०) ने ख़ालिद(र०) से कहा- "ये मुहासरा तेरा है और तू इस का सालार है।"

ये एक बहुत बड़ा ऐज़ाज़ था जो अबु उबैदा(र०) ने ख़ालिद(र०) को दिया। ख़लीफातुलमुस्लेमीन उमर(र०) के अहकाम के मुताबिक़ सालारे आला अबु उबैदा(र०) ही थे।

ये दिसम्बर का महीना था। सर्दी का उरूज शुरू हो चुका था। मुसलमान इतनी ज़्यादा सर्दी के आदी नही थे। उन पर सर्दी बड़ा ही बुरा असर कर रही थी। ये सब से बड़ी वजह थी के मुहासरा तूल पकड़ता गया। इस दौरान ख़लीफातुलमुस्लेमीन का हुक्म आ गया। इस के तहत कुछ दस्ते ईराक़ को भेजने थे।

ये दस्ते चले गए तो रोमी समझे के मुसलमान मुहासरा उठा रहे हैं लेकिन ऐसा न हुआ। रोमी यही तवक़्क़ो लिए क़िले में बैठे रहे के मुसलमान मुहासरा उठा लेंगे।

मार्च 636ई० का महीना आ गया। सर्दी की शिद्दत ख़त्म हो चुकी थी। रोमी सालार हरबीस रोम के शाही ख़ानदान का आदमी था। उसे किसी के हुक्म की ज़रूरत नहीं थी। उस ने अपन नायब सालारों और कमांडरों से कहा के सर्दी का मौसम गुज़र गया है। पेश्तर इस के के मुसलमानों को कुमक मिल जाए और ये सर्दी से भी संभल जाएं, इन पर हमला कर दिया जाए।

चुनांचे एक रोज़ शहर का एक दरवाज़ा खुला और पांच हज़ार नफरी की रोमी फौज ने बाहर आकर मुसलमानों के उस दस्ते पर हमला कर दिया जो इस दरवाज़े के सामने मौजूद था। हमला बड़ा तेज़ और शदीद था। मुसलमान इस हमले के लिए पूरी तरह तैयार नही थे। इस के अलावा उन पर सर्दी का भी असर था, इस लिए वो मुक़ाबले में जम न सके। पीछे हट कर वो मुनज़्ज़म हुए और आगे बढ़े लेकिन रोमियों के दूसरे हमले ने इन्हें फिर बिखैर दिया।

"अबु सुलेमान!-अबु उबैदा(र०) ने ख़ालिद(र०) से कहा- "क्या तू देखता रहेगा के रोमी फतहयाब हो कर वापस क़िले में चले जाएं?"

ख़ालिद(र०) तमाशा देखने वालों में से नही थे लेकिन वो उस दरवाज़े के सामने

से हट नही सकते थे जिस के सामने वो मौजूद थे। फिर भी उन्होंने अपना सवार दस्ता साथ लिया और रोमियों पर हमला कर दिया। रोमियों ने जम कर मुक़ाबला किया और सूरज गुरूब हो गया। रोमी क़िले में चले गए। उन की बहुत सी लाशें और शदीद ज़ख्मी पीछे रह गए।

❁

दूसरे दिन अबु उबैदा(र०) ने सालारों को बुलाया।

"क्या तुम ने खुद महसूस नही किया के कल रोमियों ने बाहर आ कर हमला किया तो हमारे आदमी बे दिली से लड़े?"

अबु उबैदा(र०) ने शिकायत के लहजे में कहा-"क्या हम में ईमान की हरारत कम हो गई है? सर्दी से सिर्फ जिस्म ठझडे होते हैं।"

"सालारे आला!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"हमारे आदमी बे दिली से नहीं लड़े, दरअसल जिन रोमियों ने हमला किया था वो उन रोमियों से ज़्यादा जुर्रत और हिम्मत वाले थे जिन से हम अब तक लड़ते रहे हैं।"

"फिर तू ही बता अबु सुलेमान(र०)!"-अबु उबैदा(र०) ने पूछा-"हमें इतने लम्बे मुहासरे में यही बैठे रहना चाहिए?"

"नही अबु उबैदा!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"कल सुबह हम मुहासरा उठा लेंगे।"

दूसरे सालारों ने हैरत से ख़ालिद(र०) की तरफ देखा।

"हां मेरे दोस्तो!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"कल हम यहां नहीं होंगे....और मेरी तजवीज़ गौर से सुन लो।"

ख़ालिद(र०) ने इन्हें मुहासरा उठाने के मुताल्लिक़ कुछ हिदायात दी।

अगली सुबह शहर की दीवार के ऊपर से आवाज़ें आने लगी-"वो जा रहे है... ..मुहासरा उठ गया है......वो देखो, मुसलमान जा रहे है।"

सालार हरबीस को इत्तेला मिली तो वो दौड़ता हुआ दीवार पर आया। उस के साथ बड़ा पादरी था।

"सर्दी ने अपना काम कर दिया है"-हरबीस ने कहा-"इन में लड़ने की हिम्मत नहीं रही। मैं इन्हे ज़िन्दा नही जाने दूंगा। इन के तआक़ुब में जाऊंगा। इन्हें ख़त्म कर के आऊंगा।"

"मोहतरम सालार!"-पादरी ने कहा-"मुझे ये मुसलमानों की चाल लगती है। ये मुंह मोड़ने वाली कौम नही। वो देखो, वो अपनी बीवियों और बच्चों को यही छोड़ गए है।"

"मै देख रहा हूं"-हरबीस ने कहा-"अपनी बीवियों और बच्चों को वो हमारे लिए छोड़ गए है। इन की हिफाज़त के लिए उन्होंने बहुत कम सिपाही पीछे छोड़े है। वो सामान बांध रहे है लेकिन इन्हें हम जानने नही देंगे। मै पहले उन के तआकुब में जाऊंगा जो हौसला हार कर चले गए है।"

हरबीस ने फौरन पांच हज़ार सवार तैयार किए और अबु उबैदा(र०) और ख़ालिद(र०) के दस्तों के तआकुब में रवाना हो गया। उन्होंने दो अढ़ाई मील फासला तय कर लिया था जब रोमी उन तक पहुंच गए। जूंही हरबीस अपने दस्ते के साथ मुसलमानों के क़रीब पहुंचा, मुसलमान अचानक दो हिस्सों में बट गए। ख़लिद(र०) ने गुज़िश्ता रोज़ सालारों को यही बताया था के रोमी उन के तआकुब में ज़रूर आऐंगे और उन्हें घेरे में ले कर ख़त्म करना है। इस के मुताबिक़ मुसलमान चलते चलते दो हिस्सों में बट गए। एक हिस्सा दायें को हो कर पीछे को मुड़ा और दूसरा बायें तरफ हो कर घूम गया।

रोमी ऐसी सूरते हाल के लिए तैयार नही थे। वो बौखला गए। मुसलमानों ने इन्हें घेरे में ले लिया। अपने बीवी बच्चों और उन की हिफाज़त के लिए कुछ मुजाहेदीन को पीछे छोड़ आना भी इसी धोके का एक हिस्सा था। रोमी पीछे को भागे तो यही मुजाहेदीन जो औरतों और बच्चों के साथ थे, रोमियों पर टूट पड़े फिर उन्होंने रोमियों की पस्पाई का रास्ता रोक लिया।

एक और सालार मआज़(र०) बिन जबल ख़ालिद(र०) की पहले से दी हुई हिदायता के मुताबिक़ पांच सौ सवार साथ ले कर हमस के रास्ते में आगए ताके कोई रोमी शहर की तरफ न आ सके।

रोमी इतनी जल्दी भागने वाले नहीं थे लेकिन वो मुजाहेदीन के फंदे में आ गए थे। वो ताज़ा दम थे। कुछ अपनी रिवायात के मुताबिक़ और कुछ अपनी जानें बचाने के लिए वो बे जिग्री से लड़ रहे थे।

ख़ालिद(र०) इन के सालार हरबीस को ढूंड रहे थे। उन की तलवार से खून टपक रहा था। उन के रास्ते में जो आता था कट जाता था। आख़िर वो इन्हें नज़र आ

गया।

"मै हूं इब्ने वलीद!"-ख़ालिद(र०) ने लल्कार कर कहा-"फारसियों का क़ातिल इब्ने वलीद.....रोमियों का क़ातिल इब्ने वलीद!"

हरबीस नामी गिरामी जंगजू था। वो ख़ालिद(र०) के मुक़ाबले के लिए बढ़ा लेकिन घोड़े से उतर आया। ख़ालिद(र०) भी घोड़े से उतरे और उसकी तरफ बढ़े लेकिन एक रोमी दोनों के दरमियान आ गया। तीन चार मोअररिख़ो ने ये वाक़ेया बयान किया है लेकिन इस रोमी का नाम नहीं लिखा। इतना ही लिखा है के उस का जिस्म पहलवानों जैसा था और वो शेर की तरह गरज कर लड़ा करता था। रोमी ज़बान में वो "शेर की मानिंद धाड़ने वाला" के नाम से मशहूर था।

तारीख़ों में ये वाक़ेया इस तरह आया है के ये रोमी अपने सालार हरबीस को पीछे हटा कर ख़ालिद(र०) के मुक़ाबले में आया। दो तीन पैंतरे दोनों ने बदले और ख़ालिद(र०) ने तलवार का वार किया। तलवार रोमी की आहिनी खुद पर पड़ी। खुद इतनी मज़बूत और वार इतना ज़ोर दार था के ख़ालिद(र०) की तलवार टूट गई। इन के हाथ सिर्फ दस्ता हर गया। अब ख़ालिद(र०) खाली हाथ थे और रोमी पहलवान के हाथ में तलवार थी। ख़ालिद(र०) अपने मुहाफिज़ों की तरफ जाने की कोशिश करते थे के इन से तलवार ले लें मगर रोमी दरिंदों की तरह गुर्राता, धहाड़ता और ख़ालिद(र०) के आगे हो जाता था के वो दूसरी तलवार न ले सकें।

एक मुहाफिज़ ने ख़ालिद(र०) की तरफ तलवार फैंकी लेकिन ख़ालिद(र०) से पहले रोमी तलवार तक पहुंच गया और तलवार परे फैंक दी। ख़ालिद(र०) का बचना मुमकिन नज़र नहीं आता था। रोमी ने उन पर ताबड़तोड़ वार करने शुरू कर दिए। ख़ालिद(र०) इधर उधर हो कर वार बचाते रहे। रोमी ने एक वार दायें से बायें को किया जिसे ख़ालिद(र०) की गर्दन या इस से ज़रा नीचे पड़ना चाहिए था लेकिन ख़ालिद(र०) बड़ी फुर्ती से बैठ गए।

रोमी का ये ज़ोरदार वार खाली गया तो अपने ही ज़ोर से वो घूम गया। ख़ालिद(र०) उछल कर उस पर झपटे। रोमी पलक झपकते फिर घूम गया और ख़ालिद(र०) के बाज़ुओं के शिकंजे में आ गया। अब सूरत ये थी के दोनों के सीने मिले थे और रोमी ख़ालिद(र०) के बाज़ुओं में था।

ख़ालिद(र०) ने बाज़ुओं दबाना और शिकंजा सख़्त करना शुरू कर दिया। रोमी

ख़ालिद(र०) की गिरफ्त से निकलने के लिए ज़ोर लगा रहा था लेकिन ख़ालिद(र०) की गिरफ्त सख़्त होती जा रही थी और वो इस क़द्र ज़ोर लगा रहे थे के खून उन के चेहरे में आ गयाऔर चेहरा गहरा लाल हो गया।

रोमी पहलवान की आंखें बाहर को आने लगीं। उस की सांसें रूकने लगी और चेहरे पर तकलीफ का ऐसा तास्सुर था के उस के दांत बजने लगे। मोअररिख़ वाक़दी ने लिखा है के रोमी पहलवान की पसलियां टूटने लगीं। रोमी और ज़्यादा तड़पने लगा। ख़ालिद(र०) और ज़्यादा ज़ोर से अपने बाजुओं के शिकंजे को तंग करते गए। रोमी की पसलियां टूटती गईं और इस का तड़पना ख़त्म हो गया हत्ता के उस का जिस्म बे जान हो गया।

ख़ालिद(र०) ने उसे छोड़ा तो वो गिर पड़ा। वो मर चुका था। ख़ालिद(र०) ने इस रोमी की तलवार उठा ली और हरबीस को लल्कारा लेकिन हरबीस अपने पहलवान का अंजाम देख कर वहां से खिसक गया था। ख़ालिद(र०) ने घोड़े पर सवार हो कर रोमी पहलवान की तलवार बुलंद कर के लहराई और नारा लगाया।

इस मुक़ाबले के दौरान रोमियों का क़त्ले आम जारी रहा। अबु उबैदा(र०) को पता चला के ख़ालिद(र०) ने रोमी पहलवान को किस तरह हलाक किया है तो वो दौड़े आए।

"खुदा की क़सम अबु सुलेमान(र०)!-अबु उबैदा(र०) ने बड़े मसरूर लहजे में कहा-"तूने जो कहा था कर दिखाया है। तू ने इन की कमर तोड़ दी है।"

ये बात इस तरह हुई थी के ख़ालिद(र०) ने जब गुज़िश्ता रोज़ मुहासरा उठा कर वापस जाने की तजवीज़ पेश की थी तो अबु उबैदा(र०) और दूसरे सालारो ने इस तजवीज़ को पसंद नहीं किया था। ख़ालिद(र०) ने इन्हें बताया के उन्होंने क्या सोचा है। फिर भी अबु उबैदा(र०) मुहासरा उठाने के हक़ में नहीं थे। तब ख़ालिद(र०) ने कहा था- "मेरी तजवीज़ पर अमल करें। में इन की हड्डियां तोड़ दूंगा। इन की कमर तोड़ दूंगा।"

ख़ालिद(र०) ने सिर्फ एक पहलवान की नहीं बल्कि रामी फौज की हड्डियां तोड़ दी थीं।

मार्च 636ई० (सफर 15 हिज्री) मुसलमान फातेह की हैसियत से हमस में दाख़िल हुए।

हमस पर जो ख़ौफ व हिरास तारी था वो उस वक़्त भगदड़ और नफ्सा नफ्सी की सूरत इख़्तियार कर गया जब मुसलमान हमस में दाख़िल हुए थे। उन्होंने सुना तो यही था के मुसलमान शहरियों को परेशान नहीं करते लेकिन शहर की फौज हथियार न डाले और मुसलमान बज़ोरे शमशीर शहर को फतह करें तो वो हर घर से माल व अमवाल उठा लेते हैं और औरतों को लोंडियां बना लेते हैं।

मुसलमानों ने हमस तो बड़ी ही मुश्किल से फतह किया था। रोमियों ने हथियार नहीं डाले थे बल्कि मुसलमानों ने मुहासरा उठाया तो पंच हज़ार रोमी सवार उन के तआक़ुब में गए थे। ये अलग बात है के मुहासरा उठाना मुसलमानों की चाल थी लेकिन रोमियों ने इसे उन की कमज़ोरी समझ कर उन पर हमला किया था। इस मआरके में रोमियों के सिर्फ एक सौ सवार ज़िन्दा बचे थे और मुसलमान जो शहीद हुए उन की तादाद 235 थी।

इतनी खूंरेज़ लड़ाई लड़ कर मुसलमानों ने हमस फतह किया था। हमस वालों ने जब देखा था के उन के जो पांच हज़ार सवार मुसलमानों के तआक़ुब में गए थे, इन में से बहुत थोड़े भागते हुए आ रहे हैं तो उन पर ख़ौफ व हिरास तारी हो गया था और जब उन्होंने देखा के मुसलमानों का एक सवार दस्ता रोमियों और हमस के दरवाज़ों के दरमियान आ गया है और रोमी सवार न भाग सकते हैं न शहर में दाख़िल हो सकते हैं तो वो और ज़्यादा ख़ौफज़दा हो गए शहर में इतनी फौज नहीं रह गई थी जो उन की मदद को पहुंचती। ये सवार मुसलमान सवारों की तलवारों और बरछियों से कट गए।

अबु उबैदा(र०) और ख़ालिद(र०) जब हमस में दाख़िल हुए तो चन्द एक शहरी उन के इस्तक़बाल के लिए खड़े थे। दोनों मुसलमान सालारों को देख कर वो सिज्दे में गिर पड़े। दोनों सालारों ने घोड़े रोक लिए।

"उठो" -अबु उबैदा(र०) ने गरजदार आवाज़ में कहा- "खड़े हो जाओ।"

वो सब सिज्दे से उठ कर खड़े हो गए। उन के चेहरों पर वो ख़ौफ व हिरास और रहम तल्बी का गहरा तास्सुर था।

"बोलो!" -अबु उबैदा(र०) ने पूछा- "अगर तुम्हारी फौज हमारे कहने पर पहले ही हथियार डाल देती तो तुम्हें हमारे आगे सिज्दे में गिरने की ज़रूरत न पड़ती।"

"हम रहम के तलबगार हैं!" -एक ने इल्तेजा की- "वो रोमी फौज थी जो आप से

लड़ी है। हम रोमी नहीं। हम आप का हर मुताल्बा पूरा करेंगे।"

"हम सिर्फ ये बताने आए है के सिज्दा सिर्फ अल्लाह के आगे किया जाता है"-अबु उबैदा(र०) ने कहा-"हम किसी को अपना गुलाम बनाने नही आए।"

अबु उबैदा(र०) के हुक्म से हमस के लोगों से सिर्फ एक दीनार फी कस जज़िया लिया गया और मुसलमानों की तरफ से ऐलान हुआ के कोई शख़्स शहर छोड़ कर न जाए। शहर के लोगों के जान व माल और इ़ज़्ज़त व आबरू की हिफाज़त के ज़िम्मेदार मुसलमान होंगे।

इस ऐलान ने लोगो को हैरत में डाल दिया। बाज़ इसे मुसलमानों की एक चाल समझे। वो रात भर इस ख़ौफ से जागते रहे के मुसलमान रात को उन के घरों पर टूट पड़ेंगे लेकिन रात गुज़र गई और कुछ भी न हुआ।

❁

रोमी शहंशाह हरकुल हमस से तक़रीबन अस्सी मील दूर अंताकिया में था। उसे जब ख़बर मिली के हमस भी हाथ से निकल गया है तो उस के होंटों पर हल्का सा तबस्सुम आ गया जैसे वो इसी ख़बर का मुंतज़िर था। उस के सालार वज़ीर और शाही ख़ानदान के अफ़राद जानते थे के हरकुल का ये तबस्सुम मौत की मुस्कुराहट है और इस तबस्सुम में क़हर भरा हुआ है।

"क्या तुम बता सकते हो अरब के इन मुसलमानों ने हमस किस तरह लिया है?"-हरकुल ने ख़बर लाने वाले से पूछा-"तुम सालार तो नहीं, कमांडर हो जंग को समझते होगे...तुम्हारा नाम क्या है?"

"सब समझता हूं क़ैसरे रोम!"-ख़बर लाने वाले ने कहा-"मेरा नाम साज़ीरस है। एक हबीश का का कमांडर हूं....हमस एक धोके ने हम से छीना है। हमारे सालारों को तवक़्क़ो थी के मुसलमान इतनी सर्दी बर्दाश्त नही कर सकेंगे और मुहासरा उठा कर चले जाऐंगे। उन्होंने सर्दी की शिद्दत मुहासरे में गुज़ार दी और मुहासरा उस वक़्त उठा कर चले गए जब सर्दी की शिद्दत गुज़र गई थी और दरख़्तों की कोंपलें फूटने लगी थीं।"

"और हमारे सालार उस वक़्त क़िले में बैठे रहे जब दुश्मन बाहर सर्दी से ठिठुर रहा था"-हरकुल ने कहा-"हमारे सालार दुश्मन पर उस वक़्त न झप्टे जब सर्दी ने उस की रगों में खून मुंजमिद कर दिया था.....फिर क्या हुआ?"

"क़ैसरे रोम!-साज़ीरस ने कहा-"वो जब कूच कर गए तो सालार हरबीस ने पांच हज़ार सवारों के एक दस्ते को हुक्म दिया के मुसलमानों के तआक़्क़ुब में जाओ और उन में से कोई एक भी ज़िन्दा न रहे........हम उन के तआक़्क़ुब में गए। जब उन के क़रीब पहुंचे तो उन्होंने पलट कर हमें घेरे में ले लिया"-साज़ीरस ने हरकुल को तफसील से बताया के

मुसलमानों ने इन्हें किस तरह घेरे में लिया और इन के सवारों को तबाह व बर्बाद कर दिया है।

"हमारा सालार हरबीस कहां है?" -हरकुल ने पूछा- "क्या वो..."

"वो ज़िन्दा है" -साज़ीरस ने कहा- "वो उस वक़्त वहां से निकल गए थे जब मुसलमानों के सालार ख़ालिद(र०) बिन वलीद ने हमारे पहलवान को अपने बाज़ुओं मे जकड़ लिया था और पहलवान की आंखें बाहर आ गई थीं।

"क्या हमारे पहलवान को ख़ालिद(र०) इब्ने वलीद ने मार डाला है?" -हरकुल ने पूछा।

साज़ीरस कुछ देर हरकुल के मुंह की तरफ देखता रहा फिर उस ने दायें बायें आहिस्ता आहिस्ता सर हिलाया।

"मुसलमान सालार ने हमारे पहलवान को बाज़ुओं मे दबोच कर उस की पसलियां तोड़ डाली थीं" -साज़ीरस ने कहा- "और वो मर गया।"

"आफरीन!" -हरकुल के होंटों से सरगोशी फिसल गई- "ये ताक़त जिस्म की नहीं" -वो अचानक जैसे बेदार हो गया हो। उस ने जानदार आवाज़ में कहा- "मैं इन्हें कुचल दूंगा....इन्हें आगे आने दो" -उस की आवाज़ और ज़्यादा बुलंद हो गई- "इन्हें और आगे आने दो.......और आगे जहां से वो भाग नही सकेंगे।"

❁

सालारे आला अबु उबैदा(र०) और ख़ालिद(र०) और आगे चले गए थे। उन्होंने हमस के इन्तेज़ामात के लिए कुछ नफरी वहां छोड़ दी थी। हमस से वो अपने दस्तों के साथ हमस से आगे हमा फिर इसे से आगे शीरज़ तक जा पहुंचे थे। वहां से अंताकिया का फासला पैंतीस चालीस मील के दरमियान था। अंताकिया अहम तरीन मुक़ाम था क्योंके इसे हरकुल ने अपना हैडक्वाटर बना लिया था और वहीं रोमियों की फौज का इज्तेमा और फौज की तक़सीम होती थी।

मुसलमानों ने शीरज़ से कूच किया। थोड़ी ही दूर गए होंगे के रोमियों का एक क़ाफला सा आता नज़र आया। इस की हिफाज़त के लिए रोमी फौजियों का छोटा सा एक दस्ता था। इस से ज़ाहिर होता था के ऊंटों और गाड़ियों के इस क़ाफले में फौजी सामान जा रहा है। ख़ालिद(र०) के इशारे पर मुजाहेदीन ने क़ाफले को घेरे में ले लिया। रोमी फौजियों ने मुक़ाबला करने की हिमाक़त न की। उन्होंने बताया के ये फौज के खाने पीने का सामान है। इस में हथियार भी थे। इन सब को पकड़ लिया गया और उन्हें तास्सुर ये दिया गया के उन्हें क़त्ल कर दिया जाएगा।

"हम ने आप का मुक़ाबला नहीं किया" -इस रोमी फौज क़ाफले के कमांडर ने

जान बख़्शी की इल्तेजा करते हुए कहा- "हम रोमी नहीं, हम तो इन की रिआया है हमारी आप के साथ कोई दुश्मनी नहीं।"

"फिर दोस्ती का सुबूत दो" -इन्हें कहा गया- "ये बता दो के अंताकिया में क्या हो रहा है।"

"आप की तबाही का सामान तैयार हो रहा है" -क़ाफले के कमांडर ने जवाब दिया- "वहां बहुत बड़ी फौज इक्ठी की जा रही है। दूर दूर से इसाई क़बीले आप के ख़िलाफ लड़ने के लिए जमा हो रहे हैं और इन्हें मैदाने जंग में लड़ने के ढंग सिखाए जा रहें है।"

"आप ने हमारी जानें हमें वापस कर दी हैं तो हम आप की जानें बचाते हैं-क़ाफले के एक और आदमी ने कहा- "आप आगे न जाऐं। आप की नफरी बहुत थोड़ी है और अंताकिया में शहंशाह हरकुल जो फौज इक्ठी कर चुका है वो इतनी ज़्यादा है के आप का एक भी आदमी ज़िन्दा नहीं रहेगा।"

"क्या इतनी ज़्यादा शिकस्तों ने उस की कमर अभी तोड़ी नहीं?" -मुसलमानों के एक सालार ने पूछा।

"हम इतने बड़े लोग नहीं के शहंशाह तक रसाई हासिल कर सकें" -रोमियों के कमांडर ने कहा- "हम उस के साथ बात करने की जुर्रत नहीं कर सकते लेकिन अपने सालारों से जो पता चलता है वो आप को बताते हैं...हरकुल की कमर इतनी कमज़ोर नहीं के चन्द एक शिक़स्तों से टूट जाए। उस ने अपना दिमाग़ अपने हाथ में रखा हुआ है। उसे फतह हासिल होती है तो वो अपने ऊपर इस का नशा तारी नहीं किया करता और शिकस्त से वो मायूस नहीं हुआ करता। वो जो हसीन तरीन और नौजवान लड़कियों और शराब का रसिया है, अब शराब तो पीता होगा लेकिन अपनी पसंदीदा लड़कियों को भी अपने सामने नही आने देता।"

"वो तो रातों को शायद सोता भी नहीं होगा" -दूसरे ने कहा- "उस पर एक जुनून सवार है। फौज इक्ठी करो। उस के आदमी बस्ती बस्ती जा कर लोगों से कह रहे हैं। के मुसलमान तूफान की तरह आ रहे हैं और वो तुम्हारे मज़हब को और तुम्हारी औरतों को अपने साथ उड़ा ले जाऐंगे....लोग क़बीला दर क़बीला मज़हब के नाम पर और अपनी औरतों को मुसलमानों से बचाने की ख़ातिर अंताकिया में आ रहे है....आप ने आगे जाना है तो ज़्यादा फौज ले कर आऐं वरना रूक जाऐं.....अब शहंशाह हरकुल ज़्यादा वक़्त नई फौज की तंज़ीम और तरबीयत में गुज़ारता है और कहता है के मुसलमानों को आगे आने दो। इन्हें और आगे आने दो।"

"उस ने ये भी कहा है" -एक और बोला- "अब अपनी फौज की हर पस्पाई मेरे

दिल को मज़बूत करती है। मेरी फौज की हर पस्पाई अरब के इन मुसलमानों को मेरे जाल में ला रही है।"

❁

इस क़ाफले से जो सूरत हाल अबु उबैदा(र०) और ख़ालिद(र०) को मालूम हुई वो ग़लत नही थी। पहले ज़िक्र हो चुका है के हरकुल रिवायती शहंशाह नहीं था, वो अपने वक़्त का फने हर्ब व ज़र्ब का माहिर जंगजू था और वो मैदाने जंग का शातिर जरनेल था।

अबु उबैदा(र०) और ख़ालिद(र०) को इन इत्तेलाआत ने जो इन्हें इस क़ाफले से मिली, वहीं रूकने पर मजबूर कर दिया।

"खुदा की क़सम अमीनुलउम्मत!"-ख़ालिद(र०) ने अबु उबैदा(र०) से कहा-"हम यहां बैठे नहीं रहेंगे, और हम हरकुल को इतनी मोहलत नहीं देंगे के वो अपनी तैयारियां मुकम्मल कर ले।"

"आज रात तक अपने किसी आदमी को आजाना चाहिए"-अबु उबैदा(र०) ने कहा-"अबु सुलेमान(र०)! जब तक आगे की मुसद्दिक़ा सूरते हाल मालूम नहीं हो जाती हम आगे नहीं जाऐंगे।"

अपने किसी आदमी से मुराद वो जासूस थे जो अंताकिया तक पहुंचे हुए थे। ख़ालिद(र०) ने अपनी सिपह सालारी के दौर में जासूसी के निज़ाम को बाक़ायदा और मुनज़्ज़म कर दिया था और जासूसों को दूर दूर तक फैला दिया था। मुसलमान जासूस जान की बाज़ी लगा कर बड़ी क़ीमती मालूमात ले आते थे।

मोअरिख़ों के मुताबिक़, हरकुल ने अपनी फौज की पै ब पै शिकस्तों की ख़बरें सुन सुन कर इस हक़ीक़त को कुबूल कर लिया था के वो मुसलमानों को बिखरी हुई लड़ाईयों में शिकस्त नहीं दे सकता। एक शिकस्तें तो वो थी जो रोमी फौज को ख़ालिद(र०) फिर अबु उबैदा(र०) ने दी थी और दूसरी वो थी जो दूसरे सालार शाम के दूसरे इलाक़ों में रोमियों को देते चले जा रहे थे।

मुसलमानों को फैसला कुन शिकस्त देने का एक ही तरीक़ा था के इन्हें किसी एक मेदान में इक्ळा होने पर मजबूर किया जाए और इन के ख़िलाफ इन से कई गुना ज़्यादा फौज मैदान में उतारी जाए। चुनांचे उस ने नई और बहुत बड़ी फौज तैयार करनी शुरू कर दी थी। मुसलमानों ने जब हमस पर क़ब्ज़ा किया उस वक़्त तक उस की नई फौज की नफरी डेढ़ लाख हो चुकी थी।

अंताकिया से चालीस मील दूर अबु उबैदा(र०) और ख़ालिद(र०) अपने दस्तों के साथ रूके हुए थे। इस से दो रोज़ बाद जब उन्होंने रोमियों का क़ाफला पकड़ा था, मुसलमान मग़रिब की नमाज़ की तैयारी कर रहे थे के एक घुड़सवार पड़ाव की तरफ

आता दिखाई दिया। इतनी दूर से पता नही चलता था के वो रोमियों का कोई फौजी सवार है या कोई मुसाफिर है। पड़ाव से कुछ दूर उस ने घोड़ा मोड़ लिया और पड़ाव के इर्द गिर्द घोड़ा दौड़ाने लगा जैसे पहचानने की कोशिश कर रहा हो। इस का लिबास मुसलमानों जैसा नही था।

"पकड़ लाओ इसे!"-किसी कमांडर ने अपने सवारों को हुक्म दिया।

सवार अभी घोड़ों पर ज़ीनें डाल रहे थे के उस अजनबी सवार ने घोड़ा पड़ाव की तरफ मोड़ दिया।

"अल्लाह अकबर!"-उस ने नारा लगाया और क़रीब आ कर उस ने बड़ी बुलंद आवाज़ में कहा-"मैं अपने परचम को पहचानने की कोशिश कर रहा था।"

"इब्ने ऐहदी!"-किसी ने कहा और चन्द एक मुजाहेदीन उस की तरफ दौड़े। एक ने कहा-"खुदा की क़सम, हम अब भी तुझे रोमी समझ रहे हैं।"

"क्या ये लिबास उस रोमी का है जिसे तूने क़त्ल किया होगा?"-एक ने पूछा।

इब्ने ऐहदी किसी को बता नहीं सकता था के वो जासूस है और अंताकिया से आया है। वो अबु उबैदा(र०) के ख़ेमे में चला गया। वो उन तीन चार जासूसों में से था जो डेढ़ दो महीनों से अंताकिया गए हुए थे।

❁

"तुझ पर अल्लाह की सलामती हो इब्ने ऐहदी!"-अबु उबैदा(र०) ने उसे गले लगा कर कहा-"हम अंताकिया की ख़बर के इन्तेज़ार में बैठे हैं।"

इब्ने ऐहदी ने ख़ालिद(र०) के साथ मुसाफह किया। ख़ालिद(र०) ने भी उसे गले लगा लिया।

"क्या ख़बर लाए हो?"-ख़ालिद(र०) ने पूछा।

"सियाह काली घटा है जो अंताकिया के उफक़ से उठ रही है"-इब्ने ऐहदी ने अरबों के मख़सूस शायराना अंदाज़ में कहा-"इस घटा से जो मीना बरसेगा वो ज़मीन पर सैलाब बन कर चट्टानों को भी बहा ले जाएगा। अमीनुलउम्मत और इब्ने वलीद! अल्लाह ने तुम्हें इशारा दिया है के आगे न जाना।"

"हमें ये इशारा दुश्मन के एक क़ाफले ने दिया है"-अबु उबैदा(र०) ने कहा-"रोमियों का फौजी क़ाफला है जिसे हम ने पकड़ लिया है।"

"इसे अल्लाह का भेजा हुआ क़ाफला समझ अमीनुलउम्मत!"-इब्ने ऐहदी ने कहा-"अब पूरी बात मुझ से सुन। अंताकिया के अन्दर और बाहर लश्कर के सिपाहियों और घोड़ों के सिवा कुछ और नज़र नहीं आता। अंताकिया के गर्दोनवाह में दूर दूर तक ख़ेमों का जाल है जो बढ़ता ही जा रहा है....हरकुल ने जो मंसूबा बनाया है वो बहुत

खतरनाक है।"

"क्या तेरी खबर मुसद्दिका हो सकती है?"-खालिद(र०) ने पूछा।

"मै हरकुल की फौज के एक टोले का कमांडर हूं अबु सुलेमान!"-इब्ने ऐहदी ने मुस्कुराते हुए कहा-"रोमियों की इस वक्त ये हालत है के जो कोई अंताकिया के दरवाजे पर जा कर कहे के फौज में भर्ती होने आया हूं तो उस के लिए शहर के सारे दरवाजे खुल जाते है।

इब्ने ऐहदी जिस तरह अंताकिया की फौज में शामिल हुआ था, इस की उस ने तफसीलात सुनाईं। वो अपने साथियों के साथ इसाई अरब बन कर अंताकिया गया था। इन्हें उसी वक्त फौज के हवाले कर दिया गया। उस रोज़ घुड़दौड़ के मैदान में शहसवारी, तेग़ ज़नी और दौड़ते घोड़े से तीर निशाने पर चलाने के मुकाबले हो रहे थे। इन में हर कोई शामिल हो सकता था। इब्ने ऐहदी अपनी फौज का मशहूर शहसवार था और बड़ा ही खूबसूरत जवान। वो मुकाबले में इस तरह शरीक हुआ के मैदान में जाकर घोड़ा चक्कर में दौड़ाया और तलवार निकाल कर तेग़ज़न सवारों को मुकाबले के लिए लल्कारा। एक सवार उस के मुकाबले में उतरा, वो रोमी था।

"अगर तुझे अपने बाजुओं और अपने घोड़े पर पूरा भरोसा है तो मेरे मुकाबले में आ ऐ अजनबी सवार!"-इब्ने ऐहदी ने उसे कहा-"मेरी तलवार तेरे खून की पियासी तो नहीं लकिन इस के सामने तेरी तलवार आएगी तो....."

"तेरी तलवार के मुकाबले में मेरी बरछी आएगी ऐ बदकिस्मत अजनबी!"-दूसरे सवार ने कहा-"अगर तुझे ज़िन्दगी अज़ीज़ नहीं तो आ जा।"

इब्ने ऐहदी ने घोड़ा उस के इर्द गिर्द दौड़ाया और उसे लल्कारा। रोमी सवार घोड़े को कुछ दूर ले गया और घोड़ा मोड़ कर ऐड़ लगाई उस ने बरछी नेज़ाबाज़ी के अंदाज़ से आगे कर ली थी। इब्ने ऐहदी उस की तरफ मुंह कर के खड़ा रहा। रोमी की रफ्तार और तेज़ हो गई। जब उस की बरछी की अन्नी इब्ने ऐहदी के सीने से थोड़ी ही दूर रह गई तो वो इस कद्र फुर्ती से घोड़े की दूसरी तरफ झुक गया जैसे वो घोड़ पर था ही नहीं।

रोमी की बरछी हवा को काटती आगे निकल गई। इब्ने ऐहदी घोड़े पर सीध हुआ और अपने घोड़े की लगाम को झटका दिया। उस का घोड़ा दौड़ा और फौरन ही मुड़ कर रोमी के पीछे चला गया। रोमी अपना घोड़ा मोड़ रहा था के इब्ने ऐहदी उस तक जा पहुचा और तलवार से उस की बरछी तोड़ दी। रोमी ने घोड़ा मोड कर तलवार निकाल ली लेकिन वो इब्ने ऐहदी पर सिर्फ एक वार कर सका जो इब्ने ऐहदी ने बचा लिया और फौरन ही इस मुसलमान शहसवार की तलवार रोमी सवार के पहलू में उतर गई। वो उस पहलू की तरफ लुढ़क गया।

उसे गिरता देख कर एक रोमी सवार इब्ने ऐहदी के मुक़ाबले में आया। वो आता नज़र आया और तमाशाईयों ने उसे घोड़े से गिरते देखा। एक और सवार मैदान मे आया।

"रूक जाओ"-हरकुल की गरजदार आवाज़ सुनाई दी-"इधर आ शहसवार!"

इब्ने ऐहदी ने घोड़ा हरकुल के सामने जा रोका। हरकुल ऊंची जगह बैठा हुआ था।

"क्या तुझे बताया नही गया था के ये मुक़ाबले है लड़ाई नहीं"-हरकुल ने कहा-"तुम इन दोनों को ज़ख्मी कर सकते थे जान से नही मारना था...... फिर भी हम तुम्हारी क़द्र करते है। कहां से आया है तू?"

"मत पूछ शहंशाह, कहां से आया हूं"-इब्ने ऐहदी ने कहा-"ये मेरे दुमन नही थे। लेकिन मेरे हाथ में जब तलवार होती है और जब कोई मुझे मुक़ाबले के लिए लल्कारता है तो मुझे यक़ीन हो जाता है के ये शख़्स मुसलमान है। मैं जब उसे क़त्ल कर चुकता हूं तो मुझे ये देख कर बहुत अफसोस होता है के ये मुसलमान नही था। मेरा दिमाग़ मेरे क़ाबू में नही रहता.....मैं इसाई अरब हूं शहंशाह। बहुत दूर से आया हूं।"

"क्या तेरे दिल में मुसलमानों की इतनी दुश्मनी है के तू अंधा हो जाता है?"-हरकुल ने पूछा।

"इस से भी ज़्यादा जितनी शहंशाह समझे हैं"-इब्ने ऐहदी ने कहा-"क्या शहंशाह मुझे आगे नहीं भेजेंगे? मैं मुसलमानों से लड़ने आया हूं।"

"हम तुझे आगे भेजेंगे"-हरकुल ने कहा-"तू ने दो शेरों को मारा है और तू मामूली से ख़ानदान का फर्द नहीं लगता।"

☸

"अमीनुलउम्मत!"-इब्ने ऐहदी ने अबु उबैदा(र०) और ख़ालिद(र०) से कहा-"मेरा ख्याल था वो मुझे सिपाही की हैसियत में फौज में रख लेगा लेकिन उन्होंने मुझे एक सौ सिपाहियों का कमांडर बना दिया। इस तरह मेरी रसाई सालारों तक हो गई। मेरे दूसरे साथी भी किसी न किसी ऐसी जगह पहुंच गए जहां से इन्हें क़ीमती ख़बरें मिल सकती हैं। हम सब इसाई अरब बने रहे और आपस में मिलते रहे। कुछ बातें मुझे उन्होंने बताई है, बाक़ी हालात मैंने खुद देखे है.....

"हमस पर अपने दस्तों के क़ब्ज़े की इत्तेला अंताकिया पहुंची तो मेरे साथी मुझे मिले। हमें मालूम था के तुम हमस में ज़्यादा दिन नही रूकोगे और अंताकिया की तरफ पेशक़दमी करोगे। हम तुम्हें हमस में ही रोकना चाहते थे। तुम्हें आगे के ख़तरे से ख़बरदार करना ज़रूरी था। अंताक़िया के इर्द गिर्द के इलाक़े में अपने लश्कर की तबाही के सिवा कुछ न था।

इब्ने ऐहदी ने आगे के जो हालात बताए वो इस तरह थे के हरकुल ने बहुत बड़ी फौज तैयार करने की मुहिम ऐसे तरीक़े से चलाई थी के इसाईयों के तमाम क़बीले मुसलमानों के ख़िलाफ लड़ने के लिए अपने घोड़ो, ऊंटों और हथियारों के साथ अंताकिया में जमा हो गए थे। मोअररिख़ लिखते हैं इन क़बीलों के अलावा यूरपी मुल्कों के लोग भी आ गए थे। रोम, युनान और आरमीनिया के रहने वाले भी बहुत बड़ी तादाद में आए थे। इन सब को उस फौज के साथ मिला कर जो पहले मौजूद थी, हरकुल की फौज की तादाद डेढ़ लाख हो गई थी।

इस इतने बड़े लश्कर को तीस तीस हज़ार के पांच हिस्सों में तक़सीम कर दिया गया। था। हर हस्से का जो सालार मुक़र्रर किया गया था वो तजुर्बाकार और मुंतख़िब था। इन पांच सालारों में एक का नाम माहान था जो आरमीनिया का बादशाह और अपने वक़्तों का माना हुआ माहिर सिपह सालार था। दूसरा ग़स्सान का हुकमरान जबला बिन ऐहम था जो अपनी फौज साथ लाया था और इसी का वो सालार था। तीसरा रूस का एक शहज़ादा क़नातीर था। चौथे का नाम गरीगरी और पांचवें का दीरजान था। ये सब इसाई थे और उन्होंने इसे सलीब और हिलाल की जंग बना दिया था। डेढ़ लाख के इस लश्कर का सालारे आला माहान था।

हरकुल ने इस लश्कर को अपने बेहत्तर हथियारों से मुसल्लेह कर दिया और जब ये तैयार हो कर पांच हिस्सों में तक़सीम हो गया तो हरकुल ने इतने बड़े लश्कर को इक्ळा किया।

"सलीब के पास्बानों!"–हरकुल ने बुलंद जगह खड़े हो कर गला फाड़ फाड़ कर कहा–"तुम जिस जंग के लिए इक्ळे हुए हो ये किसी मुल्क को फतह करने के लिए नहीं लड़ी जाएगी। ये तुम्हारे मज़हब और तुम्हारी इज़्ज़त की जंग है एक नया मज़हब हमारे मज़हब के खिलाफ उठा है हमारा ये फर्ज़ है के इस मज़हब को जो दरअसल कोई मज़हब नहीं ख़त्म कर दें। मुसलमानों की फौज चालीस हज़ार से ज़्यादा नहीं। तुम इन की हड्डियां भी पीस डालोगे। हमें बताया गया है के हमारी फौज में मुसलमानों की दहशत फैल गई है। ये सब सुनी सुनाई बातें हैं। मुसलमानों ने जहां भी हमारी फौज पर हमला किया है चोरों की तरह किया है और वहां हमारी नफरी थोड़ी थी....वो कोई जिन भूत नहीं। तुम्हारी तरह इन्सान हैं। वो लूटेरे हैं जो तुम्हारे घरों में घुस आए है लेकिन वो तुम्हारा सिर्फ माल व अमवाल नहीं लूटते, वो तुम्हारा मज़हब और तुम्हारी इज़्ज़त लूटने आए हैं।

मोअररिख़ वाक़दी, बलाज़ी और हैनरी सिम्थ लिखते हैं के हरकुल ने पहले ही इन लोगों को भड़का कर अपने लश्कर में शामिल किया था। अब इन्हें और ज़्यादा भड़का दिया। इब्ने ऐहदी ने अबु उबैदा(र०) और ख़ालिद(र०) को बताया के हरकुल ने दूसरा

इज्तेमा सालारों, नायब सालारों और कमांडरों का किया। पहले इन्हें भी भड़काया फिर इन्हें अहकाम दिए और हिदायात दी। इन के मुताबिक़ हर सालार की पेशक़दमी और उस के हदफ का तईय्युन किया गया था।

ये एक दहशतनाक मंसूबा था जो इतने बड़े लश्कर से आसानी से कामयाब हो सकता था। हदफ हमस था और दूसरा दमिश्क़। इस के साथ ही मुसलमानो की तमाम तर फौज को जिस की नफरी तक़रीबन चालीस हज़ार थी, घेरे में ले कर ख़त्म करना था। हरकुल ने घेरे डालने का बड़ा अच्छा मंसूबा तैयार किया था। उस के सालार क़नातीर को अपने तीस हज़ार के लश्कर के साथ अंताकिया से समुंद्र के साथ साथ बैरूत तक पहुंचना और वहां से दमिश्क़ की तरफ मुड़ जाना था। उस का काम ये था के मुसलमान आगे से पस्पा हो कर दमिश्क़ की तरफ आऐंतो क़नातीर का लश्कर उन पर हमला कर दे।

जबला बिन ऐहम ने हमस की तरफ जा कर मुसलमानों की पेशक़दमी को रोकना और इन्हें ख़त्म करना था। मोअररि़खों ने लिखा है के हमस पर हमला करने वाले लश्कर में सिर्फ अरब इसाई थे जिन की तादाद तीस हज़ार थी। हरकुल ने कहा था के वो अरबों के खि़लाफ अरबों को लड़ाना चाहता है।

"लोहे को लोहा ही काट सकता है" -ये हरकुल के तारीख़ी अल्फाज़ हैं।

हमस के इलाक़े में हरकुल के एक और सालार दीरजान ने भी जाना था। उस ने जबला से उल्टी सिम्त से पेशक़दमी करनी थी ताके मुसलमान किसी तरफ से भी न निकल सकें।

सालार गरीगरी को एक और सिम्त से हमस के इलाक़े में पहुंचना और मुसलमानों पर हमला करना था। इस तरह सिर्फ हमस और गर्दोनवाह के इलाक़े में मुसलमानों पर हमला करने वाली रोमी फौजी की तादाद नव्वे हज़ार थी। माहान जो सालारे आला था, उसे अपना तीस हज़ार का लश्कर कहीं क़रीब रखना था ताके जहां कहीं उस की ज़रूरत पड़े वो पहुंचे।

❁

"तुझ पर अल्लाह की सलामती हो इब्ने ऐहदी!" -अबु उबैदा (र०) ने हरकुल का तमाम तर मंसूबा सुन कर कहा- "खुदा की क़सम! तूने अपना घर जन्नत में बना लिया है। अगर तू ये ख़बरें ले कर न आता तो खुद सोच के हमारा अंजाम क्या होता....अबु सुलेमान!" -अबु उबैदा (र०) ने ख़ालिद (र०) से कहा- "क्या तू ने महसूस नही किया के हम इतने बड़े लश्कर का मुक़ाबला करने के क़ाबिल नहीं?"

ख़ालिद (र०) जो मैदाने जंग में दुश्मन के आसाब पर छा जाया करते थे, चुपचाप अबु उबैदा (र०) को देख रहे थे।

"क्या हमें पीछे नही हट जाना चाहिए अबु सुलेमान?" -अबु उबैदा(र०) ने पूछा।

"अमीनुलउम्मत !" -ख़ालिद ने आह भर कर कहा- "पीछे हटना एक ज़रूरत है लेकिन पीछे हटना मेरी फितरत नही।"

"खुदा की क़सम अबु सुलेमान(र०) ! जो तू सोच सकता है वो शायद में न सोच सकूं" -अबु उबैदा(र०) ने कहा- "इस वक़्त अपनी ज़ात को न देख। अपने साथियों को और इन के अंजाम को देख और बता हम क्या करें।"

"हां इब्ने अब्दुल्ला !" -ख़ालिद(र०) ने अबु उबैदा(र०) को दूसरे नाम से पुकारते हुए कहा- "मै इस हक़ीक़त को देख कर बात करूंगा जो हमारे सामने हैं और ये तूफान जो आ रहा है, इसे रोकना हमारे बस की बात नही लेकिन हमें उस अल्लाह को भी मुंह दिखाना है जिस के नाम पर हम यहां तक अपना और अपने दुश्कन का खुन बहाते पहुंचे है। हमारी जानें उसी की अमानत हैं....पहला काम ये कर के अपने तमाम सालारों को जहां जहां वो है, दस्तों समेत एक जगह इक्ळा कर ले।"

"और उन जगहों का क्या बनेगा जो हमारे क़ब्ज़े में हैं?" -अबु उबैदा(र०) ने पूछा।

"अमीनुलउम्मत !" -ख़ालिद(र०) ने कहा-तू यक़ीनन दुश्मन के इरादे को समझता है। वो फैसला कुन जंग लड़ने आ रहा है और हर तरफ से आ रहा है....आगे से, पीछे से दायें और बायें से...और तू ने इब्ने ऐहदी से सुन लिया है के हरकुल ने हमारी पस्पाई के रास्ते रोकने का भी इन्तेज़ाम कर दिया है...इब्ने अब्दुल्ला ! क़ैसरे रोम हमारे दस्तों को वहीं घेरे में ले लेना चाहता है जहां जहां वो हैं। ये तो अल्लाह का अहसाने अज़ीम है के हमें दुश्मन के मंसूबे का पहले ही इल्म हो गया है।"

"क्या इस से ये ज़ाहिर नही होता के अल्लाह तबारक व तआला को हमारी शिकस्त मंजूर नही?" -अबु उबैदा(र०) ने कहा।

"अल्लाह हमारे साथ है अमीनुलउम्मत?!" -ख़ालिद(र०) ने कहा- "लेकिन अल्लाह उन की मदद नही किया करता जो अपने आप को दुश्मन और हालात के रहम व करम पर फैंक देते है....हरकुल हमें बिखरा हुआ रखना चाहता है। तमाम सालारों को वो तमाम जगहें छोड़नी पड़ेंगी जो हमारे क़ब्ज़े में है। अगर अल्लाह ने हमें फतह अता की तो ये सब जगहें हमारी होंगी।"

"हमें कहां इक्ळे होना चाहिए?" -अबु उबैदा(र०) ने पूछा।

"जहां सहरा हमारे अक़ब में हो" -ख़ालिद(र०) ने जवाब दिया- "जितनी आसानी और तेज़ी से हम सहरा में हरकत कर सकते हैं। इतनी तेज़ी से इन इलाक़ों मे नहीं कर सकते जहां हम इस वक़्त मौजूद हैं। सहरा में हमारा दुश्मन नही लड़ सकता। हम

सहरा को अपने क़रीब रखेंगे तो हमें पीछे हटने में सहूलत होगी और जब दुश्मन हमारे पीछे आएगा तो वो अपने इलाक़े की सहूलतों से महरूम हो जाएगा।"

"तेरे सामने ऐसी कौन सी जगह है?"

"जाबिया !-ख़ालिद(र०) ने जवाब दिया- "वहां से तीन रास्ते निकलते है और क़रीब से ही सहरा शुरू हो जाता है। दरिया-ए-यरमूक भी बिल्कुल क़रीब है।"

मुसलमानों के बिखरे हुए दस्तो के सालारे आला अबु उबैदा(र०) थे लेकिन वो ख़ालिद(र०) को अपनी निस्बत ज़्यादा क़ाबिल, तजुर्बाकार और जारह सालार समझते थे इस लिए उन्होंने ख़ालिद(र०) को अपना मुशीरे खास बल्कि दस्ते रास्त बना रखा हुआ था। अब हरकुल ने ऐसी सूरते हाल पैदा कर दी थी जिस में इन्हें ख़ालिद(र०) के मशवरों की शदीद ज़रूरत थी। ख़ालिद(र०) तो इस से भी ज़्यादा ख़तरनाक और ख़ौफनाक सूरते हाल में नहीं घबराते थे। उन्होंने जो मशवरे दिए, अबु उबैदा(र०) ने फौरी तौर पर इन पर अमल किया। वहां ज़्यादा सोचने का वक़्त था ही नहीं। एक एक लम्हा क़ीमती था।

हरकुल का लश्कर अंताकिया से कूच कर चुका था। हमस पर मुसलमानों के क़ब्ज़े का तीसरा महीना गुज़र रहा था।

☸

हरकुल के लश्कर का वो हिस्सा जो जबला बिन ऐहम की ज़ेरे कमान था, जून 636 ई० में हमस के क़रीब पहुंच गया। हरकुल के जासूसों ने उसे इत्तेला दी थी के उन्होंने मुसलमानों की फौज को शीरज़ के मुक़ाम पर पड़ाव डाले देखा है लेकिन जबला का लश्कर वहां पहुंचा तो वहां पड़ाव के आसार तो मिलते थे लेकिन लश्कर का कोई एक भी आदमी वहां नहीं था।

जबला ने कहा के वो हमस में इक्ळे हो गए है। उस ने अपना हराविल दस्ता हमस को रवाना कर दिया। देखा के शहर के दरवाज़े खुले हुए है। दीवारों पर शहर के लोग खड़े थे, कोई फौजी नज़र नहीं आता था।

"कहां हैं मुसलमान?"-हराविल के सालार ने पूछा।

"यहां कोई मुसलमान नहीं"-उसे ऊपर से जवाब मिला।

"क्या तुम अपने मज़हब के दुश्मन के साथ मिल गए हो?"-रोमी हराविल के सालार ने कहा-"क्या दरवाज़े खुले छोड़ कर हमें धोका देना चाहते हो?"

"अन्दर आकर देख लो"-ऊपर से शहरियों ने उसे बताया।

"अगर तुम भी इस धोके में शरीक हो तो अपनी सज़ा सोच लो"-हराविल के सालार ने कहा।

उस ने अपने दस्ते को शहर से बाहर रहने दिया और अपने सालार जबला की

तरफ क़ासिद दौड़ा दिया के ये धोका मालूम होता है के शहर में कोई फौज नही। जबला को पैग़ाम मिला तो वो वाही तबाही बकने लगा।

"ये धोका है" –जबला गुस्से से चिल्लाया– "मुसलमानों ने हमारी फौज को जहां भी शिकस्त दी है धोके से दी है। वो शहर में मौजूद हैं और उन्होंने हमें फांसने के लिए शहर के दरवाज़े खुले छोड़ रखे है।"

जबला ने अपने तीस हज़ार के लश्कर का पेशक़दमी का हुक्म इस हिदायत के साथ दिया के हमस के दरवाज़ों में सैलाब की तरह दाख़िल हों और शहार में बिखरे नही। मुसलमान लोगों के घरों में छुपे हुए होंगे। उसे ख़तरा नज़र आ रहा था के उस का लश्कर शहर में बिखर गया तो मुसलमान उस के सिपाहियों को चुन चुन कर मारेंगे।

वो सैलाब की ही मानिंद शहर में दाख़िल हुए और मुसलमानों को लल्कारने लगे के वो बाहर आए लेकिन कोई मुसलमान बाहर न आया। जबला ने ख़तरा मोल ले कर हर घर की तलाशी का हुक्म दिया। सिपाही लोगों के घरों पर टूट पड़े। तलाशी के बहाने उन्होंने घरों में लूट मार की और औरतों पर दस्त दराज़ी की। शहरी चीख़ते चिल्लाते बाहर आ गए।

"तुम से वो अच्छे थे जो चले गए हैं।"

"तुम ने अपने मज़हब का भी ऐहतराम नही किया।"

"हमारे मज़हब का एहतराम मुसलमानों ने किया था।"

"वो हम से लिया हुआ जज़िया वापस कर गए हैं।"

वही अच्छे थे....वही अच्छे थे।"

"मुसलमान तुम्हारी तरह लूटेरे नही थे।

जबला बिन ऐहम शहर के मर्दों और औरतों की चीख़ व पुकार और आह व बका सुनता रहा। उसे यक़ीन हो गया था के मुसलमान चले गए हैं। उस ने जब अपने हम मज़हब लोगों की ज़बान से ये अल्फाज़ सुने के मुसलमान अच्छे थे और वो तुम्हारी तरह लूटेरे नही थे और ये के उन्होंने जज़िया वापस कर दिया था तो उस ने अपने लश्कर को इक्ळा किया।

"शिकस्त तुम्हारे मुक़द्दर में लिख दी गई है" –जबला ने अपने लश्कर से कहा– "आज पहली बार मुझे पता चला है के मुसलमानों की फतह का बाअस क्या है और क्यों हर क़स्बे और हर शहर के लोग उन का इस्तक़बाल करते हैं। ये अहले सलीब का शहर है। मुसलमानों ने इर की इज़्ज़त और आबरू पर हाथ नही डाला। तुम भी अहले सलीब हो मगर तुम ने इस की आबरू पामाल कर दी है और इन के घरों से क़ीमती सामान उठा लाए हो। तुम लड़ने नही आए, लूट मार करने आए हो और कहते फिरते हो के

मुसलमानों में कोई गैबी ताकत है। तुम ने लड़े बगैर ये शहर ले लिया है। अगर तुम्हारा ईमान होता तो तुम्हें न लूट मार की होश रहती न तुम किसी औरत की तरफ देखते....जो सामान तुम ने लोगों के घरों से उठाया है वो यहां रख दो।"

जज़िये की वापसी एक तारीखी हकीकत है। बलाज़ी, अबु सईद, इब्ने हशाम और तिबरी ने लिखा है के खालिद(र०) के मशवरे पर जब सालारे आला अबु उबैदा(र०) ने मफ्तूहा कस्बे और शहर छोड़ कर जाबिया के मुकाम पर तमाम दस्तों को इकळा होने का हुक्म दिया तो उन्होने हमस के चन्द एक सरर्कदा अफराद को बुलाया और इन्हें बताया के वो हमस से जा रहे है पहले तो इन अफराद को यकीन न आया। जब यकीन आया तो उन्होंने अफसोस का इज़हार किया।

"हम ने पहली बार अदल व इन्साफ देखा था"-एक शहरी ने कहा-"हम ने जुल्म, जब्र और बेइन्साफी का राज देखा था। आप हमें अदल व इन्साफ और इज़्ज़त व आबरू से महरूम कर के फिर हमें ज़ालिमों के हवाले कर के जा रहे हैं।"

"अल्लाह ने चाहा तो हम फिर आजाऐंगे"-अबु उबैदा(र०) ने कहा-"मैं ने तुम्हें वो जज़िया वापस देने के लिए बुलाया है जो हम ने तुम से वसूल किया था।"

"नहीं"-शहरियों के नुमाईंदों ने मुताफक्का तौर पर अहतजाज किया-"हम अपना जज़िया वापस नहीं लेंगे।"

"ये जज़िया हम पर हराम हो गया है"-अबु उबैदा(र०) ने कहा-"हम ने तुम से इस मुहाएदे पर जज़िया लिया था के हम तुम्हारी हिफाज़त के ज़िम्मेदार होंगे लेकिन हम तुम्हें इन लोगों को रहम व करम पर छोड़ कर जा रहे है। जिन्हें तुम ज़ालिम और जाबिर समझते हो। हम तुम्हारी हिफाज़त और सलामती का मुहाएदा पूरा नहीं कर सके। तुम अपना जज़िया वापस ले जाओ और तमाम शहरियों को वापस कर देना।

एक मोअर्रिख़ अबु यूसुफ ने लिखा है के हमस के शहरी जो पहले ही मुसलमानों के सुलूक, इन्तेज़ाम और अदल व इन्साफ से मुतास्सिर थे, जज़िये की वापसी से और ज़्यादा मुतास्सिर हुए। हद ये के हमस मे जो यहूदी मुकीम थे, उन के नुमाईंदे ने अबु उबैदा(र०) से कहा के हमस में अब वही हुकमरान दाखिल हो सकेगा जो फौजी ताकत के बल बूते पर आएगा वरना वो किसी और को अपने ऊपर हाकिम तस्लीम नही करेंगे। एक यहूदी के मुंह से मुसलमानों की हिमायत के अल्फाज़ इस वजह से हैरान कुन हैं के यहूदी मुसलमानों के बदतरीन दुश्मन थे।

❁

रोमी फौज का सालार कनातीर हरकुल के मंसूबे के मुताबिक दमिश्क पर हमला करने गया तो वहां उसे इस्लामी फौज का कोई आदमी नज़र न आया। मुसलमान दमिश्क

से निकल कर जाबिया चले गए थे। अबु उबैदा(र०) ने उन तमाम सालारों को जो मफ्तूहा जगहों के हाकिम मुक़र्रर हुए थे, हुक्म भेजा था के वहां से कूच से पहले लोगों को जज़िया की रक़म वापस कर दी जाए क्योंके हम उन की हिफाज़त नही कर सके। चुनांचे दमिश्क़ के शहरियों को भी जज़िया वापस कर दिया गया था।

इस तरह मुसलमान अपने पीछे बड़ा अच्छा तास्सुर छोड़ कर आए लेकिन वो उस इलाक़े से निकले नही। तमाम दस्ते दरिया-ए-यरमूक से सात आठ मील दूर जाबिया के मुक़ाम पर इक्ळे हो गए। इन में शजील(र०) बिन हस्ना, उमरों(र०) बिन आस, यज़ीद(र०) बिन अबी सफयान, ज़रार(र०) बिन लाज़ोर नामी गिरामी सालार क़ाबिले ज़िक्र हैं। सालारे आला अबु उबैदा(र०) ने सब को मशावरत के लिए बुलाया।

"तुम सब पर अल्लाह की सलामती हो"-अबु उबैदा(र०) ने कहा-"क्या मेरे चेहरे पर वही परेशनी नहीं है जो तुम एक दूसरे के चेहरे पर देख रहे हो? लेकिन ये परेशानी है मायूसी नही। मायूस न होना उस अल्लाह की ज़ाते बारी से जिस के रसूल(स०) की इताअत और पैरवी में हम इतनी मुद्दत से घरों से निकले हुए हैं हम पस्पा नहीं हुए, पीछे हटे है। और पीछे इस लिए हटे हैं के इक्ळे हो कर उस दुश्मन के मुक़ाबले में खड़े हो सकें जो हमारे दीन का दुश्मन है....क्या तुम ने सुन लिया है के हरकुल की फौज की तादाद दो लाख के क़रीब है?"

"हां अमीनुलउम्मत !"-सालारो की आवाज़ें सुनाई दी-"सुन लिया है।"

"और हम कितने हैं?"-अबु उबैदा(र०) ने कहा-"चालीस हज़ार....लेकिन तुम हर मैदान में क़लील तादाद में थे और अल्लाह तबारक व तआला ने अपना वादा पूरा किया के ईमान वाले बीस हुए तो दो सौ कुफ्फार पर ग़ालिब आऐंगे फिर भी में तुम्हें इम्तेहान में नहीं डालूंगा। हुक्म नहीं दूंगा। मुझे मशवरा दो।"

"क्या ऐसा ठीक नहीं होगा के हम वापस चले जाऐं?"-एक सालार ने कहा-"हरकुल हमेशा इतनी ज़्यादा फौज नहीं रखेगा। जूं ही कभी इत्तेला मिले के हरकुल ने फौज की तादाद कम कर दी है हम फिर आजाऐं। हम पहले से ज़्यादा तैयार हो कर आऐंगे।"

"इस का ये मतलब लिया जाएगा के हमारे मुजाहेदीन ने इतना खून बहा कर और कुर्बानियां दे कर जो इलाक़े फतह किए हैं वो रोमियों को वापस कर दें"-अबु उबैदा(र०) ने कहा-"अगर हम ने ऐसा किया तो हमारे सारे लश्कर का हौसला टूट जाएगा और दुश्मन का हौसला मज़बूत हो जाएगा। रोमी फौज पर हम ने जो धाक बैठाई है वो खत्म हो जाएगी।"

"हम फैसला कुन जंग लड़ेंगे"-एक और सालार ने कहा-"फतह और शिकस्त

अल्लाह के हाथ में है।"

इस मशवरे पर ज़्यादा तर सालारों ने लब्बेक कहा।

"लड़े बग़ैर वापस गए तो मदीने वालों को क्या मुंह दिखाएंगे?"

"फिर पस्पाई भी हमारी रिवायत बन जाएगी।"

अपने बच्चों को ये सबक़ मिलेगा के दुश्मन क़वी हो तो भागा भी जा सकता है।"

अबु उबैदा(र०) ने ख़ालिद(र०) की तरफ देखा जो बिल्कुल ख़ामोश बैठे थे। उन्होंने न किसी की ताईद में कुछ कहा न मुख़ालफत में।

"क्यों अबु सुलेमान!"-अबु उबैदा(र०) ने ख़ालिद(र०) से कहा-"क्या तू कोई मशवरा नहीं देगा? तेरी जुर्रत और क़ाबलियत की ज़रूरत तो अब है। क्या सोच रहा है तू?"

"इब्ने अब्दुल्ला!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"जिस किसी ने जो कुछ भी कहा है वो अपने ख्याल के मताबिक़ ठीक कहा है लेकिन मैं कुछ और कहना चाहता हूं। मैं ये भी कहना चाहता हूं के सब ने मिल कर जो फैसला किया, मैं उस का पाबंद रहूंगा और तेरा हर हुक्म मानूंगा।"

"तू जो कुछ कहना चाहता है कह दे अबु सुलेमान!"-अबु उबैदा(र०) ने कहा-"मुझे तेरी राय की ज़रूरत है।"

"पहली बात ये है अमीनुलउम्मत!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"हम बड़ी ख़तरनाक जगह आ कर बैठ गए हैं यहां से थोड़ी ही दूर क़ैसारिया में रोमियों की फौज मौजूद है। इस की नफरी चालीस हज़ार है और इस का सालार हरकुल का एक बेटा कुसतनतीन है। हमारी तादाद इतनी ही है जितनी अकेले कुसतनतीन की है। हम ऐसी जगह पर हैं के वो हम पर अक़ब से आसानी से हमला कर सकता है ऐसा हमला वो उस वक़्त करेगा जब सामने से हम पर हरकुल की फौज हमला करेगी। हमें यरमूक के मुक़ाम पर चले जाना चाहिए। वो ज़ीमन घुड़सवार दस्तों के लड़ने के लिए बहुत अच्छी है और एक फायदा ये भी है के मदीने से कुमक और रसद का रास्ता खुला रहेगा।"

अबु उबैदा(र०) ने दूसरे सालारों की तरफ देखा। सब ने कहा के इस से बेहतर और कोई तजवीज़ नहीं हो सकती। अबु उबैदा(र०) ने उसी वक़्त जाबिया से यरमूक की तरफ कूच का हुक्म दे दिया और ख़ालिद(र०) को फौज की अक़बी गार्ड के तौर पीछे रहने दिया। ख़ालिद(र०) को उन चार हज़ार सवारों के दस्ते की कमान दी गई जो ख़ालिद(र०) ने तैयार किया था। ये सब मुंतख़िब शहसवार थे। ये दस्ता जम कर नहीं घूम फिर कर लड़ता था। ये ख़ालिद(र०) की अपनी जासूसी थी के उन्होंने मालूम कर लिया था के क़ैसारिया में हरकुल की जो फौज है उस की नफरी चालीस हज़ार और उस का सालार

हरकुल का बड़ा बेटा कुसतनतीन है।

❋

मारूफ़ मोअररिख़ लिखता है के जंगी उसूलों और उमूर को देखते हुए मुसलमानों को रोमी फौजी के मुक़ाबले में आना ही नही चाहिए था। सिर्फ चालीस हज़ार नफरी से उस फौज के ख़िलाफ लड़ना जिस की नफरी डेढ़ और दो लाख के दरमियान थी, मुमकिन न था। रोम का शहंशाह सही मानों में सिपाहियों और घोड़ों का ऐसा सैलाब ले आया था जिस के आगे कोई भी फौज नही ठहर सकती थी लेकिन मुसलमान इस सैलाब के आगे बन्द बांधने और इसे फैला कर ख़त्म कर देने का तहय्या कर चुके थे। उन के पास सिर्फ जज़्बा था।

मुसलमानों के जज़बे के शिद्दत और अज़्म की पुख़्तगी की एक वजह ये भी थी के ख़ालिद(र०) इन में मौजूद थे और ख़ालिद(र०) सरापा अज़्म और मुजस्सम जज़्बा थे। उन का अक़ीदा था के ईमान के आगे बातिल की कोई ताक़त ठहर नहीं सकती। ख़ालिद(र०) ने एक मिसाल वहीं क़ायम कर दी। वो इस तरह के मुसलमानों की फौज जाबिया से कूच कर गई तो ख़ालिद(र०) अबु उबैदा(र०) के हुक्म के मुताबिक़ अभी जाबिया में थे।

उधर हरकुल के लश्कर ने इतनी तेज़ी से नक़्ल व हरकरत की थी के उस के सालारों को जिन इलाक़ों में पहंचने का हुक्म मिला था, वो अपने दस्तों के साथ उन इलाक़ों में पहुंच गए थे। शाम और थ्फिलस्तीन में हरकुल की फौज छा गई थी।

ख़ालिद(र०) जाबिया से रवाना होने लगे तो अचानक रोमी फौज का एक दस्ता दायें पहलू से आता नज़र आया। ये रोमी फौज के किसी हिस्से का हराविल था और इस सवार दस्ते की तादाद ख़ालिद(र०) के दस्ते से ज़्यादा थी। रोमी दस्ते को अपनी बे पनाह फौज की पुश्त पनाही हासिल थी। उस ने ख़ालिद(र०) के दस्ते पर हमला कर दिया। ख़ालिद(र०) ने अपने इस सवार दस्ते को खुद तरतीब दी थी। उन्होंने इन सवारों को भाग दौड़ कर लड़ने की तरतीब में कर दिया।

रोमी दस्ते के सवार उसी इलाक़े के इसाई थे। वो जंग की तरतीब में हमले पे हमला करते थे मगर ख़ालिद(र०) के सवारों का अंदाज़ कुछ और था। इसाईयों का हर हल्ला इस तरह ज़ाय जाता था जिस तरह हरीफ को मारा हुआ घूंसा हरीफ को लगने की बजाए हवा में लगे। ज़रा ही देर बाद इसाई सवार मैदान में बे तरतीब बिखरे हुए थे और मुसलमान सवार इन्हें काट रहे थे।

ख़ालिद(र०) ने अपना मख़सूस नारा-"मैं ख़ालिद(र०) इब्ने वलीद हूं"-लगाया तो मआरके की सूरत ही बदल गई। ख़ालिद(र०) का ये नारा पहले ही रोमी फौज में मशहूर था और इस नारे के साथ एक दहशत वाबस्ता थी। इसाई सवारों की तंज़ीम पहले

ही बिखर गई थी और मुसलमान सवार उन पर ग़ालिब आ गए थे। ख़ालिद(र०) के नारे ने रही सही कसर पूरी कर दी और इसाई सवार अफरा तफरी के आलम में भागने लगे।

ख़ालिद(र०) ये मआरका ख़त्म होते ही अपने लश्कर की तरफ रवाना न हुए बल्कि दो तीन दिन वही मौजूद रहे। इन्हें तवक़्क़ो थी के रोमी फौज का ये हिस्सा अपने हराविल का इन्तेक़ाम लेने आगे आएगा। ख़ालिद(र०) रोमियों को ये तास्सुर देना चाहिए थे के मुसलमान कही भाग नही गए, यही है और ज़िन्दा व बेदार लड़ने के लिए तैयार है। रोमी आगे न आए और ख़ालिद(र०) अपने लश्कर से जा मिले।

गिबन ने लिखा है के रोमी इसी एक झड़प से ही मोहतात हो गए थे।

❁

ख़ालिद(र०) अबु उबैदा(र०) के पास पहुंचे तो उन्होंने इस मैदान का जायज़ा लिया। लड़ाई के लिए ये हर लिहाज़ से मोज़ू नज़र आया। इस तरह मुसलमानों को अपनी पसंद के मैदान का फायदा हासिल हो गया। रोमी एक तो इसे बहुत बड़ी कामयाबी समझ रहे थे के उन्होंने मुसलमानों से मफ्तूहा इलाक़े ले लिए थे और वो इस लिए भी खुश थे के उन्होंने उस दौर की सब से बड़ी फौज बना ली थी। यही वजह थी के वो मुसलमानों के पीछे पीछे चले आ रहे थे।

अबु उबैदा(र०) ने ख़ालिद(र०) के मशवरों के मुताबिक़ अपने दस्तों को लड़ाई की तरतीब में कर दिया और इसी तरतीब में डेरे डाल दिए। वो ख़ेमाज़न होने की बजाए तैयारी की हालत में रहे। उन्होंने अपने बायें पहलू को महफ़ूज़ रखने के लिए पहाड़ियों से फायदा उठाया। मुसलमानों के मुहाज़ की लम्बाई कम व बेश ग्यारह मील थी और गहराई कुछ भी नहीं थी।

रोमी अपने बड़े लश्कर के बावजूद मोहतात हो कर बढ़ रहे थे हालांके इन्हें मालूम था के मुसलमानों की तादाद चालीस हज़ार है जो कम हो सकती है ज़्यादा नहीं हो सकती और इन्हें इतनी जल्दी कुमक भी नहीं मिल सकती। रोमी लश्कर चन्द दिनों बाद आगे आया लेकिन आते ही इस ने हमला न किया। वो चन्द मील दूर रूक गए और अपने दस्तों को जंग की तरतीब में फैला दिया। मोअररिख़ लिखते हैं के रोमी फौज की तादाद इतनी ज़्यादा थी के सही मानों में इन्सानों और घोड़ों का समुंद्र लगती थी। इस फौज के मुहाज़ की लम्बाई अठारह मील थी और गहराई भी खासी ज़्यादा थी। सफों के पीछे सफें थी।

रोमी लश्कर के सालारे आला माहान ने आगे आ कर मुसलमानों की फौज का जाएज़ा लिया। उसे अपनी जंगी ताक़त पर इतना नाज़ था के वो मुसलमानों की सफों के क़रीब आ गया। उस के चेहरे पर रऊनत और होंटों पर तंज़िया मुस्कुराहट थी। मुसलमान उसे खामोशी से देखते रहे और वो मुसलमानों को हिक़ारत से देखता आगे बढ़ता गया।

उस के पीछे पीछे बारह मुहाफिज़ घोड़ों पर बड़ी शान से जा रहे थे।

❁

माहान ज़्यादा दूर नही गया था के उस के लश्कर की तरफ से एक सवार घोड़ा सरपट दौड़ता आया। माहान रूक गया। घुड़सवार उस के क़रीब आ रूका और रोमी अंदाज़ से सलाम कर के उस के हाथ में कुछ दिया। ये हरकुल का पैग़ाम था जो उस ने माहान को अंताकिया से भेजा था। ये दरअसल पैग़ाम नही शहंशाह हरकुल का फरमान था।

हरकुल ने उसे लिखा था के मुसलमानों पर हमला करने से पहले इन्हें सुलह नामे के लिए राज़ी करो। मुसलमान अगर ये शर्त मान लें के वो पुरअम्न तरीक़े से वापस चले जाऐंगे और आईंदा कभी रोमी सल्तनत की सरहद में दाखि़ल नही होंगे तो इन्हें इज़्ज़त से और कुछ रक़्म दे कर रूख़सत करो। अपनी तरफ से पूरी कोशिश करो के वो सुलह पर राज़ी हो जाऐं। अगर वो तुम्हारी बात न मानें तो अरबी इसाईयों को इस्तेमाल करो। शायद इन की बात मान जाऐं।

माहान ने ये पैग़ाम पढ़ा तो उस के चेहरे पर गुस्से के आसार आगए। उस ने क़ासिद को रूख़सत कर दिया।

"इन बद्दुओं के आगे घुटने ही टेकने थे तो इतना लश्कर इक्ळा करने की क्या ज़रूरत थी" –उस ने गुस्से से कहा।

"उस ने पीछे देखा। उस का अहतजाज सुनने वाले उस के मुहाफिज़ ही थे। उस ने मुसलमानों के मुहाज़ की तरफ देखा और घोड़े का रूख़ इस तरफ कर के आगे गया। क़रीब जाकर उस ने घोड़ा रोक लिया और एक मुहाफिज़ को अपने पास बुलाया।

"इन्हें कहो के अपने सालारे आला को सामने करें" –उस ने अपने मुहाफिज़ से कहा– "और कहो के हमारे सालारे आला माहान सुलह की बात करने आए हैं।"

मुहाफिज़ ने उस के अल्फाज़ बुलंद आवाज़ से दोहराए। मुसलमानों की तरफ से जवाब आया के आते हैं।

सवाल पैदा होता है के मुसलमानों के हाथों हरकुल की आधी फौज कट गई थी। बे अंदाज़ माले ग़नीमत मुसलमानों के हाथ लगा था और मुसलमानों ने सल्तनते रोम के बे शुमार इलाक़े पर क़ब्ज़ा कर लिया था फिर हरकुल ने इन्हें बख़्शा क्यों दिया था? उस ने डेढ़ दो लाख फौज इक्ळी कर के भी मुसलमानो के आगे सुलह का हाथ क्यों बढ़ाया था?

फौरी तौर पर ये जवाब सामने आता है के उस की फौज पर मुसलमानों की जो दहशत तारी थी, इस से वो ख़तरा महसूस करता था क उस की इतनी बड़ी फौज भी

शिकस्त खा जाएगी लेकिन उस वक्त के वकाए निगारों, मोअररिख़ों और बाद के तारीख़ नवीसियों ने मुख़तलिफ हवालों से लिखा है के हरकुल ओछा दुश्मन नही था। वो जगजू था और जंगजू कौम की क़द्र करता था। ख़ालिद (र०) की क़यदात से वो मुतास्सिर था। वो नही चाहता था के एक जंगजू कौम की इतनी पुरअज़्म फौज उस के लश्कर के हाथों ख़त्म हो जाए। वो मुसलमानों को ज़िन्दा वापस चले जाने को मौक़ा दे रहा था। उसे तवक्क़ो थी के मुसलमानों ने जज़्बे के ज़ोर पर उस के लश्कर से टक्कर ली तो मुसलमानों का क़त्ले आम होगा।

हरकुल ने जो कुछ भी सोचा था इस के मुताल्लिक़ आरा मुख़तलिफ हो सकती है लेकिन मुसलमानों की सोच मुख़तलिफ थी। मैदाने जंग में न वो रहम करते थे न रहम के तलबगार होते थे। अपनी नफरी की कमी और दुश्मन की कई गुना ज़्यादा ताक़त ने इन्हें कभी परेशान नहीं किया था।

❁

रोमी सालार माहान की पुकार पर अबु उबैदा (र०) आगे गए। उन के साथ एक तर्जुमान था।

"ऐ सालार!" -माहान ने बारौब लहजे में पूछा- "क्या तू अम्न व अमान से यहां से चले जाना चाहता है।

"हम अम्न व अमान चाहते हैं" -अबु उबैदा (र०) ने कहा - "लेकिन जाना नही चाहते।"

"शहंशाह हरकुल के हुक्म की तामील लाज़मी है" -माहान ने कहा- "उसी के हुक्म से मैं तेरे पास आया हूं।"

"लेकिन मेरे रोमी दोस्त!" -अबु उबैदा (र०) ने कहा- "हम पर सिर्फ अल्लाह के हुक्म की तामील लाज़मी है।"

"शहंशाह हरकुल तुम्हें एक मौक़ा दे रहे हैं" -माहान ने कहा- "अपनी इस ज़रा सी फौज से मेरी फौज के साथ टक्कर लेने से बाज़ आ जाओ.....मैं अपने एक सालार को सुलह की बात चीत के लिए भेज रहा हूं" -और वो चला गया।

रोमी फौज का जो सालार सुलह की बात चीत करने आया वो गरीगरी था। अबु उबैदा (र०) ने उस का इस्तक़बाल किया।

"मैं शहंशाह हरकुल की तरफ से सुलह की पेशकश ले कर आया हूं" -गरीगरी ने कहा- "अगर तुम वापस चले जाओ और फिर कभी इधर न आने का मुहाएदा कर लो तो हमारे शहरों और क़स्बों से जो माले ग़नीमत वग़ैरा उठाया है वो अपने साथ ले जा सकते हो हमारा लश्कर देख लो और अपनी तादाद देख लो।"

"अगर ये लड़ाई मेरी ज़ाती होती तो मैं तुम्हारी पेशकश कुबूल कर लेता"–अबु उबैदा(र०) ने कहा–"मैं शहंशाह नही। शहंशाह अल्लाह है और हम उसी के हुक्म पर आए है। हम कोई पेशकश कुबूल नही कर सकते।"

गरीगरी चला गया। हरकुल ने अपने फरमान में लिखा था के सुलह का ज़रिया इस्तेमाल करो। इस हुक्म के मुताबिक़ माहान ने एक और सालार जबला बिन ऐहम को भेजा।

"क्या तुम्हारी फौज के तमाम सालार बारी बारी सुलह का पैग़ाम ले कर आऐंगे?"–अबु उबैदा(र०) ने पूछा–"क्या कोई मेरे इन्कार को इक़रार में बदल सकता है?"

"सुलह का पैग़ाम लाने वाला मैं आख़री सालार हूँ"–जबला ने कहा–"मैं इस लिए आया हूं के मैं भी अरबी हूं। हूं त्रो इसाई लेकिन मेरे दिल में अपने वतन के लोगों की मोहब्बत है। मैं तुम्हें तबाही से बचाने आया हूं। तुम वापस चले जाओ। अगर तुम्हारा कोई मुताल्बा है तो बता दे। मैं वो पूरा करूंगा।"

"हमारा मुताल्बा तुम जानते हो"–अबु उबैदा(र०) ने कहा–"हम ख़ैरात नहीं जज़िया लेंगे।"

"ऐ अरबी सालार!"–जबला ने हैरान हो कर पूछा–"क्या चालीस हज़ार की फौज चार गुना ताक़तवर लश्कर से जज़िया वसूल कर सकती है?"

अबु उबैदा(र०) ने शहादत की उंगली आसमान की तरफ की और उन के होंटों पर तबस्सुम आ गया। उन्होंने रोमियों की हर पेशकश ठुकरा दी और सुलह से इन्कार कर दिया।

❁

जूलाई 636ई० (जमादी–उल–आख़िर 15 हिज्री) का तीसरा हफ्ता शुरू हो चुका था। जबला बिन ऐहम ने अपने सालारे आला माहान को जाकर बताया के मुसलमान किसी क़ीमत और किसी शर्त पर सुलह के लिए तैयार नही।

"हम शहंशाह हरकुल के हुक्म की तामील कर चुके है।"–माहान ने कहा–"मैं ने अपने ज़राय इस्तेमाल कर लिए है....जबला! अब वो तरीक़ा इख़्तियार करो जो शहंशाह हरकुल को पसंद नहीं था। इन बदक़िस्मत और कम अक़्ल मुसलमानों पर हमला करो। इस से इन्हें हमारी ताक़त का अंदाज़ा हो जाएगा और हम ये देख लेंगे के उन में कितना दम ख़म है और इन के अंदाज़ क्या है।"

रोमी लश्कर का पड़ाव कई मील दूर था। जबला अपने दस्तों को ले कर मुसलमानो के सामने आया। उस के दस्तों को रोमी फौज के हथियार दिए गए थे जो

बेहतर क़िस्म के थे। इन दस्तों में अरबी इसाई थे। वो जब आए तो मुसलमान लड़ाई के लिए तैयार हो चुके थे। जबला ने आते ही हमला न किया। वो मुसलमानो के मुहाज़ को देख कर हमला करना चाहता था।

आख़िर उस ने हल्ला बोलने का हुक्म दे दिया। वो अभी मुसलमानों की अगली सफ तक पहुंचा भी न था के उस के दस्तों के दोनों पहलुओं पर हमला हो गया। हमला करने वाला मुसलमान सवारों का दस्ता था जिस की कमान ख़ालिद(र०) कर रहे थे। घूम फिर कर लड़ने वाले इस दस्ते ने अपना मख़सूस अंदाज़ इख़्तियार किया। जबला की तरतीब गड़मुड़ हो गई। इस पर सामने से भी हमला हुआ।

इसाई बौखला गए। इन्हें अपने पहलुओं पर हमले की तवक़्क़ो नहीं थी। मुसलमान सवारों ने इन्हें बिखेर दिया। इसाई अब भागने के सिवा कुछ नहीं कर सकते थे। वो बहुत सी लाशें और बे अंदाज़ ज़ख़्मी पीछे फैंक कर पस्पा हो गए।

मोअररिख़ लिखते हैं के माहान ने मुसलमानों को लड़ते भी देखा और जिस तेज़ी से मुसलमान सवारों ने जबला के दस्तों पर हमला किया था, वो भी देखा और वो समझ गया के मुसलमानों से लड़ना बहुत मुश्किल है और इस के लिए मज़ीद तैयारी की ज़रूरत है। माहान ने हमले के लिए कोई और दस्ता न भेजा।

माहान को तवक़्क़ो थी के मुसलमान जवाबी हमला करेंगे लेकिन नफरी की कमी मुसलमानों की मजबूरी थी। वो जवाबी हमला करने का ख़तरा मोल नहीं ले सकते थे। उधर जबला मोहतात हो गया। दिन गुज़रने लगे। दोनों तरफ की फौजों ने एक दूसरे पर नज़र रखने के लिए अपने अपने आदमी मुक़र्रर कर दिए।

ये वक़्फा मुसलमानों के लिए फायदामंद रहा। इन्हें मदीना से छः हज़ार अफराद की कुमक मिल गई ये छः हज़ार अफराद यमनी थे और ताज़ा दम। इन से मुसलमानों के मुहाज़ को कुछ तक़्वीयत मिल गई।

मुसलमानों की फौज की तफसील इस तरह थी के इस की कुल तादाद चालीस हज़ार थी। इन में एक हज़ार रसूले अकरम(स०) के सहाबा-ए-इकराम(र०) थे इन एक हज़ार में एक सौ वो मुजाहेदीन भी शामिल थे जो बदर की लड़ाई लड़े थे। इस नफरी में रसूले करीम(स०) के फूफी ज़ाद भाई जुबैर(र०) भी शरीक थे, और इस नफरी में पहली जंगों की दो मशहूर शख़्सियतें भी शामिल थीं-अबु सफयान(र०) और उन की बीवी हुन्द-हुन्द वो ख़ातून थी जिन्होंने कुबूले इस्लाम से पहले ग़ज़वा-ए-ओहद में हम्ज़ा(र०) की लाश का कलेजा निकलवा कर चबाया था। अबु सफयान(र०) के बेटे यज़ीद(र०) पहले ही चालीस हज़ार की इस फौज में शामिल थे और सालार थे।

एक महीना गुज़र गया तो दुश्मन ने देखा के उस का लश्कर लड़ने के लिए तैयार

हो गया है और मुसलमानों की नफरी में भी कोई इज़ाफा नही हुआ तो उस ने मज़ीद इन्तेज़ार मुनासिब न समझा लेकिन उस ने एक बार फिर सुलह की कोशिश को ज़रूरी समझा। उस ने अपना एक ऐल्ची मुसलमानों के मुहाज़ को इस पैग़ाम के साथ भेजा के सालारे आला बात चीत के लिए आऐं।

"अबु सुलेमान!"–अबु उबैदा(र०) ने ख़ालिद(र०) से कहा–"क्या ये बेहतर नही होगा के अब इस खख़्स के साथ तू बात करे? वो हमें अपनी ताक़त से डरा कर सुलह करना चाहता है।"

"मुझे ही जाना चाहिए अमीनुलउम्मत!"–ख़ालिद(र०) ने कहा–"उस के साथ मै ही बात करूंगा।"

ख़ालिद(र०) घोड़े पर सवार हुए और ऐड़ लगा दी। माहान नज़र नहीं आ रहा था। ख़ालिद(र०) के साथ चन्द एक मुहाफिज़ थे। वो रोमियों के मुहाज़ तक चले गए। माहान ने उन का इस्तक़बाल किया और उन्हें अपने ख़ेमे में ले गया। ख़ेमे में महसूस ही नही होता था के ये मैदाने जंग है। ये शाहाना कमरा था।

"मैं माहान हूं"–माहान ने अपना तआर्रूफ कराया–"रोमी अफवाज का सालारे आला!"

"मैं कुछ भी नहीं हूं"–ख़ालिद(र०) ने कहा–"मेरा नाम ख़ालिद(र०) बिन वलीद है।"

"तु सब कुछ हो इब्ने वलीद(र०)!–माहान ने कहा–"जहां तक तुम नही पहुंच सके वहां तक तुम्हारा नाम पहुंच गया है....मेरा ख्याल है के तुम जितने क़ाबिल और जुर्रतमंद सालार हो इतने ही दानिशमंद इन्सान भी होगे। क्या तुम पसंद करोगे के तुम्हारी चालीस हज़ार फौज मेरे इस लश्कर के हाथों मारी जाए जो बड़ी दूर दूर तक फैली हुई चट्टानों की मानिंद है? दानिशमंद आदमी चट्टानो से नही टकराया करते।"

"बहुत अच्छे अल्फाज़ हैं"–ख़ालिद(र०) ने कहा–"मैं इन अल्फाज़ की क़द्र करता हूं लेकिन हम वो दानिशमंद हैं जो बातिल की चट्टानों से डरा नहीं करते। तुम ने मुझे यहां तक आने का मौक़ा इस लिए दिया है के मैं तुम्हारे लश्कर को देख कर डर जाऊं।"

"इब्ने वलीद!"–माहान ने कहा–"क्या तुझे अपने सिपाहियों की बीवियों और बच्चों का भी कोई ख्याल नहीं जो तुम्हारे लश्कर के साथ हैं? क्या तुम ने सोचा नहीं के तुम सब मारे गए तो ये बीवियां और बच्चे हमारी मिल्कयत होंगे?"

"माहान!–ख़ालिद(र०) ने मुस्कुराते हुए कहा–"हम सब कुछ सोच चुके है.... सुलह नहीं होगी।"

"इब्ने वलीद(र०)!"–माहान ने कहा–"क्या तुम ये भी नही समझ रहे के मै तुम

पर रहम कर रहा हूं?....मै तुम्हें, तुम्हारे सारे लश्कर को और तुम्हारे ख़लीफा को भी इतनी रक़म पेश करूंगा जो तुम सब को हैरान कर देगी। "

"रहम करने वाला सिर्फ अल्लाह है जिस के क़ब्जें में मेरी और तेरी जान है"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"हम उसी की इबादत करते और उसी से मदद और रहम मांगते है। अगर तू नही चाहता के कुश्त व खून हो तो इस्लाम कुबूल कर ले जो अल्लाह का सच्चा दीन है। "

"नही"-माहान ने बड़े रौब से जवाब दिया।

"अगर मुझे, मेरे ख़लीफा और मेरे लश्कर को इनाम देना है तो जज़िया अदा कर दे"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"लेकिन जज़िया ले कर हम चले नहीं जाऐंगे बल्कि तेरी और हरकुल की रिआया की हिफाज़त, इज़्ज़त और हर ज़रूरत के ज़िम्मेदार होंगे.....अगर ये भी मंज़ूर नही तो मैदाने जंग में हमारी तलवारों की मुलाक़ात होगी। "

मोअररिख़ वाक़दी, बलाज़ी और अबु यूसुफ ने लिखा है के ख़ालिद(र०) माहान पर अपना बड़ा अच्छा तास्सुर छोड़ आए और माहान का जो तास्सुर ले कर आए वो भी अच्छा था। उस ने कोई ओछी बात न की। ख़ालिद(र०) ने वापस आकर अबु उबैदा(र०) को एक तो ये बताया के माहान के साथ क्या बात हुई है, दूसरे ये के माहान कितना अच्छा और कितना बा वक़ार सिपह सालार है।

"फिर उस में एक ही ख़राबी है"-अबु उबैदा(र०) ने कहा-"उस की अक्ल व दानिश शैतान के क़ब्ज़े में है।

ख़ालिद(र०) माहान को आख़री फैसला सुना आए के सुलह नहीं हागी।

❁

अबु उबैदा(र०) ने अपने तमाम सालारों को इक्ळा कर के बताया के दुश्मन ने सुलह की पेशकश की थी जो ठुकरा दी गई है और अब लड़ाई नागुज़ीर हो गई है और तमाम मुजाहेदीन को ये भी बता दिया जाए के रोमियों ने हमें अपने लश्कर और अपनी जंगी ताक़त से डराया है।

मोअररिख़ों के मुताबिक़, ख़ालिद(र०) और माहान की बात चीत की नाकामी के बाद जब दोनों तरफ की फौजों को बताया गया के जंग हो के रहेगी और कल सुबह से फौजें एक दूसरी के आने सामने आजाऐंगी, उस वक़्त से दोनों फौजों पर हीजानी कैफियत तारी हो गई। रोमी मुहाज़ पर पादरियों ने लश्कर को सलीबें दिखा कर मज़हब के नाम पर गरमाया और इन्हें सलीब और यसू मसीह के नाम पर मर मिटने की तलक़ीन की। पादरियों के अल्फाज़ और उन का अंदाज़ इतना जोशीला था के सिपाहियों ने सलीब की तरफ हाथ कर के हलफ उठाए के वो फतह हासिल करेंगे वरना मर जाऐंगे।

मुसलमानों ने इबादत और दुआ के लिए रात का वक़्त मुक़र्रर किया। इन्हें गरमाने और जोश दिलाने के लिए वाज़ की ज़रूरत नही थी। जिस मक़सद के लिए वो घरों से निकले थे उस मक़सद की अज़मत से वो आगाह थे। उन्होंने अपनी जानें अल्लाह के सुपुर्द कर दी थी।

उसी रोज़ दोनों फौजों ने सफ बंदी और दस्तों को मोज़ू जगहों पर पहुंचाने का काम शुरू कर दिया। माहान ने अपने लश्कर को चार हिस्सों में तक़सीम किया और इन्हें आगे ला कर सफ आरा किया। उस के मुहाज़ की लम्बाई बारह मील थी और गहराई इतनी ज्यादा के सफों के पीछे सफें थी जो दूर पीछे तक चली गई थी।

रोमी अफवाज को इस तरतीब से खड़ा किया गया था के एक पहलू पर सालार गरीगरी के दस्ते थे और दूसरे पहलू पर सालार क़नातीर के दस्ते क़ल्ब में सालार आला माहान की आरमीनी फौज और सालार दीरजान के दस्ते थे घुड़सवार दस्तों को चार हिस्सों में तक़सीम किया गया और इन्हें ऐसी जगहों पर खड़ा किया गया जहां उन के सामने मुसलमानो के पियादा दस्ते थे। रोमियों के पास सवार दस्ते इतने ज़्यादा थे के उन्होंने सवारो के पीछे भी सवार खड़े कर दिए थे। सालार जबला बिन ऐहम के घुड़सवारों और शतुर सवारों को बारह मील लम्बे मुहाज़ के आगे खड़ा किया गया।

माहान ने एक बंदोबस्त और किया। गरीगरी के दस्ते एक पहलू पर थे। इन में तीस हज़ार पियादे थे। इन तमाम पियादों को ज़ंजीरों से बांध दिया गया। एक ज़ंजीर में दस दस आदमी बांधे गए। ज़ंजीरें इतनी लम्बी थीं के इन से बंधे हुए सिपाही आसानी से लड़ सकते थे। ज़ंजीरों का एक मक़सद ये था के सिपाही भाग नहीं सकेंगे और दूसरा मक़सद ये के मुसलमान हमला करेंगे तो इन ज़ंजीरों से उलझ जाऐंगे, गिरेंगे और सफें तोड़ कर आगे नही निकल सकेंगे।

❁

ख़ालिद(र०) रोमियों की सफ बंदी देख रहे थे। सालारे आला अबु उबैदा(र०) थे। उन में एक क़ाबिल सालार की सारी खुसूसियत मौजूद थी। लेकिन मैदाने जंग में बड़ी अहतियात से क़दम उठाते थे और ख़तरा मोल लेने से कुछ गरेज़ करते थे। जंगे यरमूक में उन्होंने सिपह सालारी के फराइज़ ख़ालिद(र०) के हवाले कर दिए थे। ये जंग ऐसी थी जिस में ख़तरे मोल लेने ही थे। दुश्मन की इतनी ज़्यादा ताक़त के मुक़ाबले में रिवायती तरीक़ों से जंग नही लड़ी जा सकती थीं। सिपह सालार अबु उबैदा(र०) ही थे। उन्होंने ये सूरते हाल ख़ालिद(र०) के सुपुर्द कर दी थी।

ख़ालिद(र०) ने अबु उबैदा(र०) से कहा के वो तमाम सालारों और कमांडरों को इकक्ठा करें। ख़ालिद(र०) इन्हें सफ आराई और जंग के मुताल्लिक़ कुछ बताना चाहते

थे। चूंके वो सिपह सालार नही थे इस लिए सालारों पर इन का हुक्म नही चल सकता था। अबु उबैदा(र०) ने सब को बुला लिया।

ख़ालिद(र०) ने इन्हें बताया के दुश्मन की तादाद को वो देख रहे है और अपनी तादाद भी उन के सामने है इस लिए ये ज़िन्दगी और मौत की जंग होगी। इस के बाद ख़ालिद(र०) ने मुजाहेदीन को इस तरह तक़सीम किया। चालीस हज़ार तादाद में कुल दस हज़ार घुड़सवार थे। तीस हज़ार पियादों को छत्तीस हिस्सों में तक़सीम किया। हर हिस्से में आठ सौ से नौ सौ पियादे आए।

घुड़सवारों को उन्होंने दो दो सौ के तीन हिस्सों में तक़सीम किया। एक की कमान क़ैस बिन हुबैरा को दी दूसरे की मिसरा बिन मसरूक़ को और तीसरे की कमान आमिर बिन तुफैल को दी।

मुसलमानों के मुहाज़ की लम्बाई ग्यारह मली थी, यानी दुश्मन से एक मील कम। ज़ाहिर है के मुसलमानों की सफ आराई की गहराई थी ही नहीं। एक पहलू पर यज़ीद (र०) बिन अबु सफयान के और दूसरे पहलू पर उमरो बिन आस(र०) के दस्ते थे। इन्हें दो दो सौ का एक एक सवार दस्ता भी दिया गया था।

अबु उबैदा(र०) क़ल्ब में थे। उन्होंने सालार शरजील(र०) बिन हस्ना के दस्तों को अपने साथ दायें तरफ रखा। उन के साथ सालार अक़रमा(र०) बिन अबु जहल और अब्दुर्रहमान बिन ख़ालिद(र०) भी थे। चार हज़ार घुड़ सवारों को ख़ालिद(र०) ने अपनी कमान में अगली सफों के पीछे रखा था। इन्हें हर उस जगह पहुंचना था जहां दुश्मन का दबाओ ज़्यादा होना था और इन सवारों ने घूम फिर कर लड़ना था।

अगली सफ के पियादों को लम्बी बरछियां दी गई थी जो नेज़े कहलाती थीं। इन की अन्नियां तीन धारी और चार धारी थीं और बहुत तेज़। इन पियादों में तीरअंदाज़ ख़ास तौर पर रखे गए थे। रोमियों के हमले को नेज़ों और तीरों की बौछाड़ों से रोकना था। इस के बाद तेग़ ज़नों ने अपने जोहर दिखाने थे।

उस दौर के रिवाज के मुताबिक़ बहुत से मुजाहेदीन के बीवी बच्चे और बाज़ की बहनें उन के साथ थीं। इन औरतों और बच्चारें को फौज के पीछे रखा गया। अबु उबेदा(र०) वहां गए।

"क़ौम की बेटियों!"-अबु उबैदा(र०) ने औरतों से कहा- "हम तुम्हारी हिफाज़त करेंगे लेकिन तुम्हें एक काम करना है। अपने पास पत्थर जमा कर लो और ख़ेमों के डझडे अपने हाथों में रखो। अगर कोई मुसलमान भाग कर पीछे आए तो उसे पत्थर मारो। डझडे उस के मुंह पर मारो। भागने वालों की बीवियों और बच्चों को उन के सामने खड़ा कर दो।"

औरतों ने उसी वक्त ख़ेमों से डझडे निकाल लिए और पत्थर इक्ळे करने लगी।

❁

सफ बंदी हो चुकी तो अबु उबैदा(र०) ख़ालिद(र०) और दूसरे सालार एक सिरे से दूसरे सिरे तक गए। वो मुजाहेदीन का हौसला बढ़ा रहे थे। वो हस्ते और मुस्कुराते थे और कही रूक जाते तो ख़ालिद(र०) चन्द अल्फाज़ कह कर उन के जज़्बों को सहारा देते थे। उन के अल्फाज़ कुछ इस क़िस्म के थे के अल्लाह की तरफ से बड़े सख़्त इम्तेहान का वक्त आ गया है। अल्लाह की मदद उसी को हासिल होती है जो उस की राह पर साबित क़दम हता है। दुनिया में और आख़िरत में इज़्ज़त और तकरीम उन्हें मिलती है जिन के दिलो में ईमान की शमा रौशन होती है और वो कुफ्र की तेज़ धार तलवार का मुक़ाबला बे ख़ौफ हो कर करते है।

मोअरिख़ तिबरी ने लिखा है के ये सालार एक दस्ते के सामने से गुज़रे तो एक मुजाहिद ने कहा- "रोमी कितने ज़्यादा और हम कितने थोड़े है।"

ख़ालिद(र०) ने घोड़ा रोक लिया।

"मेरे रफीक़!"-ख़ालिद(र०) ने बड़ी बुलंद आवाज़ में कहा-"कहो रोमी कितने थोड़े और हम कितने ज़्यादा हैं। ताक़त तादाद की नहीं होती, ताक़त अल्लाह की मदद से बनती है। तादाद रोमियों के पास है अल्लाह हमारे साथ है। अल्लाह जिस का साथ छोड़ दे वो बहुत कमज़ोर हो जाता हैं"

ज़्यादा तर मोअरिख़ों ने लिखा है के सालार और कमांडर जब अपनी फौज में घूम फिर रहे थे तो ये आयत बा आवाज़े बुलंद पढ़ते जाते थे:

"कितनी ही बार छोटी छोटब जमातें अल्लाह के चाहने से बड़ी बड़ी जमातों पर ग़ालिब आई हैं। अल्लाह सब्र व इस्तक़ामत वालों का साथ देता है।" (कुर्आने हकीम 2/249)

वो अगस्त 636ई० के तीसरे, रजब 15 हिज्री के दूसरे हफ्ते की एक रात थी। मुजाहेदीन तमाम रात इबादत इलाही और तिलावते कुर्आन में मसरूफ रहे। अल्लाह के सिवा कौन था जो उन की मदद को पहुंचता। अकसर मुजाहेदीन सूरह अनफाल की तिलावत करते रहे।

रोमी मुहाज़ भी शब भर बेदार रहा। वहां पादरियों ने सिपाहियों को इबादत और दुआओं में मसरूफ रखा। दोनों तरफ मशालें भी जलती रहीं और जगह जगह लकड़ियों के ढेर जलते रहे ताके रात को दुश्मन हमला करने आए तो आता नज़र आ जाए। दोनों फौजों पर हीजान और खिचाओ की कैफियत तारी थी।

❁

मुसलमानों के मुहाज़ से सुबह की अज़ान की आवाज़ उठी मुजाहेदीन ने वज़ू और ज़्यादा तर ने तमीम कर के बा जमात नमाज़ पढ़ी और अपनी जगहों पर चले गए। जंग शुरू होने वाली थी जिस का शुमार तारीख़ की बहुत बड़ी जंगों में होता है।

सूरज उफक़ से उठा तो उस ने ज़मीन पर बड़ा ही हैबत नाक मंज़र देखा। चालीस हज़ार की फौज डेढ़ लाख नफरी की फौज के मुक़ाबले में खड़ी थी। शान तो हरकुल के लश्कर थी। उस के झण्डे लहरा रहे थे और बहुत सी सलीबें ऊपर को उठी हुई थीं। इस में ज़रा से शक की भी गुजाईश नहीं थी के ये लश्कर अपने सामने खड़ी इस छोटी सी फौज को नेस्त व नाबूद कर देगा।

जर्जा रोमी फौज का एक सालार था जो इंफेरादी मुक़ाबलों में बहुत शोहरत रखता था। अपने सालारे आला माहान के हुक्म से वो आगे बढ़ा।

"क्या ख़ालिद(र०) बिन वलीद में इतनी हिम्मत है के मेरी तलवार के सामने आ सके?" -जर्जा ने लल्कार कर कहा।

"मैं हूं रोमियों का क़ातिल!" -ख़ालिद(र०) लल्कारते हुए आगे बढ़े- "मैं हूं ख़ालिद(र०) बिन वलीद!"

ख़ालिद(र०) दोनों फौजों के दरमियान जा कर रूक गए। उन्होंने तलवार निकाल ली थी लेकिन जर्जा ने तलवार न निकाली। वो घोड़े पर सवार आ रहा था। ख़ालिद(र०) बिन वलीद अपने घोड़े को उस के घोड़े के इतना क़रीब ले गए के दोनों घोड़ों की गर्दनें मिल गईं। जर्जा ने फिर भी तलवार न निकाली।

तिबरी, वाक़दी, हैनरी सिम्थ और अबु यूसुफ ने ये वाक़ेया तफसील से लिखा है। इतनी क़रीब हो कर भी जर्जा ने तलवार न निकाली।

"इब्ने वलीद(र०)-जर्जा ने कहा- "झूट न बोलना के जंगजू झूट नहीं बोला करते। धोका भी न देना के आला नस्ल के लोग धोका नहीं दिया करते।"

"पूछ ऐ दुश्मन-ए-इस्लाम!" -ख़ालिद(र०) ने कहा- "जंगजू झूट नहीं बोलेगा, धोका नहीं देगा। पूछ क्या पूछता है।"

"क्या मैं इसे सच समझूं के तेरे रसूल(स०) को खुदा ने आसमान से तलवार भेजी थी?" -जर्जा ने पूछा- "और ये तलवार तेरे रसूल (स०) ने तुझे दे दी थी? और जब तेरे हाथ में ये तलवार होती है तो दुश्मन शिकस्त खा कर भाग जाता है?"

"ये सच नहीं" -ख़ालिद(र०) ने कहा।

"फिर तू सेफुल्लाह क्यों कहलाता है?" -जर्जा ने पूछा- "फिर तू अल्लाह की शमशीर क्यों बना?"

"सच ये है ऐ दश्मने इस्लाम!" -ख़ालिद(र०) ने कहा- "रसूल अल्लाह(स०) ने

मेरी तेज़ ज़नी के जौहर देखे थे तो आप(स०) ने बेसाख़्ता कहा, तू अल्लाह की तलवार है, आप(स०) ने मुझे अपनी तलवार ईनाम के तौर पर दी थी। अब निकाल अपनी तलवार और तू भी इस का ज़ायक़ा चख ले।"

"अगर मैं तलवार न लिकालूं तो?"

"फिर कहो, लाइलाहा इललल्लाह मोहम्मदुर्रसूल अल्लाह"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"तस्लीम कर के मोहम्मद(स०) अल्लाह के रसूल(स०) हैं।

"मैं ऐसा कहने से इन्कार कर दूं तो तू क्या करेगा?"

"फिर तुझ से जज़िया मांगूगा-ख़ालिद(र०) ने कहा-"और तुझे अपनी हिफाज़त में रखूंगा।"

"अगर मैं जज़िया देने से इन्कार कर दूं?"

"फिर निकाल अपनी तलवार!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"और पहला वार कर ले के तुझे अफसोस न रहे के वार करने का तुझे मौक़ा नहीं मिला था।"

जर्जा कुछ देर ख़ामोश रहा और ख़ालिद(र०) के मुंह की तरफ देखता रहा।

"अगर कोई आज इस्लाम कुबूल करे तो उस को क्या दर्जा दोगे?"-जर्जा ने पूछा।

"वही दर्जा जो हर मुसलमान का है"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"इस्लाम में कोई बड़ा और कोई छोटा नहीं।"

"मैं तेरे मज़हब मे आना चाहता हूं"-जर्जा ने कहा-"मैं इस्लाम कुबूल करता हूं।

ख़ालिद(र०) के चेहरे पर हैरत का बड़ा गहरा तास्सुर आ गया।

"क्या तू अपने होश व हवास में है एक रोमी सालार?"-ख़ालिद(र०) ने पूछा।

"हां इब्ने वलीद(र०)!-जर्जा ने जवाब दिया-"मुझे अपने साथ ले चल।"

ख़ालिद(र०) ने अपना घोड़ा मोड़ा। जर्जा ने अपना घोड़ा ख़ालिद(र०) के पहलू में कर लिया और वो मुसलमानों के मुहाज़ में आ गया। ख़ालिद(र०) ने उसे कल्मा पढ़ाया और वो मुसलमानों के मुहाज़ में शामिल हो गया।

मुसलमानों ने तकबीर के नारे बुलंद किए और रोमी लश्कर ने बड़ी बुलंद आवाज़ से जर्जा पर लान तान की लेकिन जर्जा पर कुछ असर न हुआ।

बड़ी ही खूंरेज़ जंग शुरू होने वाली थी और जर्जा अपने ही लश्कर के ख़िलाफ लड़ने के लिए तैयार हो गया था।

अगस्त 636ई० मुसलमानो के बड़े ही सख़्त इम्तेहान का महीना था। रोमियों का एक सालार इस्लाम कुबूल कर के मुसलमानों के पास आ गया था। मुसलमानों ने खुशी के नारे तो बहुत लगाए थे लेकिन उन्हें अहसास था के दुश्मन के एक सालार के इधर आ जाने से रोमियों के इतने बड़े लश्कर में ज़रा सी भी कमज़ोरी पैदा नही होगी और दुश्मन के लड़ने के जज़्बे मे भी कोई फर्क़ नही आएगा।

मुसलमानों को इतने बड़े और ऐसे मुनज़्ज़म लश्कर का सामना पहली बार हुआ था। इस्लाम के लिए ये बड़ा ही ख़तरनाक चैलंज था जो इस्लाम के शैदाईयों ने कुबूल कर लिया था। मुसलमान एक खुदकुश जंग के लिए तैयार हो गए थे और ये पहला मौक़ा था के मुसलमान औरतें भी मर्दों के दोश बदोश लड़ने के लिए तैयार हो गई थीं। इन्हें अबु उबैदा(र०) ने तो ये कहा था के ख़ेमों के डण्डे निकाल लें और पत्थर इक्ळे कर लें और जो मुसलमान भाग कर पीछे आए उस पर पत्थर बरसाएं और उस के मुंह पर डण्डे मारें लेकिन औरतों ने अपने आप को जंग में कूद पड़ने के लिए भी तैयार कर लिया था। दोनों फौजों क़ी नफरी उन के सामने थी।

वहां तो हर मुसलमान औरत में अपने मर्दों जैसा जज़्बा था लेकिन उन में चन्द एक औरतें ग़ैर मामूली जज़्बे वाली थीं। इन में एक ख़ातून हुन्द और दूसरी ख़ोला बिन्ते लाज़ोर ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं। हुन्द का पहले ज़िक्र आ चुका है। वो अबु सफयान की बीवी थी। इस्लाम क़ुबूल करने से पहले जंग ओहद में उन्होंने अपने क़बीले का हौसला बढ़ाने के लिए मैदाने जंग में गीत गाए थे। ये गीत ज़रमिया नहीं थे और ये बाक़ायदा जंगी तराने भी नहीं थे। इन गीतों में अपने आदमियों की मर्दांगी को उभारा गया था और कुछ इस क़िस्म के अल्फाज़ थे के तुम हार गए तो तुम्हारी बीवियां तुम्हें अपने जिस्मों को हाथ भी नहीं लगाने देंगी। हुन्द का चचा इस लड़ाई में हम्ज़ा(र०) के हाथ से मारा गया था तो हुन्द ने मशहूर बरछी बाज़ वहशी को हम्ज़ा(र०) के क़त्ल के लिए कहा और उसे ईनाम पेश किया था।

वहशी की फैंकी हुई बरछी कभी ख़ता नहीं गई थी। उस ने मैदाने जंग में हम्ज़ा(र०) को ढूंड निकाला और ताक कर बरछी मारी। बरछी हम्ज़ा(र०) के पेट में उतर गई और वो शहीद हो गए। हुन्द दौड़ी गई और वहशी से कहा के हम्ज़ा(र०) की

लाश का पेट चाक करो। वहशी ने हुक्म की तामील की तो हुन्द ने हम्ज़ा(र०) का कलेजा निकाल कर मुंह में डाला और चबा कर फैंक दिया था। कुछ अर्से बाद अबु सफयान और ने इस्लाम कुबूल कर लिया और अब इस औरत का वही जोश व ख़रोश और जज़्बा इस्लाम की सरबुलंदी की ख़ातिर लड़ी जाने वाली जंगों में काम आ रहा था। उन का बेटा यज़ीद बिन अबु सफयान(र०) इस्लामी लश्कर में सालार था।

दूसरी नामूर ख़ातून ख़ोला बिन्ते लाज़ोर थीं। जो लाज़ोर(र०) बिन लाज़ोर की बहन थीं। लाज़ोर(र०) का बहुत ज़िक्र आ चुका है। वो खुद, ज़िरा और क़मीज़ उतार कर लड़ा करते थे। इस गैर मामूली दिलैरी की वजह से लाज़ोर(र०) रोमियों में नंगा हो कर क़हर और ग़ज़ब से लड़ने वाले के नाम से मशहूर हो गए थे। दो साल पहले लाज़ोर(र०) एक मआरके में रोमियों की सफों में इतनी दूर चले गए के बहुत से रोमियों ने इन्हें घेर लिया और ज़िन्दा पकड़ लिया था। लाज़ोर(र०) रोमियों के लिए बहुत अहम शिकार थे। कोई सोच भी नहीं सकता था के रोमी इन्हें ज़िन्दा छोड़ देंगे।

और ये भी कोई नहीं सोच सकता था के लाज़ोर(र०) की बहन ख़ोला इन्हें छुड़ा लाएंगी। पहले तफसील से बयान हो चुका है के एक मआरके में ख़ोला चेहरे पर नक़ाब और सर पर सब्ज़ अमामा रख कर रोमियों की सफों पर टूट पड़ी थीं। वो ख़ालिद(र०) के क़रीब से गुज़र कर आगे गई थीं। ख़ालिद(र०) इन्हें अपना कोई मुजाहिद समझते रहे थे। उन्होंने आख़िर इन्हें अपने पास बुलाया तो इन्हें पता चला के ये कोई आदमी नही बल्कि औरत है और लाज़ोर(र०) बिन लाज़ोर की बहन है।

ये इत्तेला मिल गई के रोमी लाज़ोर(र०) को पाब्जोलाल कर के फलां तरफ ले जा रहे हैं। रोमियों की तादाद ख़ासी ज़्यादा थी। राफे बिन उमेरा(र०) को एक सौ सवार दे कर ख़ालिद(र०) ने लाज़ोर(र०) को छुड़ा लाने को भेजा तो ख़ोला भी पीछे पीछे चली गई थीं। ख़ालिद(र०) को उन के जाने का इल्म नही था। जब वो राफे (र०) बिन उमेरा के सवारों से जा मिलीं तो राफे(र०) ने भी इन्हें रोका था लेकिन ख़ोला नही रूकी थीं। उन्होंने अपने भाई को आज़ाद कराने के लिए रोमियों पर हमले पे हमला किया तो मर्दों को हैरान कर दिया था। इस तरह जान की बाज़ी लगा कर लाज़ोर(र०) को रोमियों से छुड़ा लिया था और अपने साथ ले आई थीं। उन के वो अल्फाज़ जो उन्होंने लाज़ोर(र०) को गले लगा कर कहे थे, तारीख़ में महफूज़ हैं- "मेरे अज़ीज़ भाई! मेरे दिल की तपिश देख। किस तरह तेरे फिराक़ में जल रहा है।"

अब जब के रोमी बुलंद व बाला पहाड़ की मानिंद खड़े थे तो हुन्द और ख़ोला और दूसरी तमाम मुसलमान औरतें सिर्फ बीवियों और बहनों की हैसियत से बैठी नही रह सकती थीं न वो अपने फर्ज़ को दुआओं तक महदूद रख सकती थीं। हुन्द और ख़ोला

औरतों के कैम्प में मर्दाना चाल चलती घूम फिर रही थी। वो औरतों को लड़ाई के लिए तैयार कर रही थीं। उन्होंने यहां तक फैसला कर लिया था के बच्चों वाली औरतें बच्चों को पीछे फैंक कर आगे चली जाऐंगी।

❁

रोमी सालार जर्जा ने ख़ालिद(र०) के हाथ पर इस्लाम कुबूल किया और इस के साथ ही इंफेरादी मुक़ाबले फिर शुरू हो गए। रोमीं अपने सालार जर्जा की कमी की खि़फ्फत यूं मिटाने लगे के वो अपने चुने हुए सालारों को इंफेरादी मुक़ाबलों के लिए उतारते जा रहे थे। अमूमन तीन चार मुक़ाले हुआ करते थे लेकिन मुक़ाबलों को ख़त्म ही नही होने दे रहे थे। इधर से कोई सालार, नायब सालार या कमांडर सामने आकर रोमियो को लल्कारता तो रोमी अपने किसी नामी गिरामी तेग़ ज़न या पहलवान को आगे कर देते। तक़रीबन मुक़ाबले में रोमी मारा गया या भाग गया।

ख़लीफा-ए-अव्वल अबु बकर(र०) के बेटे अब्दुर्रहमान मुक़ाबले के लिए सामने आए।

"मै हूं रसूल अल्लाह(स०) के पहले ख़लीफा अबु बकर(र०) का बेटा!"-अब्दुर्रहमान(र०) ने दोनों फौजों के दरमियान घोड़ा एक चक्कर में दौड़ाते हुए लल्कार कर कहा-"रोमियों! मेरी हैसियत का कोई सालार आगे भेजो।"

तारीख़ मे उस रोमी सालार का नाम नहीं मिलता जो उन के मुक़ाबले में आया। वो जो कोई भी था, बड़ी जल्दी कट कर गिरा।

क्या इतने बड़े लश्कर में मेरे पाए का कोई सालार नहीं?"-अब्दुर्रहमान(र०) बिन अबु बकर(र०) ने रोमियो को लल्कारा।

रोमियो की सफों से काले रंग का एक घोड़ा निकला जिस का क़द ऊंचा नही था, सर से दुम तक लम्बाई आम घोड़ों से ज़्यादा थी। उस का चमकता हुआ जिस्म घठा हुआ और गै़र मामूली तौर पर मोटा ताज़ा था। घोड़ा दौड़ता तो ज़मीन हिलती महसूस होती थी। वो अपने सवार के क़ाबू में था लेकिन उस की चाल और मस्ती ऐसी थी जैसे अपने सवार के क़ाबू में न हो। उस का सवार गोरे रंग का था और अपने घोड़े की तरह फर्बा जिस्म का था। वो पहलवान लगता था।

"ऐ बदक़िस्मत जवान!"-रोमी सालार ने लल्कार कर कहा-"क्या तू रोम के बेटे एल्मूर की बरछी के सामने कुछ देर अपने घोड़े पर बैठा नज़र आता रहेगा?"

"खुदा की क़सम!"-अब्दुर्रहमान(र०) ने अपने घोड़े को ऐड़ लगा कर कहा-"रोम वाले अभी वो बरछी नही बना सके जो इब्ने अबी बकर(र०) को घोड़े से गिरा सके।"

ऐल्मूर की बरछी काले घोड़े की रफ्तार से अब्दुर्रहमान(र०) की तरफ आ रही थी। अब्दुर्रहमान(र०) के हाथ में तलवार थी। घोड़े एक दूसरे के क़रीब आए तो ऐल्मूर ने रकाबो में खड़े हो कर अब्दुर्रहमान को बरछी मारी लेकिन अब्दुर्रहमान(र०) ने अपने घोड़े को ज़रा एक तरफ कर दिया और खुद पहलू की तरफ इतना झुक गए के रोमी सालार की बरछी का वार ख़ाली गया।

अब्दुर्रहमान(र०) ने वही से घोड़ा मोड़ा और बड़ी तेज़ी से ऐल्मूर के पीछे गए। ऐल्मूर अभी घोड़े को मोड़ रहा था। अब्दुर्रहमान(र०) की तलवार उस की उस कलाई पर पड़ी जिस हाथ में उस ने बरछी पकड़ रखी थी। हाथ साफ कट कर बाज़ू से अलग हो गया। बरछी उस हाथ समेत जिस ने उसे पकड़ रखा था, ज़मीन पर जा पड़ी। ये ज़ख़्म मामूली नही था। ऐल्मूर बिलबिला उठा। अब्दुर्रहमान(र०) का घोड़ा उस के इर्द गिर्द दौड़ रहा था। ऐल्मूर ने कटे हुए हाथ वाला बाज़ू ऊपर उठाया। वो इस टुंड मुंड बाज़ू से उबल उबल कर बहते हुए खून को देख रहा था के अब्दुर्रहमान(र०) की तलवार उस की बग़ल में गहरी उतर गई। ऐल्मूर ने घोड़े को ऐड़ लगाई और रूख़ अपने लश्कर की तरफ कर लिया। वो अपने लश्कर तक न पहुंच सका। रास्ते में ही गिर पड़ा। उस का काला घोड़ा अपने लश्कर तक पहुंच गया।

अब्दुर्रहमान(र०) ने एक बार फिर रोमियों को लल्कारा लेकिन ख़ालिद(र०) ने इन्हें पीछे बुला लिया। ज़रूरी नही था के अब्दुर्रहमान(र०) हर मुक़ाबला जीत जाते। यके बाद दीगरे छः सात मुसलमान सालार इंफेरादी मुक़ाबलों के लिए गए और इन के मुक़ाबलों में उतरने वाले रोमी मारे गए या शदीद ज़ख़्मी हो कर भाग गए।

अब्दुर्रहमान(र०) एक बार फिर बग़ैर किसी की इजाज़त के आगे चले गए और रामियों को लल्कारा। एक रोमी सलार उन के मुक़ाबले में आया और वापस न जा सका। ये तीसरा रोमी सालार था जो अब्दुर्रहमान(र०) के हाथों मारा गया था। इस तरह अब्दुर्रहमान(र०) ने तीन रोमी सालारों को मार डाला। ख़ालिद(र०) ने इन्हें सख़्ती से कहा के अब वो आगे न जाऐं।

❀

"अब कोई आगे नही जाएगा"-रोमी सालारे आला माहान ने हुक्म दिया और अपने साथ के सालारो से कहा-"अगर ये मुक़ाबले जारी रहे तो हमारे पास काम का कोई एक भी सालार नहीं रह जाएगा। क्या हमें ऐतराफ नही कर लेना चाहिए के हमारे पास कोई ऐसा सालार या कोई और आदमी नही जो दूबदू मुक़ाबले में मुसलमानों को शिकस्त दे सके? अगर हम अपने सालारों को इसी तरह मरवाते चले गए तो अपने लश्कर पर इस का बहुत बुरा असर पड़ेगा।"

"बहुत बुरा असर पड़ रहा है" - एक तजुर्बाकार सालार ने कहा- "मैदान में देखें। सिर्फ हमारे सालारों और कमांडरों की लाशें पड़ी है। और मुसलमान हमें ताने दे रहे हैं। हम इतना लश्कर क्यों लाए है? इन चन्द हज़ार मुसलमानों को हम अपने घोड़ों के क़दमों तले कुचल देंगे। इन की लाशें पहचानी नही जाएंगी"

"हमें पूरे लश्कर से एक ही बार हमला कर देना चाहिए" - क़ल्ब के एक सालार ने कहा।

"नही" -माहान ने कहा- "मुसलमानों से इतनी बार शिकस्त खा कर भी तुम मुसलमानों को नही समझे। मुसलमानों की नफरी जितनी कम होती है ये ज़्यादा ख़तरनाक होते हैं। मैं पहला हमला ज़रा कम नफरी से करूंगा और देखूंगा के ये अपने आप को बचाने के लिए क्या तरीक़ा इख़्तियार करते हैं। "

आधा दिन गुज़र गया था। सूरज सर पर आ गया था। अगस्त की गर्मी और हब्स का उरूज शुरू हो चुका था। माहान ने इतनी ही नफरी हमले के लिए आगे बढ़ाइ जितनी मुसलमानों की थी। ये उस के अपने लश्कर की नफरी का चौथ हिस्सा था, यानी तक़रीबन चालीस हज़ार। ये तमाम नफरी पियादों की थी। जब ये नफरी रोमियों की दफों की ताल पर आगे बढ़ी तो लगता था जैसे तूफानी समुंद्र की मौजें पहलू ब पहलू बिफरी हुई, गुर्राती हुई, अपने साथ ही सब कुछ बहा ले जाने को आ रही हों।

"इस्लाम के पासबानो!" -किसी मुजाहिद की गरजदार लल्कार बुलंद हुई- "आज का दिन तुम्हारे इम्तेहान का दिन है। अल्लाह तुम्हें देख रहा हैं। अल्लाह हमारे साथ है। "

मुसलमानों की सफों से तकबीर के नारे गरजे। अगली सफ में जो लम्बी बरछियों वाले थे और जो तीरअंदाज़ थे वो तैयार हो गए। एक एक तीर कमानों में चला गया। बरछियां तन गईं। हर मुजाहिद की ज़बान पर अल्लाह का नाम था। बाज़ किसी आयत का विर्द कर रहे थे।

रोमी पियादों का सैलाब क़रीब आया तो इस्लाम के नेज़ाबाज़ों ने बढ़ बढ़ कर बरछियों के वार शुरू कर दिए। आगे वाले रोमी गिरते थे तो पीछे वाले इन्हें रोंदते हुए आगे बढ़ते नेज़ा बाज़ों का काम कुछ तो तीरअदाज़ों ने आसान कर दिया था। रोमी अभी बरछियों की ज़द से दूर ही थे के उन पर तीरअदांज़ों ने तीरों का मीना बरसा दिया था। रोमियों ने तीरों को ढालों पर लेने की कोशिश की थी फिर भी कई रोमी, तीरों का शिकार हो गए। इस से रोमियो की पेशक़दबमी की रफ्तार सुस्त हो गई। आगे आए तो मुसलमानो की बरछी ने इन्हें छलनी करना शुरू कर दिया लेकिन इन रोमियों का हमला मुसलमानों के सारे मुहाज़ पर नही बल्कि ग्यारह मील लम्बे मुहाज़ के थोड़े से हिस्से पर

था।

इतने थोड़े हिस्से पर इतनी ज़्यादा नफरी का हमला रोकना आसान नही था। रोमी पियादे बढ़े आ रहे थे, हालांके उन का नुक़सान ख़ासा ज़्यादा हो रहा था। मुसलमान तीरअंदाज़ों और नेज़ाबाज़ों ने जब देखा के रोमी सर पर आ गए है तो उन्होंने तलवारें निकाल ली और मआरके की खूंरेज़ी में इज़ाफा हो गया।

अबु उबैदा(र०) और ख़ालिद(र०) ने अपने दिमाग़ हाज़िर और हौसला क़ायम रखे। सूरते हाल ऐसी हो गई थी के मुहाज़ के जिस हिस्से पर इतना ज़ोर दार हमला हुआ था उसे कुमक से मज़ीद मज़बूत किया जाता लेकिन ख़ालिद(र०) इस से भी ज़्यादा ख़तरे मोल लेने वाले सालार थे। उन्होंने मुहाज़ के किसी और हिस्से को कमज़ोर करना मुनासिब न समझा। मुजाहेदीन को मालूम था के वो कितने कुछ हैं और उन के पास क्या है। इन्ही हालात में लड़ना था। वो देख रहे थे के जंग फैसला कुन होगी। चुनांचे उन्होंने कुमक आया मदद की उम्मीद दिल से निकाल फैंकी थी। मदद के लिए वो सिर्फ अल्लाह को पुकारते थे।

साफ नज़र आ रहा था के रोमी सालार अहतियात से काम ले रहे हैं। रोमी सालारे आला माहान देख रहा था के उस के हमला आवर पियादे कट रहे हैं और वो मक़सद पूरा होता नज़र नही आ रहा था जिस मक़सद के लिए उस ने हमला कराया था, फिर भी उस ने अपने हमलाआवर पियादों को पियादा या सवार दस्ते की कुमक न दी। मोअर्रिख़ लिखते हैं के माहान को ये तवक़्क़ो थी के मुसलमान इस हमले का मुक़ाबला करने के लिए अपने पूरे मुहाज़ को दरहम बरहम कर देंगे लेकिन उस की ये तवक़्क़ो पूरी नहीं हो रही थी।

कुमक न मिलने का और अपने इतने ज़्यादा नुक़सान का असर रोमी हमलाआवर पियादों पर बहुत बुरा हुआ। क़रीब था के वो खुद ही पीछे हट जाते के इन के सालार ने इन्हें पीछे हटा लिया। इस की एक वजह ये भी थी के सूरज गुरूब हो रहा था।

❀

वो मंज़र जज़बाती सा था जब मुजाहेदीन जो अपनी जगह से आगे चले गए थे, वापस आए। उन की औरतें उन की तरफ दौड़ पड़ीं। वो अपने ख़ाविंदों को पुकार रही थीं। उन्होंने अपने मर्दों को गले लगाया और जो ज़ख़्मी थे उन की बाक़ायदा मरहम पट्टी करने से पहले अपनी ओढ़नियां फाड़ फाड़ कर उन के ज़ख़्म साफ किए और इन पर ओढ़नियों की पट्टियां बांध दीं।

औरतें पानी के मुशकीज़ें उठाए मैदाने जंग में फैल गईं। वो उन ज़ख़्मियों को ढूंडती फिरती थीं जो अपने सहारे उठ कर चलने के क़ाबिल नहीं थे। औरतों के अंदाज़ में

वालहाना पन और दवांगी सी थी। वो शदीद ज़ख़्मी होने वालों को पानी पिलाती, उन के ज़ख़्मों पर अपने कपड़े फाड़ कर पट्टियां बांधती और उन्हे उठा कर अपने सहारे पीछे ला रही थी।

शाम गहरी हो गई तो मैदान जंग में मशालें आने लगीं। औरतों के साथ मुजाहेदीन भी अपने शदीद ज़ख़्मी और साथियों को ढूंड रहे थे। उन के हौसले बुलंद थे। उन्होंने बड़ा ही शदीद हमला बेकार कर दिया था। मैदाने जंग में रोमियो की लाशें देख कर उन के हौसले और जज़्बे को मज़ीद तक़वीयत मिली। मुसलमानों के मुक़ाबले में रोमियो का नुक़सान बहुत ज़्यादा था।

बहुत से रोमी एक गिरोह या हबिश की सूरत में मशालें उठाए आगे आए। वो अपने ज़ख़्मियों को और अपने अपने साथियो की लाशों को उठाने आए थे। वो ऐसी तरतीब और ऐसे अंदाज़ से चले आ रहे थे जैसे हमला करने आ रहे हों। मुसलमानों जो अपने ज़ख़्मियों को उठा रहे थे, तलवारें निकाल कर उन पर टूट पड़े। अच्छा खासा मआरका हुआ।

"हम अपने ज़ख़्मियों को उठाने आए हैं" -रोमियों की तरफ से आवाज़ बुलंद हुई।

"तुम ज़ख़्मी हो कर ही अपने ज़ख़्मियों को उठा सकोगे" -मुजाहिदेन की तरफ से जवाब गरजा।

दो तीन जगहों पर इसी तरह की झड़पें हुईं और रात गुज़रती रही। उस वक़्त रोमी सालारे आला माहान ने सालारों को अपने सामने बैठा रखा था।

"अपने आप को धोके में न रखो" -वो कह रहा था- "हम अपने हमले में बुरी तरह नाकाम हुए हैं। क्या कोई बता सकता है के इस की वजह क्या है?"

"मेरा ख्याल है के हमारे सिपाहियों ने अपने ऊपर मुसलमानों का ख़ौफ तारी कर रखा है" -एक सालार ने कहा।

"नहीं" -माहान ने कहा- "हमारी सफों में इत्तेहाद नहीं। मुसलमान एक हैं। वो भी मुख़्तलिफ क़बीलों के हैं लेकिन वो सब अपने आप को मुसलमान समझते हैं। उन्होंने अपने आप को इस्लाम के रिश्ते का पाबंद कर लिया है। इस अक़ीदे ने उन्हे यक जान कर दिया है। हम में ये इत्तेहाद नहीं। कई एक इलाक़ों और कई एक क़बीलों के लोग हमारे साथ आ मिले हैं लेकिन हमारे दरमियान कोई ऐसा रिश्ता नहीं जो हम सब को मुत्तेहिद कर सके।"

"एक रात में इत्तेहाद पैदा नहीं किया जा सकता सालारे आला!" -एक पुराने सालार ने कहा- "हमारे दरमियान इत्तेहाद न होने का ये मतलब तो नहीं के हम एक दूसरे

को पसंद नही करते। हमें इन्ही हालात में लड़ना है।"

"हां!" -माहान ने कहा- "हमें इन्ही हालात में लड़ना है। मै मायूस नही। हमें कोई तरीक़ा इख़्तियार करना पड़ेगा....कल सुबह हम उस वक़्त पर हमला करेंगे जब वो हमला रोकने के लिए तैयार नही होंगे और ये उन की इबादत का वक़्त होगा।"

तक़रीबन उन तमाम मोअररिख़ों ने जिन्होंने जंगे यरमूक को तफसील से बयान किया है, माहान का अगली सुबह के हमले का प्लान इस तरह लिखा है के मुसलमानों के क़ल्ब पर हमला किया जाएगा जो धोका होगा। इस का मक़सद ये होगा के क़ल्ब यानी मुसलमानों के दरमियानी दस्तों को जिन में मरकज़ी कमान भी थी, लड़ाई में उल्झा कर यही रोक कर रखा जाएगा। इस से फाएदा ये उठाया जाएगा के मुसलमानों का मरकज़ अपने दायें बायें की तरफ तवज्जह न दे सके।

माहान के प्लान के मुताबिक़ असल हमला मुसलमानों के पहलुओं पर करना था जिस का मक़सद ये था के पहलुओं के दस्तो को बिखेर कर ख़त्म किया जाए और अगर मुसलमान मुक़ाबले में जम जाएं तो उन पर ऐसा दबाव डाला जाए के वो अपने क़ल्ब की तरफ इक्ठे हो जाए। इस सूरत मे इन पर पहलुओं और अक़ब से हमला किया जाए।

प्लान बड़ा ख़तरनाक था। रोमियों की नफरी इतनी ज़्यादा थी के इस के बल बूते पर अपने प्लान को कामयाब कर सकते थे।

"जाओ और अपने दस्तो को सुबह के हमले के लिए तैयार करो" -माहान ने कहा- "लेकिन तैयारी ऐसी ख़ामोशी से हो के पता न चले। मुसलमानों के जासूस हमारे इर्द गिर्द मौजूद रहते हैं।"

रात को ही माहान ने अपना ख़ेमा उखड़वाया और एक चट्टान की सब से ऊंची चोटी पर लेकर जा नसब कराया। वहां से तमाम तर मुहाज़ को वो देख सकता था। उस ने तेज़ रफ्तार घोड़ों वाले क़ासिद अपने साथ रख लिए और अपना हिफाज़ती दस्ता भी अपने साथ ले गया। दस्ते की नफरी दो हज़ार थी।

☸

दोनों तरफ की फौजों के दरमियान डेढ़ एक मील का फासला था। ख़ालिद(र०) ने हस्बे मामूल दुश्मन की नक़्ल व हरकत पर नज़र रखने और इत्तेला देने के लिए अपने आदमी आगे भेज रखे थे लेकिन दुश्मन के मुहाज़ की सूरत ऐसी थी के क़रीब जा कर कुछ देखना मुमकिन न था। अपने आदमी बुलंदियों से देखते रहते थे।

मुसलमान फज्र की नमाज़ पढ़ रहे थे। आगे गया हुआ एक आदमी दौड़ता आया और ख़ालिद(र०) को बताया के रोमी तैयार हो कर तरतीब में आ रहे हैं।

"तरतीब कैसी है?" -ख़ालिद(र०) ने पूछा।

"तरतीब हमले की मालूम होती है" -जासूस ने जवाब दिया- "पहले दफ बजे थे फिर उन के दस्ते बड़ी तेज़ी से तरतीब में आ गए। सवार घोड़ों पर सवार हो चुके है।"

"हो नही सकता के रोमी कहीं और जा रहे हों" -ख़ालिद(र०) ने कहा- "वो हमले के लिए आ रहे है।"

ख़ालिद(र०) कुछ परेशन भी हुए लेकिन वो हौसला हारने वाले नही थे। तैयारी का वक्त नही था। अगर रोमी तैयार थे तो उन्होंने मुसलमानों को इस हालत मे आ दबोचना था जब वो तैयारी कर रहे थे। उन्होंने बड़ी तेज़ी से तमाम सालारो का ग्र इत्तेला थीजवा दी के दुश्मन का हमला आ रहा है।

मुसलमान जब तैयार हो रहे थे उस वक्त रोमी लश्कर अपने मुहाज़ से चल पड़ा था। इस की रफ्तार खासी तेज़ थी। रोमी सालारों को तवक्को थे के वो मुसलमानों को बे ख़बरी में जा लेंगे लेकिन वो जब क़रीब आए तो मुसलमान तैयार थे। वो खिलाफे तवक्को इतनी जल्दी तैयार हो गए थे। ख़ालिद(र०) ने इन्हें लम्बा चौड़ा हुक्म नही भेजा था न कोई हिदायत जारी की थी, सिर्फ इतना पैग़ाम दिया था के दुश्मन का हमला आ रहा है, अपने अपने मुहाज़ पर तैयार रहो।

सुबह का उजाला सफेद हो रहा था। रोमी सैलाब की तरह बढ़ आ रहे थे। उन का रूख़ मुसलमानों के क़ल्ब की तरफ था। उन के बहुत से दस्ते दायें और बायें पहलुओं की तरफ भी आ रहे थे लेकिन मालूम यही होता था के वो हमला क़ल्ब करेंगे।

ख़ालिद(र०) ने अपने क़ल्ब के दस्तों को आगे बढ़ कर दुश्मन का इस्तक़बाल करने का हुक्म दिया। उन्होंने दिफाअ का तरीक़ा वही इख़्तियार किया के बरछी बाज़ो और तीरअंदाज़ों को आगे रखा गया। रोमी जो इस उम्मीद पर बहुत तेज़ी से आ रहे थे के मुसलमान बे ख़बर होंगे और ये बड़ी आसान फतह होगी, मुसलमानों को हर लिहाज़ से तैयार देख कर ज़रा सुस्त हो गए और उन के क़दम रूकने लगे। उन्होंने गुज़िश्ता रोज़ हमला कर के देख लिया था।

मुसलमान तीरअंदाज़ों ने इतनी तेज़ी से तीर चलाने शुरू कर दिए के फिज़ा में एक जाल तान दिया। रोमी रूक कर पीछे हटे और तीरों की ज़द से निकल गए। कुछ देर बाद वो ढालें आगे कर के बढ़ने लगे। तीरअंदाज़ों ने एक बार फिर तीरों का मीना बरसा दिया लेकिन अब के रोमी बढ़ते आए। तीर खा खा कर गिरते भी रहे और वो नेज़ाबाज़ों तक आन पहुंचे। रोमियों के पास मरवाने के लिए बहुत नफरी थी।

नेज़ा बाज़ों ने रोमियों को रोकने की भरपूर कोशिश की लेकिन रोमियों की यलग़ार इतनी शदीद थी के रूक न सकी। तब क़ल्ब के दस्ते आगे बढ़े और मुजाहेदीन ने जान की बाज़ी लगा दी। ख़ालिद(र०) ये देख कर कुछ हैरान हुए के रोमी पीछे हटने लगे

है। मुजाहेदीन उन के पीछे गए लेकिन ख़ालिद(र०) ने इन्हें रोक दिया।

कुछ देर बाद रोमी फिर आगे बढ़े और मुजाहेदीन ने पहले की तरह हमला रोका। खासी खूंरेज़ी हुई और रोमी पीछे हट गए और इस के बाद यही सिलसिला चलता रहा। मुसलमान सालारों को मालूम नही था के माहान का प्लान ही यही है के मुसलमानों के क़ल्ब और महफूज़ा को उल्झाए रखो ताके अपने पहलुओं से बे ख़बर रहें और इन्हें कुमक न दे सके।

ख़ालिद(र०) इस धोके को समझ तो न सके लेकिन उन्होंने हर हमला इस तरह रोका के मरकज़ियत और जमीयत को दरहम बरहम न होने दिया। रोमियों ने पीछे हट कर मुसलमान सालारों को मौक़ा दिया के वो जवाबी हमला करें लेकिन ख़ालिद(र०) ने अपने दस्तो को दिफाअ में ही रखा। इस से उन का मक़सद ये था के रोमियो की नफरी और नफरी की जिस्मानी ताक़त ज़ायल होती रहे।

❁

ख़ालिद(र०) ने अपने पहलुओं की तरफ तवज्जह न दी। उन्होंने सालारों को बता रखा था के कुमक की उम्मीद न रखें। सालारों को भी अपनी बे मायगी का अहसास था, और ये अहसास इस्लामी लश्कर के हर एक फर्द को था के सूरते हाल कितनी ही दगरगूं हो जाए, मदद सिर्फ अल्लाह की तरफ से मिलेगी।

रोमियों के असल हमले तो मुसलमानों के पहलुओं पर हो रहे थे जो माहान के प्लान के ऐन मुताबिक़ थे। दायें पहलू पर यूं हुआ के रोमियों ने वहां बड़ा तेज़ हमला किया। इस पहलू की कमान उमरो(र०) बिन आस के पास थी। मुजाहेदीन ने ये हमला न सिर्फ रोक लिया बलिक दुश्मन को पस्पा कर दिया। दुश्मन ने ये हमला करने वाले दस्तों को पीछे कर के दूसरा हमला ताज़ा दम दस्तो से किया। ये पहले हमले से ज़्यादा शदीद था।

मुसलमानों ने इस का भी मुक़ाबला किया लेकिन उन के जिस्म शल हो गए। उन्होने रोमियों को उस से कहीं ज़्यादा नुक़सान पहुंचाया जितना रोमियों ने इन्हें पहुंचाया था और उन्होंने इस हमले का दम ख़म तोड़ दिया। रोमी बुरी तरह नाकाम हो कर पीछे हट गए लेकिन मुसलमानों की जिस्मानी हालत ऐसी अब्तर हो गई के वो मज़ीद लड़ने के क़ाबिल न रहे।

रोमियों ने तीसरा हमला ताज़ा दम दस्तों से किया। अब के हमला आवरों की नफरी भी ज़्यादा थी। मुसलमानों ने जज़्बे के ज़ोर पर हमला रोकने की कोशिश की मगर जिस्म ही साथ न दें तो जज़्बा एक हद तक ही काम आ सकता है। वो हद ख़त्म हो चुकी थी। मुसलमानों के पांव उखड़ गए। उन की तरतीब और तंज़ीम टूट गई। बेशतर इस तरह

पस्पा हुए के खेमागाह तक जा पहुंचे और जिन्होंने पस्पाइ को कुबूल न किया वो दरमियानी दस्तो यानी क़ल्ब की तरफ जाने लगे।

सालार उमरो(र०) बिन आस भागने वालों में से नहीं थे। इन के पास महफूज़ा में दो हज़ार सवार थे जो वहां मौजूद थे उमरों(र०) बिन आस ने इन दो हज़ार सवारों से रोमियों पर हमला कर दिया। इस की क़यादत उमरो(र०) बिन आस ने खुद की। सवारों ने हमला बहुत तेज़ और सख़्त किया और रोमियों को कुछ पीछे हटा दिया लेकिन रोमियों ने ताज़ा दम दस्ते आगे लाकर इन दो हज़ार मुसलमान सवारों का हमला नाकाम कर दिया और इतना दबाव डाला के मुसलमान सवार मुंह मोड़ गए। वो तो जैसे बड़े ही तेज़ तुंद सैलाब के भवंर में फंस गए थे। ये भी उन की बहादुरी थी के वो लड़ाई में से ज़िन्दा निकल आए और खेमा गाह की तरफ चले गए।

"दुश्मन को पीठ दिखाने वालों पर अल्लाह की लानत!"—ये मुसलमान औरतों की आवाज़ें थीं जो खेमों के डण्डे हाथों में लिए खड़ी थीं।

औरतों ने भाग आने वाले मुसलमानों पर लान तान और तंज़ के तीर बरसाए और (दो मोअररिख़ों के मुताबिक़) बाज़ को औरतों ने डण्डे भी मारे।

"खुदा की क़सम, मुसलमान खाविंद इतने बे ग़ैरत नहीं हो सकते"—ये बीवियों की आवाज़ें थीं। वो अपने ख़ाविंदों से चिल्ला चिल्ला कर कह रही थीं—"क्या तुम हमारे ख़ाविंद हो जो हमें ग़ैर मुस्लिमों से महफूज़ नहीं रख सकते?"

उस दौर के अरबी रिवाज के मुताबिक़ चन्द एक मुसलमान औरतों ने दफ उठा कर इन की ताल पर गीत गाना शुरू कर दिया। ये कोई बाक़ायदा तराना नहीं था। औरतों ने खुद गीत घड़ लिया और गाने लगीं:

हाय तुम्हारी ग़ैरत कहां गई
अपनी उन बीवियों को जो खूबसूरत हैं
नेक भी हैं
हक़ीर और क़ाबिले नफरत कुफ्फार के पास
छोड़ कर भाग रहे हो, इस लिए के
कुफ्फार उन को अपनी मिल्कयत में ले लें,
उन की अस्मतों की बे हुर्मती करें
और उन को ज़लील और ख्वार कर दें

मुसलमान पस्पाई में हक़ बजानिब थे। इतनी ज़्यादा नफरी के हमले को रोकना उन के लिए ज़्यादा देर तक मुमकिन नहीं था लेकिन अबु उबैदा(र०) ने इस लिए औरतों से कहा था के वो भाग आने वालों को डण्डे और पत्थर मारें के वो तारीखे़ इस्लाम को

पस्पाइ से पाक रखना चाहते थे।

उन का मक़सद पूरा हो गया। भाग आने वालों को औरतों ने नया हौसला दिया। उन का खून खौल उठा और वो वापस चले गए। उमरो(र०) बिन आस ने उन्हें जल्दी जल्दी मुनज़्ज़म किया और रोमियों पर जवाबी हमले की तैयारी करने लगे।

❁

बायें पहलू के सालार यज़ीद(र०) बन अबु सफयान(र०) थे। उन के वालिद अबु सफयान(र०) उन के मातहत लड़ रहे थे। इस पहलू पर भी रोमियों ने हमला किया था जो मुसलमानों ने रोक कर पस्पा कर दिया था। दूसरा हमला जिस रोमी दस्ते ने किया वो ज़ंजीरों में बंधा हुआ था। दस दस सिपाही एक एक ज़ंजीर के साथ बंधे हुए थे। ज़ंजीरें इतनी लम्बी थीं के सिपाही आसानी से लड़ सकते थे।

चूंके इस दस्ते के सिपाही ज़ंजीरों के ज़रिये एक दूसरे से मुंसलिक थे इस लिए इन के हमले की रफ्तार तेज़ नहीं थी। मुजाहेदीन ने पहला हमला बड़ी जांफिशानी से रोका था और रोमियों को पस्पा करने के लिए उन्हें चन्द घण्टे लड़ना पड़ा था। इस के फौरन बाद ताज़ा दम दस्तों का हमला रोकना उन के लिए मुहाल हो गया। हमलाआवरों की नफरी तीन गुना से भी कुछ ज़्यादा थी। चुनांचे मुसलमानों के जिस्मों ने उन के जज़्बों का साथ न दिया और उन के पांव उखड़ गए और वो पस्पा होने लगे।

उन की औरतों के खे़मे इन के पीछे महफूज़ा फासले पर थे। भागने वालों में इन के सालार के वालिद अबु सफयान(र०) भी थे। वो कोई मामूली शख़्स नही थे। क़बीले के सरदारों में से थे। कुबूले इस्लाम से पहले उन्होंने मुसलमानों से कई लड़ाईयां लड़ी थीं और मुसलमानों की तबाही और बर्बादी में पेश पेश रहते थे। कुबूले इस्लाम के बाद भी वो अपने बदले हुए किरदार में अहम हैसियत के मालिक रहे लेकिन रोमियों के सैलाब के आगे ठहर न सके और औरतों के कैम्प की तरफ भाग आए।

वहां भी औरतों ने भाग आने वालों का इस्तक़बाल डण्डों से किया। इन में अबु सफयान(र०) की बीवी हुन्द भी थीं। वो उन की तरफ दौड़ी आईं और डण्डा आगे कर के इन्हें रोक लिया।

"एक इब्ने हर्ब!"–हुन्द ने अबु सफयान से कहा–"तू किधर भागा आ रहा है?"–उन्होंने अबु सफयान(र०) के घोड़े के सर पर डण्डा मारा और कहा–"यही से लौट जा और ऐसी बहादुरी से लड़ के इस्लाम कुबूल करने से पहले तू ने रसूल अल्लाह(स०) के ख़िलाफ जो कारर्वाईयां की थी, अल्लाह वो बख़्श दे।"

अबु सफयान(र०) अपनी बीवी को जानते थे। वो बड़ी ज़बरदस्त ख़ातून थी। अबु सफयान(र०) ने इन्हें इतना कहने की भी जुर्रत न की के वो भाग आने पर मजबूर

थे। वो जानते थे के हुन्द के सामने बोले और कुछ देर रूके रहे तो हुन्द डण्डों से मार मार कर उन्हें बेहोश कर देंगी।

दूसरी औरतों ने यहां भी वही मंज़र बना दिया जो दायें पहलू के मुजाहेदीन की औरतों ने बना दिया था। बीवियों ने अपने ख़विंदों को शर्मसार किया और इन्हें ऐसा जोश दिलाया के वो सब वापस चले गए। मोअरिख़ों ने लिखा है के औरतें अपने मर्दों के साथ मैदाने जंग तक चली गईं। इन में एक औरत कुछ ज़्यादा ही आगे चली गई। एक रोमी सिपाही उस के सामने आ गया। वो उसे एक औरत ही समझ रहा था लेकिन इस औरत ने तलवार निकाल ली और इस रोमी को मार डाला।

सालार यज़ीद(र०) बिन अबु सफया[illegible](र०) एक जगह परेशानी के आलम में अपने बिखरे हुए मुजाहेदीन को ढूंडते नज़र आए। उन्होंने देखा के भाग जाने वाले वापस आ गए हैं तो उन के चेहरे पर रौनक वापस आ गई। रोमी पीछे हट गए थे। यज़ीद ने अपने दस्तों को बड़ी तेज़ी से मुनज़्ज़म कर लिया और जवाबी हमले का हुकम दे दिया।

हुन्द ने बहुत ही बुलंद आवाज़ में वही गीत गाना शुरू कर दिया जो उन्होंने ओहद की जंग में अपने क़बीले को गर्मा ने के लिए गाया था। उस वक़्त हुन्द मुसलमान नहीं थी। उन के गीत के बाज़ अल्फाज़ ग़ैर शाईस्ता थे। गीत का लुब्बे लबाब ये था के हम तुम्हारे लिए राहत और लुत्फ का ज़रीया बनती हैं। अगर तुम ने दुश्मन को शिकस्त दी तो हम तुम्हें गले लगा लेंगी और अगर तुम पीछे हट आए तो हम तुम से जुदा हो जाएंगी। जंगे यरमूक में भी हुन्द ने वही ग़ीत गाया।

☸

ख़ालिद(र०) की नज़र पूरे मुहाज़ पर थी। इन्हें मालूम था के दायें और बायें पहलुओं पर क्या हो रहा है। इन्हें अहसास था के पहलुओं को मदद की ज़रूरत है लेकिन ख़ालिद(र०) ने मदद को इन्तेहाई मख़्दूश सूरते हाल में इस्तेमाल करने की सोच रखी थी। इन्हें ख़बरें मिल गई थीं के दायां पहलू पस्पा हो गया है और बायां पहलू भी बिखर कर पीछे हट गया है। ख़ालिद(र०) ने दोनों पहलुओं के सालारों को पैग़ाम भेजा था के वो जवाबी हमला करें, नफरी कितनी ही थोड़ी क्यों न हो।

आख़िर इन्हे इत्तेला मिली के दायें पहलू के सालार ने जवाबी हमला कर दिया है। ख़ालिद(र०) ने महफूज़ा के सवार दस्ते के साथ मुताहर्रिक सवार दस्ते के कुछ हिस्से को इस हुक्म के साथ उधर भेज दिया के वो दायें पहलू पर रोमियों पर दूसरी तरफ से हमला करें।

उस वक़्त दायें पहलू से उमरो(र०) बिन आस ने जवाबी हमला किया था। ये थके हुए मुजाहेदीन का हमला था। जो नए जोश और वलवले से किया गया था लेकिन

नफरी बहुत कम थी, फिर भी हमला कर दिया गया।

"अब ज़िन्दा न जाऐं" -ये रोमियों की लल्कार थी- "अब भाग कर न जाऐं।"

रोमी नफरी की इफ़रात पर ऐसा दावा कर सकते थे के वो मुसलमानों की इस क़लील नफरी को ज़िन्दा नही जाने देंगे लेकिन अचानक उन के पहलू पर बड़ा तेज़ हमला हो गया। हमलाआवर घुड़सवार थे। वो नारे लगाते और गरजते आए थे।

"इब्ने(र०) आस!" -सवार दस्तों का सालार लल्कार रहा था- "हम आ गए हैं। हौसला क़ाय़म रखो।"

उमरो(र०) के थके हारे मुजाहेदीन के हौसलों में भी और जिस्मों में भी जान पड़ गई और इस के साथ ही रोमियों के हौसलों से जान निकल गई वो अब दो तरफा हमलों की लपेट में आ गए थे। वो बौखला गए। मुसलमान सवार ताज़ा दम थे। इस के अलावा वो अपने साथियों की बुरी हालत देख कर और ज़्यादा जोश में आ गए थे। ये इन्तेक़ाम का क़हर था।

अगर दोनों तरफ नफरी बराबर होती या दुश्मन की नफरी ज़रा ज़्यादा ही होती तो दुश्मन का बे तहाशा नुक़सान होता और वो मैदान छोड़ जाता लेकिन नफरी के मामले में रोमी सैलाबी दरिया थे। मुसलमानों के हमले का उन पर ये असर पड़ा के वो अपनी बहुत सी लाशें और बे शुमार ज़ख़्मी छोड़ कर पीछे हट गए लेकिन भागे नहीं बल्कि मुनज़्ज़म तरीक़े से अपने मुहाज़ तक वापस चले गए।

❁

इधर मरकज़ी क़ल्ब में कैफ़ियत ये थी के ख़ालिद(र०) दुश्मन की चाल समझ चुके थे। रोमी अभी तक मुसलमानों के क़ल्ब के सामने मौजूद थे। वो हल्का सा हमला कर के पीछे हट जाते थे। ख़ालिद(र०) जान गए के दुश्मन इन्हें मसरूफ रखना चाहता है ताके वो अपने पहलूओ की तरफ तवज्जह न दे सकें। ख़ालिद(र०) को दायें बायें पहलूंओ की इत्तेलाऐं मिली तो उन्होंने माहान का प्लान बेकार करने का तरीक़ा सोच लिया। पहले तो उन्होंने दायें पहलू को मदद भेजी फिर बायें तरफ तवज्जह दी जहां के सालार यज़ीद(र०) बिन अबु सफयान(र०) थे।

"इब्ने लाज़ोर(र०)!" ख़ालिद(र०) ने अपने मुताहर्रिक सवार दस्ते के सालार लाज़ोर(र०) बिन लाज़ोर को बुला कर कहा- "क्या तू देख रहा है के दुश्मन हमारे बाज़ूओं पर ग़ालिब आ गया है?"

"देख रहा हूं इब्ने(र०) वलीद!" -लाज़ोर(र०) ने कहा- "मै तेरे हुक्म का मुंतज़िर हूं। क्या तू देख नहीं रहा के मेरा घोड़ा किस बेचैनी से खुर मार रहा है?"

"बायें पहलू पर जल्द जा इब्ने(र०) लाज़ोर!" -ख़ालिद(र०) ने कहा- "सवार

दस्ता अपने साथ ले और यज़ीद(र०) की मदद को इस तरह पहुंच के जिन रोमियों के साथ वो उल्झा हुआ है उन पर पहलू से हमला कर दे।"

"हाल जो मुझे बताया गया है वो मै कैसे बयान करूंगा!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"अबु सफयान(र०) जो कभी हमारे क़बीले-ए-क़ुरेश की आंख का तारा था, वो भी मैदान छोड़ गया है.... दूसरी इत्तेला मिली है के भाग आने वाले फिर आगे चले गए हैं लेकिन तू जानता है के हौसला एक ज़र्ब खा ले तो दूसरी ज़र्ब खाने की ताब नही रहती।"

"अल्लाह हम सब को हौसला देगा"-लाज़ोर(र०) बिन लाज़ोर ने कहा।

लाज़ोर(र०) तारीख़ी जंगजू थे। दिल में अल्लाह और रसूल(स०) का इश्क़, ज़बान पर अल्लाह और रसूल(स०) का नाम और उन की तलवार अल्लाह के नाम पर चलती थी। वो तो अपनी जान से ला ताल्लुक़ हो चुके थे। ख़ालिद(र०) का हुक्म मिलते ही उन्होंने अपने सवार दस्ते को साथ लिया और दस्ता अपनी ही उड़ाई हुई गर्द में ग़ायब हो गया।

वक़्त बाद दौपहर का था। गर्मी झुलसा रही थी। घोड़े पसीने में नहा रहे थे। प्यास से मुजाहेदीन के मुंह खुल गए थे और उन की रूहें पानी की नहीं दुश्मन के खून की प्यासी थीं।

लाज़ोर(र०) के दस्ते ने उन रोमियों पर एक पहलू से हमला किया जिन्हें यज़ीद(र०) ने अपने हमले में उल्झा रखा था। ये रोमी ज़ंजीर बंद थे। इन्हें पहली बार अहसास हुआ के ज़ंजीरें नुक़सान भी दे दिया करती हैं। पहले बताया ज़ा चुका है के दस दस आदमी एक ही ज़ंजीर में बंधे हुए थे। उन्होंने जब हमला किया था तो उन की रफ्तार ज़ंजीरों की वजह से सुस्त थी। अब इन पर लाज़ोर(र०) ने हमला किया तो वो पीछे हटने लगे। मुसलमानों की तलवारों और बरछियों से बचने के लिए इन्हें तेज़ी से पीछे हट जाना चाहिए था लेकिन ज़ंजीरें इन्हें तेज़ी से पीछे हटने नहीं दे रही थी।

लाज़ोर(र०) के सवारों का हमला बड़ा ही तेज़ और ज़ोरदार था। लाज़ोर(र०) बड़े ज़हीन सालार थे और इस के साथ ही वो अपने ही तरीक़े और जोश से लड़ने वाले सिपाही भी थे। उन की दिलैरी का ये आलम था के दुश्मन की सफों में घुस जाया करते थे। यहां भी उन्होंने ऐसी ही दिलैरी का मुज़ाहेरा किया। वो रोमियों के सालार को ढूंड रहे थे।

उन्हें वो सालार नज़र आ गया। वो दीरजान था। उस के इर्द गिर्द उस के मुहाफिज़ सवार खड़े थे और वहां रोमी परचम भी था। लाज़ोर(र०) अगर इसे लल्कारते तो पहले उन्हें उस के मुहाफ़िज़ों का मुक़ाबला करना पड़ता जो अकेले आदमी के बस में नही था। लाज़ोर(र०) मुहाफिज़ों को नज़रअंदाज़ कर के उन के हिसार में चले गए और तलवार

का ऐसा वार किया के दीरजान की गर्दन तक़रीबन आधी कट गई।

पैश्तर इस के के दीरजान के मुहाफिज़ लाज़ोर(र०) को घेर लेते, लाज़ोर(र०) वहां से ग़ायब हो गए थे। मुहाफिज़ों में हड़बोंग मच गई। उन का सालार घोड़े से लुढ़क गया। दो मुहाफिज़ों ने उसे थाम लिया और घोड़े से गिरने न दिया लेकिन इस की ज़िन्दगी ख़त्म हो चुकी थी। उसे अब मरना था। वो ज़िबह होने वाले बकरे की तरह तड़प रहा था। उसे पीछे ले जाना लगे तो वो दम तोड़ गया।

इधर लाज़ोर(र०) एक क़हर की तरह रोमियों पर बरस रहे थे उधर ख़ालिद(र०) ने उसी पहलू के उस मुक़ाम पर हमला कर दिया जहां रोमियों का सालार गरीगरी था। लाज़ोर(र०) और ख़ालिद(र०) के हमलों ने रोमियों का ज़ोर तोड़ दिया। ज़्यादा नुक़सान उन रोमी सिपाहियों का हुआ जो ज़ंजीरों से एक दूसरे के साथ बंधे हुए थे। वो तेज़ी से पीछे नही हट सकते थे।

इस जवाबी हमले का ये असर हुआ के रोमी पीछे हट गए लेकिन ये पस्पाई नही थी। वो मुहाज़ या ख़ेमागाह तक चले गए। उन का नुक़सान बहुत हुआ था लेकिन उन के पास नफरी की कमी नहीं थी। मुसलममान फौज पर ये असर हुआ के उन का हौसला और लड़ने का जज़्बा बहाल हो गया और उन में ये अहसास पैदा हो गया के इतने बड़े लश्कर को पीछे हटाया जा सकता है तो इसे शिकस्त भी दी जा सकती है।

उस रोज़ मज़ीद लड़ाई नही हो सकती थी क्योंके सूरज गुरूब हो रहा था।

वो रात बेदारी की रात थी। मुसलमान औरतें आगे जा कर लड़ने के लिए बेताब हुई जा रही थी लेकिन उन के लिए दूसरे काम भी थे जिन में फौज के लिए पानी फ़राहम करना और खाना पकाना था इस से ज़्यादा अहम काम ज़ख़्मियों के ज़ख़्म साफ करतीं और इन पर पट्टियां बांधती थीं। इन के अंदर में जो खुलूस था और जो अपनाईयत थी, इस से ज़ख़्मियों के हौसले और ज़्यादा मज़बूत हो गए। इन में जो अगले रोज़ लड़ने के क़ाबिल नहीं थे वो भी लड़ने को तैयार हो गए।

मुजाहेदीन रात को अपने साथियों की लाशें ढूंडते और पीछे लाते रहे। कुछ ज़ख़्मी बे होश पड़े थे। इन्हें भी उन्होंने ढूंड ढूंड कर उठाया और पीछे ले आए।

उधर माहान ने अपने सालारों को अपने सामने बैठा रखा था।

"मैं शहंशाह हरकुल को क्या जवाब दूंगा?"-वो सख़्त बरहम था- "तुम ही बताओ के मैं शहंशाह को क्या बताऊं के इन चन्द हज़ार मुसलमानों को हम अपने घोड़ों के क़दमों तले कुचल क्यों नही सके?"

कोई सालार उसे तसल्ली बख़्श जवाब न दे सका।

"हमारा एक सालार भी मारा गया है"-माहान ने कहा- "क्या तुम ने उन के

किसी सालार को क़त्ल किया है?"

उस के तमाम सालार ख़ामोश रहे।

"क़ौरेन!"–उस ने अपने एक सालार क़ौरेन से कहा–"तुम सालार दीरजान के दस्ते ले लो....और सोच लो के पस्पा होना है तो ज़िन्दा मेरे सामने न आना। आगे ही कहीं मारे जाना"–उस ने तमाम सालारों से कहा–"कल के सूरज के साथ मुसलमानों का सूरज भी गुरूब हो जाएगा.....हमेशा के लिए।"

माहान ने मुसलमानों को अगले रोज़ ख़त्म कर देने का नया प्लान बनाया और सालारों को समझाया। अपने मरे हुए सालार दीरजान की जगह उस ने क़ौरेन को उस के दस्तों का सालार मुक़र्रर किया।

मुसलमान सालारों ने भी रात जागते गुज़ारी। ज़ख़्मियों की इयादत की और मुजाहेदीन का हौसला बढ़ाया।

अगले रोज़ की लड़ाई पहले से कहीं ज़्यादा शदीद और खूंरेज़ थी। मुसलमानों के दायें पहलू पर सालार उमरो(र०) बिन आस के दस्ते थे और इन के साथ ही सालार शरजील(र०) बिन हस्ना के दस्ते थे। रोमियों ने उस जगह हमला किया जहां इन दोनों के दस्ते आपस में मिलते थे। दोनों सालारों ने मिल कर रोमियो का ये हमला बे जिग्री से लड़ कर पस्पा कर दिया।

रोमियों ने अपना पहले वाला तरीक़ा इख़्तियार किया। उन्होंने दूसरा हमला ताज़ा दम दस्तों से किया। इस तरह वो बार बार ताज़ा दम दस्ते आगे लाते रहे और मुसलमान हर हमला रोकते रहे। उन्होंने अपनी तंज़ीम और तरतीब बरक़रार रखी मगर जिस्मानी ताक़त जवाब देने लगी। रोमियों की कोशिश ही यही थी के मुसलमानों को इतना थका दिया जाए के हमला रोकने के क़ाबिल न रहे।

दोपहर के वक़्त जब गर्मी इन्तेहा को पहुंच गई तो रोमियो ने ज़्यादा नफरी से बड़ा ही सख़्त हमला किया। इस के आगे पूरी कोशिश के बावजूद मुसलमान जम न सके। उमरो(र०) बिन आस का पूरे का पूरा और शरजील(र०) बिन हस्ना का तक़रीबन निस्फ दस्ता पस्पा हो गया। उस रोज़ भी ऐसे ही हुआ जैसे गुज़िश्ता रोज़ हुआ था। भागने वालों को औरतों ने रोक लिया। इन्हें डण्डे भी दिखाए, ताने भी दिए, गैरत को जोश भी दिलाया और उन का हौसला भी बढ़ाया।

किसी मोअररिख़ ने एक तहरीर लिखी है के एक मुजाहिद भाग कर पीछे आया और औरतों के क़रीब आ कर गिर पड़ा। उस की सांसें फूली हुई थी। मुंह खुल गया था। एक औरत दौड़ती उस तक पहुंची और उस के पास बैठ गई।

"क्या तू ज़ख़्मी है?" -औरत ने पूछा।

वो बोल नही सकता था। उस ने सर हिला कर बताया के वो ज़ख़्मी नही।

"फिर तू भाग क्यों आया है?"-औरत ने पूछा-"क्या तेरे पास तलवार नही थी?"

मुजाहिद ने नियाम से तलवार निकाली जिस पर नोक से दस्ते तक खून जमा हुआ था।

"क्या तेरे पास दिल न था के तू भाग आया है?"-औरत ने पूछा।

मुजाहिद ने उखड़ी हुई सांस को संभालने की कोशिश की मगर ना काम रहा और बोल न सका।

"क्या तेरी बीवी यहां है?"

उस ने नफी में सर हिलाया।

"बहन?"-औरत ने पूछा-"मां?"

"कोई नही!"-उस ने बड़ी मुश्किल से कहा

"क्या ये औरतें तुम्हारी मायें और बहनें नहीं?"-औरत ने कहा-"क्या तू बर्दाश्त कर लेगा के इन को कुफ्फार उठा कर ले जाऐं?"

"नहीं"-मुजाहिद ने जानदार आवाज़ में कहा।

"क्या तू अल्लाह की राह मे अपनी जान कुर्बान नहीं करेगा?"

"ज़रूर करूंगा"-उस ने जवाब दिया

"फिर यहां क्यों आन गिरा है?"-औरत ने कहा।

"थक कर चूर हो गया हूं"-मुजाहिद ने कहा।

"ले मेरा हाथ पकड़!"-औरत ने कहा-"मै तुझे उठाती हूं। नहीं उठना तो तलवार मुझे दे। तेरी जगह तेरी बहन लड़ेगी।"

मुजाहिद उठ खड़ा हुआ और मैदाने जंग की तरफ चल पड़ा।

"भाई!"-औरत ने कहा-"अल्लाह तुझे फातह वापस लाए।"

मुसलमानों की पस्पाई बुज़दिली नहीं थी। वो तो हिम्मत से बढ़ कर लड़े थे। उन का इतने बड़े लश्कर से लड़ जाना ही एक कारनामा था। जहां तक रोमियो को शिकस्त देने का ताल्लुक़ था, ये इरादा नाकाम सी ख्वाहिश बनता जा रहा था। मुसलमानों का बार बार पस्पा हो जाना अच्छा शगून न था लेकिन ख़ालिद(र०) शिकस्त को कुबूल करने वाले सालार नहीं थे। बाक़ी तमाम सालार भी अज़्म के पक्के थे।

सालार अपने उन मुजाहेदीन को जो पीछे आ गए थे, इक्ठा कर के मुनज़्ज़म कर रहे थे। ख़ालिद(र०) भी परेशानी के आलम में भाग दौड़ रहे थे और क़ासिदों को ग्यारह मील लम्बे मुहाज़ पर मुख़्तलिफ सालारों को अहकाम पहुंचाने के लिए दौड़ा रहे थे।

एक ख़ातून उन का रास्ता रोक कर खड़ी हो गई।

"इब्ने वलीद(र०)!-ख़ातून ने कहा-"खुदा की क़सम, अरब ने तुझ से बढ़ कर कोई दिलैर और दानिशमंद आदमी पैदा नही किया। क्या तू मेरी एक बात पर ग़ौर नही करेगा?.....सालार आगे आगे हो तो सिपाही उस के पीछे जानें लड़ा देते हैं। सालार शिकस्त खाने पर उतर आए तो उस के सिपाही बहुत जल्द शिकस्त खा जाते हैं।"

"मेरी बहन!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"हमारे लिए दुआ कर। तेरे कानों में ये आवाज़ नही पड़ेगी के इस्लाम के सालार रोमियों से शिकस्त खा गए हैं।"

इस ख़ातून ने कोई ऐसा मशवरा नही दिया था जो ख़लिद(र०) के लिए नया होता। वो तो अपनी फौज के आगे रहने वाले सिपह सालार थे लेकिन इस ख़ातून के जज़्बे से ख़ालिद(र०) मुतास्सिर हुए। ख़्वातीन का जज़्बा तो हर लड़ाई में ऐसा ही होता था लेकिन यरमूक की जंग में औरतों के जज़्बो की कैफियत कुछ और ही थी। वो मर्दों के दोश बदोश लड़ने के लिए बेताब थी। ये हक़ीक़त है के ख़्वातीन ने मुजाहेदीन के जिस्मों और जज़्बों मे नई रूह फूंक दी थी।

इस के फौरन बाद ख़ालिद(र०) ने वो सवार दस्ता साथ लिया जो उन्होंने ख़ास मक़्सद के लिए तैयार किया और इसे घूम फिर कर लड़ने की ट्रेनिंग दी थी। उन्होंने रोमियों के एक हिस्से पर जिस का सालार क़नातीर था हमला कर दिया। उन्होंने हमला दायें पहलू पर किया था। ख़ालिद(र०) के हुकम के मुताबिक़ सालार उमरो बिन आस(र०) ने इसी हिस्से के बायें पहलू पर हमला किया। इन के साथ सालार शरजील(र०) बिन हस्ना भी अपने दस्तों के साथ थे। ये दस्ते पियादा थे।

रोमियों ने बड़ी बे जिग्री से ये दो तरफा हमला रोका। वो अगले दस्तों को पीछे कर के ताज़ा दम दस्ते आगे लाते थे। थके मांदे मुसलमानो ने जैसे क़सम खई थी के पीछे नहीं हटेंगे। इस लड़ाई में मुसलमानों ने जानों की कुर्बानियां बे ज़रीग़ दी। शहीद होने वालो की तादाद कई सौ हो गई थी। वो रोमियों को शिकस्त तो न दे सके, सिर्फ ये कामयाबी हासिल की के रोमियो को उन के मुहाज़ तक पस्पा कर दिया और इस के साथ ही उस दिन का सूरज मैदाने जंग के खाक व खून में डूब गया।

उस रोज़ की जंग पहले से ज़्यादा शदीद, तेज़ और खूंरेज़ थी। ये पहली जंग थी जिस में मुसमलान सिर्फ एक दिन में सैकड़ों के हिसाब से शहीद हुए और ज़ख़्मियों का तो कोई हिसाब न था। तारीख़ में सही आदाद व शुमार नही मिलते रोमियो का जानी नुक़सान मुसलमानों की निस्बत बहुत ज़्यादा था।

लड़ने के जज़्बे और हौसले की कैफियत ये थी के मुसलमानों में खुद ऐतमादी बहाल हो गई थी, हालांके उन की तादाद ख़ासी कम हो गई थी और इन्हें कुमक मिलने

की तवक्क़ो नही थी। उन का हौसला इसी कामयाबी से क़ायम हो गया था के वो पस्पा नही हुए थे बल्कि उन्होंने रोमियों को पस्पा कर दिया था।

रोमियों में मायूसी पैदा हो गई थी क्योंके इन्हें तवक़्क़ो थी के इतने बड़े लश्कर से तो पहले दिन ही मुसलमानों को तह तेग़ कर के ख़ालिद(र०) को ज़िन्दा पकड़ लेंगे लेकिन तीसरा दिन गुज़र गया था। मुसलमान पीछे हटते और फिर हमला कर देते थे। हार मानते ही नही थे।

रोमियों के सालारे आला की ज़हनी हालत तो बहुत ही बुरी थी। उस ने आज रात फिर सालारों को बुलाया और उन पर बरस पड़ा। वो उन से पूछता था के वजह क्या है के वो मुसलमानों को अभी तक शिकस्त नहीं दे सके। सालारो ने अपना अपना जवाज़ बयान किया लेकिन माहान का गुस्सा और तेज़ हो गया। आख़िर रोमी सालारों ने हलफ उठाया के वो अगले रोज़ मुसलमानों को शिकस्त दे कर पीछे आएंगे।

गुज़िश्ता रात की तरह आज की रात भी ख़ालिद(र०) और अबु उबैदा(र०) तमाम तर मुहाज़ पर फिरते रहे। ख़ालिद(र०) ने हुक्म दिया के जो ज़ख़्मी चल फिर सकते हैं वो अगले रोज़ की लड़ाई में शमिल होंगे।

औरतें ज़ख़्मियों की मरहम पट्टी करती रहीं। रात के आख़री पहर औरतें इक्ळी हुईं। अबु(र०) की बीवी हुन्द और लाज़ोर(र०) बिन लाज़ोर की बहन ख़ोला ने औरतों को बताया के कल का दिन फैसला कुन दिन होगा।

"......और अपने आदमियों की जिस्मानी हालत हम सब देख रही हैं" –हुन्द ने कहा– "मुझे अपनी शिकस्त नज़र आ रही है और कुमक नहीं आ रही। अब ज़रूरत ये है के तमाम औरतें लड़ाई में शामिल हो जाएं।"

"क्या हमारे मर्द हमें अपनी सफों में शामिल होने देंगे?" –एक औरत ने पूछा।

"हम मर्दों से इजाज़त नहीं लेंगी" –हुन्द ने कहा– " वो इजाज़त नहीं देंगे....क्या तुम सब लड़ने के लिए तैयार हो?"

तमाम औरतों ने जोश व ख़रोश से कहा के वो कल मर्दों से पूछे बग़ैर मैदाने जंग में कूद पड़ेंगी।

अगले रोज़ के लिए रोमियों ने जंग की जो तैयारी की वो बड़ी ख़ौफनाक थी। मुसलमान ख़्वातीन ने हथियार निकाल लिए। कल इन्हें भी मैदान मे उतरना था।

ख़ाक व खून में डूबी हुई रात के बतन से एक और सुबह तुलू हुई। ये ताखे़ इस्लाम की एक भयानक और होलनाक जंग के चौथे रोज़ की सुबह थी। मुसलमन फज्र की नमाज़ पढ़ चुके तो ख़ालिद(र०) उठे।

"ऐ जमाअते मोमनीन!"-ख़ालिद(र०) ने मुजाहेदीन से कहा-"तुम ने दिन अल्लाह की राह में लड़ते और रातें अल्लाह को याद करते गुज़ारी हैं। अल्लाह हमारे हाल से बे ख़बर नही। अल्लाह देख रहा है के तुम लड़ने के क़ाबिल नहीं रहे फिर भी लड़ रहे हो। अल्लाह तुम से मायूस नहीं हुआ, तुम उस के रहम व करम से मायूस न होना। हम अल्लाह के लिए लड़ रहे हैं ....आज के दिन हौसला क़ायम रखना। आज इस्लाम की क़िसमत का फैसला होगा। कहीं ऐसा न हो के हम अल्लाह के सामने भी, रसूल अल्लाह(स०) की रूहे मक़द्दस के सामने भी और अपने उन भाईयों की रूहों के सामने भी शर्मसार हों जो हमारे साथ चले थे और हम ने उन के लहू लहान जिस्मों को अपने हाथों दफ्न कर दिया हैं क्या तुम कउन के बच्चों की ख़ातिर जो यतीम हो गए हैं और उन की बीवियों की ख़ातिर जो बेवा हो गई हैं और उन की बहनों और उन की माओं की इज़्ज़त की ख़ातिर नही लड़ोगे?"

"बेशक इब्ने वलीद!"-मुजाहेदीन की आवाज़ें उठीं-"हम लड़ेंगे।"

"शहीदों के खून के क़तरे क़तरे का इन्तेक़ाम लेंगे।"

"आज के दिन लड़ेंगे। कल के दिन और ज़िन्दगी के जितने दिन रह गए हैं वो कुफ्फार के ख़िलाफ लड़ते गुज़ार देंगे।"

इस तरह मुजाहेदीन ने ख़ालिद(र०) की आवाज़ पुरजोश व ख़रोश से लब्बेक कहा लेकिन उन की आवाज़ों में वो जान नही थी जो हुआ करती थी। जिहाद का अज़्म मौजूद था। ख़ालिद(र०) का ये पैग़ाम सारे मुहाज़ तक पहुंचाया गया।। हर सालार की ज़बान पर यही अल्फाज़ थे-"आज के दिल हौसला न हारना....आज के दिन!"

उधर रोमी लश्कर के सालारों को भी यही हुक्म मिला था-"आज के दिन मुसलमानों का ख़ात्मा कर दो।"

सुबह का उजाला साफ होते ही रोमी दस्ते नमूदार हुए। उन का अंदाज़ पहले वाला और प्लान भी पहले वाला था। उन्होंने मुसलमानों के दायें पंहलू पर सालार उमरो(र०) बिन आस के दस्तों पर हमला किया। हमला आवर आरमीनिया की फौज थी जिस का सालार क़नातीर था। उमरो बिन आस(र०) के पहलू में सालार शरजील(र०) बिन हस्ना के दस्ते थे। इन पर आरमीनियों ने हमला किया और इन की मदद के लिए इसाई दस्ते भी साथ थे।

उमरो(र०) बिन आस के लिए सूरते हाल मख़दूश हो गई। उन्होंने बहुत देर मुक़ाबला किया लेकिन वो दुश्मन के सैलाब के आगे ठहर न सके। उमरो(र०) बिन आस के मुजाहेदीन ने तंज़ीम और तरतीब तोड़ दी और हमलाआवरों पर टूट पड़े। वो दरअसल पस्पा हो रहे थे। लेकिन अब वो पस्पाई को क़ुबूल करने के लिए तैयार नही थे। चुनांचे उन्होंने अपनी सफ़ें तोड़ कर इंफिरादी लड़ाई शुरू कर दी। उमरो(र०) बिन आस सालार से सिपाही बन गए। वो तो तलवार के धनी थे। अकेली इन्हीं की तलवार ने ककई आरमीनियों को खून में नहला दिया। उन के दस्ते का हर फर्द अब अपनी लड़ाई लड़ रहा था। उन्होंने दुश्मन की भी तरतीब तोड़ दी।

रोमियों के इत्तेहादी ये आरमीनी इस क़िस्म की लड़ाई की ताब न ला सके लेकिन वो पस्पा नही हो सकते थे जिस की एक वजह तो ये थी के उन के पीछे ताज़ा दम इसाई दस्ते मौजूद थे। वो आरमीनियों को पीछे नहीं आने देते थे। दूसरी वजह ये के उन के सालार पीछे हटने का हुक्म नही देते थे और तीसरी वजह ये के मुसलमान तादाद में कम होने के बावजूद इन्हें लड़ाई में से निकलने नहीं दे रहे थे।

शरजील(र०) बिन हस्ना के दस्तों की हालत भी ठीक नहीं थी। इन्हें दुश्मन ने बहुत पीछे हटा दिया था। मुजाहेदीन बे जिग्री से लड़ रहे थे लेकिन दुश्मन का दबाव उन के लिए नाक़ाबले बर्दाश्त हो गया था।

❁

ख़ालिद(र०) ने ये सूरते हाल देखी तो उन्होंने ये चाल सोची के उमरो(र०) बिन आस और शरजील(र०) बिन हस्ना पर हमला करने वाले आरमीनियों पर पहलू से हमला किया जाए लेकिन इन की मदद को आने वाले दस्तों का रास्ता रोकना भी ज़रूरी था। उन्होंने क़ासिद को बुलाया।

"अबु उबैदा(र०) और यज़ीद(र०) से कहो के आगे बढ़ कर अपने सामने वाले रोमियों पर हमला कर दें"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"और इन्हें कहना के दुश्मन के इन दस्तों को राके रखना है के हमारे दायें पहलू की तरफ न जा सकें.....और इन्हें कहना के अपने सवार दस्ते भी हमला कर रहे हैं।

क़ासिद ने घोड़े को ऐड़ लगाई और अबु उबैदा(र०) और यज़ीद(र०) बिन अबु सफयान तक जा पहुंचा। पैग़ाम मिलते ही इन दोनों सालारों ने अपने सामने वाले रोमी दस्तो पर हमला कर दिया।

ख़ालिद(र०) ने अपने मख़सूस रिसाले को दो हिस्सों में तक़सीम किया। एक हिस्से की कमान क़ैस बिन हुबैरा को दी और दूसरे को अपनी कमान में रखा। ख़ालिद(र०) अने दायें पहलू के पीछे से गुज़र कर आगे निकल गए और उस तरफ से आरमीनी दस्तों पर हमला कर दिया। उन के हुक्म के मुताबिक़ क़ैस बिन हुबैरा के सवार दस्तों ने आरमीनी दस्ते पर दूसरे पहलू से हमला कर दिया। शरजील(र०) ने सामने से

हमला कर दिया।

ये सह तरफी हमला था जो आरमीनियों के लिए एक आफत साबित हुआ। इसाई दस्ते उन की मदद को आए लेकिन बे शुमार लाशें, तड़पते हुए ज़ख्मी और बे लगाम भागते घोड़े छोड़ कर पस्पा हो गए और अपने मुहाज़ बल्कि खेमा गाह तक जा पहुंचे। अभी दुश्मन का पीछा नही किया जा सकता था। ख़ालिद(र०) अभी दिफाई जंग लड़ रहे थे। वो चाहते थे के दुश्मन हमले कर कर के थक जाए।

अबु उबैदा(र०) और शरजील(र०) ने आगे बढ़ कर जो हमला किया था। वो इन्हें महंगा पड़ा। दुश्मन ने इन दोनों सालारों के दस्तों पर तीरों का मीना बरसा दिया। ये वैसी तीरअंदाज़ी नही जैसी लड़ाईयों में मामूल के मुताबिक़ हुआ करती है ये तो सही मानों में तीरों का मीना था। रोमी अपने लश्कर के तमाम तीरअंदाज़ों को आगे ले आए थे। बाज़ मोअररिख़ों ने लिखा है के फिज़ा में उड़ते हुए तीरों ने सूरज को छुपा लिया था।

तीरअदाज़ों की महारत का ये आलम था के सत सौ मुसलमानों की आंखों में तीर लगे और आंखें ज़ाय हो गईं। इसी लिए इस दिन को "यूमुलनफूर" कहा जाता है मुसलमान तीरअंदाज़ों ने रोमी तीरअंदाज़ों पर तीर चलाए लेकिन मुसलमानों के तीर बेकार साबित हुए क्योंके मुसलमानों की कमानें छोटी थीं। इन से तीर दूर तक नहीं जा सकता था। इस के अलावा तीरअंदाज़ों की तादाद दुमश्न के मुक़ाबले में बहुत थोड़ी थी।

अबु सफयान की भी आंख में तीर लगा और वो एक आंख से माज़ूर हो गए।

इस सूरते हाल में मुसलमान मैदान में नही ठहर सकते थे। अबु उबैदा(र०) और शरजील(र०) को पीछे हटना पड़ा। सात सौ मुसलमान तो वो थे जिन की आंखों में तीर लगे थे। इन के अलावा ज़ख्मियों की तादाद कुछ कम नहीं थी।

❁

रोमी सालारे आला माहान एक ऊंची चट्टान की चोटी से ये जंग देख रहा था।

"वो वक्त आ गया है–माहान ने चिल्ला कर कहा–"अब हमले का वक्त आ गया है.....नही ठहर सकेंगे"–उस ने अपने दो सालारों को पुकार कर कहा–"गरीगरी.... क़ौरन.....तेज़ हल्ला बोल दो। फैसले का वक्त आ गया है"

जग के शौर व गोग़ा में और फिर इतनी दूर से उस की आवाज़ सालारों तक नहीं पहुंच सकती थी। उस की पुकार उस के क़ासिद सुन सकते थे जो हर वक्त उस के क़रीब मौजूद थे।

"कोई और हुक्म?"–एक क़ासिद ने माहान के आगे हो कर पूछा।

माहान ने अपना पूरा हुक्म दिया और क़ासिद का घोड़ा बड़ी तेज़ी से चट्टान से उतर कर मैदाने जंग की क़यामत खेज़ी में ग़ायब हो गया।

माहान मुसलमानों को इसी कैफियत में लाना चाहता था के वो हमला रोकने के क़ाबिल न रहें। वो कैफियत पैदा हो चुकी थी। मुसलमानों की नफरी हज़ारों के हिसाब से

कम हो गई थी और जो ज़ख्मी नही थे वो जिस्मानी थकन से चूर हो चुके थे। रोमियों के लिए वो फैसला कुन लम्हा था जिस का हुक्म माहान ने गुज़िश्ता रात अपने सालारों को दिया था।

माहान का हुक्म पहुंचते ही रोमियों ने तीन सालारों-अबु उबैदा(र०), यज़ीद(र०) बिन अबु सफयान और अकरमा(र०)-के दस्तों पर हमला कर दिया। अबु उबैदा(र०) और शरजील(र०) के दस्तों पर ज़्यादा दबाव डाला गया क्योके उन के क़दम पहले ही उखड़े हुए थे और वो पीछे हट रहे थे। इन्हें मैदाने जंग से भगा देना रोमियों के लिए कोई मुश्किल न था। वो पीछे ही पीछे हटते जा रहे थे।

रोमी जंग को फैसला कुन मरहले में ले आए थे।

मुसलमानों की शिकस्त यक़ीनी थी और इस शिकस्त के नताइज सिर्फ इन मुसलमानों के लिए ही तबाह कुन नही थे जो लड़ रहे थे बल्कि ये इस्लाम के लिए भी कारी ज़र्ब थी। इसी मैदान में ये फैसला होना था के इस ख़ित्ते में मुसलमान रहेंगे या रोमी, इस्लाम रहेगा या इसाईयत।

मैदान इसाईयत के हाथ था।

अबु उबैदा(र०) और यज़ीद(र०) के दस्तों के बायें पहलू पर अकरमा(र०) के दस्ते थे। इन पर भी हमला हुआ था लेकिन ये इतना ज़ोरदार नहीं था जितना दूसरे दस्तों पर था। अकरमा(र०) ने अबु उबैदा(र०) और यज़ीद(र०) जैसे बहादुर सालारो को पस्पाई की हालत में देखा तो उन्होंने महसूस किया के उन के अपने दस्ते भी नही ठहर सकेंगे।

"खुदा की क़सम, हम यूं नहीं भागेंगे"-अकरमा(र०) ने नारा लगाया और अपने दस्तों में घूम फिर कर कहा- "जो लड़ कर मरने और पीछे न हटने की क़सम खाने को तैयार हैं अलग हो जाएं....सोच कर क़सम खाना। क़सम तोड़ने के अज़ाब को सोच लो.. ...फैसला करो तुम्हें क्या मंज़ूर है....शिकस्त या मौत....ज़िल्लत और रूस्वाई की ज़िन्दगी या बा इज़्ज़त मौत!"

अगर सूरते हाल ये न होती और मुसलमान ताज़ा दम होते तो अकरमा(र०) को इस ऐलान की ज़रूरत ही नहीं थी लेकिन मुसलमान जिस्मानी तौर जिस बुरी हालत को पहुच गए थे इस का बहुत बुरा असर ज़हनों पर भी पड़ा था। ये दस्ते ये पहली जंग तो नही लड़ रहे थे। वो तीन तीन चार चार बरसों से घरों से निकले हुए थे और लड़ते हुए यहां तक पहंचे थे। ये जज़्बा था जो इन्हें यहां तक ले आया था। वरना आम ज़हनी हालत में ये मुमकिन नही था।

इस जिस्मानी और ज़हनी कैफियत में अकरमा(र०) के ऐलान और लल्कार पर सिर्फ चार सौ मुजाहेदीन ने लब्बेक कहा और हलफ उठाया के एक क़दम पीछे नहीं हटेंगे, लड़ते हुए जानें दे देंगे। बाक़ी जो थे वो लड़ने से मुंह नही मोड़ रहे थे लेकिन वो ऐसी क़सम नहीं खाना चाहते थे जिसे वो पूरा न न कर सकें।

इन चार सौ मुजाहेदीन ने जिन्होंने हलफ उठाया था, अपने सालार अकरमा(र०) की क़यादत में उन रोमियों पर हल्ला बोल दिया जो अबु उबैदा(र०) और यज़ीद(र०) को पीछे धकेल रहे थे। ये हल्ला इतना शदीद था जैसे शेर शिकार पर झपट रहे हों। इस का नतीजा ये रहा के रोमियों का जानी नुक़सान बेशुमार हुआ। अकरमा(र०) के दस्तों में से कोई एक आदमी भी पस्पा न हुआ लेकिन चार सौ जांबाज़ों में एक भी सही और सलामत न रहा। ज़्यादा तर शहीद हो गए, बाक़ी शदीद ज़ख़्मी हुए और बाद में ज़ख़्मों की ताब न ला कर शहीद होते रहे। कई एक जिस्मानी तौर पर माज़ूर हो गए।

इन्तेहाई शदीद ज़ख़्मी होने वालों में अकरमा(र०) भी थे और उन के नौजवान बेटे उमरो(र०) भी। इन्हें बेहोशी की हालत में पीछे लाया गया था।

❁

अबु उबैदा(र०) और यज़ीद(र०) के दस्ते पीछे हटते गए। रोमी इन्हें धकेलते चले आ रहे थे। बड़ा ही खूँरेज़ मआरका था। जब ये दस्ते मुसलमानों की खे़मा गाह तक पहुंचने लगे तो मुसलमान औरतों ने डण्डे फैंक कर तलवारें और बरछियां उठा लें और चादरें पगड़ियों की तरह अपने सरों से लपेट कर रोमियो पर टूट पड़ी। इन में ज़रार(र०) की बहन खो़ला थीं जो औरतों को लल्कार रही थीं।

मोअर्रिख़ लिखते हैं के आरतें अपने दस्तों में से गुज़रती आगे निकल गईं और बड़ी महारत, दिलैरी और क़हर से रोमियों पर झपटने लगीं। वो ताज़ा दम थीं। उन्होंने रोमियों के मुंह मोड़ दिए। उन की ज़र्बें कारी थीं। रोमी ज़ख़्मी हो हो कर गिरने लगे।

औरतों के यूं आगे आ जाने और रोमियों पर झपट पड़ने का जो असर मुजाहेदीन पर हुआ वो ग़ज़बनाक था। अपनी औरतों को लड़ता देख कर मुजाहदीन आग बगूला हो गए। इन्सान में जो मख़्फ़ी कुव्वतें होती हैं वो बेदार हो गईं और वही मुजाहेदीन को पस्पा हुए जा रहे थे, रोमियो के लिए क़हर बन गए। उन्होंने तरतीब तोड़ दी और अपने सालारों के अहकाम से आज़ाद हो कर लड़ाई शुरू कर दी। इन की ज़र्बों के आगे रोमी बौखला गए और पीछे हटने लगे। वो अपने ज़ख़्मियों को रौंदते जा रहे थे।

सालार भी सिपाही बन गए और औरतें बदस्तूर लड़ती रहीं। दिन का पिछला पहर था। मआरका इन्तेहाई खूँरेज़ और तेज़ हो गया। रोमियों के पांव उखड़ गए थे। घमसान के इस मआरके में ज़रार(र०) की बहन खो़ला जो उस वक़्त तक कई एक रोमियों को ज़ख़्मी और हलाक कर चुकी थीं एक और रोमी के सामने हुईं। पहला वार खो़ला ने किया जो रोमी ने रोक लिया और इस के साथ ही उस ने ऐसा ज़ोर दार वार किया के उस की तलवार ने खो़ला के सर का कपड़ा भी काट दिया और सर पर शदीद ज़ख़्म आया। खो़ला बेहोश हो कर गिर पड़ीं फिर इन्हें उठते न देखा गया।

इस के फौरन बाद सूरज गुरूब हो गया और दोनों तरफ के दस्ते अपने अपने मुक़ाम पर पीछे चले गए और ज़ख़्मियों और लाशों को उठाने का काम शुरू हो गया। रोमियों की

लाशों और बेहोश ज़ख़्मियों का कोई शुमार न था। नुक़सान मुसलमानों का भी कम न था लेकिन रोमियों की निस्बत बहुत कम था।

खोला कही नज़र नही आ रही थी। इन्हें खेमा गाह में ढूंडा गया। न मिली तो लाशों और ज़ख़्मियों मे ढूंडने लगे और वो बेहोश पड़ी मिल गईं। सर में तलवार का लम्बा ज़ख़्म था। बाल खून से जुड़ गए थे।

"इस के भाई को इत्तेला दो"–किसी ने कहा–"इब्ने लाज़ोर से कहो तेरी बहन शहीद हो रही है"

ज़रार(र०) बिन लाज़ोर बहुत दूर थे। बड़ी मुश्किल से मिली। बहन की इत्तेला पर सरपट घोड़ा दौड़ाते आए। जब अपनी बहन के पास पहुंचे तो बहन होश में आ गई। उन की नज़र अपने भाई पर पड़ी तो होंटों पर मुस्कुराहट आ गई।

"खुदा की क़सम तू ज़िन्दा है"–ज़रार(र०) ने जज़्बात से मग़लूब आवाज़ में कहा–"तू ज़िन्दा रहेगी।"

ज़रार(र०) ने खोला को उठा कर गले लगा लिया। खोला के सर पर तह दर तह कपड़ा था जिस ने तलवार की ज़र्ब को कमज़ोर कर दिया था सर पर सिर्फ ओढ़नी होती तो खेपड़ी कट जाती फिर ज़िन्दा रहना मुमकिन न होता।

जंग का बड़ा ही होलनाक दिन गुज़र गया। रोमियों को अपने इस अज़्म में बहुत बुरी तरह नाकामी हुई के आज के दिन जंग का फैसला कर देंगे। उन की नफरी तो बहुत ज्यादा थी लेकिन उस रोज़ उन की जो नफरी मारी गई थी इस से उन का ये फख़्र टूट गया था के वो मुसलमानों को हमेशा के लिए कुचल डालेंगे। मुसलमानों ने जिस तरह अपने सालारों से आज़ाद हो कर उन पर हल्ले बोले थे इस से वो मोहतात हो गए थे।

रोमियो के लश्कर में सब से ज़्यादा जो मारे गए या शदीद ज़ख़्मी हुए वो इसाई और आरमीनी और दूसरे क़बायल के आदमी थे जो रोमियों के इत्तेहादी बन कर आए थे। रोमी सालारे आला माहान ने इन्ही को आगे कर दिया और बार बार इन्ही से हमले करवा रहा था। इन लोगों का जज़्बा अपनी इतनी ज़्यादा लाशें और ज़ख़्मी देख कर मजरूह हो गया था।

❁

उस रोज़ एक और वाक़ेया हो गया। ख़ालिद(र०) परेशानी के आलम में कुछ ढूंडते फिर रहे थे। जंग के मुताल्लिक़ तो उन के चेहरे पर इज़्तेराब और हीजान रहता था लेकिन ऐसी परेशानी उन के चेहरे पर शायद ही कभी देखने में आई हो। उन से परेशानी का बाअस पूछा गया।

"मेरी टोपी!"–ख़ालिद(र०) ने कहा–"सुर्ख टोपी मेरी कही गिर पड़ी है उसे ढूंड रहा हूं।"

ये दिन का वाक़ेया है जब ख़ालिद(र०) अपने सवार दस्ते को लड़ा रहे थे।

मआरके में कुछ देर का तआत्तुल पैदा हो गया था ये सुन कर सब हैरान हुए के दुश्मन सियाह घटाओं की तरह चढ़ा आ रहा है और फतह की कोई उम्मीद नही और ख़ालिद(र०) जैसा ज़िम्मेदार सालार मामूली सी टोपी के लिए परेशान हो रहा है ख़ालिद(र०) ने सब से कहा के उन की टोपी तलाश करें।

तलाशे बसयार के बाद उन की सुर्ख़ टोपी मिल गई। मोअररिख़ लिखते हैं के ख़ालिद(र०) के चेहरे पर रौनक़ और होंटों पर तबस्सुम आ गया।

"इब्ने वलीद(र०)--किसी सालार ने पूछा--"क्या तुझे उन का ग़म नही जो हम से हमेशा के लिए जुदा हो गए हैं ? तू एक टोपी के लिए इतना परेशान हो गया था !"

"इस टोपी की क़द्र व क़ीमत सिर्फ मैं जानता हूं"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"हुज्जातुलविदा के लिए रसूले अकरम(स०) ने सर के बाल मुंडवाए तो मैं ने कुछ बाल उठा लिए। रसूल अल्लाह(स०) ने पूछा के इन बालों को क्या करोगे? मैं ने कहा के अपने पास रखूंगा, कुफ्फार के ख़िलाफ लड़ते वक़्त ये बाल मेरा हौसला मज़बूत रखेंगे। रसूल अल्लाह(स०) ने मुस्कुरा कर फरमाया के ये बाल तेरे पास रहेंगे और मेरी दुआऐं भी तेरे साथ रहेंगी। अल्लाह तुझे हर मैदान में फतह अता करेगा....मैं ने ये बाल अपनी इस टोपी में सी लिए थे। मैं इस टोपी से जुदा नहीं हो सकता। इसी की बरकत से मेरी ताक़त और मेरी हिम्मत क़ायम हैं"

ख़ालिद(र०) को टोपी मिल जाने की तो बहुत खुशी हुई थी लेकिन वो रात उन के लिए शबे ग़म थी। वो एक जगह बैठे हुए थे। उन के एक ज़ानू पर सालार अकरमा(र०) का सर था और दूसरे ज़ानू पर अकरमा(र०) के नौजवान बेटे उमरो(र०) का सर रखा था। बाप बेटा उस रोज़ की लड़ाई में इतने ज़्यादा ज़ख़्मी हो गए थे के होश में नही आ रहे थे। जिस्मों से खून निकल गया था। ज़ख़्म ऐसे थे के इन की मरहम पट्टी नही हो सकती थी। उस रोज़ बाप बेटा क़सम खा कर लड़े थे के मर जाऐंगे पीछे नहीं हटेंगे।

अकरमा(र०) ख़ालिद(र०) के भतीजे भी थे और दोस्त भी। इन का बड़ा पुराना साथ था। दोनों माने हुए शहसवार और शमशीरज़न थे। ख़ालिद(र०) को अपने इतने अज़ीज़ साथी के बिछड़ जाने का बहुत दुख था। अकरमा(र०) का नौजवान बेटा भी दुनिया से रूख़सरत हो रहा था। ख़ालिद(र०) ने पानी अपने पास रखा हुआ था। वो पानी में अपना हाथ डुबोते और उंगलियां जोड़ कर कभी अकरमा(र०) के नीम वा होंटों पर रखते कभी उन के बेटे उमरो(र०) के होंटों पर, मगर क़तरा क़तरा पानी जो बाप बेटे के मुह में जा रहा था वो आबे हयात नहीं था। अल्लाह ने इस अज़ीम बाप और उस के बेटे को फराईज़ से सबुकदोश कर दिया था।

इस तरह अकरमा(र०) ने और इस के फौरन बाद उन के बेटे ने ख़ालिद(र०) की गोद में सर रखे जानें जान आफरीं के सुपुर्द कर दीं। ख़ालिद(र०) के आंसू निकल आए।

"क्या इब्ने हन्तमा अब भी कहता है के बनी मखज़ूम ने जानें क़ुर्बान नही

की?"-ख़ालिद(र०) ने कहा।

हन्तमा ख़लीफातुलमुस्लेमीन उमर(र०) की वालेदा का नाम था। ख़ालिद(र०) और अकरमा(र०) बनी मखज़ूम में से थे। ख़ालिद(र०) को ग़ालिबन वहम था के उमर(र०) कहते हैं के बनी मखज़ूम की इस्लाम के लिए जानी कुर्बानियां थोड़ी हैं अकरमा(र०) और उन के बेटे की शहादत मामूली कुर्बानी नहीं थी।

वो रात आहिस्ता आहिस्ता गुज़र रही थी जैसे लम्हे लम्हे डर डर कर, कांप कांप कर गुज़र रहे हों। ज़ख़्मियों के कराहने की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। कई शहीदों की बीवियां वहीं थी लेकिन किसी औरत के रोने की आवाज़ नहीं आती थी। फिज़ा खून की बू से बोझल थी। दिन को उड़ी हुई गर्द ज़मीन पर वापस आ रही थी।

शहीदों का जनाज़ा पढ़ कर इन्हें दफ्न किया जा रहा था। अबु उबैदा(र०) ने ये इन्तेज़ाम कर रखा था के रात को किसी एक सालार को मुक़र्रर करते थे के वो तमाम खेमागाह के इर्द गिर्द घूम फिर कर पहरादारों को देखे फिर उन मुजाहेदीन को जा कर देखें जिन्हें दुश्मन की खेमागाह पर नज़र रखने के लिए आगे भेजा जाता था। उस रात अबु उबैदा(र०) ने इस ख़्याल से किसी सालार को इस काम के लिए न कहा के सब दिन भर के थके हुए हैं। वो खुद इस काम के लिए चल पड़े लेकिन वो जिधर भी गए उन्हे कोई न कोई सालार गश्त पर नज़र आया। सालार ज़ुबैर(र०) तो अपनी बीवी को साथ ले कर गश्त पर निकले हुए थे। दोनों घोड़ों पर सवार थे। उन की बीवी भी दिन को लड़ी थी।

❁

ये रात भी गुज़र गई। जंगे यरमूक की पांचवी सुबह तुलू हुई ख़ालिद(र०) ने फज्र की नमाज़ से फारिग़ होते ही सालारों को बुलाया था।

"मेरे रफीक़ो!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"आज का दिन कल से ज़्यादा ख़तरनाक होगा। अपनी तादाद देख लो। हम थोड़े रह गए हैं और जो रह गए हैं उन की हालत भी तुम्हारे सामने है आज ज़ख़्मी भी लड़ेंगे। दुश्मन का भी बहुत नुक़सान हो चुका है लेकिन उस की तादाद इतनी ज़्यादा है के वो इतने ज़्यादा नुक़सान को बर्दाश्त कर सकता है तुम ने दुश्मन के लड़ने का अंदाज़ देख लिया है सिर्फ ये ख़्याल रखो के मरकज़ीयत क़ायम रहे। अब हम ज़िन्दगी और मौत की जंग लड़ रहें हैं।"

ख़ालिद(र०) ने सालारों को कुछ हिदायात दीं और रूख़सत कर दिया। मआन बाद मुसलमान दस्ते अपनी पोज़ीशनों पर चले गए। इन की कैफियत ये थी के हर दस्ते में जिस्मानी लिहाज़ से जितने बिल्कुल ठीक अफराद थे उतने ही ज़ख़्मी भी थे। ज़ख़्मियों में ज़्यादा तर ऐसे थे जो किसी हद तक लड़ने के क़ाबिल थे लेकिन ऐसे भी थे जो लड़ने के क़ाबिल नहीं थे मगर वो अपने साथियों का साथ नहीं छोड़ना चाहते थे। औरतें आज भी लड़ने के लिए तैयार थीं।

मुसलमानों की ये दगरगूं कैफियत दुश्मन से छुपी हुई नहीं थी। उस ने इस से पूरा

फायदा उठाना था। मुसलमान सालार रोमियों के मुहाज़ की तरफ देख रहे थे। इन्हें तवक्को थी के आज रोमी ज़्यादा नफरी के दस्तों से हमला शुरू कर देंगे। मुसलमान सालारों को ये ख़तरा भी नज़र आ रहा था के रोमी अपने सारे लश्कर से हमला कर देंगे।

सुबह सफेद हो चुकी थी लेकिन रोमी आगे न आए, फिर सूरज निकल आया, रोमी आगे न आए।

रोमियों का ये सुकूत ख़तरनाक लगता था। ये तुफान से पहले की ख़ामोशी मालूम होती थी। ख़ालिद(र०) को ख्याल गुज़रा के रोमी मुसलमानों को हमले में पहल करने का मौक़ा दे रहे हैं। ख़ालिद(र०) पहल नहीं करना चाहते थे। वो कुछ वक़्त और दिफाअ को ही बेहतर समझते थे।

आख़िर रोमियों की तरफ से एक सवार आता दिखाई दिया। रोमी के लश्कर ने काई हरकत न की। सवार मुसलमान दस्तों के सामने आ कर रूक गया। वो कोई इसाई अरब था। अरबी रवानी से बोलता था।

"मैं अपने सालारे आला माहान का ऐल्ची हूं" -उस ने ऐलान करने के अन्दाज़ से कहा- "तुम्हारे सालारे आला से मिलने आया हूं।"

सालारे आला अबु उबैदा(र०) थे। ये तो उन्होंने अपने तौर पर ख़ालिद(र०) को सालारे आला के इख़्तियारात दे रखे थे। ज़िम्मेदारी बहरहाल अबु उबैदा(र०) की थी और अहम फैसले उन्होंने ही करने थे। वो आगे चले गए।

ख़ालिद(र०) वहां से ज़रा दूर थे। उन के कान खड़े हुए और वो उन की तरफ चल पड़े।

"कहो रोम के ऐल्ची!" -अबु उबैदा(र०) ने पूछा- "क्या पैग़ाम लाए हो?"

"सालारे आला माहान ने कहा है के चन्द दिनों के लिए लड़ाई रोक दी जाए" -ऐल्ची ने कहा- "क्या आप रज़ामंद होंगे?"

"क्या तुम्हारे सालारे आला ने कोई वजह नहीं बताई?" -अबु उबैदा(र०) ने पूछा।

"ये आरज़ी सुलह होगी" -ऐल्ची ने कहा- "इस दौरान ये फैसला होगा के मुस्तक़िल सुलह के लिए बात चीत होगी या नहीं।"

"हम आरज़ी सुलह पर रज़ा मंद हो जाएंगे" -अबु उबैदा(र०) ने कहा- "लेकिन बात चीत का फैसला कौन करेगा?"

"क्या आप लड़ाई रोकने पर राज़ी हैं?" -ऐल्ची ने पूछा।

"हां!" -अबु उबैदा(र०) ने कहा- "लेकिन....."

"नहीं!" -एक गरजदार आवाज़ सुनाई दी।

दोनों ने देखा। ये ख़ालिद(र०) की आवाज़ थी। उन्होंने अबु उबैदा(र०) की सिर्फ "हां" सुनी थी।

"अबु सुलेमान!" -अबु उबैदा(र०) ने कहा- "इन के सालार ने आरज़ी सुलह के

लिए कहा है"

"अमीनुलउम्मत!"-ख़ालिद(र०) ने अबु उबैदा(र०) के कान में कहा-"ये हमले की तैयारी के लिए मोहलत चाहते हैं इन का इतना नुक़सान हो चुका है के फौरी तौर पर हमला नही करना चाहते। मुझे इजाज़त दें के इस ऐल्ची को कोरा जवाब दे सकूं।"

"ऐ सल्तनते रोम के ऐल्ची!"-अबु उबैदा(र०) ने ऐल्ची से कहा-"सुलह समझोते का वक़्त गुज़र गया हैं अपने इतने ज़्यादा आदमी मरवा कर मै ये नही कहलवाना चाहता के मै अपने इतने ज़्यादा मुजाहेदीन का खून ज़ाए कर आया हूं....लड़ाई जारी रहेगी।"

अबु उबैदा(र०) ने घोड़ा मोड़ा और ख़ालिद(र०) के साथ अपने मुहाज़ की तरफ चल पड़े।

"अबु सुलेमान!"-अबु उबैदा(र०) ने कहा"अपने मुजाहेदीन की हालत देखते हुए मैं ने सोचा था के इन्हें आराम मिल जाए और कुछ ज़ख़्मी ठीक हो जाऐं। क्या तू देख नहीं रहा के...."

"सब देख रहा हूं इब्ने जर्राह!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"लेकिन हालत हमारे दुश्मन की भी ठीक नहीं वरना। वो सुलह का धोका न देता। रोमियों के साथ बहुत से क़बीले आए थे। रोमी सालारों ने इन्ही को सब से पहले मरवाया है और अपनी बाक़ायदा फौज को वो बहुत कम इस्तेमाल कर रहे हैं। ये क़बीले बाग़ी हो गए होंगे या उन का दम ख़म टूट चुका होगा। हम इन्हें संभलने की मोहलत नहीं देंगे।

"क्या तू इन पर हमले की सोच रहा है?"-अबु उबैदा(र०) ने पूछा।

"क्या तू सोचने के क़ाबिल नहीं रहा अमीनुलउम्मत?"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"आ, मिल कर सोचेंगे।"

❁

ख़ालिद(र०) ने जो सोचा वो बड़ा ही पुर ख़तर और दिलैराना इक़दाम था।

वो दिन जो जंग का पांचवां दिन था, बग़ैर लड़ाई के गुज़र गया। दस्तों को एक दिन का तो आराम मिल गया लेकिन सालारों ने आराम न किया। ख़ालिद(र०) ने सालारों को साथ मसरूफ रखा। उन्होंने आठ हज़ार घुड़सवार अलग कर के एक दस्ता बना लिया। सालारों को अपना नया मंसूबा समझाया। उन्होंने ये मंसूबा अपने जिन पियादा और सवारों के लिए बनाया था, इन में आधी तादाद ज़ख़्मी थीं। ऐसा ख़तरा ख़ालिद(र०) ही मोल ले सकते थे।

छटे दिन की सुबह तुलू हुई। रोमी लश्कर आगे आ गया। मुसलमान मैदान में नई तरतीब से मौजूद थे। रोमी सालार गरीगरी घोड़े पर सवार आगे बढ़ा। गरीगरी उन दस्तों का सालार था जिन के दस दस सिपाही एक एक ज़ंजीर से बंधे हुए थे। गरीगरी ने दोनों फौजों के दरमियान घोड़ा रोका।

"क्या तुम्हारे सालारे आला में हिम्मत है के मेरे मुक़ाबले में आए?" –गरीगरी ने लल्कार कर कहा।

अबु उबैदा (र०) ने अपने घोड़े को ऐड़ लगाई और गरीगरी की तरफ गए।

रूक जा इब्ने जर्राह। ख़ालिद (र०) ने अबु उबैदा (र०) को पुकारा और घोड़ा दौड़ा कर उन के क़रीब चले गए। कहने लगे– "तू आगे नही जाएगा। मुझे जाने दे।"

"आह अबु सुलेमान!" –अबु उबैदा (र०) ने कहा– "वो मुझे लल्कार रहा है"

"अमीनुलउम्मत को रोक लो" –मुतआद्दिद सालारों ने शौर मचाया– "इब्ने वलीद को जाने दो।"

मोअररिख़ लिखते हैं के गरीगरी को मुसलमान सालार माहिर तेग़ ज़न समझते थे। तगज़ ज़नी में अबु उबैदा (र०) भी कम न थे फिर भी सब ख़ालिद (र०) को गरीगरी की टक्कर का आदमी समझते थे लेकिन अबु उबैदा (र०) ने किसी की न सुनी और गरी गरी के मुक़ाबले के लिए चले गए।

गरीगरी ने अबु उबैदा (र०) को अपनी तरफ आते देखा तो उस ने घोड़े को ऐड़ लगाई और इस तरह एक तरफ ले गया जैसे वो पहलू की तरफ से आ कर तलवार का वार करना चाहता हो। अबु उबैदा (र०) ने घोड़ा रोक लिया और गरीगरी को कंखियों से देखते रहे। गरीगरी ने अपने ही अंदाज़ से घोड़ा घुमा कर और दौड़ा कर अबु उबैदा (र०) पर वार किया। वार ऐसा था जो लगता था रोका नहीं जा सकेगा लेकिन अबु उबैदा (र०) ने वार रोक कर घोड़े को घुमाया और बड़ी फुर्ती से वार किया। गरीगरी ने वार रोक लिया।

इस के बाद तलवारें टकराती और घोड़े अपने सवारों के पैंतरों के मुताबिक़ घूमते, मुड़ते, दौड़ते और रूकते रहे। दोनों सालार शमशीरज़नी के उस्ताद मालूम होते थे। दोनों के वार बड़े ही तेज़ थे और हर वार लगता था के हरीफ को काट दगा। दोनों फौजें अपने अपने सालार को चिल्ला चिल्ला कर दाद दे रही थीं। कभी दोनों फौजें यूं दम बखुद हो जाती जैसे वहां कोई इन्सान मौजूद ही न हो।

गरीगरी ने एक वार किया जो अबु उबैदा (र०) ने रोक लिया। अबु उबैदा (र०) वार करने लगे तो गरीगरी ने घोड़ा दौड़ा दिया और अबु उबैदा (र०) के इर्द गिर्द घूमने लगा। अबु उबैदा (र०) वार करने को बढ़ते तो वो रूक कर वार रोकने की बजाए घोड़े को परे कर लेता। अबु उबैदा (र०) ने उस पर वार करने की बहुत कोशिश की लेकिन वो वार से भाग रहा था। ऐसे नज़र आता था जैसे वो मुक़ाबले से मुंह मोड़ रहा हो। अबु उबैदा (र०) उस के पीछे हो गए।

आख़िर उस ने घोड़े का रूख़ अपने लश्कर की तरफ कर दिया। अबु उबैदा (र०) उस के पीछे पीछे गए और उस का पीछा करते रहे। उस ने घोड़े की रफ्तार तेज़ कर दी। अबु उबैदा (र०) ने भी रफ्तार बढ़ा दी। रोमी लश्कर पर तो ख़ामोशी तारी हो गई लेकिन

मुसलमानों ने दाद व तहसीन का शौर बपा कर दिया। रोमी सालार मुक़ाबले से मुंह मोड़ कर भाग गया था।

गरीगरी ने घोड़े को एक तरफ मोड़ा और रफ्तार और तेज़ कर दी। अबु उबैदा(र०) ने घोड़े को ऐड़ लगाई और उस के क़रीब चले गए। गरीगरी ने घोड़ा फौरन घुमा कर अबु उबैदा(र०) के सामने कर दिया। ये उस की चाल थी। वो भाग निकलने का धोका दे रहा था। धोका ये था के वो अचानक घूम कर अबु उबैदा(र०) पर वार करेगा। और इन्हें वार रोकने की मोहलत नहीं मिलेगी।

मोअररिख़ तिबरी और बलाज़री ने लिखा है के अबु उबैदा(र०) चौकन्ने थे और गरीगरी के धोके को समझ गए थे। गरीगरी फौरन पीछे को घोड़ा मोड़ कर वार करने लगा तो अबु उबैदा(र०) की तलवार पहले ही हरकत में आ चुकी थी। गरीगरी की गर्दन मोज़ू ज़ाविये पर थी। अबु उबैदा(र०) का वार सीधा गर्दन पर पड़ा जिस से गर्दन की हड्डियों का एक जोड़ कट गया और गर्दन एक तरफ ढलक गई, गरीगरी घोड़े से गिर पड़ा।

मुसलमानों ने दाद व तहसीन का गुल ग़पाड़ा कर दिया। दस्तूर के मुताबिक़ अबु उबैदा(र०) को घोड़े से उतर कर गरीगरी की तलवार, खुद और ज़िरा उतार लेनी चाहए थी लेकिन वो घोड़े से न उतरे, कुछ देर गरीगरी को तड़पता देखते रहे। जब उस का जिस्म बे हिस हो गया तो अबु उबैदा(र०) ने घोड़े को ऐड़ लगाई और अपनी सफों में आ गए।

❁

इब्ने वलीद(र०) अबु उबैदा(र०) को ख़िराजे तहसीन पेश करने के लिए न रूके। वो घुड़सवार दस्ते के पास चले गए जो उन्होंने उस रोज़ की जंग के लिए तैयार किया था। आठ हज़ार सवारों के इस दस्ते को दायें पहलू पर उमरो बिन आस(र०) के दस्तों के अक़ब में ऐसी जगह खड़ा किया गया था जहां से ये दुश्मन को नज़र नही आ सकता था।

ख़ालिद(र०) ने अपनी तमाम फौज को सामने का हमला करने का हुक्म दे दिया। रोमी सालार हैरान हुए होंगे के मुसलमान सालारों का दिमाग़ जवाब दे गया है के उन्होंने एक ही बार सारी फौज हमले में झोंक दी है रोमियों ने ये भी न देखा के मुसलमानों के घुड़सवार दस्ते हमले में शरीक नहीं। रोमियों को ये सब कुछ देखने की फुर्सत ही नहीं मिली थी क्योंके ख़ालिद(र०) के हुक्म के मुताबिक़ बहुत तेज़ हमला किया जा रहा था। रोमियों की वहुत सी नफरी हलाक और शदीद ज़ख्मी हो चुकी थी फर भी उन की नफरी मुसलमानों की निस्बत सह गुना थी। मुसलमानों का जानी नुक़सान भी हुआ। इतनी कम नफरी का इतनी बड़ी तादाद पर हमला खुद कुशी के बराबर था।

"इन्हें आने दो"-रोमी सालार माहान चिल्ला रहा था-"और आगे आने दो....ये हमारे हाथों मरने के लिए आ रहे हैं।"

ख़ालिद(र०) आठ हज़ार सवारों को पीछे ले जा कर रोमियों के बायें पहलू से परे ले

गए। उन्होंने सालार उरमो(र०) बिन आस से कहा था के रोमियों के इस पहलू पर तेज़ और ज़ोरदार हमला करें। उमरो(र०) बिन आस ने हुक्म की तामील की और जानें लड़ा दीं। ख़ालिद(र०) चाहते थे के दुश्मन के पहलू के दस्तो को सामने से उल्झा लिया जाए।

उमरो(र०) बिन आस ने ख़ालिद(र०) का ये मक़सद पूरा कर दिया। ख़ालिद(र०) ने आठ हज़ार सवारों में से दो हज़ार सवारों का एक दस्ता अलग कर दिया था। उन्होंने जब देखा के दुश्मन के पहलू के दस्ते उमरो(र०) बिन आस के दस्तों से उल्झ गए हैं तो छः हज़ार सवारो के साथ रोमियों के पहलू वाले दस्तों के खाली पहलू की तरफ से हमला कर दिया। रोमियों के लिए ये हमला ग़ैर मुतावक्क़े था। उन के पांव उखड़ गए। उमरो(र०) बिन आस ने अपने हमलो में शिद्दत पैदा कर दी।

दुश्मन के इन्ही दस्तो पर सामने से शरजील(र०) बिन हस्ना ने भी हमला किया था। ख़ालिद(र०) ने जिन दो हज़ार सवारों को अलग किया था, इन्हें हुक्म दिया के वो दुश्मन के उस सवार दस्ते पर हमला करें जो अपने पहलू के दस्तों की मदद के लिए तैयार था। इन दो हज़ार सवारों के लिए हुक्म ये था के वो दुश्मन के सवार दस्ते को रोके रखें। यानी हमला शदीद न करें बल्कि दुश्मन को धोके में रखें।

बाद में पता चला था के रोमियों का ये सवार दस्ता ख़ास तौर पर तैयार किया गया था। इसे हर इस जगह मदद के लिए पहुंचा था जहां मदद की ज़रूरत थी। मुसलमान सवारों ने इस सवार दस्ते को इस तरह उलझाया के हमला करते और पीछे या दायें बायें निकल जाते। पैंतरा बदल कर फिर आगे बढ़ते और हल्की सी झड़प ले कर इधर उधर हो जाते।

❁

ख़ालिद(र०) की ये चाल कारगर साबित हुई उन्होंने दुश्मन के मुक़ाबले में इतनी कम तादाद को ऐसी अक्लमंदी से इस्तेमाल किया था के दुश्मन के पहलू के दस्तों के पांव उखड़ गए। इन दस्तों को तवक्क़ो था के मुश्किल के वक़्त सवार दस्ते मदद को आजाएंगे लेकिन मदद को आने वाले सवारों को ख़ालिद के दो हज़ार सवारों ने आंख मुचौली जैसी झड़पों में उल्झा रखा था।

दुश्मन के पहलू के दस्ते एक बार पीछे हटे तो ख़ालिद ने छः हज़ार सवारों से हमले में शिद्दत पैदा कर दीं। माहान ने खुद आ कर अपने दस्तों को जम कर लड़ाने की कोशिश की लेकिन उस का सवार दस्ता बुरी तरह बिखरने और पीछे हटने लगा। पियादा दस्ते सवार दस्तो की मदद के बग़ैर नहीं लड़ सकते थे। वो बे तरह बिखरने और भागने लगे भागने वाले पियादा दस्ते आरमीनी थे। मोअररिख़ लिखते हैं के उन के भागने की एक वजह तो मुसलमानों के सवार दस्ते का हमला था और उन पर सामने से भी बहुत ज्यादा दबाव पड़ रहा था, और दूसरी वजह ये थी के आरमीनी सालारों ने महसूस किया के इन्हें दानिस्ता सवारों की मदद से महरूम रखा जा रहा है इन के पीछे इसाई अरब थे जिन का

सालार जबला बिन ऐहम था। उन्होंने भी रिसाले की मदद न आने को ग़ल्त समझा और लड़ने से मुंह मोड़ गए।

मोअररिख़ा लिखते है के आरमीनियों और इसाईयों की पस्पाई भगदड़ की मानिंद थी। दो मोअररिख़ों ने इसे सैलाब भी कहा है जिस के आगे जो कुछ भी आता है सैलाब उसे अपने साथ बहा ले जाता है रोमियों के बायें पहलू से भगने वाले दस्तो की तादाद चालीस हज़ार बताई गई है चालीस हज़ार इन्सानों की भगदड़ ऐसा बे क़ाबू सैलाब था जो अपने सलारों को भी अपने साथ बहा ले गया, यहां तक के सालारे आला माहान जो अभी मैदान नही छोड़ना चाहता था, अपने मुहाफिज़ों समेत इस सैलाब की लपेट में आ गया और बहता चला गया।

ये कामयाबी ख़ालिद(र०) की असकरी दानिश का हासिल थी। उन्होंने दुश्मन के पियादों को सवारों की मदद से महरूम कर दिया था और सवारों से पियादों पर हल्ला बोल दिया था। ख़ालिद(र०) के आगे बढ़ने का रूख़ माहान और उस के दो हज़ार सवार मुहाफिज़ों की तरफ था।

❁

उधर अबु उबैदा(र०) और यज़ीद(र०) बिन अबु सफयान अपने सामने के दस्तों पर इस अंदाज़ से हमले कर रहे थे के भरपूर लड़ाई भी नही लड़ते थे और पीछे भी नही हटते थे। अबु उबैदा(र०) ने दुश्मन के इन दस्तों को रोका हुआ था जो ज़ंजीरो में बंधे हुए थे। ये दस्ते तेज़ी से आगे पीछे नहीं हो सकते थे।

ख़ालिद(र०) दुश्मन के उस रिसाले को जिस ने सालरे महाज़ को मदद देनी थी, बिखेर कर भगा चुके थे। इस रिसाले को खुल कर लड़ने का मौक़ा ही नहीं दिया गया था। ख़ालिद(र०) अब अपने रिसाले (सवार दस्ते) के साथ रोमियों के अक़ब में चले गए थे। उनहोंने अक़ब से हमला कर दिया। ये रोमी फौज का दूसरा हिस्सा था। इस पर अपने बायें के दस्तों और सवार दस्तों के भागने का बहुत बुरा असर पड़ चुका था। माहान के ग़ायब हो जाने की वजह से मरकज़ीयत भी ख़त्म हो गई था। अब सालार अपनी अपनी लड़ाई लड़ रहे थे। वो अब सिर्फ दिफाअ में लड़ते थे।

किसी भी फौज का बड़ा हिस्सा भाग निकले और कुमक की उम्मीद न रहे तो इस सूरत में यही हो सकता है के अपनी जानें बचाने के लिए लड़ा जाता है और मौक़ा मिलते ही पस्पाई इख़्तियार की जाती है रोमी लश्कर के लिए ये सूरते हाल पैदा हो चुकी थी। ख़ालिद(र०) ने दुश्मन के भागने के रासते रोक लिए थे सिवाए एक के ख़ालिद(र०) की कोशिश भी यही थी के रोमी इसी रास्ते से भागें। चुनांचे दुश्मन के भागने वाले दस्ते इसी रासते पर जा रहे थे।

रोमी फौज भी पस्पा **हो रही** थी लेकिन मुनज़्ज़म तरीक़े से। इस का कुछ हिस्सा भगदड़ में बह गया था, ज़्यादा तादाद मुनज़्ज़म अंदाज़ से पस्पा हुई।

ख़ालिद(र०) ने इस तमाम इलाके की ज़मीन को दूर दूर तक देख लिया था और उन्होंने इस ज़मीन से फायदा उठाने के लिए और जो कुछ सोच लिया था वो किसी आम दिमाग़ में नही आ सकता। रोमी लश्कर जब भाग रहा था तो ख़ालिद(र०) के हुक्म से उन के दस्ते भागने वालों का तआक्कुब कर के एक ख़ास तरफ जाने पर मजबूर कर रहे थे। उस तरफ वादी-उर्रक़ाद थी जिस में एक नदी बहती थी और इस वादी के ख़दोखाल कुछ इस तरह थे। वादी इर्द गिर्द की ज़मीन से गहराई में चली जाती थी। इस की एक तरफ की ढलान तो ठीक थी लेकिन इस के बिलमुक़ाबिल की ढलान ज़्यादा तर सीधी थी। वहां से ऊपर चढ़ा तो जा सकता था लेकिन बहुत मुश्किल से।

रोमी फौज के बाक़ायदा दस्ते उस तरफ चले गए। उन के सामने यही रास्ता था। आसान ढलान उतर गए और उन्होंनें नदी भी पार कर ली। जब वो दूसरी ढलान चढ़ने लगे तो मुश्किल पेश आई। आहिस्ता आहिस्ता ऊपर चले गए। अचानक ऊपर से नारे बुलंद हुए और लल्कार सुनाई दी।

नारे लगाने वाले मुसलमान सवार थे और इन के सालार ज़रार(र०) बिन लाज़ोर थे। उन का जिस्म नाफ से ऊपर नंगा था। ख़ालिद(र०) ने रात को जो मंसूबा बनाया था इस के मुताबिक़ उन्होंने इसी वक़्त ज़रार(र०) को पांच सौ सवार दे कर वादी-उर्रक़ाद के दूसरे किनारे पर भेज दिया और अच्छी तरह समझा दिया था के उन्हें क्या करना है

ख़ालिद(र०) ने जैसा सोचा था वैसे ही हुआ। रोमी फौज की दरअसल कोशिश ये थी के उस के तआक्कुब में जो मुसलमान आ रहे हैं, उन से बहुत फासला रखा जाए, इस लिए वो बहुत जल्दी में जा रहे थे। ख़ालिद(र०) ने तआक्कुब इसी मक़सद के लिए जारी रखा था के रोमी फौज जल्दी में रहे। इस मक़सद में कामयाबी यूं हुई के रोमी ऊपर गए तो ऊपर ज़रार(र०) के पांच सौ सवार बरछियां ताने खड़े थे। रोमी जो ऊपर चले गए वो मुसलमानों के हाथों मारे गए और जो अभी ऊपर जा रहे थे वो पीछे मुड़े लेकिन किनारे से वो तेज़ी से नीचे नही आ सकते थे। मुसलमानों ने उन पर पत्थर बरसाने शुरू कर दिए जो उन्होंने इसी मक़सद के लिए इक्ठे कर रखे थे। ऊपर वाले गिरते और लुढ़कते हुए नीचे जाते थे। ऊपर से इन पर वज़नी पत्थर गिरते थे। इन में घुड़सवार भी थे। घोड़े भी गिरे और पियादे इन के नीचे आ कर मरने लगे।

❁

रोमी कुछ कम तो न थे। अभी एक बड़ी तादाद नदी तक नही पहुंची थी। रोमी सालारों ने अपने आगे जाने वालों की तबाही देखी तो अपने दस्तों को आगे जाने से रोक दिया और वादी में उतरने की बजाए उन्हें ऊपर सफ आरा कर दिया। वो लड़ कर मरना चाहते थे। आरमीनियों और इसाई अरबों की भी कुछ नफरी इन से आ मिली थी। ये नफरी भाग रही थी और मुसलमान इन्हें वादी की तरफ ले आए थे।

ख़ालिद(र०) अपनी फौज के साथ थे। उन्होंने दुश्मन को सफ आरा देखा तो अपने

सालारों को बुला कर कहा के दुश्मन पर हमला कर दें।

"इन में लड़ने का दम नहीं रहा"—ख़ालिद(र०) ने कहा—"सीधा हमला करो। मेरे हुक्म का इन्तेज़ार नहीं करना। इन के लिए पीछे हटने की जगह नहीं है एक तरफ दरिया(यरमूक) है दूसरी तरफ गहरी वादी है सामने हम खड़े हैं। इन पर हल्ला बोल दो।"

रोमी फंदे में आ गए थे। इन का लड़ने का जज़्बा पहले ही ख़त्म हो चुका था। बाज़ मोअररिख़ों ने मुसलमानों की तादाद तीस हज़ार और दो ने इससे कुछ कम लिखी है शहादत और शदीद ज़ख़्मियों की वजह से नफरी कम हो गई थी। एक दस्ते को औरतों और बच्चों की फिाज़त के लिए पीछे छोड़ दिया गया था।

मुसलमानों ने हमला कर दिया। इस में कोई चाल न चली गई। इस हमले का अंदाज़ टूट पड़ने जैसा था। सवार और पियादे गुड़मुड़ हो गए थे। रोमी अब ज़िन्दगी और मौत का मआरका लड़ने के लिए तैयार हो गए। वो तो तरबियत याफ्ता फौज थी। इस फौज की अगली सफ ने मुसलमानों का जम कर मुक़ाबला किया लेकिन वो जगह ऐसी थी जहां दायें बायों होने और घूम फिर कर लड़ने की गुंजाईश नहीं थी। इस वजह से रोमी अपने ही साथियों के साथ टकराने और एक दूसरे के लिए रूकावट बनने लगे।

ये सूरते हाल मुसलमानों के लिए सूद मंद थी। रोमियों की अगली सफ ने मुक़ाबला तो किया लेकिन इस का कोई एक भी आदमी ज़िन्दा न रहा। मुसलमान सवारों ने रोमी पियादों पर घोड़े चढ़ा दिए और इन्हें सही मानों में कुचल डाला। जहां जगह कुछ कुशादा थी वहां रोमियों ने मुक़ाबला किया लेकिन मोअररिख़ों के मुताबिक़, यूं भी हुआ के गर्दो व गुबार में रोमियों ने रोमियों को ही काट डाला। अपने पराए की पहचान न रही।

ये बड़ा ख़ौफनाक मआरका था, बड़ी भयानक लड़ाई थी, ये रोमियों, इसाई अरबों और इन के इत्तेहादी क़बीलों का क़त्ले आम था।

"घोड़ों को उठा कर इन पर गिराओ"—ये ख़ालिद(र०) की ललकार थी—"मोमनीन! कुफ्र की चट्टानों को पीस डालो।"

मुसलमान सवार बागों को झटका देते तो घोड़े अपनी अगली टांगे उठा लेते थे और जब घोड़े टांगे नीचे लाते तो एक दो रोमी कुचले जाते। ये तो रोमियों का क़त्ले आम था। रोमी वादी—उर्रक़ाद की तरफ भाग रहे थे जहां वो अगले अमूदी किनारे की एक घाटी चढ़ते तो ज़रार(र०) के सवारों की बरछियों से छलनी होते और ऊपर से लुढ़कते हुए नीचे आते।

मुसलमानों ने इस फतह के लिए बहुत सी जानें कुर्बान की थीं और जो शदीद ज़ख़्मी हुए थे उन में कई एक सारी उम्र के लिए माज़ूर हो गए थे। ये जंग मुसलमान औरतें भी लड़ी थीं। औरतों ने अपने भागते मर्दों को धमकियां दे कर भागने से रोका था। अब वो दुश्मन जो इस्लाम को हमेशा के लिए ख़त्म करने के इरादे से डेढ़ लाख का लश्कर लाया

था बड़े फंदे में आ गया था। वादी-उर्रक़ाद उस के लिए मौत की वादी बन गई थी।

अल्लाह ने मोमेनीन की वो दुआऐं कुबूल कर ली थी जो वो रातों को जाग जाग कर मांगते और अल्लाह के हुज़ूर गिड़गिड़ाते रहे थे। वो एक आयत का विर्द करते रहे थे:

कितनी ही बार छोटी छोटी जमाअतें अल्लाह के चाहने से बड़ी बड़ी जमाअतों पर ग़ालिब आई है। अल्लाह सब्र व इस्तक़ामत वालों का साथ देता है: (कुर्आने हकीम 2/649)

अब मैदाने जंग की ये कैफियत हो गई थी के रोमियों की चीखें उठती थी जो मुसलमानों के नारो में दब जाती थी। वादी में गहरी खाईयां भी थीं। बाज़ रोमी इन में भी गिरे और बड़ी बुरी मौत मरे।

❁

जंगे यरमूक के छटे और आख़री रोज़ का सूरज मैदाने जंग के गर्द व गुबार में डूब गया। फिज़ा खून की बू से बोझल थी। मशालें जल उठीं और रोमियों की लाशों के दरमियान घूमने लगी। ये मुसलमानों की मशलें थी। वो अपने शहीदों और शदीद ज़ख़्मियों को उठा रहे थे और माले ग़नीमत भी इक्ळा कर रहे थे। खे़मा गाह में ख़बर पहुंची तो औरतें आ गईं। वो कई मील फासला तय कर के आई थीं। वो अपने खाविंदों को अपने भाईयों और अपने बेटों को ढूंड रहीं थीं।

"तू जन्नती है" -किसी औरत की आवाज़ सुनई देती थी- "तू जन्नत में जा रहा हैं"

जंग ख़त्म हो चुकी थी लेकिन ख़ालिद(र०) की जंग अभी जारी थी। रात भर मुसलमान शहीदों, ज़ख़्मियों और माले ग़नीमत के साथ मसरूफ रहे लेकिन ख़ालिद(र०) की मसरूफियत कुछ और थी। उन के लिए अभी जंग ख़त्म नहीं हुई थी। उन्होंने जो रोमी क़ैदी पकड़े थे। इन से ख़ालिद(र०) मालूम करते रहे थे के उन का सालारे आला माहान जो आरमीनिया का बादशाह भी था, किस तरफ जाते देखा गया था। उस के साथ उस का मुहाफिज़ सवार दस्ता था जिस की तादाद दो हज़ार थी।

सुबह तुलू होते ही ख़ालिद(र०) अपने सवार दस्ते को साथ ले कर माहान के तआक्कुब में रवाना हो गए। उस वक़्त माहान दमिश्क़ से दस बारह मील दूर पहुंच चुका था। उसे ये तवक्को नहीं थी के मुसलमान उस के तआक्कुब में पहुंच जाएंगे। शायद इसी लिए वो बड़े इतमेनान से जा रहा था, रात उस ने पड़ाव किया और सुबह दमिश्क़ को रवाना हुआ था।

"शहंशाहे मोअज़्ज़म!" -उसे अपने किसी साथी ने कहा- "देखें गर्द उठ रही है ये कोई सवार दस्ता लगता है"

"अपना ही होगा" -माहान ने कहा- "इन की गर्द को न देखो जो मैदाने जंग की गर्द से भाग आए हैं ये शिकस्त खा कर आए है।"

इन के दरमियान फिर ख़ामोशी छा गई। माहान की ज़हनी कैफियत बहुत बुरी

थी। वो किसी के साथ बोलता नही था। उस की अफसुर्दगी का बाअस सिर्फ ये नही था के उस ने शिकस्त खाई थी बल्कि ये के उस ने बड़ी थोड़ी तादाद की फौज से शिकस्त खाई थी। उस ने मुसलमानों को कुचल कर वापस आने का दावा किया था मगर अब वो अंताकिया जाने की बजाए दमिश्क़ की तरफ जा रहा था। अंताकिया में शहंशाहे रोम हरकुल था। माहान उस का सामना नही करना चाहता था।

जिन सवारों की गर्द नज़र आई थी अब उन के घोड़ों के क़दमों की हंगामा खेज़ आवाज़ सुनाई देने लगी थी जो बड़ी तेज़ी से क़रीब आ रही थी। माहान पीछे नही देख रहा था। वो इन्हें मैदान से भागे हुए सवार समझ रहा था।

सवार क़रीब आए तो दो हिस्सों में बट गए और उस के गिर्द घेरा डालने लगे। इस के साथ ही लल्कार सुनाई दी:

अना फारस उल ज़दीद
अना ख़ालिद बिन वलीद

तब माहान चौंका। उस के साथ अपने दो हज़ार सवार मुहाफिज़ ही नहीं थे बल्कि आरमीनिया की बाक़ायदा फौज की भी कुछ तादाद थी और कुछ इसाई अरब भी थे। उस ने इन सब को लड़ने की तरतीब में कर दिया और खुद अपने चन्द एक मुहाफिज़ साथ ले कर अलग हट गया।

ख़ालिद(र०) को बताया गया था के माहान के साथ अपने मुहाफिज़ का सवार दस्ता है लेकिन उस के साथ इस से दुगनी से भी कुछ ज़्यादा तादाद थी। ख़ालिद(र०) ने घेरे की शक्ल में हमला किया। माहान की फौज ने जम कर मुक़ाबला किया लेकिन मुसलमान थके हुए होने के बावजूद ताज़ा दम लगते थे। ये फतह की खुशी का असर था।

तारीख़ में उस मुजाहिद का नाम नहीं मिलता जो लड़ाई में बचता बचाता माहान तक जा पहुंचा। वो माहान के सवारों का हिसार तोड़ गया और उस ने माहान को हलाक कर दिया। मुजाहिद खुद भी ज़ख़्मी हुआ लेकिन माहान को हलाक कर के उस ने अपने साथियों का काम आसान कर दिया। अपने शहंशह और सालार आला को मरता देख कर उस के सवार मआरके में से निकलने लगे।

कुछ देर बाद दुश्मन के सवार और पियादे जिधर को रूख़ हुआ उधर को ही भाग निकले लेकिन बहुत सी लाशें और अच्छे भले घोड़े पीछे छोड़ गए।

दमिश्क़ दूर नही था। ख़ालिद(र०) ने दमिश्क़ का रूख़ कर लिया। ये उन का एक और दिलैराना इक़्दाम था। दमिश्क़ पर मुसलमानों का क़ब्ज़ा रहा था लेकिन रोमियों के इतने बड़े लश्कर को देख कर मुसलमानों ने दमिश्क़ से क़ब्ज़ा उठा लिया था।

"खुदा की क़सम!"–ख़ालिद(र०) ने कहा–"दमिश्क़ के दरवाज़े अब भी हमारे लिए खुल जाएंगे।"

तवक़्क़ो नहीं थी के ऐसा होगा। हो ही नही सकता था के मुसलमानों के चले जाने के

बाद भी रोमियों ने इस अहम शहर पर अपना तसल्लुत न जमाया हो।

ख़ालिद(र०) की क़यादत में जब मुसलमान सवारों का दस्ता दमिश्क़ पहुंचा तो दीवार के ऊपर से किसी ने पूछा के तुम लोग कौन हो?

"क्या तुम ने नही पहचाना के ये तुम्हारे हाकिम थे लेकिन हकूमत तुम्हारी थी?" -ख़ालिद(र०) ने कहा- "क्या तुम न कहते थे के रोमियों से मुसलमान अच्छे है?.. ..खुदा की क़सम, हम रोमियों को हमेश के लिए ख़त्म कर आए है।"

"मुसलमान आ गए है" -ये एक नारा था जो दीवार के ऊपर बुलंद हुआ फिर ये नारा सारे शहर में फैल गया।

शहर का बड़ा दरवाज़ा खुल गया और शहरियों का एक रैला बाहर निकला। लोगों ने बाज़ू फैला कर मुसलमानों का इस्तक़बाल किया और खुशी से नाचते हुए, ख़ालिद(र०) और इन के सवार दस्ते को शहर में ले गए। ये उस अच्छे सलूक और बरताव का असर था जो मुसलमानों ने इन अहले दमिश्क़ से किया था। मुसलमानों ने तो किरदार की बुलंदी का ये मुज़ाहेरा भी किया था के दमिश्क़ से रूख़सत होने से पहले शहरियों से वसूल किया हुआ जज़िया वापस कर दिया था।

ख़ालिद(र०) दमिश्क़ में नहीं रूक सकते थे, इन्हें यरमूक पहुंचना था और फतह के बाद के उमूर और इन्तेज़ामात देखने थे। वो उसी वक़्त रवाना हो गए।

शाम से रोमी सल्तनत का बोरिया बिस्तर गोल हो गया। चन्द दिनों बाद शहंशाह हरकुल अंताकिया से रूख़सत हुआ। उस का ठिकाना अब कुस्तुनतुनिया था। दो मोअरिख़ों बलाज़री और तिबरी ने लिखा है के शहंशाहे हरकुल जब अंताकिया से रवाना हुआ तो उस ने कुछ दूर जा कर रूक कर और पीछे मुड़ कर देखा।

"ऐ अर्ज़ेशाम!" -उस ने आह ले कर बोझल सी आवाज़ में कहा- "इस बदनसीब का आख़री सलाम कुबूल कर जो तुझ से जुदा हो रहा है अब रोमी इधर आए भी तो उन पर तेरा ख़ौफ सवार होगा....कितना खूबसूरत मुल्क दुश्मन को दिए जा रहा हूं।"

जंगे यरमूक पर हर दौर के जंगी मुबस्सिरों ने कुछ न कुछ लिखा है इस पर सब मुत्ताफिक़ हैं के ये जंग ख़ालिद(र०) की अक़्ल से जीती गई थी और ये कामयाबी कारगर चालों से हासिल की गई थी।

इस जंग में चार हज़ार मोमेनीन शहीद हुए और ज़ख़्मी तक़रीबन सभी हुए। खुद ख़ालिद(र०) ज़ख़्मी थे। रोमियों की अमवात एक लाख से ज़्यादा बताई गई हैं लेकिन मोअरिख़ों की अकसरीयत सत्तर हज़ार पर मुत्ताफिक़ हैं

सल्तनते इस्लामिया शाम तक फैल गई।

वो तादाद में बहुत थोड़े थे। उन के हथियार दुश्मन के मुक़ाबले में कमतर थे। उन के ज़राए यूं महदूद थे के अपने वतन से बहुत दूर थे। कुमक नहीं मिल सकती थी। इस का हुसूल दुश्वार था। दुश्मन मानिंद टिड्डी दल था। उस के हथियार बरतर थे। वो उस की अपनी ज़मीन थी, मुल्क अपना, क़िले अपने थे। कुमक की उस के हां कमी नहीं थी। अपनी बादशाही में से हज़ारों की तादाद में लड़ने वाले लोगों को मैदान में ले आता था, लेकिन वो जो तादाद में थोड़े थे और जो कई कई सालों से मुसलसल लड़ रहे थे उस दुश्मन के सीने पर खड़े थे जो उन से कहीं तीन गुना और कहीं चार गुना ज़्यादा ताक़तवर था।

वो कौन थे जिन्होंने उस दौर के सब से ज़्यादा ताक़तवर दुश्मन को फैसला कुन शिकस्त दी थी?

वो मुसलमान थे।

वो नाम के मुसलमान नहीं थे।

वो जंगी ताक़त को आदमियों और घोड़ों की तादाद से नही जज़्बे और ईमान से नापते थे।

ये ईमान की कुव्वत का करिश्मा था के शाम में क़ैसरे रोम का परचम उतर गया था। जिन क़िलों पर ये परचम लहराया करता था इन क़िलों में अब अज़ानें गुंज रही थीं।

यरमूक के मैदाने जंग में चार हज़ार मुजाहेदीन ने अपनी जानों की क़ुर्बानी दे कर रोमियों को शाम से बे दख़्ल कर दिया था। शहंशाहे हरकुल जो एक जाबिर जंगजू था और अपनी फौज को एक नाक़ाबिले तसख़ीर फौज समझता था, इस हालत में शाम की सरहद से निकला था के उस ने जवाबी हमले की सोचने की बजाए ज़हनी तौर पर शिकस्त तस्लीम कर ली थी।

उस की फौज के भागने का अंदाज़ किसी मुनज़्ज़म और ताक़वर फौज जैसा नही था। इस फौज की आधी नफरी मारी गई। ज़ख़्मियों का कुछ हिसाब न था और जो भागने के क़ाबिल थे वो अफराद में बिखर कर भागे। इन में से ज़्यादा तर ने बैतुलमुक़द्दस में जा पनाह ली। उस वक़्त बैतुलमुक़द्दस ऐलिया कहलाता था। ये आख़री क़िला था जो रोमियों के हाथ में रह गया था। दो चार और क़िले भी थे जो अभी रोमियों के पास थे लेकिन ये बैतुलमुक़द्दस जैसे बड़े नहीं थे। इन के अन्दर मुसलमानों की दहशत पहुंच चुकी थी।

मोअरिख़ लिखते है के शहरियों ने देखा के रोमियों का सूरज गुरूब हो रहा है तो उन्होंने कैसरे रोम की फौज को अपने तआवुन से महरूम कर दिया। मुसलमानों के

मुताल्लिक उन तक ये राय पहुंची थी के मुसलमान मैदाने जंग में सरापा कहर और मानिंदे फौलाद और हुकमरान की हैसियत में वो रेशम जैसे नर्म है।

इन किलों को सर कर लिया गया। कहीं जरा सी मजाहेमत हुई हो मुसलमानो को रोक न सकी और बाकी किलों के दरवाजे बगैर मजाहमत खुल गए। शहरियों ने मुसलमानों का इस्तकबाल किया और जजिया अदा कर दिया, अल्बत्ता बैतुलमुकद्दस जरा बड़ा शहर थ और ये शहर किला बंद था। किला मजबूत था। इसे सर करना दुश्वार नजर आ रहा था।

बैतुलमुकद्दस में रोमी सालार इतरबून था जिस के मुताल्लिक मोअररिखों ने लिखा है के फने हर्ब व जर्ब में हरकुल का हम पल्ला था। बाज मोअररिखों ने उसे हरकुल का हम रूत्बा भी कहा है। मुसलमानों के जासूस बैतुलमुकद्दस तक पहुंचे हुए थे। उन की लाई हुई इत्तेलाओं के मुताबिक इतरबून जाबिर और बे खौफ सालार था और वो मरते दम तक लड़ने वाला जंगजू था। बैतुलमुकद्दस के दिफाअ में उसे आखरी दम तक लड़ना ही था क्योंके इस खित्ते में रोमियों का ये आखरी मजबूत किला था।

एक मुकाम और भी था जो खासा अहम था। ये था कीसारिया। इस का किला भी मजबूत था। उस वक्त मुसलमान जाबिया के मकाम पर खेमा जन थे। यरमूक की जंग के बाद वो जाबिया चले गए थे। जख्मियों की तादाद गैर मामूली थी और जो जख्मी नहीं थे वो लड़ने के काबिल नहीं रहे थे। वो तो पहले ही थकन से चूर थे, जंगे यरमूक ने उन के जिस्मों का दम खम तोड़ दिया था। इन्हें आराम की जरूरत थी और जख्मियों की मरहम पट्टी इस से ज्यादा जरूरी थी। न के जख्म ठीक होने का इन्तेजार करना था।

इन्तेजार खतरनाक हो सकता था।

खतरा ये था के रोमी एक जंगजू कौम थी शिकस्त तो इन्हें फैसला कुन हुई थी लेकिन वो इतनी जल्दी और इतनी आसानी से शिकस्त को तस्लीम नहीं कर सकते थे। ज्यादा परेशानी तो बैतुलमकद्दस के मुताल्लिक थी जहां इतरबून जैसा जरी और काबिल सालार मौजूद था लेकिन रोमियों के कुछ दस्ते बिखरे हुए थे। जासूस इत्तेलाऐं दे रहे थे के बाज जगहों पर रोमियो के सालार मौजूद थे।

अबु उबैदा(र०) और दीगर मुसलमान सालार ये खतरा महसूस कर रहे थे के रोमी जवाबी हमला करेंगे।

"मेरे रफीको!"–अबु उबैदा(र०) ने अपने सालारो से कहा–"रोमी हमला जरूर करेंगे लेकिन इन में अभी इतना दम खम नहीं है के वो फौरी तौर पर हमला कर सकें। इस के अलावा वो इस तरह दूर दूर बिखर गए है के इन्हें इक्ट्ठा होने के लिए भी वक्त चाहिए।"

हकीकत भी यही थी के जिस तरह मुसलमानों में एक हल्का सा मआरका लड़ने की सकत नहीं रही थी इसी तरह रोमियों में भी लड़ने का दम नहीं रहा था। जैसा के पहले

बताया जा चुका है डेढ़ लाख में सत्तर हज़ार रोमी मारे गए थे और बाक़ी जो बचे थे इन में ज़्यादा तर ज़ख़्मी थे। जासूसों की इत्तेलाऐं ये थी के रोमी कहीं भी जवाबी हमले के लिए मुनज़्ज़म नही हो रहे लेकिन वो जहां जहां भी है, वहां दिफाई जंग लड़ने के लिए तैयार है।

❁

अक्तूबर 636ई० (शाबान 15 हिज्री) के एक दिन सालारे आला अबु उबैदा(र०) ने अपने सालारों को बुलाया।

"मेरे रफीक़ो !"-अबु उबैदा(र०) ने कहा- "ज़्यादा तर ज़ख़्मी मुजाहेदीन लड़ने के क़ाबिल हो गए है। लश्कर ने भी आराम कर लिया है। हम अब इस क़ाबिल है के आगे पेश क़दमी करें। दो जगहें है जिन पर क़ब्ज़ा करना बहुत ज़रूरी है। एक तो क़ीसारिया है और दूसरी जगह है बैतुलमुक़द्दस। क्या तुम बता सकते हो के इन दोनों जगहों में से किस पर हम पहले हमला करें?"

इस मसअले पर जब बहस शुरू हुई तो सालारों में इख़्तिलाफ पैदा हो गया। बाज़ का ख़्याल था के ये दोनों जगहें दिफाअ के लिहाज़ से मज़बूत है, इस लिए इन पर यके बाद दीगरे हमला किया जाए। कुछ ये कहते थे के दोनों मुक़ामात को बेक वक़्त मुहासरे में लिया जाए। अबु उबैदा(र०) इन के दरमियान फैसला न कर सके।

"क्या ये बेहतर नहीं होगा के हम अमीरूलमोमेनीन से पूछें के हमे क़ीसारिया और बैतुलमुक़द्दस में से किस जगह को पहले मुहासरे में लेना चाहिए?"-अबु उबैदा(र०) ने कहा- "मैं तुम सब के जज़्बे और ईसार की क़द्र करता हूं। इस का अज्र तुम्हें अल्लाह देगा। मैं किसी की हौसला शिकनी अपनी ज़बान से नहीं करूंगा। अल्हम्दोलिल्लाह दुश्मन इस ख़ित्ते से भाग रहा है लेकिन हमें अपनी फतह को मुकम्मल करना है। मै यही बेहतर समझता हूं के हम क़ासिद को मदीना भेज कर अमीरूलमोमेनीन का हुक्म लें।"

तमाम सालारों ने अबु उबैदा(र०) की ताईद की और उसी वक़्त एक तेज़ रफ्तार क़ासिद को मदीना इस पैग़ाम के साथ रवाना कर दिया गया:

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। अमीरूलमोमेनीन हज़रत उमर(र०) बिन ख़त्ताब की ख़िदमत में, सालारे आला बराए शाम अबु उबैदा(र०) बिन जर्राह की तरफ से। सब तारीफें अल्लाह के लिए है। और इताअत अल्लाह के रसूल मोहम्मद(स०) की है। अल्लाह ने हमें जिस फतह से नवाज़ा है, वो हमारी आईंदा नसलों पर इस की ज़ात का बहुत बड़ा अहसान है। तमाम फतूहात की इत्तेलाऐं मय माले ग़नीमत मदीना भेजी जाती रही है। अब हम जाबिया के मुक़ाम पर आराम की ग़र्ज़ से रूके हुए है। अल्हम्दोलिल्लाह ज़ख़्मी बहुत बेहतर हो चुके है। अब ज़रूरत ये है के हम आगे बढ़ें और रोमियों को शाम की सर ज़मीन से हमेशा के लिए बे दख़ल कर दें। हमारे लिए ये फैसला करना आसान नही के हम क़ीसारिया और बैतुलमुक़द्दस में से क़ौन सी जगह का इन्तेख़ाब करें। क्या अमीरूलमोमेनीन हमारी रहनुमाई करेंगे?"

वहां से मदीना का सफर कम व बेश एक माह का था। क़ासिद के जाने और आने में कम से कम बीस रोज़ दरकार थे। इन दिनों में ज़ख़्मी मुजाहेदीन मज़ीद बेहतर हो गए और जो ज़ख़्मी नही थे इन्हें आराम और तैयारी के लिए मज़ीद वक़्त मिल गया।

बैतुलमुक़द्दस के अन्दर के माहौल पर जहां शिकस्त की अफ़सर्दगी, शर्मसारी और दहशत तारी थी वहां जोश व ख़रोश भी पाया जाता था। ये जोश व ख़रोश रोमी सालार इतरबून का पैदा कर्दा था। वो अभी मुसलमानों के मुक़ाबले में नहीं आया था। उस ने सुना तो था और बड़ी अच्छी तरह सुना था के रोमी फौज किसी भी मैदान में मुसलमानों के मुक़ाबले में जम न सकी लेकिन इतरबून ने अपने आप पर ये वहम तारी कर लिया था के वो मुसलमानों को बैतुलमुक़द्दस में शिकस्त दे देगा। उस ने मुसलमानों का मुक़ाबला करने के लिए प्लान बनाने शुरू कर दिए और इस सिलसिले में एक रोज़ क़ीसारिया चला गया।

क़ीसारिया में उस ने वहां के सालार और फौज को ख़ौफज़दगी के आलम में देखा।

"मालूम होता है तुम ने लड़ने से पहले शिकस्त तस्लीम कर ली है"–इतरबून ने क़ीसारिया के सालार से कहा–"और मै तुम्हें मुसलमानों को शिकस्त देने के लिए तैयार करने आया हूं।"

"अगर हरकुल भाग गया है तो मुक़ाबले में हम भी नहीं ठहर सकते"–क़ीसारिया के सालार ने कहा–"फौज जो मेरे पास है इस पर उन सिपाहियों का असर हो गया है जो यरमूक से भाग कर यहां आए है....वो अभी तक आ रहे है। न जाने कहां कहां भट कर आ रहे हैं। इन के चेहरों, आंखों में और बातों में ख़ौफ नुमायां होता है।"

"बुज़दिल !–इतरबून ने नफरत से कहा–"लड़ाईयों से भागे हुए सिपाही और सालार भी ऐसी ही बातें किया करते है। वो अपने दुश्मन की फौज को जिन्नात और बदरूहों की फौज साबित करते है जिन का वो मुक़ाबला कर ही नहीं सकते थे.......क्या तुम मुझे ये मशवरा देना चाहते हो के हरकुल की तरह हम भी मुसलमानों के आगे हथियार डाल दें? तुम्हारी अक़्ल पर ऐसा पर्दा पड़ गया है के तुम ये सोचने के भी क़ाबिल नहीं रहे के हरकुल की ग़ैर हाज़री में मेरा हुक्म चलता है और तुम मेरे हुक्म के पाबंद हो। हम लड़ेंगे।"

"मै ने आप को फौज की ज़हनी हालत बताई है"–क़ीसारिया के सालार ने कहा–"ये नही कहा के हम भाग जाएंगे। आप हुक्म दें। फौज मुंह मोड़ जाएगी तो भी आप मुझे मैदाने जंग में ही देखेंगे।"

"फौज को लड़ाना तुम्हारा काम है"–इतरबून ने कहा–"तुम ने बाक़ी जो कुछ कहा है ये बड़ हांकी है। फारसियों ने भी इन अरबी मुसलमानों को अरब के बद्दु और सहराई क़ज़्ज़ाक़ कहा था। हरकुल और उस के सालार भी यही कहते मुसलमानों के हाथों मारे गए के किसी एक भी मुसलमान को ज़िन्दा वापस नहीं जाने देंगे....हुक्म ये है और ये मौजूदा सूरते हाल का तक़ाज़ा है के अपनी फौज को लड़ने के लिए तैयार करो। मुसलमान

ऐलिया (बैतुलमुक़द्दस) पर हमला करेंगे। तुम्हारा काम ये होगा के वो जब ऐलिया को मुहासरे में ले लें तो तुम आकर इन्हें मुहासरे में ले लो। तुम्हारे पास फौज की कमी नहीं। अगर तुम दुश्मन को मुकम्मल मुहासरे में न ले सको तो अक़ब से उस की फौज पर हमले करते रहो। मै अपने दस्ते शहर के बाहर भेज कर इतना सख़्त हल्ला बोलूंगा के दुश्मन क़दम जमाने के क़ाबिल नहीं रहेगा। अक़ब में तुम होगे। फिर सोच ये बदबख़्त किधर से निकल कर जाऐंगे" -उस ने राज़दारी के लहजे में कहा- "मुसलमान थक कर चूर हो चुके है। उन की नफरी कम व बैश छः हज़ार कम हो गई है। अब इन्हें शिकस्त देना मुश्किल नहीं रहा।"

"और अगर वो ऐलिया की बजाए क़ीसारिया में आ गए तो क्या...."

"फिर मै तुम्हारी मदद को आऊंगा-इतरबून ने कहा- "और मै तुम्हारी मदद उसी तह करूंगा जिस तरह मेंने तुम्हें कहा है के मेरी मदद को आना।"

इन के दरमियान तय हो गया के दोनों में से किसी पर हमला हुआ तो दूसरा उस की मदद को अएगा। इतरबून यक़ीन से कहता था के मुसलमान बैतुलमुक़द्दस पर आऐंगे।

❁

उस दौर के मुताल्लिक़ जब मुसलमान शाम पर छा गए थे, हरकुल शाम से निकल गया था और मुसलमान फिलस्तीन पर क़ाबिज़ होते चले जा रहे थे, मोअररि़ख़ों में इख़्तेलाफ पाए जाते है। बाज़ ने वाक़ेआत को गुड़मुड़ कर दिया है। मआरकों के तसलसुल को भी आगे पीछे कर दिया है। कहीं कहीं अमवात में मुबाल्ग़ा आराई मिलती है। रोमियों और मुसलमानों की नफरी भी सही नहीं लिखी।

अफसोस से कहना पड़ता है के अकसर ग़ैर मुस्लिम मोअररि़ख़ों और बाद के तारीख़ नवीसों ने अपने अपने फिरक़े के अक़ीदों के मुताबिक़ तआस्सुब का मुज़ाहेरा किया है और वाक़आत को ख़लत मलत कर दिया है और जो तआस्सुबात आज इन जानिबदार तारीख़ नसीसों के ज़हनों में भरे हुए है वो उन्होंने खुलफाए राशेदीन और मुजाहेदीन के चेहरों पर मल दिए है। मुसलमान अमीरूलमोमेनीन उमर(र०) ने ख़ालिद(र०) को माजूल कर के मदीना बुला लिया था। हम इस की वजूहात आगे चल कर बयान करेंगे लेकिन चन्द एक तारीख नवीसों ने ये साबित करने की कोशिश की है के अमीरूलमोमेनीन उमर(र०) के दिल में ख़ालिद(र०) के ख़िलाफ ज़ाती रंजिश की बिना पर बुग़ज़ और कीना भरा हुआ था। इस से ये तारीख़ नवीस ये साबित करना चाहते है के उमर(र०) का किरदार इतना अज़ीम नहीं था जितना बताया जाता है।

हम चूंके सिर्फ ख़ालिद(र०) बिन वलीद सेफुल्लाह की ज़िन्दगी की कहानी सुना रहे है इस लिए हम उन जंगों और दीगर हालात का ज़्यादा ज़िक्र नहीं करेंगे जिन का ताल्लुक़ ख़ालिद(र०) के साथ नहीं।

अगर मोअररि़ख़ों और बाद के तारीख़ नवीसों की तहरीरों की छान बीन की जाए तो

सिवाए उल्झाव के कुछ भी हासिल नही होता। मसलन एक तो ये पता चलता है के सालारे आला अबु उबैदा(र०) ने अमीरूलमोमेनीन उमर(र०) से बज़रिया क़ासिद पूछा था। वो क़ीसारिया की तरफ तवज्जह दें या बैतुलमुक़द्दस पर चढ़ाई करें या क्या करें, और एक तारीख़ नवीस ने ये ज़ाहिर किया है के अमीरूलमोमेनीन बैतुलमुक़द्दस से थोड़ी ही दूर किसी मुक़ाम पर मौजूद थे।

पसे मंज़र के वाक़ेआत को और मुस्तनिद मोअररि़खों की तहरीरों को देखा जाए तो अमीरूलमोमेनीन उमर(र०) हमें मदीना में मौजूद नज़र आते है जहां इन्हें हर मुहाज़ की रिपोर्टें मिल रही है, माले ग़नीमत का पांचवां हिस्सा खिलाफत के लिए हर तरफ से आ रहा है, अमीरूलमोमेनीन के हाथों तक़सीम हो रहा है और वो सालारो को खिराजे तहसीन के पैग़ाम भेज रहे है।

❁

सालारे आला अबु उबैदा(र०) ने जो क़ासिद मदीना को रवाना किया था वो तेज़ रफ्तार था। क़ासिदों की रफ्तार इस वजह से मज़ीद तेज़ हो जाती थी के रास्ते में घोड़े बदलने का इन्तेज़ाम मौजूद था। अब तो तमाम तर इलाक़ा मुसलमानों के क़ब्ज़े में था। क़ासिद पंद्रह दिनों बाद अमीरूलमोमेनीन का हुक्म ले आया।

अमीरूलमोमेनीन ने लिखा था के बैतुलमुक़द्दस सब से पहले फतह होना चाहिए लेकिन इस का मुहासरा करने से पहले रोमियों की कुमक के रास्ते बन्द करना ज़रूरी है। उमर(र०) को यहां तक मालूम था के क़ीसारिया में रोमी फौज कसीर तादाद में मौजूद है जो बैतुलमुक़द्दस को कुमक और दीगर मदद दे सकती है। उमर(र०) को मदीना में मौजूद रह कर भी मालूम था के क़ीसारिया तक रोमियों की मज़ीद फौज समुंद्र के रास्ते भी पहुंच सकती है। चुनांचे ख़लीफातुल मुस्लेमीन उमर(र०) ने अबु उबैदा(र०) को हुक्म भेजा के क़ीसारिया का अड्डा ख़त्म करना ज़रूरी है।

अमीरूलमोमेनीन ने अपने हुक्म और हिदायात में ये भी लिखा के उन्होंने यज़ीद बिन अबी सफयान को हुक्म भेज दिया है के वो अपने भाई मआविया(र०) को क़ीसारिया का मुहासरा करने और रोमियों के इस मज़बूत और ख़तरनाक क़िले को सर करने के लिए फौरन भेज दें ताके बैतुलमुक़द्दस की रोमी फौज को क़ीसारिया से और क़ीसारिया को समुंद्र की तरफ से मदद न पहुंच सके और इस से ये फायदा भी होगा के क़ीसारिया और बैतुलमुक़द्दस का राब्ता टूट जाएगा। इस हुक्म नामे में ये भी लिखा था के क़ीसारिया की फतह के फौरन बाद अबु उबैदा(र०) बैतुलमक़द्दस पर चढ़ाई करेंगे।

मदीना से ये जो अहकाम मुख़तलिफ सालारो को भेजे गए इन के मुताबिक़ मआविया(र०) ने क़ीसारिया का मुहासरा कर लिया। वहां के रोमी सालार को तवक़्क़ो थी के इतरबून उस की मदद को आएगा। इस तवक़्क़ो पर उस ने मुसलमानों को अपनी तरफ मुतावज्जह रखने का ये तरीक़ा इख़्तियार किया के दस्तों को क़िले से बाहर निकाल कर

हमले कराए।

इन हमलों का तसलसुल और अंदाज़ ऐसा था के मुहासरे का तो सिर्फ नाम रह गया था, क़िले के बाहर ख़ूंरेज़ लड़ाई शुरू हो गई। रोमियों के हमलों का तरीक़ा ये था के क़िले के दरवाज़े खुलते, दो तीन दस्ते रूके हुए सैलाब की मानिंद बाहर आते और मुसलमानों पर बड़ा शदीद हल्ला बोलते। कुछ देर लड़ कर वो पीछे हटते और क़िले में चले जाते और दरवाज़े फिर बन्द हो जाते।

मुसलमानों ने इन हमलों का मुक़ाबला इस तरह किया के रोमी दस्ते बाहर आते तो मुसलमान उन के अक़ब में जाने की कोशिश करते के रोमी क़िले में वापस न जा सकें। अक़ब में जाना इस वजह से ख़तरनाक हो जाता था के क़िले की दीवार से उन पर तीर आते थे। मुसलमान रोमियों के पहलूओं की तरफ हो जाते और तीरों की बौछाड़ों से बहुत से रोमियें को गिरा लेते।

इस तरह रोमियों ने इतना नुक़सान उठाया के वो लड़ने के क़ाबिल न रहे। क़ीसारिया के रोमी सालार ने इतरबून पर ये साबित करने के लिए के वो बुज़दिल नहीं, एक रोज़ खुद दो चार दस्तों को साथ लिया और बाहर निकल आया। मुसलमानों पर ऐसे हमले कई बार हो चुके थे इस लिए इन्हें ये हमले रोकने का तजुर्बा हो गया था। अब रोमी सालार खुद बाहर आया तो मुसलमानों ने पहले से ज़्यादा शुजाअत का मुज़ाहेरा किया। कई मुजाहेदीन रोमी सालार को मारने के लिए आगे बढ़ने लगे लेकिन उसे मारना आसान नज़र नहीं आता था। वो मुहाफिज़ों के हिसार में था।

आख़िर वो दहशत अपना असर दिखाने लगी जो रोमियों पर तारी होने लगी थी। वो तो होनी ही थी। वो अपने साथियों की लाशों पर लड़ रहे थे। पहले हमलों में जो रोमी मारे गए थे इन की लाशें उठाई नहीं गई थीं। बहुत से दिन गुज़र गए थे। पहले दिनों की लाशें ख़राब हो गई थी और इन का तआफ्फुन फैला हुआ था।

रोमियों पर दहशत तो पहले ही तारी थी। चूंके उन का सालार उन के साथ बाहर आ गया था इस लिए उन के हौसले में कुछ जान पड़ गई लेकिन इन का सालार किसी मुजाहिद की बरछी से मारा गया। रोमियों में अफरातफरी मच गई और वो क़िले के दरवाज़ों की तरफ भागने लगे। दरवाज़े खुल गए। इस से मुसलमानों ने ये फायदा उठाया के वो भागते और दहशत ज़दा रोमियों के साथ ही क़िले में दाख़िल हो गए।

अब क़ीसारिया मुसलमानों का था जिस से ये फायदा हासिल हुआ के समुंद्र की तरफ से रोमियों को कुमक नहीं मिल सकती थी।

❁

क़ैसरिया का सालार दिल में ये अफसोस लिए मर गया के इतरबून उस की मदद को न पहुंचा। उसे मालूम नहीं था के इतरबून क़ीसारिया के मुहासरे की इत्तेला मिलते ही अपना लकश्र ले कर बैतुलमुक़द्दस से चल पड़ा था लेकिन मुसलमान जानते थे क़सारिया

को बचाने के लिए बैतुलमुक़द्दस से मदद आएगी। उन्होंने मदद को रोकने का इन्तेज़ाम कर रखा था। उमरो(र०) बिन आस ने अपने दो सालारों, अल्कमा बिन हकीम और मसरूक मक्की को बैतुलमुक़द्दस की तरफ इस हुक्म के साथ भेज दिया था के बैतुलमुक़द्दस से रोमी फौज निकले तो उसे वहीं रोक लें।

एक जासूस ने इत्तेला दी के इतरबून अपनी फौज के साथ अजनादीन की तरफ पेशक़दमी कर रहा है। उमरो(र०) बिन आस ने सालार अल्कमा बिन हकीम और सालार मसरूक मक्की को बैतुलमुक़द्दस की तरफ भेज दिया और खुद इतरबून के पीछे गए लेकिन अजनादीन तक इन्हें कोई रोमी दस्ता नज़र न आया। ज़मीन बता रही थी के अजनादीन की तरफ फौज गई है। शहर के बाहर कुछ लोग मिले। उन्होंने बताया के रोमी फौज आई थी और क़िले में दाख़िल हो गई है।

अजनादीन दूसरे शहरों की तरह क़िले बंद शहर था। इस के इर्द गिर्द गहरी और चौड़ी खंदक़ थी जिसे पार करना मुमकिन नज़र नही आ रहा था। उमरो(र०) बिन आस ने शहर पनाह के इर्द गिर्द घूम फिर कर देखा। क़िला सर करने की कोई सूरत नज़र नहीं आ रही थी। उन्होंने एक नायब सालार को (तारीख़ में उस का नाम नही लिखा) अपनी तरफ से ऐल्ची बना कर सुलह के पैग़ाम के साथ क़िले में भेजने का फैसला किया।

"ये ज़रूरी नहीं के तुम सुलह कराके ही आओ" -उमर(र०) बिन आस ने ऐल्ची को हिदायत दे कर आख़री बात ये कही- "मैं तुम्हें जासूसी के लिए अन्दर भेज रहा हूं। एक तो ये अंदाज़ा करना के अन्दर कितनी फौज है। इस के अलावा जो कुछ भी देख सकोगे देखना और जायज़ा लेना के इतरबून का अपना हौसला कितना मज़बूत है।"

☸

ऐल्ची अपने मुहाफिज़ों के साथ क़िले में चला गया। वो वापस आया और उमर(र०) बिन आस को अपने मशाहदात बताए। उमरो(र०) बिन आस मुतमईन न हुए।

"क्या ये काम मैं खुद न करूं?" -उमरो(र०) बिन आस ने अपने सालारों से कहा- "जो मैं मालूम करना चाहता हूं वो सिर्फ मेरी आंखें देख सकती हैं।"

"इब्ने आस!" -एक सालार ने कहा- "क्या खुद जा कर तू अपने आप को ख़तरे में नही डाल रहा?"

"खुदा की क़सम!" -एक और सालार बोला- "इस्लाम तुझ जैसे सालार का नुक़सान बर्दाश्त नही कर सकेगा।"

"क्या इतरबून मुझे क़ैद कर लेगा?" -उमरो(र०) बिन आस ने पूछा- "क्या वो मुझे क़त्ल कर देगा?"

"हारे हुए दुश्मन से अच्छाई की तवक़्क़ो न रख इब्ने आस!"

"मैं उमरो(र०) बिन आस के रूप में नहीं जाऊंगा" -उमरो(र०) बिन आस ने कहा "मैं अपना ऐल्ची बन कर जाऊंगा। हमें ये क़िला लेना है। मै हर तरीक़ा

आज़माऊंगा।"

उमरो(र०) बिन आस ने भेस बदला और ये ऐलान कराके के मुसलमानों का ऐल्ची सुलह की शराईत तय करने के लिए क़िले में आना चाहता है, क़िले का दरवाज़ा खुलवाया। रोमियों ने मज़बूत तख़्ते ख़ंदक़ पर फैंक कर इन्हें ख़ंदक़ पार करवाई और क़िले के अन्दर अपने सालार इतरबून के पास ले गए।

मुख़्तलिफ मोअररिख़ो ने ये वाक़ेया लिखा है। इन के मुताबिक़, उमरो(र०) बिन आस ने अपना रूप और हुलिया तो बदल लिया था लेकिन इन के अंदाज़ और बोलने के सलीक़े और दो चार बातों से इतरबून को शक हुआ के ये शख़्स ऐल्ची नहीं हो सकता। उमरो(र०) बिन आस सालारी के तदब्बुर और इस्तदलाल को न छुपा सके।

इतरबून तजुर्बाकार सालार था और वो मर्दम शनास भी था। वो कोई बहाना कर के बाहर निकल गया और अपने मुहाफिज़ दस्ते के कमांडर को बुलाया।

"ये अरबी मुसमलान जो मेरे पास बैठा है अभी वापस जाएगा"-इतरबून ने कमांडर से कहा-"एक मुहाफिज़ को रास्ते में बैठा दो। मैं इस मुसलमान को इसी रास्ते से भेजूंगा। ये ज़िन्दा न जाए। मुहाज़िफ इसे क़त्ल कर दे। ये शख़्स मुसलमानों का सालार उमरो(र०) बिन आस है। अगर सालार नहीं तो ये उमरो(र०) बिन आस का कोई ख़ास मुशीर है और मुझे यक़ीन है के उमरो(र०) बिन आस इसी मुशीर के मशवरों पर अमल करता है। अगर मैं ने इसे क़त्ल न किया तो मैं सल्तनते रोमा से ग़द्दारी करूंगा।"

मोअररिख़ लिखते हैं के जिस तरह इतरबून उठकर बाहर निकल गया था, इस से उमरो(र०) बिन आस को उस की नीयत पर शक हुआ। वो वापस आया तो उमरो(र०) बिन आस ने उस के चेहरे पर और उस की बातों में नुमायां तब्दीली देखी। वो भांप गए के इतरबून की नीयत साफ नहीं। उन्होंने पैंतरा बदला।

"मोअज़्ज़िज़ सालार!"-उमरो(र०) बिन आस ने कहा-"हम दस जंगी मुशीर है जो मुसलमानों के लश्कर के साथ आए हैं। मैं इन में से एक हूं। मैं ने आप की शरायत सुन ली हैं। मैं खुद तो फैसला नहीं कर सकता। उमरो(र०) बिन आस को मशवरा दूंगा के वो आप की शरायत क़ुबूल कर लें। मुझे उम्मीद है के मेरे मशवरे पर अमल होगा और मज़ीद खून नहीं बहेगा।"

इतरबून धोके में आ गया। वो उमरो(र०) बिन आस के साथ बाहर निकला और मुहाफिज़ दस्ते के कमांडर को इशारा किया के इस शख़्स को क़त्ल करने की ज़रूरत नहीं। इस तरह उमरो(र०) बिन आस ज़िन्दा क़िले से निकल आए। बाहर आ कर उन्होंने लल्कार कर कहा के इतरबून, मैं उमरो(र०) बिन आस हूं।

इस के बाद अजनादीन के मैदान में दोनों फौजों के दरमियान जो मआरका हुआ वो जंगे यरमूक जैसा ख़ूंरेज़ था। हम इस मआरके की तफसीलात बयान नहीं कर रहे के इतरबून ने क़िले से बाहर आ कर लड़ने का फैसला क्यों किया था और उमरो(र०) बिन

आस ने कैसी कैसी चालें चल कर रोमियों को बे तहाशा जानी नुक़सान पहुंचा कर पस्पा किया।

इतरबून अपने बचे कुछे दस्तों को साथ ले कर बैतुलमुक़द्दस जा पहुंचा और वहां क़िला बंद हो गया। इस मआरके में मुसलमानों ने बहुत जानी नुक़सान उठाया था।

❁

जब अबु उबैदा(र०) को इत्तेला मिली के क़ीसारिया पर अपना क़ब्ज़ा हो गया है तो उन्होंने बैतुलमुक़द्दस की तरफ पेशक़दमी का हुक्म दे दिया। हराविल में ख़ालिद(र०) अपने मख़सूस रिसाले के साथ जा रहे थे। अबु उबैदा(र०) को भी ये बताया दिया गया था के इतरबून लड़ने के क़ाबिल नहीं रहा। फिर भी ऐहतियात की ज़रूरत है।

बैतुलमक़द्दस का अन्दरूनी माहौल कुछ और ही था। वही इतरबून जिस ने क़ीसारिया के रोमी सलार को बुज़दिल कहा था, वो अब बैतुलमुक़द्दस के बड़े पादरी अस्क़फ सफरीनूस के पास शिकस्त खुर्दगी के आलम में बैठा था।

"मोहतरम सालार!"–सफरीनूस ने इसे कहा–"मैं इस के सिवा और क्या कर समकता हूं के ये मुक़द्दस शहर मुसलमानों के हवाले कर दूं। क्या ये बेहतर नहीं होगा के ये काम आप अपने हाथों करें?"

"नहीं मोहतरम बाप!"–इतरबून ने कहा–"मैं ये नहीं कहलवाना चाहता के इतरबून ने मुसलमानों के आगे हथियार डाले थे।"

"क्या आप इस शहर के तक़दुस को भूल गए हैं?–सफरीनूस ने कहा–"ये वो ज़मीन है जिस पर हज़रत ईसा(अ०) को मसलूब किया गया था। क्या आप महसूस नहीं करते के इस सर ज़ीमन की आबरू की ख़ातिर हम अपनी तमाम फौज को कुर्बान कर दें?"

"क्या आप फौज की हालत देख नहीं रहे?"–इतरबून ने कहा–"निस्फ के क़रीब फौज मारी गई या ज़ख़्मी हो गई है। इस फौज का हौसला और जज़्बा पहले ही टूट फूट चुका था। अब मैं बड़ी मुश्किल से इन चन्द एक दस्तों को अजनादीन से बचा कर लाया हूं।"

"मोहतरम सालार!"–अस्क़फ सफरीनूस ने कहा–"इस का मतलब ये है के आप ने मुसलमानों की फौजी बरतरी को तस्लीम कर लिया है। आप रोम की अज़ीम जंगी रिवायात को मुसलमानों के क़दमों तले फैंक रहे हैं। आप कुछ दिन मुक़ाबला कर के देखें। मुसलमान आसमान की मख़लूक़ तो नहीं। वो बे शक बेहतरीन लड़ने वाले है लेकिन आख़िर इन्सान है। वो यक़ीनन थक कर चूर हो चुके है। आप अपना हौसला क़ायम रखें। वो पहले मुहासरा करेगे जिस में कई रोज़ गुज़र जाऐं। इस दौरान आप अपना और अपने दस्तों का हौसला मज़बूत करें।"

मुसलमान बैतुलमुक़द्दस की तरफ तेज़ रफ्तारी से बढ़े चले जा रहे थे और

बैतुलमुक़द्दस में रोमी सालार इतरबून अ..ने आप को लड़ने के लिए तैयार कर रहा था लेकिन वो अपनी फौज की हालत देखता था तो उस का लड़ने का जज़्बा दम तोड़ने लगता था। इस पर अपने अस्क़फ सफरीनूस की बातों का कोई ख़ास असर नहीं हो रहा था। जब अस्क़फ ने देखा इतरबून ज़हनी तौर पर शिकस्त कुबूल कर चुका है तो उस ने इतरबून को जज़्बाती बातों से भड़काना और शर्मसार करना शुरू कर दिया। इस का अतना असर हुआ के इतरबून ने मुक़ाबला करने का इरादा कर लिया।

❁

इस्लामी फौज पहुच गई और बैतुलमुक़द्दस का मुहासरा कर लिया। दीवारों पर तीरअंदाज़ और बरछियां फैंकने वाले कसीर तादाद में खड़े थे। उन का अंदाज़ बता रहा था के वो मुसलमानों को क़िले के क़रीब नहीं आने देंगे। मुसलमान सालार क़िले के इर्द गिर्द घूम फिर कर देख रहे थे के कहीं से दीवर पर चढ़ा जा सकता है। ये कोई ऐसी जगह है जहां से सुरंग लगा कर अंदर जाने का रास्ता बनाया जा सके।

किसी वजह से मुहासरा मुकम्मल नहीं था। मुहासरे में एक जगह शिगाफ था। मुसलमान सालारों ने जब देखा के शहर पनाह महफूज़ है और इस का दिफाअ भी ख़तरनाक है तो उन्होंने मुहासरे को तूल देना मुनासिब समझा इस तरह मुहासरा तूल पकड़ता गया और बहुत दिन गुज़र गए। इस दौरान मुजाहेदीन ने दरवाज़ों पर हल्ले बोले, ज़ख़्मी हुए और जानें भी कुर्बान कीं लेकिन दीवार से आने वाले तीरों और बरछियों ने किसी भी दरवाज़े तक पहुंचने न दिया।

आखिर एक रोज़ बड़े दरवाज़े के ऊपर से एक बड़ी बुलंद आवाज़ सुनाई दी।

"क्या तुम्हारा सालार सुलह के लिए आगे आएगा?" -दीवार के ऊपर से ऐलान हुआ-"हम तुम्हारी शर्तें मालूम करना चाहते हैं।"

अबु उबैदा(र०) आगे गए। ख़ालिद(र०) भी इन के साथ थे। उन्होंने किसी से कहा के वो बुलंद आवाज़ से ये जवाब दे के सुलह की शरायत तय करने के लिए तुम्हारा सालार बाहर आए।

मुसलमानों की तरफ से ये ऐलान हुआ तो थोड़ी ही देर बाद अस्क़फ सफरीनूस चन्द एक मुहाफ़िज़ों के साथ क़िले के बड़े दरवाज़े से बाहर आया। उस के साथ एक बड़ी सलीब भी थी।

"क्या कोई सालार मौजूद नहीं?" -अबु उबैदा(र०) ने अस्क़फ से पूछा।

"सालार मौजूद है" -अस्क़फ ने ज़वाब दिया-"लेकिन बैतुलमुक़द्दस वो शहर है जिस की अहमियत और अहतराम को अस्क़फ ही जान सकता है। अगर मैं न चाहता तो हमारी फौज का आख़री सिपाही भी मारा जाता, शहर की ईंट से ईंट क्यों न बज जाती। यहां से सुलह का पैग़ाम आप के कानों तक न पहुंचता। मैं इस शहर को इन्सानी खून की आलूदगी से पाक रखना चाहता हूं। रोमी सालार मेरे ज़ेरे असर है। मै ने इन्हें सुलह के लिए

तैयार कर लिया है लेकिन आप की शर्तें सुनने से पहले मै अपनी सिर्फ एक शर्त पेश करूंगा। इसे आप कुबूल कर लें तो हम आप की बाकी तमाम शरायत कुबूल कर लेंगे।"

"मोहतरम अस्कफ !"-अबु उबैदा(र०) ने कहा-"ये शहर जितना आप के लिए मुक़द्दस है इतना ही हमारे लिए भी क़ाबिले अहतराम है। ये पैग़म्बरों और नबियों का शहर है। हम आप की इस ख्वाहिश का एहतराम करेंगे के इस ज़मीन के तक़द्दुस को इन्सानी खून से पाक रखा जाए। आप अपनी शर्त बताऐं।"

"सालार मोहतर !"-अस्कफ सफरीनूस ने कहा-"ये जानते हुए के सुलह की शरायत आप के साथ ही तय की जा सकती है मै दरख्वास्त करता हूं कि अपने अमीरूलमोमेनीन को यहां बुलाएं। मै शरायत उनके साथ तय करूंगा मै चाहता हूं कि ये शहर अपने हाथों उन के हवाले करूं। पैग़म्बरों के रिश्ते से ये शहर जितना आप का है इतना ही हमारा है।"

अस्कफ सफरीनूस ने बैतुलमुक़द्दस के मुताल्लिक़ ऐसी जज़्बाती बातें की के मुसलमान सालार मुतास्सिर हुए और उन्होंने अस्कफ की इस शर्त को तस्लीम कर लिया के अमीरूलमोमेनीन उमर(र०) को बुलाया जाए। अस्कफ को बता दिया गया के अमीरूलमोमेनीन सुलह की शरायत तय करने के लिए आऐंगे।

❁

अबु उबैदा(र०), ख़ालिद(र०) और दीगर सालारों के लिए ये एक मसअला बन गया। मदीना बहुत दूर था। सिर्फ एक तरफ का सफर कम व बेश एक महीने का था। रोमियों की तरफ से सुलह की पेशकश का मतलब ये था के रोमी शहर का दिफाअ करने के क़ाबिल नहीं रहे इस लिए वो सुलह करना चाहते है। इस सूरत में मुसलमानों के सालारों के सामने सीधा रास्ता था के वो क़िले पर ताबड़तोड़ हमले करते और क़िला सर कर लेते लेकिन इस्लामी अहकाम के मुताबिक़ उन्होंने दुश्मन को अमन और सुलह की तरफ आने का पूरा मौक़ा दिया। कुर्आन का ये फरमान बड़ा साफ है के दुश्मन झुक जाए तो इस के साथ शरायत तय कर के सुलह कर ली जाए लेकिन अमीरूलमोमेनीन के आने के लिए बहुत ज़्यादा वक़्त दरकार था। सालार इस मसअले पर ग़ौर व खोज़ करने लगे।

"मै एक तजवीज़ पेश करता हूं"-सालार शरजील(र०) ने कहा-"बैतुलमुक़द्दस वालों ने अमीरूलमोमेनीन को कभी नहीं देखा, इन का क़द बुत इब्ने वलीद(र०) जैसा है। शक्ल व सूरत में भी कुछ मशाबहत पाई जाती है। वक़्त बचाने की ख़ातिर हम यूं कर सकते है के तीन चार दिनों बाद इब्ने वलीद को अपने साथ क़िले में लेने जाऐं और कहें के ये है हमारे अमीरूलमोमेनीन उमर(र०) बिन खत्ताब।"

"नहीं !"-अबु उबैदा(र०) ने कहा-"अस्कफ बैतुलमुक़द्दस ने इब्ने वलीद को देख लिया है। बेशक इस के साथ बातें मै करता रहा हूं और उस की तवज्जह मेरी तरफ रही है। हो सकता है उस ने इब्ने वलीद को अच्छी तरह न देखा हो लेकिन शहर के अन्दर ऐसे रोमी

मौजूद होंगे जिन्होंने किसी मैदाने जंग में इब्ने वलीद को अच्छी तरह देखा होगा। उस वक़्त की शर्मसारी को सोचो जब कोई हमें ये कह बैठेगा के ये इन का अमीरूलमोमेनीन नहीं ये तो ख़ालिद(र०) इब्ने वलीद है जो मैदाने जंग में नारा लगा कर आया करता था-'अना ख़ालिद(र०) बिन वलीद'-क्या मेरा ये ख़दशा ग़ल्त है?"

"ऐसा हो सकता है अमीनुलउम्मत !"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"और ये भी हो सकता है के अस्क़फ़ या कोई रोमी सालार कह दे के मदीने से तुम्हारा अमीरूलमोमेनीन इतनी जल्दी किस तरह आ गया है?"

"ये भी तो हो सकता है"-शरजील(र०) बिन हस्ना ने कहा-"के रोमी हमारे आगे ये शर्त रख कर अपने अमीरूलमोमेनीन को बुलाओ, हमारे मुक़ाबले की तैयारी में लग जाएँ ये वक़्त हासिल कर रहे होंगे।"

"हम ये ख़तरा मोल ले सकते है इब्ने हस्ना !"-अबु उबैदा(र०) ने कहा-"लेकिन हम दरोग़ और फरैब का सहारा नहीं ले सकते। हमारी चालबाज़ी का दाग़ इस्लाम को लगेगा।"

दो मोअररिख़ों ने लिखा है शरजील(र०) के मशवरे पर ख़ालिद(र०) को बैतुलमक़द्दस में ले जा कर अस्क़फ़ सफरीनूस को बतया गया था के ये हमारे अमीरूलमोमेनीन उमर(र०) बिन ख़त्ताब है, और सुलह नामा उमर(र०) के बजाए ख़ालिद(र०) ने उमर(र०) बन कर किया था, लेकिन आगे पेश आने वाले वाक़ेआत इस रिवायत की तरदीद करते है। ज़्यादा तर मोअररिख़ो ने लिखा है के उमर(र०) को मदीना से बुलाया गया था और उमर(र०) फौरी तौर पर रवाना हो गए थे।

अबु उबैदा(र०) ने एक तेज़ रफ्तार क़ासिद मदीना को दौड़ा दिया। पैग़ाम में वही बातें लिखीं जो अस्क़फ़े बैतुलमुक़द्दस के साथ हुई थी। पैग़ाम मदीना पहुंचा ही था के वहां मुसर्रतों की लहर दौड़ गई ख़लीफातुलमुस्लेमीन उमर(र०) की खुशी की इन्तेहा न थी। उन्होंने ख़ास तौर पर हुक्म भेजा था के बैतुलमुक़द्दस फतह किया जाए। उमर(र०) तो फतह की खुशख़बरी के मुंतज़िर थे।

ख़लीफातुलमुस्लेमीन उमर(र०) अबु उबैदा(र०) का पैग़ाम मस्जिदे नबव्वी(स०) में ले गए और पढ़ कर सब को सुनाया।

"तुम सब मुझे क्या मशवरा देते हो?"-उमर(र०) ने हाज़रीन से पूछा-"क्या मेरा जाना बेहतर है या न जाना बेहतर है?"

"न जाना बेहतर है अमीरूलमोमेनीन !"-उस्मान(र०) अफ्फान ने कहा-"तुम्हारे न जाने से रोमी समझेंगे के तुम ने इन्हें कोई अहमियत नहीं दी और तुम इतने ताक़तवर हो के सुलह की तुम्हें परवाह ही नहीं। इस का ये असर होगा के रोमी हमारे मुक़ाबले में अपने आप को हक़ीर जानेंगे और जज़िया अदा कर के हमारी इताअत कुबूल कर लेंगे।"

"अल्लाह तुझे अपनी अमान में रखे इब्ने अफ्फान!"-अली(र०) ने उस्मान की

मुख़ाल्फत करते हुए कहा-"अमीरूलमोमेनीन का जाना बेहतर है। क्या तू नही जानता के मुजाहेदीन कब से घरों से निकले हुए है? कब से गर्मी, सर्दी, आंधी, बारिश और तूफानों में खुले आसमान तले दिन गुज़ार रहे है? जानें कुर्बान कर रहे है, ज़ख़्मी हो रहे है अगर अमीरूलमोमेनीन उन के पास चले जाऐंगे तो उन के थके हुए हौसले ताज़ा हो जाऐंगे।"

"बेशक, बेशक!"-चन्द आवाज़ें सुनाई दी।

"अमीरूलमोमेनीन नहीं जाऐंगे तो रोमी क़िले के अन्दर महफूज़ बैठे रहेंगे"-अली(र०) ने कहा-"इन्हें कुमक भी मिल जाएगी और क्या ये नहीं हो सकता के मुजाहेदीन की फतह जो उन के सामने खड़ी है वो उलट कर शिकस्त बन जाए?"

हाज़रीन ने पुरज़ोर तरीक़े से ताईद की।

"मुझे जाना चाहिए?"-अमीरूलमोमेनीन ने कहा-"मै अभी रवाना होना चाहता हूं।"

❁

अमीरूलमोमेनीन उमर(र०) बिन ख़त्ताब एक ऊंटनी पर मदीना से रवाना हुए। उन के साथ अपने नायबीन और मुशीर थे जिन की तादाद और नाम का किसी तारीख़ में ज़िक्र नहीं मिलता। वो एक महीने से कम अर्से में जाबिया पहुंचे। अबु उबैदा(र०) ने उन के इस्तक़बाल का इन्तेज़ाम जाबिया में किया था और घुड़सवारों का एक मुख़्तसिर सा दस्ता अमीरूलमोमेनीन के इस्तक़बाल के लिए आगे रवाना कर दिया था।

अमीरूलमोमेनीन जाबिया पहुंचे तो अबु उबैदा(र०), ख़ालिद(र०) और यज़ीद(र०) को वहां देख कर हैरान हुए।

"क्या तुम ने ऐलिया (बैतुलमुक़द्दस) का मुहासरा उठा लिया है?"-उमर(र०) ने पूछा-"तुम सब यहां क्यों हो?"

"अमीरूलमोमेनीन!"-अबु उबैदा(र०) ने कहा-"मुहासरा उमरो(र०) बिन आस के सुपुर्द कर आए है। मुहासरा मज़बूत है। हम तेरे इस्तक़बाल के लिए यहां मौजूद है।"

ख़ालिद(र०) और यज़ीद(र०) बड़ी क़ीमती और ज़रबफ्त की अबाऐं पहने हुए थे। वो शहज़ादे लग रहे थे। ख़ालिद(र०) कुरैश के बड़े अमीर ख़ानदान के फर्द थे और यज़ीद(र०) क़बीले के सरदार अबु सफयान(र०) के बेटे थे। अपने अमीरूलमोमेनीन के इस्तक़बाल के लिए बने ठने हुए थे।

"खुदा की क़सम, तुम बे शर्म हो जो मुझे मिलने के लिए इस शाहाना लिबास में आए हो"-उमर(र०) ने अपने मख़सूस गुस्से का इज़हार करते हुए कहा-"दो साल पहले तक हमारा क्या हाल था? क्या तुम ने मदीना में कभी पेट भर कर खाना खाया था? लानत है इस माल व दौलत पर जिस ने तुम्हारे दिमाग़ ख़राब कर दिए है। क्या तुम मैदाने जंग में नहीं हो?....खुदा की क़सम तुम लिबास की शान व शौकत में पड़ गए तो थोड़े ही अर्से बाद तुम्हारी जगह कोई और हुकमरान होगा।"

अमीरूलमोमेनीन की अपनी ये हालत थी के मोटे कपड़े का कुर्ता पहन रखा था जो इतना बोसीदा हो चुका था के उस में पैवंद लगे हुए थे।

ख़ालिद(र०) और यज़ीद(र०) ने अपनी अबाऐं खोल कर अमीरूलमोमेनीन को दिखाया। दोनों ने ज़रहें पहन रखी थी और तलवारें साथ थीं।

"अमीरूलमोमेनीन!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"खूबसूरत अबाऐं तो पर्दा है। हम हथियारों के बग़ैर नही। लड़ने के लिए तैयार है।"

अमीरूलमोमेनीन के चेहरे से गुस्से के आसार साफ हो गए। वो मुतमईन नज़र आने लगे।

"हमें बहुत जल्दी बैतुलमुक़द्दस पहुंचना चाहिए"-अमीरूलमोमेनीन ने कहा-"रोमियों को मै ज़्यादा इन्तेज़ार में नहीं रखना चाहता।"

अमीरूलमोमेनीन ने इतने लम्बे सफर की परवाह न की और बैतुलमुक़द्दस को चल पड़े।

❁

अमीरूलमोमेनीन जब बैतुलमुक़द्दस के मुहासरे में पहुंचे तो मुजाहेदीन नें दीवाना वार खुशियां मनाईं। अमीरूलमोमेनीन की सिर्फ आमद ही इन के लिए हौसला अफ्ज़ा थी, अब तो वो और ज़्यादा खुशियां मना सकते थे। ऐलिया (बैतुलमुक़द्दस) की फतह कोई मामूली कामयाबी नहीं थी। अमीरूलमोमेनीन अपनी तमाम तर फौज में घूमे फिरे और हर एक से मुसाफह किया। बैतुलमुक़द्दस इन का अपना शहर था। अब सिर्फ मुहाएदा लिखना बाकी था।

सब से मिलते मिलाते असर की नमाज़ का वक़्त हो गया। अज़ान देनी थी जो कोई भी दे सकता था, अमीरूलमोमेनीन के साथ जो मसाहिब गए थे, इन में मदीना के मशहूर मोअज़्ज़न थे जिन्हें इस्लाम की तारीख़ ता क़यामत फरामोश नहीं करेगी।

"अमीरूलमोमेनीन!"-किसी ने कहा-"बैतुलमुक़द्दस जैसा मुक़द्दस और अहम शहर हमारी झोली में आ पड़ा है। इस एक शहर पर फतह किए हुए सैकड़ों शहर कुर्बान किए जा सकते है। ऐसी अज़ीम कामयाबी की खुशी में आज बिलाल(र०) अज़ान दें तो कितना अच्छा हो, हम बैतुलमुक़द्दस में हबलाल(र०) की अज़ान के बाद दाख़िल होंगे।"

ख़लीफातुलमुस्लेमीन उमर(र०) ने बिलाल(र०) की तरफ देखा, बिलाल(र०) ख़ामोश खड़े थे। उन के चेहरे पर उदासी का तास्सुर और ज़्यादा गहरा हो गया। बिलाल(र०) हबशी नस्ल से थे। इब्तेदा ही में इस्लाम कबूल कर लिया था। उन की आवाज़ बुलंद, सुरीली और पुरसोज़ थी, उन्होंने पहली दफा अज़ान दी तो मुसलमानों पर तो असर होना ही था, दूसरे लोग भी मसहूर हो कर रह गए थे। ये बिलाल(र०) की आवाज़ का जादू था। अहले कुरैश ने इस आवाज़ को बन्द करने के लिए बिलाल(र०) पर इतना तशद्दुद किया था के वो बहुत देर तक बेहोश पड़े रहते थे। जब उठते थे तो पहली आवाज़

जो उन के मुंह से निकलती थी, वो अल्लाह का नाम होता था।

इन की अज़ानें दश्त व जबल और सहराओं पर वजद तारी करती रहीं, लेकिन रसूल करीम(स०) के विसाल के साथ ही ये आवाज़ ख़ामोश हो गई। बिलाल(र०) ने अज़ान देनी छोड़ दी। इन के चेहरे पर हर वक्त उदासी और अफसुर्दगी की सियाह घटाऐं छाई रहने लगी। इतनी मुद्दत गुज़र जाने के बाद आज पहली बार बैतुलमुक़द्दस के दरवाज़े पर अमीरूलमोमेनीन उमर(र०) के मुसाहिबों ने इस ख़्वाहिश का इज़हार किया के बैतुलमुक़द्दस की फतह के इस मौके पर बिलाल(र०) अज़ान दें। अमीरूलमोमेनीन ने इन की तरफ देखा तो वो ख़ामोश रहे।

"बिलाल(र०)!"-अमीरूलमोमेनीन ने कहा- "मै जानता हूं तुम क्या सोच रहे हो लेकिन ये मौक़ा ऐसा है के मैं खुद चाहता हूं अज़ान तुम ही दो। बैतुलमुक़द्दस की फतह के मौक़ा पर कौन ऐसा होगा जो रसूल अल्लाह(स०) को याद न करना चाहता होगा।"

बिलाल(र०) कुछ देर ख़ामोश रहे। सब को तवक्क़ो यही थी के बिलाल(र०) अज़ान नही देगे लेकिन थोड़ी ही देर बाद उन के चेहरे का तास्सुर बदल गया। उन्होंने इधर उधर देखा। उन्हें एक जगह ज़रा ऊंची नज़र आई। वो तेज़ तेज़ क़दम उठाते इस जगह जा खड़े हुए, कानों पर हाथ रखे और बरसों बाद बैतुलमुक़द्दस की फिज़ा उस पुरसोज़ आवाज़ से मरतअश होने लगी जो विसाले रसूल(स०) के साथ ही ख़ामोश हो गई थी। अमीरूलमोमेनीन और इन के मुसाहिबीन और तमाम मुजाहेदीन पर सन्नाटा तारी हो गया। जब बिलाल(र०) की ज़बान से ये अल्फाज़ निकले- "मोहम्मदुरसलअल्लाह-तो कई एक अफराद की धाड़ें निकल गईं। इस से पहले तो सब के आंसू जारी थे लेकिन अपने रसूल(र०) का नाम सुन कर सब के जज़्बात के बंद टूट गए। किसी को अपने ऊपर ज़ब्त न रहा। अज़ान के बाद अमीरूलमोमेनीन उमर(र०) बिन ख़त्ताब की इमामत में सब ने नमाज़-ए-असर अदा की।

❁

अगले रोज़ अमीरूलमोमेनीन का एक ऐल्ची बैतुलमुक़द्दस के अन्दर ये पैग़ाम ले कर गया के अमीरूलमोमेनीन सुलह का मुहाएदा तय करने के लिए मदीना से आ गए है अस्क़फ सफरीनूस इसी पैग़ाम का मुंतज़िर था। वो अपने साथ चन्द आदमियों को ले कर बाहर आ गया। मुहाएदो की शरायत तय हुईं और अस्क़फ ने शहर की चाबी अमीरूलमोमेनीन उमर(र०) बिन ख़त्ताब के हवाले कर दी। मुहाएदा जो तहरीर हुआ, इस के अल्फाज़ कुछ इस तरह थे:

"बिस्मिल्लाहीर्रहमानिर्रहीम। इस मुहाएदे के तहत जो ख़लीफातुलमुस्लेमीन उमर(र०) बिन ख़त्ताब और अस्क़फ बैतुलमुक़द्दस सफरीनूस के दरमियान तय पाया, ख़लीफातुलमुस्लेमीन ने ऐलिया (बैतुलमुक़द्दस) के बाशिंदों को इस मुहाएदे की रू से अमन व अमान दिया। ये अमान ऐलिया के लोगों की जान व माल के लिए हे, इन के गिर्जों

और इन की सलीब के लिए है, हर उम्र, हर मज़हब के फर्द के लिए है, तंदुरूस्त के लिए, मरीज़ के लिए भी है। किसी गिर्जे या किसी दूसरे मज़हब की इबादतगाह को फातेहीन की रिहाईश के लिए या किसी और मक़सद के लिए इस्तेमाल नहीं किया जाएगा न इन्हें या इन के अहाते के अन्दर किसी चीज़ को नुक़सान पहुंचाया जाएगा न इन्हें मिस्मार किया जाएगा.......

"गिर्जों और दीगर इबादत गाहों में से न माल उठाया जाएगा न कोई और चीज़। ग़ैर मुस्लिमों पर मुसलमानों की तरफ से मज़हब के मामले में किसी क़िस्म का जब्र नहीं किया जाएगा, न इन के साथ नागवार सलूक किया जाएगा। अल्बत्ता ऐलिया में यहूदी नहीं रह सकेंगे। ये फर्ज़ ऐलिया के बाशिंदों पर आयद होता है के वो यहूदियों, रोमियों और जराईम पेशा अफराद को शहर से निकाल दें। ऐलिया के तमाम शहरी दूसरे शहरों के लोगों की तरह जज़िया अदा करेंगे। शहर से हमेशा के लिए चले जाने वालों की जान व माल का तहफ्फुज़ इन की अगली पनाह गाह तक दिया जाएगा। ऊपर जिन मुल्कों का ज़िक्र आया है, इन्हें छोड़ कर बाक़ी तमाम दूसरे मुल्कों के जो लोग इस शहर में रहना चाहते है रह सकते है। इन्हें भी जज़िया अदा करना होगा। अगर इस शहर का कोई बाशिंदा शहर से जाने वाले रोमियों के साथ जाना चाहे तो वो खुद या अपने ख़ानदान के साथ जा सकता है। वो अपना जिस क़द्र माल व अमवाल अपने साथ ले जा सकता है ले जाए। इन की खेतियों में जो फसल है, इस की हिफाज़त मुसलमानों के ख़लीफा की ज़िम्मेदारी है। फसल के मालिक वही हैं जिन्होंने बोई थी। शर्त ये है के वो जज़िया अदा करें और फसल काटने के लिए आ जाएं।"

इस मुहाएदे पर अमीरूलमोमेनीन उमर(र०) ने अपनी मोहर लगाई। अस्क़फ सफरीनूस ने अपने दस्तख़त किए और गवाहों के तौर पर ख़ालिद(र०) बिन वलीद, उमरो(र०) बिन आस़, अब्दुर्रहमान(र०) बिन ओफ और मआविया(र०) बिन अबी सफयान ने दस्तख़त किए।

इस के फौरन बाद अमीरूलमोमेनीन ने अबु उबैदा(र०) और ख़ालिद(र०) को हुक्म दिया के वो अपने दस्तों के साथ शाम के शुमाली इलाक़ों में चले जाएं जहां कुछ जगहों पर रोमी अभी तक क़िला बंद थे। जासूसों ने इत्तेला दी थी के शहंशाह हरकुल शाम की सरहद से तो निकल गया है लेकिन उस की जो फौज अभी शाम में मौजूद है, इस के लिए हरकुल कुमक तैयार कर रहा है।

अमीरूलमोमेनीन उमर(र०) बिन ख़त्ताब, उमरो(र०) बिन आस और शरजील(र०) हस्ना को साथ ले कर बैतुलमुक़द्दस में दाख़िल हुए। अस्क़फ सफरीनूस ने इन का इस्तक़बाल किया। एक रोज़ पहले सुलह नामे पर दस्तख़त हो चुके थे और सफरीनूस ने सुलह नामा शहर के बाशिंदों को पढ़ कर सुनाया। लोगों पर इस से पहले ख़ौफ व हिरास तारी था। उन्होंने पहले फातेहीन का जुल्म व तशद्दुद देखा था। रोमी जब बैतुलमुक़द्दस में

आए थे तो शहंशाह हरकुल के हुक्म से इस शहर के बाशिंदों परक़यामत टूट पड़ी थी। लोगों को सरकारी मज़हब कुबूल करने का हुक्म दिया गया था। इतनी आसानी से अपना मज़हब कौन तबदील करता है। जिन लोगों ने हरकुल का मज़हब कुबूल न किया इन के नाक कान काट दिए गए और उन के घर मस्मार कर दिए गए थे। इन्हें फौज में जबरी तरीर पर भर्ती कर लिया जाता था। इस के अलावा वो महकूमों और मज़लूमों जैसी ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे।

मुसलमानों से तो वो और ज्यादा खौफज़दा थे। इन्हें बताया गया था के मुसलमान जिस शहर को फतह करते है वहां के रहने वालों को ज़बरदस्ती मुसलमान बनाते है, घर लूट लेते और खूबसूरत औरतों को अपने साथ ले जाते हैं। बैतुलमुक़द्दस के बाशिंदों ने रोमी फौज के सिपाहियों की ज़बानी सुना था के मुसलमान बड़े ज़ालिम हैं। ये सिपाही दरअसल मैदाने जंग की बातें सुनाते थे और शहरी ये समझ कर खौफज़दा थे के मुसलमान वहशी और खूंख्वार है। वो नहीं जानते थे के मुसलमान सिर्फ मैदाने-ए-जंग में खूंख्वार है

बैतुलमुक़द्दस के शहरियों ने जब मुहाएदे की तहरीर सुनी फिर ये देखा के मुसलमान फौज ने किसी शहरी की तरफ देखा तक नहीं तो वो खुशियां मनाने लगे।

अमीरूलमोमेनीन ने अल्क़मा बिन मुजज़्ज़ि को बैतुलमुक़दस का हाकिम या अमीर मक़र्रर किया।

अस्क़फ सफरीनूस ने अमीरूलमोमेनीन उमर(र०) बिन ख़त्ताब को शहर की सैर कराई, इन्हें क़दीम तहज़ीबों और क़ौमों के आसार दिखाए, यहूदियों और इसाईयों की इबादत गाहें दिखाईं। बैतुलमुक़द्दस में ऐसे बे शुमार आसार थे। इन में महराब-ए-दाऊद भी है और सख़रा-ए-याक़ूब भी। ये वो पत्थर है जिस के मुताल्लिक़ रियावत है के रसूले अकरम(स०) इस पर खड़े हुए और मेराज को गए थे।

शहर में घूमते फिरते अमीरूलमोमेनीन कलियाए क़यामत के सामने से गुज़रे। ज़ुहर की नमाज़ का वक़्त हो गया। उन्होंने इधर उधर देखा के नमाज़ की कोई जगह मिल जाए।

"ख़लीफातुलमुस्लेमीन!"-अस्क़फ सफरीनूस ने इल्तेजा की- "मेरे लिए ये बात बाअसे फख़्र होगी के आप कलीसा के अन्दर नमाज़ पढ़ें।

"नहीं"-ख़लीफा उमर(र०) ने कहा- "मै इस कलीसा का अहतराम करता हूं लेकिन मै इस में नमाज़ नहीं पढूंगा के ये सुलह के मुहाएदे की ख़िलाफ वरज़ी हागी।। अगर मै ने आज आप के कहने पर यहां नमाज़ पढ़ ली तो मेरे बाद मुसलमान इस को रस्म बना लेंगे और कलीसा में नमाज़ पढ़ने को अपना हक़ बना लेंगे।"

कलीसा-ए-क़यामतत वो जगह है जहां हज़रत ईसा(अ०) को मसलूब किया गया था। यहां सये कलीसा तामीन किया गया था। इस से आगे कलीसा-ए-कुस्तुनतीन था। अस्क़फ ने इस के दरवाज़े में मुस्ल्ला बिछा दिया लेकिन अमीरूलमोमेनीन ने वहां भी

नमाज़ न पढ़ी। उन्होंने नमाज़ मस्जिद-ए-अक्सा में पढ़ी।

"मोहतरम अस्क़फ !"-अमीरूलमोमेनीन उमर(र०) बिन ख़त्ताब ने सफरीनूस से पूछा-"रोमी आप का साथ क्यों छोड़ गए है? इन का सालार इतरबून कहां गया? सुना था वो हरकुल का हम पल्ला है !"

"भाग गया"-सफरीनूस ने जवाब दिया-"भाग गया....कोई शक नही के वो हरकुल का हम पल्ला था। उस ने आप को शिकस्त देने के बड़े अच्छे मंसूबे बनाए थे। उस ने क़ीसारिया के सालार को आप की फौज के मुक़ाबले के लिए तैयार किया था लेकिन आप के सालारों की चाल ने इतरबून के मंसूबे तबाह कर दिए। इस से पहले वो आप की फौज के मुक़ाबले में नहीं आया था......

"वो देख रहा था के उस की फौज में लड़ने का जज़्बा ख़त्म हो गया था। यरमूक और दूसरी जगहों से भागे हुए बहुत से सिपाही यहां आ गए थे। उन्होंने यहां की फौज को ऐसी बातें सुनाई जिन से सब का जज़्बा और हौसला बुरी तरह मुतास्सिर हुआ। इतरबून ने अपनी फौज को तैयार कर लिया था। उसे जब इत्तेला मिली के मुसलामानों ने क़ीसारिया को मुहासरे में ले लिया है तो वो अपनी फौज को साथ ले कर क़ीसारिया का मुहासरा तोड़ने के लिए निकला लेकिन आप के किसी सालार ने उसे रास्ते में रोक लिया। इस ने पहली बार मुसलमानों से टक्कर ली और अपनी बहुत सी फौज मरवा कर बुरी हालत में वापस आया........

"वो जो अपने हारे हुए सालारों को बुज़दिल कहता था और जिस ने बैतुलमुक़द्दस के दस्तों को लड़ने के लिए तैयार किया वो खुद बुज़दिल बन गया और उस का अपना हौसला जवाब दे गया। उस ने यहां से ख़ज़ाना निकालना शुरू कर दिया और समुंद्र के रास्ते कुस्तुनतनिया ले गया। ज़्यादा तर फौज भी उस के साथ चली गई। ये फौज बराए नाम थी जो मैं ने क़िले की दीवार पर खड़ी कर दी थी। मैं ने आप के साथ मुहाएदा करने की शर्त इस लिए पेश की थी के जो फैसला आप कर सकते है वो सालार नहीं कर सकते। मैं इस शहर को और इस के बाशिंदों के जान व माल को बचाना चाहता था।

अस्क़फ सफरीनूस ने उमर(र०) बिन ख़त्ताब को ये न बताया के इतरबून और सफरीनूस ने मिल कर बैतुलमुक़द्दस से न सिर्फ ख़ज़ाना निकाला था बल्कि गिर्जों के सोने और चांदी के बैश क़ीमत ज़फ भी निकलवा दिए थे। इन में सलीबे आज़म भी थी। सफरीनूस ने अमीरूलमोमेनीन को मदीना से इस लिए बुलाया था के वो ख़ज़ाना, ज़रूफ, रोमी फौज और इस का माल व अमवाल निकलवाने के लिए वक़्त हासिल करना चाहता था। जितने वक़्त में अमीरूलमोमेनीन वहां पहुंचे थे वो वहां से निकल गया था जो सफरीनूस और इतरबून निकालना चाहते थे।

अप्रैल 637ई० (रबी-उल-अव्वल 16 हिज्री) के दिन थे जब खलीफातुलमुस्लेमीन उमर(र०) बिन खत्ताब बैतुलमुकद्दस में दस दिन कयाम कर के रूखसत हुए। रूखसत होने से पहले उन्होंने तफसील से जाएज़ा लिया था के रोमी कहां कहां मौजूद है। मजमूई तौर पर रोमी शिकस्त खा चुके थे। उन का शहंशाह हरकुल शाम से रूखसत हो चुका था। रोमी फौज के नामी गिरामी सालार मारे जा चुके थे। कुछ अहम मुकामात थे जिन पर अभी रोमियों का कब्ज़ा था। वहां से रोमियों को निकालना ज़रूरी था।

ऐसे मुकामात में एक का नाम कीसारिया था जो बेहरा-ए-रोम की बंदरगाह थी। यहां से रोमियों को निकालना बहुत ज़रूरी था क्योंके रोमियों का बेहरी बेड़ा अभी बिल्कुल सही हालत में मौजूद था और ये बेड़ा बड़ा ताकतवर था। इसे रोमी मुसलमानों के खिलाफ इस्तेमाल नही कर सकते थे क्योंके मुसलमानों ने समुंद्री लड़ाई नहीं लड़नी थी। अल्बत्ता बेड़ा कुमक लाने के लिए इस्तेमाल होता था। कुमक उतारने के लिए कीसारिया की बंदरगाह इस्तेमाल होती थी।

अमीरूलमोमेनीन के हुक्म के मुताबिक कीसारिया से पहले बैतुलमुकद्दस को मुहासरे में लिया गया था। बैतुलमुकद्दस ले लिया गया तो अमीरूलमोमेनीन उमरो(र०) ने यज़ीद(र०) बिन सफयान को हुक्म दिया के वो कीसारिया को मुहासरे में ले लें।

"इब्ने अबु सफयान!"-उमरो(र०) ने उन्हें कहा- "मत सोचना के तू इस किले को फौरन सर कर लेगा। बहुत मज़बूत किला बंद जगह है। रोमी ये जगह इतनी आसानी से नहीं देंगे। हल्ले बोल बोल कर अपनी ताकत ज़ाय न करते रहना। कीसारिया में रोमियों की तादाद ज्यादा है और वहां रसद की भी कमी नहीं। दुश्मन यही ख्वाहिश करेगा के तू उस के किले की दीवारों से टकराता रहे और इतना कमज़ोर हो जाए के तू मुहासरा उठा ले या तुझे कमज़ोर पा कर दुश्मन बाहर आ जाए और तेरे दस्तों पर ऐसा हमला कर दे के तू पस्पा भी न हो सके।"

"अमीरूलमोमेनीन!"-यज़ीद(र०) ने कहा- "किला जल्दी सर हो या देर से, मै जानता हूं उधर से कुमक आएगी। वो मै नहीं आने दूंगा।

"तुझ पर अल्लाह की रहमत हो अबु सफयान!"-उमरो(र०) ने कहा- "रोमियों को कुमक मिल गई तो हमारे लिए बहुत बड़ी मुश्किल पैदा हो जाएगी। मुहासरे को तूल दो और कुमक को रोके रखो।

उमर(र०) बिन खत्ताब खलीफा थे, अमीरूलमोमेनीन थे लेकिन उन का ये दौरा

बादशाहों जैसा और आज कल के सरबरहान-ए-मुमलेकत जैसा नहीं था के गए, किसी को शाबास दी, किसी को इनाम व इकराम से नवाज़ा और आ गए। उन्होंने तमाम तर इलाक़े के अहवाल व कवाईफ़ मालूम किए। उन्हें जंगी नुक्ता निगाह से देखा। अपनी फौज और दुश्मन के लश्कर की कैफियत का जाएज़ा लिया और उस के मुताबिक़ अहकाम सादिर किए। इन के मुताबिक़ सालार अपने अपने मुक़ामात पर चले गए।

शाम के शुमाली इलाक़ों में रोमी कहीं कहीं क़िला बंद थे। इन्हें उम्मीद थी के हरकुल जहां कही भी है कुमक ज़रूर भेजगा। मुसलमान इस कोशिश में थे के रोमियों की कुमक न आ सके। इस कोशिश की एक कड़ी ये थी के यज़ीद(र०) अपने दस्तों को साथ ले कर क़ीसारिया रवाना हो गए और इस शहर को जो बंदरगाह भी था, मुहासरे में ले लिया।

सालार उमरो(र०) बिन आस और शरजील(र०) बिन हस्ना थ्फ़िस्तीन और उरदन को रवाना हो गए। उन के ज़िम्मे ये काम था के जिन इलाक़ों से उन्होंने रोमियों को बेदख़ल किया था उन इलाक़ों पर क़ब्ज़ा कर के शहरी इन्तेज़ामिया और महसूलात के निज़ाम को बहाल और रवां किया जाए और इन जगहों के दिफाअ को भी मुस्तेहकम किया जाए। रोमियों की तरफ से जवाबी हमले का इम्कान मौजूद था।

सिपह सालार अबु उबैदा(र०) दमिश्क़ को अपना मरकज़ बनाने के लिए चले गए। इन के साथ मुजाहेदीन की जो फौज थी इस की नफरी सतरह हज़ार थी।

❋

क़ीसारिया एक क़िला बंद मुक़ाम था जिस में रोमी फौज मौजूद थी। अबु उबैदा(र०) इस क़िले को मुहासरे में ले कर वहां से रोमियों को निकालने जा रहे थे। ये एक मज़बूत क़िला था जिस में रोमियों की तादाद ख़ासी ज़्यादा थी। इब्ने(र०) वलीद मुजाहेदीन की फौज के हराविल में थे। उन के साथ चार हज़ार घुड़सवारों का मख़सूस रिसाला था जो घूम फिर कर लड़ने के लिए तैयार किया गया था।

क़ीसारिया में एक मशहूर रोमी सलार मन्यास था। उस ने देख भाल के लिए दूर दूर तक अपने आदमी फैला रखे थे। इन में से एक आदमी सरपट घोड़ा दौड़ाता आया और सीधा मन्यास के पास गया। उस ने मन्यास को बताया के मुसलमानों का एक लश्कर आ रहा है जिस के हराविल में घुड़सवार है। उस ने तादाद तीन और चार हज़ार के दरमियान बताई और ये भी बताया के हराविल कितनी दूर है। मन्यास ने बड़ी उजलत से अपनी फौज को तैयार किया।

"सल्तनते रोमा की अज़मत के पास्बानों!"-उस ने अपनी फौज के हौसले में जान डालने के लिए जोशीले अंदाज़ में कहा-"वो बुज़दिल थे जिन्होंने अपने ऊपर अरब के बद्दुओं का खौफ तारी कर लिया था। तुम में इसाई अरब भी है। अगर मुसलमान इतने बहादुर है तो तुम भी इतने ही बहादुर हो। अरब के मुसलमान तुम में से है। तुम भी इसी रेत

की पैदावार हो....और रोमियो! उस दिन को याद करो जब तुम फातेह की हैसियत से इस सर ज़मीन पर आए थे। वो तुम्हारे बाप और दादा थे। तसव्वुर में लाओ के उस वक़्त उन के सर कितने ऊंचे और सीने कितने चौड़े थे, और आज सोचो उन की रूहों को कितनी शर्मसारी हो रही होगी...

"मत सोचो के शहंशाह हरकुल भाग गया है। रोम की अज़मत को, सलीबे आज़म को और बैतुलमुक़द्दस की आन को अपने सामने रखो, फिर सामने रखो अपने सालार इतरबून की बे ग़ैरती को जिस ने ईसा(अ०) के शहर यसू मसीह के मस्कन को तुम्हारे मज़हब और तुम्हारे अक़ीदों के दुश्मन के हवाले कर दिया....तसव्वुर में लाओ अपनी बेटियो और अपनी औरतों को जो अब मुसलमानों के बच्चे पैदा करेंगी... अपने आप को देखें। तुम हार गए तो बाक़ी उम्र के लिए मुसलमानों के गुलाम बन जाटांगे। आज तुम किस शान से, कैसे जाह व जलाल से घोड़ों पर सवार होते हो। तुम ने अगर हथियार डाल दिए तो तुम घोड़े की सवारी को भी तरसोगे। तुम अस्तबल के मुलाज़िम होगे और घोड़ों की ग़िलाज़त साफ किया करोगे।"

"मत खून गरमा हमारा ऐ सालार!"–एक सवार ने बड़ी ही बुलंद आवाज़ में कहा–"क्या तू समझता है के हम लड़ने से मुंह मोड़ रहे है? क्या तुझे हमारी जुर्रत और ग़ैरत पर शक है?"

"ऐ तनोमंद घोड़े के बहादुर सवार!"–मन्यास ने कहा–"मै शक क्यों न करूं! हमारा कौन सा सालार है जो मैदान से भागा या मारा नही गया? इतरबून जो हरकुल का हम पल्ला था, कितने दावे करता था मुसलमानों को कुचल देने के? अब वो कहां है? एक दिन भी नही लड़ा और ऐलिया (बैतुलमुक़द्दस) से बग़ैर लड़े भाग गया....क्या अस्क़फे आज़म सफरीनूस को तुम अपना मज़हबी पैशवा मानोगे जिस ने क़िले से बाहर जा कर मुसलमानों के ख़लीफा का इस्तक़बाल किया और उसे कहा के कलीसाए क़यामत में नमाज़ पढ़ो? इस ने ये भी न सोचा के वो अपनी इबादत गाह अपने मज़हब के दुश्मन के हवाले कर रहा है? तुम ने साबित करना है के तुम इतने बुज़दिल और बे ग़ैरत नही। अगर तुम साबित क़दम रहे तो शायद कुमक आ जाए मगर मुझे कुमक आने की कोई उम्मीद नहीं न मै कुमक की ज़रूरत महसूस करता हूं।"

"हम लड़ेंगे सालारे मोहतरम!"–पहले एक फिर कई आवाज़ें बुलंद हुई–"हमें बुज़दिल और बे ग़ैरत न कह सालार! आज़मा के देख.....बातों में वक़्त ज़ाए न कर.... हम एक दिन में मुहासरा तोड़ देंगे।"

"हम मुहासरे तक नोबत नहीं आने देंगे"–सालार मन्यास ने कहा–"हम दुश्मन को क़िले से दूर रास्ते में रोकेंगे। मै तुम से आगे होऊंगा।"

मोअररिख़ों ने लिखा है के रोमी सालार मन्यास जर्रत मंद सालार था जिस की जारहाना क़यादत मशहूर थी और इस की दूसरी शौहरत ये थी के अपनी फौज में

मिलनसार और हर दिलअज़ीज़ था। वो सिपाहियो से मोहब्बत और शफक्कत से पेश आता था और सिपाही उस से मोहब्बत करते थे। उसे इतनी जोशीली और जज़्बाती तक़रीर करने की ज़रूरत ही नहीं थी।

मोअररिख़ों ने ये भी लिखा है के उस का सामना मुसलमानों से नहीं हुआ। वो सालार था। जब उसे ख़बर मिलती थी के फलां मैदान में रोमियों को शिकस्त हुई है तो वो शिकस्त की वजूहात पर गौर करता था। उसे ख़ालिद(र०) के मुताल्लिक़ बताया गया के उस की जंगी चालों को कोई क़ब्ल अज़वक़्त समझ ही नहीं सकता और वो गैर मामूली तौर पर दिलैर आदमी है।

"वो कोई जिन भूत तो नहीं" -मन्यास ने कहा था- "उस से शिकस्त खाने वाले इसी तरह झूट बोला करते है। मै हरकुल को ख़ालिद(र०) बिन वलीद की लाश दिखाऊंगा।

☸

रोमी सालार मन्यास की क़यादत में क़न्सरीन में मुक़ीम रोमी फौज रूके हुए सैलाब की मानिंद बाहर निकली। इस का अंदाज़ जोशीला और जारहाना था। इस की रफ्तार तेज़ थी।

उधर ख़ालिद(र०) के चार हज़ार सवार फातेहाना शान से चले आ रहे थे। वो आम कूच की तरतीब में थे। उन्होंने क़न्सरीन के क़रीब जा कर रूकना और बाक़ी फौज का इन्तेज़ार करना था। क़न्सरीन से चन्द मील दूर हाज़िर एक मुक़ाम था जो रास्ते में आता था। ख़ालिद(र०) का दस्ता जब हाज़िर के क़रीब पहुंचा तो देख भाल के लिए आगे गए हुए मुजाहेदीन में से एक वापस आया और ख़ालिद(र०) को इत्तेला दी के रोमियों का एक कसीर तादाद लश्कर आ रहा है।

"खुदा की क़सम !" -ख़ालिद(र०) ने लल्कार कर कहा- "मै अमीनुलउम्मत का इन्तेज़ार नहीं करूंगा।"

बाक़ी लश्कर अमीनुलउम्मत अबु उबैदा(र०) के साथ पीछे आ रहा था। ख़ालिद(र०) को इन्तेज़ार करना चाहिए था क्योंके रोमी लश्कर की तादाद ज़्यादा बताई गई थी लेकिन ख़ालिद(र०) की सरकश तबीयत इन्तेज़ार पर आमादा न हुई। उन्होंने अपने दस्ते को निहायत सरअत से जंगी तरतीब में कर लिया। इस सवार दस्ते को पलक झपकते एक तरतीब से दूसरी तरतीब में हो जाने की ट्रैनिंग दी गई थी।

दोनों फौजें हाज़िर के मुक़ाम पर आमने सामने आईं। रोमी सालार मन्यास को तवक़्क़ो थी के मुसलमान जंग से पहले के रस्म व रिवाज का मुज़ाहेरा करेंगे। मसलन इन का सालार ज़ाती मुक़ाबले के लिए रोमी सालार को लल्कारेगा। ऐसे चन्द एक मुक़ाबले होंगे, फिर दस्तों को तरतीब में किया जाएगा लेकिन मुसलमान सवार रूके बगैर ऐसी तरतीब में हो गए जिसे मन्यास समझ ही न सका। इतने में उस पर हमला हो चुका था।

मन्यास अपनी फौज का हौसला बढ़ाने के लिए आगे था। उस के गिर्द मुहाफिज़ों का हिसार था जो खा़सा मज़बूत था। चन्द एक मुसलमान सवार इस हिसार पर हमलाआवर हुए। मुहाफिज़ों ने बड़ा ही सख़्त मुक़ाबला किया। रोमियों की तादाद ज्यादा थी, इस के अलावा इन्हें अपने सालार मन्यास के साथ दिली मोहब्बत थी इस लिए वो जम कर लड़े और बड़ी अच्छी तरतीब में ताबड़ तोड़ हमले करते रहे लेकिन उन का हर हमला यूं बेकार जाता जैसा हवा में घूंसा मारा हो। इस की वजह ये थी के उन का मुक़ाबला ऐसे सवारों के साथ था जो जम कर नही लड़ते थे। इन का अंदाज़ कुछ और था।

हमले रोमी कर रहे थे और नुक़सान भीं इन्हीं का हो रहा था। खा़लिद(र०) खुद भी सिपाहियों की तरह लड़ रहे थे । इन्हें अपने सवारों को चालें बताने की ज़रूरत पेश नही आती थी। ऐसी ज़रूरत मन्यास को थी। वो देख रहा था के उस की फौज की तरतीब बिखर रही है। उस ने किसी ऐसे मुक़ाम पर पहुंचने की कोशिश की जहां से वो अपनी फौज को देख कर कोई चाल चल सकता मगर मुसलमान सवारों ने उस के मुहाफिज़ों का हिसार तोड़ कर उसे क़त्ल कर दिया।

मैदाने जंग में यूं होता था के सालार मारा जाता और परचम गिर पड़ता तो फौज में बददिली फैल जाती और पस्पाई शुरू हो जाती। इसी लिए सिपह सलार की मौत पर पर्दा डाल दिया जाता था लेकिन मन्यास मारा गया तो मुहाफिज़ों ने ऐलान कर दिया के सालार मन्यास मारा गया है।

मुसलमान खुश हुए के रोमियों में भगदड़ मच जाएगी लेकिन रोमी ग़ज़बनाक हो गए। उन्होंने "इन्तेक़ाम, इन्तेक़ाम....मन्यास के खून का इन्तेक़ाम लो" के नारे लगाने शुरू कर दिए और उन के हमलों में शिद्दत पैदा हो गई। वो क़हर बन गए। एक बार तो उन्होंने मुसलमानों सवारों के पांव उखाड़ दिए लेकिन ये ग़ज़बनाक अदांज़ उन के अपने लिए नुक़सान दह साबित हुआ। उन्हें सही तौर तरीक़े से लड़ाने वाला मारा गया था। वो अब गुस्से में आए हुए हजुम की सूरत इख़्तियार कर गए थे।

खालिद(र०) ने रोमियों को इस कैफियत में देखा तो अपने सवारों को नई हिदायात दीं। इस के बाद रोमियों का जैसे क़त्ले आम शुरू हो गया हो। इस के बावजूद वो पस्पा नहीं हो रहे थे। इस का नतीजा ये हुआ के कोई एक भी रोमी मैदान से न भागा और कोई एक भी रोमी ज़िन्दा न रहा। ज़्यादा तर मोअररिख़ मुताफिक़ा तौर पर कहते है के मन्यास की फौज का एक भी सिपाही ज़िन्दा नहीं रहा था और भागा भी कोई नहीं। मुसलमानों का नुक़सान बहुत ही कम था।

❁

मआरका ख़त्म हुआ तो हाज़िर के लोग जो सब के सब इसाई थे, बाहर निकल आए और खा़लिद(र०) से मिले।

"आप के ख़िलाफ जो लड़े है वो अपने अंजाम को पहुंच गए है" –एक इसाई बुज़ुर्ग

ने शहरियो की नुमाईंदगी करते हुए कहा-"हम भी इसाई है लेकिन हम आप से लड़ने का इरादा न पहले रखते थे न अब ऐसा कोई इरादा है। हम आप की इताअत कुबूल करते है"

"जिस ने हम से लड़े बग़ैर इताअत कुबूल कर ली वो हमारी पनाह में आ गया"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"न तुम पर जज़िया वाजिब है न हम तुम्हें इस्लाम कुबूल कर लेने को कहते है। तुम्हारी इबादत गाहें महफूज़ रहेंगी।"

अभी अबु उबैदा(र०) के दस्ते नही पहुंचे थे। इन्हें मुहासरे के लिए जाना था इस लिए उन्हें कोई जल्दी नही थी। उन्होंने एक पड़ाव भी किया था। ख़ालिद(र०) ने वहां इन्तेज़ार न किया क्योके इन्हें क़ुन्सरीन को मुहासरे में लेना था। ये जगह वहां से ज़्यादा दूर नही थी।

क़ुन्सरीन के अन्दर रोमियों की कुछ फौज मौजूद थी। ख़ालिद(र०) ने मुहासरा किया तो रोमियों ने शहर की दीवार पर आ कर तीरअंदाज़ी शुरू कर दी। ख़ालिद(र०) को अंदाज़ा था के अदाज़ फौज इतनी ज़्यादा नहीं होगी। अगर होती भी तो ख़ालिद(र०) हिम्मत न हारते। उन्होंने अपने एक ऐल्ची को ये पैग़ाम दे कर क़िले के दरवाज़े पर भेजा।

"एक रोमियों! तुम अगर आसमान पर छाए हुए बादलों में होते तो भी हमारा अल्लाह हमें तुम तक या तुम्हें हम तक पहुंचा देता। हम तुम्हें मौक़ा देते है के बहुत बुरे अंजाम तक पहुंचने से पहले क़िले के दरवाज़े खोल दो। अगर दरवाज़े हम ने खोले तो फिर सुलह की शर्तें तुम्हारी कमर तोड़ देंगी। तुम्हारा सालार हाज़िर के बाहर मरा पड़ा है और जो फौज वो अपने साथ ले गया था उस का कोई एक भी सिपाही ज़िन्दा नहीं। हम ने तुम्हें बहुत बुरे अंजाम से आगाह कर दिया है।"

इस पैग़ाम का ख़ातिर ख्वाह असर हुआ। क़िले के दरवाज़े खुल गए। मुसलमान फातेह की हैसियत से शहर में दाख़िल हुए। जज़िया की रक़म और दीगर शरायत तय हुई जिन में हस्बे मामूल एक शर्त ये भी थी के क़ुन्सरीन शहर और इस के शहरियों की इज़्ज़त और जान व माल की हिफाज़त मुसलमानों की ज़िम्मेदारी है और जो शहरी शहर छोड़ कर जाना चाहता हो वो अपने ख़ानदान के अफराद और अपने माल व अमवाल को अपने साथ ले जा सकता है।

जब ख़ालिद(र०) क़ुन्सरीन को पूरी तरह ले चुके थे उस वक़्त अबु उबैदा(र०) पहुंचे।

"अबु सुलेमान!"-अबु उबैदा(र०) ने ख़ालिद(र०) को गले लगाते हुए कहा-"तुझ पर अल्लाह की रहमत हो। मै हाज़िर के बाहर रोमियों की लाशें देख आया हूं।"

अबु उबैदा(र०) ने उसी रोज़ मदीना ख़लीफातुलमुस्लेमीन को पैग़ाम भेजा जिस में उन्होंने ख़ालिद(र०) की इतनी बड़ी कामयाबी की तफसीलात लिखीं। ये कामयाबी इस लिहाज़ से बहुत बड़ी थी के सल्तनते रोम के ताबूत में एक और कील गाड़ दी गई थी।

तक़रीबन तमाम मोअररिख़ों ने लिखा है के अमीरूलमोमेनीन उमर(र०) बिन ख़त्ताब ने ये पैग़ाम पढ़ कर कहा था-"अल्लाह ने ख़ालिद(र०) को सिपह गिरी और सालारी पैदाइश के साथ ही अता फरमाई थी। अबु बकर(र०) पर अल्लाह की रहमत हो। वो मुझ से बेहतर मर्दुम शनास थे।"

❁

क़न्सरीन से आगे हल्ब एक और मशहूर शहर था जहां रोमियों की ख़ासी बड़ी तादाद क़िला बंद थी। रोमी सालार जो वहां का क़िलादार था उस का नाम योक़न्ना था। ये भी तजुर्बाकार सालार था जिस ने बे शुमार लड़ाईयां लड़ीं और हर लड़ाई में फतह हासिल की थी। अबु उबैदा(र०) और ख़ालिद(र०) हल्ब की तरफ पेशक़दमी कर रहे थे। रोमी सालार योक़न्ना को इत्तेला मिली के मुसलमानों का लश्कर आ रहा है।

रोमी सालारों ने कुछ अर्से से ये सिलसिला शुरू कर दिया था के वो जब सुनते थे के मुसलमानों का लश्कर आ रहा है, वो अपने दस्तों को इक्ळा कर के जोशीली तक़रीर करते और क़िले से बाहर आ कर लड़ते थे। ये एक दिलैराना इक़दाम था। वो शायद ये ज़ाहिर करना चाहते थे के वो मुसलमानों से नहीं डरते। योक़न्ना ने भी ऐसे ही किया। वो हल्ब से अपने दस्ते निकाल कर क़िले से छः मील दूर आ गया।

मुसलमानों की फौज के हराविल में अब भी ख़ालिद(र०) अपने सवारों के साथ थे। योक़न्ना ने अपने साथी सालार मन्यास की तरह मुसलमानों के हराविल से टक्कर लेने का तरीक़ा इख़्तियार किया। योक़न्ना को यक़ीन था के वो मुसलमानों को क़िले से दूर ही दूर ख़त्म कर देगा। उसे भी मन्यास की तरह तवक़्क़ो होगी के आमने सामने आ कर मुसलमान रूक जाऐंगे और जंगी तरतीब में आ कर लड़ेंगे।

अब भी ख़ालिद(र०) ने वैसे ही किया के इत्तेला मिलते ही के आगे रोमी लश्कर आ रहा है, अपने दस्ते को जंगी तरतीब में कर लिय। रोमियों को देख कर ख़ालिद(र०) ने अपने दस्तों को रोका नहीं। इन्हें तीन हिस्सों में तक़सीम कर के पहलुओं से हमला कर दिया। सवार इस तरह घूम फिर कर लड़े के रोमी दरमियान में इक्ळे हो गए। ख़ालिद(र०) ने सामने से भी हमला कर दिया।

ख़ालिद(र०) का ये जारहाना अंदाज़ योक़न्ना के लिए ग़ैर मुतावक़्क़े था। उस ने जो सोचा था उस के उलट हुआ और उस के दस्तों के क़दम उखड़ गए। इस मआरके में भी रोमियों की तादाद मुसलमानों की निस्बत ज़्यादा थी।

योक़न्ना के दस्ते हौसला हार बैठे। उस ने पस्पाई इख़्तियार की और क़िले में चला गया। ये क़िला पहाड़ी के ऊपर था इस लिए इसे सर करना बहुत मुश्किल था। मुसलमानों ने क़िले का मुहासरा कर लिया। योक़न्ना ने मुताद्दिद बार अपने दस्तों को बाहर निकाल कर मुसलमानों पर हमले कराए लेकिन जानी नुक़सान के सिवा उसे कुछ भी हासिल न हुआ।

योक़न्ना को उम्मीद थी के शहंशाह हरकुल कुमक और रसद भेजेगा। उसे शायद

मालूम न था के तमाम तर शाम में मुसलमान फैल गए है। और अब उसे कही से भी कुमक नहीं मिल सकती। उस ने दस्तों को बाहर निकाल कर हमलों का सिलसिला रोक दिया और क़िले में दुबक कर बैठ गया। मुसलमान किसी न किसी तरह क़िले में दाख़िल होने की कोशिश करते रहे लेकिन कामयाब न हो सके।

चार महीने मुहासरे में गुज़र गए। क़िले के अन्दर रोमी ऐसे परेशान और ख़ौफज़दा हुए के योक़न्ना ने एक रोज़ अपना ऐल्ची बाहर इस पैग़ाम के साथ भेजा के वो हथियार डालने पर तैयार है। योक़न्ना को उम्मीद नहीं थी के ख़ालिद(र०) उस की शर्त को तस्लीम कर लेंगे। उस की शर्त ये थी के उसे और उस की फौज को क़िले से चले जाने दिया जाए।

उस के ऐल्ची ने जब वापस जा कर उसे बताया के मुसलमानों ने उस की शर्त मान ली है तो वो हैरान रह गया।

"नही!"-उस ने कहा-"ऐसा हो नही सकता के फातेह उस फौज को बख़्श दे जिस ने उस के आगे हथियार डाले हों.....मै जानता हूं क्या होगा। जब निहत्थे सिपाही बाहर निकलेंगे तो मुसलमान इन्हें क़त्ल कर देंगे।"

आख़िर वो वक़्त आया जब योक़न्ना के दस्ते बग़ैर हथियारों के बाहर निकले और मुसलमानों की फौज के दरमियान से गुज़र गए। योक़न्ना को सब से पहले निकलना चाहिए था लेकिन वो आख़िर में भी बाहर न निकला। ख़ालिद(र०) क़िले में गए तो योक़न्ना ने उन का इस्तक़बाल किया।

"ऐ रोमी सालार!"-ख़ालिद(र०) ने का-"तू जा सकता है।"

"इब्ने वलीद!"-योक़न्ना ने कहा-"मै नहीं जाऊंगा। अगर मै तुम्हारे साथ रहना चाहूं तो मुझे क्या शर्त पूरी करनी पड़ेगी?"

"इस्लाम क़ुबूल कर ले!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"फिर तेरी हैसियत यही रहेगी जो अब है।"

"बेशक यही मेरी ख्वाहिश थी"-योक़न्ना ने कहा।

उस ने ख़ालिद(र०) के हाथ पर इस्लाम क़ुबूल कर लिया और अगले ही मआरके में उस ने साबित कर दिया के वो इस्लाम का वफादार सालार है।

❁

अंताकिया शाम का एक बड़ा शहर था। इस की अहमीयत ये थी के शहंशाह हरकुल ने इसे अपना हैडक्वाटर बनाया था। यहीं से वो अहकाम, कुमक और रसद वग़ैरा अपनी फौज को भिजवाता था। हरकुल अब वहां नहीं था। वो शाम की सरहद से जा चुका था। और ग़ालिबन कुसतुतुनिया में था लेकिन अंताकिया में रोमी फौज और हैडक्वाटर मौजूद था। वहां से रोमियों को निकालना लाज़मी था। इस से शाम की फतह मुकम्मल हो जाती थी।

अबु उबैदा(र०) ने अंताकिया की तरफ पेशक़दमी का हुक्म दे दिया। हस्बे मामूल

ख़ालिद(र०) अपने घुड़सवार दस्ते के साथ हराविल में जा रहे थे।

अंताकिया चूंके रोमियों का आख़री बड़ा क़िला और अहम मुक़ाम रह गया था और वो रोमी फौज का मरकज़ भी था इस लिए तवक्क़ो थे के वहां यरमूक जैसा खूंरेज़ मआरका होगा। अबु उबैदा(र०) और ख़ालिद(र०) ने अपने मुजाहेदीन को आगह कर दिया था के आगे क्या ख़तरा है। सब से बड़ा ख़तरा तो ये था के मुजाहेदीन की इस फौज को मदीना से निकले चार साल हो चुके थे और वो मुसलसल लड़ रहे थे। जहां तक जिस्मों का ताल्लुक़ था, वो ख़त्म हो चुके थे। अब तो ये रूह की कुव्वत थी जो इन्हें इन्सानी सतह से बहुत ऊपर ले गई थी। उन्होंने अपने आप को अल्लाह के सुपुर्द कर दिया था।

इन्हें आराम नही मिलता था। दिन तलवारों की झंकार, तीरों के जन्नाटों, बरछियों के वार रोकने और वार करने में गुज़र जाता और रातें अपने ज़ख़्मी साथियों की कर्बनाक आवाज़ों में गुज़रती थीं। वो बातिल की एक चट्टान को तोड़ते तो एक और चट्टान सामने आन खड़ी होती थी।

वो आख़िर गोश्त पोश्त के इन्सान थे और ये गोश्त पोस्त थकन से टूट फूट गया था। दुश्मन इन की इस जिस्मानी कैफियत से आगाह था और यही एक ख़तरा था जो सालार महसूस कर रहे थे। अंताकिया का दिफाअ बहुत मज़बूत था। जासूसों की लाई हुई इत्तेलाऐं सालारों को परेशान कर रही थीं मगर रूकना और इन्तेज़ार करना भी ख़तरनाक था। रोमियों की कुमक आने से पहले अंताकिया पर क़ब्ज़ा करना ज़रूरी था।

मुजाहेदीन को कुर्आन की ये आयत बार बार याद दिलाई जा रही थी के लड़ो उस वक़्त तक जब तक कुफ्र का फितना ख़त्म नहीं हो जाता। हुकमरानी सिर्फ अल्लाह और अल्लाह के दीन की रह जाए।

अंताकिया के रास्ते में दो तीन छोटे छोटे क़िले थे। इन्हें सर करते हुए मुजाहेदीन अंताकिया से तेरह चौदह मील फासले पर पहुंचे तो एक जासूस आया।

"अबु सुलेमान!"-जासूस ने ख़ालिद(र०) से कहा-"थोड़ी ही आगे एक दरिया है जिस पर एक मज़बूत पुल है। इस पुल से इस तरफ रोमियों का एक लश्कर तैयार खड़ा है। रास्ता बदल लिया जाए या जंग की तैयारी कर ली जाए।"

"तुझ पर अल्लाह की रहमत हो"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"अल्लाह को मंज़ूर हुआ तो ये लश्कर भी हमारा रास्ता नहीं रोक सकेगा....तादाद कितनी होगी?"

"हमारे पूरे लश्कर से दुगनी तो ज़रूर होगी"-उस ने बताया।

"पीछे जाओ"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"सिपह सालार से कहो के बहुत जल्दी लश्कर को आगे ले आंए।"

❁

अबु उबैदा(र०) जब ख़ालिद(र०) से आ मिले तो पूरे लश्कर ने जंगी तरतीब में पेशक़दमी की। रोमियों का लश्कर ज़्यादा दूर नहीं था। ये मुक़ाम जहां रोमी लश्कर

मुसलमानों का रास्ता रोके खाड़ा था, अंताकिया से बारह मील दूर था। रोमी सालार ने ये दानिश मंदी की थी के दरिया को अपनी पुश्त पर रखा था। इसी मुक़ाम पर बड़ा मज़बूत पुल था। ये भी रोमियों के अक़ब में था।

ख़ालिद(र०) ने हस्बे मामूल तोअक्कुफ़ न किया। आमने सामने आते ही अपने रिसाले को ख़ास अंदाज़ से हमला करने का हुक्म दे दिया। इस से उन का मक़सद ये था के रोमियों की तरतीब बिखर जाए या वो सुकड़ जाऐं। इस खुसूसी रिसाले के सवार "ज़र्ब लगाओ और इधर उधर हो जाओ" के उसूल पर हमले करते थे।

जब दुश्मन की जमीयत बिखरने लगी तो अबु उबैदा(र०) ने दुश्मन के एक पहलू पर हमला कर दिया। पीछे दरिया था। ख़ालिद(र०) की कोशिश ये थी के दुश्मन को इतना पीछे धकेल दिया जाए के दरिया इस के लिए मुसीबत बन जाए या उसे इतना आगे लाया जाए के उस के अक़ब में जाने के लिए घुड़सवारों को जगह मिल जाए।

अबु उबैदा(र०) और ख़ालिद(र०) के हमले इसी नोईयत के थे जिन से ये मक़सद हासिल किया जा सकता था लेकिन रोमी लश्कर का सालार भी तर्जुबाकार और जंगी क़यादत और चालों का माहिर था। उस ने अपने दस्तों को तरतीब में मुनज़्ज़म रखा और मुसलमानों पर हमले किए भी और मुसलमानों के हमले रोके भी। इस तरह जंग ज़्यादा से ज़्यादा खूंरेज़ होती चली गई।

ख़ालिद(र०) ने रोमी सालार को देख लिया और अपने चन्द एक सवारों से कहा के वो रोमियों के क़ल्ब में घुसने की कोशिश करें। कई एक सवार इस कोशिश में जान पर खेल गए। आखिर कुछ सवार रोमी सालार तक जा पहुंचे और उस के मुहाफिज़ों का हिसार तोड़ कर उसे हलाक करने में कामयाब हो गए।

रोमियों का परचम गिरते ही उन में अफरातफरी मच गई और वो पस्पा होने लगे। कुछ दरिया में कूद गए बाक़ी पुल के ज़रिये दरिया के पार गए। जितनी देर में मुसलमान उन तक पहुंचते थे वो अंताकिया के क़िले के अन्दर जा चुके थे।

अबु उबैदा(र०) और ख़ालिद(र०) ने जा कर क़िले का मुहासरा कर लिया। रोमियों का लड़ने का जज़्बा मैदान में ही ख़त्म हो गया था। क़िले में उन्होंने पनाह ली थी। ख़ालिद(र०) ने कई बार ऐलान करवाया के क़िले के दरवाज़े खोल दिए जाऐं वरना किसी की जान बख़्शी नही होगी और कोई शर्त कुबूल नही की जाएगी।

रोमियो का लश्कर जो अब पहले जैसा ताक़त वर नहीं रह गया था। बग़ैर सालार के था। अन्दर से एक ऐल्ची बाहर आया जिस ने हथियार डाल दिए और ये शर्त पेश की के लश्कर को आज़ादी से चले जाने दिया जाए। मुसलमान सालारों ने ये शर्त मान ली। रोमियों की तमाम तर फौज जो क़िले के अन्दर थी क़िले से निकल गई और मुसलमान अंताकिया में दाख़िल हो गए।

ये 30 अक्तूबर 637ई० (शव्वाल 16 हिज्री) का दिन था।

रोमियों का आख़री और सब से बड़ा शहर भी मुसलमानों के हाथ आ गय। इस के बाद छोटी छोटी दो चार जगहें रह गई थीं जहां रोमी मौजूद थे लेकिन वो लड़ने के लिए मौजूद नहीं थे बल्कि इन्हें भाग निकलने का कोई रास्ता नहीं मिल रहा था। 637ई० के आख़री महीने तक शाम पर मुसलमानों का क़ब्ज़ा मुकम्मल हो गया और वहां रोमियों का अमल दख़्ल बिल्कुल ही ख़त्म हो गया।

❀

कुसतुतुनिया में हरकुल इसाईयों के एक वफद के सामने अपने महल में बैठा था। ये वही शहंशाह हरकुल था जिस की आंखों की हल्की सी जुंबिश से कई इन्सानों को जल्लाद के हवाले कर दिया जाता था। यही हरकुल था जिस ने इब्तेदा में मुसलमानों को हमेशा के लिए ख़त्म कर देने का हुक्म दिया था। यही हरकुल था जिस ने हैरत का इज़्हार किया था के अरब के इन बद्दुओं को ये जुर्रत क्योंकर हुई के उन्होंने सल्तनत रोम की सरहद के अन्दर क़दम रखा है। अब थोड़े ही अर्से बाद वहीं हरकुल अपनी आधी सल्नत मुसलमानों के हवाले कर के शिकस्त खुर्दगी के आलम में अपने दारूलहुकूमत में बैठा था जैसे कभी न हारने वाला जुआरी बाज़ी हार गया हो और उस के पास फूटी कोड़ी भी न रही हो।

"तुम लोग मुझे किस तरह यक़ीन दिला सकते हो के मुसलमानों को इन इलाक़ों से बाहर निकाल दोगे जो उन्होंने फतह कर लिए है?"–हरकुल इन इसाईसों से कह रहा था–"अगर तुम में इतनी जान होती तो आज मैं तुम्हारे दरमियान इर तरह न बैठा हुआ होता।"

"शहंशाहे रोम!"–इसाईयों के वफद के लीडर ने कहा–"अब ये सोचना बेकार है के शिकस्त का ज़िम्मेदार कौन है। हम जो मसला ले कर आए है वो एक बार फिर सुन लें. ..आप जिस ख़ित्ते को मुसलमानों के हवाले कर आए है वो न आप का था न मुसलमानों का है। वो हमारा ख़ित्ता है। शिकस्त आप की फौज को हुई लेकिन एक ग़ैर क़ौम के गुलाम हम बन गए। मुसलमानों ने जज़िया हम से लिया है ये हमारी बेइज़्ज़ती है। हमारी मजबूरी ये है के हम मुसलमानों के ख़िलाफ नहीं लड़ सकते। हम लड़ेंगे। हम अपनी जानें क़ुर्बान करने को तैयार है लेकिन हमें आप की मदद की ज़रूरत है। अगर आप कुमक भेजने का वादा करें तो हम मुसलमानों के ख़िलाफ जंग का ऐलान कर देते है।"

हरकुल इन इसाईयों की जो शाम के शुमाली इलाक़े के रहने वाले थे, ये बातें इस तरह सुन रहा था, जैसे ये लोग उस से भीक मांगने आए है और उसे इन लोगों के इस मसले के साथ कोई दिलचस्पी न हो। हक़ीक़त ये थी के हरकुल चाहता ही यही था के शाम के इसाईयों को मुसलमानों के ख़िलाफ ऐसी जंग के लिए तैयार करे जो बहुत ही तवील हो ताके मुसलमान शाम के इलाक़े में ही उल्झे रहें और रोम की सल्तनत में मज़ीद आगे न बढ़ें। ये जंग शब खून क़िस्म की हो सकती थी।

बेशतर मोअररिख़ों ने लिखा है के हरकुल ने दरपर्दा शाम के क़ाबिले ऐतमाद पादरियो को उक्साया था के वो इसाईयों को मुसलमानों के ख़िलाफ इस्तेमाल करें। तारीख़ों में ये भी लिखा है के इसाई तैयार हो गए थे। इसाईयों का ये वफद जो उस के पास बैठा था, इस से बे ख़बर था के जो तजवीज़ वो पेश करने आए है उस पर हरकुल पहले ही काम कर रहा है। इस वफद पर वो ये ज़ाहिर करना चाहता था के उन्हें मदद दे कर वो उन पर बहुत बड़ा अहसान कर रहा है।

आख़िर हरकुल ने उन्हें कहा वो वापस जा कर अपने पादरियों से मिलें और पादरी इन्हें बताऐंगे के इस तजवीज़ पर किसी तरह अमलंदरआमद होगा। इस ने उन्हें ये भी बताया के इसाई जब मुसलमानों पर जगह जगह हमले शुरू करेंगे तो हरकुल इन्हें कुमक की सूरत में अपनी फौज दे देगा।

❁

मुसलमानों ने अपने जासूस तमाम इलाके में फैला रखे थे जिन में ऐसे जासूस भी थे जो इसाई बन कर इसाईयों के साथ रहते और पादरियों के मुरीद बने हुए थे। इन में से बाज़ शाम से निकल कर जुनूबी तुर्की तक चले गए थे। ये इलाक़ा सल्तनते रोम का हिस्सा था।

एक रोज़ एक जासूस ने शुमाली शाम के जासूसों से रिर्पोटें ले कर अबु उबैदा(र०) को आ कर बताया के इसाई वसी पैमाने पर जंगी तैयारियां कर रहे है और हरकुल ने इन्हें कुमक देने का वादा किया है। इस के बाद दो जासूस और आए जिन्होंने इसी क़िस्म की रिर्पोटें दीं इन से बड़ी ख़ौफनाक सूरत सामने आई। इसाईयों का इजतेमा बहुत ज़्यादा था। अबु उबैदा(र०) और ख़ालिद(र०) को अहसास था के इसाईयों के ख़िलाफ टक्कर बहुत खतरनाक होगी। इस की वजह ये थी के रोमी जिन इलाक़ों से भागे थे वो उन के नहीं थे। वो तो भाग कर अपनी बाक़ी सल्तनत में जा पनाह गज़ीं हुए थे। ये ख़ित्ते दरअसल इसाईयों के थे। मुसलमानों की इताअत कुबूल कर के उन्हें कोई मआशी, मआशरती या मज़हबी पाबंदी नहीं थी लेकिन वो मुसलमानों की गुलामी कुबूल करने पर आमादा नहीं थे। लड़ाई की सूरत में अगर उन्हें शिकस्त होती तो उन के लिए कोई पनाह गाह नही थी इस लिए उन्होंने जंग की तैयारियां ऐसे पैमाने पर की थीं जो उन की फतह का बाअस बन सकती थीं।

जासूसों से पूरी रिपोर्ट ली गई के लड़ने वाले इसाईयों की तादाद कितनी होगी। उन के हथियार कैसे होंगे और उन की क़यादत कैसी हागी। ख्याल किया जाता था के क़यादत रोमी सालार करेंगे क्योंके इसाईयों के पास क़यादत के लिए कोई सालार नही था। अगर कोई था भी तो वो मुसलमान सालारों की टक्कर का नही हो सकता था। फिर भी सूरते हाल जो पैदा हो गई थी वो मुसलमानों के लिए बहुत बड़े ख़तरे का बाअस बन सकती थी।

"अबु सुलेमान!"-अबु उबैदा(र०) ने ख़ालिद(र०) से मशवरे लेने के लिए कहा-"शाम में हमारी हकूमत नोज़ाइदा है। हमारे अभी क़दम जमे नहीं। अगर हम ने काई ख़तरा मोल लिया और हालात हमारे ख़िलाफ हो गए तो हम पस्पा हो कर मदीना तक

ज़िन्दा भी नहीं पहुंच सकेंगे।

"अमीनुलउम्मत!"–ख़ालिद(र०) ने कहा– "सवाल हमारे ज़िन्दा रहने या न रहने का नहीं। ये सोच के इस्लाम का ज़वाल शुरू हो जाएगा। तमाम फौज शाम में है।"

"क्या ये बेहतर नहीं होगा के हम अमीरूलमोमेनीन को इत्तेला दे दें?"–अबु उबैदा(र०) ने पूछा–"और मदीना से कुमक भी मांग लें। हमारी तादाद रह ही क्या गई है।"

"अमीनुलउम्मत!"–ख़ालिद(र०) ने कहा–"मदीना तक पैग़ाम जाते और वहां से कुमक आते बहुत वक्त लगेगा। क्या ये बेहतर नहीं होगा के हम हर जगह से फौज एक मुक़ाम पर इक्ठी कर लें? इन जगहों पर हम ज़रूरत के मुताबिक़ फौज रहने दें। खुदा की क़सम, मैं इसाईयों को खुले मैदान में ला कर लड़ाना चाहता हूं।"

ये बातें हमस में हो रही थीं। वहां दूसरे सालार भी थे। उन सब की राय ये थी के हमस के अन्दर रहें और इसाईयों को आने दें के वो मुहासरा कर लें। अबु उबैदा(र०) को अकसरियत की राय के मुताबिक़ फैसला करना पड़ा। उन्होंने अपने उन दस्तों को भी हमस में बुला लिया जो इर्द गिर्द के इलाके में थे। इस के साथ ही अबु उबैदा(र०) ने एक तेज़ रफ्तार क़ासिद के हाथ खलीफातुर्रसूल(स०) उमर(र०) बिन खत्ताब को पैग़ाम भेज दिया जिस में उन्होंने तफसील से लिखवाया के इसाईयों ने हरकुल की पुश्त पनाही में क्या सूरते हाल पैदा कर दी है। अबु उबैदा(र०) ने ये भी लिखवाया के वो हमस में क़िला बन्द हो कर लड़ेंगे।

638ई० का साल शुरू हो चुका था।

❀

डेढ़ दो महीने और गुज़र गए तो एक रोज़ इसाईयों का जमे गफीर हमस आन पहुंचा और शहर का मुहासरा कर लिया। मुसलमान इस के लिए तैयार थे उन्होंने बड़े लम्बे अर्से की खूराक और तीरों वग़ैरा का ज़खीरा शहर में जमा कर लिया था। इसाईयों ने मुसलमानों को क़िला बंद देखा तो वो हैरान हुए के खुले मैदान में लड़ने वाली फौज क़िला बन्द हो कर लड़ने पर आ गई है। इसे इसाईयों ने मुसलमानों की कमज़ोरी समझा। उन्होंने मुसलमानों को लल्कारना शुरू कर दिया।

"अहले इस्लाम! अब तुम्हारा मुक़ाबला अरबों से है।"

"क़िले के दरवाज़े खोल दो वरना तुम में से कोई भी ज़िन्दा नहीं रहेगा।"

"अब हम जज़िया लेंगे।"

"इस्लाम का सूरज डूब गया है।"

"बाहर आओ और हम से रहम मांगो।"

और ऐसे बे शुमार तंज़िया नारे थे जो इसाई लगाते रहे। मुसलमानों की तरफ से खामोशी थी। अबु उबैदा(र०), ख़ालिद(र०) और दूसरे सालारों ने तय कर रखा था के वो

बाहर निकल निकल कर इसाईयों पर हमले करेंगे।

हमलों की नोबत ही न आई। मुहासरे का चौथा या पांचवां दिन था। इसाईयों में हड़बोंग सी बपा हो गई। उन पर कोई मुसीबत नाज़िल हो गई थी या हो रही थी। मुसलमानों जो दीवार पर खड़े थे, वो हैरत से देख रहे थे के उन्हें हुआ क्या है।

दूर उफक़ से गर्द उठने लगी जो फैलती और ऊपर उठती गई। ये किसी क़ाफले की उड़ाई हुई गर्द नहीं थी, ये किसी फौज की गर्द मालूम होती थी। अगर ये फौज थी तो इसाईयों की ही हो सकती थी या ये रोमियों की फौज हो सकती थी।

इसाईयों में जो अफरातफरी बपा हुई थी वो ज़्यादा हो गई और वो लड़ने की तरतीब में आने लगे। गर्द अभी दूर थी। इसाईयों ने तो मुहासरा उठा ही दिया और वो बड़ी तेज़ी से एक सिम्त को रवाना हो गए। मुसलमानों ने क़िले की दीवारों पर नारे लगाने शुरू कर दिए।

गर्द में से एक फौज आहिस्ता आहिस्ता नमूदार होने लगी। ये मुसलमानों की फौज थी। इसाईयों को इस की आमद की इत्तेला पहले ही मिल गई थी। मोअररिख़ों ने लिखा है के इसाई गै़र तरबियत याफ्ता थे। वो वहां रूकते तो खुद मुहासरे में आ जाते। हमस के दरवाज़े खुल जाते और अन्दर से भी मुसलमानों की फौज बाहर आ जाती। इसाईयों का अंजाम बहुत बुरा होता। उन्होंने ये ख़तरा भी देख लिया था के वो अपनी बस्तियों में कोई फौज नहीं छोड़ आए थे। लड़ाई की सूरत में मुसलमानों ने इन्हें शिकस्त दे कर उन बस्तियों पर टूट पड़ना था।

मुसलमानों की ये फौज जो हमस में महसूर फौज की मदद को आई थी, ये चार हज़ार सवार थे जो क़ाक़आ बिन उमरो के ज़ेरे कमान थे। ये सवार इस तरह आए थे के ख़लीफतूर्रसूल(स०) उमरो(र०) को अबु उबैदा(र०) का पैग़ाम मिला था तो उन्होंने कहा था के ये इसाई तरबियत याफ्ता फौज नहीं बल्कि ये गै़र मुनज़्ज़म हुजूम है जिसे अबु उबैदा(र०) और ख़ालिद(र०) संभाल लेंगे लेकिन कुमक ज़रूरी है। चुनांचे उन्होंने साद(र०) बिन अबु वक़्क़ास को जो ईराक़ में मुक़ीम मुसलमानों की फौज के सिपह सालार थे, हुक्म भेजा के तीन सालारों को इसाईयों के इलाक़े जज़िरा की तरफ भेज दें।

इन सालारों में सुहैल बिन ऐदी, अब्दुल्ला बिन अत्बा और अयाज़ बिन गनम शामिल थे। उमरो(र०) ने हुक्म नामे में ये भी लिखा था के सालार क़ाक़आ बिन उमरो को चार हज़ार सवार दे कर अबु उबैदा(र०) की मदद के लिए हमस भेज दिया जाए।

इस तरह क़ाक़आ महसूर मुसलमानों की मदद को पहुंच गए। इन्हें मालूम नहीं था के हमस इसाईयों के मुहासरे में है। इन्हें देख कर ही इसाई मुहासरा उठा कर चले गए।

अमीरूलमोमेनीन ने ठीक कहा था के ये इसाई कोई मुनज़्ज़म फौज नहीं। ये इसाईयों ने खुद ही साबित कर दिया और इस के साथ ही इसाईयों ने ये भी साबित कर दिया के मुसलमानों को इसाईयों पर ऐतमाद नहीं करना चाहिए और मुसलमान अर्ज़े शाम की फतह

को उस वक़्त तक मुकम्मल न समझें जब तक के वो अन्दुरूनी ख़तरों का भी खत्म न कर लें। इसाईयों के इस जंगी इक़्दाम से वाज़े हो गया था के हम मज़हब होने की वजह से या मुसलमान न होने की वजह से उन की दिलचस्पियां और वफादारियां रोमियों के साथ है।

ख़लीफा के हुक्म के मुताबिक़ जज़ीरे के तमाम इलाक़े को मुसलमानों ने अपनी अमलदारी में ले लिया। इसाईयों के ख़िलाफ कोई तादीबी कारर्वाई न की गई। अगर कहीं इसाईयों ने मुसल्लेह मज़ाहमत की तो उन के ख़िलाफ जंगी कारर्वाई की गई। शुमाली सरहद को तख़रीब कारी से बचाने के लिए अबु उबैदा(र०) ने सरहद पार जा कर हमले शुरू कर दिए। इस से शाम में अमल व अमान हो गया।

❁

उमर(र०) बिन ख़त्ताब ने अदल व इन्साफ में शौहरत पाई है। "अदले फारूक़ी" ज़र्बुल मिस्ल के तौर पर इस्तेमाल होता है। उन के अदल की लाठी से सब यकसां तौर पर हांके जाते थे। उन की लाठी गैरत और इमारत, रंग और नस्ल, आक़ा और गुलाम को नही पहचानती थी। उस दौर में ख़ालिद(र०) की टक्कर का कौन सा ऐसा सालार था जिसने इस्लाम को अर्ज़े शाम उरदन और थ्फिस्तीन तक फैला दिया हो। बैतुलमुक़द्दस का फातेह जो कोई भी था, इस में किसी शक व शुबह की गंजाईश नहीं के ख़ालिद(र०) न होते तो बैतुलमुक़द्दस की फतह इतनी आसान भी न होती। उमरो(र०) ज़ाती तौर पर जानते थे के क़ैसर व किसरा के खिलाफ आज़ फतूहात इस लिए मुमकिन हो सकी थीं के ख़ालिद(र०) ने गैर मामूली तौर पर दिलैराना फैसले किए थे।

अबु उबैदा(र०) ठण्डे मिज़ाज के सालार थे। अगर ख़ालिद(र०) इन के साथ न होते तो रोमियों के ख़िलाफ इतनी तेज़ी से इतनी ज़्यादा कामयाबी हासिल न की जा सकती।

खुद उमरो(र०) ख़ालिद(र०) के मोतरफ थे लेकिन उमरो(र०) को जब ख़ालिद(र०) के ख़िलाफ एक ऐसी बात का पता चला जो इस्लाम की रूह के मनाफ़ी थी और जिसे उमरो(र०) नज़र अंदाज़ भी कर सकते थे, तो उन्होंने फौरी कारर्वाई का हुक्म दे दिया। उमरो(र०) ने सोचा तक नहीं के ख़ालिद(र०) की जो क़द्र व क़ीमत है वो इतनी ज़्यादा है के ये छोटा सा इल्ज़ाम हज़्म भी किया जा सकता है।

बाज़ मोअररिख़ों ने लिखा है के उमर(र०) बिन ख़त्ताब ने मसनदे खिलाफत पर बैठते ही तमाम दस्तों में एक एक दो दो मुख़्बिर रख दिए थे जो सालारों और दीगर ओदेदारों की ज़ाती सरगर्मियों पर नज़र रखते थे। जब शाम में अमन व अमान हो गया और ख़ालिद(र०) को क़न्सरीन का हाकिम बना दिया गया, उमरो(र०) को मदीना में इत्तेला मिली के ख़ालिद(र०) ने एक शायर को जिस का नाम अशअस बिन क़ैस था दस हज़ार दरहम सिर्फ इस लिए ईनाम के तौर दिए है के उस ने क़न्सरीन जा कर ख़ालिद(र०) की फतूहात को खिराजे तहसीन पेश करने के लिए एक क़सीदा पढ़ा था।

अशअस बिन क़ैस बनू कुंदा का सरदार था। उस ने शायरी और मिदह सराई को

पेशा बना लिया था। वो और उस जैसे चन्द और शायर सालारों और हाकिमों वगैरा के हां जाते, क़सीदा पढ़ते और ताहफे तहाईफ और ईनाम व इकराम वसूल करते थे। इसी ज़िम्न में अशअस क़न्सरीन ख़ालिद(र०) के हां जा पहुंचा।

ख़ालिद(र०) अमीर बाप के बेटे थे। उन्होंने गुरबत देखी ही नहीं थी। शहज़ादों की तरह पले बढ़े थे। ये तो उन की अज़मत थी के सही मानों में शहज़ादा होते हुए उन्होंने आधी उम्र मैदन-ए-जंग में पेशक़मियों में, ज़मीन पर सोते और घोड़े की पीठ पर गुज़ार दी थी। वो तबअन खुश ज़ौक़ थे। फय्याज़ थे। हर हसीन चीज़ के दिलदादा थे।

उन्होंने इस शायर को जो ईनाम दिया था वो अपनी जेब से दिया था। उस वक़्त सालार इस से ज़्यादा अमीर होते थे जिस की वजह ये थी के दुश्मन के जिस सालार को वो ज़ाती मुबाज़रत में शिकस्त देते थे उस के तमाम तर माल व दौलत के खुद हक़दार होते थे। इस के अलावा उन्हें माले गनीमत में से हिस्सा मिलता था। ख़ालिद(र०) ने दुश्मन के बे शुमार सालारों को ज़ाती मुक़ाबलों में क़त्ल किया था। उन के माल व अमवाल ख़ालिद(र०) के हिस्से में आए थे। तारीख़ गवाह है के ख़ालिद(र०) ने इतना माल व दौलत अपने पास रखा ही नहीं था। मोअररिख़ों ने लिखा है के शाम की जंग ख़त्म हुई तो ख़ालिद(र०) ने अपने सवार दस्ते के सवारों को अपनी जेब से नक़द इनामात दिए थे। उन के सवार दस्ते ने जो कारनामे कर दिखाए थे वो हम बयान कर चुके हैं। वो इस से भी बड़े ईनाम के हक़दार थे लेकिन खिलाफते मदीना की निगाह में ईनाम का तसव्वुर कुछ और था और वही इस्लाम की रूह के ऐन मुताबिक़ था।

❁

उमर(र०) बिन ख़त्ताब जो तारीखे इस्लाम के मशहूर मोअज़्ज़न बिलाल(र०) के हाथ अबु उबैदा(र०) को एक तहरीरी हुकमनामा भेजा। "....ख़ालिद(र०) बिन वलीद को मुजाहेदीन की जमाअत के दरमियान करो। उस के सर से दस्तार उतारो। दस्तार से उस के हाथ पीठ के पीछे बांधो। टोपी भी उस के सर से उतार दो। फिर उस से पूछो के उस ने एक शायर अशअस बिन क़ैस को ईनाम अपनी जेब से दिया है या माले ग़नीमत से। अगर वो इक़बाल करे के माले ग़नीमत से दिया है तो उसे ख़ियानत में पकड़ो। अगर उस ने अपनी जेब सके दिया है तो उस पर इस्राफ का इल्ज़ाम आयद करो। इन में से जिस इल्ज़ाम का भी वो ऐतराफ करता है उस की पादाश में उसे उस के मौजूदा ओहदे से माजूल कर दो और इस की जगह तुम खुद काम करो...."

ये अरबों का रिवाज था के जिस पर कोई इल्ज़ाम होता था उस के हाथ उसी की पगड़ी से बांध कर लोगों के सामने पूछा जाता था के उस ने ये जुर्म किया है या नहीं। एक

आम आदमी के साथ यही सलूक होता था लेकिन उमरो(र०) ने ख़ालिद(र०) जैसे अज़ीम और तारीख़ साज़ सालार को भी आम आदमी की सतह पर खड़ा कर दिया।

मोअररि़खों ने लिखा है के अबु उबेदा(र०) ने जब ये हुक्म पढ़ा तो उन पर सन्नाटा तारी हो गया। अगर उमरो(र०) अबु उबैदा(र०) को थोड़ी सी भी इजाज़त दे देते के वो ये तहक़ीक़ात अपने तौर पर करें तो अबु उबैदा(र०) ख़ालिद(र०) के साथ ये तरीक़ा इख़्तियार न करते लेकिन वो जानते थे के उमरो(र०) डिसीपिलीन और अदल व इन्साफ के मआमले में किस क़द्र सख़्त है।

उस वक़्त अबु उबैदा(र०) हमस में थे और ख़ालिद(र०) क़न्सरीन में थे। अबु उबैदा(र०) ने क़सिद को भेजा के वो क़न्सरीन से ख़ालिद(र०) को बुला लाए।

क़ासिद ने जब ख़ालिद(र०) को पैग़ाम दिया तो ख़ालिद(र०) उछल कर उठे।

"खुदा की क़सम!"-ख़ालिद(र०) ने नारा लगाने के अंदाज़ में कहा-"मुझे एक और जंग लड़ने के लिए बुलाया गया है।"

ख़ालिद(र०) इस खुशी को दिल में बसाए हमस पहुंचे के रोमियों या बाज़ नतीनियों के ख़िलाफ कोई बड़ी जंग लड़ी जाने वाली है लेकिन वो जब अबु उबैदा(र०) के सामने गए तो अबु उबैदा(र०) के चेहरे पर उदासी के आसार देखे।

"अमीनुलउम्मत!"-ख़ालिद(र०) ने उन के पास बैठते हुए पूछा-"क्या वो ग़लत है जो मैं समझ कर आया हूं?"

"अबु सुलेमान!"-अबु उबैदा(र०) ने ग़म से बोझल आवाज़ में ख़ालिद(र०) से कहा-"अमीरूलमोमेनीन ने तुझ पर इल्ज़ाम आयद किया है के तूने दस हज़ार दरहम अशअस को दिए हैं। वो अगर माले ग़नीमत से दिए हैं तो ये ख़ियानत का जुर्म है और अगर अपनी जेब से दिए हैं तो ये फिज़ूल ख़र्ची है जो इस्लाम की निगाह में नाजायज़ है। बिलाल(र०) यही जवाब लेने आया है।"

ख़ालिद(र०) का रद्दे अमल ये था के उन पर ख़ामोशी तारी हो गई। अबु उबैदा(र०) ने एक बार फिर पूछा लेकिन ख़ालिद(र०) के मुंह से एक लफ्ज़ भी न निकला। दरअसल अबु उबैदा(र०) चाहते थे के ख़ालिद(र०) कुछ न कुछ ज़रूर कहें ताके वो तरीक़ा इख़्तियारन करना पड़े जो अमीरूलमोमेनीन ने इख़्तियार करने को लिखा था। ख़ालिद(र०) पर ऐसा असर हुआ के उन्होंने बिलाल(र०) की तरफ देखा भी नहीं।

आख़िर अबु उबैदा(र०) ने बिलाल(र०) की तरफ देखा। इस का मतलब ये था के बिलाल(र०) अरबों के रिवाज के मुताबिक़ ख़ालिद(र०) से बयान लें। बिलाल(र०) पूरा हुक्म ले कर आए थे। उन्होंने कारर्‌वाई मुकम्मल कर के जाना था। ख़ालिद(र०) ने थोड़ी सी मोहलत मांगी जो उन्हें दे दी गई। ये मोहलत तो उन्हें मिलनी ही थी क्योंके दस्तूर के मुताबिक़ तमाम फौज को इक्ळा करना था जिस के सामने ख़ालिद(र०) से ऐतराफे जुर्म कराना था।

❁

ख़ालिद(र०) की एक बहन फातिमा(र०) हमस में रहती थीं। ख़ालिद(र०) उन के पास गए और इन्हें बताया के उमरो(र०) ने उन पर क्या इल्ज़ाम आयद किया है। बहन से मशवरा लेने की ज़रूरत ये पेश आई थी के उमरो(र०) ख़ालिद(र०) के क़रीबी रिश्तेदार थे। फातिमा(र०) ने बड़े दुख से उमरो(र०) के खिलाफ एक बात कह दी। ख़ालिद(र०) पहले ही मग़मूम थे और किसी हद तक मुश्तअल भी। उन्हें अपनी बहन का मशवरा अच्छा लगा और वो वापस अबु उबैदा(र०) के पास चले गए।

"अमीनुलउम्मत !"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"मै ने कोई जुर्म नही किया। मै कोई बयान नही दूंगा।"

इस के बाद ज़मीन व आसमान ने जो मंज़र देखा उसे देख कर भी कोई फर्द यक़ीन नही करता था के ये सलूक उस अज़ीम शख़्सियत के साथ हो रहा है जो अज़मते इस्लाम का सतून है और जिस के बग़ैर इस्लाम इस जगह तक न पहुंचता जहां ख़ालिद(र०) के हाथ उन की पीठ के पीछे उन की दस्तार से बंधे हुए थे। उन के सर से टोपी उतरी हुई थी। वो ज़मीन पर दो ज़ानों बैठे हुए थे और बिलाल(र०) उन के सामने खड़े ऐतराफे जुर्म करा रहे थे।

"ऐ इब्ने वलीद !"-बिलाल(र०) पूछ रहे थे-"तू ने अशअस को दस हज़ार दरहम अपनी जेब से दिए है या माले ग़नीमत से?"

ख़ालिद(र०) के चेहरे का रंग उड़ा हुआ था। वो ख़ामोश रहे। बिलाल(र०) ने एक बार फिर पूछा।

ख़ालिद(र०) फिर भी खामोश रहे।

"इब्ने वलीद !"-बिलाल(र०) ने कहा-"मै अमीरूलमोमेनीन के हुक्म की तामील कर रहा हूं। जवाब दे। तूने दस हज़ार दरहम अशअस को अपनी जेब से दिए थे या माले ग़नीमत से?"

"अपनी जेब से"-ख़ालिद(र०) ने आखिर जवाब दिया।

विलाल(र०) ने उस के हाथ खोल दिए और अपने हाथों पगड़ी उन के सर पर रखी।

"हम सब पर अमीरूलमोमेनीन के हुक्म की तामील फर्ज़ है"-बिलाल(र०) ने कहा-"हम हर सालार की इज़्ज़त करते है।"

वहां जितनी फौज थी उस पर ख़ामोशी तारी थी। इस ख़ामोशी में इज़्तेराब छुपा हुआ था। हर किसी के चेहरे पर गिला और शिकवा था। कम अज़ कम ख़ालिद(र०) के साथ ये सलूक नही होना चाहिए था लेकिन नज़्म व ज़ब्त का तक़ाज़ा था के एक जायज़ कारर्वाई के ख़िलाफ काई नही बोल सकता। अबु उबैदा(र०) और बिलाल(र०) की भी कैफियत ये थी के वो आंखें ऊपर कर के नही देखते थे। उन की नज़रें ज़मीन पर लगी हुई थीं।

ख़ालिद(र०) इस ख्याल से घोड़े पर सवार हुए और वहां से निकल आए के मआमला यहीं पर खत्म हो गया है। सात आठ दिन गुज़र गए। ख़ालिद(र०) को कोई हुक्म न मिला। वो हमस गए और अबु उबैदा(र०) से मिले।

अबु सुलेमान!–अबु उबैदा(र०) ने अमीरूलमोमीन का हुक्म नामा ख़ालिद(र०) के आगे करते हुए कहा–"ये पढ़ लो।"

ये वो हुक्मनामा था जो अमीरूलमोमेनीन ने अबु उबैदा(र०) को भेजा था के ख़ालिद(र०) जो भी ऐतराफ करें इन्हें माज़ूल कर दिया जाए।

"तुझ पर अल्लाह की रहमत हो अमीनुलउम्मत!"–ख़ालिद(र०) ने अबु उबैदा(र०) से कहा–"अमीरूलमोमेनीन का ये हुक्म मुझे उसी रोज़ क्यों न सुना दिया?"

"खुदा की क़सम अबु सुलेमान!"–अबु उबैदा(र०) ने कहा–"मुझे अंदाज़ा था उस दुख का जो तुझे होना था। मै अपनी ज़बान से तुझे दुख नहीं दे सकता था....ये दुख मेरे लिए भी कम नहीं के तुझे माज़ूल कर दिया गया है।

ख़ालिद(र०) खामोशी से अपने घोड़े पर सवार हुए और हमस से निकल आए। तारीख़ ये बताने से क़ासिर है के उस वक्त ख़ालिद(र०) क्या सोच रहे थे। उन की जज़्बाती दुनिया में कैसे ज़लज़ले आ रहे थे। उन्होंने अपनी जेब से ये ईनाम दिया था। इसे वो जुर्म नहीं समझते थे। वो यही समझते थे के उन्हें जो सज़ा दी गई है वो बहुत संगीन है। उन की ज़िन्दगी में ये दूसरा मौक़ा था के वो सोचों और ख्यालों की भूल भुल्लियों में भटकते सफर कर रहे थे। एक उस रोज़ जब वो मक्का से मदीना को तन तनहा जा रहे थे। उन्होंने मदीना जा कर रसूले अकर(स०) के दस्ते मुबारक पर इस्लाम कुबूल करना था। और अब वो हमस से अपनी माज़ूली का हुक्म सुन कर क़न्सरीन को जा रहे थे। उन के ज़हन में इज़तेराब का, रंज व अलम का और न जाने कैसी कैसी सोचों का तूफान उठता था और वो इस तूफान के जन्नाटे सुनते जा रहे थे।

घोड़े ने इन्हें क़न्सरीन पहुंचा दिया। शहर के अन्दर जाते ही उन्होंने अपने उस घुड़सवार दस्ते को बुलाया जो उन्होंने अपने हाथों से कई गुना क़वी दुश्मन के पांव उखाड़े थे। इस दस्ते से ख़ालिद(र०) को बहुत प्यार था। अभी कल ही की बात थी के इस दस्ते के सामनें खड़े हो कर ख़ालिद(र०) कहा करते थे के दुश्मन पर टूट पड़ो। आज वो उसी दस्ते के सामने रंज व अलम का मजमूआ बने अपने घोड़े पर बैठे थे।

ख़ालिद(र०) अपने इस महबूब दस्ते से न जाने कैसी कैसी बात करना चाहते थे। उन्होंने बोलना चाहा तो उन पर रक़्क़त सी तारी हो गई। वो इस दस्ते की जुदाई बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। उन्होंने इन्तेहाई मुख़्तसिर अल्फाज़ में सवारों की कामयाबियों की, उन की बर्क़ रफ्तारियों की, जांबाज़ी और सरफरोशी की दिल खोल कर तारीफ की फिर उन्हें बताया के वो हमेशा के लिए उन का साथ छोड़ रहे है।

सवारों का रद्दे अमल ये था जैसे उन की सांसे रूक गई हों। दर्दनाक सा एक सकूत

था जो उन पर तारी हो गया था। इस सकूत को सवारों की सिस्कियों ने तोड़ा। ख़ालिद(र०) ने घोड़ा मोड़ा और वहां से हट आए। ये मंज़र उन की बर्दाश्त से बाहर था।

वहां से ख़ालिद(र०) हमस गए। तमाम मुजाहेदीन से मिले। बोझल दिल से सब को खुदा हाफिज़ कहा और मदीना को रवाना हो गए।

❁

ख़ालिद(र०) मदीना में दाख़िल हुए लेकिन एक फातेह सालार की हैसियत से नहीं के लोग घरों से बाहर आ कर उन का इस्तक़बाल करते। उन की हैसियत एक सज़ा याफ्ता मुजरिम की सी थी। इत्तेफाक़ से उमरो(र०) उन्हें एक गली में आते मिल गए।

"अबु सुलेमान!"–उमरो(र०) ने ख़ालिद(र०) के जंगी कारनामों को इन अल्फाज़ में सराहा–"तूने वो काम किया है जो कोई और नहीं कर सकता था मगर हर काम अल्लाह करता है।"

"और तूने जो काम किया है वो किसी भी मुसलमान को पसंद नहीं आया"–ख़ालिद(र०) ने कहा–"ऐ इब्ने ख़त्ताब! तूने मेरे साथ बे इन्साफी की है।"

"कहां से आई ये दौलत के तू इसे नाजायज़ इस्राफ में फैंकता फिरता है?–उमरो(र०) ने कहा–"अबु सुलेमान! क्या तू रोमियों और फारसियों जैसा बादशाह बनना चाहता है?....खुदा की क़सम, तू मेरे लिए क़ाबिले अहतराम है तू मुझे अज़ीज़ है। अब तुझे मुझ से कोई शिकयत न होगी। खुदा की क़सम, मैं किसी सालार, किसी अमीर और किसी हाकिम को बादशाहों जैसा नहीं बनने दूंगा के जिस ने झूटी मिदह की उस की झोली ईनाम से भर दी।"

ख़ालिद(र०) एक दो दिन मदीना में रह कर क़न्सरीन चले गए। वो मदीना को हमेशा के लिए छोड़ गए थे।

अल्लाह की तलवार नियाम में बंद हो गई।

❁

इस वाक़ये के मुताल्लिक़ बहुत कुछ कहा जा सकता था। बहुत कुछ कहा जा चुका है। तारीखदानों ने अपनी अपनी राय दी है। बाज़ ने उमरो(र०) के इस फैसले के ख़िलाफ लिखा है। खुल्फाए राशेदीन को रूस्वा करने वालों ने लिखा है क़े उमरो(र०) के दिल में ख़ालिद(र०) के खिलाफ ज़ाती रंजिश थी जिसे उन्होंने यूं मिटाया के ख़लीफा बनते ही ख़ालिद(र०) को माज़ूल कर दिया।

हक़ीक़त कुछ और थी। अगर हम आज के दौर को और आज के हुकमरानों को सामने रख कर सोचें तो उमरो(र०) को ये फैसला अच्छा नहीं लगता और अगर हम उस दौर को तसव्वुर में लाएं और गहराई में जाएं तो हम इस नतीजे पर पहुंचते है के उमरो(र०) का फैसला सही था।

ग़ौर कीजिए। उमरो(र०) ने कहा था के तुम बादशाह बनना चाहते हो। बादशाहों के

अन्दाज़ यही होते है के जिस ने तारीफ में दो कल्मे कह दिए तो इसे ईनाम व इकराम से माला माल कर दिया।

गौर कीजिए। उमर(र०) बिन खत्ताब की नज़र आने वाले वक्त के पर्दे चाक कर के कितनी दूर चली गई थी। खुल्फाए राशेदीन के बाद आने वाले खुल्फा ने ईनाम व इकराम का सिलसिला शुरू कर दिया था। अब्बासी तो रिवायती बादशाह बन गए थे। उन्दलस के आख़िरी दौर को देखिए। दरबार लगा हुआ है। शायर और अदीब मंजूम और नसरी कसीदे पढ़ रहे है और ईनामात से झोलियां भर रहे है। खुशामद एक फन और एक पेशा बन गया है- और इन ईनाम खोरों, मिदह सराओं और खुशामदियों ने सल्तनते उन्दलस को सकूते गरनाता तक पहुंचाया।

इस के बाद सल्तनते इस्लमिया बादशाहियों में बट गई। हिन्दुस्तान में मुग़लिया सल्तनत के ईनाम मशहूर हुए और इस सल्तनत को ज़वाल आया।

अब पाकिस्तान में देख लें। ईनाम व इकराम का वही मज़मूम सिलसिला चल रहा है जिसे इस्लाम ने नाजायज़ इस्राफ करार दिया था। खालिद(र०) बिन वलीद ने तो अपनी जेब से ईनाम दिया और माजूली की सज़ा पाई थी लेकिन हमारे हुक्मरान सरकारी खज़ाने से ईनाम देते चले जा रहे है। हकीकत ये है के ये गैर मुमालिक से लिए हुए कर्ज़ों की रकम है जिस पर हम सूद अदा कर रहे है।

उमरो(र०) की दूरबीन निगाहों ने देख लिया था के ईनाम व इकराम का सिलसिला चल निकला तो इस का नतीजा ज़वाल के सिवा कुछ न होगा।

उमरो(र०) ने इस लिए भी खालिद(र०) को नहीं बख़्शा था के अदल व इन्साफ और सज़ा में छोटे बड़े का फर्क न रहे। उन्होंने सोचा था के उन्होंने खालिद(र०) को माफ कर दिया तो ये दस्तूर बन जाएगा के सालार, अमीर, हाकिम और हैसियत वाले अफराद को सज़ा मिल ही नहीं सकती। इस तरह अदल व इन्साफ खत्म हो जाएगा और इस्लामी मुआशरे छोटे और बड़े में बट जाएगा। उमरो(र०) अहकाम मनवाने में इस कद्र सख़्त थे के उन्होंने अपने बेटे को एक सौ कोड़ों की सज़ा दी थी। अस्सी कोड़े मारे गए तो उन का बेटा मर गया। उमरो(र०) को इत्तेला दी गई। उन्होंने हुक्म दिया के एक सौ कोड़े पूरे करो। बाकी बीस कोड़े उस की लाश पर मारो।

❁

मदीना से खालिद(र०) कन्सरीन गए वहां से हमस चले गए और उन की उमरो के बाकी चार साल वहीं गुज़रे। एक वक्त आया के खालिद(र०) तंग दस्त हो गए। अहले कुरैश का शहज़ादा, मैदाने जंग का बादशाह, दिल का सखी और फय्याज़, हज़ारों दरहम हकदारों में तकसीम कर देने वाला इन्सान मुफलिसी के चुंगल में आ गया। थोड़े ही अर्से बाद अमीरूलमोमेनीन उमरो(र०) ने कुछ मुसलमानों के लिए वज़ीफा मुकर्रर किया था जो तीन हज़ार दरहम सालाना था। ये खालिद(र०) को भी मिलने लगा। इस से वो हमस में

अपने कुन्बे के साथ ज़िन्दगी के दिन पूरे करने लगे।

ख़ालिद(र०) अब वो ख़ालिद(र०) नही रहे थे जिन की इस लल्कार-अना फारस–उल–ज़दीद। अना ख़ालिद(र०) बिन वलीद- से दुश्मन पर दहशत तारी हो जाया करती थी वो गोशा नशीन हो गए। उन की ज़िन्दा दिली, खुश ज़ौक़ी और शोख़ी ख़त्म हो गई और वो चुप और उदास रहने लगे।

जनवरी फरवरी 639ई० (18 हिज्री) में उन्हें एक और सदमा बर्दाश्त करना पड़ा। थ्फिस्तीन के एक क़स्बे अम्वास में ताऊन की वबा फूट पड़ी जो देखते ही देखते तमाम थ्फिस्तीन और शाम में फैल गई। लोग बड़ी तेज़ी से मौत का शिकार होने लगे।

यहां अबु उबैदा(र०) के किरदार का ज़िक्र बे महल न होगा। मोअररिख़ लिखते है के अमीरूलमोमेनीन उमरो(र०) ने अबु उबैदा(र०) को पैग़ाम भेजा के वो मदीना आ जाऐं। अबु उबैदा(र०) ने जवाब दिया के मेरे जिन साथियों ने मैदाने जंग में कभी साथ नही छोड़ा था उन्हें मै ताऊन के डर से छोड़ कर नही आऊंगा। चुनांचे वो अपनी फौज के साथ रहे और ताऊन के हमले से रहलत फरमा गए।

ख़ालिद(र०) के तमाम साथी सालार जिन के साथ उन्होंने बड़ी ख़ौफनाक जंगे लड़ी थीं। ताऊन से इन्तेक़ाल कर गए। इन में अबु उबैदा(र०), शरजील(र०) बिन हस्ना, ज़रार(र०) बिन लोज़ोर, यज़ीद(र०) बिन अबु सफयान भी शामिल थे। ख़ालिद(र०) के अपने बहुत से बेटे ताऊन का शिकार हो गए। एक बाप के लिए ये सदमा ना क़ाबिले बर्दाश्त था। ताऊन की इस वबा में पच्चीस हज़ार मुसलमान अल्लाह को प्यारे हो गए।

ख़ालिद(र०) पहले भी चुप ही रहते थे मगर अब तो जैसे उन की कुव्वते गोयाई ख़त्म ही हो गई हो। मुसलमानों की फतूहात का सिलसिला चल रहा था। अबु उबैदा(र०) के इन्तेक़ाल के बाद सिपह सालारी उमरो(र०) बिन आस को मिली। ख़ालिद(र०) जब मुसलमानों की नई फतह की ख़बर सुनते थे तो उन के चेहरे पर रौनक़ आजाती थी मगर कुछ देर बाद वो फिर बुझ के रह जाते। उन्हें ग़ालिबन ये ख्याल आजाता था के वो इस जंग में शरीक नही थे।

642ई० (21 हिज्री) में ख़ालिद(र०) को ऐसी बीमारी ने आ लिया जो उन्हें बड़ी तेज़ी से खाने लगी। ये सदमों का असर था। उन का जिस्म घुलता चला गया। एक रोज़ एक दोस्त उन्हें देखने आया।

"ग़ौर से देख!"-ख़ालिद(र०) ने अपनी एक टांग नंगी कर के दोस्त को दिखाई और पूछा-"क्या मेरी टांग पर कोई जगह तुझे नज़र आती है जहां तीर या बरछी का ज़ख्म न हो?"

दोस्त को ऐसी कोई जगह नज़र न आई जहां ज़ख़्म न था। ख़ालिद(र०) ने दूसरी टांग नंगी कर के दोस्त को दिखाई और यही सवाल पूछा। फिर दोनों बाज़ू बारी बारी नंगे किए और यही सवाल पूछा, फिर सीना और पीठ दिखाई दोस्त को एक बालिश्त से ज़्यादा

कोई जगह नज़र न आई जहां ज़ख्म का निशान न था।

"क्या तू नही जानता मै ने कितनी जंगे लड़ी है?"-ख़ालिद(र०) ने बड़ी नहीफ आवाज़ में कहा-"फिर मै शहीद क्यों न हुआ? मै लड़ते हुए क्यों न मरा?"

"तू मैदाने जंग मे नही मर सकता था अबु सुलेमान!"-दोस्त ने कहा-"तुझे रसूल अल्लाह(स०) ने अल्लाह की तलवार कहा था। ये रसूले अकरम(स०) की पेशनगोई थी के तू मैदाने जंग में नही मारा जाएगा। अगर तू मारा जाता तो सब कहते के एक काफिर ने इस्लाम की तलवार तोड़ दी है। ऐसा हो नही सकता था......तू इस्लाम की शमशीर बे नियाम था।"

इन्तेक़ाल के वक्त ख़ालिद(र०) के पास उन का एक मुलाज़िम हम्माम था। नज़े के आलम में ख़ालिद(र०) ने कहा-"मै एक ऊंट की तरह मर रहा हूं। बिस्तर पर मरना मेरे लिए शर्मनाक है"-और ख़ालिद(र०) उस अल्लाह के हुज़ूर पहुंच गए जिस की वो शमशीर थे। ख़ालिद(र०) बिन वलीद सेफुल्लाह दुनिया से उठ गए।

ख़ालिद(र०) की उम्र 58 साल थी।

उन की वफात की ख़बर मदीना पहुंची तो बनी मख़ज़ूम की औतें बीन करती गलियों में निकल आईं। मदीना की दूसरी औरतें भी बाहर आ गईं और मदीना मातम कदा बन गया। औरतें सीना कूबी और बीन कर रही थीं। अमीरूलमोमेनीन उमरो(र०) ने खिलाफत की मसनद पर बैठते ही हुक्म जारी किया था के किसी की वफात पर गरिया वज़ारी नही की जाएगी। उन के इस हुक्म पर सख़्ती से अमल होता रहा था मगर ख़ालिद(र०) की वफात पर औरतें घरों से बाहर आ कर बीन कर रही थीं। उमरो(र०) ने अपने घर में बैठे ये आवाज़ें सुनी तो वो गुस्से से उठे और दीवार के साथ लटकता हुआ दुर्रा ले कर तेज़ी से बाहर को चले लेकिन दरवाज़े में रूक गए। कुछ देर सोच कर वापस आ गए और दुर्रा वहीं लटका दिया जहां से उठाया था।

"बनी मख़ज़ूम की औरतों को रोने की इजाज़त है"-उमरो(र०) ने ऐलान किया-"इन्हें अबु सुलेमान का मातम कर लेने दो। इन का रोना दिखावे का नही। रोने वाले अबु सुलेमान जैसों पर ही रोया करते है।"

हमस में बड़ा हसीन एक बाग़ है। फूलों के कियारे हैं। दरमियान में रास्ते है दरखत हैं। इस बाग़ में एक मस्जिद है जो मस्जिद ख़ालिद(र०) बिन वलीद के नाम से मशहूर है। बहुत दिल कश मस्जिद है। इस मस्जिद के एक कोने में ख़ालिद(र०) की क़ब्र है। ख़ालिद(र०) की दास्ताने शुजाअत जानने वालों को आज भी जैसे इस मस्जिद में जा कर लल्कार सुनाई देती है:

अना फारस उल ज़दीद
अना ख़ालिद बिन वलीद

₹ 180/-
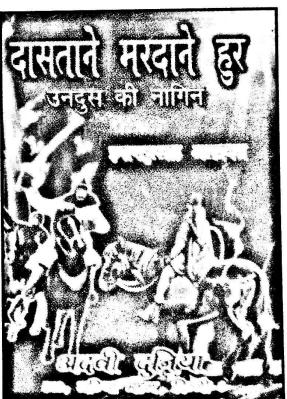
ADABI DUNIYA ادبی دُنیا

PUBLISHER & BOOK SELLERS

399, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6

Ph.: 011-23250122, 23260122